भूमिका

इस अलीगढ़ नगर में वहुत दिनोंसे भाषा संवर्द्धिनी सभा नियत है—उसका उद्देश्य यह है कि संस्कृति के उत्तम२ ग्रंथोंका भाषामें अनुवाद करा२ कर और छपवाकर प्रकाश किया जाय एक समय भाषाका विचार हुआ कि अठारह स्मृतियों का भाषामें अनुवाद कियाजाय—उक्त सभाके सभासद श्री मुन्शीनवलकिशोर सी-आई-ई—ने अपने ऊपर इनके मुद्रण आदिका भार लेकर भाषामें अनुवाद करने में मुझे नियत किया, मैं अपनी वुद्धिके अनुसार इस अनुवाद को विद्वज्जनों के चरण पंकजों में अर्पण करके प्रार्थना करता हूं कि यदि वुद्धिदोष आदिसे कही न्यूनता होय तो क्षमा करें इति

अलीगढ
२४ जनवरी
१८८९

विज्ञजन सेवकः
पं० मिहिरचन्द्र



अत्रिस्मृति

हुताग्निहोत्रमासीनमत्रिं वेदविदांवरं
सर्वशास्त्रविधिज्ञं तमृषिभिश्चनमस्कृतं १
नमस्कृत्यचतेसर्वइदंवचनमब्रुवन्
हितार्थं सर्वलोकानांभगवन्कथयस्वनः २

अत्रि रुवाच

वेदशास्त्रार्थतत्वज्ञायन्मांपृच्छथसंशयं
तत्सर्वं संप्रवक्ष्यामियथादृष्टंयथाश्रुतं ३

—किया है अग्नि होत्रजिसने' और वेदके ज्ञाताओंमें उत्तम और संपूर्ण शास्त्रोंकी विधि के ज्ञाता' और किया है ऋषियों ने नमस्कार जिस को' ऐसेबैठे हुए अत्रिजी को १

वे संपूर्ण ऋषि नमस्कार करके यह वचन बोले कि हे भगवन् संपूर्ण लोकों के हितके अर्थ हमको आप कहैं २

अत्रि बोले कि—हे वेद और शास्त्रके तत्व(अर्थ)के यथार्थ जाननेवालो—जोसंशय मुझे तुम पूछतेहो उस संपूर्णको अपने देखे और सुने के अनुसार-में वर्णन करुंगा ३

सर्वतीर्थान्युपस्पृश्यसर्वान्देवान्प्रणम्यच
जप्त्वातुसर्वसूक्तानिसर्वशास्त्रानुसारतः ४
सर्वपापहरंदिव्यंसर्वसंशयनाशनं
चतुर्णामपिवर्णानामत्रिःशास्त्रमकल्पयत् ५
येचपापकृतोलोकेयेचान्येधर्मदूषकाः
सर्वपापैःप्रमुच्यंतेश्रुत्वेदंशास्त्रमुत्तमं ६
तस्मादिदंवेदविद्भिरध्येतव्यंप्रयत्नतः
शिष्येभ्यश्चप्रवक्तव्यंसद्वृत्तेभ्यश्चधर्मतः ७
अकुलीनेह्यसद्वृत्तेजडेशूद्रेशठेद्विजे
एतेष्वेवनदातव्यमिदंशास्त्रंद्विजोत्तमैः ८

संपूर्ण तीर्थों में आचमन — और संपूर्ण देवताओं को नमस्कार और संपूर्ण सूक्तों * को जप कर के संपूर्ण शास्त्रों के अनुसार और ४

संपूर्ण पापों का हरने वाला, और उत्तम, और संपूर्ण संशयोंकादूर करने वाला, चारोंवर्णों का हितकारी शास्त्र अत्रि ऋषिने रचा ५

जो जगत् में पापों के कर्ता हैं, और जो धर्म में दूषण लगाने वाले हैं वे संपूर्ण इस उत्तम शास्त्र को सुनकरि सब पापों से छूट जाते हैं ६

तिससे वेदके ज्ञाता इस शास्त्र को बड़े यत्न से पढ़ें और धर्म से उत्तम आचरण के करने वाले शिष्यों को पढावें ७

निंदित कुल में उत्पन्न और दुराचारी — मूर्ख — शूद्र — और शठ ब्राह्मण, इन को ब्राह्मणों में उत्तम इसशास्त्र को नदें ८

---

* वेदमें स्तुति आदि के अध्याय को सूक्त कहते हैं

एकमप्यक्षरं यस्तुगुरुःशिष्येनिवेदयेत्
पृथिव्यांनास्तितद्द्रव्यंयद्दत्वाह्यनृणीभवेत् ९
एकाक्षरप्रदातारं योगुरुंनाभिमन्यते
शुनांयोनिशतंगत्वाचाण्डालेष्वभिजायते १०
वेदंगृहीत्वायःकश्चित्शास्त्रंचैवावमन्यते
सस्द्यःपशुतांयातिसंभवानेकविंशतिं ११
स्वानिकर्माणिकुर्वाणाद्दूरे संतोपिमानवाः
प्रियाभवंतिलोकस्यस्वेस्वेकर्मण्युपस्थिताः १२
कर्मविप्रस्ययजनंदानमध्ययनंतपः
प्रतिग्रहोध्यापनंचयाजनंचेतिवृत्तयः १३

जो गुरु एक भी अक्षर शिष्य को देता है पृथिवी भरमें वह द्रव्य नहीं है जिस को देकर गुरु का अनृणी होसके (अर्थात् बदला देसके)९

एक अक्षरके भी देनेवाले को जो गुरु नहीं मानता वह सौ जन्म कुत्तों की योनिमें जाकर चांडालों में जन्मता है १०

जो कोई वेद और शास्त्रको जानकर अपमान करताहै वह शीघ्रही इक्कीस जन्म तक पशु होता है ११

अपने२ कर्मोंको करते और दूर रहतेभी मनुष्य अपनें कर्मपर टिकने से जगत् के प्यारे होते हैं २२

ब्राह्मण के कर्म ये हैं कि यज्ञ करना,दान देना,पढना और तप करना,और दानलेना पढाना और यज्ञ कराना ये तीन ब्राह्मण की वृत्ति आजीविका हैं १३

क्षत्रियस्यापियजनंदानमध्ययनंतपः
शस्त्रोपजीवनंभूतरक्षणंचेतिवृत्तयः १४
दानमध्ययनंवार्तायजनंचेतिवैविशः
शूद्रस्यवार्ताशुश्रूषाद्विजानांकारुकर्मच १५
तदेतत्कर्माभिहितंसंस्थितायत्रवर्णिनः
बहुमानमिहप्राप्यप्रयांतिपरमांगतिं १६
येऽव्यपेताःस्वधर्मात्तेपरधर्मेऽव्यवस्थिताः
तेषांशास्तिकरोराजास्वर्गलोकेमहीयते १७
आत्मीयेसंस्थितोधर्मेशूद्रोपिस्वर्गमश्नुते
परधर्मोभवेत्याज्यःसुरूपपरदारवत् १८

यज्ञ करना, दानदेना, पढना, और तप करना, ये क्षत्रीके कर्म हैं और शस्त्र से आजीविका और भूतों की रक्षा ये दो वृत्ति हैं १४

दान देना, पढना, खेती, गौवों की रक्षा, व्यवहार, यज्ञ करना, ये वैश्यके कर्म हैं—और खेती, और गौवोंकीरक्षा, व्यवहार और तीनों वर्णों की सेवा, और कारीगरी, ये शूद्रके कर्म हैं १५

जिस कर्ममें चारों वर्ण टिकेहुए इसलोक में बड़े मान को प्राप्त होकर परलोक में परमगति को प्राप्त होते हैं सो यह कर्म हमनेकहा १६

जो अपने धर्म में नहीं हैं और परके धर्ममें तत्पर हैं उनको शिक्षा करने वाला राजा स्वर्गलोक में पूजा को प्राप्त होता है १७

अपनेधर्ममें टिकाहुआ शूद्र भी स्वर्ग को भोगता है पराया धर्म इस प्रकार त्यागने योग्य है जैसे श्रेष्ठरूप वाली पराई स्त्री १८

वध्योराज्ञासवैशूद्रोजपहोमपरश्चयः
ततोराष्ट्रस्यहंतासौयथावन्हेश्चवैजलं १९
प्रतिग्रहोध्यापनंचतथाऽविक्रेयविक्रयः
याज्यंचतुर्भिरप्येतैःक्षत्रविट्पतनंस्मृतं २०
सद्यःपततिमांसेनलाक्षयालवणेनच
त्र्यहेणशूद्रोभवतिब्राह्मणःक्षीरविक्रयी २१
अव्रताश्चानधीयानायत्रभैक्ष्यचराद्विजाः
तंग्रामंदंडयेद्राजाचौरभुक्तप्रदंडवत् २२
विद्वद्भोज्यमविद्वांसोयेषुराष्ट्रेषुभुंजते
तेप्यनावृष्टिमिच्छंतिमहद्वाजायतेभयं २३

जो शूद्र जप और होम में तत्पर है वह राजा को मारने योग्य है क्योंकि वह राजा के देश का इस प्रकार हतने वाला है जैसे अग्निका जल १९

प्रतिग्रह और पढाना और निषिद्ध वस्तुका बेचना और यज्ञकराना इन चारों से क्षत्री और वैश्य का पतित होना कहा है २०

मांस और लाख और लवण इन के बेचनेसे ब्राह्मण शीघ्र ही पतित और दूध के बेचने सेतीन दिनमें शूद्र होजाता है २१

व्रतोंके नकरनेवाले और बिना पढे ब्राह्मण जिसमें भिक्षा मांगते फिरते हैं उस ग्राम को राजा वह दंड दे जो चोरी की वस्तु के भोगने वाले को होता है २२

जिनदेशोंमें विद्वानों के भोगने योग्य पदार्थों को मूर्ख भोगते हैं वे देश भी वृष्टि के अभाव की इच्छा करते हैं अथवा उनमें महान्भय होता है २३

ब्राम्हणान्वेदविदुषःसर्वशास्त्रविशारदान्
तत्रवर्षतिपर्जन्योयत्रैतान्पूजयेन्नृपः २४
त्रयोलोकास्त्रयोवेदाआश्रमाश्चत्रयोग्नयः
एतेषांरक्षणार्थायसंस्टष्टाब्राह्मणाःपुरा २५
उभेसंध्येसमाधायमौनंकुर्वंतियेद्विजाः
दिव्यवर्षसहस्राणिस्वर्गलोकेमहीयते २६
यएवंकुरुतेराजागुणदोषपरीक्षणं
यशःस्वर्गं नृपत्वंचपुनःकोशंसअर्जयेत् २७
दुष्टस्यदंडःसुजनस्यपूजान्यायेनकोशस्यचसंप्रवृद्धिः
अपक्षपातोर्थिषुराष्ट्ररक्षा पंचैवयज्ञाःकथितानृपाणां२८

वेदके जानने वाले और संपूर्ण शास्त्रों में कुशल ब्राह्मणों की पूजा जिस देशमें राजा करता है वहां मेघ बर्षता है २४

तीनों लोक और तीनों बेद और तीनों अग्नि इन की रक्षा के अर्थ पहिले ब्राह्मण रचे हैं २५

जो दोनों संध्याओं के समय ध्यान करके मौन करते हैं व द्विज देवताओं के हजार बर्ष तक स्वर्गलोक में पूजा को प्राप्त होते हैं २६

जो राजा इस प्रकार गुण और दोष की परीक्षा करता है वह यश स्वर्ग—राज्य—और कोश (खजाना) इनका फिर संचय करता है २७

ये पांच यज्ञ राजाओं के कहे हैं कि दुष्टको दंड—श्रेष्ठ जन की पूजा—न्याय से कोशका बढाना—अभ्यागतों में पक्षपात का न होना और अपने देश की रक्षा २८

यत्प्रजापालनेपुण्यंप्राप्नुवंतीहपार्थिवाः
नतुक्रतुसहस्त्रेणप्राप्नुवंतिद्विजोत्तमाः २६
अलाभेदेवखातानाम्हृदेषुसरसीषुच
उद्धृत्यचतुरःपिंडान्पारकेस्नानमाचरेत् ॥३०॥
वसाशुक्रमसृङ्मज्जामूत्रंविट्कर्णविड्नखाः
श्लेष्मास्थिदूषिकास्वेदोद्वादशैतेनृणांमलाः ३१
षण्णांषण्णांक्रमेणैवशुद्धिरुक्तामनीषिभिः
मृद्वारिभिश्चपूर्वेषामुत्तरेषांतुवारिणा ३२
शौचंमंगलमायासअनसूयास्पृहादमः
लक्षणानिचविप्रस्यतथादानंदयापिच ३३

प्रजा के पालने में इस लोक में जिस पुण्य को राजा प्राप्त होते हैं हे द्विजों में उत्तमो—उस पुण्य को हजार यज्ञ करने से भी नहीं प्राप्त होते २६

देवताओं के खोदे तीर्थों (गंगा आदि) के अलाभमें पराये कुंड अथवा तालाओं में मिट्टी के चारपिंड (डेले) निकास कर स्नान करै ३०

ये वारह मनुष्यों के मल हैं कि वसा—वीर्य—रुधिर—मज्जा मूत्र—विष्ठा—कानका मैल—नख—कफ—हाड—नेत्रों का मल पसीना ३१

छः छः की शुद्धि क्रम से वुद्धि मानोंने यहकही है कि पहिले छओं की मिट्टी और जल से और पिछले छओंकी केवल जलसे ३२

शुद्ध रहना—मंगल—परिश्रम करना—पराये गुणों में दोषों को न देखना— कामना न करना—इंद्रियों को विषयों से रोकना—दानदेना—और दया ये ब्राह्मण के लक्षण हैं ३३

नगुणान्गुणिनोहंतिस्तौतिचान्यान्गुणानपि
नहसेच्चान्यदोषांश्चसानसूयाप्रकीर्तिता ३४
अभक्षपरिहारश्चसंसर्गश्चाप्यनिंदितैः
आचारेषुव्यवस्थानंशौचमित्यभिधीयते ३५
प्रशस्ताचरणंनित्यमप्रशस्तविवर्जनं
एतद्धिमंगलंप्रोक्तंऋषिभिर्धर्मवादिभिः ३६
शरीरंपीड्यतेयेनशुभेनह्यशुभेनवा
अत्यंतंतन्नकुर्वीतअनायासःसउच्यते ३७
यथोत्पन्नेनकर्तव्यःसंतोषःसर्ववस्तुषु
नस्पृहेत्परदारेषुसास्पृहाचप्रकीर्तिता ३८

गुणवाले के गुणों को नष्ट न करना, और इतर के गुणों की स्तुति करना, और इतर के दोषों की हंसी न करना, उसे अनसूया कहते हैं ३४

अभक्ष्य वस्तु का त्याग और सज्जनों का संग—और उत्तम आचरणों में टिकना उसे शौच कहते हैं ३५

प्रतिदिन उत्तम आचरण करना और निंदित आचरण को त्यागना यह धर्म के कहने वाले ऋषियों ने मंगल कहा है ३६

जिस शुभ अथवा अशुभ कर्म से शरीर पीडित हो उस को अत्यंत न करना उसे अनायास कहते हैं ३७

अकस्मात् मिलीहुई संपूर्ण वस्तुओंमें संतोष करना और पराई एस्त्रियों में इच्छा न करना उस को अस्पृहा कहते हैं ३८

परेस्मिन्बंधुवर्गेवामित्रेद्वेष्येरिपौतथा
आत्मवद्वर्तितव्यंहिदयैषापरिकीर्तिता ४१
यश्चैतैर्लक्षणैर्युक्तोगृहस्थोपिभवेद्द्विजः
सगच्छतिपरंस्थानंजायतेनेहवैपुनः ४२
इष्टापूर्तंचकर्तव्यंब्राह्मणेनैवयत्नतः
इष्टेनलभतेस्वर्गंपूर्तेमोक्षोविधीयते ४३
अग्निहोत्रंतपःसत्यंवेदानांचैवपालनं
आतिथ्यंवैश्वदेवश्च इष्टमित्यभिधीयते ४४
वापीकूपतडागादिदेवतायतनानिच
अन्नप्रदानमारामःपूर्तमित्यभिधीयते ४५
इष्टापूर्तेद्विजातीनांसामान्येधर्मसाधने

उत्तम अपने कुटुंबी—मित्र—द्वेष(वैर) का कर्ता—शत्रु इन सबमें अपने समान जो बर्ताव करना उसे दया कहते हैं ४१

जो गृहस्थी भी द्विज इन लक्षणों से युक्त होता है वह उत्तम स्थान(वैकुंठ) को जाता है और फिर इस लोक में उत्पन्न नहीं होता ४२

ब्राह्मणही को इष्ट और पूर्त करने—इष्ट से स्वर्ग मिलता है और पूर्त से मोक्ष होता है ४३

अग्निहोत्र—तप—सत्य—वेदों की रक्षा—अतिथिका सत्कार' वलिवैश्वदेव- इन्हें इष्ट कहते हैं ४४

बावरी' कूप' तालाव—देवताओं के मंदिर—अन्न का दान आराम(बाग) इन्हें पूर्त कहते हैं ४५

इष्ट और पूर्त ये दोनों द्विजाति (ब्राह्मण क्षत्री वैश्य)ओं के

अधिकारीभवेच्छूद्र:पूर्तंधर्मेनवैदिके ४६
यमान्सेवेतसततंनंनित्यंनियमान्बुध:
यमान्पतत्यकुर्वाणोनियमान्केवलान्भजन् ४७
आनृशंसंक्षमासत्यमहिंसादानमार्जवं
प्रीति:प्रसादोमाधुर्य्यंमार्दवंचयमादश ४८
शौचमिज्यातपोदानंस्वाध्यायोपस्थनिग्रह:
व्रतमौनोपवासंचस्नानंचनियमादश ४६
प्रतिनिधिंकुशमयंतीर्थवारिषुमज्जति
यमुद्दिश्यनिमज्जेतअष्टभागंलभेतस: ५०
मातरंपितरंवापिभ्रातरंसुहृदंगुरुं
यमुद्दिश्यनिमज्जेतद्वादशांशफलंभवेत् ५१

सामान्य (सब के) धर्म हैं और शूद्र पूर्त धर्म का अधिकारी है और वेदोक्त धर्मका नहीं है ४६

बुद्धिमान् मनुष्य यमों को निरंतर सेवे और नियमों को नित्य नसेवे क्योंकि यमों को नहीं करता हुआ और केवल नियमों को ही सेवताहुआ पतित होता है ४७

अक्रूरता—क्षमा—सत्य—अहिंसा—दान—नम्रता—प्रीति, प्रसन्नता—मधुरवाणी—कोमलस्वभाव ये दश यम हैं ४८

शौच—यज्ञ—तप—दान—वेदका पढना—लिंग इंद्रिय को रोकना व्रत—मौन—उपवास—स्नान ये दश नियम हैं४६

जिसकी कुशाकी प्रतिनिधि(प्रतिमा)को लेकर तीर्थ के जलोंमें स्नान करै उसमनुष्यको स्नानकाफलआठवांभाग प्राप्त होताहै५०

माता—पिता—भ्राता—गुरु इनमें से जिस के उद्देश (नाम) से गोता लगावे उसको बारवां भाग मिलता है ५१

अपुत्रेणैवकर्तव्यःपुत्रप्रतिनिधिस्सदा
पिंडोदकक्रियाहेतोर्यस्मात्तस्मात्प्रयत्नतः ५२
पितापुत्रस्यजातस्यपश्येच्चेज्जीवतोमुखं
ऋणमस्मिन्संनयति अमृतत्वंचगच्छति ५३
जातमात्रेणपुत्रेणपितणामनृणीपिता
तदन्हिशुद्धिमाप्नोतिर्नरकात्त्रायतेहिसः ५४
जायंतेबहवःपुत्रायद्ये कोपिगयांव्रजेत्
यजतेचाश्वमेधंचनीलंबावृषमुत्सृजेत् ५५
कांक्षंतिपितरःसर्वे नरकांतरभीरवः
गयांयास्यतियःपुत्रस्सनस्त्राताभविष्यति ५६
फल्गुतीर्थेनरःस्नात्वाद्दष्ट्वादेवंगदाधरं

जिस के पुत्र न हो उसको ही पिंड और जलदानके हेतु बडे यत्न से जिस किसी से पुत्रका प्रतिनिधि(दत्तक पुत्र)करना ५२

जो पैदा हुए और जीते पुत्र के मुख को पिता देखले तो इस पुत्र कोऋणसौंप करपितापितरों के ऋण से छूटता है और मोक्ष को प्राप्त होजाता है ५३

उत्पन्न हुए पुत्र से ही पिता पितरों का अनृणी होता है और उसी दिन शुद्ध होजाता है क्योंकि वह पुत्र पिता को नरक से रक्षा करता है ५४

बहुत पुत्रोंके मध्यमें यदि एक भी पुत्र गयाजीको जायअथवा नीले बैल से वृषोत्सर्ग करै वह मानो अश्वमेध यज्ञ करता है ५५

अन्य२ नरकों से डरते हुए पितर यह इच्छा करते हैं कि जो पुत्र गया को जायगा वह हमारा रक्षक होगा ५६

फल्गुतीर्थ में स्नान और गदाधर(जोगया मेंहैं)देवता के दर्शन

गयाशीर्षंपदाक्रम्यमुच्यतेब्रह्महत्यया ५७
महानदीसुपस्पृश्यतर्पयेत्पितृदेवताः
अक्षयाँल्लभतेलोकान्कुलंचैवसमुद्धरेत् ५८
शंकास्थानेसमुत्पन्नेभक्ष्यभोज्यविवर्जिते
आहारशुद्धिंवक्ष्यामितन्मेनिगदतःशृणु ५९
अक्षारंलवणंरौक्षंपिबेद्ब्राह्मींसुवर्चलं
त्रिरात्रंशंखपुष्पींवाब्राह्मणःपयसासह ६०
मद्यभांडेद्विजःकश्चिदज्ञानात्पिबतेजलं
प्रायश्चित्तंकथंतस्यमुच्यतेकेनकर्मणा ६१
पालाशबिल्वपत्राणिकुशान्पद्मान्युदुंबरं
क्वाथयित्वापिबेदापस्त्रिरात्रेणैवशुद्ध्यति ६२

कर के और गयासुर के शिर पर चरण रखकर ब्रह्महत्या से भी मनुष्य छूट जाता है ५७

जो महानदी में स्नान कर के पितर और देवताओं का तर्पण करता है वह अक्षय लोकों को प्राप्त होता है और अपने कुलका उद्धार करता है ५८

भक्ष्य और भोज्य हीन देश में जो शंका उत्पन्न होजाय तो भोजन की शुद्धि को कहताहुं उस को कहते हुए मुझसे सुनो ५९

क्षार जिस में नहो ऐसे अन्न अथवा लवण-अथवा रूखा अन्न खाय अथवा कांति की दाता ब्राह्मी अथवा शंख पुष्पी औषधि को दूध के संग तीन रात्रि तक पीवे ६०

मदिराके पात्रमें यदि कोई द्विज अज्ञानसे जलपान करले तो उसकाकैसेप्रायश्चित्तहो और वह किसकर्मकेकरनेसेदोषसेछूटे६१

ढाक और बेल के पत्ते और कुशा, कमल, गूलर, इनके क्वाथ के जल को तीन रात्र पीने से शुद्ध होजाता है ६२

सायंप्रातस्तुयःसन्ध्यांप्रमादाद्विक्रमेत् नकृत्
गायत्र्यास्तुसहस्रंहिजपेत्स्नात्वासमाहितः ६३
रोगाक्रांतोथवाऽस्नातःस्थितःस्नानजपाद्वहिः
ब्रह्मकूर्चंचरेद्भक्त्यादानंदत्वाविशुद्ध्यति ६४
गवांशृंगोदकेस्नात्वामहानद्युपसंगमे
समुद्रदर्शनेवापिव्यालदष्टःशुचिर्भवेत् ६५
वृकश्वानशृगालैस्तुयदिदष्टस्तुब्राह्मणः
हिरण्योदकसंमिश्रंघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति ६६
ब्राह्मणीतुशुनादष्टाजंबुकेनवृकेणवा
उदितंग्रहनक्षत्रंदष्ट्वासद्यःशुचिर्भवेत् ६७
सव्रतस्तुशुनादष्टस्त्रिरात्रमुपवासयेत्

सायंकाल अथवा प्रातःकाल यदि प्रमादसे संध्यावंदनको जो त्याग दे तो स्नान करके और सावधानहोकर एकसहस्र गायत्री जपै ६३

रोग से जो स्नान न करसके और स्नान करके जो जप न कर सके वह मनुष्य भक्तिसे ब्रह्मकूर्चकरै और दानदेकर शुद्धहोताहै ६४

जिस मनुष्य को सांपने काटा हो वह गौओं के सीगों के जल में अथवा वड़ी नदी (गंगा यमुना आदि) के संगम में स्नान करके अथवा समुद्र के दर्शन से शुद्ध होता है ६५

भेड़िया—कुत्ता और गीदड—जिस ब्राह्मण को काटें वह सोने के जलसे मिले घीको खाकर शुद्ध होता है ६६

जिस ब्राह्मणीको कुत्ता गीदड़ भिडिया काटे तो वह उदय हुए ग्रह नक्षत्रों को देखकर शीघ्रही शुद्ध होजाती है ६७

व्रतवाला ब्राह्मण कुत्ते के काटने से तीनदिन तक उपवा

सघृतंपावकंप्राश्यव्रतशेषंसमापयेत् ६८
मोहात्प्रमादात्संलोभाद्व्रतभंगंतुकारयेत्
त्रिरात्रेणैवशुध्येतपुनरेवव्रतीभवेत् ६९
ब्राह्मणानांयदुच्छिष्टमश्नात्यज्ञानतोद्विजः
दिनद्वयंतुगायत्र्याजपंकृत्वाविशुद्ध्यति ७०
क्षत्रियान्नंयदुच्छिष्टमश्नात्यज्ञानतोद्विजः
त्रिरात्रेणभवेत्शुद्धिर्यथाक्षत्रेतथाविशि ७१
अभोज्यान्नंतुभुक्तान्नंस्त्रीशूद्रोच्छिष्टमेववा
जग्ध्वामांसंसमक्षंचसप्तरात्रंयवान्पिबेत् ७२
असंस्पृष्टेनसंस्पृष्टःस्नानंतेनविधीयते
तस्यचोच्छिष्टमश्नीयात्षण्मासान्कृच्छ्रमाचरेत् ७३

करै घृत सहित अग्नि को खाकर शेष व्रत को समाप्त करै ६८

मोह अथवा प्रमाद से अथवा लोभ से जो किसी के व्रत के भंग को कराद वह तीन रात्र में शुद्ध होता है और फिर व्रतवाला होजाता है ६९

जो ब्राह्मण अज्ञान से ब्राह्मणों के उच्छिष्ट को खाले तो दो दिन तक गायत्री का जप करके शुद्ध होता है ७०

क्षत्री अथवा वैश्य के उच्छिष्ट को जो ब्राह्मण अज्ञान से भक्षण करले तो तीन रात्र गायत्री के जप से शुद्ध होता है ७१

भक्षण के अयोग्य अन्न को अथवा स्त्री और शूद्र के उच्छिष्ट अन्नको अथवा प्रत्यक्ष में मांस को खाकर ब्राह्मण सात दिन तक जौंको पीवे ७२

स्पर्श करने के अयोग्य का जो मनुष्य स्पर्श करै तो वह स्नान सेही शुद्धहै और उसके उच्छिष्टको खाकर छःमहीनेतक कृच्छ्र करै ७३

अज्ञानात्प्राश्यविरामूत्रंसुरासंस्पृष्टमेववा
पुनःसंस्कारमर्हंतित्रयोवर्णाद्विजातयः ७४
वपनंमेखलादंडंभैक्ष्यंचर्याव्रतानिच
निवर्ततेद्विजातीनांपुनःसंस्कारमर्हति ७५
गृहशुद्धिं प्रवक्ष्यामिअंतःस्थशवदूषिताम्
प्रयोज्यंमृन्मयंभांडसिद्धमन्नंतथैवच ७५
गृहान्निष्क्रम्यतत्सर्वंगोमयेनोपलेपयेत्
गोमयेनोपलिप्याथछागेनाघ्रापयेत्पुनः ७७
ब्राह्मैर्मंत्रैस्तुपूतंतुहिरण्यकुशवारिभिः
तेनैवाभ्युक्ष्यतद्वेश्मशुध्यतेनात्रसंशयः ७८
राज्ञाऽन्यैःश्वपचैर्वापिबलाद्विचलितोद्विजः

अज्ञान से विष्ठा अथवा मूत्र अथवा मदिरा जिसमें मिली हो इनको खाकर तीनों द्विजाति वर्ण फिर संस्कार के योग्य होतेहैं ७४

मुंडन—मेखला—दंड—भिक्षाकामांगना—और व्रत ये सब (जो यज्ञोपवीत के समय होते हैं) द्विजातियों के निवृत्त(नष्ट) हो जाते हैं और फिर संस्कार के योग्य होते हैं ७५

भीतरपड़ा है शव(मुर्दा)जिसमें ऐसे घरकी शुद्धिकहताहुं मिट्टी केपात्रों को वर्तें और सिद्ध(अन्यने बनाया)अन्न को भक्षणकरै ७६

घरसे बाहर शव को निकासकर गोबर से घरको लिपावे और गोबरसे लिपाकर बकरीसेसूंघावे(बकरीका मुख शुद्ध होताहै)७७

ब्रह्मा है देवता जिनका ऐसे वेदके मंत्रों से पवित्र किया घर फिर वेद के मंत्र और सोने और कुशाओं के जल के साथ छिड कनेसे शुद्ध होता है इस में संशय नहीं है ७८

राजा अथवा इतर अथवा चांडाल यदि द्विजको धर्म से

पुनःकुर्वीतसंस्कारंपश्चात्कृच्छ्रत्रयंचरेत् ७६
शुनाचैवतुसंस्पृष्टस्तस्यस्नानंविधीयते
तदुच्छिष्टंतुसंप्राश्ययत्नेनकृच्छ्रमाचरेत् ८०
अतःपरंप्रवक्ष्यामिसूतकस्यविनिर्णयं
प्रायश्चित्तंपुनश्चैवकथयिष्याम्यतःपरं ८१
एकाहात्शुद्ध्यतेविप्रोयोग्निवेदसमन्वितः
त्र्यहात्केवलवेदस्तुनिर्गुणोदशभिर्दिनैः ८२
व्रतिनःशास्त्रपूतस्यआहिताग्नेस्तथैवच
राज्ञांतुसूतकंनास्तियस्यचेच्छंतिब्राम्हणाः ८३
ब्राम्हणोदशरात्रेणद्वादशाहेनभूमिपः
वैश्यःपंचदशाहेनशूद्रोमासेनशुद्ध्यति ८४

चलायमानकरदें तो फिर वह द्विज संस्कार और तीनकृच्छ्रकरै७८

जिसको कुत्तेने छूलिया हो वह स्नान करै और कुत्ते केझूट को खाकर यत्न से कृच्छ्र करै ८०

इससे आगे सूतक का निर्णय कहताहुं और उसके आगे प्रायश्चित्त (पापकी शुद्धि) कहूंगा ८१

जोब्राह्मण अग्नि होत्री और वेद पाठी भीहोवह एक दिनमें शुद्ध होता है और जो केवल वेद पाठी हीहो वह तीन दिन में और निर्गुण ब्राह्मण दश दिन में शुद्ध होता है ८२

व्रतवाला अथवा शास्त्र के अनुसार पवित्र अथवा जो अग्नि होत्रकरताहोऔर राजा इनको और जिस के सूतक को ब्राह्मण नचाहैं उस को सूतक नहीं लगता ८३

ब्राह्मण दश रात्रमेंऔर क्षत्री बारह दिनमें और वैश्य पंद्रहदिनमें और शूद्र एक महीने में शुद्ध होजाता है ८४

सपिंडानांतुसर्वैषांगोत्रजःसप्तपौरुषः
पिंडांश्चोदकदानंचशावाशौचंतथानुगं ८५
चतुर्थेदशरात्रंस्यात्षडहःपंचमेतथा
षष्ठेचैवत्रिरात्रंस्यात्सप्तमेत्र्यहमेववा ८६
मृतसूतकेतुदासीनांपत्नीनांचानुलोमिनां
स्वामितुल्यंभवेच्छौचंमृतेभर्तरियौनिकं ८७
शवस्पृष्टंतृतीयेतुसचैलंस्नानमाचरेत्
चतुर्थेसप्तभिक्षंस्यादेषशावविधिःस्मृतः ८८
एकत्रसंस्कृतानांतुमातृणामेकभोजिनां
स्वामितुल्यंभवेच्छौचंविभक्तानांपृथक्पृथक् ८९

संपूर्ण सपिंडों के मध्य में सात पीढी तक गोत्रज होता है उसको पिंडों के दान का और जलदान का और शवके आशौच का अधिकार है ८५
चौथी पीढी तक दशरात्र और पांचमी पीढी में छेदिन, और छटी पीढी में तीनरात्र, और सातमी में तीन दिन आशौच होता है ८६
मरे के सूतक में दासी और अनुलोम (पति से नीचे वर्ण की) पत्नियों को पति के तुल्य शौच होता है और पति के मरने पर अपनी योनि (जाति के अनुसार) का शौच होता है ८७
जिस तीसरी पीढीके मनुष्यने शवका स्पर्श किया हो वहसचैल स्नान करे और चौथी पीढी का मनुष्य सात घर की भिक्षा का भक्षण करे—यह शव(मुर्दे)केसूतककी विधि शास्त्र में कही है८८
एक वार हुआ है संस्कार जिनका और जो एक ही जगे नित्य भोजन करती हों ऐसी माताओं को पति की जाति के अनुसार शौच होता है और जो पृथक् २ रहती हों तो अपनी२ जाति का शौच होता है ८९

उष्ट्रीक्षीरमवीक्षीरं पक्वान्नं मृतसूतके
पाचकान्नं नवश्राद्धं भुक्त्वा चांद्रयणं चरेत् ६०
सूतकान्नमधर्माय यस्त्वश्नाति मानवः
त्रिरात्रमुपवासः स्यादेकरात्रं जले वसेत् ६१
महायज्ञविधानं तु न कुर्यान्मृतजन्मनि
होमं तत्र प्रकुर्वीत शुष्कान्नेन फलेन वा ६२
बालस्त्वंतर्दशाहे तु पंचत्वं यदि गच्छति
सद्य एव विशुद्धिः स्यान्न प्रेतं नैव सूतकं ६३
कृतचूडे प्रकुर्वीत उदकं पिंडमेव च
स्वधाकारं प्रकुर्वीत नामोच्चारणमेव च ६४
ब्रह्मचारी यतिश्चैव मंत्रे पूर्वं कृते तथा

ऊंटनी और भेड का दूध और पक्वान्न और पाचक (रसोईया) का अन्न और नवक श्राद्ध (जो मरे के एकादशे के दिन होता है) इनको खाकर चांद्रायण व्रत करे ६०

जो मनुष्य अधर्म के लिये सूतक का अन्न खाता है वह तीनरात्र उपवास करे और एक रात्र जलमें वसे ६१

सूतक और जन्म के सूतक में महायज्ञ की विधि न करै किन्तु उस समय शुष्क अन्न अथवा फल से होम करै ६२

जो वालक दश दिन के भीतर ही मृत्यु को प्राप्त होजाय तो शीघ्रही शुद्धि होजाती है मरण और जन्म के दोनों सूतक नहीं होते ६३

जो मुंडन करने के पीछे वालक मरै तो पिंड और जल का दान और स्वधाकार और नामका उच्चारण करै ६४

ब्रह्मचारी—संन्यासी—और जिसने सूतक से पहिले मंत्र के

यज्ञेविवाहकालेचसद्यःशौचंविधीयते ९५
विवाहोत्सवयज्ञेषुअंतरामृतसूतके
पूर्वसंकल्पितार्थस्यनदोषश्चात्रिरब्रवीत् ९६
मृतसंजननोद्धैतुसूतकादौविधीयते
स्पर्शनाचमनाच्छुद्धिःसूतिकांचेन्नसंस्पृशेत् ९७
पंचमेहनिविज्ञेयंसंस्पर्शंक्षत्रियस्यतु
सप्तमेहनिवैश्यस्यविज्ञेयंस्पर्शनंबुधैः ९८
दशमेहनिशूद्रस्यकर्तव्यंस्पर्शनंबुधैः
मासेनैवात्मशुद्धिःस्यात्सूतकेमृतकेतथा ९९
व्याधितस्यकदर्यस्यऋणग्रस्तस्यसर्वदा
क्रियाहीनस्यमूर्खस्यस्त्रीजितस्यविशेषतः १००

जपका प्रारंभ करदिया हो उसको, और यज्ञ और विवाह के समय में, उसीसमय शुद्धि होजाती है ९५

विवाह—उत्सव और यज्ञ इनके बीच में जो मरण अथवा जन्म सूतक होजाय तो पूर्व से संकल्प किये पदार्थ के खाने का दोष नहीं यह अत्रि ऋषिने कहा है ९६

मरे बालक के जन्म के पीछे सूतक आदि (मृताशौच जननाशौच) में जलकास्पर्श और विष्णु का नाम लेकर आचमन करने से शुद्धि होजाती है यदि सूतिकाकास्पर्श न करै ९७

पांच में दिन क्षत्रियको और सांतवे दिन वैश्यका स्पर्श करना बुद्धिमानों को जानना ९८

दशमें दिन शूद्रका स्पर्श बुद्धिमान् करै और मरण और जन्म सूतक में एक महीने में अपनी (शूद्रकी) शुद्धि होती है ९९

रोगी—कदर्य, जो सदा ऋणी रहै—क्रिया से हीन—मूर्ख विशेष कर स्त्रीने जिसे जिता हो १००

व्यसनासक्तवित्तस्यपराधीनस्यनित्यशः
श्राद्धत्यागविहीनस्यभस्मांतंसूतकंभवेत् १०१
द्वेकृच्छ्रे परिवित्तेस्तुकन्यायाःकृच्छ्रमेवच
कृच्छ्रातिकृच्छ्रं मातुःस्यात्पितुःसांतपनंकृतं १०२
कुब्जवामनषंढेषुगद्गदेषुजडेषुच
जात्यंधेबधिरेमूकेनदोषःपरिवेदने १०३
क्लीवेदेशांतरस्थेचपतितेव्रजितेपिवा
योगशास्त्राभियुक्तेचनदोषःपरिवेदने १०४
पितापितामहोयस्यअग्रजोवापिकस्यचित्
अग्निहोत्राधिकार्यस्तिनदोषःपरिवेदने १०५

व्यसन(जुआ आदि)में जिसका चित्त आसक्त हो और जो नित्य पराधीन हो—जो कभी भी श्राद्धको न त्यागता हो इतने मनुष्यों को तब तक सूतक है जबतक शव की भस्म(राख)न होजाय १०१

परिवित्ति(जिसने बड़े भाई से पहले विवाह किया हो)को दो कृच्छ्र और कन्या को एक कृच्छ्र और कृच्छ्र अति कृच्छ्र लड़की की माता को और कन्या के दाता को सांतपन—करना १०२

कुबड़ा—बिलदिया—षंढ (जो स्त्री के भोगने में असमर्थ हो) तोतला,बावला—जन्म से अंधा,बहरा—गूंगा—इनके परिवेदन (इनसे पहले छोटे भाई के विवाह करना)में दोष नहीं है १०३

नपुंसक—परदेशी—पतित—संन्यासी—योगशास्त्रमें तत्पर इनके भी परि वेदन में दोष नहीं है १०४

जिसका पिता अथवा पितामह अथवा अपने जेठे भाई का जेठा भाई अग्निहोत्र का अधिकारी हो उसे जेठे भाई से पहिले विवाह करने में दोष नहीं है १०५

भार्यामरणपक्षेवादेशांतरगतेपिवा
अधिकारीभवेत्पुत्रस्तथापातकसंयुगे १०६
ज्येष्ठोभ्राताथदानष्टोनित्यंरोगसमन्वितः
अनुज्ञातस्तुकुर्वीतशंखस्यबचनंयथा १०७
नाग्नयःपरिविंदंतिनवेदानतपांसिच
नचश्राद्धं कनिष्ठोबैबिनाचैवाभ्यनुज्ञया १०८
तस्माद्धर्मंसदाकुर्यात्श्रुतिस्मृत्युदितंचयत्
नित्यंनैमित्तिकंकाम्यंयच्चस्वर्गस्यसाधनम् १०९
एकैकंवर्द्धयेन्नित्यंशुक्ले कृष्णेचह्रासयेत्
अमावास्यांनभुंजीतएवचांद्रायणोविधिः ११०

स्त्री के मरने पर अथवा परदेश में जानेपर अथवा पातक लगने पर पुत्र अग्निहोत्र आदि कर्मों का अधिकारी होता है १०६

यदि जेठा भाई मरगया हो अथवा सदा रोगी रहता हो तो उस की आज्ञा से छोटा भाई शंख ऋषिके वचन के अनुसार विवाह करले १०७

छोटे भाई जेठे भाई की आज्ञा के विनानअग्निहोत्र करसकते, और न वेद पढ सकते, और न तप करसकते, और नश्राद्धकर सकते हैं १०८

तिस से वेद और स्मृतियों में कहे हुए नित्य (संध्या आदि)—नैमित्तिक (जात कर्म आदि)काम्य (यज्ञ आदि)कर्म को और जो स्वर्ग का साधन(दान आदि)हो उसे सदा करै १०९

शुक्लपक्ष में एक२ ग्रास वढावे और कृष्णपक्ष में एक२ ग्रास घटावे और अमावस्या को भोजनसर्वथान करै यहचांद्रायण व्रत की विधि है ११०

एकैकंग्रासमश्नीयात्त्र्यहाणित्रीणिपूर्ववत्
त्र्यहंपरंचनाश्नीयादतिकृच्छ्रंतदुच्यते १११
इत्येतत्कथितंपूर्वैर्महापातकनाशनं
वेदाभ्यासरतंक्षान्तंमहायज्ञक्रियापरं ११२
नस्पृशंतीहपापानिमहापातकजान्यपि
वायुभक्षोदिवातिष्ठेद्रात्रिंनीत्वाप्सुसूर्यदृक् ११३
जपत्वासहस्रंग।यत्र्याशुद्धिर्ब्रह्मवधादृते
पद्मोदुंबरविल्वाश्चकुशाश्वत्थपलाशकाः ११४
एतेषामुदकंपीत्वापर्णकृच्छ्रं तदुच्यते
पंचगव्येच गोक्षीरंदधिमूत्रंशकृद्घृतं ११५

पहिले तीनदिन तक एकर ग्रासका भोजन करै और अगले तीनों दिन में सर्वथा भोजन न करैइसे अति कृच्छ्र कहते हैं १११

यह पहिले ऋषियों ने महापातक के नाश करने हारा प्रायश्चित्त कहा है—वेदों के अभ्यास में तत्पर और क्षमा और पांच यज्ञों के कर्म में रत को ११२

इस लोक में महापातक से पैदा हुए पाप भी स्पर्श नहीं करते दिन में वायु को खाकर टिके और रात्रि को जलों में बैठकर व्यतीत करके सूर्य को देखता हुआ जो ११३

एक हजार गायत्री का जप करता है उसकी ब्रह्महत्या से इतर सब पापों से शुद्धि होती है—कमल—गूलर—बेल—कुशा पीपल और ढाक ११४

इनके जलको पीकर दिनको व्यतीत करै उसे पर्णकृच्छ्र कहते हैं पंचगव्य अथवा पंचगव्य के पृथक् २ द्रव्य गौका दूध—दही मूत्र,गोबर—घी ११५

जग्ध्वापरेन्ह्युपवसेत्कृच्छ्रं सांतपनंस्मृतं
पृथक्सांतपनेद्रव्यैःषडहःसोपवासकः ११६
सप्ताहेनतुकृच्छ्रोयंमहासांतपनंस्मृतं
त्र्यहंसायंत्र्यहंप्रातस्त्र्यहंभुंक्तेत्वयाचितं ११७
त्र्यहंपरंचनाश्नीयात्प्राजापत्योविधिःस्मृतः
सायंतुद्वादशग्रासाःप्रातःपंचदशस्मृताः ११८
अयाचितैश्चतुर्विंशपरैस्त्वनशनंस्मृतम्
कुक्कुटांडप्रमाणंस्यात्यावद्वास्याविशेन्मुखे ११६
एतद्ग्रासंविजानीयाच्छुद्ध्यर्थंकायशोधनं
त्र्यहमुष्णांपिबेदापस्त्र्यहमुष्णांपिबेत्पयः १२०

इसको प्रथम दिन खाकर उपवास करै इसे सांतापनकृच्छ्र कहते हैं—सांतपन कृच्छ्र के पंचगव्य आदि छः पदार्थों को खाकर छः दिन व्यतीत करे और एकदिन उपवास करै११६
यह सातदिन में महासांतपन कृच्छ्र कहा है- तीन दिन सायं-काल को और तीन दिन प्रातः काल को भोजन करै और तीन दिन जो बिना मांगे मिले उसे भोजन करै ११७
और पिछले तीन दिनों में सर्वथा भोजन न करै यह प्राजापत्य की विधि कही है—सायकाल को बारह ग्रास और प्रातः काल को पंद्रह कहे हैं ११८
अथवा विना याचना के चौबीस ग्रास खाने से श्रेष्ठ ऋषियों ने अनशन व्रत कहा है—मुरगे के अंडे के समान जिसका प्रमाण हो अथवा जितना इसके मुख में जा सके ११६
शुद्धि के अर्थ इसे ग्रास जाने और यही देह की शुद्धि करने वाला है—तीन दिन उष्ण जल पीवे और तीन दिन उष्ण दूध पीवे १२०

त्र्यहमुष्णांघृतंपीत्वावायुभक्षोदिनत्रये
षट्पलानिपिबेदापस्त्रिपलंतुपयःपिबेत् १२१
पलमेकंतुवैसर्पिस्तप्तकृच्छ्रं विधीयते
त्र्यहंतुदधिनाभुंक्ते त्र्यहंभुंक्ते चसर्पिषा १२२
क्षीरेणतुत्र्यहंभुंक्ते वायुभक्षोदिनत्रयं
त्रिपलंदधिक्षीरेणपलमेकंतुसर्पिषा १२३
एतदेवव्रतंपुण्यंवैदिकंकृच्छ्रमुच्यते
एकभुक्तेननक्तेनतथैवायाचितेनच १२४
उपवासेनचैकेनपादकृच्छ्रं प्रकीर्तितं
कृच्छ्रातिकृच्छ्रःपयसादिवसानेकविंशतिः १२५
द्वादशाहोपवासेनपराकः परिकीर्तितः

तीन दिन उष्णजी पीवे—तीन दिन वायु का भक्षण करे, छः पल जल पीवे और तीन पल दूध पीवे १२१

एक पल घी पीवे इसे तप्त कृच्छ्र कहते हैं—तीन दिन दही भोजन करे और तीन दिन घी १२२

तीन दिन दूध को और तीन दिन वायुको भक्षण करे दही और दूध तीन २ पल और घी एक पल भोजन करे १२३

यही पवित्र और वेदोक्त कृच्छ्र कहा है—एक वार दिन में भोजन करने से अथवा रात्रि को ही भोजन करने से अथवा बिना मांगे पदार्थ के भोजन करने से १२४

और एक उपवास करने से पाद कृच्छ्र कहा है—दूधको ही पीकर इक्कीस दिन बिताने से कृच्छ्रातिकृच्छ्र कहा है १२५

बारह दिनके उपवाससे पराक व्रतकहा है—खल—कच्चामठा

पिण्याकश्चामतक्रांवुसक्तूनांप्रतिबासरं १२६
एकैकमुपवास : स्यात्सौम्यकृच्छ : प्रकीर्तित :
एषांत्रिरात्रमभ्यासादेकैकस्ययथाक्रमं १२७
तुलापुरुषइत्येषज्ञेय : पंचदशान्हिकः
कपिलायास्तुदुग्धायाधारोष्णांयत्पयःपिबेत् १२८
एषव्यासकृतःकृच्छ्रःश्वपाकमपिशोधयेत्
निशायांभोजनंचैवंतज्ज्ञेयंनक्तमेवतु १२९
अनादिष्टेषुपापेषुचांद्रायणमथोदितम्
अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञैरिष्टैर्द्विगुणदक्षिणैः १३०
यत्फलंसमवाप्नोतितथाकृच्छ्रैस्तपोधनः
वेदाभ्यासरतःक्षांतोनित्यंशास्त्राण्यवेक्षयेत् १३१

जल—सत्तू इनको क्रम से एक २ दिन खावे १२६
और एक उपवास करै इसे सौम्य कृच्छ्र कहते हैं इन पांचों में
से एक२ के तीन रात्रि तक क्रम से अभ्यास करने से १२७
यह पंद्रह दिन का तुला पुरुष होता है—दुही हुई कपिला गौ
के धारोष्ण अर्थात् स्वाभाविक उष्ण दूधको जो पीवे १२८
यह व्यासजी कारचा (किया) कृच्छ्र चांडाल कोभी शुद्ध करता है
रात्रि में ही भोजन करना इसे नक्त कहते हैं १२९
अनादिष्ट पापों (जिनका शास्त्रमें प्रायश्चित्त नहीं है) की शुद्धि में
चांद्रायण कहा है—दूनी है दक्षिणा जिनमें ऐसे किये हुए
अग्निष्टोम आदि यज्ञों के करने से १३०
जिन फलोंको प्राप्त होता है उन्ही फलोंको कृच्छ्रोंके करनेसे तप
स्विरी मनुष्य प्राप्त होता है और वेद के पढने में तत्पर और
दुर्बलऔरनित्यशास्त्रकेदेखने हारेको भी वही फलमिलताहै १३१

शौचमृद्वार्यभिरतो गृहस्थोपिहिमुच्यते
उक्तमेतद्विजातीनांमहर्षेश्रूयतामिति १३२
अतःपरंप्रवक्ष्यामिस्त्रीशूद्रपतनानिच
जपस्तपस्तीर्थयात्राप्रव्रज्यामंत्रसाधनं १३३
देवताराधनंचैवस्त्रीशूद्रपतनानिषट्
जीवद्भर्तरियानारीउपोष्यव्रतचारिणी १३४
आयुष्यंहरतेभर्तुःसानारीनरकंव्रजेत्
तीर्थस्नानार्थिनीनारीपतिपादोदकंपिबेत् १३५
शंकरस्यापिविष्णोर्वाप्रयातिपरमंपदं
जीवद्भर्तरिवामांगीमृतेवापिसुदक्षिणे १३६

शौच को जो गृहस्थी मिट्टी और जल से करता है वह पापों से छूट जाता है हे महान् ऋषियो तुम सुनो यह द्विजातियों का धर्म कहा १३२

इससे आगे स्त्री और शूद्रों के पतित होने के कारणों को कहता हुं जप—तप—तीर्थों की यात्रा—संन्यास मन्त्र को सिद्ध करना—१३३ और देवता को आराधना येछःकर्म स्त्री और शूद्रों के पतित करने के हेतु हैं जो स्त्री पति के जीते हुए उपवास व्रत करती है १३४

वह स्त्री अपने पति की अवस्था को हरती है और आप नरक को जाती है—जो स्त्री को तीर्थ के स्नान की इच्छा होय तो अपने पति के चरणों को धोकर पावे १३५

शिव अथवा विष्णु के पद को अर्थात् कैलाश और बैकुंठ को वह स्त्री प्राप्त होती है—पति के जीते हुए स्त्री वामअंग में स्थित होती है और पति के मरे पीछे दक्षिण अंगमें १३६

श्राद्धे यज्ञे विवाहे च पत्नी दक्षिणतः सदा
सोमः शौचं ददौ तासां गंधर्वश्च तथा गिरा : १३७
पावकः सर्वमेध्यं च नेध्यं वै योषितां सदा
जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्कारैर्द्विज उच्यते १३८
विद्यया याति विप्रत्वं श्रोत्रियस्त्रिभिरेव च
वेदशास्त्राण्यधीते यः शास्त्रार्थं च निबोधयेत् १३९
तदासौ वेदवित्प्रोक्तो वचनं तस्य पावनं
एकोऽपि वेदविद्धर्मं यं व्यवस्येद् द्विजोत्तमः १४०
स ज्ञेयः परमो धर्मो नाज्ञानामयुतायुतैः
पावका इव दीप्यंते तपहोमैर्द्विजोत्तमाः १४१

श्राद्ध—यज्ञ—विवाह में सदा पत्नी दक्षिण की ओर बैठती है चंद्रमा और गंधर्व और अंगिरा (बृहस्पति) ने उन स्त्रियों के शौच (शुद्धता) दिया है १३७

और अग्नि ने सब अंगों की पवित्रता दीहै इसीसे स्त्रियों की सदा पवित्रता है—जन्म से ब्राह्मण संज्ञा होती है १३८

विद्या के पठने से विप्रसंज्ञा और जन्म, यज्ञोपवीत और विद्या से श्रोत्रिय संज्ञा होती है—जो वेद और शास्त्र को पढे और शास्त्र के अर्थ को बतावे १३९

उस समय इस ब्राह्मण को वेदवित् (वेद जाननेवाला) कहते हैं उसका वचन पवित्र करने वाला है—एकभी वेदकेजाननेवाला द्विजों में उत्तम जिस धर्मका निर्णय करदे १४०

वही परम धर्म जानना और मूर्खों के दश सहस्त्रों के दश सहस्त्र भी जिसे कहैं वह धर्म नहीं जानना—जप और होम करने से ब्राह्मणों में उत्तम अग्नि के समान दिपते हैं १४१

प्रतिग्रहेण नश्यंति वारिणा इव पावकः
तान् प्रतिग्रहजान् दोषान् प्राणायामैर्द्विजोत्तमाः १४२
नाशयंति हि विद्वांसो वायुर्मेघानिवांबरे
भुक्तमात्रो यदा विप्र आर्द्रपाणिस्तु तिष्ठति १४३
लक्ष्मीर्बलं यशस्तेज आयुश्चैव प्रहीयते
यस्तु भोजनशालायां मासनस्थ उपस्पृशेत् १४४
तच्चान्नं नैव भोक्तव्यं भुक्त्वा चांद्रायणं चरेत्
पात्रोपरिस्थिते पात्रे यस्तु स्थाप्य उपस्पृशेत् १४५
तस्यान्नं नैव भोक्तव्यं भुक्त्वा चांद्रायणं चरेत्
न देवास्तृप्तिमायांति दातुर्भवति निष्फलं १४६

और द्विजों में उत्तम वे प्रतिग्रह लेने से इसप्रकार नष्ट हो जाते हैं जैसे जल से अग्नि' और प्रतिग्रह से उत्पन्न हुए उन दोषों को द्विजों में उत्तम प्राणायामों से १४२
इस प्रकार नष्टकरते हैं जैसे आकाश में मेघों को वायु—जो भोजन करने के अनंतर ब्राह्मण आर्द्र(गीले)हाथ रक्खे ३३४
लक्ष्मी—बल—यश—तेज—और अवस्था ये पांचों उसके नष्ट होजाते हैं - जो भोजन के स्थान में आसन पर बैठाहुआ अर्थात् भोजन करता हुआ अन्न को छूले १४४
उस अन्न को न खावे और खाय तो चांद्रायण व्रत करे—पात्र के ऊपर रक्खे हुए पात्रका जो स्पर्श करले अर्थात् उस पात्र के अन्न को छूले १४५
उसके भी अन्न को भक्षण न करे और भक्षण करले तो चांद्रायण व्रत करे' उस के देवता भी तृप्तनहीं होते और दाता का दान भी निष्फल होता है १४६

हस्तंप्रक्षालयित्वायःपिबेद्भुक्त्वाद्विजोत्तमाः
तदन्नमसुरैर्भुक्तं निराशाःपितरोगताः १४७
नास्तिवेदात्परंशास्त्रंनास्तिमातुःपरोगुरुः
नास्तिदानात्परंमित्रमिहलोकेपरत्रच १४८
आपात्रेष्वपियद्दत्तंदहत्यासप्तमंकुलं
हव्यंदेवानगृह्णंतिकव्यंचपितरस्तथा १४९
आयसेनतुपात्रेणयदन्नमुपदीयते
श्वानविष्टासमंभुक्तंदाताचनरकंव्रजेत् १५०
पित्तलेनतुपात्रेणदीयमानंविचक्षणः
नदद्याद्वामहस्तेनआयसेनकदाचन १५१

जो द्विजों में उत्तम भोजन करने के अनंतर हाथों को धोकर उसी जल को पीता है उस श्राद्ध के अन्न को मानो राक्षसों ने खाया और पितर निराश गये १४७

इसलोक और परलोक में वेदसे परे शास्त्र नहीं और माता से परे गुरु भी नहीं और दानसे परे मित्र नहीं १४८

जो दान कुपात्र को दिया है वह दान सात पीढी तक दग्ध(नष्ट) करता है कुपात्र कोदिये हव्य को देवता और कव्य को पितर ग्रहण नहीं करते हैं (जो देवताओं को दियाजाता है उसे हव्य, और जो पितरों को दियाजाता है उसे कव्य कहते हैं) १४९

लोहे के पात्र से जो अन्न परसा जाता है उस अन्न को भोजन करने वाला कुत्ते के विष्टा के तुल्यखाता है और उस अन्न का दाता नरक को जायगा १५०

देने के योग्य अन्न को बुद्धिमान् पुरुष पीतल के औरलोहे के पात्रमें रखकरऔरबायें हाथसे,कदाचित् भी न परसे १५१

मृन्मयेषुचपात्रेषुयःश्राद्धेभोजयेत्पितृन्
अन्नदाताचभोक्ताचतावेवनरकंव्रजेत् १५२
अभावेमृन्मयेदद्यादनुज्ञातस्तुतैर्द्विजैः
तेषांवचःप्रमाणंस्यात्यदन्नंचातिरिक्तकं १५३
सौवर्णायसताम्रेषुकांस्यरौप्यमयेषुच
भिक्षादातुर्नधर्मोस्तिभिक्षुर्भुक्तेतुकिल्बिषं १५४
नचकांस्येषुभुंजीयादापद्यपिकदाचन
मलाशाःसर्वएवैतेयतयःकांस्यभोजनाः १५५
कांस्यकस्यचयत्पात्रंगृहस्थस्यतथैवच
कांस्यभोजीयतिश्चैवप्राप्नुयात्किल्बिषंतयोः१५६

मिट्टी के पात्रोंमे जो अपने पितरों को भोजन कराता है वह अन्न के देनेवाला और भोजन करने वाला दोनों नरक में जांयगे १५२ और जो शास्त्रोक्त पात्र ने मिले तो उन्हों ब्राह्मणों की आज्ञा से मिट्टी के पात्रसे ही अन्न को परसदे क्योंकि उनका वचन प्रमाण है—और जो अन्न ब्राह्मणों के भोजन से बचे १५३
उस अन्नको यदि सोने—लोहे—तांमे—कांसी चांदी के पात्र में भिखारी को देय तो भिक्षा के दाता का कुछ धर्म नहीं है और भिखारी पापका भोक्ता होता है। १५४
संन्यासी आपत्ति की अवस्था में भी कांसी के पात्र में भोजन कदाचित् भी न करै क्योंकि जो सन्यासी कांशी के पात्र में भोजन करने वाले हैं वे संपूर्ण मल के खाने वाले हैं। १५५
जो कांशी का पात्र हो और गृहस्थी काहो और उस पात्र में सन्यासी भोजन करै तो उन दोनों के दोष को संन्यासी प्राप्त होता है १५६

अत्राप्युदाहरंति
सौवर्णायसताम्रे पुकांस्यरोप्यमयेपुच
भुंजन्भिक्षुर्वैदुःष्येतदुष्येच्चैवपरिग्रहे १५७
यतिहस्तेजलंदद्याद्भिक्षांदद्यात्पुनर्जलं
तद्भैक्षंमेरुणातुल्यंतज्जलंसागरोपमं १५८
चरेन्माधुकरींवृत्तिंअपिम्लेच्छकुलादपि
एकान्नंनैवभोक्तव्यंवृहस्पतिसमोयदि १५६
अनापदिचरेद्यस्तुसिद्धं भैक्षंगृहेवसन्
दशरात्रंपिवेद्वज्रमापस्त्र्यहमेवच १६०
गोमूत्रेणतुसंमिश्रंयावकंघृतपाचितं

इस विषय में और ऋषि भी कहतेहैं कि सोने—लोहे तामे कांसी—चांदी के पात्रें में भोजन करता हुआ संन्यासी और जिस पदार्थ को इनमें ग्रहण करै वह पदार्थ, ये दोनों दुष्ट (निषिद्ध) हैं १५७
प्रथम सन्यासी के हाथ में जल दे फिर भिक्षा दे और फिर जल दे इस प्रकार देने से वह भिक्षा का अन्न मेरु पर्वत के समान और वह जल समुद्र के समान है। १५८
संन्यासी म्लेच्छों के कुल में से मधुकरकी वृत्ति (जैसे भौंरा सब फूलों के थोड़े २ रस को लेता है और उन्हें नष्ट नहीं करता) से निर्वाह करै परन्तु एक के अन्न को भक्षण न करे चाहे वह देने वाला वृहस्पति के समान भी हो १५६
जो सन्यासी विना आपत्तिके समय घरमें वसता हुआसिद्ध(बनी बनाई) भिक्षा को खाता है वह दश रात्र तक वज्र को पीवे और तीन दिन जल पीवे (तब शुद्ध होता है) १६०
घी में पका और गो मूत्र जिसमें मिला हो ऐसे जौके चून को

एतद्वज्रमितिप्रोक्तं भगवानत्रिरब्रवीत् १६१
ब्रम्हचारीयतिश्चैवविद्यार्थीगुरुपोषकः
अध्वगःक्षीणवृत्तिश्चषडेतेभिक्षुकाःस्मृताः १६२
षणमासान्कामयेन्मर्त्योगुर्विणीमिवस्त्रियं
आदंतजननाद्दूर्ध्वंएवंधर्मोनहीयते १६३
ब्रम्हहाप्रथमेचैवद्वितीयेगुरुतल्पगः
तृतीयेतुसुरापेयंचथेस्तेयमेवच १६४
आमोवस्त्रंतिलान्भूमिगंधंवासयतेतथा
पापानांचैवसंसर्गःपंचकंपातकंमहत् १६५
एषामेवविशुद्ध्यर्थंचरेत्कृच्छ्रायनुक्रमात्

वज्र कहते हैं यह भगवान् अत्रि ने कहा है २६२
ब्रह्मचारी—सन्यासी—विद्यार्थी—गुरु की पालना करनेवाला, मार्ग में चलने वाला—और जिसकी कोई आजीविका न हो ये छः६ भिक्षुक कहे हैं १६२
गर्भवती स्त्री केसंगछे महीनेतकमनुष्य विषय करै और वालकके होने पर वालक के दांत उपजने के पीछे विषय करै इसप्रकार धर्म नष्ट नहीं होता है १६३
बालक के हुए पीछे पहले मास में ब्रह्महत्या का - दूसरेमासमें गुरु की शय्या में गमन करने का - तीसरे मासमें मदिरा पान का - चौथे मास में चोरी करने का—दोष लगता है २६४
विना रंगावस्त्र—तिलक - भूमिकासंग्रह —सुगन्ध का लगाना पापियों का संसर्ग ये पांच वड़े पातक सन्यासी के हैं २६५
इनकी ही शुद्धि के अर्थ क्रमसे तीन वर्ष तक कृच्छ्र करै—और

त्रीणिवर्षाणयकामश्चेद्ब्रह्महत्यापृथक्पृथक् १६६
अर्द्धंतुब्रह्महत्यायाः क्षत्रियेपुविधीयते
षड्भागोद्वादशश्चैवतथाविट्शूद्रयोर्भवेत् १६७
त्रीन्मासाननक्तमश्नीयाद्भूमौशयनमेवच
स्त्रीघातीशुद्ध्यतेप्येवंचरेत्कृच्छ्राब्दमेववा १६८
रजकःशैलुषश्चैववेणुकर्मोपजीविनः
एतेषांयस्तुभुंक्तेन्नंद्विजश्चांद्रायणंचरेत् १६९
सर्वांत्यजानांगमनेभोजनेसंप्रवेशने
पराकेणविशुद्धिःस्याद्भगवानत्रिरब्रवीत् १७०
चांडालभांडयत्तोयंपीत्वाचैवद्विजोत्तमः

यदिकृच्छ्र करने को इच्छा न होय तो पृथक्२ब्रह्म हत्या लगती है १६६
क्षत्री को आधी ब्रह्म हत्या' और वैश्य को छटा भाग, और शूद्र को बार वां भाग ब्रह्महत्या का लगता है १६७
जिसने स्त्री की हत्या की हो वह मनुष्य तीन मास तक रात्रि में ही भोजन करै और पृथवी पर सोवे और एक वर्ष तक कृच्छ्र व्रत करै इस प्रकार करने से शुद्ध होता है १६८
धोबी—नट—बांसोंसे आजीवका करने वाले' इनके अन्न को जो द्विज भक्षण करता है वह चांद्रायणव्रत करै १६९
संपूर्ण अंत्यजों के संगगमन(जाना)और भोजन करने और संग बैठने से पराक व्रत से शुद्धि होती है यह भगवान् अत्रिने कहा है १७०
चांडाल के पात्र में जो जल है उसे पीकर द्विजों में उत्तम

गोमूत्रयावकाहारःसप्तषट्त्रिंशदहान्यपि १७१
संस्पृष्टंयस्तुपक्वान्नमंत्यजैर्वाप्युदक्यया
अज्ञानाद्ब्राम्हणोश्नीयात्प्राजापत्यार्द्धमाचरेत्१७२
चांडालान्नंयदाभुंक्तेचातुर्वर्ण्यस्यनिष्कृतिः
चांद्रायणंचरेद्विप्रःक्षत्रःसांतपनंचरेत् १७३
षट्रात्रमाचरेद्वैश्यःपंचगव्यंतथैवच
त्रिरात्रमाचरेच्छूद्रोदानंदत्वाविशुद्धयति १७४
ब्राम्हणोवृक्षमारूढश्चांडालोमूलसंस्थितः
फलान्यत्तिस्थितस्तत्रप्रायश्चित्तंकथंभवेत् १७५
ब्राम्हणान्समनुप्राप्यसवासाःस्नानमाचरेत्
नक्तभोजीभवेद्विप्रोघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति १७६

---

२१ दिन तक गोमूत्र और जोंको खाकर शुद्ध होता है १७१
अंत्यजा अथवा ऋतुवालीके स्पर्श किये हुए पक्वान्नको यदि अज्ञान
से ब्राह्मण भक्षण करले तो आधे प्रजापत्य व्रत को करै १७२
यदि चांडाल के अन्न को चारों वर्ण खालें तो उनका क्रम से
यहप्रायश्चित्तहै किब्राह्मणचांद्रायणव्रत'औरक्षत्रीसांतपन'करै१७३
छः दिनतक वैश्य पांचगव्य को भक्षण करै' और शूद्र तीन दिन
तक' और शूद्र दान देकर भी शुद्ध होजाता है १७४
जो ब्राह्मण वृक्षके ऊपर चढाहो और चांडालउस वृक्ष के मूलको
(जड)छूरहाहो औरब्राह्मण उस वृक्ष के फल को खारहा हो तो
ऐसी अवस्था में प्रायश्चित्त क्यों होहो १७५
ब्राह्मणों से आज्ञा लेकर वस्त्रों सहित स्नान करै और दिनमें उप
वास करके रात्रि को भोजन करै और घृत को खाकर ब्राह्मण
शुद्ध होता है १७६

एकवृक्षसमारूढश्चांडालोब्राम्हणस्तथा
फलान्यत्तिस्थितःतत्रप्रायश्चित्तं कथंभवेत् १७७
ब्राम्हणान्समनुज्ञाप्यसवासाःस्नानमाचरेत्
अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति १७८
एकशाखासमारूढश्चांडालोब्राम्हणोयदा
फलान्यत्तिस्थितस्तत्रप्रायश्चित्तंकथंभवेत् १७९
त्रिरात्रोपोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति
स्त्रियोम्लेच्छस्यसंपर्कात्शुद्धिःसांतपनेतथा १८०
तप्तकृच्छ्रं पुनःकृत्वाशुद्धिरेषाविधीयते
संवर्तैतयथाभार्यांगत्वाम्लेच्छस्यसंगतां १८१
सचैलंस्नानमादायघृतस्यप्राशनेनच

यदि चांडाल और ब्राह्मण एक वृक्षपर चढे हुए वृक्ष के फलों को खारहेहों तो वहां प्रायश्चित्त कैसे हो १७७
ब्राह्मणों की आज्ञा से सचैलस्नान करै—और एक रात्रि दिन उपवास करके पंचगव्य पीने से शुद्ध होता है १७८
यदि एकही शाखापर चढेहुए ब्राह्मण और चांडाल फलों को खारहेहों तो ऐसेस्थल में प्रायश्चित्त कैसेहो १७९
तीन रात्रि तक उपवास करके पंचगव्य पीने से शुद्ध होता है और म्लेच्छ की स्त्रीके साथसंगकरने पर सांतपन कृच्छ्र करने से शुद्धि है १८०
फिर तप्त कृच्छ्रकरै यह शुद्धि शास्त्र में कही है—म्लेच्छने कियाहै संग जिसका ऐसी अपनी भार्याके संग भोगकरके ऐसे बर्तै १८१
कि सचैल स्नान करै और केवल घृत का भक्षण करै—केश

केशकीटनखस्नायुअस्थिकंटकमेवच १८२
स्पृष्ठोनद्युदकेस्नात्वाघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति
संग्रहीतामपत्यार्थमन्यैरपितथापुनः १८३
चांडालम्लेच्छश्वपचकपालव्रतधारिणः
अकामतःस्त्रियोगत्वापराकेणविशुद्ध्यति १८४
कामतस्तुप्रसूतोवातत्समानात्रसंशयः
सएवपुरुषस्तत्रगर्भोभूत्वाप्रजायते १८५
तैलाभ्यक्तोघृताभ्यक्तोविण्मूत्रंकुरुतेद्विजः
तैलाभ्यक्तोघृताभ्यक्तश्चांडालंस्पृशतेद्विजः १८६
अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति

कीट—नख—स्नायु—अस्थि (हाड) कांटे। १८२
इनका स्पर्श करके नदी के जल में स्नान और घृत को भक्षण करके शुद्ध होता है—संतान के लिये इतर मनुष्यों ने ग्रहण की स्त्री को और तिसी प्रकार १८३
चांडाल—म्लेच्छ—श्वपच—कपालव्रत के धारण करने वाले (अघोरी) इच्छा के विना इनकी स्त्रियोंके साथ संग करके पराक व्रत से विशेषकर शुद्धि होती है। १८४
और इच्छा से पूर्वोक्त स्त्रियों के साथ संग करके अथवा संतान के उत्पन्न होने पर उन स्त्रियों की ही समान जाति में होते हैं इसमें संशय नहीं हैक्योंकि वह पुरुषही गर्भ रूप होकर उत्पन्न होता है १८५
जो द्विज तेल अथवा घृतसे उबटना करके शौच को जाता है अथवा लघुशंका कोकरता है अथवा चांडालका स्पर्श करताहै१८६
वह दिन रात्रि काएक उपवास कर के पंचगव्य पीनेसे शुद्ध हो

मत्स्यास्थिजंबुकास्थीनिनखशुक्तिकपर्द्दिकाः १८७
होमतप्तघृतंपीत्वातत्क्षणादेवनश्यति
गोकुलेकंदुशालायांतैलचक्रेक्षुयंत्रयोः १८८
अमीमांस्यानिशौचानिस्त्रीणांचव्याधितस्यच
नस्त्रीदुष्यतिजारेणब्राम्हणोवेदकर्मणा १८९
नापोमूत्रपुरीषाभ्यांनाग्निर्दहतिकर्मणा
पूर्वंस्त्रियःसुरैर्भुक्तासोमगंधर्ववन्हिभिः १९०
भुंजतेमानवाःपश्चान्नवादुष्यंतिकर्हिचित्
असवर्णस्तुयोगर्भःस्त्रीणांयोनौनिषेच्यते १९१

ता है—मत्स्य के और—गीदड़ के अस्थि—नख—सीपी—और कौडी इनके स्पर्श से जो दोष होता है। १८७

वह होम के उष्ण घी के पीने से उसी क्षण में नष्ट होजाता है गौओं के कुल—कंदुशाला (भाड) में—तेल निकासने के (कोल्हू) में और गांड़े के यंत्र (कोल्हू)में। १८८

स्त्रियों और रोग की अवस्था में शुद्धता का विचार नहीं करना अर्थात् सर्वदा शुद्ध हैं स्त्री जारपन से और ब्राह्मण वेदोक्त कर्म (हिंसाआदि) के करने से दूषित नहीं होते। १८९

मूत्र और विष्ठा के पडने से जल(तडाग आदि)और कर्म किया है जिस में ऐसी अग्नि दूषित नही होते—प्रथम स्त्रियां चंद्रमा गंधर्व—अग्नि' इन देवताओं ने भोगी १९०

पीछे से मनुष्य इनको भोगते हैं और कभी भी ये स्त्री दूषित नहीं होती—जो असवर्ण (भिन्न जाति का) गर्भ स्त्री की योनि में सींचा जाय १९१

अशुद्धासाभवेन्नारीयावद्गर्भंनमुंचति
विमुक्तेतुततःशल्येरजश्चापिप्रदृश्यते १६२
तदासाशुद्ध्यतेनारीविमलंकांचनंयथा
स्वयंविप्रतिपन्नायायदिवाविप्रतारिता १६३
बलान्नारीप्रभुक्तावाचौरभुक्तातथापिवा
नत्याज्यादूषितानारीनकामोस्याविधीयते १६४
ऋतुकालउपासीतपुष्पकालेनशुद्ध्यति
रजकश्चर्मकारश्चनटोबुरुडएवच १६५
कैवर्तमेदभिल्लाश्चसप्तैतेअंत्यजाःस्मृताः
एतान्गत्वास्त्रियोमोहात्भुक्त्वाचप्रतिगृह्यच १६६

वह स्त्री इतने अशुद्ध होती है जब तक गर्भको न त्यागे औरगर्भ त्यागकर दुःखकी निवृत्तिहुएपरजोरजदीखे(मासिकधर्महो)१६२ तब वह स्त्री इस प्रकार शुद्ध होती है जैसा निर्मल सोना आपसे किसी मनुष्य के समीप प्राप्त हुई हो अथवा किसी ने छल ली हो १६३

अथवा बल अथवा चोरी से भोगी हो—ऐसी दूषित स्त्री का त्याग न करे क्योंकि स्त्री की इच्छा के अनुसार यह काम नहीं किया गया १६४

ऋतु के समय (रजके दीखने)से १६ सोलह दिन उस स्त्री का संग करे और फिर रज के समय शुद्ध होजाती है—धोबी—चमार—नट—बुरुट (जोबांस की डलियां बनाते हैं) १६५

धीमर—मेदे,कलाल—भील—ये सात अंत्यज कहे हैं—इन जातियोंकी स्त्रीकोभोगकर और इन जातियोंमे भोजनकरके और इन से प्रतिग्रह (दान) को लेकर—१६६

कृच्छ्राब्दमाचरेद्ज्ञानादज्ञानादेवतद्द्वयं
सकृद्भुक्तातुयानारीम्लेच्छैःसापापकर्मिभिः १९७
प्राजापत्येनशुद्ध्येतऋतुप्रस्रवणेनतु
बलोद्धृतास्वयंवापिपरप्रेरितयायदि १९७
सकृद्भुक्तातुयानारीप्राजापत्येनशुद्ध्यति
प्रारब्धदीर्घतपसांनारीणांयद्रजोभवेत् १९८
नतेनतद्व्रतंतासांविनश्यतिकदाचन
मद्यसंस्पृष्ठकुंभेषुयत्तोयंपिबतिद्विजः २००
कृच्छ्रपादेनशुद्ध्येतपुनःसंस्कारमर्हति
अंत्यजस्यतुयेवृक्षाबहुपुष्पफलोपगाः २०१

यदि जान बूझकर पूर्वोक्त तीनों कर्म कियेहों तो एक वर्षतक कृच्छ्र और अज्ञान से दो वर्ष तक कृच्छ्र करै—जो स्त्री म्लेच्छ पापकर्मियों से एक वार भोगीहो १९७

वह स्त्री प्राजापत्य व्रत से और ऋतु (मासिक धर्म) के होने से शुद्ध होती है बलसे पकड़लीहो अथवा स्वयंगईहो अथवा किसी के कहने से गई हो १९८

और एक वार ही भोगीहो तो प्राजापत्य व्रत करनेसे शुद्ध होती है—जिन स्त्रियों ने वहुत दिनों के तप(व्रत)काप्रारंभ किया हो और उनको जो मासिक धर्म होजाय १९९

तोउससेउनस्त्रियों कावहव्रत कदाचित् भी नष्टनहींहोता—मदिरा का स्पर्श जिसमें हुआहो ऐसे घड़े के जलको जो द्विज पीले २००

चौथाई कृच्छ्र करने से शुद्ध होता है और फिर संस्कार के योग्य होता है—अंत्यजों के जो वृक्षहों और उनके वहुत फल पुष्प आतेहों २०१

उपभोग्यास्तुतेसर्वेपुष्पेषुचफलेषुच
चांडालेनतुसंस्पृष्टंयत्तोयंपिवतिद्विजः २०२
कृच्छ्रपादेनशुद्ध्येतआपस्तंबोब्रवीन्मुनिः
श्लेष्मोपानहविण्मूत्रस्त्रीरजोमद्यमेवच २०३
एभिःसंदूषितेकूपेतोयंपीत्वाकथंविधिः
एकंद्व्यहंत्र्यहंचैवद्विजातीनांविशोधनं २०४
प्रायश्चित्तंपुनश्चैवनक्तंशूद्रस्यदापयेत्
सद्योवांतेसचैलं तुविप्रस्तुस्नानमाचरेत् २०५
पर्युषितेत्वहोरात्रमतिरिक्तेदिनत्रयं
शिरःकंठोरुपादांश्चसुरयायस्तुलिप्यते २०६
दशषट्त्रयैकाहंचरेदेवमनुक्रमात्

उन वृक्षों के पुष्प और फलोंके भोगनेका दोष नहीं है—चांडा॰ क स्पर्श किये हुएजल को जो द्विज पीता है २०२
वह चौथाई कृच्छ्र से शुद्ध होता है यह आपस्तंव मुनिने कहा है—कफ—जूता—विष्ठा—मूत्र—स्त्रीकारज—और मदिरा २०३
इनसे भ्रष्ट हुए कूपके जल को पीके कैसे विधि करै ब्राह्मण एक दिन क्षत्री दोदिन, वैश्य तीन दिन व्रत करने सेशुद्ध होते हैं२०४
और फिरप्रायश्चित्त यहहै किशूद्रनक्त(रात्रिहीकोभोजनकरना)करै औरउसी समय सचैल स्नान करै २०५
पर्युषित (वासी) उक्त कूपका जलहोयतो एक रात दिन, और अधिक होयतो तीन दिन उपवास करै—शिर—कंठ—जांघ पैर इनको जो मदिरासे लीपले २०६
यहक्रम सेदश—छः—तीन—एक—दिनके व्रतको करै—इस विषय में और ऋषिभी कहते हैं—कि प्रमादसे मदिरा के पीने

अत्राप्युदाहरंति

प्रमादान्मद्यपसुरांसकृत्पीत्वाद्विजोत्तमः २०७

गोमूत्रयावकाहारोदशरात्रेणशुद्ध्यति

मद्यपस्यनिषादस्ययस्तुभुंक्तेद्विजोत्तमः २०८

गोमूत्रयावकाहारोदशरात्रेणशुद्ध्यति

मद्यपस्यनिषादस्ययस्तुभुंक्तेद्विजोत्तमः २०६

नदेवाभुंजतेतत्रनपिबंतिहविर्जलं

चितिभ्रष्टातुयानारीऋतुभ्रष्टाचव्याधितः २१०

प्राजापत्येनशुध्येतब्राह्मणानांतुभोजनात्

येचप्रव्रजिताविप्राःप्रव्रज्याग्निजलावहाः२११

वाले की मदिराको द्विजों में उत्तम मनुष्य एक वार भी पीकर २०७

गोमत्र और जौंको खाता हुआ दशरात्रमें शुद्ध होता है और जो द्विजों में उत्तम मदिरा पीने वाले और निषादके यहांभोजनकरता है २०८

वहभी गोमत्र और जों को खाता हुआ दश रात्र में शुद्ध होता है—जो द्विजोंमें उत्तम मदिरा पीने वाले और निषादका भोजन खाता है २०६

वहां देवता हवि (साकल्प) को नहीं खाते और नजल पीते हैं जोस्त्री चिति(ज्ञान)से भ्रष्ट(बावली)हो और व्याधिकेद्वारामासिक धर्म से भ्रष्ट होगईहो २१०

वह स्त्री प्राजापत्यब्रत और ब्राह्मणों के जिमाने से शुद्ध होती है—जोब्राह्मण संन्यास की अग्नि और जलमें बहते हुए अर्थात् संन्यासियों के धर्म में आरूढ हुए संन्यासी होगए हैं २११

अनाशकान्निवर्ततेचिकीर्षंतिगृहस्थितिं
धारयेत्त्रीणिकृच्छ्राणिचांद्रायणमथापिवा २१२
जातकर्मादिकंप्रोक्तंपुनःसंस्कारमर्हति
नशौचंनोदकंनाशुनापवादानुकंपने २१३
ब्रम्हदंडहतानांतुनकार्यंकटधारणं
स्नेहंकृत्वाभयादिभ्योयस्त्वेतानिसमाचरेत् २१४
गोमूत्रयावकाहारःकृच्छ्रमेकंविशोधनं [२१५
वृद्धःशौचस्मृतेर्लुप्तःप्रत्याख्यातभिषक्क्रियः
आत्मानंघातयेद्यस्तुभृग्वग्न्यनशनांबुभिः
तस्यत्रिरात्रमाशौचंद्वितीयेत्वस्थिसंचयः २१६

फिर अशक्ति (असामर्थ्य)से संन्यासी के धर्मसेनिवृत्त होते हैं और घरमें स्थिति की इच्छा करते हैं वेतीन कृच्छ्र अथवा चांद्रायण व्रतकी धारणा करैं २१२
और जोजात कर्म आदि संस्कार शास्त्रमें कहेहैं उनके फिरकरने केयोग्य होते हैं—शौच और जलका दान—शीघ्रनिंदा—दया २१३
और सूतक की पिंजरी का उठाना उनके संग नकरै जिनको ब्राह्मणों ने शाप दिया हो और जो स्नेह को कर के किसी भय से पूर्वोक्त शौच आदिको करता है २१४
गोमूत्र और जौं को खाते हुए उसकी एक कृच्छ्रसे शुद्धि होती है—जो पुरुष वृद्ध हो और अशुद्धहो और जिसे कुछ ज्ञान न हो और वैद्यों की चिकित्सा भी जिसने त्यागदीहो २१५
और वहपशु (वृष आदि)अग्नि भोजनकात्याग—और जल,इनसे अपने आत्मा का घात करै तोउस मनुष्य का आशौच (सूतक) तीन रात्रका होता है और दूसरे दिन अस्थि संचय होता है २१६

तृतीयेतूदकंकृत्वाचतुर्थेश्राद्धमाचरेत्
यस्यैकापिगृहेनास्तिधेनुर्वत्सानुचारिणी २१७
मंगलानिकुतस्तस्यकुतस्तस्यतमःक्षयः
अतिदोहातिवाहाभ्यांनासिकाभेदनेनवा २१८
नदीपर्वतसंरोधेमृतेपादोनमाचरेत्
अष्टागवंधर्महलंषड्गवंव्यावहारिकं २१९
चतुर्गवंनृशंसानांद्विगवगववध्यकृत्
द्विगवंवाहयेत्पादंमध्यान्हेतुचतुर्गवं २२०
षड्गवंतुत्रिपादोक्तपूर्णाहस्त्वष्टभिःस्मृतः
काष्ठलोष्ठशिलागोघ्नःकृच्छ्रंसांतपनंचरेत् २२१

तीसरे दिन जलदान करके चौथे दिनश्राद्धकरै—जिसके घर में एकभी गौवछडेवाली अर्थात् दूध देती न हो२१७
उसके घर मंगल कहां और अंधकार का नाश कहां—बहुत दूध निकाल ने और बहुत जोतने और नाक के छेदने से२१८
नदी अथवा पर्वतमें रोकनेसे जोपशुकी मृत्युहो जाय तो जितना उस पशु मारने का प्रायश्चित्त कहा है उसकी चौथाई प्राय श्चित्त करै—आठ हैं वैल जिसपर ऐसा हल धर्मका है और छः वैलका व्यवहार का हल है २१९
और चार जिसपर वैलहों वह हल नृशंसों (हत्यारों)का है और दो वैलका हल तो वैलोंके मारने वाला है—दो वैलके हलको प्रातःकाल चौथाई दिन में और चार वैलके को मध्यान्ह तक (आधे दिन) चलावे २२०
छे वैलके को तीनपाद(छःपहर) चलावे और आठ वैलके को संपूर्ण दिन चलाना धर्म शास्त्रमें कहा है—लकड़ी डला— पत्थर इनसे जो गौकी हत्या करै वह सांतपन कृच्छ्र करै १११

प्राजापत्यंचरेन्मुष्ट्याअतिकृच्छ्रं तुआयसैः
प्रायश्चित्तेनतच्चीर्णं कुर्याद्ब्राह्मणभोजनं २२२
अनडुत्सहितांगांचदद्याद्विप्रायदक्षिणां
शरभोष्ट्रहयान्नागान्सिंहशार्दूलगर्दभान् २२३
हत्वाचशूद्रहत्यायाःप्रायश्चित्तंविधीयते
मार्जारगोधानकुलमंडूकांश्चपतत्रिणः २२४
हत्वात्र्यहंपिबेत्क्षीरंकृच्छ्रं व्यापादिकंचरेत्
चांडालस्यचसंस्पृष्टंविण्मूत्रोच्छिष्टमेववा २२५
त्रिरात्रेणविशुद्धं हिभुक्तोच्छिष्टंसमाचरेत्
वापीकूपतडागानांदूषितानांचशोधनं २२६

मुष्टि(मुक्का)से जो गोहत्या करैवहप्राजापत्यव्रत करै और लोहेके शस्त्रों से जो करैं वह अतिकृच्छ्रव्रत करै और प्रायश्चित्त करने के अनंतर ब्राह्मणों को जिमावे १२२

और बैल सहित एक गौ दक्षिणा ब्राह्मण को दे—शरभ(टीडी) ऊंट—घोडा—हाथी—सिंह—शार्दूल—और गधा—२२३

इनकी हत्या करके शूद्र की हत्या का जो प्रायश्चित्त है उसे करै बिलाव—गोह—नोला—मेंडक—पक्षी—२२४

इन को हतकर तीन दिन तक दूधपीवे और मारने में जो कुछ कहा है उसे करै—चांडाल के स्पर्श किये और विष्टा और मूत्र से उच्छिष्ट को खाकर २२५

तीन रात्रि से विशुद्ध होकर उच्छिष्ट के भक्षण में जो प्रायश्चित्त है उसे करै—अशुद्ध पदार्थ से दुष्टता को प्राप्तहुए वावरी—कूप और ताल इन का शोधन यह है २२६

उद्धरेत्षट्शतंपूर्णंपंचगव्येनशुद्ध्यति
अस्थिचर्मावसिक्ते षुखरश्वानादिदूषिते २२७
उद्धरेदुदकंसर्वंशोधनंपरिमार्जनं
गोदोहनेचर्मपुटेचतोयंयंत्राकरेकारुकशिल्पिहस्ते२२८
स्त्रीबालवृद्धाचरितानियान्यप्रत्यक्षदृष्टानिशुचीनितानि
प्रकाररोधेविषमप्रदेशेसेवानिवेशेभवनस्यदाहे२२९
अवास्ययज्ञेषुमहोत्सवेषुतेष्वेवदोषानविकल्पनीयाः
प्रपास्वरण्येघटकस्यकूपेद्रोण्यांजलंकोशविनिर्गतंच२३
श्वपाकचांडालपरिग्रहेतुपीत्वाजलंपंचगव्येनशुद्धिः

कि भरे हुए छःसौ६०० घडे निकासे और पंचगव्य गेरने से शुद्ध होते हैं—अस्थि—चाम जिनमें पडगये हों और गधा—कुत्ता इनसे जो दूषित होगएहों २२७
तो संपूर्ण जल निकासे और स्वच्छ(सफा)करै—गौकोजिस पात्र में दुहते हों उसका और चामके पात्रका जो जल है—और यंत्र में का और खानका और कारीगर और चित्राम के काढने वाला इनके हाथका जो जल है २२८
स्त्री—वालक—और वृद्ध इन के आचरित(छुएहुऐ) जो जल हैं और प्रत्यक्ष देखे नहीं वे संपूर्णशुद्धहै—परन्तु परकोटाकी रोकमें विषम (संकटके) देश में—सेवा के स्थान में—भवन में अग्नि लगने के समय २२९
असं पूर्ण यज्ञमें—वडे उत्साहों में इनमें दोषों की शंका नहीं करनी प्याउओं में—बनमें हरट के कूपमें द्रोणी (एक जलका वड़ा पात्र जो कुये के पास रक्खा रहता है)में और कोश(हौद) से निकसा जल—ये सब जल शुद्ध हैं २३०
श्वपाक(जो कुत्ते को खाते हैं) और चांडाल इन के घर जल पी

रेतोविण्मूत्रसंस्पृष्टंकौपंयदिजलंपिबेत् २३१
त्रिरात्रेणैवशुद्धिःस्यात्कुंभेसांतपनंतथा
क्लिन्नेभिन्नशवंयत्स्यादज्ञानाच्चतथोदकं २३२
प्रायश्चित्तं चरेत्पीत्वातप्तकृच्छ्रं द्विजोत्तमः
उष्ट्रीक्षीरंखरीक्षीरंमानुषीक्षीरमेवच २३३
प्रायश्चित्तं चरेत्पीत्वातप्तकृच्छ्रं द्विजोत्तमः
वर्णबाह्यैनसंस्पृष्टउच्छिष्टस्तुद्विजोत्तमः २३४
पंचरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति
शुचिगोतृप्तिकृत्तोयंप्रकृतिस्थंमहीगतं २३५
चर्मभांडस्तुधाराभिस्तथायंत्रोद्धृतंजलं

कर पंचगव्य पीने से शुद्धि होती है—वीर्य—विष्ठा मूत्र इनका जिस में स्पर्श हो ऐसे कूप के जल को यदि पीले २३१

तो त्रिरात्र में शुद्धि होती है और वीर्य—विष्ठा—मूत्र जिसमें मिले हैं ऐसे घड़े के जलको जो पीवे वह सांतपन व्रत से शुद्ध होता है शव(मुर्दा)से जो जल मलीन होजाय अज्ञान से उस जलको २३२

पीकर द्विजों में उत्तम तप्तकृच्छ्र प्रायश्चित्त करैं—उंटनी गधी और किसी मनुष्य की स्त्रीके दूध को—२३३

पीकर द्विजों में उत्तमतप्तकृच्छ्र प्रायश्चित्त करैं—यदि उच्छिष्ट द्विजों में उत्तम को वर्णबाह्य(यवन आदि)स्पर्श करलें २३४

तो पांच रात्र तक उपवास करके पंचगव्य पीने से शुद्ध होता है जिस जल से गौतृप्तहो सके ऐसा पृथ्वी पर टिका निर्मल जल शुद्ध है २३५

चाम के पात्रका जल, धारा पड़ने से और यंत्र से निकासा जल

चंडालेनतुसंस्पृष्टःस्नानमेवविधीयते २३६
उच्छिष्टस्तत्वसंस्पृष्टस्त्रिरात्रेणैवशुद्ध्यति
आकराद्गतवस्तूनिनाशुर्चीनिकदाचन २३७
आकराःशुचयःसर्वेवर्जयित्वासुरालयम्
भष्टाभ्रष्टयवाश्चैवतथैवचणकाःस्मृताः २३८
खर्जूरंचैवकर्पूरमन्यद्भष्टतरंशुचि ः
अमीमांस्यानिशौचानित्रिभिराचरितानिच २३९
गोकुलेकंदुशालायांतैलयंत्रेक्षुयंत्रयोः
अदुष्टाःसततंधारावातोद्धूताश्चरेणवः २४०
बहूनामेकलग्नानामेकश्चेदशुचिर्भवेत्
अशौचमेकमात्रस्यनेतरेषांकथंचन २४१

शुद्ध हैं—चांडाल के स्पर्श से स्नान मात्र को करै २३६
जो उच्छिष्टको चांडाल स्पर्श करले तो तीन रात्रमें शुद्ध होता है
आकर (खान)से निकसी वस्तु कभी भी अशुद्ध नहीं होती २३७
संपूर्ण आकर मदिरा के स्थान को छोड़कर शुद्ध हैं और भुने
जौ और चने भी शुद्ध कहे हैं २३८
खजूर और कपूर ये और जो२ भुना पदार्थ हो वह शुद्ध है त्रि
योंने आचरण किये शौच विचारने योग्य नहीं हैं २३९
गौओं के कुल में कंदुशाला (भाड) में तेल और इंख के कोल्हू
मेंशुद्धिका विचार नहीं—निरंतर पडती हुई धारा और वायु की
उड़ी रेणु (धूल)येभी पवित्र हैं २४०
एक वस्त्र आदि पर बैठे हुए मनुष्यों के मध्यमें जो एक अशुद्ध
होजाय तो एकही अशुद्ध होता है इतर मनुष्य कदाचित् भी
अशुद्ध नहीं होते २४१

एकपंक्त्युपविष्टानांभोजनेपृथक्पृथक्
यद्येकोलभतेनीलींसर्वेतेशुचय:स्मृता : २४२
यस्यपटेपट्टसूत्रेनीलीरक्तोहिदृश्यते
त्रिरात्रंतस्यदातव्यंशेषाश्चैवोपवासिन : २४३
आदित्येस्तमितेरात्रावस्पृश्यंस्पृशतेयदि
भगवन्केनशुद्धि:स्यात्ततोब्रूहितपोधन २४४
आदित्येस्तमितेरात्रौस्पर्शहीनंदिवाजलं
तेनैवसर्वशुध्दि:स्यात्शवस्पृष्टंतुवर्जयेत् २४५
देशकालंवय:शक्तिपापंचावेक्ष्यतत्वत :
प्रायश्चित्तं प्रकल्प्यंस्याद्यस्यचोक्तानिष्कृति:२४६

भोजन करने के समय एक पंक्तिमें पृथक्२ बैठे हुए मनुष्यों के बीच में जो एक मनुष्य के देहमेंनीलका स्पर्श होजाय तो वे सब अशुद्ध होते हैं २४२
और पूर्वोक्त एक पंक्ति में बैठेहुओं के बीच में जिस के वस्त्र अथवा पट वस्त्र(दुपट्टा) पर नीलका रंग दीखजाय तो उसे तीन रात्रका उपवास और शेष मनुष्यों कोएक२ उपवास करना २४३
हे तपस्विश्रेष्ठ सूर्य के छिपने के अनंतर रात्रिमें यदिस्पर्श करने के अयोग्य वस्तुका स्पर्शकरले तो हेभगवन् किससे शुद्धि हो उस शुद्धिको कहो २४४
सूर्य के छिपने के अनतर रात्रि में स्पर्श हीन निर्मल जो दिन का जल उसीसे सबकी शुद्धि होती है किन्तु जिसने शवका स्पर्श किया हो उसकी नहीं होती । २४५
और देश—समय—सामर्थ्य और पापको भी यथार्थ देखकर उस पाप के प्रायश्चित की कल्पना करले जिस पाप का प्रायश्चित्त शास्त्र में नहीं कहा २४६

देवयात्राविवाहेषुयज्ञप्रकरणेषुच
उत्सवेषुचसर्वेषुस्पृष्टास्पृष्टंनविद्यते २४७
आलनालंतथाक्षीरंकंदुकंदधिसक्तवः
स्नेहपक्वंचतक्रंचशूद्रस्यापिनदुष्यति २४८
आर्द्रमांसंघृतंतैलंस्नेहाश्चफलसंभवाः [२४९
अंत्यभांडस्थितास्त्वेतेनिष्क्रांताःशुद्धिमाप्नुयुः
अज्ञानात्पिबतेतोयंब्राम्हणःशूद्रजातिषु
अहोरात्रोषितःस्नात्वापंचगव्येनशुद्ध्यति २५०
आहिताग्निस्तुयोविप्रोमहापातकवान्भवेत्
अप्सुप्रक्षिप्यपात्राणिपश्चादग्निंविनिर्दिशेत्२५१
योगृहीत्वाविवाहाग्निंगृहस्थइतिमन्यते

देवताओं कीयात्रा—विवाह—यज्ञका प्रकरण—और संपूर्ण उत्सवों में स्पर्श करने के योग्य और अयोग्य नहीं होता है २४७
आल का नाल(चने आदि की खटाई) दूध—कंदुक(भाड़)दही सत्त—स्नेह (घी तेल) से पका हुआ पदार्थ—और मठा ये शूद्रके भी दूषित नहीं है २४८
गीला मांस—घृत—तेल—फल से उत्पन्न हुए स्नेह—अंत्यज पात्र में स्थित भी ये निकास कर शुद्ध होजाते हैं २४९
जो ब्राह्मण शूद्रजातियों का जल अज्ञान से पीले तो दिन रात्र का उपवास और पंचगव्य पीकर शुद्ध होता है २५०
जो अग्निहोत्री ब्राह्मण महापात की होजाय तो जल में होम के पात्रों को फेंककर फिर अग्निहोत्र को ग्रहण करै२५१
जो विवाह की अग्नि को ग्रहण करके अर्थात् अग्निहोत्रको लेकर अपने को गृहस्थी मानता है अर्थात् उस अग्नि की रक्षा

अन्नं तस्यनभोक्तव्यंवृथापाकोहिसःस्मृतः २५२
वृथापाकस्यभुंजानःप्रायश्चितंचरेद्द्विजः
प्राणानप्सुत्रिराचम्यघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति २५३
वैदिकेलौकिकेवापिहुतोच्छिष्टेजलेक्षितौ
वैश्वदेवंप्रकुर्वीतपंचसूनापनुत्तये २५४
कनीयान्गुणवांश्चैवज्येष्ठश्चेन्निर्गुणोभवेत्
पूर्वंपाणिंगृहीत्वाचगृह्याग्निंधारयेद्बुधः २५५
ज्येष्ठश्चेद्यदिनिर्दोषोगृह्णात्यग्निंयवीयकः
नित्यंनित्यंभवेत्तस्यब्रम्हहत्यानसंशयः २५६
महापातकसंस्पृष्टःस्नानमेवविधीयते

नहीं करता इससे उसका अन्न नहीं खाना जिससे ऋषियों ने उसे वृथापाक कहा है २५२

वृथापाक के अन्न को जो द्विज खाले वह इस प्रायश्चित्त को करै कि जल के मध्य में तीनवार प्राणायाम करके और घृत को खा कर शुद्ध होता है २५३

वेदके मन्त्रों से निकासी अथवा लोक की—अथवा जिसमें होम किया हो ऐसी अग्नि में अथवा जल में अथवा भूमि पर बलि वैश्वदेव को पांच हत्या के दूर करने के निमित्त करै २५४

यदि जेठा भाई निर्गुणी हो और छोटा गुणी हो तो ज्ञानी छोटा भाई जेठे से पहिले विवाह करके गृह्य अग्निकी धारणा करै २५५

यदि जेठाभाई निर्दोषहो और छोटाभाई अग्निहोत्रको ग्रहणकर ले तो प्रतिदिन उसे ब्रह्महत्या लगतीहै इसमें संशय नहींहै २५६

महापात की ने जिसका स्पर्श किया हो वह और महापात की ने स्पर्श किये हुये के भोजन को जिसने किया हो वह इन

संस्पृष्टस्ययदाभुंक्तेस्नानमेवविधीयते २५७
पतितैःसहसंसर्गंमासार्द्धं मासमेवच
गोमूत्रयावकाहारोमासार्द्धेनविशुद्ध्यति २५८
कृच्छ्रार्द्धं पतितस्यैवसकृद्भुक्त्वाद्विजोत्तमः
अविज्ञानाच्चतद्भुक्त्वाकृच्छ्रं सांतपनंचरेत् २५९
पतितानांयदाभुक्तंभुक्तंचांडालवेश्मनि
मासार्द्धं तुपिबेद्वारिइतिशातातपोब्रवीत् २६०
गोब्राम्हणहतानांचपतितानांतथैवच
अग्निनानचसंस्कारःशंखस्यवचनंयथा २६१
यश्चांडालींद्विजोगच्छेत्कथंचित्काममोहितः
त्रिभिःकृच्छ्रैर्विशुद्ध्येतप्राजापत्यानुपूर्वशः २६२

होने को स्नानमात्र करके शुद्धि होती हैं २५७
पतितका संसर्ग जिसने पंद्रह दिन अथवा एक मास तक किया हो वह पंद्रह दिन तक गोमूत्र और जोंको खाकर शुद्ध होता है २५८
पतित के अन्न को जानबूझ एक वार खाकर सांतपन कृच्छ्र व्रत करै २५९
यदि पतितों का भोजन किया हो अथवा चांडाल के घर में भोजन किया हो तो पंद्रह दिन तक जलही पीवे यह शातातप ऋषिने कहा है २६०
शंखके वचनानुसारगौ और ब्राह्मणोंसे हतोंऔर पतितोंका अग्नि से दाह नहीं करना २६१
यदि कामदेव सेमोहित द्विज किसी प्रकार से चांडाली के संग गमनकरै तो प्राजापत्य व्रत के अनन्तर तीनकृच्छ्र करके शुद्धहोता है २६२

पतिताच्चान्नमादायभुक्त्वावाब्राम्हणोयदि
कृत्वातस्यसमुत्सर्गमतिकृच्छ्रं विनिर्दिशेत् २६३
अंत्यहस्तात्तुविक्षिप्तंकाष्ठलोष्ठतृणानिच
नस्पृशेत्तु तथोच्छिष्टमहोरात्रंसमाचरेत् २६४
चांडालपतितंम्लेच्छंमद्यभांडंरजस्वलां
द्विजःस्पृष्ट्वानभुंजीतभुंजानोयदिसंस्पृशेत् २६५
अतःपरंतुभुंजीतत्यक्त्वान्नं स्नानमाचरेत्
ब्राम्हणैःसमनुज्ञातस्त्रिरात्रमुपवासयेत् २६६
सघृतंयावकंप्राश्यव्रतशेषंसमापयेत्
भुंजानःसंस्पृशेद्यस्तुवायसंकुक्कुटंतथा २६७

पतित के अन्न को ग्रहण कर के अथवा खाकर ब्राह्मण उस अन्न के त्याग ने पर— अति कृच्छ्रव्रतकरै २६३
अंत्यजके हाथ से फेंके हुए काठ—डेला और तृणों को और अंत्यजके उच्छिष्टकोस्पर्श करके अहोरात्र का व्रतकरै २६४
चांडाल—पतित—म्लेच्छ—मदिराका पात्र और रजस्वला इन का स्पर्श कर के द्विज भोजन न करै—अर्थात् उपवास करै यदि भोजन करता हुआद्विज पूर्वोक्तों का स्पर्श करै तो २६५
स्पर्श करने के अनंतर भोजन नकरै और उस अन्न को त्यागकर स्नानकरै और ब्राह्मणों की आज्ञा लेकर तीन रात्र उपवास करै २६६
और घीसे मिले जोंको खाकर व्रत के शेष को समाप्त करै—यदि भोजन करताहुआ काक और मुरगे कास्पर्श करले २६७

त्रिरात्रेणैवशुद्धिःस्यादथोच्छिष्टस्त्वहेनतु
आरुढोनैष्ठिकेधर्मेयस्तुप्रच्यवतेपुनः २६८
चांद्रायणंचरेन्मासमितिशातातपोब्रवीत्
पशुवेश्याभिगमनेप्राजापत्यंविधीयते ६२६
गवांगमनेमनुप्रोक्तंव्रतंचांद्रायणंचरेत्
अमानुषीषुगोवर्जमुदक्यायामयोनिषु २७०
रेतःसिक्त्वाजलेचैवकृच्छ्रं सांतपनंचरेत्
उदक्यांसूतिकांवापिअंत्यजांस्पृशतेयदि २७१
त्रिरात्रेणैवशुद्धिःस्याद्विधिरेषपुरातनः
संसर्गंयदिगच्छेच्चेदुदक्यावातथांत्यजैः २७२

तोतीन रात्र में शुद्धि होती है यदि उच्छिष्ट हुआ पूर्वोक्तों का स्पर्श करले तो एक दिन से शुद्ध होता है—जोनैष्ठिक धर्म (यज्ञोपवीत और वेद को पढ कर गुरु की सेवा में ही जन्म भर रहना) में स्थित होकर फिर उस को त्यागता है २६८
वह एक मासभर चांद्रायण व्रतकरैयह शातातप ऋषिने कहा है पशु और वेश्या के संग गमन करने से प्राजापत्य व्रत कहा है २६९
गौओं के संग गमन (मैथुन) करके मनु के कहेहुए चांद्रायण व्रतको करे—गौसे इतर पशु की योनि और चांडाली और योनि से भिन्न (भूमि आदि)में २७०
और जल में वीर्य को सींच कर सांतपन कृच्छ्रकरै चांडाली—सूतिका—और अंत्यज की स्त्री इनका यदि स्पर्श करे तो२७१
तीन रात्रिमें शुद्धि होती है, यह पुरानी बिधि है—चांडाली और अंत्यज इनके संग जो संसर्ग को प्राप्त होजाय २७२

पायश्चित्तंसविज्ञेयःपूर्वंस्नानंसमाचरेत्
एकरात्रंचरेन्मूत्रंपुरीषंतुदिनत्रयं २७३
दिनत्रयंतथापानेमैथुनेपंचसप्तवा
स्मृत्यंतरे
अंगीकारेणज्ञातीनांब्राम्हणानुग्रहेणच २७४
पूयंतेतत्रपापिष्ठामहापातकिनोपिये
भोजनेतुप्रसक्तानांप्राजापत्यंविधीयते २७५
दंतकाष्ठेऽवहोरात्रमेषशौचविधिःस्मृतः
रजस्वलायदास्पृष्टाश्वानचांडालवायसैः २७६
निराहाराभवेत्तावत्स्नात्वाकालेनशुद्ध्यति

वहइसप्रायश्चित्त के योग्य जानना कि पहिले स्नानकरै फिरएक रात्र गोमूत्र और तीन दिन गोमय को भक्षण करै २७३
चांडाली अंत्यजा इनके जलपान और मैथुन करने में पांच अथवा सातदिन पूर्वोक्त प्रायश्चित्तकरै—यह अन्य(और)स्मृतियों में लिखा है कि ज्ञानी पुरुषोंके अंगीकार और ब्राह्मणों के अनुग्रह से २७४
जोमहा पातिकी भी पापी हैं वेभी पवित्र होजाते हैं और निषिद्ध चांडाला दिकों के भोजन में जो आसक्त हैं वे प्राजापत्यव्रत करै २७५
निषिद्धों कादी दंतधावन में जो प्रसक्त हैं वे एक रात्र दिन प्रायश्चित्तकरैं यह शौच की विधि कही—जिस रजस्वला स्त्री को कुत्ता चांडाल काकयें स्पर्श करलें २७६
वह रजकी शुद्धितक निराहार रहै और शुद्ध होनेके समय(चौथे दिन) स्नान करके शुद्ध हो जाती है—यदि रजस्वला स्त्री को ऊंट—

रजस्वलायदास्पृष्टाउष्ट्रजंबुकशंबरैः २७७
पचरात्रंनिराहारापंचगव्येनशुध्यति
स्पृष्टारस्वलान्योन्यंब्राम्हण्याब्राम्हणीचया२७८
एकरात्रंनिराहारापंचगव्येनशुद्ध्यति [२७९
स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंब्राम्हण्याक्षत्रियीचया
त्रिरात्रेणविशुद्धिःस्यात्व्यासस्यवचनंयथा
स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंब्राम्हण्याशूद्रसंभवा२८०
षट्रात्रेणविशुद्धिःस्यात्ब्राम्हणीकामकारतः
स्पृष्टारजस्वलान्योन्यंब्राह्मण्यावैश्यसंभवा२८१
चतूरात्रंनिराहारापंचगव्येनशुध्यति

गीदड़—शंबर (वडशिंगा)स्पर्श करले तो पांच रात्र तक निराहार रहै और फिर (२७७
पंचगव्य से शुद्ध होती है—यदि ब्राह्मणी रजस्वला ने ब्राह्मणी रजस्वला का स्पर्श कर लियाहो २७८
तो एक रात्र निराहाररहकर पंचगव्य से शुद्ध हो ती है—यदि ब्राह्मणो रजस्वला ने क्षत्रिया रजस्वला का स्पर्श कर लिया होय २७९
तोव्यास के वचन के अनुसार तीन रात्रमें शुद्ध होती है—यदि ब्राह्मणी रजस्वला शूद्रणी रजस्वला का स्पर्श करले २८०
तोछः रात्र में शुद्ध होती है और पूर्वोक्त रजस्वला ब्राह्मणी अपनी इच्छा के अनुसार कुछ व्रतआदिकर के शुद्ध होती है—यदि ब्राह्मणी रजस्वला ने वैश्य जातिकी रजस्वला का स्पर्श कर लिया होय२८१
तोचाररात्र निराहार रह कर पंचगव्यसे शुद्ध होती है औरों की

अकामतश्चरेदूर्ध्वंब्राह्मणीसर्वतःस्पृशेत् २८२
चतुर्णामपिवर्णानांशुद्धिरेषाप्रकीर्तिता
उच्छिष्टेनतुसंस्पृष्टोब्राह्मणोब्राह्मणेनयः२८२
भोजनेमूत्रचारेचशंखस्यबचनंयथा
स्नानंब्राह्मणसंस्पर्शेजपहोमौतुक्षत्रिये २८३
वैश्येनक्तंचकुर्वीतिशूद्रेचैवउपोषणम्
चर्मकेरजकेवैश्येधीवरेनटकेतथा २८४
एतान्स्पृष्ट्वाद्विजोमोहादाचमेत्प्रयतोपिसन्
एतैःस्पृष्टोद्विजोनित्यमेकरात्रंपयःपिबेत् २८५
उच्छिष्टैस्तैस्त्रिरात्रंस्याद्घृतंप्राश्यविशुद्ध्यति
यस्तुछायांश्वपाकस्यब्राम्हणस्त्वधिगच्छति २७६

इच्छा के अनुसार ब्राह्मणी प्रायश्चित्त करै और फिर सबका स्पर्श करै २८२
चारों वर्णों को यह शुद्धि कही है—यदिउच्छिष्ट ब्राह्मण ने उच्छिष्ट ब्राह्मण का स्पर्श कर लिया हो २८२
भोजन के उच्छिष्ट में अथवा मूत्र के त्याग के उच्छिष्ट में शंखऋषि के वचनानुसार ब्राह्मण के स्पर्श में स्नान औरक्षत्रीय को जप होम कहे हैं २८३
और वैश्य नक्त व्रतकरै और शूद्र एक उपवास करै—और चमार धोबी—वैश्य (वेश्या का पुत्र) धीवर—और नट २८४
इन का अज्ञान से ब्राह्मण स्पर्श करके सावधान होकर आचमन करै यदि ये ब्राह्मण का स्पर्श करलें तो एकरात्र दुग्धपानकरै २८५
और यदि पूर्वोक्त चमार आदि उच्छिष्ट हुए ब्राह्मण कास्पर्शकरलें तो घृत को खाकर ब्राह्मण शुद्ध होता है—यदि श्वपाक की छाया में ब्राह्मण चले २८६

तत्रस्नानंप्रकुर्वीतघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति
अभिशस्तोद्विजोरण्येब्रह्महत्याव्रतंचरेत् २८७
मासोपवासंकुर्वीतचांद्रायणमथापिवा
वृथामिथ्योपयोगेनभ्रूणहत्याव्रतंचरेत् २८८
अभक्षोद्वादशाहेनपराकेणैवशुद्ध्यति
शठंचब्राह्मणंहत्वाशूद्रहत्याव्रतंचरेत् २८९
निर्गुणंचगुणी हत्वापराकंव्रतमाचरेत्
उपपातकसंयुक्तोमानवोम्रियतेयदि २९०
तस्यसंस्कारकर्ताचप्राजापत्यद्वयंचरेत्
अभुंजानोतिसस्नेहंकदाचित्स्पृश्यतेद्विजः२९१
त्रिरात्रमाचरेन्नक्तंर्निःस्नेहमथवाचरेत्

तो स्नान करे और घृत खाकर शुद्ध होता है जो ब्राह्मण अभिशस्त(कलंकित)हो वह वनमें जाकर ब्रह्म हत्याका व्रत करे कि२८७ मास तक उपवास करे अथवाचांद्रायण करे यदि वृथा ही (झूटा) हिंसाका दोष लगाहो तो भ्रूणहत्याका व्रत करे कि२८८ बारह दिन जलका ही भक्षण करके पराक व्रत से शुद्ध होता है—शठ ब्राह्मण को हतकर शूद्र की हत्याका व्रत करे १८९ गुणी ब्राह्मण निर्गुण (मूर्ख) को हतकर पराक व्रत करै—यदि जिस को उपपातक लगाहो वह मनुष्य मरजाय तो २९० उस का संस्कार करने वाला दो प्राजापत्य करै अत्यंत स्नेह सहित पदार्थ को भक्षण करते हुए ब्राह्मण को कदाचित् कोई स्पर्श करले तो २९१
तीन रात्र तक नक्त व्रत करे अथवा रूखा भोजन करे- विद्वान

विडालकाकाद्युच्छिष्टंजग्ध्वाश्वनकुलस्यच २६२
केशकीटावपन्नंचपिबेद्ब्राह्मीसुवर्चसं
उष्ट्रयानंसमारुह्यखरयानंचकामतः २६३
स्नात्वाविप्रोजितप्राणःप्राणायामेनशुद्ध्यति
सव्याहृतींसप्रणवांगायत्रींशिरसासह २६४
त्रिःपठेदायतप्राणःप्राणायामःसउच्यते
शकृद्द्विगुणगोमूत्रंसर्पिर्दद्याच्चतुर्गुणं २६५
क्षीरमष्टगुणंदेयंपंचगव्यंतथादधि
पंचगव्यंपिबेच्छूद्रोब्राह्मणस्तुसुरांपिबेत् २६६
उभौतौतुल्यदोषौचवसतोनरकेचिरं
अजागावोमहिष्यश्चअमेध्यंभक्षयंतियाः २६७

काक—कुत्ता—नोला इन के उच्छिष्ट को भक्षण करके २६२
और जिस में केश कीट पड़े हो उसे खाकर ब्राह्मी औषधि को पीवे—अपनी इच्छा से ऊंट—गधा इन के यान (सवारी) पर बैठ कर २६३
ब्राह्मण स्नान और सूक्ष्म भोजन करके प्राणायाम से शुद्ध होता है सात व्याहृति (भू आदि) और शिरःमंत्र इन सहित गायत्री को २६४
प्राणों का रोक कर तीन बार जो पढे उसे प्राणायाम कहते हैं
गोबर से दूना गोमूत्र और चौगुना घी—२६५
और आठ गुना दूध और आठ ही गुना दही डाले—यदि शूद्र उक्त पंचगव्य को पीवे और ब्राह्मण मदिरा को पीवे २६६
वे दोनों तुल्य दोषके भागीहैं और चिर कालतक नरक में वसते हैं यदि जो बकरी गौ और भैंस अशुद्ध वस्तुको खातीहों २६७

दुग्धंहव्येचकव्येचगोमयंनविलेपयेत्
ऊनस्तनीमधीकांवायाचस्वस्तनपायिनी २९८
तासांदुग्धंनहोतव्यंहुतंचैवाहुतंभवेत्
ब्राह्मौदनेचसोमेचसीमंतोन्नयनेतथा २९९
जातश्राद्ध्येनवश्राद्ध्येभुक्त्वाचांद्रायणंचरेत्
राजान्नं हरतेतेजःशूद्रान्नं ब्रह्मवर्चसम् ३००
स्वसुतान्नं चयोभुंक्तेसभुंक्तेपृथिवीमलं
स्वसुताअप्रजाताचनाश्नीयात्तद्गृहेपिता ३०१
भुंक्तेस्वस्यामाययान्नंपूयसंनरकंव्रजेत्
अधीत्यचतुरोवेदान्सर्वशास्त्रार्थतत्वबित् ३०२

तो हव्य और कव्य में उनका दूध न ले और उनके गोवरसे लापे नहीं—जिस के थन छोटे हों अथवा ४से अधिक हों—जो रोगिन हो और जो अपने थन को स्वयं पीतीहो २९८

इन के दूध से होम न करे यदि करे तो होम किया हुआ विन किए के समान होजाता है—ब्राह्मौदन(जो यज्ञोपवीत के समय चावल वनते हैं) सोम यज्ञ—सीमंत' इन में २९९

और जात कर्म के श्राद्ध और नवक श्राद्ध में भोजन करके चांद्रायण व्रत करे—राजा का अन्न तेज को और शूद्र का अन्न ब्रह्म तेज को हरता है ३००

अपनी लड़की के अन्न को जो खाता है वह पृथिवी के मल को खाता है और जिस लड़की के संतान न हुई हो उसके घरमें भी पितान खा ३०१

और जो प्रजा हीन लड़की के अन्न को छल से खाता है वह पूय नरक में जाता है—चार वेदों को पढकर संपूर्ण शास्त्रों के अर्थ के तत्व को जानने बाला पुरुष ३०२

नरेन्द्रभवनेभुक्त्वाविष्ठायांजायतेकृमिः
नवश्राद्धेत्रिपक्षेचषण्मासेमासिकेब्दिके ३०३
पतंतिपितरस्तस्ययोभुंक्तेनापदिद्विजः
चांद्रायणंनवश्राद्धे पराकोमासिकेतथा ३०४
त्रिपक्षेचातिकृच्छ्रं स्यात्षण्मासेकृच्छ्रमेवच
आब्दिकेपादकृच्छ्रं स्यादेकाहःपुनराब्दिके ३०५
ब्रह्मचर्यमनाधार्यमासश्राद्धे षुपर्वसु
द्वादशाहेत्रिपक्षेऽब्देयस्तुपक्षेद्विजोत्तमः३०६
पतंतिपितरस्तस्यब्रह्मलोकेगताअपि
पक्षे वायदिवामासेयस्यनाश्नंतिवैद्विजाः३०७

राजा के घरमें भोजन करके विष्ठा में कीड़ा होता है* नवकश्राद्ध त्रिपक्ष का श्राद्ध' छेमाही का श्राद्ध' मासिक श्राद्ध' और वार्षिक श्राद्ध इन श्राद्धों में ३०३
आपत्ति केविना जो ब्राह्मण भोजन करता है उसके पितर नरक में पड़ते हैं नवकश्राद्ध में चांद्रायण—मासिकश्राद्धमेंपराक' ३०४
त्रिपक्ष(१॥मास)के और छेमाहीके श्राद्धमें कृच्छ्रऔरपहले वार्षिक में पाद कृच्छ्र' और दूसरे वार्षिक में एक दिन उपवास करे ३०५
विना ब्रह्मचर्यसेकिए मासिक श्राद्ध में पर्व(पूर्णिमासी आदि) में मृतक के द्वादशाह में—त्रिपक्ष में—और वार्षिक श्राद्ध में जो द्विजों में उत्तम भोजन करता है ३०६
ब्रह्मलोक में गये भी उसके पितर नरकमें जातेहैं—जिसगृहस्थी के घरमें पक्ष अथवा महीने में ब्राह्मण भोजन न करते हों ३०७

---

* वह मरने से ११ एकादशे को होता है

भुक्त्वादुरात्मनस्तस्यद्विजश्चांद्रायणंचरेत्
एकादशाहेऽहोरात्रंभुक्त्वासंचयनेत्र्यहं ३०८
उपोष्यविधिवद्विप्रःकुष्माण्डीजुहुयाद्घृतं
यत्रवेदध्वनिध्वान्तंनचगोभिरलंकृतं ३०९
यन्नबालैःपरिवृतंश्मशानमिवतद्गृहं
हास्येपिबहवोयत्रविनाधर्मंवदंतिहि ३१०
विनापिधर्मशास्त्रेणसधर्मःपावनःस्मृतः
हीनवर्णेचयःकुर्यात्अज्ञानादभिवादनं ३११
तत्रस्नानंप्रकुर्वीतघृतंप्राश्यविशुध्यति
समुत्पन्नेयदास्नानेभुक्त्वापिपिबेद्यदि ३१२

उस दुष्टचित्त के अन्न को खाकर द्विज चांद्रायण व्रत करै—सूतक के ग्यारहमें दिन भोजन करके एक रात दिन और अस्थि संचयन के दिन तीन दिन तक ३०८

विधि से उपवास कर के पेठे और घी से हवन करै—जो घर वेद के उच्चारण से पवित्र नहीं—और जो गौओं से शोभाय मान नहीं है ३०९

और जो बालकों से भराहुआ नहीं है वह घर श्मशान भूमि के समान है—हंसी में भी जहां वहुत मनुष्य धर्म के विरुद्ध कहते हों ३१०

और चाहै वह उन बहुत मनुष्यों का कथन धर्म शास्त्र के विरुद्ध भी हो तो वह उन का कथन परम धर्म कहा है—जो अपने से नीचे वर्ण को अज्ञान से नमस्कार करता है ३११

वह मनुष्य स्नान करै और घी को चाटकर भली प्रकार शुद्ध होता है—जो स्नान के योग्य मनुष्य विना स्नान किये भोजन करले अथवा जल पान करले तो ३१२

गायत्र्यष्टसहस्रंतुजपेत्स्नात्वासमाहितः
अंगुल्यादंतकाष्ठंचप्रत्यक्षं लवणंतथा ३१३
मृत्तिकाभक्षणंचैवतुल्यंगोमांसभक्षणं
दिवाकपित्थछायायांरात्रौदधिशमीषुच ३१४
कर्पासदंतकाष्ठंचविष्णोरपिश्रियंहरेत्
सूर्पवातोनखाग्रांबुस्नानवस्त्रंघटोदकं ३१५
मार्जनीरजकेशांबुदेवतायतनोद्भवं
येनावगुंठितंतेषुगंगांभःप्लुतएवसः ३१६
मार्जनीरेणुकेशांबुहंतिपुण्यंदिवाकृतं
मृत्तिकाःसप्तनग्राह्यावल्मीकेऊपरस्थले ३१७

स्नान करके सावधानता से आठ हजार गायत्री जपै— अंगुली से दंत धावन और प्रत्यक्ष(केवल)लवण का भक्षण ३१३ और मिट्टी का भक्षण जो करता है वह गौ के मांस भक्षण के समान है—दिन में कैंथ की छाया और रात्र में दधि का भक्षण और शमी (छोंकर) ३१४
और कपास के काठ को दंत धावन ये विष्णु की भी लक्ष्मी को हरते हैं—सूप की पवन—नखों के अग्रभाग का जल— स्नान का वस्त्र—और घटका जल ३१५
और मार्जनी (झाडू) की धूल—और केशों का जल यदि ये पूर्वोक्त छःओं देवता के स्थान के हों और इनमें जो लोटै तो वह पुरुष-मानो गंगाजी के जल में लोटा ३१६
मार्जनी की धूल और केशों का जल ये दोनों दिन भर में किये पुण्य को हरते हैं—सात जगे की मिट्टी ग्रहण न करै वमी की मूसों के स्थान की ३१७

अंतर्जलेश्मशानांतेवृक्षमूलेसुरालये
वृषभैश्चतथोत्खातेश्रेयस्कामैःसदाबुधैः ३१८
शुचौदेशेषुसंग्राह्याशर्कराश्मविवर्जिता
पुरीषेमैथुनेहोमेप्रस्त्रावेदंतधावने ३१९
स्नानभोजनजाप्येषुसदामौनंसमाचरेत्
यस्तुसंवत्सरंपूर्णंभु क्तेमौनेनसर्वदा ३२०
युगकोटिसहस्त्रेषुस्वर्गलोकेमहीयते
स्नानंदानंजपंहोमंभोजनंदेवतार्चनं ३२१
व्यूढपादोनकुर्वीतस्वाध्यायंपितृतर्पणां
सर्वस्वमपियोदद्यात्पातयित्वाद्विजोत्तमं ३२२

जल के भीतर की—श्मशान की—वृक्षकी जड़की—देवता के स्थान की—और जो बैलों न खोदी हो इन सातों को कल्याण चाहने वाले द्विजों में उत्तम ग्रहण न करैं ३१८
कंकर और पत्थर जिसमें न हों ऐसी शुद्ध स्थान की मिट्टी ग्रहण करनी—शौच फिरते—मैथुन—होम—लघुशंका—और दंतधावन करते समय में ३१९
और स्नान—भोजन—और जप करते समय में मौन धारणकरै जो मनुष्य पूर्ण वर्ष भर सदा मौन होकर भोजनकरता है ३२०
वह एक हजार किरोड़ युग तक स्वर्ग लोग में पूजा को प्राप्त होता है—स्नान—दान—जप—होम—भोजन—और देवता का पूजन ३२१
वेदका पढना और पितरों का तर्पण इन आठ कामों को व्यूट पाद होकर (पांव पसार कर) न करै—जो मनुष्य द्विजों में उत्तम पतितकर(जिस पातक लगाकर)के सर्वस्वभी देता है ३२२

नाशयित्वातुतत्सर्वंभ्रूणहत्याफलंभवेत्
अहणोद्वाहसंक्रांतौस्त्रीणांचप्रसवेतथा ३२३
दानंनैमित्तिकंज्ञेयंरात्रावपिप्रशस्यते
क्षौमजंवाथकार्पासंपट्टसूत्रमथापिवा३२४
यज्ञोपवीतंयोदद्या द्वस्त्रदानफलंलभेत्
कांसस्यभाजनंदद्यात्घृतपूर्णंसुशोभनं ३२५
तथाभक्त्याविधानेनअग्निष्टोमफलंलभेत्
श्राद्धकालेतुयोदद्यात्शोभनौचउपानहौ ३२६
सगच्छत्यन्नमार्गेपिअश्वदानफलंलभेत्
तैलपात्रंतुयोदद्यात्संपूर्णंसुसमाहितः ३२७
सगच्छतिध्रुवंस्वर्गेनरोनास्त्यत्रसंशयः

वह उस सपूर्ण को नष्ट करा कर भ्रूण (गर्भ) हत्या के फल को प्राप्त होता है—ग्रहण—विवाह—संक्रांति—और स्त्रियों का प्रसव—इनमें दान नैमित्तिक जानना वहदान रात्रिमें भी ३२३ करना श्रेष्ठ कहा है—रेशम—सूत—पाठका सूत्र इनके ३२४ यज्ञो पवीत को जो देता है वह वस्त्र दान के फल को प्राप्त होता है—जो घीसे भरे कांसी के पात्र में भोजन देता है ३२५ भक्ति और विधि से उक्त भोजन देने वाला वह अग्निष्टोम यज्ञके फलको प्राप्त होता है—जो श्राद्ध के समय सुन्दर उपानह देता है ३२६

वह जिसमें अन्न मिले ऐसे मार्ग में गमन करता हुआ अश्व के दान के फलको प्राप्त होता है—जो सावधान होकर भरा हुआ तेलका पात्र देता है ३२७

वह मनुष्य निश्चय से स्वर्ग में जाता है इसमें संदेह नहीं है—

दुर्भिक्षे अन्नदाताचसुभिक्षेचहिरण्यद : ३२८
पानप्रदस्त्वरण्येतुस्वर्गेलोकेमहीयते
यावदर्धप्रसूतागौस्तावत्सापृथिवीस्मृता ३२९
पृथिवीतेनदत्तास्यादीदृशींगांददातियः
तेनाग्नयोहुताःसम्यक्पितरस्तेनतर्पिताः३३०
देवाश्चपूजिताःसर्वेयोददातिगवान्हिकं
जन्मप्रभृतियत्पापमातृकंपैतृकंतथा ३३१
तत्सर्वंनश्यतिक्षिप्रं वस्त्रदानान्नसंशयः
कृष्णाजिनंतुयोदद्यात्सर्वोपस्करसंयुतं ३३२
उद्धरेन्नरकस्थानात्कुलान्येकोत्तरंशतम्
आदित्योवरुणोविष्णुर्ब्रह्मासोमोहुताशनः३३३

दुर्भिक्ष में अन्न का दाता और सुभिक्ष में सुवर्ण का दाता ३२८ और बन में जलका दाता स्वर्ग लोक में पूजा को प्राप्त होता है—इतने गौ आधी ब्यानी (आधा बच्चा भीतर और आधा जिसका बाहर) हो तितने पृथिवी के तुल्य हैं ३२९
जिसने ऐसी गौ दी उसने मानो पृथिवीदी—उसने अग्नि होत्र किये और उन्होंने पितर तृप्त किये ३३०
और उन्होंने संपूर्ण देवता पूजे,जो गौ को प्रति दिन खाने को देता है—जन्म से लेकर जो पाप किया और माता और पिता का जो अपराध किया हो ३३१
वह संपूर्ण वस्त्र के देने से उसी समय नष्ट होजाता है—शृङ्ग आदि सहित काली मृगछाला को जो देता है ३३२
वह नरक में पड़े एक सौ एक कुलों का उद्धार करता है—सूर्य—वरुण—विष्णु ब्रह्मा—चन्द्रमा—अग्नि ३३३

शूलपाणिस्तभगवान्अभिनंदतिभूमिदं
वालुकानांकृताराशिर्यावत्सप्तर्षिमंडलं ३३५
गतेवर्षशतेचैवपलमेकंविशीर्यति
क्षयंचदृश्यतेतस्यकन्यादानेनचैवहि ३३६
आतुरेप्राणदाताचत्रीणिदानफलानिच
सर्वेषामेवदानानांविद्यादानंततोधिकं ३३७
पुत्रादिस्वजनेदद्याद्विप्रायचनकैतवे
सकामःस्वर्गमाप्नोतिनिष्कामोमोक्षमाप्नुयात् ३३८
ब्राम्हणोवेदविदुषिसर्वशास्त्रविशारदे
मातृपितृपरेचैवऋतुकालाभिगामिनि ३३९

और भगवान्शिवजी भूमि के देनेवाले की प्रशंसा करते हैं। सात ऋषियोंके मंडल पर्यंत की जो वालू (रेत) की राशि है ३३५ वह सौ वर्ष पीछे एक पल २ भी कमती होने से नष्ट होजाता है कन्या के दान से जो धर्म होता है वह नष्ट नहीं होता ३३६ आतुर (दुःखी) के प्राणों को जो देता है उसको दान के तीन फल (धर्म अर्थ काम) होते हैं संपूर्ण दानों के वीच में सब से अधिक विद्या का दान है ३३७

पुत्र आदि स्वजन को—और ब्राह्मण को विद्या दे और कपटीको न दे—किसी फल (द्रव्य आदि) की इच्छा से विद्या का दाता स्वर्ग को और फल की इच्छा न करने वाला मोक्ष को प्राप्त होता है ३३८

जो ब्राह्मण वेद को जानता हो—और संपूर्ण शास्त्रों में जो चतुर हो—और माता पिता का भक्त हो—और जो ऋतु के समय में ही स्त्री के संग गमन करता हो ३३९

शीलचारित्रसंपूर्णोप्रातःस्नानपरायणो
तस्यैवदीयतेदानंयदीच्छेच्छ्रेयआत्मनः ३४०
संपूज्यविदुषोविप्रान्अन्येभ्योपिप्रदीयते
तत्कार्यंनैवकर्तव्यंनदृष्टंनश्रुतंमया ३४१
अतःपरंप्रवक्ष्यामिश्राद्धकर्मणियेद्विजाः
पितृणामक्षयंदानंदत्तंयेषांतुनिष्फलं ३४२
नहीनांगोनरोगीचश्रुतिस्मृतिविवर्जितः
नित्यंचानृतवादीचवणिक्श्राद्धेनभोजयेत् ३४३
हिंसारतंचकपटंउपगुह्यश्रुतंवयः
किंकरंकपिलंकाणंश्वित्रिणंरोगिणंतथा ३४४
दुश्चर्माणंशीर्णकेशंपाडुरोगंजटाधरं

शील और उत्तम आचरण मे और प्रातःकाल स्नानमें जो तत्पर हो जो अपने कल्याण की इच्छा करै तो उसीको दान दे ३४०
और विद्वान् ब्राह्मणों का प्रथम पूजन करके अन्य (मूर्ख) ब्राह्मणों को भी दान दिया जाता है—और उस कार्य को नहीं करना जो हमने न तो देखा हो और न सुना हो ३४१
इससे आगे यह कहता हुं कि श्राद्ध के कर्म में जो ब्राह्मण ऐसे हैं कि पितरों के निमित्त दिया जिनको दान अक्षय होता है और जिनको दिया निष्फल होता है ३४२
हीन जिसका अंग हो (रोगी) श्रुति और स्मृति जो न जानता हो—जो नित्य झूट बोलता हो जो व्यापारी हो इन ब्राह्मणों को श्राद्ध में न जिमावें ३४३
हिंसामें तत्पर—कपटी—और जो अपने वेदको छिपाकर किंकर बन जाय—पीला—काणा—दाद का जिसे रोग हो ३४४
जिसके देह की चाम बिगड़गी हो—जिसके केश गिरपडे

भारवाहितरोद्रंचद्विभार्यंशूद्रपत्नीपतिं ३४५
भेदकारीभवेच्चैवबहुपीडाकरोपिवा
हीनातिरिक्तगात्रोवातमप्यपनयेत्तथा ३४६
बहुभोक्तादीनमुखोमत्सरीक्रूरबुद्धिमान्
एतेषांनैवदातव्यःकदाचित्प्रतिग्रहः ३४७
अथचेन्मंत्रविद्युक्तःशारीरैःपंक्तिदूषणैः
अदुष्यंतंयमःप्राहपंक्तिपावनएवसः ३४८
श्रुतिःस्मृतिश्चविप्राणांनयनेद्वेप्रकीर्तिते
काणःस्यादेकहीनोपिद्वाभ्यामंधःप्रकीर्तितः ३४९
नश्रुतिर्नस्मृतिर्यस्यनशीलंनकुलंयतः

हों—पांडुरोगी—जटाधारी—भार(बोझ)का ढोने वाला—भयानक—जिसके दो स्त्री हों—शूद्रस्त्रीसे जिसने विवाह कियाहो ३४५
भेदका कर्ता(मन फटानेवाला)बहुतोंको पीड़ाकरने वालाजिसके अंग हीन(कम)अथवा अधिकहों—इनको श्राद्धमेंसे दूरकर दे ३४६
भेद कारी (बहकाने वाला)—जिसके मुख में दीनता हो—जो दूसरे के गुणों में दोषों को देखता हो—कठोर जिसकी बुद्धि हो—इनको कदाचित् भी प्रतिग्रह नहीं देना ३४७
जो ब्राह्मण मंत्रों को जानता हो और चाहे वह शरीर में जो दोष कहे हैं उन वाला भी हो—तो उसको यमराज ने शुद्ध कहा है क्योंकि वह पंक्ति को पवित्र करने वाला है ३४८
वेद और स्मृति ये दोनों ब्राह्मणों के नेत्र कहे हैं—इनके मध्यमें एक जो नहीं जानता वह काणा और जो दोनों को न जानता हो वह अंधा शास्त्र में कहा है ३४९
जिसके वेद न हो और स्मृति न हो—नशील हो—न कुलहो

तस्यश्राद्धंनदातव्यंत्वंधकस्यात्रिरब्रवीत् ३५०
तस्माद्वेदेनशास्त्रेणब्राह्मण्यंब्राह्मणस्यतु
नचैकेनैववेदेनभगवानत्रिरब्रवीत् ३५१
योगस्थैर्लोचनैर्युक्तः पादाग्रंचप्रपश्यति
लौकिकज्ञश्चशास्त्रोक्तंपश्येच्चैषोधरोत्तरं ३५२
वेदैश्चऋषिभिर्गीतंदृष्टिमान्शास्त्रवेदवित्
व्रतिनंचकुलीनंचश्रुतिस्मृतिरतंसदा ३५३
तादृशंभोजयेच्छ्राद्धे पितॄणामक्षयंभवेत्
यावंतोग्रसतेग्रासान्पितॄणांदीप्ततेजसां ३५४
पितापितामहश्चैवतथैवप्रपितामह ः
नरकस्थाविमुच्यंतेध्रुवंयांतित्रिविष्टपं ३५५

उस अंधे को श्राद्ध नहीं देना यह अत्रि ऋषि ने कहा है ३५०
जिससे ब्राह्मण का ब्राह्मणपन वेद और शास्त्र से हैं अकेले वेद से ही नहीं है यह भगवान् अत्रि ने कहा है ३५१
योग शास्त्रमें कहे जिसके नेत्र हों—और अपने चरणोंके अग्रभाग कोही जो देखता है अर्थात् कहीं भी कुदृष्टि न करतोहो लौकिक व्यवहार जानताहै और शास्त्रमेंकहेऊंचनीचकोजोदेखताहो ३५२
और ज्ञानवान् हो—शास्त्र और वेद का ज्ञाता हो—व्रत करने वाला हो—कुली न हो—वेद और स्मृतियों के पठन और पाठन में जो तत्पर हो ३५३
ऐसे ब्राह्मण को श्राद्ध में जिमावे तो पितरों की अक्षय तृप्ति होती है जितने ग्रासों को पूर्वोक्त ब्राह्मण खाता है उतने ही प्रकाशमान है तेज जिनका ऐसे पितर ३५४
और पिता—पितामह—और प्रपितामह ये सब नरक में पड़े हुए भी निकस जाते हैं और निश्चय से स्वर्ग में जाते हैं ३५५

तस्माद्विप्रं परीक्षेत श्राद्धकाले प्रयत्नतः
न निर्वपति यः श्राद्धं प्रमीतपितृको द्विजः ३५६
इन्दुक्षये मासि मासि प्रायश्चित्ती भवेत्तु सः
सूर्ये कन्यागते कुर्याच्छ्राद्धं यो न गृहाश्रमी ३५७
धनं पुत्रान्कुलं तस्य पितृनिश्वासपीडया
कन्यागते सवितरि पितरो यान्ति सत्सुतान् ३५८
शून्या प्रेतपुरी सर्वा यावद्वृश्चिकदर्शनं
ततो वृश्चिकसंप्राप्ते निराशाः पितरो गताः ३५९
पुनः स्वभवनं यान्ति शापं दत्वा सुदारुणं
पुत्रं वा भ्रातरं वापि दौहित्रं पौत्रकं तथा ३६०
पितृकार्ये प्रसक्ता ये यान्ति परमां गतिम्

तिस से श्राद्ध के समय बड़े यत्न से ब्राह्मण की परीक्षा करै
जिस द्विज का पिता मर गया हो यदि वह ३५६
महीने २ में मावस के दिन श्राद्ध न करे तो प्रायश्चित्त के योग्य
होता है कन्या के सूर्य (कनागत) में जो गृहस्थी श्राद्ध न करे ३५७
तो पितरों की लंबी श्वास करके उसका धन और कुल नष्ट होता
है कन्या राशि पर जब सूर्य आता है तब पितर अपने उत्तम
पुत्रों के समीप आते हैं ३५८
इतने वृश्चिक की संक्रान्ति का दर्शन न हो तब तक यमराज की
पुरी शून्य रहती है फिर वृश्चिक संक्रान्ति के होने पर निराश
होकर पितर चले जाते हैं ३५९
फिर वे बड़ा भयानक शाप देकर अपने भवन को चले जाते हैं
पुत्र—भाई – लड़की का लड़का – और पोता ३६०
जो ये सब पिता के श्राद्ध में आये हों वे भी परम गति को प्राप्त होते

यथानिर्मथनादग्निःसर्वकाष्टेषुतिष्ठति ३६१
तथासंदृश्यतेधर्मःश्राद्धदानान्नसंशयः
यःप्राप्नोतितदासर्वंकन्यागतेचगंगया ३६२
सर्वशास्त्रार्थगमनंसर्वतीर्थावगाहनं
सर्वयज्ञफलंविद्याच्छ्राद्धदानान्नसंशयः ३६३
महापातकसंयुक्तोयोयुक्तश्चोपपातकैः
घनैर्मुक्तोयथाभानूराहुमुक्तश्चचंद्रमाः ३६४
सर्वपापविनिर्मुक्तःसर्वपापंविलंघयेत्
सर्वसौख्यमयंप्राप्तःश्राद्धदानान्नसंशयः ३६५
सर्वेषामेवदानानांश्राद्धदानंविशिष्यते

हैं—जैसे मथने से संपूर्ण काठों में टिकता अग्नि दीखती है ३६१
तैसाही धर्म—श्राद्ध के देने से होता दीखता है इसमेंसंशय नहीं
है और जो गंगा पर कन्या के सूर्य में श्राद्ध करता है उसे संपूर्ण
फल प्राप्त होता है ३६२
संपूर्ण शास्त्रों के अर्थों को जानना—संपूर्ण तीर्थों में स्नान—और
संपूर्ण यज्ञों का फल श्राद्ध के दान से जानना इस में संदेह
नहीं है ३६३
जो महापातकी अथवा उपपातकी हो वह पुरुष भी श्राद्ध के
दान से मेघों में से निकसा सूर्य और राहुसे छूटा चंद्रमा इन
के समान होता है ३६४
और वह संपूर्ण पापों से छूटकर संपूर्ण पापों को लंघता है और
वह श्राद्ध के देने से संपूर्ण सुखोंको प्राप्त होता है इस में संदेह
नहीं है ३६५
संपूर्ण दानों में श्राद्ध का दान अधिक है मेरु के समान भी पाप

मेरुतुल्यंकृतंपापंश्राद्धदानंविशोधनं ३६६
श्राद्धं कृत्वातुमर्त्योवैस्वर्गलोकेमहीयते
अमृतंब्राम्हणस्यान्नंक्षत्रियान्नंपयःस्मृतं ३६७
वैश्यस्यचान्नमेवाज्यंशूद्रान्नंरुधिरंभवेत्
एतत्सर्वंमयाख्यातंश्राद्धकाले समुत्थिते ३६७
वैश्वदेवे वहोमेचदेवताभ्यर्चनेजपेत्
अमृतंतेनविप्रान्नंऋग्यजुःसामसंस्कृतं ३६९
व्यवहारानुपूर्व्येणधर्मेणबलिभिर्जितं
क्षत्रियान्नंपयस्तेनघृतान्नंयज्ञपालने ३७०
देवोमुनिर्द्विजोराजावैश्यःशूद्रोनिषादकः [३७१
पशुर्म्लेच्छोऽपिचांडालोविप्रादशविधाःस्मृताः

हो उस से भी शुद्ध करने वाला श्राद्ध का दान है ३६६
मनुष्य श्राद्ध को कर के स्वर्गलोक में पूजा को प्राप्त होता है—
ब्राह्मण का अन्न अमृत रूप है—क्षत्री का अन्न दूध रूप है ३६७
वैश्यका अन्न घृत रूप है और शूद्रका अन्न रुधिर रूपहोताहै—
सपूर्ण जो मैंने कहा है इसको श्राद्ध कालके समय,वलि वैश्वदेव,
होम,देवताओं का पूजन, इन में जपे ३६८
ऋग्वेद-यजुर्वेद—सामवेद—के मंत्रों से ब्राह्मण का अन्न
निर्मल होने से अमृत रूप है ३६९
व्यवहार के क्रम से और धर्म से वलवानोंनेजीतकर संचय किया
है इतसे क्षत्री का अन्न दूध रूप है और यज्ञ की रक्षा करने से
वैश्य का अन्नघृत रूप है ३७०
देव—मुनि—द्विज—राजा—वैश्य—शूद्र—निषाद—पशु—म्लेच्छ
चांडाल—ये दश प्रकार के(जिन को आगे कहते हैं) ब्राह्मण
कहेहैं ३७१

संध्यास्नानंजपंहोमंदेवतानित्यपूजनम्
अतिथिवैश्वदेवश्चदेवब्राह्मणउच्यते ३७२
शाकेपत्रेफलेमूलेवनवासेसदारतः
निरतोऽहरहःश्राद्धे सविप्रोमुनिरुच्यते ३७३
वेदांतंप्रठतेनित्यंसर्वसगंपरित्यजेत्
सांख्ययोगविचारस्थःसविप्रोद्विजउच्यते ३७४
अस्त्राहताश्चधन्वानःसंग्रामेसर्वसंमुखे
आरंभेनिर्जितायेनसविप्रःक्षत्रउच्यते ३७५
कृषिकर्मरतोयश्चगवांचप्रतिपालकः
वाणिज्यव्यवसायश्चसबिप्रोबैश्यउच्यते ३७६

संध्या—स्नान—जप—होम—देवता और अभ्यागत का नित्य पूजन वलिवैश्वदेव जो करै—उस ब्राह्मणको देव कहते हैं ३७२
शाक—पत्ते—फल—मूल—इनको भक्षण करै और बन के बसने में और प्रतिदिन श्राद्ध करने में जो तत्पर हो उस ब्राह्मण को मुनि कहते हैं ३७३
जो वेदांत को नित्य पढै और सबके संग को त्यागे सांख्य और योग शास्त्र के बिचार में जो टिके उस ब्राह्मण को द्विज कहते हैं ३७४
जिसने सबके सन्मुख संग्राम में धनुषधारी अस्त्रों से हते हों और जिसने आरंभो को जीता हो (युद्ध आदि काम का प्रारंभ करके पूरा किया हो) उस ब्राह्मणको क्षत्री कहते हैं ३७५
जो खेती के काम में मग्न हो और गौओंके पालनेमें लवलीन हो—जो लेन देन करता हो उस ब्राह्मण को वैश्य कहते हैं ३७६

लाक्षालवणसंमिश्रं कुसुंभक्षीरसर्पिष :
विक्रेतामधुमांसानांसविप्र:शूद्रउच्यते ३७७
चौरश्चतस्करश्चैवसूचकोदंशकस्तथा
मत्स्यमांसेसदालुब्धोविप्रोनिषादउच्यते ३७८
ब्रह्मतत्वंनजानातिब्रह्मसूत्रेणगर्वित :
तेनैवसचपापेनविप्र:पशुरुदाहृत : ३७६
वापीकूपतडागानामारामस्यसरस्सुच
निश्शंकंरोधकश्चैवसविप्रोम्लेच्छउच्यते ३८०
क्रियाहीनश्चमूर्खश्चसर्वधर्मविवर्जित :
निर्दय:सर्वभूतेषुविप्रश्चांडालउच्यते ३८१

लाख—लवण—कुसुम—दूध—घी—मिठाई—मांस—इन को जो बेचे उस ब्राह्मण को शूद्र कहते हैं ३७७

चौर और तस्कर (प्रबल चौर) चुगल—दंशक (प्रचंड) मत्स्य के मांस का लोभी—ऐसे ब्राह्मण को निषाद कहते हैं ३७८

जो ब्रह्म (वेद) के तत्व को न जाने और यज्ञोपवीत का जिसे अभिमान है उसी पाप से उस ब्राह्मण को शूद्र कहते हैं३७६

बावरी—कूप—ताल—बाग—छोटातालाव—इनको जो निश्शंक होकर रोके उस ब्राह्मण को म्लेच्छ कहते ३८०

जो क्रिया से हीन हो—मूर्ख हो—सर्वधर्मों से रहित हो—संपूर्ण भूतों के विषे दयावान् न हो ऐसे ब्राह्मण को चांडाल कहते हैं ३८१

वेदैर्विहीनाश्चपठंतिशास्त्रं
शास्त्रेणहीनाश्चपुराणपाठाः
पुराणहीनाःकृषिणोभवंति
भ्रष्टास्ततोभागवताभवंति ३८२
ज्योतिर्विदोह्यथर्वाणः कीराःपौराणपाठकाः
श्राद्धे यज्ञेमहादानेवरणीयाःकदाचन ३८३
श्राद्धंचपितरंघोरंदानंचैवतुनिष्फलं
यज्ञेचफलहानिस्स्यात्तस्मात्तान्परिवर्जयेत् ३८४
आविकश्चित्रकारश्चवैद्योनक्षत्रपाठकः
चतुर्विप्रानपूज्यंतेबृहस्पतिसमायदि ३८५

वेद जिन्हे नहीं आता वे शास्त्र को पढते हैं और शास्त्र जिन्हें नहीं आता वे पुराणों को पढते हैं—पुराण जिन्हें नही आता वे खेती करते हैं और जिनपे खेती नहीं होसकती वे भागवत (वैरागी) होजात हैं ३८२

ज्योतिषी—अथर्वण वेद के ज्ञाता—कीर (जहां तहां कंठ से जो तोतेकीतरे उपदेश करें) पुराण के पढ़ने वाले—इतने ब्राह्मणों को श्राद्ध यज्ञ और महान् दान में कदाचित् ही बरे अर्थात् औरों के अभाव में ही इनको अधिकार है ३८३

श्राद्ध में पूर्वोक्त ब्राह्मणों के जिमानेसे पितर घोर नरक में जाते हैं और दाननिष्फल होता है और यज्ञमें फल कीहानि होती है तिससे पूर्वोक्त ब्राह्मणों को बर्ज दे ३८४

भेडों का पालनेवाला—चित्राम काढने वाला—वैद्य—और नक्षत्र पाठक (घर २ नक्षत्र तिथि बताता जो फिरे) बृहस्पति के समान भी ये चार ब्राह्मण पूजे नहीं जाते ३८५

मागधोमाथुरश्चैवकापटःकीटकानजौ
पंचविप्रानपूज्यंतेबृहस्पतिसमायदि ३८६
क्रयक्रीताचयाकन्यापत्नीसानविधीयते
तस्यांजाताःसुतास्तेषांपितृपिंडंनविद्यते ३८७
अष्टशल्यागतंनीरंपाणिनापिवतेद्विजः
सुरापानेनतत्तुल्यंतुल्यंगोमांसभक्षणं ३८८
ऊर्ध्वजंघेषुविप्रेषुप्रक्षाल्यचरणद्वयं
तावच्चांडालरूपेणयावद्गंगांनमज्जति ३८९
दीपशय्यासनच्छायाकार्पासंदंतधावनं
अजारेणुस्पर्शंचैवशक्रस्यापिश्रियंहरेत् ३९०

मगध देश का वासी—माथुर (चौबे)—कर्पट देशका वासी कीट और कान देश में जो पैदा हुए हों—ये पांच चाहे बृहस्पति के समान हों तोभी पूजे नहीं जाते ३८६

मोल ली हुई जो कन्या है वह पत्नी (भार्या) नहीं होती और उसके पैदा हुए पुत्रों को पितरों को पिंड देने का अधिकार नहीं है ३८७

अष्टशल्ली (पुर) के जल को जो द्विज हाथ से पीता है वह मदिरा के पीने और गो मांस भक्षण के समान है ३८८

जो खड़े हुए ब्राह्मणके दोनों चरण धोते हैं वे इतने चांडाल रूप रहतेहैं जबतक गंगा स्नान न करलें ३८९

दीपक शय्या और आसनकी छाया(जोअपनेऊपर पड़े)—कपास केवृक्ष की दतोन बकरी की धूल का स्पर्श ये तीनों इन्द्र कीभी लक्ष्मी को हरतेहैं ३९०

गृहाद्दशगुणंकूपंकूपाद्दशगुणंतटं
तटाद्दशगुणंनद्यांगंगासंख्यानविद्यते ३६१
स्रवद्ब्राह्मणंतोयंरहस्यंक्षत्रियंतथा
वापीकूपेतुवैश्यंस्याच्छूद्रंभांडोदकंतथा३६२
तीर्थस्नानंमहादानंयच्चान्यत्तिलतर्पणं
अब्दमेकंनकुर्वीतमहागुरुनिपाततः ३६३
गंगागयात्वमावास्यावृद्धिश्राद्धेक्षयेहनि
मघापिंडप्रदानंस्यादन्यत्रपरिवर्जयेत् ३६४
घृतंवायदिवातैलंपयोवायदिवादधि
चत्वारोत्याज्यसंस्थानहुतंनैवतुवर्जयेत् ३६५

घरसे दशगुणापुण्य कूप में—और कूप से दश गुणा तट पर—और तट से दश गुणा नदी में होता है—और गंगाके पुण्यकी संख्या(गिनती) नहीं है ३६१

वहते हुए जल की ब्राह्मण संज्ञा है—एकान्त के जलकी क्षत्री और वावरी और कूप के जल की वैश्य संज्ञा है—भांड (वरतन) के जल की शूद्र संज्ञा है ३६२

पिता आदि के मरने के अनतर एक वर्ष तक तीर्थ स्नान और महादान और तिलों से तर्पण न करै ३६३

गंगा—गया—अमावस—वृद्धि श्राद्ध(नांदी मुख)क्षयी श्राद्धऔर मघा नक्षत्र में पिंड दान इनको तो पिता के मरणे के अनंतर वर्ष के मध्य में भी करै और इनसे अन्य कर्मों कोत्याग दे ३६४

घी—तेल—दूध—दही—इन चारों को मिलाकर घी के स्थान में जो होम इसे न त्यागे अर्थात् घी के अभाव में इनसे ही कार्य करै ३६५

श्रुत्वैतान्नृषयोधर्मान्भाषितानत्रिणास्वयं
इदमूचुर्महात्मानंसर्वेतेधर्म्मनिष्ठिता: ३९६
यइदंधारयिष्यंतिधर्मशास्त्रमतंद्रिता :
इहलोकेयश:प्राप्यतेयास्यंतित्रिविष्टपं ३९७
विद्यार्थीलभतेविद्यांधनकामोधनानिच
आयुष्कामस्तथैवायु:श्रीकामोमहतींश्रियं ३९८
इतिश्रीअत्रिमहर्षिस्मृति: समाप्ता

अत्रिऋषि ने स्वय कहे इन धर्मों को संपूर्ण ऋषि सुनकर धर्म में भली प्रकार टिके वे सब ऋषि , महात्मा अत्रिऋषि के प्रति यह बोले ३९६

जो पुरुष आलस्य को त्याग कर इस धर्म शास्त्र को जानेंगे वे इस लोक में यश को प्राप्त होकर स्वर्गको प्राप्त होंगे ३९७

इस शास्त्र के पठने से विद्यार्थी विद्या को—धन की जिसे इच्छा हो वह धन को—अवस्था की जिसे इच्छा हो वह अवस्था को—लक्ष्मी की जिसे इच्छा हो वह लक्ष्मी को—प्राप्त होता है—३९४

इत्यत्रिमहर्षिस्मृति:समाप्ता

श्रीगणेशायनमः

अथविष्णुप्रोक्तधर्मशास्त्रप्रारंभः

विष्णुमेकग्रमासीनंश्रुतिस्मृतिविशारदम्
पप्रच्छुर्मुनयःसर्वेकलापग्रामवासिनः १
कृतेयुगे ह्यपक्षीणेलुप्तोधर्म्मस्सनातनः
तत्रवैशोध्यमानेचधर्मोनप्रतिमार्गितः २
त्रेतायुगेऽथसंप्राप्तेकर्तव्यश्चास्यसंग्रहः
यथासंप्राप्यतेस्माभिस्तत्त्वन्नोवक्तुमर्हसि ३
वर्णाश्रमाणांयोधर्मोविशेषश्चैवयःकृतः
भेदस्तथैवचैषांयस्तन्नोब्रूहिद्विजोत्तम ४
ऋषीणांसमवेतानांत्वमेवपरमोमतः

श्रीगणेशायनम

विष्णुस्मृतिः

श्रुति और स्मृतियों में चतुर एकाग्र बैठे हुए विष्णुजी को कलाप ग्राम के वासी संपूर्ण मुनि योंने यह पूछा १

कि कृतयुग वीतने पर सनातन धर्म लुप्त होगया और कृतयुग के वीतने पर किसीने भी धर्म का शोधन नहीं किया २

अब त्रेतायुग वर्तमान है इस में धर्म का संग्रह अवश्य करना चाहिये वह धर्म जिस रीति से हम को प्राप्त हो वह रीति तुम हम को कहो ३

वर्ण और आश्रमों का धर्मऔरजो इनके धर्मों की विशेषता ऋषि योंनेकीहै और परस्पर के धर्म का भेद— यह सब हेद्विजों में श्रेष्ठ हम को कहो ४

यहां इकट्ठे ऋषियों ने तुमही श्रेष्ठ माने हो इस से संपूर्ण धर्म

धर्मस्येहसमस्तस्यनान्योवक्तास्तिसुव्रत ५
श्रुत्वाधर्मंचरिष्यामोयथावत्परिभाषितम्
तस्माद्ब्रूहिद्विजश्रेष्ठधर्मकामाइमेद्विजाः ६
इत्युक्तोमुनिभिस्तैस्तुविष्णुःप्रोवाचतांस्तदा
अनघाःश्रूयतांधर्मोवक्ष्यमाणोमयाक्रमात् ७
ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रश्चैवतथापरे
एतेषांधर्मसारंयद्वक्ष्यमाणंनिबोधत ८
ऋतौऋतौतुसंयोगाद्ब्राम्हणोजायतेस्वयं
तस्माद्ब्राम्हणसंस्कारंगर्भादौतुप्रयोजयेत् ९
सीमंतोन्नयनंकर्मनस्त्रीसंस्कारइष्यते
गर्भस्यैवतुसंस्कारोगर्भेगर्भेप्रयोजयत् १०

का वक्ता हे सुव्रत तुम से अन्य नहीं है ५
धर्म को सुन कर आप के कहने के अनुसार हम आचरण करेंगे
इससे हे द्विजों में उत्तम तुम धर्म का वर्णन करो और ये द्विज
धर्मकी अभिलाषा वाले हैं ६
इस प्रकार जव उन मुनियों ने कहा उस समय उनको विष्णु
बोले कि हे पापशून्यों जिस धर्म को मैं क्रम से कहूंगा उस
को तुम सुनो ७
ब्राह्मण—क्षत्रिय—वैश्य और इतर(शूद्रादि) मेरे कहेहुए इन के
धर्म के सार को तुम सुनो ८
ऋतु (रजो दर्शन से १६दिन के भीतर) में स्त्री और पुरुष के
संयोग से आप ब्राह्मण पैदा होता है इससे ब्राह्मण का संस्कार
गर्भ से लेकर करै ९
सीमंत(आठमासा) कर्म स्त्री का संस्कार नहीं है किन्तु गर्भ का
है इस से प्रति गर्भ में सीमंत करै १०

जातकर्मतथाकुर्यात्पुत्रेजातेयथोदितम्
वहिर्निष्क्रमणंचैवतस्यकुर्याच्छिशोःशुभम् ११
षष्ठेमासेचसंप्राप्तेअन्नप्राशनमाचरेत्
तृतीयेऽब्देचसंप्राप्तेकेशकर्मसमाचरेत् १२
गर्भाष्टमेतथाकर्मब्राह्मणस्योपनायनं
द्विजत्वेत्वथसंप्राप्तेसावित्र्यामधिकारभाक् १३
गर्भादेकादशेसैकेकुर्यात्क्षत्रियवैश्ययोः
कारयेद्द्विजकर्माणिब्राह्मणेनयथाक्रमम् १४
शूद्रश्चतुर्थोवर्णस्तुसर्वसंस्कारवर्जितः
उक्तस्तस्यतुसंस्कारोद्विजेस्वात्मनिवेदनं १५
योयस्यविहितोदंडोमेखलाजिनधारणम्

पुत्र के पैदा हुए पर शास्त्र के अनुसार जात कर्म(दसूठन) करै और उस वालक का मंगल सहित वहिर्निष्क्रमण (घर से वाहर लेजाना) करै ११
और जब छः महीने का वालक हो तब अन्न प्राशन करै और जब तीन वर्ष का हो तब केशकर्म(मुंडन)करै १२
गर्भ से आठवें वर्ष ब्राह्मण का यज्ञोपवीत करै क्योंकि द्विज होने पर ही गायत्री का अधिकारी होता है १३
गर्भ से ग्यारवें वर्ष क्षत्रिय का और वारवें वर्ष वैश्य का यज्ञोपवीत ब्राह्मण से करवावें १४
और चौथा जो शूद्र वर्ण है वह संपूर्ण संस्कार से हीन है उस का संस्कार यही कहा है कि उक्त तीनों वर्णों को अपने आत्मा कोनिवेदन(आधीन)करदे ५१
ब्रह्मचर्य (यज्ञोपवीत से प्रथम काआश्रम) मेंजिसवर्ण का जो २

सूत्रंवस्त्रंचगृह्णीयाद्ब्रह्मचर्यैर्यायंत्रित : १६
ब्राह्मे मुहूर्तउत्थायचोपस्पृश्यपयस्तथा
त्रिराचम्यततःप्राणांस्तिष्ठेन्मौनीसमाहितः १७
अब्दैवतैःपवित्रैस्तुकृत्वात्मपरिमार्जनं
सावित्रींचजपंस्तिष्ठेदासूर्योदयनात्पुरा १८
अग्निकार्यंततःकुर्यात्प्रातरेवव्रतंचरेत्
गुरवेतुततःकुर्यात्पादयोरभिवादनं १६
समित्कुशांश्चोदकुंभमाहृत्यगुरवेव्रती
प्रांजलीःसम्यगासीनउपस्थाययतःसदा २०
यंयंग्रंथमधीयीततस्यतस्यव्रतंचरेत्
सावित्र्युपक्रमात्सर्वमावेदग्रहणोत्तरम् २१

ड मेखला मृगछाला—सूत्र—वस्त्रहैं उस२ का धारण करे १६
ब्राह्ममुहूर्त में उठ और आचमन—और तीन वार प्राणायाम कर के सावधान होकर मौन से बैठे १७
जल है देवता जिनका ऐसे पवित्र मंत्रों से देहका मार्जन कर के सूर्योदयपर्यंत गायत्री का जप करता हुआ बैठारहा १८
तिस के अनंतर अग्निहोत्र करै और प्रातःकाल के समय ही व्रत(महनाम्न्यादि) करै तिसके अनंतर गुरु को प्रणाम करे १६
समित्‌कुश—और जलका घट गुरु के लिये लाकर हाथ जोड और भली प्रकार बैठा हुआ गुरु की स्तुति कर के सावधान हुआ २०
जिस२ ग्रंथ को पढे तिस२ ग्रंथ का व्रत करै और गायत्री के उपदेश से संपूर्ण वेद के पठन पर्यंत २१

द्विजातिषुचरेद्भैक्ष्यंभिक्षाकालेसमागते
निवेद्यगुरवेश्नीयात्संमतोगुरुणाव्रती २२
सायंसन्ध्यामुपासीनोगायत्र्यष्टशतंजपेत्
द्विकालभोजनार्थंचतथैवपुनराहरेत् २३
वेदस्वीकरणेहृष्टोगुर्वधीनोगुरोर्हित:
निष्ठांतत्रैवयोगच्छेन्नैष्ठिकस्सउदाहृत: २४
अनेनविधिनासम्यक्त्वावेदमधीत्यच
गृहस्थधर्ममाकांक्षन्गुरुगेहादुपागत: २५
अनेनैवविधानेनकुर्याद्दारपरिग्रहम्
कुलेमहतिसंभूतांसवर्णांलक्षणान्विताम् २६
परिणीयतुषण्मासान्वत्सरंवानसंविशेत्

तीनों द्विजातियों में भिक्षा के समय भिक्षाटन करै उस भिक्षा को गुरुजी को निवेदन कर के गुरु की संमति से ब्रह्मचारी भोजन करै २२

सायंकाल की संध्या करके आठसे गायत्री जपे और सायंकालको भोजन के लिये उसी प्रकार भिक्षाटन करै २३

जो ब्रह्मचारी वेद पठने में प्रसन्न' और गुरु के आधीन—और गुरु का हितकारी होता है और मरण पर्यंत गुरु के यहां ही स्थित रहता है उसे नैष्ठिक कहते हैं २४

इस विधि से ब्रह्मचर्य धर्म को कर के और वेद को पढकर गुरु के घर से आकर गृहस्थ धर्म की आकांक्षा करता हुआ २५

ऐसे ही शास्त्रोक्त विधि से स्त्री का परिग्रह(विवाह)करै और बड़े कुल में पैदाहुई' और सजातीय' सुलक्षण स्त्री का २६

विवाह करके जो छःमहीने अथवा एक बर्ष पर्यंत स्त्री का संग

औदुंबरायणोनामब्रम्हचारीगृहेगृहे २७
ऋतुकालेतुसंप्राप्तेपुत्रार्थीसंविशेत्तदा
जातेपुत्रेतथाकुर्यादग्न्याधेयंगृहेवसन् २८
पुत्रेजातेऽनृतौगच्छन्संप्रदुष्येत्सदागृही
चतुर्थेब्रम्हचारीचगृहेतिष्ठन्नविस्मृतः २९
इतिवैष्णवधर्मशास्त्रेप्रथमोऽध्यायः १ ॥
अतःपरंप्रवक्ष्यामिगृहीणांधर्ममुत्तमम्
प्राजापत्यपदस्थानंसम्यक्कृत्यंनिबोधत ३०
सर्वःकल्पेसमुत्थायकृतशौचःसमाहितः
स्नात्वासंध्यामुपासीतसर्वकालमतंद्रितः ३१
अज्ञानाद्यदिवामोहाद्रात्रौयद्दुरितंकृतम्

नहीं करता है गृह में रहते हुए भी उस ब्रह्मचारी को औदुंबरायण कहते हैं २७
जब स्त्री को रजो दर्शन हो तब पुत्र की इच्छा से स्त्री का संग करे पुत्र के होने पर घर में रहता हुआ भी अग्निहोत्र ग्रहण करे २८
पुत्र के होने पर ऋतुकाल के विना स्त्री संग करने से गृहस्थी दोषी होता है और चौथे पुत्र होने पर गृहस्थी और जान बूझ कर ब्रह्मचारी ये दोनों घर में रहने से दूषित होते हैं २९
इतिविष्णुस्मृतौ १ अध्याय
इस से आगे गृहस्थियों के उत्तम धर्म को कहताहुं ब्रह्मलोक के स्थान के दाता उस कर्म को भली प्रकार सुनिये ३०
सब कोई प्रभात समय उठ कर और शौचादि करके सदैव आलस को छोड़ कर स्नान करके संध्योपासन करे ३१
अज्ञान से अथवा मोह से जो पाप रात्रि में किया है उस सब

प्रातःस्नानेनतत्सर्वंशोधयंतिद्विजोत्तमाः ३२
प्रविश्याथाग्निहोत्रंतुहुत्वाग्निंविधिवत्ततः
शुचौदेशेसमासीनःस्वाध्यायंशक्तितोऽभ्यसेत् ३३
स्वाध्यायान्तेसमुत्थायस्नानंकृत्वातुमंत्रवित्
देवानृषीन्पितृंश्चापितर्पयेत्तिलवारिणा ३४
मध्यान्हेत्वथसंप्राप्तेशिष्टंभुंजीतवाग्यतः
भुक्तोपविष्टोविश्रांतोब्रम्हकिंचिद्विचारयेत् ३५
इतिहासंप्रयुंजीतत्रिकालसमयेगृही
कालेचतुर्थेसंप्राप्तेगृहेवायदिवाबहिः ३६
आसीनःपश्चिमांसंध्यांगायत्रींशक्तितोजपेत्

को प्रातःकाल के स्नान करने से द्विजों में उत्तम मनुष्य दूर करते हैं ३२
फिर अग्नि की शाला में प्रविष्ठ होकर विधि से अग्निहोत्र कर के शुद्ध देश में वैठा हुआ शक्ति के अनुसार वेद को पढे ३३
वेद के पाठ के अंत में उठकर वेद के पढने वाला द्विज स्नान कर के तिल और जल से देवता ऋषि और पितर इनका तर्पण करै ३४
फिर जब मध्यान्ह काल आवै तब शिष्ट(बलिवैश्व देव से वच हुआ) अन्न को मौन होकर भोजन करै भोजन के पीछे वैठ और विश्राम कर के कुछ ब्रह्मका विचार करै ३५
दिन के तृतीय भाग में इतिहास(महाभारत आदि)काभी विचार करै और सायंकाल होने पर घर में अथवा वाहर ३६
पश्चिम दिशा के सन्मख वैठाहुआ संध्योपासन करै और यथा

हुत्वाचाथाग्निहोत्रंतुकृत्वाचाग्निपरिक्रियां ३७
बलिंचविधिवद्दत्वाभुंजीतविधिपूर्वकम्
दिवावायदिवारात्रौअतिथिस्त्वाव्रजेद्यदि ३८
तृणभूवारिवाग्भिस्तुपूजयेत्तंयथाविधि
कथाभिःप्रीतिमाहृत्यविद्यादीनिविचारयेत् ३९
संनिवेश्याथविप्रंतुसंविशेत्तदनुज्ञया
यदियोगीतुसंप्राप्तोभिक्षार्थीसमुपस्थितः ४०
योगिनंपूजयेन्नित्यमन्यथाकिल्बिषीभवेत्
पुरेवायदिवाग्रामेयोगीसन्निहितोभवेत् ४१
पूज्यानित्यंभवंत्येवसर्वेवैवनिवासिनः
तस्मात्संपूजयेन्नित्यंयोगिनंगृहमागतं ४२

शक्ति गायत्री का जप करै फिर अग्निहोत्र और अग्नि की प्रद क्षिणा ३७
और विधिसे वलिवैश्वदेव करके विधि पूर्वक भोजन करै जो दिन में अथवा रात्रि में अभ्यागत आजाय तो ३८
तृण(आसन)भूमि जल वाणी से उसका आदर सत्कार करै जाने आने की कथा (बडी कृपाकी कि आप आयेदत्यादि) से उस को संतुष्ट कर के विद्या आदि का विचार करै ३९
उसे प्रथम शयन करा कर उस की आज्ञा से शयन करै जो भिक्षा के लिये योगी आवे तो उस के समीप वैठ कर ४०
योगी का नित्य पूजन करै नहीं तो पाप का भागी होता है पुर में अथवा ग्राम में यदि योगी प्राप्तहो ४१
तो उस योगी के आने से—वहां के निवासी सव पूजने योग्य होते हैं तिस से घर में आये योगी का नित्य पूजन करै४२

तस्मिन्प्रयुक्तायापूजासाक्षयायोपकल्प्यते
गृहमेधिनांयत्प्रोक्तंस्वर्गसाधनमुत्तमम् ४३
ब्राम्हेमुहूर्तउत्थायतत्सर्वंसम्यगाचरेत्
चतुःप्रकारंभिद्य तेगृहिणोधर्मसाधकाः ४४
वृत्तिभेदेनसततंज्यायांस्तेषांपरःपरः
कुसूलधान्यकोवास्यात्कुंभीधान्यकएववा ४५
त्र्यहैहिकोवापिभवेत्सद्यःप्रक्षालकोपिवा
श्रौतंस्मार्तंचयत्किंचिद्विधानंधर्मसाधनं ४६
गृहेतद्वसताकार्यमन्यथादोषभाग्भवेत्

उस की जो पूजा की है वह अक्षय (अविनाशी)सुख देने वाली होती है गृहस्थियों का उत्तम स्वर्ग का साधन जो कर्म है वह कर्म में तुम को कहता हूं कि ४३

ब्राह्ममुहूर्त(३ अथवा४ घटी रात्रि रहेपर)में उठ कर उस(पूर्वोक्त) संपूर्ण कर्म का भली प्रकार आचरण करै—धर्म के सिद्ध करने वाले गृहस्थी चार प्रकार से भिन्न २ होते हैं ४४

अपनीर वृत्ति(जीविका)के भेद से उन में उत्तर२ श्रेष्ठ होता है १ कुसूलधान्यक(कोठे में इतने अन्न को जो रक्खै जिस से ३वर्ष निर्वाह हो) २ कुंभी धान्यक (कुंडों में इतने अन्न कोजोरक्खै जिससे १वर्ष निर्वाह हो ४५

३त्र्यहैहिक(तीन दिन का जो अन्न रक्खै)सद्यः प्रक्षालक (उस दिन का उसी दिन उठाने वाला)वेद अथवा स्मृतियों में कहा हुआ जो धर्म का साधन कर्म है ४६

घर में बसते हुए मनुष्य को वह संपूर्ण करना क्योंकि न करने

एवंविप्रोगृहस्थस्तुशांतःशुक्लांबरःशुचिः ४७
प्रजापतेःपरंस्थानंसम्प्राप्नोतिनसंशयः
इतिवैष्णवेधर्मशास्त्रेद्वितीयोऽध्यायः२
गृहस्थोब्रह्मचारीवावनवासंयदाचरेत् ४८
चीरवल्कलधारीस्यादकृष्टाश्नाशनोमुनिः
गत्वाचविजनंस्थानंपंचयज्ञान्नहापयेत् ४९
अग्निहोत्रंचजुहुयादन्नैर्नीवारकादिभिः
श्रावणेनाग्निमादायब्रम्हचारीवनेस्थितः ५०
पंचयज्ञविधानेनयज्ञंकुर्यादतंद्रितः
संचितंतुयदारण्यंभक्तार्थंविधिवद्वने ५१

से दोष का भागी होता है इस प्रकार शांतस्वभाव—शुक्ल वस्त्रों वाला—शुद्ध—गृहस्थी ब्राह्मण ४७
ब्रह्मा के उत्तम स्थान को प्राप्त होता है इस में संदेह नहीं
इतिविष्णुस्मृतौ२अध्यायः
गृहस्थी अथवा ब्रह्मचारी जब वन के वास को करता है ४८
तब चीर)चीथड़े) अथवा वक्कल इन को धारण करे और अकृ धान्न(जो बिना जोते और बोए पैदाहो)को भक्षण करे और मौन रहै और निर्जन स्थान में जाकर भी पंचयज्ञों का परित्याग न करै ४९
अन्न अथवा नीवार आदि से अग्नि होत्र भी करे और श्रावण मास में अग्नि को लेकर वन में रहता हुआ ब्रह्मचारी ५०
पंच यज्ञ की विधिसे आलस को छोड़कर यज्ञ करै जो अपने भोजन के लिये वनका अन्न इकट्ठा किया है ५१

त्यजेदाश्वयुजेमासिवन्यमन्यत्समाहरेत्
आकाशशायीवर्षासुहेमंतेचजलाशयः ५२
ग्रीष्मेपंचाग्निमध्यस्थोभवेन्नित्यंवनेवसन्
कृच्छ्रं चांद्रायणंचैवतुलापुरुषमेवच ५३
अतिकृच्छ्रं प्रकुर्वीतत्यक्त्वाकामान्शुचिस्ततः
त्रिसंध्यंस्नानमातिष्ठेत्सहिष्णुर्भूतजान्गुणान् ५४
पूजयेदतिथींश्चैवब्रम्हचारीवनंगतः
प्रतिग्रहंनगृह्णीयात्परेषांकिंचिदात्मवान् ५५
दाताचैवभवेन्नित्यंश्रद्दधानःप्रियंवद :
रात्रौस्थंडिलशायीस्यात्प्रपदैस्तुदिनंक्षिपेत् ५६

उसको अश्विन के मास में त्याग दे और नये वन के अन्न को संग्रह करै और वर्षा काल में आकाश (खुला उंचा स्थान) में और जाड़ों में जल में सोवे ५२
ग्रीष्म ऋतु (गरमी) में पंचाग्नि के मध्य में वन में वसता हुआ मनुष्य नित्य रहै और तिसके अनंतर कृच्छ्र चांद्रायण—तुला पुरुष ५३
अति कृच्छ्र इन व्रतों को निष्काम होकर शुद्धता से करै और पांचों भूतों के गुणों (शब्द स्पर्श रूप—रस—गंध—) को सहता हुआ त्रिकाल स्नान को करै ५४
वन में प्राप्त हुआ ब्रह्मचारी अतिथियों का पूजन करै और आत्मा को जानता हुआ किसी से प्रतिग्रह (दान) न ले ५५
प्रिय भाषी और श्रद्धावान् होकर प्रति दिन दान दे रात्रि में स्वयं बनाये मंच (चबूतरे) पर सोवे और पैरोंसे फिरते २ दिन कोबितादे ५६

वीरासनेनतिष्ठेद्वाक्लेशमात्मन्यचिंतयन्
केशरोमनखश्मश्रूनछिंद्यान्नापिकर्तयेत् ५७
त्यजन्शरीरसौहार्दं वनवासरतःशुचिः
चतुःप्रकारंभिद्यंतेमुनयःशंसितव्रताः ५८
अनुष्ठानविशेषेणश्रेष्ठास्तेषांपरःपरः
वार्षिकंवन्यमाहारमाहृत्यविधिपूर्वकम् ५६
वनस्थधर्मेमातिष्ठन्नयेत्कालंजितेंद्रियः
भूरिसंवार्षिकश्चायंवनस्थःसर्वकर्मकृत् ६०
आदेहपतनंतिष्ठेन्मृत्युंचैवनकांक्षति
षण्मासांस्तुततश्चान्यःपंचयज्ञक्रियापरः ६१

अथवा अपने मनमें क्लेश को नहीं मानता हुआ वीरासन से बैठा रहै और केश—रोम—नख—डाढी—इनको न कतरे और न छेदन करै ५७

बन वास में तत्पर शुद्ध अपने शरीर की प्रीति को छोड़ता हुआ अपने पर्वोक्त कर्मको करै कठिन(तीखे) इस व्रतवाले मुनि चार प्रकारके होते हैं ५८

अनुष्ठान (अपनेर कर्तव्य) के विशेष से उनमें उत्तर २ श्रेष्ठ होता है—१ वर्ष भर के लिये विधि पूर्वक वनके आहार (नीवारादि) को संचय करके वानप्रस्थों के धर्म में टिकता हुआ इंद्रियों को जीत और आलस्य को छोड़कर ५९

काल को जो व्यतीत करै इन सब कर्मों के कर्ता वानप्रस्थ को भूरिसंवार्षिक कहते हैं ६०

२ दूसरा—मरण तक बन में रहै और मृत्यु की भी इच्छा न करै पंच यज्ञ कर्म में तत्पर हुआ छः महीने तक के अन्नका संचय करके ६१

कालेच थेभुंजानोदेहंत्यजतिधर्मत :
त्रिंशद्दिनार्थमाहृत्यवन्यान्नानिशुचिव्रत : ६२
निर्वर्त्यसर्वकार्याणिस्याच्चषष्ठान्नभोजन :
दिनार्थमन्नमादायपंचयज्ञक्रियारत : ६३
सद्य : प्रक्षालकोनामचतुर्थ : परिकीर्तित :
एवमेतेहिवैमान्यामुनय : शंसितव्रता : ६४
इति० वैश्या० धर्म० तृतीयाध्याय : ३
यथोत्तमानिस्थानानिप्राप्नुवंतिदृढव्रता :
ब्रह्मचारीगृहस्थोवावानप्रस्थोयतिस्तथा ६५
विरक्त : सर्वकामेषुपारिव्रज्यंसमाश्रयेत्
आत्मन्यग्नीन्समारोप्यदत्त्वाचाभयदक्षिणाम् ६६

चौथे काल (सन्ध्या) में भोजन करता हुआ धर्म से देह को त्याग ता है तीसरा तीस दिन के लिये वन के अन्नका संचय करके और शुद्ध व्रत होकर ६२
सब कर्मोंकोकरके छटे दिन भोजन करे ४ चौथा एक दिनकेलिये अन्नका संग्रह करके पंचयज्ञ कर्म में तत्पर रहै ६३
यह संद्यः प्रक्षालक नाम चौथा कहा है इस प्रकार ये चारों तीक्ष्णे व्रतवाले मुनि पूजनीय होते हैं ६४

इति विष्णुस्मृतौ ३ अध्याय

जिस प्रकार ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ और यति ये चारों दृढ व्रत हुए उत्तम स्थान (ब्रह्मलोक) को प्राप्तहोतेहैं वहयह है कि ६५
सब कामनाओं से विरक्त होकर संन्यास को ग्रहण अपने आत्मा ही में अग्नियों का समारोप (मानना) करके और स्त्री आदि कों को अभय दक्षिणा (त्याग) देकर ६६

चतुर्थमाश्रमंगच्छेद्ब्राह्मणः प्रव्रजन्गृहात्
आचार्येणसमादिष्टंलिंगंयत्नात्समाश्रयेत् ६७
शौचमाश्रमसम्बद्ध यतिधर्माश्चशिक्षयेत्
अहिंसासत्यमस्तेयंब्रह्मचर्यमफल्गुता ६८
दयांचसर्वभूतेषुनित्यंनतद्यतिश्चरेत्
ग्रामांतेवृक्षमूलेचनित्यकालनिकेतनः ६९
पर्यटेत्कीटवद्भूमिंवर्षास्वेकत्रसंविशेत्
वृद्धानामातुराणांचभीरूणांसंगवर्जितः ७०
ग्रामेवापिपुरेवापिवासेनैकत्रदुष्यति
कौपीनाच्छादनंवासःकंथांशीतापहारिणीं ७१
पादुकेचापिगृह्णीयात्कुर्यान्नान्यस्यसंग्रहं

घर से चलकर ब्राह्मण चौथे आश्रम में गमन करै आचार्य के कहे हुए चिन्ह (दंड आदि) को यत्न से धारै ६७
संन्यास आश्रम के शौच और संन्यासियों के धर्मों को सीखे अहिंसा—सत्य—चोरी का त्याग—ब्रह्मचर्य—अफल्गुता (निरर्थकपनेका त्याग) ६८
संपूर्ण भूतों पर दया इतने कर्म यतिनित्य करे—ग्रामके समीप किसी वृक्ष के नीचे सदैव स्थान रक्खै ६९
कीड़ेके समान पृथ्वी पर विचरे और वर्षा कालमें एक जगे बैठे और वृद्ध—रोगी—भयानक इनके संग को न करै ७०
ग्राममें अथवा नगर में एकस्थान में वर्तनेसेयति दूषित होता है कौपीन (लगोटी) ओढने का वस्त्र—जिसमें शीत न लगे ऐसी कंथा (गुदड़ी) ७१
और खड़ाऊं इनको ग्रहण करै और इनसे इतर का संग्रह न

संभाषणंसहस्त्रीभिरालंभप्रेक्षणेतथा ७२
नृत्यंगानंसभासेवांपरिवादांश्चवर्जयेत्
वानप्रस्थगृहस्थाभ्यांप्रीतिंयत्नेनवर्जयेत् ७३
एकाकीविचरेन्नित्यंत्यक्त्वासर्वपरिग्रहम्
याचितायाचिताभ्यांतुभिक्षयाकल्पयेत्स्थितिं ७४
साधुकारंयाचितंस्यात्प्राक्प्रणीतमयाचितम्
चतुर्विधाभिक्षुकाःस्युकुटीचक्रबहूदकौ ७५
हंसःपरमहंसश्चपश्चाद्योयःसउत्तमः
एकदंडीभवेद्वापित्रिदंडीवापिवाभवेत् ७६
त्यक्त्वासर्वसुखास्वादंपुत्रैश्वर्यसुखंत्यजेत्
अपत्येषुवसेन्नित्यंममत्वंयत्नतस्त्यजेत् ७७

करै स्त्रियों के संग बोलना—स्पर्श—देखना ७२
नाच—गान—सभा—सेवा, नोकरी' निन्दा—इनको त्याग दे और
वानप्रस्थ औरगृहस्थी इनके संगभीयत्नसे प्रीतिको त्याग दे७२
संपूर्ण परिग्रह (परिकर) त्यागकर अकेला विचरै—मांगने और
विनामांगेने से जो मिले उससे अपना निर्वाह करै ७४
अच्छा कह कर लेने को याचित विना मांगे जो मिले उसे
अयाचित कहते हैं—ये संन्यासी चार प्रकारके होते हैं—१कुटी
चक—२बहूदक ७५
३ हंस—४ परमहंस—इनमें जो२ पिछला है वह २ उत्तम है
एक दंड को धारण करै अथवा तीन दंड को ७६
सब सुखों के स्वाद को त्यागकर पुत्रके ऐश्वर्य (प्रताप) के सुख
को त्यागे अपने लड़कों ही में नित्य बसे और यत्न से ममता
को त्याग दे ७७

नान्यस्यगेहेभुंजीतभुंजानोदोषभाग्भवेत्
कामंक्रोधंचलोभंचतथैर्ष्यांसत्यमेवच ७८
कुटीचकस्त्यजेत्सर्वंपुत्रार्थंचैवसर्वत:
भिक्षाटनादिकेऽशक्तोयतिःपुत्रेषुसंन्यसेत् ७९
कुटीचकइतिज्ञेयः परिव्राट्त्यक्तबांधवः
त्रिदंडंकुंडिकांचैवभिक्षाधारंतथैवच ८०
सूत्रंतथैवगृह्णीयान्नित्यमेवबहूदकः
प्राणायामेष्वभिरतोगायत्रींसततंजपेत् ८१
विश्वरूपंहृदिध्यायन्नयेत्कालंजितेंद्रियः
ईषत्कृतकषायस्यलिंगमाश्रित्यतिष्ठतः ८२
अन्नार्थंलिंगमुद्दिष्टंनमोक्षार्थमितिस्थितिः

अन्य के घर में भोजन न करै क्योंकि पराये घर में जो भोजन को करै वह दोषका भागी होताहै और काम क्रोध लोभ ईर्षा, झूट इनको ७८

सबके संग पुत्र के लिये कुटीचक १ त्याग दे—भिक्षाटन आदि में असमर्थ होकर संन्यासी अपने पुत्रोंको ही देहको सौंपदे७९ इसको कुटीचक कहते हैं—२ दूसरा त्याग दिये हैं बंधु जिसने. ऐसा संन्यासी त्रिदंड—कुंडी और भिक्षा का पात्र ८० यज्ञोपवीत इनको बहूदक २ नित्य ग्रहण करै प्राणायाम में तत्पर हुआ निरंतर गायत्री को जपै ८१

भगवान् का हृदे में ध्यान करता हुआ इंद्रियों को जीतकर काल को व्यतीत करै—कुछेक गेरूवा वस्त्रों को करके एक चिन्ह (संन्यासकीपहचान) बनाकर टिकते हुए संन्यासीका८२ चिन्ह अन्न के वास्ते कहा है मोक्षके लिये नहीं कहा ऐसी

त्यक्त्वापुत्रादिकंसर्वंयोगमार्गव्यवस्थित:८३
इंद्रियाणिमनश्चैवकर्षन्हंसोभिधीयते
कृच्छ्रैश्चान्द्रायणैश्चैवतुलापुरुषसंज्ञकै: ८४
अन्यैश्चशोषयेद्देहमांकांक्षन्ब्रम्हण:पदम्
यज्ञोपवीतंदंडंचवस्त्रंजंतुनिवारणं ८५
अयंपरिग्रहोनान्योहंसस्यश्रुतिवेदन:
आध्यात्मिकंब्रम्हजपन्प्राणायामांस्तथाचरन् ८६
वियुक्त:सर्वसंगेभ्योयोगीनित्यंचरेन्महीं
आत्मनिष्ठ:स्वयंयुक्तस्त्यक्तसर्वपरिग्रह : ८७
चतुर्थोयंमहानेषांध्यानभिक्षुरुदाहृत :

मर्यादा है भीतरे इससे संपूर्ण पुत्रादिकों को त्याग और योग मार्ग में टिक कर ८३
इंद्रिय और मन को वश में करते हुए संन्यासी को हंस ३कहते हैं—कृछ्र—चांद्रायण—तुला पुरुष ८४
और इतर ब्रतों से ब्रह्मपद की इच्छा करता हुआ संन्यासी अपने देह को सुखादे—यज्ञोपवीत—दंड—और जिस से जीव देहपर न गिरें ऐसा बस्त्र ८५
वेद के ज्ञाता हंस को यही परिग्रह है इतर नहीं ४चौथा अपने आत्मा(देह) में व्यापक ब्रह्म को जपता और प्राणायामों को करता हुआ ८६
सब संगों से वियुक्त(रहित) और आत्मा में टिक और युक्त होकर त्यागे हैं परिकर(गृह आदि) जिस ने ऐसा होकर पृथिवी पर नित्य विचरै ८७
यह चौथा इनचारों में बड़ा और ध्यान भिक्षु(परमहंस)कहा है

त्रिदंडंकुंडिकांचैवसूत्रंचाथकपालिकाम् ८८
जंतूनांवारणंवस्त्रंसर्वंभिक्षुरिदंत्यजेत्
कौपीनाच्छादनार्थंचवासोधश्चपरिग्रहेत् ८९
कुर्यात्परमहंसस्तुदंडमेकंचधारयेत्
आत्मन्येवात्मनाबुद्ध्यापरित्यक्तशुभाशुभः ९०
अव्यक्तलिंगोऽव्यक्तश्चचरेद्भिक्षुःसमाहितः
प्राप्तपूजोनसंतुष्येदलाभेत्यक्तमत्सरः ९१
त्यक्ततृष्णःसदाविद्वान्मूकवत्पृथिवींचरेत्
देहसंरक्षणार्थंतुभिक्षामीहेद्द्विजातिषु ९२
पात्रमस्यभवेत्पाणिस्तेननित्यंगृहानटेत्
अतैजसानिपात्राणिभिक्षार्थंक्लृप्तवान्मनुः ९३

त्रिदंड—कुंडी—यज्ञोपवीत—कापालिका) भिक्षा का पात्र)८८ जंतुओं का निवारण वस्त्र इन सब को भिक्षुक त्यागदे—कौपीन ओढ़ने का वस्त्र इनको ही केवल धारण ८९
परमहंस करै और एक दंड का धारण करै और अपने मन में ही अपनी बुद्धि से त्याग दिया है शुभ और अशुभ कर्म जिसने ९० अपने चिन्ह को छिपाकर अप्रकट होकर सावधान हुआ विचरै पूजा (बडाई)की प्राप्ति से प्रसन्न न हो और पूजा की नहीं प्राप्ति से क्रोध न करै ९१
त्यागी है तृष्णा जिसने ऐसा ज्ञानी गुंगे के समान पृथिवी में विचरै और देह की रक्षा के अर्थ भिक्षाकोद्विजातियों में मांगे ९२ भिक्षुक का पात्र हाथ है उसी से नित्य गृहों में विचरै अर्थात् भिक्षा मांगे और मनुजी ने भिक्षा के लिये विना धातु तुंबा आदि के पात्र रचे हैं ९३

सर्वेषामेवभिक्षाणांदार्वलाबुमयानिच
कांस्यपात्रेनभुंजीतआपद्यपिकथंचन ९४
मलाशाःसर्वउच्यंतेयतयःकांस्यभोजनः
कांसिकस्यतुयत्पापंगृहस्थस्यतथैवच ९५
कांस्यभोजीयतिःसर्वंतयोःप्राप्नोतिकिल्बिषं
ब्रम्हचारीगृहस्थश्चवानप्रस्थोयतिस्तथा ९६
उत्तमांवृत्तिमाश्रित्यपुनरावर्त्तयेद्यदि
आरूढपतितोज्ञेयःसर्वधर्म्मबहिष्कृतः ९७
निंद्यश्चसर्वदेवानांपितॄणांचतथोच्यते
त्रिदंडलिंगमाश्रित्यजीवंतिबहवोद्विजाः ९८
नतेषामपवर्गोस्तिलिंगमात्रोपजीविनां

संपूर्ण भिक्षुओं को काष्ठ तुंबा आदि के पात्र कहे हैं और कांसी के पात्र में विपत्ति के समय में भी भोजन न करै ९४
कांसी में खानेवाले संपूर्ण यति मल(बिष्ठा) के भोक्ता कहे हैं कांसी के पात्र बनाने वाले को और उस में भोजन कराने वाले ग्रहस्थ को जो पाप होता है ९५
उन दोनों के उस पाप को कांसी के पात्र में भोजन करने वाला संन्यासी प्राप्त होता है—जो ब्रह्मचारी—ग्रहस्थ—वानप्रस्थ और संन्यासी ९६
उत्तम आचरण को स्वीकारकर फिर उस का त्याग करता है उसे आरूढ पतित जानना और सब धर्मों से बहिष्कृत (वाह्य) ९७
औरवह सब देवता और पितरोंमें निंदित कहाहै त्रिदंड(संन्यास) के आश्रय से वहुत से द्विजों में उत्तम जीते हैं ९८
लिंग मात्र से जीने वाले उन का मोक्ष नहीं होता—और जो

त्यक्त्वालोकांश्चवेदांश्चविषयाणीन्द्रियाणिच ९९
आत्मन्येवस्थितोयस्तुप्राप्नोतिपरसंपदम्
इति० वैश्या० धर्म्म० चतुर्थोऽध्यायः ४
राज्ञांतुपुण्यवृत्तानांत्रिवर्गपरिकांक्षिणाम् १००
वक्ष्यमाणास्तुयोधर्मस्तत्त्वतस्तन्निबोधत
तेजःसत्यंधृतिर्दाक्ष्यंसंग्रामेष्वनिवर्तिता १०१
दानमीश्वरभावश्चक्षत्रधर्मःप्रकीर्तितः
क्षत्रियस्यपरोधर्मःप्रजानांपरिपालनम् १०२
तस्मात्सर्वप्रयत्नेनरक्षयेन्नृपतिःप्रजाः
त्रीणिकर्माणिकुर्वीतराजन्यस्तुप्रयत्नतः १०३
दानमध्ययनंयज्ञंततोयोगनिषेवणम्
ब्राह्मणानांचसंतुष्टिमाचरेत्सततंतथा १०४

लोक—वेद—विषय, इंद्रिय—इन को त्याग कर ९९
आत्मा के विषेही टिकता है वह परम पद को प्राप्त होता है
पवित्र है आचार जिनका ऐसे धर्म अर्थ कामके अभिलाषी राजाओं का १००
जो धर्म—उस को मैं कहता हुं तुम सुनो—तेज—सत्य—धैर्य—दक्षता (चतुराई) संग्राम से न भागना १०१
दान—ईश्वरता (यथार्थन्याय करना) यह क्षत्रिय का धर्म कहा है प्रजाओं को पालना करणा क्षत्रियों का परम धर्म है १०२
तिससे सब यत्नों से राजा प्रजाओं की रक्षा करे और क्षत्रिय यत्न से तीन कर्मों को करे कि १०३
दान—पठना—यज्ञ—और फिर योग मार्ग का सेवन और निरंतर ब्राह्मणों के संतोष देने वाला आचरण करे १०४

तेषुतुष्टेषुनियतंराज्यंकोशश्चवर्द्धते
वाणिज्यंकर्षणंचैवगवांचपरिपालनम् १०५
ब्राह्मणक्षत्रसेवाचवैश्यकर्मप्रकीर्तितम्
खलयज्ञंकृषीणांचगोयज्ञंचैवयत्नतः १०६
कुर्य्याद्वैश्यश्चसततंगवांचशरणंतथा
ब्राह्मणक्षत्रवैश्यांश्चचरेन्नित्यममत्सरः १०७
कुर्वंस्तुशूद्रःशुश्रूषांलोकान्जयतिधर्मतः
पंचयज्ञविधानंतुशूद्रस्यापिविधीयते १०८
तस्यप्रोक्तोनमस्कारःकुर्वन्नित्यंनहीयते
शूद्रोपिद्विविधोज्ञेयःश्राद्धीचैवेतरस्तथा १०९
श्राद्धीभोज्यस्तयोरुक्तोह्यभोज्यस्त्वितरोमतः

उन के प्रसन्न हुएपर राजा का राज्य और कोश(खजाना) वढ़ता है—व्यवहार(लेन देन) कृषि गौओं की पालना १०५
ब्राह्मण और क्षत्रिय की सेवा यें कर्म वैश्य के कहे हैं और कृषि (खेती) के खलियान के यज्ञ और गौओं के यज्ञ को १०६
और गौओं के शरण (घर)इन को वैश्य निरंतर करै—और शूद्र ईर्ष्या को त्यागकर ब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य,इन की नित्य सेवा करै १०७
क्योंकि इन की शुश्रूषा को धर्म से करता हुआ शूद्र लोक (स्वर्गादि) को जीतता (प्राप्त होता) है और पंचयज्ञ का करना शूद्र को भी कहा है १०८
उस को भी नमस्कार कहा है इस से नमस्कार करता हुआ शूद्र पतित नहीं होता—शूद्र भी दो प्रकार का है एक श्राद्ध का अधिकारी और दूसरा अनधिकारी १०९

प्राणानर्थांस्तथादारान्ब्राह्मणार्थन्निवेदयेत् ११०
सशूद्रजातिर्भोज्यः स्यादभोज्यः शेषउच्यते
कुर्याच्छूद्रस्त्वशुश्रूषांब्रह्मक्षत्रविशांक्रमात्
कुर्यादुत्तरयोर्वैश्यः क्षत्रियोब्राह्मणस्यतु
आश्रमास्तुत्रयः प्रोक्तावैश्यराजन्ययोस्तथा ११२
पारिब्राज्याश्रमप्राप्तिर्ब्राह्मणस्यैवचोदिता
आश्रमाणामयंप्रोक्तोमयाधर्मः सनातनः ११३
यदत्राविदितंकिंचित्तदन्येभ्योगमिष्यथ-
इतिविष्णुप्रोक्तंधर्म शास्त्रं समाप्तम् ॥

उन दोनों में से श्राद्ध के अधिकारी का भोजन करना—और अनधि कारी का नहीं—जो शूद्र अपने प्राण—धन, स्त्री इन को ब्राह्मण की सेवा में निवेदन करदे ११०
वह शूद्र भोजन करने योग्य है और शेष शूद्र अभोज्य हैं और शूद्र क्रम से ब्राह्मण—क्षत्रिय—वैश्य—इन की सेवा को करे १११
और वैश्य 'ब्राह्मण क्षत्रिय की सेवा करै और क्षत्रिय, ब्राह्मण की ही सेवा करै और वैश्य और क्षत्रिय इन के तीन आश्रम कहे हैं अर्थात् ब्रह्मचर्य—गृहस्थ, वानप्रस्थ ११२
और संन्यास आश्रम की प्राप्ति ब्राह्मण को ही कही है—यह चारों आश्रमों का सनातन धर्म मैंने कहा ११३
जो कुछ इस में तुमने नहीं जाना उस को इतर ग्रंथों से जान जाओगे

इति

अथ हारीतस्मृतिप्रारंभः

येवर्णाश्रमधर्म्मस्थास्तेभक्ताःकेशवंप्रति
इतिपूर्वंत्वयाप्रोक्तंभूर्भुवःस्वर्द्विजोत्तमाः १
वर्णानामाश्रमाणाञ्चधर्मान्नोब्रूहिसत्तम
येनसंतुष्यतेदेवोनारसिंहःसनातनः २
अत्राहंकथयिष्यामिपुरावृत्तमनुत्तमं
ऋषिभिःसहसंवादंहारीतस्यमहात्मनः ३
हारीतंसर्वधर्म्मज्ञमासीनमिवपावकम्
प्रणिपत्याऽब्रुवन्सर्वेमुनयोधर्मकांक्षिणः ४
भगवन्सर्वधर्मज्ञसर्वधर्मप्रवर्त्तक
वर्णानामाश्रमाणांचधर्मान्नोब्रूहिभार्गव ५

जो भू भुवःस्वर्ग लोकके द्विजोंमें उत्तम—औरवर्ण और आश्रम के धर्म में स्थित हैं वे केशव भगवान् के भक्त भी होते हैं यह प्रथम तुमने कहा—१

अब हे पुरुषों में श्रेष्ठ जिस से सनातन नरसिंह देव प्रसन्न हों उस वर्ण और आश्रम के धर्म को कहो २

इस विषय में उत्तम पुरातन वृत्तांत को में कहूंगा उस में हारीत महात्मा के संग ऋषियों का संवाद है ३

अग्नि के समान—बैठेहुए सब धर्मों के ज्ञाता—हारीत को धर्म के अभिलाषी संपूर्ण मुनि नमस्कार करके बोले ४

हे भगवान् हे सब धर्मों के जानने वाले—हे सब धर्मों के प्रचार करने वाले और हे भृगुवंश में उत्पन्न वर्ण और आश्रमों के धर्म को हमें कहो ५

समासाद्योगशास्त्रंचविष्णुभक्तिकरंपरं
एतच्चान्यच्चभगवन्ब्रूहिनःपरमोगुरुः ६
हारीतस्तानुवाचाथतैरेवंचोदितोमुनिः
शृण्वन्तुमुनयःसर्वेधर्म्मान्वक्ष्यामिशाश्वतान् ७
वर्णानामाश्रमाणांचयोगशास्त्रंचसत्तमाः
सन्धार्यमुच्यतेमर्त्योजन्मसंसारबंधनात् ८
पुरादेवोजगत्स्रष्टापरमात्माजलोपरि
सुष्वापभोगिपर्यंकेशयनेतुश्रियासह ९
तस्यसुप्तस्यनाभौतुमहत्पद्ममभूत्किल
पद्ममध्येऽभवद्ब्रह्मावेदवेदांगभूषणः १०
सचोक्तोदेवदेवेनजगत्सृजपुनःपुनः

और संक्षेप से जो विष्णुमें उत्तम भक्ति का संपादक योगशास्त्र तिसको और हे भगवन् इतर उत्तम उपदेश को कहो क्योंकि तुम हमारे परम गुरु हो ६
उन मुनियों के इस प्रकार प्रेरेहुए हारीत मुनि उन को बोले कि हे संपूर्ण मुनियो सुनो मैं सनातन धर्मों को कहता हुं ७
वर्ण और आश्रमों के धर्म और योगशास्त्र को भली प्रकार जान करे मनुष्य जन्म और संसार के बंधन से छूटता है ८
पूर्व समय में जगत् के रचने वाले देव परमात्मा जलों के उपर शेष शय्यापर लक्ष्मी सहित सोये ९
सोते हुए उन की नाभि से महान् (बडा) कमल हुआ उस पद्म के वीच वेद और वेदांगों का भूषण ब्रह्मा हुआ १०
उस को देवों के देव परब्रह्म ने वार वार यह कहा कि तू जगत

सोपिसृष्ट्वाजगत्सर्वंसदेवासुरमानुषम् ११
यज्ञसिद्ध्यर्थमनघान्ब्राम्हणान्मुखतोऽसृजत्
असृजत्क्षत्रियान्बाह्वोर्वैश्यानप्यूरुदेशतः १२
शूद्रांश्चपादयोःसृष्ट्वातेषांचैवानुपूर्वशः
यथाप्रोवाचभगवान्ब्रम्हयोनिःपितामहः १३
तद्वचःसंप्रवक्ष्यामिशृणुतद्विजसत्तमाः
धन्यंयशस्यमायुष्यंस्वर्ग्यंमोक्षफलप्रदं १४
ब्राम्हण्यांब्राम्हणेनैवहुत्पन्नोब्राम्हणःस्मृत
तस्यधर्म्मंप्रवक्ष्यामितद्योग्यंदेशमेवच १५
कृष्णसारोमृगोयत्रस्वभावेनप्रवर्त्तते
तस्मिन्देशेवसेद्धर्माःसिद्ध्यंतिद्विजसत्तमाः १५
षट्कर्माणिनिजान्याहुर्ब्राम्हणस्यमहात्मनः

को रच वह ब्रह्मा भी देवता, असुर, मनुष्य, इन सहित संपूर्ण जगत् को रचकर ११
यज्ञ की सिद्धिके अर्थ पाप रहित ब्राह्मणोंको मुख से और क्षत्रियों को भुजाओं से और वैश्यों को जंघाओं से रचता भया १२
औरशूद्रों को चरणों से, और क्रम से इन चारोंको रच कर भगवान ब्रह्मयोनि(ब्रह्मा) ने जो बचन कहा १३
हे द्विजों में उत्तमों उस बचनको में कहता हुं तुम सुनो और वह बचन धन, यश, अवस्था, स्वर्ग, मोक्षफलं, इन का दाता है १४
ब्राह्मणी में जो ब्राह्मण से पैदा हो उसे ब्राह्मण कहते हैं उस का धर्म और उस के रहने के योग्य देश को मैं कहूंगा १५
काला मृग जिस में स्वभाव से विचरे उस देश में ब्राह्मणवसे

तैरेवसततंयस्तुवर्तयेत्सुखमेधते १६
अध्यापनंचाध्ययनंयाजनंयजनंतथा
दानंप्रतिग्रहश्चेतिषट्कर्माणीतिचोच्यते १७
अध्यापनन्त्रिविधंधर्मार्थमृक्थकारणात्
शुश्रूषाकरणंचेतित्रिविधंपरिकीर्तितं १८
एषामन्यतमाभावेवृथाचारोभवेद्द्विज :
तत्रविद्यानदातव्यापुरुषेणहितैषिणा १६
योग्यानध्यापयेच्छिष्यानयोग्यानपिवर्जयेत्
विदितात्प्रतिगृह्णीयाद्गृहेधर्मप्रसिद्धये २०
वेदञ्चैवाभ्यसेन्नित्यंशुचौदेशेसमाहित :
धर्मशास्त्रंतथापाठ्यंब्राह्मणैःशुद्धमानसैः २१

और उसी में किया धर्म,हे द्विजों में श्रेष्ठो सिद्धहोता है १५
महात्मा ब्राह्मण के छः कर्म निजके हैं उन्ही से जो निरंतर वर्त
है वह सुख से वढता है अर्थात् धन पुत्रवान् होता है १६
पठाना—पढना—यज्ञ कराना और यज्ञ करना—दान—और
प्रतिग्रह ये छः कर्म कहे हैं १७
पढाना भी तीन प्रकार का है १ धर्म के अर्थ२ धन को लेकर
और ३सेवा के लिये १८
इन तीनोंमेंसे जिसमें एक भी न हो उसके पढाने से ब्राह्मणवृथा
चारी होता है ऐसे को अपने हितका अभिलाषी पुरुष विद्या न दे१६
योग्य शिष्यों को पढावे और अयोग्यों को वर्जदे और गृहस्थ
धर्म के निर्वाह के लिये प्रसिद्ध पुरुष (धनी)से प्रति ग्रह ले २०
शुद्ध देश में सावधान होकर वेदका अभ्यास करै और शुद्धहैमन
जिन का ऐसे ब्राह्मणोंको धर्म शास्त्रभी पढना २१

वेदवत्पठितव्यं च श्रोतव्यं च दिवानिशि
स्मृतिहीनाय विप्राय श्रुतिहीने तथैव च २२
दानं भोजनमन्यच्च दत्तं कुलविनाशनं
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन धर्म्मशास्त्रं पठेद्द्विजः २३
श्रुतिस्मृती च विप्राणां चक्षुषी देवनिर्म्मिते
काणस्तत्रैकया हीनो द्वाभ्यामन्धः प्रकीर्तितः २४
गुरुशुश्रूषणञ्चैव यथान्यायमतन्द्रितः
सायंप्रातरुपासीत विवाहाग्निं द्विजोत्तमः २५
सुस्नातस्तु प्रकुर्वीत वैश्वदेवं दिने दिने
अतिथीनागतांश्छक्त्या पूजयेदविचारतः २६
अन्यानभ्यागतान्विप्रान्पूजयेच्छक्तितो गृही

और वेद के समान धर्म शास्त्र को रात दिन पढना और सुनना स्मृति (धर्म शास्त्र) श्रुति इन दोनों से हीन ब्राह्मण को २२ दान—भोजन—और अन्य' दिया हुआ कुल को नष्ट करता है तिस से संपूर्ण यत्न से ब्राह्मण धर्म शास्त्र को पढे २३
श्रुति और स्मृति ये दोनों परमेश्वर के रचेहुये ब्राह्मणों के नेत्र हैं इन दोनों में से जो एक से हीन है वह काणा' और दोनों से जो हीन है वह अंधा कहा है २४
आलस्य को त्याग कर गुरु की सेवा करनी, और ब्राह्मण सायं काल और प्रातःकाल विवाहाग्नि (जिस में विवाह का होम हो और जीने तक बनी रहै) की उपासना (उसीमें होम) करैं २५
और भली प्रकार स्नान कर के प्रति दिन वलि वैश्वदेव करे और आये हुए अतिथियों को विना विचारे शक्ति के अनुसार पूजे २६
और अन्य (क्षत्रियादि) अभ्यागतों को भी गृहस्थी ब्राह्मण शक्ति

स्वदारनिरतोनित्यंपरदारविवर्जितः २७
कृतहोमस्तुभुंजीतसायंप्रातरुदारधीः
सत्यवादीजितक्रोधोनाधर्म्मेवर्त्त येन्मतिं २८
स्वकर्मणिचसंप्राप्तेप्रमादान्ननिवर्त्त ते
सत्यांहितांवदेद्वाचंपरलोकहितैषिणीं २९
एषधर्म्मःसमुद्दिष्टोब्राह्मणस्यसमासतः
धर्म्ममेवहियःकुर्यात्सयातिब्रह्मणःपदं ३०
इत्येषधर्म्मःकथितोमयायंपृष्टोभवद्भिस्त्वखिलाघहारी
वदामिराज्ञामपिचैवधर्म्मान्पृथक्पृथग्बोधतविप्रवर्य्याः
इतिहारीतेधर्म्मशास्त्रेप्रथमोऽध्यायः १ [३१
क्षत्रादीनांप्रवक्ष्यामियथावदनुपूर्व्वशः

के अनुसार पढ़े और अपनीस्त्रीकेसंगरमैं और परस्त्री को वर्जदे२७
उदार बुद्धि वाला ब्राह्मण सायंकाल और प्रातःकाल के समय
अग्नि होत्र कर के भोजन करै और सत्य बोले, क्रोध को जीते
अधर्म में बुद्धि को न लगावे २८
अपने कर्म के समय में प्रमाद से कर्म को न छोड़े और सत्य"
हितकारी" और परलोक में सुख दायक"वाणी को कहैं २९
यह धर्म ब्राह्मण का संक्षेप से कहा जो ब्राह्मण धर्म को ही कर
ता है वह ब्रह्म पद को जाता है ३०
हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठो जो धर्म तुमने मुझे पूछा था संपूर्णपापों का
नाशक वह यह धर्म मैंने कहा और राजाओं के भी पृथक्२
धर्मों को कहता हुं तम सुनो ३१
इति हारीते १ अध्यायः

येषुप्रवृत्ताविधिनासर्व्वेयान्तिपरांगतिं १
राज्यस्थःक्षत्रियश्चापिप्रजाधर्म्मेणपालयन्
कुर्य्यादध्ययनंसम्यग्यजेद्यज्ञान्यथाविधि २
दद्याद्दानंद्विजातिभ्योधर्म्मबुद्धिसमन्वितः
स्वभार्य्यानिरतोनित्यं षड्भागार्हःसदानृपः ३
नीतिशास्त्रार्थकुशलःसन्धिविग्रहतत्ववित्
देवब्राम्हणभक्तश्चपितृकार्य्यपरस्तथा ४
धर्म्मेणयजनंकार्य्यमधर्म्मपरिवर्जनं
उत्तमांगतिमाप्नोतिक्षत्रियोऽप्येवमाचरन् ५
गोरक्षांकृषिवाणिज्यंकुर्य्याद्वैश्योयथाविधि
दानंदेयंयथाशक्त्याब्राम्हणानांच भोजनं ६

क्षत्रियादिकों के धर्म को यथार्थ और क्रम से कहता हुं जिनधर्मों को विधि से करते हुए(क्षत्रियादि)परम गति को प्राप्तहोते हैं १
राज्य पदवी पर टिका—और धर्म से प्रजा की पालना करता हुआ क्षत्रिय भी वेद पठे और विधि से यज्ञ करे २
जोराजा धर्ममेंबुद्धि को करके ब्राह्मणों को दान दे और अपनी स्त्रीमें रमें ऐसा राजा सदैव छटे भाग के योग्य होता है ३
नीति शास्त्र में कुशल और सन्धि (मेल) विग्रह (लडाई) इन के भी तत्व को राजा जाने—देव और ब्राह्मणों में भक्ति रक्खे और पितरों के कार्य (श्राद्ध आदि) में भी तत्पर रहै ४
धर्मसे यज्ञ करना और अधर्म को त्यागना इस प्रकार आचारण करता हुआ क्षत्रिय उत्तम गति को प्राप्तहोता है ५
वैश्यके धर्म—गौओंकी रक्षा—खेती—व्यपार(लेन देन)इनको वैश्यविधिसेकरैंयथाशक्तिदानदेनाऔर ब्राह्मणोंकोभोजन कराना ६

दंभमोहविनिर्मुक्तःसत्यवागनसूयकः
स्वदारनिरतोदान्तःपरदारविवर्जितः ७
धनैर्विप्रान्भोजयित्वायज्ञकालेतुयाजकान्
अप्रभुत्वेचवर्त्ततधर्मेवादेहपातनात् ८
यज्ञाध्ययनदानानिकुर्य्यान्नित्यमतन्द्रितः
पितृकार्यपरश्चैवनरसिंहार्च्चनापरः ९
एतद्वैश्यस्यधर्म्मोयंस्वधर्म्ममनुतिष्ठति
एतदाचरतेयोहिसस्वर्गीनात्रसंशयः १०
वर्णत्रयस्यशुश्रूषांकुर्य्याच्छूद्रःप्रयत्नतः
दासवद्ब्राह्मणानाञ्चविशेषेणसमाचरेत् ११
अयाचितप्रदाताचकर्षंवृत्यर्थमाचरेत्
पाकयज्ञविधानेनयजेद्देवमतन्द्रितः १२

दंभ और मोह का त्यागी और वाणी से ईर्ष्या को न करै अपनी स्त्री में रत रहै और पराई स्त्री का परित्याग करै ७
धन से ब्राह्मणों को और यज्ञ के समय ऋत्विजों को जिमा(तृप्त) कर के मरण पर्यंत धर्म के कार्यों में अपनी प्रभुता से न वर्ते ८
प्रति दिन आलस्य को छोड़ कर यज्ञ,अध्ययन,दान करै पितरों के कार्य (श्राद्ध आदि) और नरसिंह के पूजन में तत्पर रहै ९
यह वैश्य का धर्म है इस को जो करता है और इस के अनुसार चलता है वह स्वर्ग में जाता है इस में संशय नहीं १०
शूद्र के धर्म—तीनों वर्णों की सेवा को पूर्ण यत्न से करै और ब्राह्मणों की तो दास के समान विशेष कर सेवा करै ११
विनामांगे दे और अपने निर्वाह के लिये कृषि करै और आलस्य को छोड़ कर पाक यज्ञ से देवताओं का पूजन करै १२

शूद्राणामधिकंकुर्यादर्च्चनंन्यायवर्त्तिनां
धारणंजीर्णवस्त्रस्यविप्रस्योच्छिष्टभोजनं १३
स्वदारेषुरतिश्चैवपरदारविवर्जनं
इत्थंकुर्यात्सदाशूद्रोमनोवाक्कायकर्मभिः
स्थानमैन्द्रमवाप्नोतिनष्टपापःसुपुण्यकृत् १४
वर्णेषुधर्म्माविविधामयोक्तायथातथाब्रह्ममुखेरिताःपुरा
शृणुध्वमत्राश्रमधर्म्ममाद्यं मयोच्यमानंक्रमशोमुनीन्द्राः
इतिहारीतेधर्म्मशास्त्रेद्वितीयोऽध्यायः २ (१५
उपनीतोमाणावकोवसेद्गुरुकुलेषुच
गुरोःकुलेप्रियंकुर्य्यात्कर्म्मणामनसागिरा १
ब्रम्हचर्य्यमधःशय्यातथावन्हेरुपासना

और न्याय में तत्पर जो शूद्र उनकाभी पूजन अधिकता से करै जीर्ण (पुराने) वस्त्रका धारण करै और ब्राह्मण के उच्छिष्ट को भोजन करै १३

अपनी स्त्रियोंमें रमें और पराई स्त्रियोंको वर्जै—मन, वाणी' देह, कर्म से शूद्र इसी प्रकार सदा करें १४

नष्ट हुआ है पाप जिसका और उत्तम पुण्य का कर्ता शूद्र इंद्र के स्थान को प्राप्त होता है येब्रह्मा के मुखसे कहे हुए वर्णों के यथार्थ धर्म मैंने कहे १५

हे मुनियों में इन्द्रों' (स्वामी) अब सनातन आश्रमों के मेरे कहे हुए धर्म को क्रम से सुनो १६

इति हारीतेधर्मशास्त्रे २अध्यायः

यज्ञोपवीत के पीछे बालक गुरु के कुलों में वसे और कर्म' मन' वाणी' से गुरु के कुल में प्रीति रक्खे १

उदकुंभान्गुरोर्दद्याद्गोग्रासन्त्वेंधनानिच २
कुर्यादध्ययनञ्चैवब्रह्मचारीयथाविधि
विधित्यक्त्वाप्रकुर्वाणोनस्वाध्यायफलंलभेत् ३
यःकश्चित्कुरुतेधर्म्मंविधिंहित्वादुरात्मवान्
नतत्फलमवाप्नोतिकुर्वाणोऽपिविधिच्युतः ४
तस्मात्वेदव्रतानीहचरेत्स्वाध्यायसिद्धये
शौचाचारमशेषन्तुशिक्षयेद्गुरुसन्निधौ ५
अजिनंदंडकाष्ठंचमेखलाञ्चोपवीतकं
धारयेदप्रमत्तश्चब्रह्मचारीसमाहितः ६
सायंप्रातश्चरेद्भैक्षंभोज्यार्थंसंयतेन्द्रियः
आचम्यप्रयतोनित्यंनकुर्याद्दंतधावनं ७

ब्रह्मचर्य—पृथ्वी पर सोना—अग्नि होत्र—करै और गुरुके लिये जलका घट और इंधन और गौओं को ग्राम (चारा) दे २
औरब्रह्मचारीशास्त्रोक्त विधिसे अध्ययन करै क्योंकिविधिसेहीन पढ़ता हुआ पढने के फलको प्राप्त नहीं होता ३
जोकोई दुरात्मा विधिको छोडकर धर्म करता है विधिसे पतित वह ब्रह्मचारी उस कर्म के फलको प्राप्त नहीं होता ४
तिससे अपने स्वाध्याय (वेदका पढना) की सिद्धि के अर्थ गुरु कुल में वेद के व्रतों को करै और गुरुके समीप संपूर्ण शौच आचरणसीखे ५
मृगछाला—दंड—मेखला (कोंदनी) यज्ञोपवीत—इनको सावध न और अप्रमत्त होकर धारण करै ६
इन्द्रियों को जीतकर भोजनके अर्थ सायंकाल और प्रातःकाल भिक्षाटन और नित्य सावधानी से आचमन करके दंतधावन न करै ७

छत्रंचोपानहंचैवगंधमाल्यादिवर्जयेत्
नृत्यगीतमथालापंमैथुनंचविवर्जयेत् ८
हस्त्यश्वारोहणंचैवसंत्यजेसंयतेंद्रियः
संध्योपास्तिंप्रकुर्वीतब्रम्हचारीव्रतेस्थितः ९
अभिवाद्यगुरोःपादौसंध्याकर्मावसानतः
तथायोगंप्रकुर्वीतमातापित्रोश्चभक्तितः १०
एतेषुत्रिषुनष्टेषुनष्टाःस्युःसर्वदेवताः
एतेषांशासनेतिष्ठेद्ब्रम्हचारीविमत्सरः ११
अधीत्यचगुरोर्वेदान्वेदौवावेदमेववा
गुरवेदक्षिणांदद्यात्संयमीग्राममावसेत् १२
यस्यैतानिसुगुप्तानिजिह्वोपस्थोदरंकरः

छत्री (छाता)—जूता—गंध—माला—नृत्य—गाना—बहुत बोलना—मैथुन इनको त्याग दे ८
वश में की हैं इंद्रिय जिसने ऐसा ब्रह्मचारी हाथी और घोड़े पर चढने को त्याग दे और व्रत में टिककर संध्योपासन करै ९
संध्या कर्म के अंत में गुरु के चरणों को नमस्कार करके भक्ति से माता और पिता का योग (टहल) करै १०
जो ब्रह्मचारीये तीनों कर्मों (गुरु माता पिता इनकी सेवा) से नष्ट होजाय तो उसपर सब देवता नष्ट (अप्रसन्न) होते हैं इससे ईर्ष्या कोत्याग कर ब्रह्मचारी इनकी शिक्षा (उपदेश में) टिके ११
गुरु से सब (४ वेद) अथवा दो वेद अथवा एक वेद को पढकर जितेंद्रिय ब्रह्मचारी गुरुको दक्षिणा दे और ग्राम में बसे १२
जिव्हा—लिंगइन्द्रिय—उदर (पेट)—हाथ—जिसकेयेभलीप्रकार गुप्त (वशमें) हैं वह ब्राह्मण संन्यास की प्रतिज्ञा को करके ब्रह्म

संन्यासत्समर्पंकृत्वाब्रम्हणोब्रम्हचर्य्यया १३
तस्मिन्नेवनयेत्कालमाचार्य्येयावदायुषं
तदभावेद्वतत्पुत्रेतच्छिष्येवाथवाकुले १४
नविवाहोनसंन्यासोनैष्ठिकस्यविधीयते
इमंयोविधिमास्थायत्यजेद्देहमतंद्रितः
नेहभूयोऽपिजायेतब्रम्हचारीदृढव्रतः १५
योब्रम्हचारीविधिनासमाहित-
श्चरेत्पृथिव्यांगुरुसेवनेरतः
संप्राप्यविद्यामतिदुर्लभांशिवां
फलञ्चतस्याःसुलभंतुविंदति १६
इति हारीतेधर्म्मशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः ३

चारी के आचरण से १३
उस आचार्य (गुरु) के यहां ही जितनी अवस्था है उतने काल को व्यतीत करै आचार्य न होयतो उसके पुत्रके समीप—और पुत्रन होय तोउसके शिष्यके समीप, शिष्य भी न होय तो गुरु के कुल में जन्म को वितावे १४
इस नैष्ठिक ब्रह्मचारी को विवाह और सन्यास नहीं कहे जो आलस्य को त्याग कर इस विधि से देह को त्याग दे १५
दृढ़है व्रत जिसका ऐसा वह ब्रह्मचारी इस भूलोक में फिर पैदा नहीं होता—विधि औरसावधानीसे गुरु की सेवामें लवलीन,जो ब्रह्मचारी पृथ्वी पर विचरता है १६
वह अत्यन्त दुर्लभ और कल्याण रूप विद्या को प्राप्त होकर उस विद्या के सुलभ फल (मोक्ष) को प्राप्त होता है १७
इति हारीते धर्मशास्त्रे ३अध्यायः

गृहीतवेदाध्ययनःश्रुतशास्त्रार्थतत्ववित्
असमानर्षिगोत्रांहिकन्यांसभ्रातृकांशुभां १
सर्वावयवसंपूर्णांसुवृत्तामुद्वहेन्नरः
ब्राम्हेणविधिनाकुर्यात्प्रशस्तेनद्विजोत्तमः २
तथान्येबहवःप्रोक्ताविवाहावर्णधर्मतः
उपासनंचविधिवदाहृत्यद्विजपुंगवाः ३
सायंप्रातश्चजुहुयात्सर्वकालमतंद्रितः
स्नानंकार्य्यंततोनित्यंदन्तधावनपूर्वकं ४
उषःकालेसमुत्थायकृतशौचोयथाविधि
मुखेपर्य्युषितेनित्यंभवत्यप्रयतोनरः ५

वेदका पढानेवाला ' और शास्त्रके तात्पर्य का ज्ञाता' ब्राह्मण, नहीं हैं तुल्य प्रवर और गोत्र जिसके ऐसी और जिसके भाई हो ऐसी १

औरदेह के संपूर्ण अंग जिसके हों औरसुंदरजिसकाआचरण हो ऐसी कन्या को विवा है—और ब्राह्मण आठ विवा हों में उत्तम जो ब्राह्म विवाह' तिससे बिवाह करै २

तिसी प्रकार और भी विवाह वर्णों के धर्म से कहे हैं—ब्राह्मण विधि से सामग्री इकट्ठी कर के ३

संपूर्ण काल में आलस्य को छोड़करि सायंकाल और प्रातःकाल होम करै और नित्य दंतधावन कर के स्नान करै ४

अरुणोदय में उठ और यथा विधि शौचादिक को करै क्योंकि मुख के पर्य्युषित(वासी)होने से मनुष्य नित्य असावधान रहता है। ५

तस्माच्छुष्कमथार्द्रंवाभक्षयेद्दन्तकाष्ठकं
करंजंखादिरंवापिकदंबंकुरबंतथा ६
सप्तपर्णापृश्निपर्णोजंबूनिंबंतथैवच
अपमार्गंचविल्वंचार्कंचोदुंबरमेवच ७
एतेप्रशस्ताःकथितादंतधावनकर्म्मणि
दंतकाष्ठस्यभक्षश्चसमासेनप्रकीर्तितः ८
सर्वेकंटकिनःपुण्याःक्षीरिणश्चयशस्विनः
अष्टांगुलेनमानेनदन्तकाष्ठमिहोच्यते ९
प्रादेशमात्रमथवातेनदन्तान्विशोधयेत्
प्रतिपत्पर्वषष्ठीषुनवम्यांचैवसत्तमाः १०
दंतानांकाष्ठसंयोगाद्दहत्यासप्तमंकुलं

तिससे सूकी अथवा आर्द्र (गीली) दंत काष्ठ का भक्षण (दंतोन) करे और वह काठ करंजवा—खैर—कदंब—मौलसरी,काहो ६ सप्तपर्ण—पृश्निपर्णी—जांमन—नींम—औंगा—वेल—आख—गूलर—७

इतने वृक्ष दतोन के लिये उत्तम कहे हैं—और दतोन के काठ का भक्षण संक्षेपसे यह कहा है कि ८

संपूर्ण काटे वाले वृक्ष पवित्र और दूध वाले संपूर्ण वृक्ष यशके दाता कहे हैं और आठ आंगुल दतोन के काठ का प्रमाण कहा है। ९

अथवा प्रादेश मात्र (विलस्तभर) प्रमाण है तिससे दांतों को शुद्ध करै और हे उत्तमो' पडवा—पर्व (अमावस आदि) छट और नवमी को १०

दांतों के संग काठके संयोग से सातकुल तक के पुरुषाओं को

अभावेदन्तकाष्ठानांप्रतिषिद्धदिनेषुच ११
अपांद्वादशगंडूषैर्मुखशुद्धिंसमाचरेत्
स्नात्वामन्त्रवदाचम्यपुनराचमनंचरेत् १२
मंत्रवत्प्रोक्ष्यचात्मानंप्रक्षिपेदुदकांजलिं
आदित्येनसहप्रातर्मन्देहानामराक्षसाः १३
युद्ध्यन्तिवरदानेनब्रम्हणोऽव्यक्तजन्मनः
उदकांजलिनिःक्षेपागायत्र्याचाभिमंत्रिताः १४
निघ्नंतिराक्षसान्सर्वान्मन्देहाख्यान्द्विजेरिताः
ततःप्रयातिसविताब्राम्हणैरभिरक्षितः १५
मारीच्याद्यैर्महाभागैःसनकाद्यैश्चयोगिभिः

दग्ध करता है और दतोन के अभाव में और निषिद्ध दिनों (प्रति पदादि) में ११
जलों के बारह गंडूषों (कुरले) से मुखकी शुद्धि करे मंत्रों से आचमन करके स्नान करें और स्नान के पीछे फिर आचमन करे १२
मंत्रों से आत्मा (देह) को छिडक कर सूर्य को जलकी अंजली दे—सूर्य के संग प्रातःकाल में मंदेह है नाम जिनका ऐसे राक्षस १३
ब्रह्म से है जन्म जिसका ऐसे ब्रह्माके वरदान से युद्ध करते हैं गायत्री पढकर फेंकी जलकी अंजली और १४
उन संपूर्ण मंदेह नामक राक्षसों को द्विजों की दी अंजली नष्ट करती हैं तिससे ब्राह्मणों ने की है रक्षा जिसकी ऐसा सूर्य (आकाशमें) गमन करता है १५
मरीचि आदि महा भागी और सनकादिक योगियों से भी रक्षित

तस्मान्नलंघयेत्संध्यांसायंप्रातःसमाहितः १६
उल्लंघयतियोमोहात्सयातिनरकंध्रुवम्
सायंमंत्रवदाचम्यप्रोक्ष्यसूर्य्यस्यचांजलिं १७
दत्वाप्रदक्षिणांकुर्य्याज्जलंस्पृष्ट्वाविशुद्ध्यति
पूर्वांसंध्यांसनक्षत्रामुपासीतयथाविधि १८
गायत्रीमभ्यसेत्तावत्यावदादित्यदर्शनम्
उपास्यपश्चिमांसंध्यांसादित्यांचयथाविधि १९
गायत्रीमभ्यसेत्तावद्यावत्ताराणिपश्यति
ततश्चावसथंप्राप्यकृत्वाहोमंस्वयंबुधः २०

सूर्य गमन करता है तिससे सावधान द्विज सायंकाल और प्रातःकाल की संध्या का अवलंघन (परित्याग) न करै १६
जो मोहसे अवलंघन करता है वह निश्चय करके नरक में जाता है सायंकाल को मंत्रों से आचमन और देहको छिडक कर और सूर्य को अंजली १७
देकर प्रदक्षिणा करै फिर जलका स्पर्श करके शुद्ध होता है—प्रातःकाल की संध्या उस समय विधिसे करै जब आकाश में नक्षत्र हों १८
तब तक गायत्री का जप करै जबतक सूर्य का दर्शन हो—सायंकाल की संध्या को सूर्यके अस्त से पूर्व विधि से करके १९
इतने तारों का दर्शन हो तब तक गायत्री का जप करै—फिर घरमें जाकर शास्त्रोक्त विधिसे ज्ञानवान् द्विज स्वयं (आप) होम करै २०

संचिंत्यपोष्यवर्गस्यभरणार्थंविचक्षणः
ततःशिष्यहितार्थायस्वाध्यायंकिंचिदाचरेत् २१
ईश्वरंचैवकार्य्यार्थमभिगच्छेद्द्विजोत्तमः
कुशपुष्पेंधनादीनिगत्वादूरंसमाहरेत् २२
ततोमाध्यान्हिकंकुर्य्याच्छुचौदेशेमनोरमे
विधिंतस्यप्रवक्ष्यामिसमासात्पापनाशनं २३
स्नात्वायेनविधानेनमुच्यतेसर्वकिल्बिषात्
स्नानार्थंमृदमानीयशुद्धाक्षततिलैःसह २४
सुमनाश्चततोगच्छेन्नदींशुद्धजलाधिकां
नद्यांतुविद्यमानायांनस्नायादन्यवारिणि २५
नस्नायादल्पतोयेषुविद्यमानेबहूदके

अपने पोष्य वर्ग (पुत्र भृत्यआदि) की पुष्टि (खानपान) के अर्थ चिंताकर के फिर ज्ञानी ब्राह्मण शिष्य के हित के लिये स्वाध्याय (पढन) करै २१
और कार्य के लिये ईश्वर (राजा आदि) के यहां द्विजों में उत्तम, जाय और दूर जाकर कुश—फूल—इंधन आदि को लावे२२
फिर मनोरम शुद्ध देश में माध्यान्हिक (जो दुपहर को किया जाता है) कर्म को करै पापको नाश करने वाली उसकी विधि को संक्षेप से कहूंगा २३
जिस विधि से स्नान करके सब पापों से छूटता है—स्नान के लिये शुद्ध अक्षत और तिलों सहित मट्टी को लाकर २४
उदारमन होकर तिस पीछे शुद्ध अधिक जल है जिस में ऐसी नदी पर जा—और नदी के होते इतर जल में स्नान नकरै २५
और अधिक जलवाले तीर्थ के होते अल्प जल वाले में स्नानन

सरिद्वरंनदीस्नानंप्रतिस्रोतस्थितश्चरेत् २६
तडागादिषुतोयेषुस्नायाच्चतदभावतः
शुचिंदेशंसमभ्युक्ष्यस्थापयेत्सकलांबरम् २७
मृत्तोयेनस्वकंदेहंलिंपेत्प्रक्षाल्ययत्नतः
स्नानादिकंचसंप्राप्यकुर्यादाचमनंबुधः २८
सोऽन्तर्जलंप्रविश्याथवाग्यतोनियमेनहि
हरिंसंस्मृत्यमनसामज्जयेच्चोरुमज्जले २९
ततस्तीरंसमासाद्यआचम्यापःसमंत्रतः
प्रोक्षयेद्वारुणैर्मंत्रैःपावमानीभिरेवच ३०
कुशाग्रकृततोयेनप्रोक्ष्यात्मानंप्रयत्नतः

करै और उत्तम नदी में सोत (प्रवाह) के सन्मुख स्थित होकर स्नान करै २६
और नदी केअभाव में तालाव आदि के जल में स्नान करै शुद्ध देश को जल से छिडककर संपूर्ण वस्त्र रखदे २७
मट्टी और जल से अपने देहको लीपे और यत्न से प्रक्षालन(धोना) और स्नान आदि को करके ज्ञानवान् पुरुष आचमन करै २८
फिर वह पुरुष जलके बीचमें प्रवेश और मौन होकर नियम से हरि कास्मरण करके जंघातक जलमें गोता लगावे २९
फिर तीर पर आकर मंत्रों को पढकर जलों का आचमन करके वरुण देवता के मंत्र अथवा पावमानी सूक्त (१) से शरीर का प्रोक्षण (छिडकना) करै ३०
कुशा के अग्रके जल से यत्नसे देहका प्रोक्षण करके स्पोना

---

(१) यहचार अध्याय का है

स्योनापृथ्वीतिमृद्गात्रेइदंविष्णुरितिद्विजाः ३१
ततोनारायणंदेवंसंस्मरेत्प्रतिमज्जनं
निमज्ज्यांतर्जलेसम्यक्क्रियतेचाघमर्षणं ३२
स्नात्वाक्षततिलैस्तद्वद् देवर्षिपितृभिःसह
तर्पयित्वाजलंतस्मान्निष्पीड्यचसमाहितः ३३
जलतीरंसमासाद्यतत्रशुक्लेचवाससी
परिधायोत्तरीयंचकुर्य्यात्केशान्नधूनयेत् ३४
नरक्तमुल्बणंवासोननीलंचप्रशस्यते
मलाक्तंगंधहीनंचवर्जयेदंबरंबुधः ३५
ततःप्रक्षालयेत्पादौमृत्तोयेनविचक्षणः
दक्षिणंतुकरंकृत्वागोकर्णाकृतिवत्पुनः ३६

पृथिवी इस मंत्रसे अथवा इदंविष्णु इस मत्रसे देहमें मट्टी लगावे ३१
फिर प्रत्येक गोतेमें नारायण देव का स्मरण करे और जलकेबीचमें गोता लगाये हुए अघमर्षण मंत्र (ऋतंचसत्य मित्यादि) को जपै ३२
स्नान करके अक्षत और तिलों से देव, ऋषि, पितर इन का तर्पण करके और वस्त्रको निचोड़ कर—और सावधानी से ३३
जल के तीर आकर वहां सपेद वस्त्र(धोती)को पहन कर दुपट्टा पहने और केशोंको न कंपावे ३४
अधिक लाल और नील-वस्त्र श्रेष्ठ नहीं कहा है मैले औ गंधहीन वस्त्र को ज्ञानी वर्जदे ३५
फिर ज्ञानी पुरुष मट्टी और जल से पैर धोवे फिर दाहने हाथ का गौके कान के समान आकार करके ३६

त्रिःपिवेदीक्षितंतोयमास्यंद्विःपरिमार्जयेत्
पादौशिरस्ततोऽभ्युक्ष्यत्रिभिरास्यमुपस्पृशेत् ३७
अंगुष्ठानामिकाभ्यांचचक्षुषीसमुपस्पृशेत्
तथैवपंचभिर्मूर्ध्नि स्पृशेदेवंसमाहितः ३८
अनेनविधिनाचम्यब्राह्मणःशुद्धमानसः
कुर्वीतदर्भपाणिस्तूदङ्मुखःप्राङ्मुखोऽपिवा ३९
प्राणायामत्रयंधीमान्यथान्यायमतंद्रितः
जपयज्ञंततःकुर्याद्गायत्रींवेदमातरं ४०
त्रिविधोजपयज्ञःस्यात्तस्यतत्त्वंनिवोधत
वाचिकश्चउपांशुश्चमानसश्चत्रिधाकृतिः ४१
त्रयाणामपियज्ञानांश्रेष्ठःस्यादुत्तरोत्तरः
यदुच्चनीचोच्चरितैःशब्दैःस्पष्टपदाक्षरैः ४२

देखकर तीन वार जल पीवे (आचमन करै) फिर दोवार मुख को पूंछे फिर पेर और शिर पर जल छिड़क कर वीचकी तीन अंगुलियों से मुख का स्पर्श करै ३७
अंगुठा और अनामिका से नेत्रों का स्पर्श करै इसी प्रकार सावधान होकर पांचों अंगुलियों से मस्तक का स्पर्श करै ३८
शुद्ध है मन जिसका ऐसा ब्राह्मण इसविधि से आचमन करके और कुशा हैं हाथमें जिसके उत्तर अथवा पूर्व को मुखकर के ३९
आलस्य को छोड़ कर न्याय से तीन प्राणायाम करै फिर जपयज्ञ करै और वेदों की माता गायत्री को जपै ४०
तीन प्रकार का जपयज्ञ होता है उसके स्वरूप को सुनो वाणी से उपांशु—(धीमीवाणी से) और मन से ये तीन उसके भेदहैं ४१
इन तीनों यज्ञोंमेंउत्तर२(पिछला)श्रेष्ठहै जो उंचे औरनीचेउच्चारण किये और स्पष्ट हैं पद और अक्षर जिन में ऐसे शब्दों से ४२

मंत्रमुच्चारयन्वाचाजपयज्ञस्तुवाचिक:
शनैरुच्चारयन्मंत्रंकिंचिदोष्ठौप्रचालयेत् ४३
किंचिच्छ्रवणयोग्य:स्यात्सउपांशुजप:स्मृत:
धियापदाक्षरश्रेण्याअवर्णमपदाक्षरं ४४
शब्दार्थचिंतनाभ्यांतुतदुक्तंमानसंस्मृतं
जपेनदेवतानित्यंस्तूयमानाप्रसीदति ४५
प्रसन्नेविपुलान्गोत्रान्प्राप्नुवंतिमनीषिण:
राक्षसाश्चपिशाचाश्चमहासर्पाश्चभीषणा: ४६
जपितान्नोपसर्पंतिदूरादेवप्रयांतिते
छंदऋष्यादिविज्ञायजपेन्मंत्रमतंद्रित: ४७
जपेदहरहर्ज्ञात्वागायत्रींमनसाद्विज:

वाणीसे मंत्रको उच्चारण करके जो जप किया जाता है वह वाचिक जप यज्ञ कहाता है—और कुछेक होटों को चलाकर शनैः मंत्र का उच्चारण करके ४३
किंचित् सुनने योग्य जो जप उसे उपांशु जप कहते हैं—और जिसमें वर्ण(पदों के अक्षर) प्रतीत नहीं केवल बुद्धि से ही पदों के अक्षरों की पंक्ति ४४
और शब्द और अर्थ का बिचार जिसमें हो उस जपयज्ञ को मानस कहते हैं स्तुति की है जिसकी ऐसी देवता जप से प्रसन्न होती है ४५
देवता की प्रसन्नता से बुद्धिमान् मनुष्य बहुतसी वंश की वृद्धि को प्राप्त होते हैं—राक्षस—पिशाच—और भयानक बडे२सर्प ४६
जप करनेसे समीप नहीं आते किंतु वे दूरसे ही भाग जाते हैं, मंत्रों के छंद और ऋषि आदि को जान और आलस्य को त्याग कर मंत्र को जपे ४७
प्रति दिन मन से छंद आदि को जान कर गायत्री को द्विज जपे

सहस्रपरमांदेवींशतमध्यांदशावरां ४८
गायत्रींयोजपेन्नित्यं सनपापेनलिप्यते
अथपुष्पांजलिंकृत्वाभानवेचोर्द्ध्वबाहुकः ४६
उदुत्यंचजपेत्सूक्तंतच्चक्षुरितिचापरं
प्रदक्षिणमुपावृत्यनमस्कुर्याद्दिवाकरं ५०
ततस्तीर्थेनदेवादीनद्भिःसंतर्पयेद्द्विजः
स्नानवस्त्रंतुनिष्पीड्यपुनराचमनंचरेत् ५१
तद्वद्भक्तजनस्येहस्नानंदानंप्रकीर्तितं
दर्भासीनोदर्भपाणिर्ब्रह्मयज्ञविधानतः ५२
प्राङ्मुखोब्रह्मयज्ञंतुकुर्याच्छ्रद्धासमन्वितः
ततोर्घ्यंभानवेदद्यात्तिलपुष्पाक्षतान्वितं ५३

१००० सहस्र गायत्री का जप श्रेष्ठ है और शत १०० का जप मध्यम, और दशका जप निकृष्ट(अधम) है ४८
जो नित्य गायत्री को जपता है वह पाप से लिप्त नहीं होता
फिर ऊपर को भुजा करके सूर्य की ओर अंजलि(हाथ जोड़ना) कर के ४६
उदुत्यं और तच्चक्षुः इन सूक्तों(सूर्य की स्तुति के ये मंत्र हैं) को जपे फिर प्रदक्षिणा करके सूर्य को नमस्कार करै ५०
फिर तीर्थ के जल से देव आदि कों का तर्पण द्विज करै फिर स्नान के वस्त्र (धोती) को निचोड़ कर आचमन करै ५१
तिसी प्रकार यहां भक्त जनका स्नान और दान कहा कुशाओं पर बैठकर और कुशाओं को हाथ में लेकर ५२
और पूर्वाभिमुख होकर श्रद्धा से ब्रह्मयज्ञ करै फिर तिल पुष्प अक्षतों से युक्त अर्घ, सूर्य को दे ५३

उत्थायमूर्द्धपर्यंतंहंसःशुचिषदित्यृचा
ततोदेवंनमस्कृत्यगृहंगच्छेततःपुनः ५४
विधिनापुरुषसूक्तस्यगत्वाविष्णुंसमर्चयेत्
वैश्वदेवंततःकुर्याद्बलिकर्मविधानतः ५५
गोदोहमात्रमाकांक्षेदतिथिंप्रतिवैगृही
अदृष्टपूर्वमज्ञातमतिथिंप्राप्तमर्चयेत् ५६
स्वागतासनदानेनप्रत्युत्थानेनचांबुना
स्वागतेनाग्नयस्तुष्टाभवंतिगृहमेधिनः ५७
आसनेनतुदत्तेनप्रीतोभवतिदेवराट्
पादशौचेनपितरःप्रीतिमायांतिदुर्लभा ५८
अन्नदानेनयुक्तेनतृप्यतेहिप्रजापतिः

मस्तक पर्यंत उठकर—हंसः शुचिषत्—इत्यादि ऋचासे सूर्यको नमस्कार करके घरको जाय ५४

फिर घर जाकर विधि से पुरुष सूक्त (सहस्रशीर्षा) से विष्णुका पूजन करै फिर वैश्व देवकी विधिसे बलिवैश्वदेव करै ५५

जितने समय में गौ दुहीजाय उतने समय तक गृहस्थी अतिथि की प्रतीक्षा करैजोप्रथम नहीं देखा हो ऐसे अज्ञात (बेजाने) आये अतिथि को पूजे ५६

स्वागत—आसनदेना—देखकरउठना—जल—इनसेअतिथि के स्वागत करने से गृहस्थी को अग्नि प्रसन्न होती है ५७

आसन के देनेसे इंद्र प्रसन्न होता है चरणों के धोने से दुर्लभ प्रीतिको पितर प्राप्त होते हैं ५८

श्रेष्ठ अन्न के देने से ब्रह्मा प्रसन्न होता है तिससे गृहस्थियों को

तस्मादतिथयेकार्य्यंपूजनंगृहमेधिना ५६
भक्त्याचशक्तितोनित्यंपूजयेद्विष्णुमन्वहं
भिक्षांचभिक्षवेदद्यात्परिव्राड्ब्रह्मचारिणे ६०
अकल्पितान्नादुद्धृत्यसव्यंजनसमन्वितां
अकृतेवैश्वदेवेपिभिक्षौचगृहमागते ६१
उद्धृत्यवैश्वदेवार्थंभिक्षांदत्वाविसर्जयेत्
वैश्वदेवाकृतान्दोषांश्छक्तोभिक्षुर्व्यपोहितु ६२
नहिभिक्षुकृतान्दोषान्वैश्वदेवोव्यपोहति
तस्मात्प्राप्तायवतयेभिक्षांदद्यात्समाहितः ६३
विष्णुरेवयतिश्छायइतिनिश्चित्यभावयेत्
सुवासिनींकुमारींचभोजयित्वानरानपि ६४

अतिथि का पूजन करना ५६
भक्ति और अपनी शक्ति से नित्य विष्णु के पूजन के अनंतर संन्यासी और ब्रह्मचारी भिक्षु (भिखारी) को भिक्षा दे ६०
अन्न के विभाग से पूर्व ही व्यंजन (भाजी) सहित वैश्वदेव के बिना किये भी घर पर आये भिक्षु (भिखारी) को ६१
बलि वैश्वदेव के लिये अन्न को निकाल कर भिक्षा देकर विसर्जन (विदा) करै क्योंकि वैश्वदेव के न करने से जो पाप है उसे भिक्षु दूर करने को समर्थ है ६२
और भिक्षु के किये पाप को वैश्वदेव दूर नहीं करता है तिससे प्राप्त हुए अतिथि को सावधानी से भिक्षा दे ६३
विष्णु का रूप ही सन्यासी है ऐसी निश्चय से भावना करै सुवासिनी (सुहागिन) और कुमारी और नर [illegible] इनको [illegible] कराकर ६४

वालवृद्धांस्ततःशेषंस्वयंभुंजीतवागृही
प्राङ्मुखोदङ्मुखोवापिमौनीचमितभाषणः ६५
अन्नमादौनमस्कृत्यप्रहृष्टेनांतरात्मना
एवंप्राणाहुतिंकुर्य्यान्मंत्रेणचपृथक्पृथक् ६६
ततःस्वादुकरान्नंचभुंजीतसुसमाहितः
आचम्यदेवतामिष्टांसंस्मरन्नुदरंस्पृशेत् ६७
इतिहासपुराणाभ्यांकिंचित्कालंनयेद्बुधः
ततःसंध्यामुपासीतवहिर्गत्वाविधानतः ६८
कृतहोमस्तुभुंजीतरात्रौचातिथिभोजनं
सायंप्रातर्द्विजातीनामशनंश्रुतिचोदितं ६९

और बालक और वृद्धों को भी जिमाकर फिर शेष (बाकी) अन्न को पूर्व दिशाअथवा उत्तर दिशाके सन्मुख बैठ औरमौन धारऔर परिमित बोलकरगृहस्थी भोजन करै और भोजनको इस प्रकार करै कि ६५

प्रथम अन्नको नमस्कार करके प्रसन्न मन से प्राणा हुति (प्राणायस्वाहा इत्यादि) को पृथक् २ मंत्र से करै ६६

फिर स्वादु अन्न को भली प्रकार सावधान होकर भोजन करै फिर आचमन करके इष्ट देवता का स्मरण करता हुआ उदर का स्पर्श करै ६७

कुछेक समय को इतिहास (भारतादि) और पुराणों के श्रवण सें बितावेफिर ग्राम से बाहर जाकर विधिसे संध्या वदन करै ६८

होमको करके और अभ्यागत को भोजन कराकर रात्रिको भोजन करै--सायंकाल और प्रातःकाल भोजन करना द्विजातियों को वेद में कहा है ६९

नांतराभोजनंकुर्यादग्निहोत्रसमोविधिः
शिष्यानध्यापयेच्चापिअनध्यायेविसर्जयेत् ७०
स्मृत्युक्तानखिलांश्चापिपुराणोक्तानपिद्विजः
महानवम्यांद्वादश्यांभरण्यामपिपर्व्वसु ७१
तथाक्षयतृतीयायांशिष्यान्नाध्यापयेद्द्विजः
माघमासेतुसप्तम्यांरथ्याख्यायांतुवर्जयेत् ७२
अध्यापनंसमभ्यस्यन्स्नानकालेचवर्जयेत्
नीयमानंशवंदृष्ट्वामहीस्थंवाद्विजोत्तमः ७३
नपठेद्रुदितंश्रुत्वासंध्यायांतुद्विजोत्तमाः
दानानिचप्रदेयानिगृहस्थेनद्विजोत्तमाः ७४
हिरण्यदानंगोदानंपृथिवीदानमेवच

जो बीचमें (दिनमेंदुबारा)भोजन नहीं करना है यह विधि अग्नि होत्रके तुल्य है—शिष्यों को पढावे और अनध्याय में शिष्यों का विसर्जन करै (छुट्टीदे) ७०

जो ये संपूर्ण अनध्याय धर्मशास्त्र और पुराणोंमें कहे हैं कि महानवमी (कार्तिक शुदी) द्वादशी—भरणी नक्षत्र—पर्व—७१

अक्षय तृतीया (वैशाख शुदि३) इनमें भी शिष्यों को न पढावे माघ महीने की रथसप्तमी को भी वर्जदे ७२

उबटना करने के और स्नान के समय पढाने को वर्जदे शव (मुर्दा) को लेजाते अथवा पृथ्वी पर पडेको देखकर ७३

अथवा रोने को सुनकर और संध्या के समय हे द्विजोंमें उत्तमों न पढे और हे ब्राह्मणो ये दानभी गृहस्थोंको देने कि ७४

सोना—गौ पृथ्वी ये दान हैं—यह गृहस्थों का सारभूत धर्म

एवंधर्म्मोगृहस्थस्यसारभूतउदाहृतः ७५
यएवंश्रद्धयाकुर्यात्सयातिब्रह्मणःपदं
ज्ञानोत्कर्षश्चतस्यस्यान्नारसिंहप्रसादतः ७६
तस्मान्मुक्तिमवाप्नोतिब्राह्मणोद्विजसत्तमाः
एवंहिविप्राःकथितोमयावःसमासतःशाश्वतधर्मराशिः७७
गृहीगृहस्थस्यसतोहिधर्म्मंकुर्वन्प्रयत्नाद्धरिमेतियुक्तम् ७८

इतिहारीतेधर्मशास्त्रेचतुर्थोऽध्यायः४

अतःपरंप्रवक्ष्यामिवानप्रस्थस्यसत्तमाः
धर्माश्रमंमहाभागाःकथ्यमानंनिबोधत १
गृहस्थःपुत्रपौत्रादीन्दृष्ट्वापलितमात्मनः
भार्यांपुत्रेषुनिःक्षिप्यसहवाप्रविशेद्वनम् २

कहा ७५
जो श्रद्धा से इस प्रकार करता है वह ब्रह्म पद (वैकुंठ) को प्राप्त होता और नरसिंह भगवान् की कृपा से उसे ज्ञान की अधिकता होती है ७६
हे द्विजोंमेंउत्तमो तिस ज्ञानसे ब्राह्मणमुक्तिको प्राप्त होता है-हे ब्राह्मणो। इस प्रकार मैंने सनातन धर्म का समूह तुमको कहा ७७
गृहस्थी गृहस्थ के उत्तम धर्म का यत्न से करता हुआ सर्वोत्तम विष्णु को प्राप्त होता है अर्थात् मुक्त होता है ७८

इतिहारीते धर्मशास्त्रे ४ अध्यायः

इससे आगे वानप्रस्थ के धर्म कहता हुं—हे श्रेष्ठो और हे महाभागो उस मेरे कहे आश्रम के धर्म को सुनो १
गृहस्थी पुत्र और पौत्र आदिको और अपनी वृद्ध अवस्था कोदेखकर स्त्रीको पुत्रोंके आधीनकरकेअथवासंगलेकरवनमेंचलाजाय २

नखरोमाणिचतथासितगात्रत्वगादिच
धारयन्जुहुयादग्निंवनस्थोविधिमाश्रितः ३
धान्यैश्चवनसंभूतैर्नीवाराद्यै रनिंदितैः
शाकमूलफलैर्वापिकुर्यान्नित्यंप्रयत्नतः ४
त्रिकालस्नानयुक्तस्तुकुर्य्यात्तीव्रंतपस्तदा
पक्षांतेवासमश्नीयान्मासांतेवास्वपक्वभुक् ५
तथाचतुर्थकालेतुभुञ्जीयादष्टमेऽथवा
षष्ठेचकालेऽप्यथवावायुभक्षोऽथवाभवेत् ६
घर्मेपंचाग्निमध्यस्थस्तथावर्षेनिराश्रयः
हेमंतेचजलेस्थित्वानयेत्कालंतपश्चरन् ७

नख—केश और सफेद गात्र की त्वचा को धारता हुआ वन में टिक कर शास्त्रोक्त विधि से अग्निहोत्र करे ३
वन में पैदा हुए अथवा अनिंदित नीवारादि अन्नसे शाक मूल फलों से यत्न के साथ निर्वाह और होम को करे ४
त्रिकाल स्नान करता हुआ तीव्र तप करै पक्षके अंतमें अथवा मासके अंतमें भोजन करै और अपने आप भोजन बनाकर भक्षण करै ५
चौथे काल (प्रहर)में अथवा आठवें प्रहर में अथवा छटे प्रहर में भोजन करै अथवा वायुका ही भक्षण करै ६
घर्म (उष्णकाल) में पंचाग्नि के मध्य में और वर्षाऋतु में निराश्रय (खुलीभूमि) में और शीतकालमें जलके मध्यम में बैठकर तप करता हुआ कालको बितावे ७

एवंचकुर्वतायेनकृतबुद्धिर्यथाक्रमम्
अग्निंस्वात्मनिकृत्वातुप्रव्रजेदुत्तरांदिशं ८
आदेहपातंवनगोमौनमास्थायतापसः
स्मरन्नतींद्रियंब्रम्हब्रम्हलोकेमहीयते ९
तपोहियःसेवतिवन्यवासःसमाधियुक्तःप्रयतांतरात्मा
विमुक्तपापोविमलःप्रशांतःसयातिदिव्यंपुरुषंपुराणम् १०
इतिहारीतेधर्मशास्त्रेपंचमोऽध्यायः ५
अतःपरंप्रवक्ष्यामिचतुर्थाश्रममुत्तमं
श्रद्धयातमनुष्ठायतिष्ठन्मुच्येतबंधनात् १
एवंवनाश्रमेतिष्ठन्यातयंश्चैवकिल्बिषं
चतुर्थमाश्रमंगच्छेत्संन्यासविधिनाद्विजः २

क्रम२ से इस प्रकार करते हुए जिसने बुद्धि को स्थिर किया है वह अग्नि को अपने आत्मामें रखकर उत्तर दिशामें गमनकरे ८
देहके पतनपर्यंत मौन को धारकर वनमें रहता तपस्वी अतींद्रिय (जिसको नेत्र आदि न जाने) ब्रह्म का स्मरण करता हुआ ब्रह्मलोक में पूजा को प्राप्त होता है ९
जो वानप्रस्थ मन को वश में करके समाधि लगा कर तप को करता है—पापों से रहित—निर्मल—और शांत रूप वह वानप्रस्थ सनातन दिव्य पुरुष को प्राप्त होता है १०
इतिहारीते धर्मशास्त्रे ५ अध्यायः
अब उत्तम चौथा आश्रम (संन्यास) कहताहुं श्रद्धासे उसके धर्म को करके टिकता हुआ पुरुष बंधन से छूटता है १
ऐसे वानप्रस्थ आश्रम में टिकता और पापको दूर करता हुआ द्विज संन्यास की विधि से चौथे आश्रममेंजाय(संन्यासको ले) २

दत्त्वापितृभ्योदेवेभ्योमानुषेभ्यश्चयत्नतः
दत्त्वाश्राद्धं पितृभ्यश्चमानुषेभ्यस्तथात्मनः ३
इष्टिंवैश्वानरींकृत्वाप्राङ्मुखोदङ्मुखोऽपिवा
अग्निंस्वात्मनिसंरोप्यमंत्रवित्प्रव्रजेत्पुनः ४
ततःप्रभतिपुत्रादौस्नेहालापादिवर्जयेत्
बंधूनामभयंदद्यात्सर्वभूताभयंतथा ४
त्रिदंडंवैणवंसम्यक्संततंसमपर्ववत्
वेष्टितंकृष्णगोवालरज्जुमच्चतुरंगुलम् ५
शौचार्थमासनार्थंचमुनिभिःसमुदाहृतं
कौपीनाच्छादनंवासःकंथांशीतनिवारिणीं ६
पादुकेचापिगृह्णीयात्कुर्यान्नान्यस्यसंग्रहं

पितर—देवता—मनुष्य इनके निमित्त दान करके और– पितर मनुष्य और अपने आत्मा के लिये श्राद्ध करके ३
पूर्व अथवा उत्तर को मुख करके वैश्वानरी यज्ञ* करे फिर अपने में अग्नि को मानकर मंत्रका ज्ञाता पुरुष संन्यास ले—४
तिसके आगे पुत्रों का स्नेह और पालन आदि को त्यागदे और अपने बंधु और संपूर्ण प्राणियों को अभय दान दे ५
ऐसा वांसका त्रिदंड ग्रहण करै जिसके चार अंगुल कपड़ा और कालीगौके केशोंकीरज्जु(रस्सी)लिपटी हो जिसकी ग्रंथिसमहोंद शौच और आसन विचारके लिये मुनियों के कहे हुए कौपीन और शीतको दूर करने वाली कंथा (गुदड़ी)और पादुका(खडाऊं) इनको ग्रहण करे अन्य का संग्रह न करे ये संन्यासी के सदैव

---

* यह संन्यास लेने के समय होता है

एतानितस्यलिंगानियतेःप्रोक्तानिसर्वदा ७
संगृह्यकृतसंन्यासोगत्वातीर्थमनुत्तमं
स्नात्वाचम्यचविधिवद्वस्त्रपूतेनवारिणा ८
तर्पयित्वातुदेवांश्चमंत्रवत्भास्करंनमेत्
आत्मानंप्राङ्मुखोमौनीप्राणायामत्रयंचरेत् ९
गायत्रींचयथाशक्तिजप्त्वाध्यायेत्परंपदम्
स्थित्यर्थमात्मनोनित्यंभिक्षाटनमथाचरेत् १०
सायंकालेतुविप्राणांगृहाण्यभ्यवपद्यतु
सम्यक्याचेच्चकवलंदक्षिणेनकरेणवै ११
पात्रंवामकरेस्थाप्यदक्षिणेनतुशोधयेत्
यावतान्नेनतृप्तिःस्यात्तावद्भैक्षंसमाचरेत् १२

काठ के चिन्हकहे हैं ७

किया है संन्यास जिसने वह इनको ग्रहण कर और उत्तम तीर्थ में जाकर वस्त्र से पूत (छना) जलसे विधिसे स्नान और आचमन करके ८

मंत्रों से देवताओंका तर्पण करके सूर्य को नमस्कारकरै पूर्वाभिमुख और मौन होकर आत्मा के निमित्त तीन प्राणायाम करै ९

यथाशक्ति गायत्री जप कर परंपद (ब्रह्म) का ध्यान करै—देहकी स्थिति के अर्थ नित्य भिक्षाटन करै १०

सायंकाल के समय ब्राह्मणों के घरों में जाकर दाहने हाथ से भली प्रकार कवल (ग्रास) मांगे ११

वांये हाथ में पात्रको रखकर उसे दाहने हाथ से निश्शेष (खाली) करे अर्थात् पात्रमें से अन्न को निकासे जितने अन्न से तृप्ति हो उतनी ही भिक्षा मांगे १२

ततोनिवृत्यतत्पात्रंसंस्थाप्यान्यत्रसंयमी
चतुर्भिरंगुलैश्छाद्यग्रासमात्रंसमाहितः १३
सर्वव्यंजनसंयुक्तंपृथक्पात्रेनियोजयेत्
सूर्यादिभूतदेवेभ्योदत्वासंप्रोक्ष्यवारिणा १४
भुंजीतपात्रपुटकेपात्रेवावाग्यतोयतिः
वटकाश्वत्थपर्णेषुकुंभीतैन्दुकपात्रके १५
कोविदारकदंबेषुनभुंजीयात्कदाचन
मलाक्ताःसर्वउच्यंतेयतयःकांस्यभोजिनः १६
कांस्यभांडेषुयःपाकोगृहस्थस्यतथैवच
कांस्येभोजयतःसर्वंकिल्बिषंप्राप्नुयात्तयोः १७
भुक्त्वापात्रेयतिर्नित्यंक्षालयेन्मंत्रपूर्वकम्

फिर लौट कर और उस पात्रको दूसरी जगे रखकर और चार अंगुलों से ढक कर सावधानी से एक ग्रास को १३
सब व्यंजनों (भाजी) सहित दूसरे पात्रमें रक्खे और उस को सूर्य आदि भूत-देवता इनको देकर और जल से छिडक कर १४
पत्तोंके दोने में अथवा पात्र में मौन होकर संन्यासी भोजन करे—वड—पीपल—अगस्त—तेंदु—१५
कनेर—कदंब—इनके पत्तों में कभी भी भोजन न करे—और कांसी के पात्र में भोजन करने वाले संपूर्ण संन्यासी मलीन कहे हैं १६
कांसी के पात्र में पकाने वाले और जिमाने वाले गृहस्थी को जो पाप हैं उन दोनों के पाप को कांसी के पात्र में भोजन करने वाला संन्यासी प्राप्त होता है १७
संन्यासी पात्र में भोजन करके उस पात्र को मंत्रों से प्रक्षालन

नदुष्यतेचतत्पात्रंयज्ञेषुचमसाइव १८
अथाचम्यनिदिध्यास्यउपतिष्ठेतभास्करं
जपध्यानेतिहासैश्चदिनशेषंनयेद्बुधः १९
कृतसंध्यस्ततोरात्रींनयेद्दैवंगृहादिषु
हृत्पुंडरीकनिलयेध्यायेदात्मानमव्ययं २०
यदिधर्मरतिःशांतःसर्वभूतसमोवशी
प्राप्नोतिपरमंस्थानंयत्प्राप्यननिवर्तते २१
त्रिदंडभृद्योहिपृथक्समाचरेच्छनैःशनैर्यस्तुवहिर्मुखाक्षः
संमुच्यसंसारसमस्तबंधनात्सयातिविष्णोरमृतात्मनःप
इतिहारीतेधर्मशास्त्रे षष्ठोऽध्यायः ६ (दम्२२)
वर्णानामाश्रमाणांचकथितंधर्मलक्षणं

(धोना) करै वह पात्र इस प्रकार दूषित (अशुद्ध) नहीं होता जैसे यज्ञों में चमसा(एक यज्ञ का पात्र) १८
इसके अनंतर आचमन और ध्यान करके सूर्य की स्तुति करै और शेष दिन को जप दान इतिहासों से बितावे १९
फिर संध्या को करके घर आदि में रात्रिको बितावे—अपने कमल रूपी हृदे में अविनाशी आत्मा का ध्यान करै २०
जो संन्यासी धर्म में तत्पर—शांत—सब भूतों में सम वशी(इंद्रिय जिसके वशमें हों) हो तो उस उत्तम स्थान को प्राप्त होता है जहां जाकर नहीं लौटता २१
जो त्रिदंडी पृथक२ ऐसा आचरण करै और शनै२ जिस की इंद्रिय संसार के विषयों से विरक्त हों वह संसार के समस्त बंधनों को तोड कर अमृत रूपी विष्णु के पदको प्राप्त होता है २२
इतिहारी धर्मशास्त्रे ६ अध्यायः
वर्ण और आश्रम इनके धर्मों का स्वरूप कहा जिस धर्म से द्विजाति

येनस्वर्गापवर्गौचप्राप्नुवंतिद्विजातयः १
योगशास्त्रंप्रवक्ष्यामिसंक्षेपात्सारमुत्तमं
यस्यचश्रवणाद्यांतिमोक्षंचैवमुमुक्षवः २
योगाभ्यासबलेनैवनश्येयुःपातकानितु
तस्माद्योगपरोभूत्वाध्यायेन्नित्यंक्रियापरः ३
प्राणायामेनवचनंप्रत्याहारेणचेंद्रियं
धारणाभिर्वशेकृत्वापूर्वंदुर्धर्षणंमनः ४
एकाकारमनानंदंबुधैरुपमलामयं
सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरंध्यायेत्जगदाधारमुच्यते ५
आत्मनाबहिरंतस्थंशुद्धचामीकरप्रभं
रहस्येकांतमासीनोध्यायेदामरणांतिकं ६

स्वर्ग वा मोक्ष को पाते हैं १
अब संक्षेप से योग शास्त्र का उत्तम सार कहताहुं जिस के सुनने से मोक्ष के अभिलाषी मुक्त होते हैं २
योगाभ्यास के बलसे ही पाप नष्ट होते हैं तिससे योगमें तत्पर होकर उत्तम आचरण से नित्य ध्यान करै ३
प्रथम प्राणायाम से वाणी को प्रत्याहार (विषयों से इंद्रियों को हटाना) धारणा(स्थिरता का कर्म) से वश करने अयोग्य मन को वश में करके ४
एकाग्र चित होकर देवताओं को भी अगम्य(प्राप्ति के अयोग्य) और सूक्ष्म से सूक्ष्मजोजगत्का आश्रयभगवान्तिसकाध्यानकरै५
जो ब्रह्म अपने स्वरूप से बाहर और भीतर स्थित है और शुद्ध सोने के समान जिस की कांति है ऐसे ब्रह्म का मरण पर्यंत एकांत में एकाग्र बैठकर ध्यान करै ६

यत्सर्वप्राणिहृदयंसर्वेषांचहृदिस्थितं
यच्चसर्वजनैर्ज्ञेयंसोऽहमस्मीतिचिंतयेत् ७
आत्मलाभसुखंयावत्तपोध्यानमुदीरितं
श्रुतिस्मृत्यादिकंधर्मंतद्विरुद्धं नचाचरेत् ८
यथारथोऽश्वहीनस्तुयथाश्वोरथिहीनकः
एवंतपश्चविद्याचसंयुतेभैषजंभवेत् ९
यथान्नंमधुसंयुक्तंमधुवान्नेनसंयुतं
उभाभ्यांमपिपक्षाभ्यांयथाखेपक्षिणांगतिः १०
तथैवज्ञानकर्मभ्यांप्राप्यतेब्रह्मशाश्वतं
विद्यातपोभ्यांसंपन्नोब्राह्मणोयोगतत्परः ११
देहद्वयंविहायाशुमुक्तोभवतिबंधनात्

जो सब प्राणियों का हृदय है और जो सबके हृदय में स्थित है और जो सब जनों के जानने योग्य है वहीमें हूं ऐसा चिंतन (स्मरण) करे ७

इतने आत्मा के लाभ का सुख न हो तब तक ध्यान करना शास्त्रकारों ने कहा है आत्मा लाभ का विरोधी जो श्रुति और स्मृति का धर्म उसको करे ८

जैसे घोड़े के विना रथ और सारथि के विना घोड़ा नहीं चल सकते और दोनों परस्पर सहायक हैं—इसी प्रकार तप और विद्या (ज्ञान) दोनों मिलकर संसार रोग की औषध हैं ९

जैसे मीठ से युक्त अन्न और अन्न से युक्त मीठा और जैसे दोनों हीं पंखों से आकाश में पक्षियों की गति (उड़ना) है १०

तैसे ही ज्ञान और कर्म इन दोनों से ही सनातन ब्रह्म की प्राप्ति होती है - ज्ञान और तप से युक्त और योग में तत्पर ब्राह्मण ११ दोनों देहों (स्थूल—सूक्ष्म) को शीघ्र छोडकर बंधन से छूटता है

नतथाक्षीणदेहस्यविनाशोविद्यतेक्वचित् १२
मयातेकथितःसर्वोवर्णाश्रमविभागशः
संक्षेपेणद्विजश्रेष्ठाधर्मस्तेषांसनातनः १३
श्रुत्वैवंमुनयोधर्मंस्वर्गमोक्षफलप्रदं
प्रणम्यतमृषिंजग्मुर्मुदिताःस्वंस्वमाश्रमं १४
धर्मशास्त्रमिदंसर्वंहारीतमुखनिःस्टतं
अधीत्य कुरुतेधर्मंसयातिपरमांगतिं १५
ब्राम्हणस्यतुयत्कर्मकथितंबाहुजस्यच
उरुजस्यापियत्कर्मकथितंपादजस्यच १६
अन्यथावर्तमानस्तुसद्यःपततिजातितः
योयस्याभिहितोधर्मःसतुतस्यतथैवच १७

इस प्रकार जिस का देह नष्ट होगया हो उसका कभी भी नाश (कुगति) नहीं होता १२
हे द्विजों में श्रेष्ठो मैने वर्ण और आश्रम के भेद और संक्षेप से उनका सनातन संपूर्ण धर्म तुमको कहा १३
स्वर्ग और मोक्ष के दाता धर्म को इस प्रकार सुनकर उसहारीत मुनिको नमस्कार करके प्रसन्न हुएसब मुनि अपने २ आश्रम को चलेगये १४
हारीत मुनि के कहे संपूर्ण इस धर्मशास्त्र को पढकर जो धर्म करता है वह परम गति (मोक्ष) को प्राप्त होता है १५
ब्राह्मण—और क्षत्रिय और वैश्य और शूद्रका जो कर्म इसमें कहा है १६
उस के विरुद्ध जो वर्ताव करता है वह शीघ्र जाति से पतित होता है जो वर्ण का धर्म कहाहैवहउसीप्रकारकाउसवर्णका है१७

तस्मात्स्वधर्मंकुर्वीतद्विजोनित्यमनापदि
राजेंद्रवर्णाश्चत्वारश्चत्वारश्चापिचाश्रमाः १८
स्वधर्मंयेनुतिष्ठंतितेयांतिपरमांगतिं
स्वधर्मेणयथानृणांनारसिंहःप्रसीदति १६
नतुष्यतितथान्येनकर्मणामधुसूदनः
अतः कुर्वन्निजंकर्मयथाकालमतंद्रितः २०
सहस्रानीकदेवेशंनारसिंहंचसालयम्
उत्पन्नवैराग्यबलेनयोगीध्यायेत्परंब्रम्हसदाक्रियावान्
सत्यंसुखंरूपमनंतमाद्यं विहायदेहंपदमेतिविष्णोः२२
इतिहारीतेधर्मशास्त्रेसप्तमोऽध्यायः ७

तिस से आपत्काल को छोडकर प्रतिदिन द्विज—अपने धर्म को करै, हे राजाओं के स्वामी—चार वर्ण और चारहों आश्रम हैं १८
अपने धर्म को जो करते हैं वे परम गतिको प्राप्त होते हैं जैसे अपने धर्म से मनुष्यों पर नरसिंह भगवान् प्रसन्न होते हैं १६
तिस प्रकार अन्यकर्मसे, प्रसन्न नहीं होते इससे नित्य आलस्य को छोडकर समय पर कर्म करता हुआ मनुष्य २०
सहस्रों देवों के स्वामी भगवान् को प्राप्त होता है २१
उत्पन्न हुए वैराग्य के बलसे जो सदाचारी योगी पर ब्रह्म का ध्यान करता है वह योगी देहको त्यागकर—सत्य—सुखरूप—अनंत (अविनाशी) आद्य जो विष्णु का पद उसे प्राप्त होता है २२ इति हारीतधर्म शास्त्रे ७ अध्यायः

समाप्तम्

अतः परं प्रवक्ष्यामि जातिवृत्तिविधानकं
अनुलोमविधानंच प्रतिलोमविधिंतथा १
सांतरालकसंयुक्तं सर्वंसंक्षिप्यचोच्यते
नृपाद्ब्राम्हणकन्यायांविवाहेषुसमन्वयात् २
जातः सूतोऽत्रनिर्दिष्टःप्रतिलोमविधिर्द्विजः
वेदानर्हस्तथाचैषांधर्माणामनुबोधकः ३
सूताद्विप्रप्रसूतायांसुतोवेणुकउच्यते
नृपायामेवतस्यैवजातोयश्चर्मकारकः ४
ब्राम्हण्यांक्षत्रियाच्चौर्याद्रथकारः प्रजायते
वृत्तंचशूद्रवत्तस्यद्विजत्वंप्रतिषिध्यते ५

औशनसस्मृति

अब जाति और वृत्ति का विधान अनुलोम (नीच वर्ण की कन्या में उंचे वर्ण से उत्पन्न) की विधि कहता हुं १
आंतरालक (जो इनके बीच २ में पैदा हुए हैं पुलिंद आदि) संयुक्त संपूर्ण संक्षेप से कहा जाता है ब्राह्मण की कन्या में विवाह होने पर जो २
उत्पन्न होता है वह सूत (विदुर) कहा है, वह प्रति लोम विधि का द्विज होता है यह सूत वेदका अधिकारी नहीं यह वेद व उ इनके धर्मोंका उपदेशा (बतलानेवाला) होता है ३
सूत से ब्राह्मण की कन्या में जो हो उसे वेणुक (वण्ड) कहते हैं क्षत्रिय कन्या में जो सूतसे पैदा हो वह चमार कहाता है ४
ब्राह्मण की कन्या में जो क्षत्रियसे चोरीसे पैदा हो वह रथकार (वढई, सुनार) कहाता है इसका धर्म वही है जो शूद्र का और यह द्विज नहीं होता ५

यानानांयेचवोढारस्तेपांचपरिचारकः
शूद्रवृत्त्यातुजीवंतिनक्षात्रंधर्ममाचरेत् ६
ब्राम्हण्यांवैश्यसंसर्गाज्जातोमागधउच्यते
वंदित्वंब्राम्हणानांचक्षत्रियाणांविशेषतः ७
प्रशंसावृत्तिकोजीवेद्वैश्यप्रेष्यकरस्तथा
ब्राम्हण्यांशूद्रसंसर्गाज्जातश्चांडालउच्यते ८
सीससमाभरणंतस्यकार्ष्णायसमथापिवा
वर्ध्रीकंठेसमावध्यझल्लरींकक्षतोपिवा ९
मलापकर्षणंग्रामेपूर्वाण्हेपरिशुद्धिकं
नपराण्हेप्रविष्टोपिवहिर्ग्रामाच्चनैरृते १०

जो यान सवारी के उठाने वाले हैं अथवा जो उनके सेवक होकर शूद्र की वृत्तिसे जीतेहैं वेभी क्षत्रिय धर्म को नकरें ६
ब्राह्मणी में जो वैश्य से हो उसे मागध (भाट) कहतेहैं यह ब्राह्मणों का या विशेष कर क्षत्रियों का वंदी (स्तुति करने वाला) होता है। ७
प्रशंसा ही उस की जीविका है अथवा वैश्य का दास पना करै ब्राह्मणी से जो शूद्र से पेदा हो उसे चांडाल कहते हैं। ८
इसके सीसे अथवा लोहे के आभरण (गहने) होते हैं यह कंठ में वध्री (चमड़े का पट्टा) और कुक्षि (कोख) में झालरी (झाडट लिया) वांधकर ९
मध्यान्ह से पहिले गांवमें शुद्धि के लिये मल को उठावे और मध्यान्ह के पीछे गांवमें प्रवेश न करै किंतु गांवसे वाहर नैरृत दिशा में रहा करै। १०

पिंडीभूताभवंत्यत्रनोचेद्वध्याविशेषतः
चांडालाद्वैश्यकन्यायांजातःश्वपचउच्यते ११
श्वमांसभक्षणांतेषांश्वानएवंचतद्बलं
नृपायांवैश्यसंसर्गादायोगवइतिस्मृतः १२
तंतुवायाभवंत्येववसुकांस्योपजीविनः
शौलिकाःकेचिदत्रैवजीवनंवस्त्रनिर्मिते १३
अयोगवेनविप्रायांजातास्ताम्रोपजीविनः
तस्यैवनृपकन्यायांजातःसूनिकउच्यते १४
सूनिकस्यनृपायांतुजाताउद्बंधकाः स्मृताः
निर्णेजयेयुर्वस्त्राणिअस्पृश्याश्चभवंत्यतः १५

और ये एक हीजगे सबरहैं और जो नरहैं तो विशेषकर वध के योग्य हैं—चांडाल से जो वैश्य की कन्या में हो उसे श्वपच कहते हैं ११

कुत्ते का मांस ही उन का भक्षण है और कुत्ता ही उन का बल है क्षत्रिय की कन्या में जो वैश्यसे पैदा होता है वह आयोगव (जलाहा वा कोरी) कहा है १२

ये बुनना और कांसे के व्यापार से जीविका करैं इनी में जो वस्त्रपर रचे (सूत रेशम आदि के कसीदे) से जो जीतेहैं वे शौलिक कहाते हैं १३

आयोगव से जो ब्राह्मण की कन्या में पैदा होते हैं वे ताम्रोप जीवी (ठठेरे) होतेहैं और आयोगव से क्षत्रिय कन्यामें जो उत्पन्नहो उसे सूनिक (सोनी) कहते हैं १४

सूनिकसे जो क्षत्रिय की कन्या में पैदा हो उन्हे उद्बंधक कहते हैं ये वस्त्रों को धोवे और स्पर्शकरने के योग्य नहीं होते १५

नृपायांवैश्यतश्चौर्यात् पुलिंदःपरिकीर्तितः
पशुवृत्तिर्भवेत्तस्यहन्युस्तान्दुष्टसत्वकान् १६
नृपायांशूद्रसंसर्गाज्जातः पुल्कसउच्यते
सुरावृत्तिंसमारुह्यमधुविक्रयकर्म्मणा १७
कृतकानांसुराणांचविक्रेताद्याचकोभवेत्
पुल्कसाद्वैश्यकन्यायांजातोरजकउच्यते १८
नृपायांशूद्रतश्चौर्य्याज्जातोरंजकउच्यते
वैश्यायांरंजकाज्जातोनर्त्तकोगायकोभवेत् १९
वैश्यायांशूद्रसंसर्गाज्जातोवैदेहकःस्मृतः
अजानांपालनंकुर्य्यान्महिषीणांगवामपि २०

क्षत्रियकी कन्यामें जारी से जो वैश्य से पैदा हो उस पुलिंद कहते हैं ये पशु वों को मारकर मांस वृत्ति होते हैं और ये दुष्ट जीवों को मारै १६

क्षत्रिय की कन्यामें जो शूद्रसे पैदाहोउसे पुल्कश (कलाल) कहते हैं वह सुरा (मदिरा) की जीविकाके निमित्त मधुर मीठा वा मदिरा को वेचता है १७

और वनीवनाई मदिरा को भी वेचता है और पकाता भी है और पुल्कस से वैश्य की कन्या में जो पैदा हो उसे रजक कहते हैं । १८

क्षत्रिय की कन्या में शूद्र से जारी से जो पैदा हो उसे रंजक (रगरेज) कहते हैं रंजक से जो वैश्य की कन्या में पैदा हो उसे नर्तक (नट) वा गायक (कत्थक) कहते हैं १९

वैश्य की कन्य में शूद्रसे जोपैदा हो उसे वैदेहिक (गडरिया) कहते हैं वह बकरी–भैंस–गौ इन को पाले २०

दधिक्षीराज्यतक्राणांविक्रयाज्जीवनंभवेत्
वैदेहिकात्तु विप्रायांजाताश्चर्मोपजीविनः २१
नृपायामेवतस्यैवसूचिकःपाचकःस्मृतः
वैश्यायंशूद्रतश्चौर्याज्जातश्चक्रीचउच्यते २२
तैलपिष्टकजीवी तु लवणंभावयन्पुनः
विधिनाब्राह्मणःप्राप्यनृपायांतुसमंत्रकं २३
जातःसुवर्णइत्युक्तःसानुलोमद्विजःस्मृतः
अथवर्णक्रियांकुर्वन्नित्यनैमित्तिकींक्रियां २४
अश्वंरथंहस्तिनंचवाहयेद्वानृपाज्ञया
सेनापत्यंचभैषज्यंकुर्याज्जीवेत्तु वृत्तिषु २५

और दही—घी—मठा इनका बेचना उसकी जीविका है—वैदेहिक से ब्राह्मणीमें जो पैदाहों वे चर्मोपजीवी होते हैं अर्थात् चामबेचकर जीते हैं २१
वैदेहिक से क्षत्रिय की कन्यामें जो पैदा हो उसे सूचिक (दर्जी) अथवा पाचक (रसोईया) कहते हैं शूद्र से जो वैश्य की कन्या में चोरी से पैदाहो उसे चक्री (तेली) कहते हैं २२
यह तिल वा खल अथवा लवण से जीता है—विधि से ब्राह्मण ने विवाही जो क्षत्रिय की कन्या उससे जो होता है २३
वह अनुलोम सुवर्ण द्विज कहाता है यह नित्य (संध्यादि) नैमित्तिक (जात कर्मादि) क्रिया को करता हुआ २४
राजा की आज्ञा से घोड़ा—रथ—हाथी इनको चलाता है और सेनापति बनकर अथवा औषधों से अपना निर्वाह करे २५

नृपायांविप्रतश्चौर्य्यात्संजातोयोभिषक्स्मृतः
अभिषिक्तनृपस्याज्ञांपरिपाल्येत्तु वैद्यकं२६
आयुर्वेदमथाष्टांगंतन्त्रोक्तंधर्म्ममाचरेत्
ज्योतिषंगणितंवापिकायिकींवृत्तिमाचरेत् २७
नृपायांविधिनाविप्राज्जातोनृपइतिस्मृतः
नृपायांनृपसंसर्गात्प्रमादाद्गूढजातकः २८
सोऽपिक्षत्रियएवस्यादभिषेकेचवर्जितः
अभिषेकंविनाप्राप्यगोजइत्यभिधायकः २९
सर्वंतुराजवृत्तस्यशस्यतेपदवंदनं
पुनर्भूकरणेराज्ञानृपकालीनएवच ३०

क्षत्रिय की कन्या में चौरी से जो ब्राह्मण से पैदा होता है उस भिषक् कहते हैं वह राजा की आज्ञा से वैद्यक करता है २६ वह अष्टांग आयुर्वेद अथवा तंत्रके कहे धर्मोको करै ज्योतिष वा गणित विद्या से अपना निर्वाह करै २७
क्षत्रिय की कन्या में जो ब्राह्मण से पैदाहो वह नृप और इस नृप से क्षत्रिय कन्या में जो पैदा हो वह गूढ कहाता है २८ और वह भी क्षत्रिय होता है परन्तु अभिषेक (राजतिलक) के योग्य नहीं होता अभिषेक की अयोग्यता से इसे गोज (गोल) कहते हैं २९
सब प्रकार से राजा के चरणों की वंदना (नमस्कार) श्रेष्ठ है और यह गोज राजाओं के पुनर्भू करण (द्वितीय विवाह करना) में राजा के समान है अर्थात् इसके यहां राजा द्वितीय विवाह करले ३०

वैश्यायांविधिनाविप्राज्जातोह्यंबष्टउच्यते
कृष्यजीवीभवेत्तस्यतथैवाग्नेयवृत्तिकः ३१
ध्वजिनीजीविकावापिअंबष्ठाःशस्त्रजीविनः
वैश्यायांविप्रतश्चौर्यात्कुंभकारसउच्यते ३२
कुलालवृत्याजीवेतुनापितावाभवन्त्यतः
सूतकेप्रेतकेवापिदीक्षाकालेऽथवापनं ३३
नाभेरूर्ध्वंतुवपनंतस्मान्नापितउच्यते
कायस्थइतिजीवेतु विचरेच्चइतस्ततः ३४
काकाल्लौल्यंयमात्क्रौर्यंस्थपतेरथकृंतनं
आद्यक्षराणिसंगृह्यकायस्थइतिकीर्तितः ३५

विधि से विवाही वैश्य कन्यामें जो ब्राह्मणसे हो वह अंबष्ट कहाता है खेती अथवा आग्नेय(लकडी) उसकी जीविका होती है ३१ सेना की अथवा शस्त्र की जीविका अंबष्टों की हैं—और वैश्य की कन्या में जो चोरी ब्राह्मण से पदाहो उसे कुंभकार (कुह्मार)कहाते हैं ३२

यह कुलाल की वृत्ति (मट्टीके पात्र वनाने से जीवे इसीसें नापित (नाई) होते हैं जन्म सूतक अथवा मरण सूतक में अथवा दीक्षा (मंत्रका उपदेश) कालमें ये केशोंका छेदन करते हैं ३३

नाभी (टूंडी) के उपर के केश काटने से नापित कहाता है और यह कायस्थ नामसे इधर उधर विचरता हुआ जीविका करता है ३४

काक (कौआ) से चंचलता—यमराज से क्रूरता—स्थपति (कारीगरी) से काटना इन तीनों अर्थ के जताने के लिये इन तीनों शब्दों के पहिले अक्षर लेकर इसको कायस्थ कहा है ३५

शूद्रायांविधिनाविप्राज्जातःपारशवोमत :
भद्रकाद्रीन्समाश्रित्यजीवेयुःपूतकाःस्मृता : ३६
शिवाद्यागमविद्याद्यै स्तथामंडलवृत्तिभि :
तस्यांवैचौरसोवृत्तोनिषादोजातउच्यते ३७
वनेदुष्टमृगान्हत्वाजीवनंमांसविक्रय :
नृपाज्जातोथवैश्यायांगृह्यायांविधिनासुत :
वैश्यवृत्यातुजीवेतक्षत्रधर्मंनचारयेत् ३८
तस्यांतस्यैवचौरेणमणिकारःप्रजायते
मणीनांराजतांकुर्य्यान्मुक्तानांवेधनक्रियां ३९
प्रवालानांचसूत्रित्वंशङ्खानांवलयक्रियां
शूद्रस्यविप्रसंसर्गाज्जातउग्रइतिस्मृत : ४०

विधि से विवाही शूद्र की कन्या में जो ब्राह्मण से पैदा हो वह पारशव (पारधी) माना है ये भद्रक(अच्छे)आदि पहाड़ों पर रहकर जीवें और पूतक कहाते हैं ३६
शिवादि आगम विद्या (पंचरात्र आदि)ओं से अथवा मंडलवृत्ति से ये जीवें—इसी जातिमें (स्त्री पुरुष दोनों पारशवहों) जो औरस पुत्र उसे निषाद कहते हैं ३७
वन में दुष्ट मृगोंको मार कर मांस बेचना उनकी जीविका है—विधि से विवाही वैश्य कन्या में जो पुत्र क्षत्रिय से पैदा हो वह वैश्य वृति से जीवे और क्षत्रिय के धर्म को न करे ३८
वैश्य की कन्या में क्षत्रिय से चोरी करके जो पैदा हो वह मणिकार (मीनाकार) होता हैं मणियों का रंगना वा मोतियों का वींधना इसका काम है ३९
अथवा मूंगों की माला वा कड़े बनाना इसका काम है शूद्र के घर ब्राह्मण के संसर्ग से जो पैदा हो वह उग्र कहाता है ४०

नृपस्यदंडधारःस्याद्दंडंडयेषुसंचरेत्
तस्यैवचौर्यसंवृत्याजातःशुंडिकउच्यते ४१
जातदुष्टान्समारोप्यशुंडाकर्मणियोजयेत्
शूद्रायांवैश्यसंसर्गाद्विधिनासूचकःस्मृतः ४२
सूचकाद्विप्रकन्यायांजातस्तक्षकउच्यते
शिल्पकर्माणिचान्यानिप्रासादलक्षणंतथा ४३
नृपायामेवतस्यैवजातोयोमत्स्यबंधकः
शूद्रायांवैश्यतश्चौर्य्यात्कटकारइतिस्मृतः ४४
वशिष्ठशापात्त्रेतायांकेचित्पारशवास्तथा
वैखानसेनकेचित्तु केचिद्भागवतेनच ४५

यह राजा का दंड धार होता है और दंडके योग्योंको दंड देता है और जो ब्राह्मणसे शूद्रीमेंचोरीसेहो उसे शुंडिक कलार कहते हैं ४१ जन्मते ही दुष्टों के ऊपर अधिपति बनाकर उस शुंडी को शुंडा कर्म (सूली देना) में राजा नियुक्त करै विधिसे विवाही शूद्र कन्या में जो वैश्य से पैदा हो उसे सूचक (दरजी) कहतेहैं ४२ सूचक से ब्राह्मण की कन्या में जो पैदा हो उसे तक्षक (बढ़ई) कहते हैं शिल्प कर्म(कारीगरी) वा प्रासाद लक्षण(मकान बनाने का प्रकार) काम को करता है ४३
क्षत्रिय की कन्या में जो सूचक से पैदा हो वह मत्स्य बंधक (धीवर)होता है—शूद्र की कन्या में चोरी से जो वैश्य से पैदा वह कट कार कहाता है ४४
त्रेतायुग में वशिष्ठजी के शाप से भी कोई एक पारशव होते हैं वे वैखानस (हरिकागाना) से अथवा परमेश्वर की भक्तिसे ४५
वे शापवाले पारशव कलियुग में वेदशास्त्र के ज्ञानने वालेहोंगे

वेदशास्त्रावलंबास्तेभविष्यंतिकलौयुगे
कटकारास्ततःपश्चान्नारायणगणाःस्मृताः ४६
शाखावैखानसेनोक्तातंत्रमार्गविधिक्रियाः
निषेकाद्याःश्मशानांताःक्रियाःपूजांगसूचिकाः४७
पंचरात्रेणवाप्राप्तंप्रोक्तंधर्मंसमाचरेत्
शूद्रादेवतुशूद्रायांजातःशूद्रइतिस्मृतः ४८
द्विजशुश्रूषणपरःपाकयज्ञपरान्वितः
सच्छूद्रंतंविजानीयादसच्छूद्रस्ततोऽन्यथा ४९
चौर्यात्काकमचोज्ञेयश्वाश्वानांतृणवाहकः
एतत्संक्षेपतःप्रोक्तंजातिवृत्तिविभागशः ५०
जात्यंतराणिदृश्यंतेसंकल्पादितएवतु ५१
इत्यौशनसंधर्मशास्त्रंसमाप्तम्

तिस के पीछे वे कटकारनाम के नारायण के गण कहावेंगे ४६ तंत्रमार्ग के विधान से कर्म जिनमें है ऐसी शाखा वैखानस ऋषि ने कही है और गर्भ से लेकर श्मशानतक १६ संस्कार भी इन के होते हैं इसीसे ये सूचिक पूज्य (श्रेष्ठ) हैं ४७
नारद पंचरात्र में कहे हुए धर्म को ये करैं—शूद्र की कन्या में शूद्र से शूद्रही होता है ४८
जोशूद्रद्विज(तीनवर्ण)कीसेवामेंपाकयज्ञकेकर्ममेंसावधानरहैउसशूद्रकोउत्तमशूद्रजानना औरजोनरहैउसेअसत्(निंदाकेयोग्य)जानना
शूद्रकी कन्या में चोरी से जो शूद्रसे पैदा हो वह घोड़ोंका घास लानेहारा तृणवाहककाकवच कहाता है—यह संक्षेप से जाति और जीविका के अनुसार भिन्न२ हमने कहा ५० ४९
मनके संकल्प से इनमें से ही और जाति भी दीखती हैं ५१
इत्यौशनसं धर्मशास्त्रं समाप्तम्

श्रीगणेशायनमः

अंगिरस्स्मृतिप्रारंभः

गृहाश्रमेषुधर्मेषुवर्णानामनुपूर्वशः
प्रायश्चित्तविधिंदृष्ट्वाअंगिरामुनिरब्रवीत् १
अंत्यानामपिसिद्धान्नं भक्षयित्वाद्विजातयः
चांद्रं कृच्छ्रं तदर्धंतु ब्रह्मक्षत्रविशांविदुः २
रजकश्चर्मकश्चैवनटोबुरुडएवच
कैवर्त्त मेदभिल्लाश्चसप्तैतेचांत्यजाः स्मृताः ३
अंत्यजानांगृहेतोयंभांडेपर्युषितंचयत्
तद्द्विजेनयदापीतंतदैवहिसमाचरेत् ४
चांडालकूपेभांडेपुत्वज्ञानात्पिबतेयदि
प्रायश्चित्तं कथंतपांवर्णोवर्णेविधीयते ५

चारों वर्णों के गृहस्थ आश्रम आदि धर्मों में प्रायश्चित्त की विधि को देखकर अंगिरा मुनि बोले १
अंत्योजों के बनाए हुए अन्नको खाकर ब्राह्मण—क्षत्रिय—वैश्य क्रम से चांद्रायण—कृच्छ्र—अथवा आधाकृच्छ्र करैं २
रजक—चमार—नट—वुरुड—कैवर्त—मेद—भील—ये सात अंत्यज कहे हैं ३
अंत्यजों के घरका जल और पात्रका वासीजल—जो द्विज पीले तो उसी समय शास्त्र में कहे प्रायश्चित को करैं ४
चांडाल के कूये अथवा पात्रके जल को यदि अज्ञान से पीले तो वर्ण २ के प्रति चारों वर्णों का कैसे प्रायश्चित कहा है ५

चरेत्सांतपनंविप्रःप्राजापत्यंतुभूमिपः
तदर्धंचरेद्वैश्यःपादंशूद्रे प्रदापयेत् ६
अज्ञानात्पिबतेतोयंब्राह्मणस्त्वंत्यजातिषु
अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ७
विप्रोविप्रेणसंस्पृष्टउच्छिष्टेनकदाचन
आचांतएवशुद्ध्येतअंगिरामुनिरब्रवीत् ८
क्षत्रियेणयदास्पृष्टउच्छिष्टेनकदाचन
स्नानंजप्यंतुकुर्वीतदिनस्यार्द्धेनशुद्ध्यति ९
वैश्येनतुयदास्पृष्टःशुनाशूद्रेणवाद्विजः
उपोष्यरजनीमेकांपंचगव्येनशुद्ध्यति१०
अनुच्छिष्टेनसंस्पृष्टः स्नानंयेनविधीयते
तेनैवोच्छिष्टसंस्पृष्टः प्राजापत्यंसमाचरेत् ११

ब्राह्मण सांतपन—क्षत्रियप्राजापत्य—वैश्य आधा प्राजा पत्य—और पाद (चौथाई) प्राजा पत्य को शूद्र क्रम से करें ६
जो ब्राह्मण अज्ञान से अन्त्य जातियों के जलको पीले तो एक दिन उपवास करके पंचगव्य पीने से शुद्ध होता है ७
जो कभी उच्छिष्ट ब्राह्मण—ब्राह्मण को छूले तो आचमन करके शुद्ध होता है यह अंगिरा मुनि ने कहा है ८
जो कभी उच्छिष्ट क्षत्रिय ब्राह्मण को छूले तो स्नान और जप करता हुआ आधे दिन में शुद्ध होता है ९
जो उच्छिष्ट वैश्य, शूद्र,कुत्ता, ये तीनों ब्राह्मण को छूलें तो एक रात्री उपवास करके पंचगव्य पीने से शुद्ध होता है १०
जिस अनुच्छिष्ट (झूटे मखनहो)के स्पर्श करने से स्नान कहा है उसी उच्छिष्ट के स्पर्श करने पर प्राजा पत्य व्रत को करें ११

अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामिनीलीशौचस्यवैविधिं
स्त्रीणांक्रीडार्थसंभोगेशयनीयेनदुष्यति १२
पालनंविक्रयश्चैवतद्वृत्त्याउपजीवनं
पतितस्तुभवेद्विप्रस्त्रिभिःकृच्छ्रैर्व्यपोहति १३
स्नानंदानंजपोहोमःस्वाध्यायःपितृतर्पणं
स्पृष्ट्वातस्यमहापापंनीलीवस्त्रस्यधारणं १४
नीलीरक्तंयदावस्त्रमज्ञानेनतुधारयेत्
अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुध्यति १५
नीलीदारुयदाभिंद्याद्ब्राह्मणांवैप्रमादतः
शोणितंदृश्यतेयत्रद्विजश्चांद्रायणंचरेत् १६
नीलीवृक्षेणपक्वंतुअन्नमश्नातिचेद्द्विजः

इससे आगे नीली (नील) के शौच की विधि कहता हुं—स्त्रियें के क्रीडा के लिये भोगकरनेकी शय्या पर नीला कपड़ा दूषित नहीं है १२

नीलकी पालना—बेचना और नील के व्यापारवाले से जीविका करने से ब्राह्मण पतित होता है और तीन कृच्छ्र से उस पाप को दूर करता है अर्थात् शुद्ध होता है १३

नीले वस्त्र धारण करने हारे पुरुषका स्पर्श करके जो स्नान दान जप—होम—वेदपाठ—और पितरों के निमित्त तर्पण करता है उसको महान् (बड़ा) पाप होता है १४

नील के रंगे वस्त्र को जो अज्ञान से धारण करता है वह एक रात दिन उपवास करके पंचगव्य पीने सेशुद्ध होता है १५

जो नील के काठ से ब्राह्मण के शरीर में प्रमाद से घाव होजाय और रुधिर भी निकस आवेतो ब्राह्मण चांद्रायण व्रत करै १६

जो ब्राह्मण नील के वृक्ष से पके हुए अन्नको खाता है वह उस

आहारवमनंकृत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति १७
भक्षेत्प्रमादतोनीलींद्विजातिस्त्वसमाहितः
त्रिषुवर्णेषुसामान्यंचांद्रायणमितिस्थितं १८
नीलीरक्तेनवस्त्रेणयदन्नमुपदीयते
नोपतिष्ठतिदातारंभोक्ताभुंक्तेतुकिल्बिषं १९
नीलीरक्तेनवस्त्रेणयत्पाकंश्रपितंभवेत्
तेनभुक्तेनविप्राणांदिनमेकमभोजनं २०
मृतेभर्तरियानारीनीलीवस्त्रंप्रधारयेत्
भर्तातुनरकंयातिसानारीतदनंतरं २१
नील्याचोपहतेक्षेत्रेसस्यंयत्तुप्ररोहति
अभोज्यंतद्द्विजातीनांभुक्त्वाचांद्रायणंचरेत् २२

अन्नको वमन करके पंचगव्य के पीने से शुद्ध होता है १७
यदि द्विजाति(३वर्ण)प्रमाद और असावधानी से नील को खालें तो तीनों वर्णों को चांद्रायण करना समान प्रायश्चित्त है १८
नील के वस्त्रको पहन कर जो अन्न परसा जाता है उसका फल दाता को नहीं मिलता और भोजन करने वालाभी पाप का भागी होता है १९
नीले वस्त्र को पहन कर जो पाक किया जाता है उसको खाकर ब्राह्मण एक दिन अभोजन (उपवास)करे २०
पति के मरे पीछे जोस्त्री नीले कपड़े धारती है उसका पति नरक में जाता है और पीछे से वह स्त्री भी नरक में जाती है २१
नील से उपहत (जिसमें नील हुआहो) खेत में जो अन्न पैदा होता है वह द्विजातियों का अभक्ष्य है और उस को भक्षण करके चांद्रायण करें २२

देवद्रोणेवृषोत्सर्गेयज्ञेदानेतथैवच
अत्रस्नानंनकर्तव्यंदूपिताचवसुंधरा २३
वापितायत्रनीलीस्यात्तावद्भूरशुचिर्भवेत्
यावद्द्वादशवर्षाणिमतऊर्ध्वंशुचिर्भवेत् २४
भोजनेचैवपानेचतथाचौषधभेषजैः
एवंम्रियंतेयागावः पादमेकंसमाचरेत् २५
घंटाभरणदोषेणयत्रगौर्विनिपीड्यते
चरेदर्धंव्रतंतेषांभूषणार्थंतु नःकृतं २६
दमनंदामनेरोधे अवघातेचवैकृते
गवांप्रभवताघातैः पादोनंव्रतमाचरेत् २७
अंगुष्ठपर्वमात्रस्तुव हुमात्रप्रमाणतः

देवद्रोण (तीर्थ) में वृषोत्सर्ग—यज्ञ—और दान—इनमें नील वस्त्र को पहिन कर स्नान नहीं करना क्योंकि इतनी जगे नील के प्रभावसे पृथिवी दूषित होती है २३
जिस खेत में नील बोया हो उस खेत की भूमि इतने अशुद्ध होती है इतने बारह वर्षन बीते उससे पीछे शुद्ध होती है २४
भोजन करानेसे जल पिलाने से और औषध देने से यदि गौ मर जाय तो गोहत्या का चोथाई प्रायश्चित करे २५
घंटा बांधने के दोष से जहां गौ मर जाय वहां वही व्रत करै यदि उनके भूषण के लिये घंटा बांधा हो २६
दमन करने और बांधने और रोकने और मारने पर गौओं के जन्म समय के आघातों से—चौथाई व्रत करै २७
अंगुल पर जिसमें गांठे हों दोहाथ का जिसका प्रमाण हो और पत्ते और अग्र भाग भी जिसमें हो उसे दंड कहते हैं २८

सपल्लवश्चसाग्रश्चदंडइत्यभिधीयते २८
दंडादुक्ताच्चदान्येनपुरुषाःप्रहरंतिगां
द्विगुणंगोव्रतंतेषांप्रायश्चित्तंविशोधनं २६
शृंगभंगेत्वस्थिभंगेचर्मनिर्मोचनेतथा
दशरात्रंचरेत्कृच्छ्रं यावत्स्वस्थोभवेत्तदा ३०
गोमूत्रेणातुसंमिश्रं यावकंचोपजायते
एतदेवहितंकृच्छ्रमित्थमंगिरसास्मृतं ३१
असमर्थस्यबालस्यपितावायदिवागुरुः
यमुद्दिश्यचरेद्धर्मंपापंतस्यनविद्यते ३२
अशीतिर्यस्यवर्षाणिबालोवाप्यूनषोडशः
प्रायश्चित्तार्द्धमर्हंतिस्त्रियोरोगिणएवच ३३
मूर्छितेपतितेचापिगवियष्टिप्रहारिते

इस दंडसे अथवा इतर दंडसे जब पुरुषगौ को ताडना देंतवउन को दूने गोव्रत (प्रायश्चित्त) से शुद्धि होती है २६
यदि ताडनासे सींग औरहाड टूटजाय अथवा चमडा उखडजाय तो दशरात्र तक कृच्छ्रव्रत करै इतने वेसींग आदि अच्छे हों—३०
गोमूत्र से मिले जो जों होते हैं यही कृच्छ्र है यह अंगिराऋषि ने कहा है ३१
जिसअसमर्थ वालकके वदले पिता अथवा गुरु जो प्रायश्चित्तकरैं उस लडकेको वह पाप नहीं होता ३२
अस्सी वर्षका पुरुष और सोलह वर्ष की अवस्था से कम वालक और स्त्री और रोगी ये आधे प्रायश्चित्त के योग्य हैं ३३
जो लाठी के प्रहार से गौको मूर्छा होजाय अथवा गौ गिरपडे

गायत्र्यष्टसहस्रं तुप्रायश्चित्तं विशोधनं ३४
स्नात्वारजस्वलाचैवचतुर्थेन्हिविशुद्ध्यति
कुर्याद्रजसिनिवृत्ते निवृत्ते नकथंचन ३५
रोगेणयद्रजःस्त्रीणामत्यर्थंहिप्रवर्त्तते
अशुद्धास्तानतेनस्युस्तासांवैकारिकंहितत् ३६
साध्वाचारान्तावत्स्याद्रजोयावत्प्रवर्तते
वृत्तेरजसिगम्यास्त्रीगृहकर्मणिचेंद्रिये ३७
प्रथमेहनिचांडालीद्वितीयेब्रह्मघातिनी
तृतीयेरजकीप्रोक्ताचतुर्थेहनिशुद्ध्यति ३८
रजस्वलायदास्पृष्ठाशुनाशूद्रेणचैवहि
उपोष्यरजनीमेकांपंचगव्येनशुद्ध्यति ३९

तो आठ हजार गायत्री का जप रूपजो प्रायश्चित्त उससे शुद्धि होती है ३४

रजस्वला स्त्री चौथेदिन स्नान करके शुद्ध होती है और वहरजो दर्शन की निवृत्ति पर ही स्नान करैं निवृत्ति के विना स्नान न करे ३५

रोगसे जो रज (रुधिर) स्त्रियोंके अत्यंत जाता (निकसता) है उससे वे अशुद्ध नहीं होती क्योंकि वह रजके विकारसे हुआ है ३६

इतने रज की प्रवृत्ति रहै तवतक उत्तम आचरण न करे और रज की निवृत्ति होने पर पुरुष का संग और घरका काम करै ३७

रजस्वला स्त्री प्रथम दिनमें चांडाली २ दिनमें ब्रह्महत्यारी—३ दिन में रजकी (धोविन)होतीहै और चौथेदिन शुद्ध होतीहै ३८

यदि रजस्वला स्त्रीको श्वान और शूद्र छूलैं तो एकरात्रि उपवास करके पंच गव्य पीने से शुद्ध होती है ३९

द्वावेतावशुचीस्यातांदंपतीशयनंगतौ
शयनादुत्थितानारीशुचिःस्यादशुचिः पुमान् ४०
गंडूषंपादशौचंचनकुर्यात्कांस्यभाजने
भस्मनाशुद्ध्यतेकांस्यंताम्रमम्लेनशुद्ध्यति ४१
रजसाशुद्ध्यतेनारीनदीवेगेनशुद्ध्यति
भूमौनिःक्षिप्यषण्मासमत्यंतोपहतंशुचि ४२
गवाघ्रातानिकांस्यानिशूद्रोच्छिष्टानियानितु
भस्मनादशभिःशुद्ध्येत्काकेनोपहतेतथा ४३
शौचंसौवर्णरौप्याणांवायुनार्केंदुरश्मिभिः
रजस्पृष्टंशवस्पृष्टमाविकंचनशुद्ध्यति ४४

शय्या पर सोते समय स्त्री और पुरुष दोनों अशुद्ध होते हैं शय्या से उठकर स्त्री शुद्ध होती है और पुरुष अशुद्ध होता है ४०
कांसी के पात्रसे गंडूप (कुल्ले) न करे और पेर न धोवे यदिक रे तो वह अशुद्ध कांसी का पात्र भस्म से और तांबे का पात्र खटाई से शुद्ध होते हैं ४१
स्त्री रजोदर्शन से—नदी वेग से—और अत्यंत विगडी वस्तु (पात्र आदि) भूमि में छः महीने रखने से शुद्ध होते हैं ४२
गौने जिनको संघलिया हो अथवा जिनमें शूद्रने खाया हो—अथवा जिनको काकने छूलिया हो ऐसे कांसी के पात्र दश दिन तक भस्म से मांजने से शुद्ध होते हैं ४३
सोना और चांदी के पात्र वायु और सूर्य—और चन्द्रमा की किरणों से शुद्ध होते हैं—और स्त्री का रज और शव (मुर्दा का स्पर्श जिसमें हुआ हो ऐसा ऊनका वस्त्र शुद्ध नही होता ४४

अद्भिर्मृदावतन्मात्रंप्रक्षाल्यचविशुद्ध्यति
शुष्कमन्नमविप्रस्यभुक्त्वासप्ताहमृच्छति ४५
अन्नं व्यंजनसंयुक्तमर्द्धमासेनशुद्ध्यति
पयोदधिचमासेनषण्मासेनघृतंतथा ४६
तैलंसंवत्सरेणैवकोष्ठेजीर्यतिमानवे
योभुंक्तेहिचशूद्रान्नंमासमेकंनिरंतरं ४७
इहजन्मनिशूद्रत्वंमृतःश्वाचाभिजायते
शूद्रान्नंशूद्रसंपर्कःशूद्रेणचसहासनं ४८
शूद्राज्ज्ञानागमःकश्चिज्ज्वलंतमपिपातयेत्
अप्रणामंगतेशूद्रेस्वस्तिकुर्वंतियेद्विजाः ४९

और मट्टी और जलसे जितने ऊनके वस्त्र में पूर्वोक्त अपूता हुई हो उतनेको ही धोने से शुद्ध होता है—ब्राह्मण से भिन्नके सूके अन्नको खाकर सातदिन उपवास करै ४५

और व्यंजन (भाजी)मिले अन्नको खाकर पक्षके उपवास से और दूध वा दही खाकर एक महीने के उपवास से और घीकोखाकर छः महीने के उपवास से शुद्धि होती है ४६

और एक वर्ष में तेल मनुष्य के पेट में पचता है—जो निरंतर महीने भर शूद्रके अन्नको खाता है ४७

वह इसी जन्म में शूद्र होता है और मरकर कुत्ता होता है—शूद्र का अन्न शूद्रका मेल—और शूद्रके संग एक आसनपर बैठना ४८

और शूद्र से किसी विद्याको लेना ये प्रतापी मनुष्य को भीपतित करते हैं—शूद्रके प्रणाम किये विना जो द्विज आशीर्वाद देते हैं ४९

शूद्रोपिनरकंयातिब्राह्मणोपितथैवच
दशाहाच्छुद्ध्यतेविप्रोद्वादशाहेनभूमिपः ५०
पाक्षिकंवैश्यएवाहुःशूद्रोमासेनशुद्ध्यति
अग्निहोत्रीतुयोविप्रःशूद्रान्नंचैवभोजयेत् ५१
पंचतस्यप्रणश्यंतिचात्मावेदास्त्रयोग्नयः
शूद्रान्नेनतुभुक्तेनयोद्विजोजनयेत्सुतान् ५२
यस्यान्नंतस्यतेपुत्राअन्नाच्छुक्रंप्रवर्तते
शूद्रेणस्पृष्टमुच्छिष्टंप्रमादादथपाणिना ५३
तद्द्विजेभ्योनदातव्यमापस्तंबोब्रवीन्मुनिः
ब्राह्मणस्यसदाभुंक्तेक्षत्रियस्यचपर्वसु ५४
वैश्येष्वापत्सुभुंजीतनशूद्रेपिकदाचन

वे शूद्र और ब्राह्मण दोनों नरक में जाते हैं—दशदिन में ब्राह्मण वारहदिन में क्षत्री ५०
पन्द्रह दिनमें वैश्य और एक मास में शूद्र जन्म और मृतक सूतक में शुद्ध होते हैं—जो अग्निहोत्री ब्राह्मण शूद्रके अन्नको खाता है ५१
उसकेदेह—वेद और तीनों अग्नि—ये पांचों नष्ट होतेहैं—शूद्रके अन्नको खाकर जिन पुत्रोंको द्विज पैदा करता है ५२
वे पुत्र उसके ही हैं जिसका अन्नथा क्योंकि अन्नसे ही वीर्य पैदा होता है,शूद्रने अपने हाथसे जिसे छूलिया हो उस उच्छिष्ट को ५३
द्विजोंको नदे यह आपस्तंबमुनिने कहा है—ब्राह्मण के अन्न को सदा खाले—और क्षत्रिय के अन्नको पर्व(यज्ञ) में ५४
आपत्तिकाल में वैश्य के अन्नको और शूद्रके अन्नको कदाचित्

ब्राह्मणान्ने दरिद्रत्वंक्षत्रियान्ने पशुस्तथा ५५
वैश्यान्नेनतुशूद्रत्वंशूद्रान्ने नरकंध्रुवं
अमृतंब्राह्मणस्यान्नंक्षत्रियान्नंपयःस्मृतं ५६
वैश्यस्यचान्नमेवान्नंशूद्रान्नंरुधिरंध्रुवं
दुष्कृतंहिमनुष्याणामन्नमाश्रित्यतिष्ठति ५७
योयस्यान्नंसमश्नातिसतस्याश्नातिकिल्बिषं
सूतकेषुयदाविप्रोब्रह्मचारीजितेंद्रियः ५८
पिबेत्पानीयमज्ञानाद्भुंक्ते भक्तंतथापिवा
उत्तार्याचम्यउदकमवतीर्यउपस्पृशेत् ५९
एवंहिसमुदाचारोवरुणेनाभिमंत्रितः
अग्न्यागारेगवांगोष्ठे देवब्राम्हणसन्निधौ६०

भी न खा ब्राह्मण के अन्न खाने से दरिद्री और क्षत्रिय के अन्न खाने से पशु ५५
वैश्यके अन्न खाने से शूद्र—और शूद्रके अन्न खानेसे निश्चय नरक, होता है—ब्राह्मणका अन्न अमृत रूप है और क्षत्रिय का अन्न दूधके समान है ५६
वैश्यका अन्न अन्नही है और शूद्र का अन्न निश्चय से रुधिर है मनुष्य का किया पाप अन्नमें रहता है ५७
जो जिसके अन्नको खाता है वह उसके पाप को खाता है—यदि जितेंद्रिय ब्रह्मचारी ब्राह्मण सूतक में ५८
अज्ञानसे जल पीले अथवा अन्नखाले तो जल निकास(वमन)कर आचमन करै और फिर प्राणायाम करके आचमन करे ५९
इस प्रकार भली प्रकार वरुण के मंत्रों से देहको छिडके अग्नि की शाला, गोशाला, देव और ब्राह्मणों के समीप ६०

आचरेज्जपकालेचपादुकानांविसर्जनं
पादुकासनमारूढोगेहात्पंचगृहंव्रजेत् ६१
छेदयेत्तस्यपादौतुधार्मिकःपृथिवीपतिः
अग्निहोत्रीतपस्वीचश्रोत्रियोवेदपारगः ६२
एतेवैपादुकैर्यांतिशेषान्दंडेनताडयेत्
जन्मप्रभृतिसंस्कारेचूडांतेभोजनंनवम् ६३
असपिंडेनभोक्तव्यंचूडस्यांतेविशेषतः
याचकान्नंनवश्राद्धमपिसूतकभोजनं ६४
नारीप्रथमगर्भेषुभुक्त्वाचांद्रायणंचरेत्
अन्यदत्तातुयाकन्यापुनरन्यस्यदीयते ६५
तस्याश्चान्नंनभोक्तव्यंपुनर्भूःसाप्रगीयते

और जपके समय पादुका(खडाउं)ओंको त्याग दे और यदि खडाउं पर चढकर जो सामान्य गृहस्थी अपनेघरसेपांच घरतकजाय ६१ तो धर्म का ज्ञाता राजा उसके पैरों का छेदन करे क्योंकि अग्नि होत्री—तपस्वी—वेदोक्तकर्मोंका करनेवाला—और वेदका पार जाननेवाला ६२

इतने ही खडाउं पर चढ़कर चलें और इतर पुरुषों को राजा दंडसे ताड़ना करे—जन्मसे आदि संस्कार (जात कर्मादि) में चूड़ा कर्म में—अन्नप्राशनमें ६३

अपने असपिंड के घर भोजन न करे और चूड़ाकर्म में तो विशेषकर न करे—भिखारी का अन्न—नवश्राद्ध (मरेके ११दिन में जो होता है) सूतकका अन्न ६४

स्त्री के पहिले गर्भाधान मे खाकर चांद्रायण प्रायश्चित करे— जो कन्या अन्य को देकर अन्यको दी जाती है ६५

उसका अन्न भी नहीं खाना क्योंकि उसको पुनर्भू कहते हैं—

पूर्वस्यश्राविर्तोयश्चगर्भोयश्चाप्यसंस्कृतः ६६
द्वितीयेगर्भसंस्कारस्तेनशुद्धिर्विधीयते
राजाद्यै र्दशभिर्माषैर्यावत्तिष्ठतिगुर्विणी ६७
तावद्रक्षाविधातव्यापुनरन्योविधीयते
भर्तृशासनमुल्लंघ्ययाचस्त्रीविप्रवर्तते ६८
तस्याश्चैवनभोक्तव्यंविज्ञेयाकामचारिणी
अनपत्यातुयानारीनाश्नीयात्तद्गृहेपिवै ६९
अथभुंक्तेतुयोमोहात्पूयंसनरकंव्रजेत्
स्त्रियाधनंतुयेमोहादुपजीवंतिमानवाः ७०
स्त्रियायानानिवासांसितेपापायांत्यधोगतिं
राजान्नंहरतेतेजः शूद्रान्नंब्रम्हवर्चसं ७१

यदि पहिले गर्भ का पात होजाय अथवा संस्कार न हो ६६
तो दूसरे गर्भ के संस्कार से शुद्धि कही है—इतने वह स्त्री गर्भवती रहै राजमाष आदि दश प्रकार के माषों से ६७
तब तक रक्षा करनी फिर अन्यगर्भ होता है—पतिकी आज्ञाका अवलंघन करके जो स्त्री वर्तती है ६८
उसका अन्न भी नहीं खाना और उसे कामचारिणी जानना और जो स्त्री वंध्या हो उसके घर भी नहीं खाना ६९
जो मोहसे भोजन करता है वह पयस (राध के) नरक में जाता है—स्त्री के धनको जो मनुष्य मोह से भोगते हैं७०
स्त्री का यान (सवारी) वस्त्रों को जो वर्तते हैं वे पापी अधोगति को प्राप्त होते हैं—राजाका अन्न तेजको हरता है और शूद्र का अन्न ब्रह्म तेजको ७१
और जो सूतक में खाता है वह पृथिवी के मलको खाता है

इत्यंगिराप्रोक्तंधर्मशास्त्रं समाप्तम्

सूतकेषुचयोभुंक्तेसभुंक्त पृथिवीमलम्
इत्यंगिरसाप्रणीतंधर्मशास्त्रंसंपूर्णम्

अथयमस्मृतिप्रारंभः

श्रुतिस्मृत्युदितंधर्मंबर्णानामनुपूर्वशः
प्राब्रवीदृषिभिःपृष्टोमुनीनामग्रणीर्यमः १
योभुंजानोशुचिर्वापिचांडालंपतितंस्पृशेत्
क्रोधादज्ञानतोवापितस्यवक्ष्यामिनिष्कृतिं २
षड्रात्रंवात्रिरात्रंवायथासंख्यंसमाचरेत्
स्नात्वात्रिषवणंविप्रः पंचगव्येनशुद्ध्यति ३
भुंजानस्यतुविप्रस्यकदाचित्स्रवतेगुदं
उच्छिष्टत्वेशुचित्वेचतस्यशौचंविनिर्दिशेत् ४
पूर्वंकृत्वाद्विजः शौचंपश्चादापउपस्पृशेत्
अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ५

चारों वर्णों के श्रुति और स्मृति मेंकहे धर्मको ऋषियों के पूछने से मुनियों में मुख्य यमने क्रमसे कहा १
जो भोजनके समय अथवा उच्छिष्ट अवस्थामें चांडाल पतित—को क्रोध अथवा अज्ञान से छूले उसका प्रायश्चित्त कहता हुं २
छः रात्रि अथवा तीन रात्रि क्रमसे प्रायश्चित्त करै त्रिकाल स्नान करके पंचगव्य पीने से ब्राह्मण शुद्ध होता है ३
—भोजन के समय यदि कभी ब्राह्मण को अधोवायु होजाय तो उच्छिष्ट और अशुद्धि के निवारणके लिये शौच(शुद्धि)करै ४
प्रथम ब्राह्मण शौच करके जलका स्पर्श(आचमन) करै और फिर अहोरात्र उपबास करके पंचगव्य पीने से शुद्ध होता है ५

निगिरन्यदिमेहेतभुक्त्वावामेहनेकृते
अहोरात्रोषितोभूत्वाजुहुयात्सर्पिषाहुतिं ६
यदाभोजनकालेस्यादशुचिर्ब्राह्मणः क्वचित्
भूमौनिधायतद्ग्रासंस्नात्वाशुद्धिमवाप्नुयात् ७
भक्षयित्वातुतद्ग्रासमुपवासेनशुद्ध्यति
अशित्वाचैवतत्सर्वंत्रिरात्रमशुचिर्भवेत् ८
अश्नतश्चेद्विरेकः स्यादस्वस्थस्त्रिशतंजपेत्
स्वस्थस्त्रीणिसहस्राणिगायत्र्याःशोधनंपरं ९
चांडालैः श्वपचैःस्पृष्टोविण्मूत्रेचकृतेद्विजः
त्रिरात्रंतुप्रकुर्वीतभुक्त्वोच्छिष्टः षडाचरेत् १०
उदक्यांसूतिकांवापिसंस्पृशेदंत्यजोयदि

भोजन करते अथवा भोजनकरके शुद्धिसे पहिले यदि मलका त्याग हो जायतो अहोरात्र उपवास करके घीकी आहुतिसे होम करे ६
जो ब्राह्मण भोजनके समय अशुद्ध होजाय तो उस ग्रासको पृथ्वी पर रखकर स्नान करने से शुद्धिको प्राप्त होता है ७
जो उस ग्रासको भी खाले तो एक उपवास करके शुद्ध होता है और सब अन्नको भक्षण करके तीनरात्र तक अशुद्ध रहता है ८
जो भोजन के समय वमन होजाय तो अस्वस्थ (रोगी आदि) तीनसो गायत्री और स्वस्थ (सावधान) तीन हजार गायत्री जपे यह गायत्री से परम शुद्धि है ९
जो विष्ठा और मूत्र करे पीछे चांडाल अथवा श्वपच द्विज को छूलें तो तीनरात्र और छूए पीछे भोजन भी करले तो छः रात उपवास करे १०
रजस्वला अथवा सूति का स्त्रीको यदि अंत्यज छूलें तो ती

त्रिरात्रेणविशुद्धिःस्यादितिशातातपोब्रवीत् ११
रजस्वलातुसंस्पृष्टाश्वमातंगादिवायसैः
निराहाराशुचिस्तिष्ठेत्कालस्नानेनशुद्ध्यति १२
रजस्वलेयदानार्यावन्योन्यंस्पृशतः क्वचित्
शुद्ध्यतः पंचगव्येनब्रम्हकूर्चेनचोपरि १३
उच्छिष्टेनचसंस्पृष्टाकदाचित्स्त्रीरजस्वला
कृच्छ्रेणशुद्धिमाप्नोतिशूद्रादानोपवासतः १४
अनुच्छिष्टेनसंस्पृष्टेस्नानंयेनविधीयते
तेनैवोच्छिष्टसंस्पृष्टःप्राजापत्यंसमाचरेत् १५
ऋतौतुगर्भशंकित्वास्नानंमैथुनिनः स्मृतं

न रातमें शुद्धि होती है यह शाता तप ऋषिने कहा है ११
यदि रजस्वला को कुत्ता—हाथी—काक छूलें तो अशुद्ध अवस्था में भोजन करे बिनारहै और समय (४दिन) के स्नान से शुद्ध होती है १२
यदि कभी दो रजस्वला स्त्री परस्पर छूलें तो पंचगव्य पीकर और ब्रह्मकूर्च (कुशाओं का मोटक) से पंचगव्य को अपने शरीर पर छिडकने से शुद्ध होती हैं १३
जो कभी रजस्वला स्त्रीको उच्छिष्ट पुरुष छूले तो द्विजोंकी स्त्री कृच्छ्र करनेसे और शूद्रकी स्त्री दान और उपवास से शुद्धिको प्राप्त होती है १४
जिस अनुच्छिष्ट के स्पर्श करने से स्नान करना कहा है यदि वही उच्छिष्ट होकर स्पर्श करले तो प्राजापत्य प्रायश्चित्त कहा है १५
ऋतकाल में गर्भ की शंका (इच्छा) से जो मैथुन करता है उसे

अनृतौतुस्त्रियंगत्वाशौचंमूत्रपुरीषवत् १६
उभावप्यशुचीस्यातांदंपतीशयनेगतौ
शयनादुत्थितानारीशुचिःस्यादशुचिःपुमान् १७
भर्तुःशरीरशुश्रूषांदौरात्म्यादप्रकुर्वती
दंड्याद्वादशकंनारिवर्षंत्याज्याधनंविना १८
त्यजंतोऽपतितान्बंधून्दंड्याउत्तमसाहसं
पिताहिपतितःकामंनतुमाताकदाचन १९
आत्मानंघातयेद्यस्तुरज्वादिभिरुपक्रमैः
मृतोमेध्येनलेप्तव्योजीवतोद्विशतंदमः २०
दंड्यास्तत्पुत्रमित्राणिप्रत्येकंपणिकंदमं
प्रायश्चित्तं ततःकुर्युर्यथाशास्त्रप्रचोदितम् २१

स्नान करना कहा है और ऋतुसे भिन्नकाल में स्त्रीका संग करने से मल मूत्र के समान शौच करना पडता है १६
शय्या पर सोते हुए दोनों स्त्री और पुरुष अशुद्ध होते हैं शय्या से अलग होने पर स्त्री शुद्ध, और पुरुष अशुद्ध होता है १७
पतिके शरीर की सेवा जो स्त्री कुबुद्धि से नहीं करतीं वह स्त्री बारह वर्ष तक धनके विना त्यागदेनी १८
जो विना पतित बन्धुओं को त्यागदेते हैं उनको बड़े साहस (अत्यंत)सेराजा दंडदे और पतित पिता भी यथेच्छ त्यागने योग्य हैं परन्तु माता कभी भीत्यागने योग्य नहीं १९
जो पुरुष रजु (गलफांस) से अथवा किसी अन्य प्रकार से आत्म घात करे यदि वह मरजाय तो उसे गोबर से लीपदे और बच जाय तो उसको दोसे रुपये दंड कहा है २०
और उसके पुत्र मित्रोंको भी एक२ पणिक (मुद्रा) दंड है फिर वे सब शास्त्र के अनुसार प्रायश्चित्त करें २१

जलाद्युद्बंधनभ्रष्टाःप्रव्रज्यानाशकच्युताः
विषात्प्रपतनंप्रायःशस्त्रघातहताश्चये २२
नचैतेप्रत्यवसिताःसर्वलोकबहिष्कृताः
चांद्रायणेनशुद्ध्यंतितप्तकृच्छ्रद्वयेनवा २३
उभयावसितःपापःश्यामाच्छबलकाच्च्युतः
चांद्रायणाभ्यांशुद्ध्येतदत्वाधेनुंतथावृषम् २४
श्वशृगालप्लवंगाद्यैर्मानुषैश्चरतिंबिना
दष्टःस्नात्वाशुचिःसद्योदिवासंध्यासुरात्रिषु २५
अज्ञानाद्ब्राह्मणोभुक्त्वाचांडालान्नं कदाचन
गोमूत्रयावकाहारोमासार्द्धेनविशुद्ध्यति २६

मरने के लिये जलमें डूबकर और फांसी खाकर जो बचगये हैं और सन्यास धर्मके नाश करने वाले और उसके जो त्यागी हैं और विष भक्षण से—उंचेसे गिरने से अथवा शस्त्रकेलगनेसे जो मरगये हैं २२

ये पुरुष भोजन के योग्य नहीं रहते ये सब लोकोंके वहिष्कृत (पतित)होते हैं और चांद्रायण अथवातप्तकृच्छ्से शुद्धहोते हैं२३

उभयावसित अर्थात् पूर्वोक्त पापियों के घरमें भोजन करनेवाला वा रहनेवाला पापी पुरुष दो चांद्रायण करै अथवा श्याम और शवल (कबरा) से भिन्नगौ वा वैलका दान करै २४

कुत्ता—सियार—वानर आदि जो मनुष्यों के संग क्रीड़ा के विना काटैं तो दिन संध्या अथवा रात्रि में शीघ्र स्नानही से शुद्ध होता है २५

अज्ञान से चांडाल के अन्नको कभी भी ब्राह्मण खाकर गोमूत्र और जौं को खाने से पंद्रह दिन में भली प्रकार शुद्धहोता है२६

गोब्राह्मणगृहंदग्ध्वामृतंचोद्बंधनादिना
पाशंछित्वातथातस्यकृच्छ्रमेकंचरेद्द्विजः २७
चांडालपुल्कसानांचभुक्त्वागत्वाचयोषितं
कृच्छ्राब्दमाचरेत्ज्ञानादज्ञानादैंदवद्वयं २८
कपालिकान्नभोक्तृणांतन्नारीगामिनांतथा
कृच्छ्राब्दमाचरेत्ज्ञानादज्ञानादैंदवद्वयं २९
अगम्यागमनेविप्रोमद्यगोमांसभक्षणे
तप्तकृच्छ्रपरिक्षिप्तोमौर्वीहोमेनशुद्ध्यति ३०
महापातककर्तारश्चत्वारोथविशेषतः
अग्निंप्रविश्यशुद्ध्यंतिस्थित्वावामहतिक्रतौ ३१

गौ और ब्राह्मण के घर को जो जला दे और फांसी लगाकर जो मरा हो उसको जो द्विज जलावे अथवा उसकी फांसीका छेदन करे तो वह द्विज एक कृच्छ्रव्रत करे २७

चांडाल—वा पुल्कस (चांडालकाभेद) के यहां ज्ञान बूझकर खाकर अथवा इनकी स्त्रियों का संग करके एक वर्ष तक कृच्छ्र करै और अज्ञान सेभोजन करे तो दो इंदुकृच्छ्रकरै २८

ज्ञान से कापालिकों का अन्न खाने वाले अथवा उनकी स्त्रियों को भोगनेवाले एक वर्ष तककृच्छ्र करैं और अज्ञान से दो इंदु कृच्छ्रकरैं २९

गमन के अयोग्य स्त्री के संग गमन करने पर और मदिरा और गो मांस के भक्षण करने पर तप्त कृच्छ्रकरके मौर्वी (सूत्र) के होम से ब्राह्मण शुद्ध होता है ३०

चारों महा पातक करनेवाले विशेष करतो अग्नि में प्रवेश करके अथवा बड़ी यज्ञ (अश्वमेध आदि) में टिककर शुद्ध होते हैं ३१

रहस्यकरणेप्येवंमासमभ्यस्यपूरुषः
अघमर्षणसूक्तंवाशुद्ध्येदंतर्जलेस्थितः ३२
रजकश्चर्मकश्चैवनटोबुरुडएवच
कैवर्त्तमेदभिल्लाश्चसप्तैतेअन्त्यजाःस्मृताः ३३
भुक्त्वाचैषांस्त्रियोगत्वापीत्वापःप्रतिगृह्यच
कृच्छ्राब्दमाचरेत्ज्ञानादज्ञानादैंदवद्वयं ३४
मातरंगुरुपत्नींचस्वसृंदुहितरंस्नुषां
गत्वैताःप्रविशेदग्निंनान्याशुद्धिर्विधीयते ३५
राज्ञींप्रव्रजितांधात्रींतथावर्णोत्तमामपि
कृच्छ्रद्वयंप्रकुर्वीतसगोत्रामभिगम्यच ३६
अन्यासुपितृगोत्रासुमातृगोत्रगतास्वपि

रहस्य (छिपकर) में भी इस रीति के पातक करनेवाला पुरुष अघमर्षण (ऋतंचसत्यंइत्यादि) सूक्त का महीना भर जलमें बैठ कर जप करै ३२
रजक—चमार—नट—बुरड—कैवर्त—मेद—भील—ये सात अंत्यज कहे हैं ३३
इनके यहां भोजन—इनकी स्त्रियों के संग गमन—इनके घरका जल पान—ज्ञान से करके अथवा इनसे दान लेकर एक वर्ष भर कृच्छ्रकरै और अज्ञान से दो इंदुकृच्छ्रकरै ३४
माता—गुरुकीस्त्री—भगिनी (बहिन)—लडकी—लड़के की स्त्री इनके संग गमन करके अग्नि में प्रवेश करे (मर जाय) अन्य शुद्धि नहीं है ३५
राणी—सन्यासिनी—धाय—और उत्तम वर्ण की स्त्री और अपने गोत्र की स्त्री इनके संग गमन करके दो कृच्छ्रकरै ३६
इतर जो सब माता और पिता के गोत्र की स्त्री है अथवा

परदारेषुसर्वेषुकृच्छ्रं सांतपनंचरेत् ३७
वेश्याभिगमनेपापंव्यपोहंतिद्विजातयः
पीत्वासकृत्सुतप्तंचपंचरात्रंकुशोदकं ३८
गुरुतल्पव्रतंकेचित्केचिद्ब्रह्महणोव्रतं
गोघ्नस्यकेचिदिच्छंतिकेचिच्चैवावकीर्णिनः ३९
दंडादूर्ध्वप्रहारेणयस्तुगांविनिपातयेत्
द्विगुणंगोव्रतंतस्यप्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ४०
अंगुष्ठमात्रस्थूलस्तुबाहुमात्रप्रमाणकः
सार्द्रश्चसपलाशश्चगोदंडःपरिकीर्तितः ४१
गवांनिपातनेचैवगर्भोपिसंपतेद्यदि
एकैकशश्चरेत्कृच्छ्रं यथापूर्वंतथापुनः ४२

पर की स्त्री,इन सब के संग गमन करके सांत पन कृच्छ्र करै ३७
वेश्या के संग गमन करने के पाप को तीनों द्विजाति अत्यन्त तपे हुए कुशा के जलको पांच रात तक प्रतिदिन एक वार पीकर दूर करते हैं ३८
कितने ऋषि गुरु की शय्याके गमनका जो प्रायश्चित उसको,और कोई ऋषि ब्रह्म हत्या के व्रत को—कोई गोहत्या के व्रतको, और कोई अवकीर्णी (जो ब्रह्मचर्यसे पतित हो) के व्रत को, इच्छा करते हैं अर्थात् वेश्या गामी पुरुष इनमें से कोई व्रत करै ३९
दंडकेप्रहारसेजोगौकोमारेउसेगोहत्याकादूनाप्रायश्चित्त वतावे ४०
अंगूठे के समान मोटा और दो हाथका जिसका प्रमाण हो ऐसा जो गीला और पत्तों समेत दंड उसे गोदंड कहते हैं ४१
गौओं के मारने से जो गर्भ भी गिर जाय तो तीनों द्विजाति क्रम से एक२ कृच्छ्र करै ४२

पादमुत्पन्नमात्रेतुद्वौपादौगात्रसंभवे
पादोनंकृच्छ्रमाचष्टेहत्वागर्भमचेतनं ४३
अंगप्रत्यंगसंपूर्णेगर्भे रेतःसमन्विते
एकैकशश्चरेत्कृच्छ्रमेषागोघ्नस्यनिष्कृतिः ४४
बंधनेरोधनेचैवपोषणेवागवांरुजा
संपद्यतेचेन्मरणंनिमित्तीनैवलिप्यते ४५
मूर्छितःपतितोवापिदंडेनाभिहतस्तथा
उत्थायषट्पदंगच्छेत्सप्तपंचदशापिवा ४६
ग्रासंवायदिगृह्णीयात्तोयंवापिपिबेद्यदि
पूर्वंव्याधिप्रणष्टानांप्रायश्चित्तंनविद्यते ४७

गर्भ होने पर ही जो गर्भ पात होजाय तो चौथाईकृच्छ्र और गर्भ की देह बने पर जो पात होयतो दोकृच्छ्र और अचेतन गर्भ का पात होजाय तो पौन कृच्छ्र करै। ४३

अंग (हाथ आदि)--प्रत्यंग (नखरोम आदि) से पूरे और वीर्य समेत गर्भ के नाशसे तीनों वर्ण एक २ कृच्छ्र करैं, और गोहत्यारे का प्रायश्चित्त यह है कि ४४

बांधने, रोकने, पोषण करने, से रोग हो कर यदि गौ मरजाय तो निमित्ती (बांधना आदि करने वाला) पाप से लिप्तनहीं होता ४५

मूर्छाको प्राप्त हुई, अथवा गिरी हुई--दंड से ताडी हुई, गौ यदि उठ कर छः--सात--पांच अथवा दश पैर जल दे ४६

अथवा ग्रास को खाले वा जल पीले, और पूर्व व्याधि से प्रणष्ट (मरी हुई) गौओं का पुरुषों को प्रायश्चित्त नहीं है ४७

काष्ठलोष्ठाश्मभिर्गावःशस्त्रैर्वानिहतायदि
प्रायश्चितंकथंतत्रशस्त्रेशस्त्रेनिगद्यते ४८
काष्ठेसांतपनंकुर्यात्प्राजापत्यंतुलोष्ठके
तप्तकृच्छ्रं तुपाषाणेशस्त्रेचाप्यतिकृच्छ्रकं ४९
औषधंस्नेहमाहारंदद्यादगोब्राम्हणेषुच
दीयमानेविपत्तिःस्यात्प्रायश्चित्तं नविद्यते ५०
तैलभैषजपानेचभेषजानांचभक्षणे
निःशल्यकरणेचैवप्रायश्चित्तं नविद्यते ५१
वत्सानांकंठबंधेचक्रिययाभेषजेनतु
सायंसंगोपनार्थंचनदोषोरोधबंधयोः ५२
पादेचैवास्यरोमाणिद्विपादेश्मश्रुकेवलम्

काठ—डेला—पत्थर—वा शस्त्र से यदि गौ को मारे तो वहां शस्त्र२ के प्रति कैसे प्रायश्चित्त कहा है ४८

काठ से मारने पर सांत पन—डेले से प्राजापत्य—पत्थर से तप्तकृच्छ्र,और शस्त्र से अतिकृच्छ्र करे ४९

गौ और ब्राह्मण को औषध—स्नेह (घी आदि) पिलाते समय वा भोजन देते समय—यदि विपत्ति (मरण वा कष्ट) होजाय तो प्रायश्चित्त नहीं ५०

तैल अथवा औषध पिलाने—और औषध खिलाने—अथवा शल्य (कांटा आदि नि कासने)—के समय गौ को जो कष्ट होता है उसका भी प्रायश्चित्त नहीं ५१

बछड़ों के गला बांध ने में औषध के देनेमें और रक्षा के लिये संध्या को रोकने और बांधने में मरने पर दोष नहीं है ५२

चौथाई कृच्छ्र में रोमों का,और अर्द्ध कृच्छ्रमें श्मश्रु (डाढी) क

त्रिपादेतुशिखावर्जंमूलेसर्वंसमाचरेत् ५३
सर्वान्केशान्समुद्धृत्यछेदयेदंगुलद्वयं
एवमेवतुनारीणांमुंडमुंडायनंस्मृतं ५४
नस्त्रियावपनंकार्यंनचवीरासनंस्मृतं
नचगोष्ठेनिवासोस्तिनगच्छंतीमनुव्रजेत् ५५
राजावाराजपुत्रोवाब्राह्मणोवाबहुश्रुतः
अकृत्वावपनंतेषांप्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ५६
केशानांरक्षणार्थंचद्विगुणंव्रतमादिशेत्
द्विगुणेतुव्रतेचीर्णेद्विगुणैवतुदक्षिणा ५७
द्विगुणंचेन्नदत्तं हिकेशांश्चपरिरक्षयेत्
पापंनक्षीयतेहंतुर्दाताचनरकंव्रजेत् ५८

और पौन कृच्छ्र चोटी के विना—मूल (पूरा) कृच्छ्र में चोटी सहित सब केशोंका मुंडन पुरुष का करै ५३

स्त्रियों का मुंडन और मुंडवाना यह कहा है कि सब केशों को उपर को उभार कर दो२ अंगुल काटदे ५४

क्योंकि स्त्रियोंका मुंडन, और वीरासन से बैठना—और गोशाला में वास नहीं है और चलती गौके पीछे भी स्त्री न चले ५५

राजा अथवा राजाका पुत्र अथवा बहुश्रुत (बहुत शास्त्रोंके देखने वाला ब्राह्मण) स्त्रियों के मुंडन को नहीं कराकर—यह प्रायश्चित्त बतावे कि ५६

स्त्रियोंके केशों की रक्षाके अर्थ दूना व्रत करावे और दूने व्रत कराने पर दूनीही दक्षिणा दे ५७

दूनी दक्षिणा दिये विना यदि केशों की रक्षा करै तो मारने वाले का पाप नष्ट नहीं होता और दाता नरक में जाता है ५८

अश्रौतस्मार्तविहितंप्रायश्चित्तंवदंतिये
तान्धर्मविघ्नकर्तृंश्चराजादंडेनपीडयेत् ५६
नचेत्तान्पीडयेद्राजाकथंचित्काममोहितः
तत्पापंशतधाभूत्वातमेवपरिसर्पति ६०
प्रायश्चित्तेततश्चीर्णेकुर्याद्ब्राह्मणभोजनम्
विंशतिंगांवृषंचैकंदद्यात्तेषांचदक्षिणां ६१
कृमिभिर्व्रणसंभूतैर्मक्षिकाभिश्चपातितैः
कृच्छ्रार्द्धंसंप्रकुर्वीतशक्त्यादद्याच्चदक्षिणां ६२
प्रायश्चित्तंचकृत्वावैभोजयित्वाद्विजोत्तमान्
सुवर्णमाषकंदद्यात्ततःशुद्धिर्विधीयते ६३
चंडालश्वपचैःस्पृष्टेनिशिस्नानंविधीयते

वेद और धर्म शास्त्र में जो प्रायश्चित नहीं कहा है उसको जो पुरुष वतावें धर्ममें विघ्न करने वाले उन पुरुषों को राजा दंड से पीडा दे ५९

यदि राजा अपनी इच्छा से मोहवश होकर उनको पीडा (दुख) न दे तो वह पाप सौगुना होकर उस राजा को लगता है ६०

फिर प्रायश्चित्त करने पर राजा वीस२० ब्राह्मणों को जिमावे और एक२ गौ और वैल उन ब्राह्मणों को दक्षिणा दे ६१

यदि किसी मनुष्य के शरीर में मक्खी वैठने से घावमें कीडे पड जांय तो अर्द्ध कृच्छ्र प्रायश्चित्त करै और यथाशक्ति दक्षिणा भी दे ६२

प्रायश्चित्त करके और ब्राह्मणों को जिमाकर एक मासा सोना दें फिर शुद्धि होती है ६३

चांडाल अथवा श्वपच रातमें यदि छूलें तो स्नान करना चाहिये

नवसेत्तत्ररात्रौतुसद्यःस्नानेनशुद्ध्यति ६४
अथवसेद्यदारात्रौअज्ञानादविचक्षणः
तदातस्यतुतत्पापंशतधापरिवर्त्तते ६५
उदगच्छंतिहिनक्षत्राण्युपरिष्टाच्चयेग्रहाः
संस्पृष्टेरश्मिभिस्तेषामुदकेस्नानमाचरेत् ६६
कुड्यांतर्जलवल्मीकमूषिकोत्करवर्त्मसु
श्मशानेशौचशेषेचनग्राह्याःसप्तमृत्तिकाः ६७
इष्टापूर्त्तंतुकर्त्तव्यंब्राह्मणेनप्रयत्नतः
इष्टेनलभतेस्वर्गंपूर्त्तेमोक्षंसमश्नुते ६८
वित्तापेक्षंभवेदिष्टतडागंपूर्त्तमुच्यते
आरामश्चविशेषेणदेवद्रोण्यस्तथैवच ६९

और वहां रात में न वसे और शीघ्र स्नान करै ६४
जो मूर्खरात्रि को अज्ञान से वसे तो उस समय वह पाप सौ गुना उसको लगता है ६५
जो तारे वाग्रह टूटते हुए ऊपर को जाते हैं उन तारों अथवा ग्रहों की किरणों से स्पर्श होजाय तो जलमें स्नान करै ६६
भींतके भीतर की—जलके मध्य की—वामीकी—मूसों की खोदी—मार्ग की—श्मशान की— शौच की वची हुई,इन सात स्थानोंकीमट्टी ग्रहण करने योग्य नहीं हैं ६७
इष्ट (यज्ञ आदि)पूर्त्त(कूप आदि) ब्राह्मण को वड़े यत्न से करने इष्टसे स्वर्ग और पूर्त्त से मोक्ष मिलता है ६८
इष्ट द्रव्यके अनुसार होता है अर्थात् उसके अनेक भेद हैं और तालाव और विशेष कर वाग और देव द्रोणी (तीर्थ वा प्याउ) इन्हें पूर्त्त कहते हैं६९

वापीकूपतडागानिदेवतायतनानिच
पतितान्युद्धरेद्यस्तुसपूर्तफलमश्नुते ७०
शुक्लायामूत्रंगृह्णीयात्कृष्णायागोःशकृत्तथा
ताम्रायाश्चपयोग्राह्यं श्वेतायादधिचोच्यते ७१
कपिलाया घृतंग्राह्यं महापातकनाशनं
सर्वतीर्थेनदीतोयेकुशैर्द्रव्यंपृथक्पृथक् ७२
आहृत्यप्रणवेनैवउत्थाप्यप्रणवेनच
प्रणवेनसमालोड्यप्रणवेनतुसंपिबेत् ७३
पलाशेमध्यमेपर्णेभांडेताम्रमयेतथा
पिबेत्पुष्करपर्णेवाताम्रे वामृन्मयेशुभे ७४
सूतकेतुसमुत्पन्नेद्वितीयेसमुपस्थिते

बावडी—कूप—तालाव—देवमंदिर—इतने यदि पतित टूटे फूटे) हों और इनका जो उद्धार (मरम्मत) करने वाला है वह भी पूर्त के फल (मोक्ष) को भोगता है ७०

सपेद गौका मूत्र—कालीका गोवर—लालका दूध—सपेद की दही ७२

और कपिला का घी—ले तो यह पंचगव्य महापातकों को नष्ट करता है—सब तीर्थों में वा नदीके जलमें इन गोमूत्र आदि द्रव्योंको पृथक्२ कुशाओं से ७२

ॐकारको पढकर इकट्ठा करै और ॐकार को पढकर पीवे ७३

ढाकके वीचके पत्तेमें वा तांवेके पात्र में वा कलम के पत्ते में अथवा लाल मिट्टीके पात्रमें उस पंचगव्य को पीवे ७४

एक सूतकके होनेपर यदि दूसरा सूतक होजाय तो दूसरे

द्वितीयेनास्तिदोषस्तुप्रथमेनैवशुध्यति ७५
जातेनशुध्यतेजातंमृतेनमृतकंतथा
गर्भसंस्रवणेमासेत्रीण्यहानिविनिर्दिशेत् ७६
रात्रिभिर्मासतुल्याभिर्गर्भस्रावेविशुध्यति
रजस्युपरतेसाध्वीस्नानेनस्त्रीरजस्वला ७७
स्वगोत्राद्भ्रश्यतेनारीविवाहात्सप्तमेपदे
स्वामिगोत्रेणकर्तव्यातस्याःपिंडोदकक्रिया ७८
द्वेपितुःपिंडदानंस्यात्पिंडेपिंडेद्विनामता
षण्णांदेयास्त्रयःपिंडाएवंदातानमुह्यति ७९
स्वेनभर्त्रासहश्राद्धंमाताभुंक्त्वासदैवतम्

सूतकका दोष नहीं होता पहिलेके संग वहभी शुद्ध होजाताहै ७५
जन्म सूतक के संग जन्म सूतक की और मृतक सूतक के संग मृतक सूतक की शुद्धि होती है महीनेके गर्भ पातमें तीन दिन का अशौच होता है ७६
जितने महीने का गर्भपात हो उतनी ही रात्रियों में शुद्धि होती है—और रजकी निवृत्ति हुये पर सुपात्र रजस्वला स्त्री स्नान से शुद्ध होती है ७७
स्त्री विवाह होने पर और सप्तपदी किये पीछे अपने (मा बाप के) गोत्रसे अलग होजाती है पतिके गोत्रसे ही उसका पिंड और जलदान आदि कर्म करना ७८
पिता को दो पिंडदे और प्रत्येक पिंडमें दो नाम (सपत्नीक) आते हैं छःको तीन पिंड देने, ऐसे करने से पिंडों का दाता मोहित नहीं होता ७९
माता और पिता मही (दादी) और प्रपिता मही (पड़दादी) ये

पितामह्यपिस्वेनैवस्वेनैवप्रपितामही ८०
वर्षेवर्षेतुकुर्वीतमातापित्रोस्तुसत्कृतिं
अदैवंभोजयेच्छ्राद्धंपिंडमेकंतुनिर्वपेत् ८१
नित्यं नैमित्तिकंकाम्यंवृद्धिश्राद्धमथापरं
पार्वणंचेतिविज्ञेयंश्राद्ध पंचविधंबुधैः ८२
ग्रहोपरागेसंक्रांतौपर्वोत्सवमहालयोः
निर्वपेत्त्रीन्नरःपिंडानेकमेवमृतेहनि ८३
अनूढानपृथक्कन्यापिंडेगोत्रेचसूतके
पाणिग्रहणमंत्राभ्यांस्वगोत्राद्भ्रश्यतेततः ८४
येनयेनतुवर्णेनयाकन्यापरिणीयते
तत्समंसूतकंयातितथापिंडोदकेपिच ८५

तीनों अपने पतियों के संग देवता (विश्वे देवा) समेत श्राद्धको भोगती है ८०
वर्ष२ में (प्रतिवर्ष) माता और पिता का सत्कार (श्राद्ध) करै देवता (वश्वे देवा) के विना श्राद्ध जिमावे और एक पिंड दे ८१
नित्य नैमित्तक काम्य—वृद्धि श्राद्ध, और पार्वण यह पांच प्रकार का पंडितों को श्राद्ध जानना ८२
ग्रहण—संक्रांति—पर्व—उत्सव—महालय(कनागत) इनमें मनुष्य तीन पिंड दे और जिस दिन माता पिता आदि मरेहों उस दिन एक ही पिंड दे ८३
विना विवाही कन्या पिंड—गोत्र—और सूतक में अलग नहीं है फिर विवाह के मंत्रों से अपने गोत्र से अलग हो जाती है ८४
जिस २ वर्ण के पुरुषके संग कन्या का विवाहहोउसी वर्ण के समान सूतक और पिंड वा जल दान को प्राप्त होती है ८५

विवाहेचैवसंवृत्ते चतुर्थेहनिरात्रिषु
एकत्वंसाव्रजेद्भर्तुःपिंडेगोत्रेचसूतके ८६
प्रथमेन्हिद्वितीयेवातृतीयेवाचतुर्थके
अस्थिसंचयनंकार्यंबंधुभिर्हितबुद्धिभि : ८७
चतुर्थेपंचमेचैवसप्तमेनवमेतथा
अस्थिसंचयनंप्रोक्तंवर्णानामनुपूर्वश : ८८
एकादशाहेप्रेतस्ययस्यचोत्सृज्यतेवृष :
मुच्यतेप्रेतलोकात्सःस्वर्गलोकेमहीयते ८९
नाभिमात्रेजलेस्थित्वाहृदयेनानुचिंतयेत्
आगच्छंतुमेपितरोगृह्णंत्वेतान्जलांजलीन् ९०
हस्तौकृत्वातुसंयुक्तौपूरयित्वाजलेनच

विवाह हुये पीछे वह कन्या चौथे दिन अथवा रात्रि में पिंड—गोत्र और सूतकमें पति की एकता को प्राप्त होती है अर्थात् जिस वर्णके पतिके संग विवाह हो उसी वर्णके अनुसार उसके पिंड आदि होते हैं८६

पहिले—दूसरे—तीसरे—अथवा चोथे दिन हितकारी बन्धु अस्थि संचय करैं (फूल चुगें) ८७

चौथे—पांचमें—सांतमें—नवमें दिन क्रमसे ब्राह्मण४—क्षत्रिय५—वैश्य७—शूद्र९—को अस्थि संचय करना कहा है ८८

जिस मरके ग्यारवें दिन वृषोत्सर्ग किया जाताहै वह प्रेत,प्रेत लोक में नहीं जाता और स्वर्गलोक में पूजाको प्राप्त होता है ८९

नाभि (टूंडी) तक जलमें धंसकर और मनसे यह चिंता (स्मरण) करे कि मेरे पितर आवें और जलकी अंजली ग्रहण करें ९०

दोनों हाथ मिलाकर और जल से भरकर गौके सींगके प्रमाण

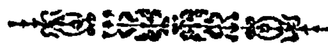
गोश्रृंगमात्रमुद्धृत्यजलमध्येजलंक्षिपेत् ६२
आकाशेचक्षिपेद्वारिवारिस्थोदक्षिणामुखः
पितृणांस्थानमाकाशंदक्षिणादिक्तथैवच ६२
आपोदेवगणाःप्रोक्ताआपःपितृगणास्तथा
तस्माद‍प्सुजलंदेयंपितृणांहितमिच्छता ६३
दिवासूर्यांशुभिस्तप्तंरात्रौनक्षत्रमारुतैः
संध्यायोरप्युभाभ्यांचपवित्रंसर्वदाजलं ६४
स्वभावयुक्तमव्याप्तममेध्येनसदाशुचिः
भांडस्थंधरणीस्थंवापवित्रंसर्वदाजलं ६५
देवतानांपितृणांचजलेदद्याज्जलांजलीन्
असंस्कृतप्रणीतानांस्थलेदद्याज्जलांजलीन् ६६

हाथ ऊंचा उठा कर जल के वीच में जल को फेंकदे ६१
दक्षिण दिशामें मुख को कर जल में खड़ाहुआ पुरुष आकाश में जल को फेंके क्यों कि आकाश और दक्षिण दिशा ये दोनों पितरों का स्थान हैं ६२
देवता और पितरों के जोगण वेजल रूप ही हैं तिस से जोपितरों के हित की इच्छा करै वह जल में ही जल दे (तर्पण करे) ६३
दिन में सूर्य की किरणों के तपने से—और रात में नक्षत्र और पवन से और सध्याके समयइनदोनोंसे जल सदा पवित्र हैं ६४
अपवित्र वस्तु जिस में न मिली हो ऐसा स्वाभाविक जल सदा पवित्र है पात्रका हो अथवा भूमि पर का हो जल सदा पवित्र है ६५
देवता और पितरों को तो जलमें जल की अंजली दे और जोसंस्कार (यज्ञो पवीत) से पहिले मरगये हैं उन को स्थलमें दे ६६

श्राद्धेहवनकालेचदद्यादेकेनपाणिना
उभाभ्यांतर्पणेदद्यादितिधर्मोव्यवस्थित: ९७
इतियमप्रणीतंधर्मशास्त्रंसमाप्तम्

श्राद्ध और होम के समय एक हाथ से अंजली दे और तर्पण में दोनों हाथों से यह धर्म की व्यवस्था है ९७

इति यमप्रणीतं धर्म शास्त्रं समाप्तम्



अथआपस्तंबधर्मशास्त्रप्रारंभ:
आपस्तंबंप्रवक्ष्यामिप्रायश्चित्तविनिर्णयं
दूषितानांहितार्थायवर्णानामनुपूर्वश: १
परेषांपरिवादेषुनिवृत्तमृषिसत्तमं
विविक्तदेशआसीनमात्मविद्यापरायणं २
अनन्यमनसंशांतंतत्वस्थंयोगवित्तमं
आपस्तंबमृषिंसर्वसमेत्यमुनयोब्रुवन् ३

वर्णोंके क्रमसे पापियों के हितके अर्थ आपस्तंब ऋषिके कहे प्रायश्चित्त के विशेष निर्णय को कहता हुं १

पराई निंदा से रहि, तऔर ऋषियों में उत्तम और एकांत में बेठे, और ब्रह्मज्ञान में तत्पर २

और एकाग्रहै मन जिनका—और शांतरूप—और तत्व में टिके, और अत्यंत योगके जानने वाले, आपस्तंब ऋषिको इकट्ठे हो कर संपूर्ण मुनि बोले ३

भगवन्मानवाःसर्वेअसन्मार्गेस्थितायदा
चरेयुर्धर्मकार्याणितेषांब्रूहिविनिष्कृतिं ४
यतोऽवश्यंगृहस्थेनगवादिपरिपालनम्
कृषिकर्मादिवपनंद्विजामंत्रणमेवच ५
बालानांस्तन्यपानादिकार्यंचपरिपालनं
देयंचानाथकेवश्यंविप्रादीनांचभेषजं ६
एवंकृतेकथंचित्स्यात्प्रमादोयद्यकामतः
गवादीनांततोस्माकंभगवन्ब्रूहिनिष्कृतिं ७
एवमुक्तःक्षणंध्यात्वाप्रणिपातादधोमुखः
दृष्ट्वाऋषीनुवाचेदमापस्तंबःसुनिश्चितं ८

हे भगवन् जब सब मनुष्य अधर्म में टिककर धर्मके काम करें उनका प्रायश्चित्त कहो ४
जिससे गृहस्थी को अवश्य गौ आदिका पालन—कृषि आदि कर्म—अन्नका बोना—ब्राह्मणों का भोजन ५
और बालकों को स्तन्य (दूध) पिलाना आदि—और बालकों को पालना—और अनाथ को अवश्य देना—और ब्राह्मण आदिकों की औषध—इतने कर्म अवश्य करने ६
इस प्रकार करने परभी यदि किसी प्रकार अज्ञानसे गौ आदिकों का प्रमाद (अपराध) होजाय तो हे भगवन् तिस से हमारा प्रायश्चित्त(पाप का शुद्धि)कहो ७
ऐसे पूछे, और नमस्कार से नीचे मुख—क्षणभर ध्यान करके और ऋषियों को देखकर आपस्तंव मुनि भली प्रकार निश्चित वचन बोले ८

बालानांस्तनपानादिकार्येदोषोनविद्यते
विपत्तावपिविप्राणामामंत्रणचिकित्सने ९
गवादीनांप्रवक्ष्यामिप्रायश्चित्तंतृणादिषु
केचिदाहुर्नदोषोऽत्रस्नेहेलवणभेषजे १०
औषधंलवणंचैवस्नेहंपुष्ट्यर्थभोजनं
प्राणिनांप्राणवृत्त्यर्थंप्रायश्चित्तंनविद्यते ११
अतिरिक्तं नदातव्यंकालेस्वल्पंतुदापयेत्
अतिरिक्तेविपन्नानांकृच्छ्रमेवविधीयते १२
अहर्निरशनंपादःपादश्चायाचितंत्र्यहं
सायंत्र्यहंतथापादःपादःप्रातस्तथात्र्यहं १३

बालकों के स्तन पान कराने, और ब्राह्मणोंके भोजन कराने, और औषध करनेमें यदिबिपत्ति(मरण)भी होजाय तो दोषनहीं है ९
गौ आदि के तृण आदि से मरनेमें प्रायश्चित्त की विधि करता हूं कितने क यह कहते हैं कि स्नेह (तेलआदि) लवण औषध में अर्थात् इनके देने से गौ मरजाय तो दोष नहीं १०
औषध—लवण—स्नेह—पुष्टिके लिये भोजन—ये यदि प्राणियों की वृत्ति(जीना)के लिये होंयतोइनसेमरनेमेंप्रायश्चित्तनहींहै ११
इससे भोजनके योग्यसे अधिक नदे किन्तुसमय (क्षुधाकाल) पर थोडा दे यदि अधिक देने पर कोई प्राणी मरजाय तो कृच्छ्र करना कहा है १२
तीन दिन भोजन न करना यह प्रथम पाद—और तीन दिन तक विना मांगे जो मिले उसे खाना यह दूसरा पाद—और तीन दिन संध्या को नहीं खाना यह तीसरा पाद—और तीन दिन तकप्रातःकालको नहींखानायहचौथापाद—कृच्छ्रका होता है १३

प्रातःसायंदिनार्द्धं चपादोनंसायवर्जितं
प्रातःपादंचरेच्छूद्रःसायंवैश्यस्यदापयेत्
अयाचितंतुराजन्येत्रिरात्रंब्राह्मणस्यच
पादमेकंचरेद्रोधेद्वौपादौबंधनेचरेत् १५
योजनेपादहीनंचचरेत्सर्वंनिपातने
घंटाभरणदोषेणगोस्तुयत्रविपद्भवेत् १६
चरेदर्द्धं व्रतंतत्रभूषणार्थंकृतंहितत्
दमनेवानिरोधेवासंघातेचैवयोजने १७
स्तंभश्रृंखलपाशैश्चमृतेपादोनमाचरेत्
पाषाणैर्लगुडैर्वापिशस्त्रेणान्येनवाबलात् १८

प्रातःकाल और सायंकाल को न खाना उसे दिनार्द्ध—और सायंकाल को छोडकर दिन में एक वार भोजन को पादोन—कहते हैं प्रायश्चित्त के विषय में शूद्र उक्त प्रातःपाद—और वैश्य सायं पाद को करैं १४

क्षत्रिय अयाचित—और ब्राह्मण त्रिरात्र करै—रोकने में जो गा को विपत्ति(मरण)होयतो एकपाद और बांधनेमें दोपादकरावे१५ योजन (जोडना वा कांजी होद आदि में कैद करना) में पादोन और निपातन (गिराना वा घायल करना) में संपूर्ण कृच्छ्र करावे गौके गले में घंटा बांधने से यदि गौको विपत् होजाय १६ तो दिनार्ध कृच्छ्र करावे क्योंकि वह भषण के लिये है—और दमन—रोकना—योजन के लिये काष्ठ घंटा(जो लकडा गौ गले में लटका करै है) बांधने से १७

और खूटा—सांकल—रस्सी—(गलफांस) से गौ मरजाय तो पादोन करै पत्थर और लट्ठ अथवा अन्य शस्त्रोंकर बल से १

निपातयंतियेपापास्तेषांसर्वविधीयते
प्राजापत्यं चरेद्विप्रःपादोनंक्षत्रियस्तथा १९
कृच्छार्द्धं तुचरेद्वैश्यःपादंशूद्रस्यदापयेत्
द्वौमासौपायसेद्वत्संद्वौमासौद्वौस्तनौदुहेत् २०
द्वौमासावेकवेलायांशेषकालंयथारुचि
दशरात्रार्द्ध मासेनगौस्तुयत्रविपद्यते २१
सशिखंवपनंकृत्वाप्राजापत्यंसमाचरेत्
हलमष्टगवंधर्म्यंषड्गवंजीवितार्थिनां २२
चतुर्गवंनृशंसानांद्विगवंहिंजिघांसिनां
अतिवाहातिदोहाभ्यांनासिकाभेदनेनवा २३
नदीपर्वतसंरोहेमृतेपादोनमाचरेत्

जो पापी पुरुष गौको मारें तो संपूर्ण कृच्छ्र करैं—ब्राह्मण प्राजा पत्य—क्षत्रिय पादोन करै १९

वैश्य कृच्छ्रार्द्ध, और शूद्र पाद कृच्छ्र करै—ब्याई गौका दूध दो महीने तक वछड़े को पिलावे और दो महीने दो थन दुहै २०

दो महीने एक समय में ही दुहै और शेष (वाकी) समय में अपनी रुचिके अनुसार दुहै ब्याने से दश वा पंद्रह दिन के भीतर यदि गौ मरजाय २१

तो शिखा समेत मुंडन कराकर प्राजा पत्य व्रत करै—आठ वैल का हल धर्म का, और छः वैल का हल अपने जीनेके लिये है २२

चार वैल का हल कठोरों का—और दो वैलों का हत्यारों का है—अत्यंत वोझ रखने से अथवा अत्यंत दुहने से अथवा नासिका के छेदन से २३

नदी में अथवा पर्वत के चढने पर यदि गौ मरजाय तो पादोन

ननारिकेलवालाभ्यांनमुंजेननचर्मणा २४
एभिर्गास्तुनबध्नीयाद्बध्वापरवशोभवेत्
कुशैःकाशैश्चबध्नीयाद्वृषभंदक्षिणामुखं २५
पादलग्नाहिदाहेषुप्रायश्चित्तंनविद्यते
व्यापन्नानांबहूनांतुरोधनेबंधनेपिच २६
भिषङ्मिथ्योपचारैश्चद्विगुणंगोव्रतंचरेत्
शृंगभंगेस्थिभंगेचलांगूलस्यचकर्तने २७
सप्तरात्रंपिबेद्वज्रंयावत्स्वस्थापुनर्भवेत्
गोमूत्रेणसंमिश्रंयावकंभक्षयेद्द्विजः २८
एतद्विमिश्रितंवज्रमुक्तंचोशनसास्वयं
देवद्रोण्यांविहारेषुकूपेष्वायतनेषुच २९

करे—नारीयल की रस्सी—वाल - मुंज—और चाम २४
इनसे गौओं को न वांधे क्योंकि इनसे वांधने से गौ पर वश
होती है किन्तु कुश और का शांसे दक्षिणदिशा के सन्मुख
वैलको वांधे २५
पादमें कंकर आदिके लगने से—सांपके काटने से और जलने
से गौके मरने में और वहुत गौओं के वांधने अथवा रोकने में
भी प्रायश्चित्त नहीं है २६
वैद्य की अन्यथा (कुछरोग की कुछ) चिकित्सा (इलाज) से
यदि गौ मरजाय तो गोहत्या का व्रत प्रायश्चित्त करै और सींगवा
हाड टूटजाय अथवा गौकी पूंछ कतरे २७
तो सात रात्र तक वज्र पीवे और इतने गौ स्वस्थ (अच्छीहो)
तव तक द्विज गोमत्र को मिलाकर जों भक्षण करै २८
यह विमिश्रित वज्र उशना ऋषिने स्वयं (अपने आप) कहा है
देवद्रोणी, (तीर्थ)विहार—कूपमें गिरने से २९

एषुगोषुविपन्नासुप्रायश्चित्तं नविद्यते
एकायदातुबहुभिर्दैवाद्व्यापादिताक्वचित् ३०
पादंपादंतुहत्यायाश्चरेयुस्तेपृथक्पृथक्
यंत्रणेवाचिकित्सार्थेमूढगर्भविमोचने ३१
यत्ने कृतेविपत्तिश्चेत्प्रायश्चित्तंनविद्यते
सरोमंप्रथमेपादेद्वितीयेश्मश्रुधारणं ३२
तृतीयेतुशिखाधार्यासशिखंतुनिपातने
सर्वान्केशान्समुद्धृत्यछेदयेदंगुलद्वयं ३३
एवमेवतुनारीणांशिरसोमुंडनंस्मृतं
इत्यापस्तंबीयेधर्मशास्त्रेप्रथमोऽध्यायः १
उच्छिष्टमशुचित्वंवंयच्चविष्टानुलेपने

इतनी जगे जो गौ मरजाय तो प्रायश्चित्त नहीं है—यदि कभी एक गौ को बहुत मनुष्य मारदें ३०
तो वे सब गोहत्या का पाद२ पृथक२ प्रायश्चित्त करैं—यंत्रण (बांधना)अथवा चिकित्साके लिये मूढ(मरे)गर्भकेनिकासनेमें३१
यदि यत्न करने परभी विपत्ति (दुःख वा मरण) होजाय तो प्रायश्चित्त नहीं है—प्रथम पाद प्रायश्चित्त में रोमों का,और द्विपाद प्रायश्चित्त में श्मश्रु (डाढी) को छोडकर ३२
और तृतीय पादमें शिखा (चोटी) रखनी और शिरका मुंडन है और गौके निपातन (मारने) में शिखा समेत पुरुष का मुंडन कहा है—और सब केशों को ऊपर को उभार कर दो दो अंगुल काटदे ३३
यह स्त्रियों के केशोंका मुंडन कहा है—इत्यापस्तंबे १ अध्यायः
कारीगर के हाथ की वस्तु—और वेचने योग्य—और जो पात्र

कारुहस्तगतंपण्यंयच्चपात्राद्विनिःसृतं
स्त्रीबालवृद्धचरितंसर्वमेतच्छुचिस्मृतं १
प्रपास्वरण्येषुजलेषुवैगिरौद्रोण्यांजलंकेशविनिःसृतंच
श्वपाकचांडालपरिग्रहेषुपीत्वाजलंपंचगव्येनशुद्धिः २
नदुष्येत्संतताधारावातोद्धूताश्चरेणवः
स्त्रियोवृद्धाश्चबालाश्चनदुष्यंतिकदाचन ३
आत्माशय्याचवस्त्रंचजायापत्यंकमंडलुः
आत्मनःशुचीन्येतानिपरेषामशुचीनितु ४
अन्यैस्तुखानिताःकूपास्तडागानितथैवच
एषुस्नात्वाचपीत्वाचपंचगव्येनशुद्ध्यति ५
सर्वंशुद्ध्यतितोयेनतोयस्केनशुद्ध्यति ६

से वाहर निकासली हो—स्त्री, वाल—वृद्ध—इनका आचरण, यह सब शुद्ध कहा है १
प्रपा (प्याउ) वनका जल—पर्वतका—द्रोणी (डेंगी वा मशक) का केशोंका निचडा हुआ और श्वपाक और चांडाल के घरका जल पीकर पंचगव्य से शुद्धि होती है २
निरंतर पडती जलकी धारा और पवन की उडाई धूल और स्त्री वृद्ध और वालक इतनी वस्तु कभी भी दूषित (अशुद्ध) नहीं होती ३
शय्या—वस्त्र—स्त्री—संतान—पात्र—ये अपने ही शुद्ध होते हैं और इतर मनुष्यों के कभी भी शुद्ध नहीं होते ४
इतर (और) के खुदवाये जो कूप अथवा तालाव हैं उनमें स्नान करके पंचगव्य पीने से शुद्धि होती है ५
उच्छिष्ट—अशुद्ध—और मल जिसमें लगा हो ये सब जल से शुद्ध होते हैं और वह जल किससे शुद्ध होता है ६

सूर्यरश्मिनिपातेनमारुतस्पर्शनेनच
गवांमूत्रपुरीषेणतत्तोयंतेनशुद्ध्यति ७
अस्थिचर्मादियुक्तंतुखरश्वानोपदूषितं
उद्धरेदुदकंसर्वंशोधनंपरिमार्जनम् ८
कूपोमूत्रपुरीषेणयवनेनाभिदूषितः
श्वशृगालखरोष्ट्रैश्चक्रव्यादैश्चजुगुप्सितः ९
उद्धृत्यैवचतत्तोयंसप्तपिंडान्समुद्धरेत्
पंचगव्यंमृदापूतंकूपेतच्छोधनंस्मृतं १०
वापीकूपतडागानांदूषितानांचशोधनं
कुंभानांशतमुद्धृत्यपंचगव्यंततःक्षिपेत् ११
यच्चकूपात्पिबेत्तोयंब्राह्मणःशवदूषितात्

सूर्य की किरणों के पड़ने से और पवनके लगने से और गौओं के मूत्र और गोवर से वह जल शुद्ध होता है ७
जिसे जलके पात्रमें हाड—वा चाम पडा हो अथवा गधा कुत्ता इनसे अपवित्र हो उसपात्र के सवजलको निकासले और पात्र को अच्छी तरे मांजे ८
मत्र—विष्ठा इनके पडने से और यवन के जलभरने से—कुत्ता गीदड गधा ऊंट और मांसके खाने वालों से कूपभी दूषित (अशुद्ध) होजाता है ९
उस कूपके जलको निकास कर सात मिट्टीके पिंड (डले) कूपमें से निकासे और पंचगव्य और पवित्र मिट्टी उसमें डालदे यह कुएका शोधन कहा है १०
वावडी—कूप—तालाव ये यदि अपवित्र होजांय तो सौ १०० घटजल निकास कर पंचगव्य डालदे ११
जो ब्राह्मण शव (मुर्दा) से अशुद्ध कुएके जलको पीले तव शुद्धि

कथंतत्रविशुद्धिःस्यादितिमेशंसयोभवेत् १२
अक्लिन्ने नचभिन्ने नकेवलंशवदूषिते
पीत्वाकूपादहोरात्रंपंचगव्येनशुद्ध्यति १३
क्लिन्नेभिन्नेशवेचैवतत्रस्थंयदितत्पिबेत् १४
शुद्धिश्चांद्रायणंतस्यतप्तकृच्छ्रमथापिवा
इत्यापस्तंबीयेद्वितीयोऽध्यायः २
अंत्यजातिरविज्ञातोनिवसेद्यस्यवेश्मनि
तस्यज्ञात्वातुकालेनद्विजाःकुर्वंत्यनुग्रहम् १
चांद्रायणंपराकोवाद्विजातीनांविशोधनं
प्राजापत्यंतुशूद्रस्यशेषंतदनुसारतः २
यैर्भुक्तंतत्रपक्वान्नंकृच्छ्रंतेषांप्रदापयेत्

कैसे हो यदि यह संदेह मुझे होय तो १२
अक्लिन्न (रुधिर से भीगा नहो) भिन्न (जिसका कोई अंग टूटा हो) शवसे कूप अशुद्ध हो उस कुएके जलको पीकर अहोरात्र उपवास करके पंचगव्य से शुद्ध होता है १३
यदि क्लिन्न रुधिर से भीगा और टूटे अंग वाला शव जिस कूप में पडा हो और उसके जलको पीले तो चांद्रायण अथवा तप्त कृच्छ्र से शुद्धि होती है १४
बिना जाना अंत्यजाति जिस मनुष्य के घरमें वसे और फिर वह जानपडे तो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य उस अंत्यज पर दया करैं अर्थात् दंड नदें १
और द्विजाति चांद्रायण अथवा पराक व्रत करैं और शूद्र प्राजापत्य और शेष जाति (सूत आदि) अपनी२ जातिके अनुसार प्रायश्चित्त करैं २
और जिन्होंने वहां पक्वान्न खाया हो उनको कृच्छ्र व्रत देना

तेषामपिचयैर्भुक्तंकृच्छ्रपादंप्रदापयेत् ३
कूपैकपानैर्दुष्टानांस्पर्शसंसर्गदूषणात्
तेषामेकोपवासेनपंचगव्येनशोधनम् ४
बालोवृद्धस्तथारोगीगर्भिणीवायुपीडिता
तेषांनक्तंप्रदातव्यंबालानांप्रहरद्वयं ५
अशीतिर्यस्यवर्षाणिबालोवाप्यूनषोडशः
प्रायश्चित्तार्द्धमर्हंतिस्त्रियोव्याधितएवच ६
न्यूनैकादशवर्षस्यपंचवर्षाधिकस्यच
चरेद्गुरुःसुहृद्वापिप्रायश्चित्तंविशोधनं ७
अथैतैःक्रियमाणेषुयेषामार्तिःप्रदृश्यते
शेषसंपादनाच्छुद्धिर्विपत्तिर्नभवेद्यथा ८

चाहिये औ वहां पक्कान्न खाने वालों का जिन्होंने खाया हो उनको कृच्छ्र पाद दें ३
स्पर्श और समागम(यवनकास्पर्श)केदोषसे एक कुएके जलपीने से जो अशुद्ध हैं उनका एक उपवास और पंचगव्य शोधकहैं ४
बालक, वृद्ध, रोगी, और वायुकी पीडा वाली गर्भवती स्त्री इनको नक्त ब्रत बतावे और बालकों को दो प्रहर का उपवास ५
अस्सी वर्ष का वृद्ध और सोलह वर्ष से कम बालक–स्त्री रोगी– ये सब आधे प्रायश्चित्त के योग्य होते हैं ६
ग्यारह वर्ष से कम और पांच वर्षसे अधिक जिसकी अवस्था है ऐसे बालककी शुद्धि करनेवालेप्रायश्चित्तकोगुरुअथवामित्र करैं७
यदि ये (बालक) ही अपना प्रायश्चित्त करें और बीचमें इनको कष्ट प्रतीत होय तो शेष प्रायश्चित्त को गुरु आदि करें अथवा जैसे इनको विपत्ति न हो वैसे ही प्रायश्चित्त को वे करें ८

क्षुधाव्याधितकायानांप्राणायेषांविपद्यते
येनरक्षंतिवक्तारस्तेषांतत्किल्विषंभवेत् ९
पूर्णेपिकालनियमेनशुद्धिर्ब्राह्मणैर्विना
अपूर्णेष्वपिकालेपुशोधयतिद्विजोत्तमाः १०
समाप्तमितिनोवाच्यंत्रिषुवर्णेषुकर्हिचित्
विप्रसंपादनंकर्मउत्पन्ने प्राणसंशये ११
संपादयंतियेविप्राःस्नानंतीर्थफलप्रदं
सम्यक्कर्तुरपापंस्याद्व्रतीचफलमाप्नुयात् १२
इत्यापस्तंबीये तृतीयोऽध्यायः ३

प्रायश्चित्त के करने से जिन क्षुधा और रोग वालों के प्राणों को पीडा हो अर्थात् मरने की शंका हो जो धर्म (प्राय श्चित्त आदि) के उपदेश करने वाले उनके प्राणों की रक्षा नहीं करते अर्थात् शक्ति केअनुसार उन्हें प्रायश्चित्त नहीं बताते तो वह पाप उन उपदेश करने वालों को ही होता है ९
यदि समय का नियम पूरा भी होजाय तो भी ब्राह्मणों के विना शुद्धि नहीं होती और कालका नियम पूरा नभी हो तो ब्राह्मण शुद्धकरदे ते हैं अर्थात् शुद्धि ब्राह्मणों के बचन में है १०
क्योंकि प्रणों का संशय उत्पन्न होने पर कर्म का संपादन (पूर्णता) ब्राह्मणही कर सकता है इससे तीनों वर्ण (क्षत्रिय वैश्य शूद्र) के विषय कभीभी कोई पुरुष किसी के कर्म कोसमाप्त (पूरा) हो गया ऐसे न कहै ११
जो ब्राह्मण स्नान और तीर्थ के फल देने वाला कर्म किसी अन्य की शुद्धि के लिये किसी अन्य पुरुष से करवाते हैं वहां भलो प्रकार करने वालों को पाप नहीं होता और व्रती (जिस को प्रायश्चित्त करना था) उसके फलको पाता है १२
इत्यापस्तंबीये ३अध्यायः

चांडालकूपभांडेषुयोज्ञानात्पिवतेजलम्
प्रायश्चित्तं कथंतस्यवर्गोवर्णो विधीयते १
चरेत्सांतपनंविप्रःप्राजापत्यं तुभूमिपः
तदर्धंतुचरेद्वैश्यःपादंशूद्रस्यदापयत् २
भुक्तोच्छिष्टस्त्वनाचांतश्चांडालैःश्वपचेनवा
प्रमादात्स्पर्शनंगच्छेत्तत्रकुर्याद्विशोधनं ३
गायत्र्यष्टसहस्रंतुद्रुपदांवाशतंजपेत्
जपंस्त्रिरात्रमनश्नन्पंचगव्येनशुद्ध्यति ४
चांडालेनयदास्पृष्टोविण्मूत्रेकुरुतेद्विजः
प्रायश्चित्तं त्रिरात्रंस्याद्भुक्तोच्छिष्टःषडाचरेत् ५
पानेमैथुनसंपर्केतथामूत्रपुरीषयोः

चांडाल के कुए अथवा पात्रमें यदि अज्ञान से जल पीले तो तिस पाप का वर्णमें केसे प्रायश्चित्त करै १
ब्राह्मण सांतपन—क्षत्रिय प्राजापत्य, वैश्य आधा प्रजापत्य, और शूद्र चौथाई प्राजापत्य, करैं २
खाकर उच्छिष्ट ब्राह्मण आचमन से पहिले यदि चांडाल और श्वपच को प्रमाद से छूले तो वहां विशोधन (प्रायश्चित्त) करै ३
आठ ८००० हजार गायत्री अथवा सौ१०० द्रुपदा मंत्र को जपै और जपता हुआ तीन रात्र उपवास करके पंचगव्य से शुद्ध होता है ४
विष्टा और मूत्र किये पीछे यदि द्विज को चांडाल छूले तो त्रिरात्रका उपवास और भोजन के अनंतर उच्छिष्ट को छूले तो छः रात्र का उपवास करैं ५
जल पान—मैथुन—मूत्र—विष्टा इन के संसर्गमें यदि रजस्वला

संपर्कैर्यदिगच्छेत्तु उदक्यावांत्यजैस्तथा ६
एतैरेवयदास्पृष्ठःप्रायश्चित्तंकथंभवेत्
भोजनेचत्रिरात्रंस्यात्पानेतुत्र्यहमेवच ७
मैथुनेपादकृच्छ्रंस्यात्तथामूत्रपुरीषयोः
दिनमेकंतथामूत्रेपुरीषेतुदिनत्रयं ८
एकाहंतत्रनिर्दिष्टंदंतधावनभक्षणे
वृक्षारूढेतुचांडालेद्विजस्तत्रैवतिष्ठति ९
फलानिभक्षयंस्तस्यकथंशुद्धिंविनिर्दिशेत्
ब्राह्मणान्समनुज्ञाप्यसवासाःस्नानमाचरेत् १
एकरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति
येनकेनचिदुच्छिष्टोह्यमेध्यंस्पृशतिद्विजः ११

और अंत्यज इनका स्पर्श होजाय ६
अथवा ये छूले तो प्रायश्चित्त के से हैं:—रजस्वला आदि के भोजन में त्रिरात्र, और जल पान में तीनदिन उपवास, ७
मैथुन में पाद कृच्छ्र, तैसे ही मूत्र और विष्ठा करने में क्रमसे एक दिन और तीन दिन उपवास, ८
और दतौन करने में एक दिन उपवास, करैं जिस वृक्ष पर चांडाल चढा हो यदि उसी वृक्ष पर द्विज टिककर ९
और फल खारहा होय तो कैसे शुद्धि बता वे—ब्राह्मणों की आज्ञा ले कर सचैल स्नान करै १०
और एक रात्र उपवास करके पंचगव्य पीने से शुद्ध होजाता है जिस किसी वस्तु के खाने से उच्छिष्ट द्विज अपवित्र (मलआदि) वस्तु को यदि छूले ११

अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति १२
इत्यापस्तंबीयेचतुर्थोऽध्यायः ४
चांडालेनयदास्पृष्टोद्विजवर्णःकदाचन
अनभ्युक्ष्यपिवेत्तोयंप्रायश्चित्तंकथंभवेत् १
ब्राह्मणस्यत्रिरात्रंतुपंचगव्येनशुद्ध्यति
क्षत्रियस्यद्विरात्रंतुपंचगव्येनशुद्ध्यति २
अहोरात्रंतुवैश्यस्यपंचगव्येनशुद्ध्यति
चतुर्थस्यतुवर्णस्यप्रायश्चित्तंकथंभवेत् ३
व्रतंनास्तितपोनास्तिहोमोनैवचविद्यते
पंचगव्यंनदातव्यंतस्यमंत्रविवर्जनात् ४
ख्यापयित्वाद्विजानांतुशूद्रोदानेनशुद्ध्यति

तो अहोरात्र उपवास करके पंचगव्य पीने से शुद्ध होता है १२
इत्यापस्तंबी ये ४ अध्यायः
जो कभी द्विज वर्णको चांडाल छूले और वह स्नान किये विना जल पीले तो प्रायश्चित्त कैसे हो १
ब्राह्मण त्रिरात्र और क्षत्रिय द्विरात्र क्रम से उपवास करके पंचगव्य पीने से शुद्ध होते हैं २
और वैश्य अहोरात्र उपवास करके पंचगव्य पीने से शुद्ध होता है - चौथे वर्ण (शूद्र) का प्रायश्चित्त कैसे हो ३
शूद्रको व्रत नहीं तप नहीं होम नहीं और इसको वेदका अधिकार न होने से पंच गव्य भी नहीं देना ४
परन्तु शूद्र अपने अपराध को ब्राह्मणों को विदित कराकर दान

ब्राह्मणस्ययदोच्छिष्टमश्नात्यज्ञानतोद्विजः ५
अहोरात्रंतुगायत्र्याजपंकृत्वाविशुद्ध्यति
उच्छिष्टंवैश्यजातीनांभुक्तेज्ञानाद्द्विजोयदि ६
शंखपुष्पीपयःपीत्वात्रिरात्रेणैवशुद्ध्यति
ब्राह्मण्यासहयोश्नीयादुच्छिष्टंवाकदाचन ७
नतत्रदोषंमन्यंतेनित्यमेवमनीषिणः
उच्छिष्टमितरस्त्रीणामश्नीयात्स्पृशतेपिवा ८
प्राजापत्येनशुद्धिःस्याद्भगवानंगिराब्रवीत्
अंत्यानांभुक्तशेषंतुभक्षयित्वाद्विजातयः ९
चांद्रायणंतदर्धार्धंब्रह्मक्षत्रविशांविधिः

से शुद्ध होता है—यदि द्विज अज्ञान से ब्राह्मण के उच्छिष्ट (झूटा) को खाले ५
तो अहोरात्र गायत्री का जप करके भली प्रकार शुद्ध होता है और यदि वैश्यों के उच्छिष्ट को अज्ञान से द्विज खाले ६
तो शंख पुष्पी के जलको पीकर त्रिरात्र में शुद्ध होता है—जो कभी ब्राह्मणी के संग उच्छिष्ट को ब्राह्मण खाले ७
उसमें विद्वान् मनुष्य कभी भी दोष नहीं मानते—और यदि अन्य स्त्रियों के उच्छिष्ट को खाले अथवा छूले ८।
तो प्राजापत्य व्रतसे शुद्धि होती है यह भगवान् (ऐश्वर्य वाले) अंगिरा ऋषिने कहा है—यदि अंत्यजों के भोजन से बचे अन्न को द्विजाति खालें ९
तो चांद्रायण—अर्द्धकृच्छ्र—पाद कृच्छ्र—ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य क्रमसे करैं—और विष्टा और मूत्रके भक्षण में ब्राह्मण तप्त

विग्मूत्रभक्षणोविप्रस्तप्तकृच्छ्रं समाचरेत् १०
श्वकाकोच्छिष्टगोभिश्चप्राजापत्यविधिःस्मृतः
उच्छिष्टःस्पृशतेविप्रोयदिकश्चिदकामतः ११
शुनःकुक्कुटशूद्रांश्चमद्यभांडंतथैवच
पक्षिणाधिष्ठितंयच्चयद्यमेध्यंकदाचन १२
अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति
वैश्येनचयदास्पृष्टउच्छिष्टेनकदाचन १३
स्नानंजप्यंचत्रैकाल्यंदिनस्यांतेविशुद्ध्यति
विप्रोविप्रेणसंस्पृष्टउच्छिष्टेनकदाचन १४
स्नानांतेचविशुद्धिःस्यादापस्तंबोब्रवीन्मुनिः
इत्यापस्तंबीयेपंचमोऽध्यायः

कृच्छ्र करै १०
कुत्ता—काक और गोओं के उच्छिष्ट का भक्षण करले तो प्राजा पत्य करना चाहिये—यदि कोई उच्छिष्ट ब्राह्मण अज्ञान से ११
कुत्ता—मुरगा—शूद्र—मदिरा का पात्र—और जिस पर पक्षि बैठा हो ऐसी अपवित्र वस्तु इनको कदाचित् छूले १२
तो अहोरात्र उपवास करके पंचगव्य पीने से शुद्ध होता है यदि कभी भी उच्छिष्ट वैश्य ब्राह्मण को छूले १३
तो त्रिकाल स्नान और जप करके दिनके अंतमें शुद्ध होता है जो कभी भी ब्राह्मण को उच्छिष्ट ब्राह्मणही छूले १४
तो स्नानके अंतमें शुद्ध होता है यह आपस्तंब मुनिने कहाहै १५
इत्यापस्तंब धर्म शास्त्रे ५ अध्यायः

अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामिनीलीवस्त्रस्ययोविधिः
स्त्रीणांक्रीडार्थसंभोगेशयनीयेनदुष्यति १
पालनेविक्रयेचैवतद्वृत्तेरुपजीवने
पतितस्तुभवेद्विप्रस्त्रिभिःकृच्छ्रैर्विशुद्ध्यति २
स्नानंदानंजपोहोमःस्वाध्यायःपितृतर्पणं
पंचयज्ञावृथास्तस्यनीलीवस्त्रस्यधारणात् ३
नीलीरक्तंयदावस्त्रंब्राह्मणोंगेषुधारयेत्
अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ४
रोमकूपैर्यदागच्छेद्रसोनील्यास्तुकर्हिचित्
पतितस्तुभवेद्विप्रस्त्रिभिःकृच्छ्रैर्विशुद्ध्यति ५
नीलीदारुयदाभिंद्याद्ब्राह्मणस्यशरीरकं

इससे आगे नीले वस्त्र की विधि कहूंहूं—स्त्रियों के संग क्रीडा के लिये भोग में और शय्यापर नीले वस्त्र का दोष नहीं १
नील की पालना' वेचने' और जीविका से ब्राह्मण पतित होता है और वह तीन कृच्छ्र करने से शुद्ध होता है २
जो नीले वस्त्रको धारे उसके—स्नान—दान—जप—होम—वेदका पाठ—पितरों का तर्पण और पंचयज्ञ वृथा हैं ३
नील रंगे वस्त्रको यदि ब्राह्मण अंगमें धारे तो अहोरात्र उपवास करके पंचगव्य से शुद्ध होता है ४
यदि कदाचित् रोमोंके द्वारा नीलका रस अंगमें चलाजाय तो ब्राह्मण पतित होता है और तीन कृच्छ्र करने से शुद्ध होता है ५
यदि नीलका काठ ब्राह्मण के शरीर में घाव करदे और उसघाव

शोणितंदृश्यतेतत्रद्विजश्चांद्रायणंचरेत् ६
नीलीमध्येयदागच्छेत्प्रमादाद्ब्राह्मणः क्वचित्
अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ७
नीलीरक्तेनवस्त्रेणयदन्नमुपनीयते
अभोज्यंतद्द्विजातीनांभुक्त्वाचांद्रायणंचरेत् ८
भक्षयेद्यश्चनीलींतुप्रमादाद्ब्राह्मणः क्वचित्
चांद्रायणेनशुद्धिःस्यादापस्तंबोऽब्रवीन्मुनिः ९
यावत्यंवापितानीलीतावतीर्वाशुचिर्मही
प्रमाणंद्वादशाब्दानिअतऊर्ध्वंशुचिर्भवेत् १०
इत्यापस्तंबीयेषष्ठोऽध्यायः ६
स्नानंरजस्वलायास्तुचतुर्थेहनिशस्यते

में रुधिर निकस आवे तो चांद्रायण करै ६
यदि प्रमाद स ब्राह्मण नीलके खेतके वीचमें गमन करै तो अहो रात्र उपवास करके पचगव्य स शुद्ध होता है ७
नील स रगे वस्त्र को पहन कर जो अन्न परसा जाता है वह अन्न द्विजातियों को अभोज्य है और उसे खाकर चांद्रायण करै ८
यदि प्रमाद से ब्राह्मण कदाचित् नीलको खाले तो चांद्रायण से शुद्ध होती है यह आपस्तंव मनि ने कहा है ९
जितनी पृथ्वी में नील वोयाहो उतनी पृथ्वी वारह १२ वर्ष तक अशुद्ध होती है अनंतर शुद्ध होजाती है १०
इत्यापस्तंवीये ६ अध्यायः
रजस्वला स्त्रीका स्नान चौथे दिन श्रेष्ठ है रज के निवृत्त होने

वृत्ते रजसिगम्यास्त्रीनानिवृत्ते कथंचन
रोगेणायद्रजः स्त्रीणामत्यर्थंहिप्रवर्तते
अशुद्धास्तास्तुनैवेहतासांवैकारिकोमदः २
साध्वाचारानतावत्सारजोयावत्प्रवर्त्तते
वृत्ते रजसिसाध्वीस्याद्गृहकर्मणिचेंद्रिये ३
प्रथमेहनिचांडालीद्वितीयेब्रह्मघातिनी
तृतीयेरजकीप्रोक्ताचतुर्थेहनिशुद्ध्यति ४
अंत्यजातिःश्वपाकेनसंस्पृष्टावैरजस्वला
अहानितान्यतिक्रम्यप्रायश्चित्तंप्रकल्पयेत् ५

पर स्त्री संग के योग्य होती है रज के निवृत्त न होने पर कभी नहीं। १

जो किसी रोगसे स्त्रियों के अत्यन्त रज (रुधिर) निकलता है व स्त्री उस रज से अशुद्ध नहीं होती क्योंकि वह उनका मद विकार से है २

इतने रजो दर्शन रहे तव तक उत्तम आचरण न करे क्योंकि रजो दर्शन की निवृत्ति होने पर ही घर के काम और संग करने योग्य होती है ३

प्रथम दिन में चांडाली संज्ञा—द्वितीय दिन में ब्रह्महत्यारी—तृतीय दिन में रज की (धोविन) होती है औरचौथे दिन शुद्ध होती है ४

यदि रजस्वला स्त्री को अंत्यज और श्वपाक छूलें तो रजो दर्शन के दिनों को विताकर प्रायश्चित करे ५

त्रिरात्रमुपवासःस्यात्पंचगव्यंविशोधनं
निशांप्राप्यतुतांयोनिंप्रजाकारांचकामयेत् ६
रजस्वलांत्यजैःस्पृष्टाशुनाचश्वपचेनच
त्रिरात्रोपोषिताभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ७
प्रथमेहनिषड्रात्रंद्वितीयेतुत्र्यहस्तथा
तृतीयेचोपवासस्तुचतुर्थेवन्हिदर्शनात् ८
विवाहेवितेतयज्ञेसंस्कारेचकृतेतथा
रजस्वलाभवेत्कन्यासंस्कारस्तुकथंभवेत् ९
स्नापयित्वातदाकन्यामन्यैर्वस्त्रैरलंकृताम्
पुनर्मध्याहुतिंहुत्वाशेषंकर्मसमाचरेत् १०

तीन रात्र उपवास और पंचगव्य का पीना उसकी शुद्धि है फिर उसी शुद्ध होने की रात्रि में पुरुष का संग करे ६

यदि रजस्वला स्त्रीको अंत्यज—कुत्ता—और श्वपच ये छूलें तो तीन रात्रि उपवास के अनंतर पंचगव्य पीने से शुद्ध होती है ७

रजो दर्शन के पहिले दिन अंत्यज आदि छूलें तो छःरात्र' और दूसरे दिन छूलें तो तीन दिन' और तीसरे दिन छूलें तो एक दिन, उपवास करे और चौथे दिन छूलें तो अग्निके देखने से शुद्ध होती है ८

विवाह में यज्ञ (होम आदि) हो रहा हो और कुछ संस्कार भी हो चुका हो बीच में हो यदि कन्या रजस्वला होजाय तो शेष संस्कार कैसे हो ९

उस समय कन्या को स्नान कराकर अन्य वस्त्रों से शोभाय मान करे और फिर पवित्र आहुति देकर शेष कर्म को करे १०

रजस्वलातुसंस्पृष्टाप्लवकुक्कुटवायसैः
सात्रिरात्रोपवासेनपंचगव्येनशुद्ध्यति ११
रजस्वलातुयानारीअन्योन्यंस्पृशतेयदि
तावत्तिष्ठन्निराहारास्नात्वाकालेनशुद्ध्यति १२
उच्छिष्टेनतुसंस्पृष्टाकदाचित्स्त्रीरजस्वला
कृच्छ्रेणशुद्ध्यतेविप्राशूद्रादानेनशुद्ध्यति १३
एकशाखासमारूढाश्चांडालीवारजस्वला
ब्राम्हणश्चसमंतत्रसंवासाःस्नानमाचरेत् १४
रजस्वलायाःसंस्पर्शःकथंचिज्जायतेशुना
रजोदिनानांयच्छेषंतदुपोष्यविशुद्ध्यति १५

जिस रजस्वला को वानर—मुरगा—कौवा छूलें वह त्रिरात्र उपवास करने और पंचगव्य पीने से शुद्ध होती है ११
यदि दो रजस्वला स्त्री परस्पर छूलें तो शुद्धि के दिन(चौथा)तक उपासी रह कर समय के स्नान से शुद्ध होती हैं १२
यदि कदाचित् रजस्वला स्त्रीको कोई उच्छिष्ट पुरुष छूले तो ब्राह्मणी कृच्छ्र करने से और शूद्र जाति की स्त्री दान से शुद्ध होती है १३
यदि एक वृक्ष की शाखापर चांडाल—रजस्वला और ब्राह्मण बैठे हों। ये तीनों एकवार सचैल स्नान करें १४
यदि रजस्वला स्त्री को कुत्ते का स्पर्श किसी प्रकार से होजाय तो रज के जो शेष दिन उतनें उपवास करने से भली प्रकार शुद्ध होती है १५

अशक्ताचोपवासेनस्नानंपश्चात्समाचरेत्
तथाप्यशक्ताचैकेनपंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ १६ ॥
उच्छिष्टस्तुयदाविप्रःस्पृशेन्मद्यं रजस्वलां ।
मद्यं स्पृष्ट्वाचरेत्कृच्छ्रं तदर्धंतुरजस्वलां ॥ १७ ॥
उदक्यांसूतिकांविप्रउच्छिष्टःस्पृशतेयदि ।
कृच्छ्रार्द्धंतुचरेद्विप्रःप्रायश्चित्तंविशोधनं ॥ १८ ॥
चांडालःश्वपचोवापिआत्रेयींस्पृशतेयदि ।
शेषान्हाकालकृष्टेनपंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ १६ ॥
उदक्याब्राह्मणीशूद्रामुदक्यास्पृशतेयदि ।
अहोरात्रोषिताभूत्वापञ्चगव्येनशुद्ध्यति ॥ २०

यदि सामर्थ्य न होय तो एक उपवास करके स्नान करले जो स्नान में भी असमर्थ होतो एक उपवास और पंचगव्य पीने से शुद्ध होती है १६

यदि उच्छिष्ट ब्राह्मण मदिरा को अथवा रजस्वला स्त्री को छूले तो क्रमसे कृच्छ्र और अर्द्ध कृच्छ्र व्रत करे १७

यदि उच्छिष्ट ब्राह्मण ऐसी रजस्वला को छूले जो सूतिका (जिसके बालक जन्म हो) तो ब्राह्मण कृच्छ्रार्द्ध करे क्योंकि प्रायश्चित्त ही शुद्ध करने वाला है १८

यदि चांडाल अथवा श्वपच आत्रेयी (रजस्वला) को छूलें तो प्रारब्ध के आधीन से बचे दिन के उपवास और पंच गव्य से शुद्ध होती है १६

यदि रजस्वला ब्राह्मणी रजस्वला शूद्रा को छूले तो अहोरात्र उपवास करके पंचगव्य से शुद्ध होती है २०

एवंतुक्षत्रियावैश्याब्राह्मणीचेद्रजस्वला ।
सचैलंप्लवनंकृत्वादिनस्यांतेघृतंपिवेत् ॥२१॥
सवर्णेषुतुनारीणांसद्यःस्नानंविधीयते ।
एवमेवविशुद्धिःस्यादापस्तंबोब्रवीन्मुनिः ॥ २२॥

इत्यापस्तंबीयेसप्तमोऽध्यायः ७

भस्मनाशुद्ध्यतेकांस्यंसुरयायन्नलिप्यते ।
सुराविण्मूत्रसंस्पृष्टंशुद्ध्यतेतापलेखनैः ॥ १ ॥
गवाघ्रातानिकांस्यानिशूद्रोच्छिष्टानियानितु ।
दशभस्मभिःशुद्ध्यंतिश्वकाकोपहतानिच ॥ २ ॥
शौचंसुवर्णनारीणांवायुसूर्येन्दुरश्मिभिः ।

इसी प्रकार क्षत्रिया वैश्या ब्राह्मणी रजस्वला भी परस्पर छूलें तो सचैल स्नान करके संध्या को घी पीवें २१
और अपने वर्ण की रजस्वला के छूने में ही स्नान कहा है इसी प्रकार शुद्धि होती है यह आपस्तंब मुनिने कहा है २

इत्यापस्तंबीये ७अध्यायः

जिस कांसी के पात्र में मदिरा का स्पर्श न हुआ हो वह भस्म से और जिससे मदिरा विष्ठा मूत्र का स्पर्श हुआ हो वह तपाने और रितवाने से शुद्ध होता है १
गौके सूंघे—शूद्र के झूठे—और कुत्ता और काक के छूये जो कांसी के पात्र हैं वे दशवार भस्म से मांजने से शुद्ध होते हैं २
सोना और स्त्रियों की शुद्धि वायु सूर्य और चन्द्रमा की किरणों से होती है और रेत (पुरुषका वीर्य) और शव (मुर्दा) स्पर्श

रेतःस्पृष्टंशवस्पृष्टमाविकंतुप्रदुष्यति । ३ ।
अद्भिर्मृदाचतन्मात्रंप्रक्षाल्यचविशुद्ध्यति ।
शुष्कमन्नमवेद्यस्य पंचरात्रेणजीर्यति । ४ ।
अन्नंव्यंजनसंयुक्तमर्द्ध मासेनजीर्यति ।
पयस्तुदधिमासेनषण्मासेनघृतंतथा ५
संवत्सरेणतैलंतुकोष्ठेजीर्यतिवानवा
भुंजतेयेतुशूद्रान्नंमासमेकंनिरंतरं ६
इहजन्मनिशूद्रत्वंजायंतेतेमृताःशुनि
शूद्रान्नंशूद्रसंपर्कःशूद्रेणैवसहासनं ७
शूद्राज्ज्ञानागमःकश्चिज्ज्वलंतमपिपातयेत्

जिसमें हुआ हो ऐसा उनका वस्त्र दूषित (अशुद्ध] है ३
परन्तु जल और मिट्टी से जितने में रेत आदि लगे हों उतने
वस्त्र को धोकर भली प्रकार शुद्धि होती है अवेद्य [शूद्र] का
सका अन्न पांच दिन में पचता है ४
जिसमें व्यंजन (भाजी नोन) मिला वह आधे महीने में—और
दूध दही महीने में और घी छः महीने में ५
तेल एक वर्ष में पेट के बिषे पचे अथवा नभी पचे—और जो
शूद्र के अन्न को महीने भर निरंतर खाते हैं ६
वे इस संसार में शूद्र होते हैं और मरके कुत्ते की योनिमें पैदा
होते हैं—शूद्र का अन्न—संसर्ग शूद्र के संग एक आसन पर
बैठना ७
शूद्र से किसी विद्या का लेना ये प्रतापी पुरुष को भी पतित

आहिताग्निस्तुयोविप्रःशूद्रान्नान्ननिवर्तते ८
तथातस्यप्रणश्यंतिआत्मात्रह्मत्रयोग्नयः
शूद्रान्नेनतुभुक्तेनमैथुनंयोधिगच्छति ९
यस्यान्नंतस्यतेपुत्राअन्नाच्छुक्रस्यसंभवः
शूद्रान्नेनोदरस्थेनयःकश्चिन्म्रियतेद्विजः १०
संभवेच्छूकरोग्राम्यस्तस्यवाजायतेकुले
ब्राह्मणस्यसदाभुंक्तेक्षत्रियस्यतुपर्वणि ११
वैश्यस्ययज्ञदीक्षायांशूद्रस्यनकदाचन
अमृतंब्राह्मणस्यान्नंक्षत्रियस्यपयःस्मृतं १२
वैश्यस्याप्यन्नमेवान्नशूद्रस्यरुधिरंस्मृतं
वैश्वदेवेनहोमेनदेवताभ्यर्चनैर्जपैः १३

करते हैं, जो अग्निहोत्री ब्राह्मण शूद्र के अन्न को नहीं त्यागता ८
उसके आत्मा (देह वा जीव) वेद तीनों अग्नि ये नष्ट होते हैं
शूद्र के अन्न को खाकर जो मैथुन (स्त्री का संग) करता है ९
जिसका वह अन्न है उसीके वे पुत्र हैं क्योंकि अन्नसे ही शुक्र
होता है—शूद्र के अन्न के पेट में रहते जो द्विज मरता है १०
वह गांव का सूकर होता है वा शूद्र के ही कुल में पैदा होता है
ब्राह्मण का अन्न सदा खाना क्षत्रिय का पर्व (३० मावस आदि)
में ११
वैश्य का यज्ञ की दीक्षा में और शूद्र का कभीनहीं —ब्राह्मणका
अन्न अमृत रूप क्षत्रिय का अन्न दूध रूप १२
वैश्य का अन्न अन्नही है और शूद्र का अन्न रुधिर रूप है बलि
वैश्वदेव होम देवताओं का पूजन जप इनसे १३

अमृतंतेनविप्रान्नमृग्यजुःसामसंस्कृतं
व्यवहारानुरूपेणधर्मेणछलवर्जितं १४
क्षत्रियस्यपयस्तेनभूतानांयच्चपालनं
स्वकर्मणाचवृषभैरनुरक्षत्याद्यशक्तितः १५
खलयज्ञातिथित्वेनवैश्यान्नंतेनसंस्कृतं
अज्ञानतिमिरांधस्यमद्यपानरतस्यच १६
रुधिरंतेनशूद्रान्नंविधिमंत्रविवर्जितं
आममांसंमधुघृतंधानाःक्षीरंतथैवच १७
गुडस्तक्ररसाग्राह्यानिवृत्तेनापिशूद्रतः
शाकंमांसंमृणालानितुंवरुःसक्तवस्तिलाः १८

और ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद के मन्त्रों से संस्कृत (शुद्ध) हुआ ब्राह्मण का अन्न अमृत है व्यवहार के अनुकूल धर्म करने से छल रहित १४

सब प्राणियोंका पालन क्षत्रिय करता है तिससे क्षत्रियका अन्न दूध है अपनी शक्ति के अनुसार अपने कर्म से पशुओंकी रक्षा से १५

और खरियान के आतिथ्य से संस्कार (शुद्धि) को प्राप्त हुआ वैश्य का अन्न अन्नही है अज्ञान के तिमिर (अंधकार) से अंधे और मदिरा के पीने में तत्पर १६

और विधि और और मन्त्र से वर्जित शूद्रका अन्न रुधिर होता है कच्चामांस सहत घी अन्न और दूध १७

गुड़-मठा-रस इनको निवृत्त पुरुष भी शूद्रसे लेले---शाक (भाजी) मांस कमल की भिस--तुंबी--सतू-तिल १८

रसा:फलानिपिण्याकंप्रतिग्राह्याहिसर्वत:
आपत्कालेतुविप्रेणभुक्तंशूद्रगृहेयदि १९
मनस्तापेनशुद्ध्येतद्रुपदांवा शतंजपेत्
द्रव्यपाणिश्चशूद्रेणस्पृष्टोच्छिष्टेनकर्हिचित् २०
तद्द्विजेननभोक्तव्यमापस्तंबोब्रवीन्मुनि:
इत्यापस्तंबीयेऽष्टमोध्याय: ८
भुंजानस्यतुविप्रस्यकदाचित्स्रवतेगुदं
उच्छिष्टस्याशुचेस्तस्यप्रायश्चित्तं कथंभवेत् १
पूर्वंशौचंतुनिर्वर्त्यततःपश्चादुपस्पृशेत्
अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति २

रस--फल--पिण्याक (खल वा अंड के फल) इनको सनसे लेले यदि आपत्काल में ब्राह्मण शूद्र के घर में भोजन करले १९ तो मनके पश्चात्ताप से शुद्ध होता है अथवा सौ १०० द्रुपदा मंत्र जपे द्रव्य (अन्न आदि) है हाथ में जिसके ऐसे ब्राह्मण को यदि उच्छिष्ट शूद्र छूले २०
तो उस अन्नको ब्राह्मण न खाय यह आपस्तंब मुनिने कहा है २१

इत्यापस्तंबीये ८ अध्याय:

भोजन करते हुये ब्राह्मण को यदि अधोवायु अथवा मलत्याग होजाय तो उच्छिष्ट और अशुद्ध उसब्राह्मणका प्रायश्चित्त कैसेहो १ पहिले शौच (गुदा धोना) करके आचमन करै और अहोरात्र उपवास करके पंचगव्य पीने से शुद्ध होता है २

अशित्वा सर्वमेवान्नमकृत्वा शौचमात्मनः
मोहादभुक्त्वा त्रिरात्रं तु यवान्पीत्वा विशुध्यति ३
प्रसृतं यवसस्येन पलमेकं तु सर्पिषा
पलं निपंचगोमूत्रं नातिरिक्तवदाशयेत् ४
अलेह्यानामपेयानामभक्ष्याणां च भक्षणे
रेतोमूत्रपुरीषाणां प्रायश्चित्तं कथं भवेत् ५
पद्मोदुंबरबिल्वाश्च कुशाश्च सपलाशकाः
एतेजामुदकं पीत्वा षड्रात्रेण विशुध्यति ६
ये प्रत्यवसिता विप्राः प्रव्रज्याग्निजलादिषु
अनाशकनिवृत्ताश्च गृहस्थत्वं चिकीर्षिताः ७

देह को शुद्ध किये बिना अज्ञान से सब भोजन को खाकर तीन रात्रिओं को पीकर भलीप्रकार शुद्ध होता है ३
और वे जौ इतने और ऐसे पीवे कि एक प्रसृत (पस्सा) जौ एक पल (टकाभर) घी और पांच पल गोमूत्र जिनमें हो इससे अधिक न खा ४
भक्षण में और चाटने के और पीने के और खानेके अयोग्य के रेत (वीर्य] मूत्र विष्ठा इनके भक्षण में प्रायश्चित कैसेहो ५
पद्म—गूलर—वेल—कुशा—ढाक- इनके जल को छः राततक पीकर भली प्रकार शुद्ध होता है ६
जो ब्राह्मण पतित हो अथवा संन्यास अग्नि होत्र और तर्पण से निवृत्त हों अर्थात् इन्हें न करते हों और जो अनाशक [अनशन] वृत से निवृत्त हों और गृहस्थ में रहा चाहते हों ७

चरेयुस्त्रीणिकृच्छ्राणित्रीणिचांद्रायणानिवा
जातकर्मादिभिःसर्वैःपुनःसंस्कारभागिनः ८
तेषांसांतपनंकृच्छ्रंचंद्रायणमथापिवा
यद्वेष्टितंकाकवलाकयोर्वा अमेध्यलिप्तंचभवेच्छरीरं
९ श्रोत्रेमुखेचप्रविशेच्चसम्यक्स्नानेनलेपोपहतस्य
शुद्धिः। ऊर्ध्वंनाभेःकरौमुक्त्वायदंगमुपहन्यते १०
ऊर्ध्वंस्नानमधःशौचमात्रेणैवविशुद्ध्यति
उपानहावमेध्यंवायस्यसंस्पृशतेमुखं ११
मृत्तिकाशोधनंस्नानंपंचगव्यंविशोधनं

वे तीन कृच्छ्र अथवा तीन चांद्रायण करैं और जात कर्म से ले कर उनका फिर संस्कार होना चाहिये ८

अथवा उनको सांतपन कृच्छ्र वा चांद्रायण करना—जो शरीर कौवा—बगुला से वेष्टित [युक्त] हो अथवा अमेध्य (विष्ठा) से लिप्त हो ९

अथवा कान वा मुख में अशुद्ध वस्तु प्रविष्ट होजाय उनकी और जिसमें पवित्र वस्तु लगी हो भली प्रकार स्नान करने से उस शरीर की शुद्ध होती है हाथों को छोड़ कर नाभी से ऊपर जिस अंग में अशुद्ध वस्तु स्पर्श होय १०

तो स्नान करने से—और नाभिसे निचले भाग में होय तो शौच से ही शुद्ध होती है—जिसके मुख में उपानह (जूते, वा अपवित्र वस्तु का स्पर्श होजाय ११

तो वह मिट्टि शरीर पर लगावे और स्नान और पंचगव्य से

दशाहाच्छुद्ध्यतेविप्रोजन्महानौस्वयोनिषु १२
षड्भिस्त्रिभिरथैकेनक्षत्रविट्शूद्रयोनिषु
उपनीतंयदात्वन्नंभोक्तारंसमुपस्थितं १३
अपीतवत्समुत्सृष्टंनदद्यान्नैवहोमयेत्
अन्नेभोजनसंपन्नेमक्षिकाकेशदूषिते १४
अनंतरंस्पृशेदापस्तच्चान्नंभस्मनास्पृशेत्
शुष्कमांसमथर्वान्नंशूद्रान्नंचाप्यकामतः १५
भुक्त्वाकृच्छ्रंचरेद्विप्रोज्ञानात्कृच्छ्रत्रयंचरेत्
अभुक्तोमुच्यतेयश्चभुक्तोयश्चापिमुच्यते १६

शुद्धि होती है ब्राह्मण अपनी जाति के जन्म और मरणके अशौच में दश दिन में शुद्ध होता है १२

और क्षत्रिय वैश्य और शूद्र जातियों के अशौच में क्रम से छः६ तीन३--एक१ दिन में शुद्ध होता है—भोजन के लिये खाने वाले के समीप जो अन्न रक्खा जाता है १३

यदि उस अन्नको खाने वाला वैसेही छोड़दे तो वह अन्न मरे के अन्न तुल्य हैइससे उस अन्न को किसी को नदे और न उससे होम करै भोजन के लिये जो अन्न बनाया जाय और वह अन्न यदि मक्षिका (मक्खी) केश से दूषित होजाय १४ तो फिर जल का स्पर्श (आचमन) करै और अन्न में भस्म गेरै सूका मांस और अथर्वी (बढई) और शूद्र का अन्न इनको अज्ञान से १५

खाकर ब्राह्मण एक कृच्छ्र और जानकर खावे तो तीनों कृच्छ्र करै—अभक्त (खाये विना) अथवा भुक्त (खाने पर) जो भोजनसे) छुटाया जाय १६

भोक्ताचमोचकश्चैवपश्चाद्वरतिदुःकृतं
यस्तुभुंजतिभुक्तंवादुष्टंवापिविशेषतः १७
अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति
उदकेचोदकस्थस्तुस्थलस्थश्चस्थलेशुचिः १८
पादौस्थाप्योभयत्रैवआचम्योभयतःशुचिः
उत्तीर्याचामेदुदकादवतीर्यउपस्पृशेत् १६
एवंतुश्रेयसायुक्तोवरुणेनाभिपूज्यते
अग्न्यागारेगवांगोष्ठेब्राह्मणानांचसन्निधौ २०
स्वाध्यायेभोजनेचैवपादुकानांविसर्जनं
जन्मप्रभृतिसंस्कारेश्मशानांतेचभोजनं २१

तो भोक्ता (छुटाने पर खाने वाला) और मोचक (छुटाने वाला) दोनों पाप के भागी होते हैं—जो भुक्त (खाई हुई) अथवा अत्यन्त दुष्ट वस्तु को खाता है १७

वह अहोरात्र उपवास करके पंचगव्य पीने से शुद्ध होता है—जलमें बैठा जलमें, और स्थल में बैठा स्थल में शुद्ध होता है १८

दोनों जगे बैठा पुरुष दोनों जगेही पैर रखकर आचमन करके शुद्ध होता है यदि जल में पैर हों तो तटपर निकास कर आचमन करे १६

ऐसे कल्याण से युक्त पुरुष को वरुण भी पूजता है—अग्नि और गौओं की शाला—और ब्राह्मणों के समीप २०

स्वाध्याय (वेद का पाठ)—भोजन—इतनी जगे खडाउं त्यागदे—जन्म आदि संस्कार—श्मशानांत—(मरे की क्रिया)का भोजन २१

अग्निपिंडेनंकर्तव्यंचूडाकार्येविशेषतः
याजकान्नंनवश्राद्धंसंग्रहेचैवभोजनं २२
स्त्रीणांप्रथमगर्भेचभुक्त्वाचांद्रायणंचरेत्
ब्रह्मौदनेवसानेचसीमंतोन्नयनेतथा २३
अन्नश्राद्धेमृतश्राद्धे भुक्त्वाचांद्रायणंचरेत्
अप्रजायातुनारीस्यान्नाश्नीयादेवतद्गृहे २४
अथभुंजीतमोहाद्यःपूयंसनरकंव्रजेत्
अल्पेनापिहिशुल्केनपिताकन्यांददातियः २५
रौरवेबहुवर्षाणिपुरीषंमूत्रमश्नुते
स्त्रीधनानितुयेमोहादुपजीवंतिबांधवाः २६

अग्निपिंड न करे और चूडाकर्म (मुंडन में तो विशेषकर न करे—यज्ञ कराने वाले का अन्न नव श्राद्ध (मरे के ११ दिन होता है) संग्रह (गोट) में भोजन २२

स्त्रियों के पहिले गर्भाधान में भोजन करके चांद्रायण करे ब्रह्मौदन (यज्ञोपवीत में जो भात होता है) अवसान (जब ब्राह्मण जीम चुके हों) और सीमंतोन्नयन (अठमासा) २३

अन्नके श्राद्ध—मरेके श्राद्ध—इनमें खा कर चांद्रायण करे जिस स्त्रीके संतान न हो उसके घर न खाय २४

जो मोह से खाता है वह पूय [राध]के नकर में जाता है—जो पिता कुछभी शुल्क [मोल]लेकर कन्या को देता है २५

वह वहुत वर्ष तक रौरव नरक में विष्ठा खाता है—जो बांधव (उसके संबंधी] मोहसे स्त्री के धनों से जीते हैं २६

स्वर्णीयानानिवस्त्राणितेपापायांत्यधोगतिं
राजान्नमोजआदत्तेशूद्रान्नंब्रह्मवर्चसं २७
असंस्कृतंतुयोभुंक्तेसभुंक्तेपृथिवीमलं
मृतकेसूतकेचैवगृहीतेशशिभास्करे २८
हस्तिच्छायांतुयोभुंक्तेसपापःपुरुषोभवेत्
पुनर्भूःपुनरेताचरेतोधाकामचारिणी २९
आसांप्रथमगर्भेषुभुक्त्वाचांद्रायणंचरेत्
मातृघ्नश्चपितृघ्नश्चब्रह्मघ्नोगुरुतल्पगः ३०

और स्त्रियों के सोना यान[सवारी]वस्त्र आदि को वर्तते हैं वे पापी अधोगति (नरक) में जाते हैं—राजा का अन्न बलको और शूद्र का अन्न ब्रह्मतेज को नष्ट करता है २७

जो मनुष्य असंस्कृत [अपवित्र) खाता है वह पृथ्वी के मल को खाता है मरने में और जन्म सूतक में और चन्द्रमाऔर सूर्यके ग्रहण में २८

(१)गजच्छाया में जो पुरुष खाता है वह पापी है पुनर्भू (दूसरे जो विवाही हो) पुनरेता (जो एक से वीर्य लेकर दूसरे से ले) और रेतोधा जो जहां तहां से वीर्य को धारे और व्यभिचारिणी २९

इन स्त्रियों के पहिले गर्भाधान संस्कार में खाकर चांद्रायण करै-माता, पिता, ब्राह्मण इनको मारने वाला और गुरु की स्त्री के संग भोग करने वाला ३०

---

(१)जब कृष्ण पक्षकी त्रयोदशी हो और सूर्य हस्त नक्षत्र पर हो और चंद्रमा मघानक्षत्र पर हो उसे गजच्छाया योग कहते हैं

विशेषाद्भुक्तमेतेषांभुक्त्वाचांद्रायणंचरेत्
रजकव्याधशैलूषवेणुचर्मोपजीविनः ३१
भुक्त्वैषांब्राह्मणश्चान्नंशुद्धिश्चांद्रायणेनतु
उच्छिष्टोच्छिष्टसंस्पृष्टःकदाचिदुपजायते ३२
सवर्णेनतदोत्थायउपस्पृश्यशुचिर्भवेत्
उच्छिष्टोच्छिष्टसंस्पृष्टश्शुनाशूद्रेणवाद्विजः ३३
उपोष्यरजनीमेकांपंचगव्येनशुद्ध्यति
ब्राह्मणस्यसदाकालंशूद्रे प्रेषणकारिणः ३४
भूमावन्नंप्रदातव्यंयथैवश्वातथैवसः
अनूदकेष्वरण्येषुचोरव्याघ्राकुलेपथि ३५

इनका विशेष कर खाने से चांद्रायण प्रायश्चित्त करै, रजक [धोबी] व्याध, नट बांस और चाम से जीने वाले ३१

इनके अन्न को खाकर ब्राह्मण की शुद्धि चांद्रायण से होती है यदि कदाचित् उच्छिष्ट को उसी जातिका उच्छिष्ट छूले ३२

तो उसी समय उठ कर आचमन करके शुद्ध होजाता है यदि उच्छिष्ट का जिसे स्पर्श हुआहो उस द्विज को कुत्ता अथवा शूद्र छूले ३३

तो एक रात्रि उपवास करके पंचगव्य पीने से शुद्ध होता है ब्राह्मण की प्रेरणा से काम काज(चिट्ठी आदि पहुंचाना) करने वाला जो शूद्र ३४

उस शूद्र को पृथ्वी परही अन्न खाने को देना क्योंकि जैसा कुत्ता वैसा ही वह है जहां जल न हो ऐसे वनोंमें चोर और सिंह जिसमें हों ऐसे मार्ग में ३५

कृत्वामूत्रंपुरीषंचद्रव्यहस्तःकथंशुचिः
भूमावन्नंप्रतिष्ठाप्यकृत्वाशौचंयथार्थतः ३६
उत्संगगृह्यपक्वान्नमुपस्पृश्यततःशुचिः
मूत्रोच्चारंद्विजःकृत्वाअकृत्वाशौचमात्मनः ३७
मोहाद्भुक्त्वात्रिरात्रंतुगव्यंपीत्वा विशुद्ध्यति
उदक्यांयदिगच्छेत्तुब्राह्मणोमदमोहितः ३८
चांद्रायणेनशुद्ध्येतब्राह्मणानांचभोजनैः
भुक्त्वोच्छिष्टस्त्वनाचांतश्चांडालैःश्वपचेनवा ३९
प्रमादाद्यदिसंस्पृष्टोब्राह्मणोज्ञानदुर्बलः
स्नात्वात्रिषवणंनित्यंब्रह्मचारीधराशयः ४०

मल और मूत्र कर के द्रव्य [भोजन आदि] जिनके हाथ में हो ऐसा पुरुष कैसे शुद्ध हो पृथिवी पर अन्न को रखकर और यथार्थ शौच करके ३६

उत्संग (गोदी] में पक्वान्न लेकर आचमन करके शुद्ध होता है जो द्विज मूत्र करके अपने शौच किये बिना ३७

अज्ञान से खाले वह तीन रात पंचगव्य पीकर भलेप्रकार शुद्ध होता है यदि मदसे मोह को प्राप्त हुआ ब्राह्मण रजस्वला स्त्री के संग गमन करै ३८

तो चांद्रायण और ब्राह्मणों के भोजन से शुद्ध होता है— भोजन से उच्छिष्ट और आचमन से पहले चांडाल और श्वपच ३९

यदि अज्ञानी ब्राह्मण को प्रमाद से छूले तो त्रिकाल स्नान करने से और यदि ब्रह्मचारी ऐसा हो जो नित्य पृथिवी पर सोता हो ४०

सत्रिरात्रोपितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति
चंडालेनतुसंस्पृष्टोयश्चापःपिबतिद्विजः ४१
अहोरात्रोषितोभूत्वात्रिपवणेनशुद्ध्यति
सायंप्रातस्त्वहोरात्रंपादंकृच्छ्रस्यतंविदुः ४२
सायंप्रातस्तथैवैकंदिनद्वयमयाचितं
दिनद्वयंचनाश्नीयात्कृच्छ्रार्द्धंतद्विधीयते ४३
प्रायश्चित्तं लघुष्वेतत्पापेपुतुयथार्हतः
कृष्णाजिनतिलग्राहीहस्त्यश्वानांचविक्रिया ४४
प्रेतनिर्यातकश्चैवनभूयःपुरुषोभवेत्
इत्यापस्तंबीयेनवमोऽध्यायः ९

जो वह त्रिरात्र उपवास करके पंचगव्य से शुद्ध होता है चांडाल के छूने पर जो द्विज जल पीता है ४१

वह अहोरात्र उपवास और त्रिकाल स्नान करने से शुद्ध होता है अहोरात्र [एकदिन] सायंकाल और प्रातःकाल भोजन करै इसको पाद कृच्छ्र कहते हैं ४२

और एक दिन सायंकाल और प्रातः काल नखा और दो दिन विना मांगे जो मिले उसे भोजन करै और दो दिन उपवास करै इसे कृच्छ्रार्द्ध कहते हैं ४३

लघु [छोटे] पापों में यह प्रायश्चित्त उचित है—काली मृगछाला और तिल इनका जो दान ले और हाथी और घोड़े का जो वेचै ४४

और जो प्रेतका निर्यातक [उठाने वाला) ये फिर पुरुष नहीं होते ४५

इत्यापस्तंबीये ९ अध्याय

आचांतोप्यशुचिस्तावद्यावन्नोद्ध्रियतेजलं
उद्धृतेप्यशुचिस्तावद्यावद्भूमिर्नलिप्यते १
भूमावपिचलिप्तायांतावत्स्यादशुचिःपुमान्
आसनादुत्थितस्तस्माद्यावन्नाक्रमतेमहीं २
नयमंयममित्याहुरात्मावैयमउच्यते
आत्मासंयमितोयेनतंयमःकिंकरिष्यति ३
नतथासिस्तथातीक्ष्णःसर्पोवादुरधिष्ठितः
यथाक्रोधोहिजंतूनांशरीरस्थोविनाशकः ४
क्षमागुणोहिजंतूनामिहामुत्रसुखप्रदः
एकःक्षमावतांदोषोद्वितीयोनोपपद्यते ५

आचमन किये पर तब तक (मनुष्य) अशुद्ध रहता है इतने भूमि पर पड़ा अशुद्ध जल न उठाया जाय और उस जल के उठाने पर जब तक अशुद्ध रहता है इतने वह पृथिवी न लीपी जाय १

पृथ्वी के लीपे परभी जब तक अशुद्ध रहता है इतने आच मन के आसन से उठ कर उस लीपी हुई पृथ्वी पर न बैठे २

यमराज को यम नहीं कहते हैं किंतु आत्मा (मन) को ही यम कहते हैं जिस मनुष्यने मन को वशमें करलिया उस का यमराज क्या करेगा ३

खड्ग भी ऐसा तीक्ष्ण [तीखा वा पैना] नहीं और सर्प भी ऐसा दुरधिष्ठित (विकराल वा भयानक] नहीं जैसा मनुष्यों के शरीर में क्रोध नाश करने वाला है ४

क्षमा जो गुण है वह मनुष्यको इस लोक और परलोकमें सुखदेने वाला है और क्षमा वालोंमें एकही दोषहै दूसरा नहीं दीखता कि ५

यदेनंक्षमयायुक्तमशक्तंमन्यतेजनः
नशब्दशास्त्राभिरतस्यमोक्षो
नचैवरम्यावसथप्रियस्य ६
नभोजनाच्छादनतत्परस्य
नलोकचित्तग्रहणेरतस्य
एकांतशीलस्यदृढव्रतस्य
मोक्षोभवेत्प्रीतिनिवर्तकस्य ७
अध्यात्मयोगैकरतस्यसम्यक्
मोक्षोभवेन्नित्यमहिंसकस्य
क्रोधयुक्तोयद्यजतेयज्जुहोतियदर्चति ८
सर्वंहरतितत्तस्यआमकुंभइवोदकं

कि क्षमा वाले पुरुष को मनुष्य अशक्त (असमर्थ) मानते हैं—शब्द शास्त्र (व्याकरण) में जो में उसका और रमणीय घर हैं प्यारा जिसे उसको ६

और जो भोजन वस्त्र में तत्पर हैं उसका और जो जगत के मन को वश करने में तत्पर हैं उसका मोक्ष नहीं होता—किंतु जो मनुष्य एकांत में वसै और जो दृढ व्रत (जिसका संकल्प न डिगे) और जो प्रीति से दूर रहै ७

और जो अध्यात्म योग में तत्पर हो और जो हिंसा न करता हो उसका मोक्ष होता है क्रोधी मनुष्य जो यज्ञ होम —पूजा करता है ८

वह सब ऐसें उसका नष्ट होता है जैसे कच्चे घड़े में जल अर्थात् उसमें नहीं टिकता अपमान से तपकी वृद्धि

अपमानात्तपोवृद्धिःसंमानात्तपसःक्षयः ६
अर्चितःपूजितोविप्रोदुग्धागौरिवसीदति
आप्यायतेयथाधेनुस्तृणैरमृतसंभवैः १०
एवंजपैश्चहोमैश्चपुनराप्यायतेद्विजः
मातृवत्परदारांश्चपरद्रव्याणिलोष्ठवत् ११
आत्मवत्सर्वभूतानियःपश्यतिसपश्यति
रजकव्याधशैलूषवेणुचर्मोपजीविनां १२
योभुंक्तेभुक्तमेतेषांप्राजापत्यंविशोधनं
अगम्यागमनंकृत्वाअभक्ष्यस्यचभक्षणं १३
शुद्धिश्चांद्रायणंकृत्वाअथर्वाणेनतथैवच

और सत्कार से तप का नाश होता है ९

अर्चित और पूजित ब्राह्मण दुही गौके समान खिन्न (उदासीन) होता है फिर वही गौ अमृत (जल) से पैदा हुए तृणों से जैसे पुष्ट होती है १०

इसी प्रकार वही ब्राह्मण जप और होम से फिर पुष्ट होता है जो पराई स्त्रियों को माताके समान और पराये धन को लोष्ठ (ढेला) के समान ११

और सब प्राणियों को अपने समान देखता हैं वही देखता है—रजक—व्याध—नट—और बांस और चमड़े से जो जीविका करते हैं १२

इनके अन्नको जो खाता है वह प्राजापत्य प्रायश्चित करै गमन करने के अयोग्य स्त्री के संग गमन और अभक्ष्य का भक्षण करके १३

और बढई का अन्न खाकर चांद्रायण व्रत से शुद्धि होती

अग्निहोत्रंत्यजेद्यस्तुसनरोवीरहाभवेत् १४
तस्यशुद्धिर्विधातव्यानान्याचांद्रायणादृते
विवाहोत्सवयज्ञेषुअंतरामृतसूतके १५
सद्यःशुद्धिंविजानीयात्पूर्वसंकल्पितंचयत्
देवद्रोण्यांविवाहेचयज्ञेषुप्रततेषुच १६
कल्पितंसिद्धमन्नाद्यं नाशौचंमृतसूतके १७
इत्यापस्तंबीयेधर्मशास्त्रेदशमोऽध्यायः १०
समाप्त

है—जो पुरुष अग्नि होत्र को त्यागता है वह वीरहा (सूरवीर को हत्या करने वाला) होता है १४

उसकी शुद्धि चांद्रायण के बिना नहीं होती—विवाह—उत्सव और यज्ञ में यदि मरण और जन्म सूतक होजाय १५

तो उसी काल में शुद्धि जाननी क्योंकि वह अन्न पहिला संकल्प किया है देव द्रोणी (तीर्थ. वाप्याउ) विवाह और बड़े यज्ञ में १६

मरण और जन्म सूतक में बनाहुआ सिद्ध अन्न (पक्वान्न आदि) अशुद्ध नहीं होता १७

इत्यापस्तंबीये १० अध्यायः
समाप्त

अथसंवर्त्तस्मृतिप्रारं : श्रीगणेशायनमः
संवर्तमेकमासीनंसर्ववेदांगपारगं
ऋषयस्तमुपागम्यपप्रच्छुर्धर्मकांक्षिणः १
भगवन्श्रोतुमिच्छामोद्विजानांधर्मसाधनं
यथावद्धर्ममाचक्ष्वशुभाशुभविवेचनं २
वामदेवादयःसर्वेतंपृच्छंतिमहौजसं
तानब्रवीन्मुनीन्सर्वान्प्रीतात्माश्रूयतामिति ३
स्वभावाद्विचरेद्यत्रकृष्णसारःसदामृगः
धर्मदेशःसविज्ञेयोद्विजानांधर्मसाधनं ४
उपनीतोद्विजोनित्यंगुरवेहितमाचरेत्
स्रग्गंधमधुमांसानिब्रह्मचारीविवर्जयेत् ५

एकाकी बैठे और संपूर्ण वेद और अंगों के पार को जानने वाले संवर्त ऋषि के समीप आकर धर्म के अभिलाषी ऋषयों ने पूछा १

हे भगवन् द्विजों के धर्म का साधन(हेतु)हम सुनाचाहतेहैंशुभ अशुभ का जिससे पृथक्२ ज्ञान हो ऐसे यथार्थ धर्म कोकहो २

ऐसें वाम देवादि ऋषियों ने उस बड़े तेजस्वी को पूछा उनसंपूर्ण मुनियोंको प्रसन्न मन होकर यह बोले कि तुमसुनो ३

जिस देश में काला मृग स्वभाव से सदा विचरे उसको ही धर्म देश जानना और वही द्विजों के धर्मका कारण है ४

यज्ञोपवीत होने पर द्विज प्रति दिन गुरुके हितका आचरण करै और माला—गंध—सहत—मांस इनको ब्रह्मचारी त्याग दे ५

संध्यांप्रातःसनक्षत्रामुपासीतयथाविधि
सादित्यांपश्चिमांसंध्यामर्द्धास्तमितभास्करे ६
तिष्ठन्पूर्वांजपंकुर्यात्सावित्रीमर्कदर्शनात्
आसीनःपश्चिमांसंध्यांसम्यगृक्षविभावनात् ७
अग्निकार्यंचकुर्वीतमेधावीतदनंतरं
ततोधीयीतवेदंतुवीक्षमाणोगुरोर्मुखं ८
प्रणवंप्राक्प्रयुंजीतव्याहृतीस्तदनंतरम्
गायत्रींचानुपूर्व्येणततोवेदंसमारभेत् ९
हस्तौतुसंयतौधार्यौजानुभ्यामुपरिस्थितौ
गुरोरनुमतंकुर्यात्पठन्नान्यमतिर्भवेत् १०

प्रातःकाल की संध्या उससमय विधिसे करै जिस समय आकाश में नक्षत्र (तारे) हों सायंकाल की संध्याको उससमय करे जिस समय सूर्य आधा अस्त (छिपना) होचुका हो ६

खड़ा होकर सूर्य दर्शन पर्यंत प्रातःकाल में गायत्री जप करै और सायंकाल में बैठकर भलीप्रकार नक्षत्रों के उदय पर्यंत—जप करै ७

उसके पीछे ज्ञान वान् पुरुष अग्निहोत्र करै फिर गुरुके मुखको देखता हुआ वेद को पढ़ै ८

पहिले (१) ओंकार को पढ़ै उसके अनंतर सातव्याहृति पढ़ै फिर क्रमसे गायत्री को पढ़ै तिसके पीछे वेद पढने का प्रारंभ करै ९

---

(१) ओंभूः ओंभुवःओंस्वःओंमहः ओंजनःओंतपः ओं सत्यम्ओं तत्स वितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनःप्रचोदयात् ओम्

सायंप्रातस्तुभिक्षेतब्रह्मचारीसदाव्रती
निवेद्यगुरवेश्नीयात्प्राङ्मुखोवाग्यतःशुचिः ११
सायंप्रातर्द्विजातीनामशनंश्रुतिनोदितं
नांतराभोजनंकुर्यादग्निहोत्रीसमाहितः १२
आचम्यैवतुभुंजीतभुक्त्वाचोपस्पृशेद्द्विजः
अनाचांतस्तुयोश्नीयात्प्रायश्चित्तीयतेतुसः १३
अनाचांतःपिबेद्यस्तुयोपिवाभक्षयेद्द्विजः
गायत्र्यष्टसहस्रंतुजपंकुर्वन्विशुद्ध्यति १४
अकृत्वापादशौचंतुतिष्ठन्मुक्तशिखोपिवा

सावधानी से दोनों गोडों के उपर हाथ रखने और गुरु की आज्ञा करनी और पढते समय अन्य जगह बुद्धि को न लगावें १०

व्रतवाला ब्रह्मचारी सदैव सायंकाल और प्रातः काल को भिक्षा मांगे और उस भिक्षा को गुरु को देकर मौन धारता हुआ पूर्वाभि मुख होकर भोजन करे ११

सायंकाल और प्रातःकाल में द्विजातियों का भोजन वेद में कहा है—इस से सावधान अग्निहोत्री बीच में भोजन न करे १२

आचमन करके भोजन करे और भोजन करके भी आच मन करे और जो आचमन किये बिना भोजन करता है वह प्रायश्चित का भागी होता है १३

जो द्विज आचमन किये विना जल पीता है अथवा भोजन करता है वह आठ हजार गायत्री का जप करके भली प्रकार शुद्ध होता है १४

पैरों के धोये विना अथवा चोटी में गांठ बांधे विना अथवा

विनायज्ञोपवीतेनत्वाचांतोप्यशुचिर्भवेत् १५
आचामेद्ब्रह्मतीर्थेनचोपवीतीह्युदङ्मुखः
उपवीतीद्विजोनित्यंप्राङ्मुखोवाग्यतःशुचिः
वहिरंतस्थआचांतएवंशुद्धिमवाप्नुयात् १७
आमणिबंधाद्धस्तौचपादावद्भिर्विशोधयेत्
परिमृज्यद्विरास्यंतुद्वादशांगानिचस्पृशेत् १८
स्नात्वापीत्वातथाक्षुत्वाभुक्त्वास्पृष्ट्वाद्विजोत्तमः
अनेनविधिनासम्यगाचांतःशुचितामियात् १९
शूद्रःशुद्ध्यतिहस्तेनवैश्योदंतेषुवारिभिः

यज्ञोपवीत के विना आचमन करके भी अशुद्ध होता है १५

यज्ञो पवीत को धारण करके उत्तराभि मुख होकर ब्रह्म तीर्थ (यह अंगूठ की जड़ में होता है) से आचमन करे यज्ञो पवीत को धारे हुये और पूर्वाभि मुख वैठा और मौनी द्विज नित्य शुद्ध होता है १६

जल में वैठा जल में और स्थल में वैठा स्थल में आच मन करके शुद्ध होता है इस प्रकार वाहिर और अंतः (जल में) आचमन करके शुद्धि को प्राप्त होता है १७

मणि वंध (गट्टे) तक हाथों और पैरों को जल से धोवे दो वार मुख को पूंछकर वारह १२ (नेत्र आदि) अंगों का स्पर्श करे १८

स्नान--जलपान—छींक—भोजन—अपवित्रवस्तुकास्पर्श करकें इस विधि से भलीप्रकार आचमन करनेसे ब्राह्मण शुद्ध होताहै १९

शूद्र होठों से हाथ का स्पर्श करके वैश्यदांतों में जल के

कंठागतैःक्षत्रियरतुआंचांतःशुचितामियात् २०
आसनारूढपादस्तुकृतावश्यक्रियस्तथा
आरूढपादुकोवापिनशुद्ध्यतिकदाचन २१
उपासीतनचेत्संध्यामग्निकार्यंनवाकृतं
गायत्र्यष्टसहस्रंतुजपेत्स्नात्वासमाहितः २२
सूतकान्नंनवश्राद्धंमासिकान्नंतथैवच
ब्रह्मचारीतुयोश्नीयात्त्रिरात्रेणैवशुद्ध्यति २३
ब्रह्मचारीतुयोगच्छेत्स्त्रियंकामप्रपीडितः
प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रमथत्वेकंसुयंत्रितः २४
ब्रह्मचारीतुयोश्नीयान्मधुमांसंकथंचन
प्राजापत्यं तुकृत्वासौमौंजीहोमेनशुद्ध्यति २५

स्पर्श से क्षत्रिय कंठमें जल जानेसे आचमनसे शुद्ध होता है २०

आसन पर पैर रखके और अवसक्थिक गोड़ांको उठाये हुए) होकर और खड़ा ऊंपर चढकर आचमन करनेसे कभी भी शुद्ध नहीं होता २१

जिसने संध्या और अग्निहोत्र न किया हो वह स्नान करके सावधानी से अठारह गायत्री जपे २२

सूतक का अन्न नवश्राद्ध और मासिक श्राद्ध का अन्न जो ब्रह्मचारी खाता है वह त्रिरात्र में शुद्ध होता है २३

काम देव से मोह को प्राप्त होकर जो ब्रह्मचारी स्त्रीका संगकरता है वह सावधान होकर एक प्राजापत्य कृच्छ्र करे२४

जो ब्रह्मचारी कदाचित् सहत और मांस को खाता है वह प्रजापत्य व्रत करके मौंजी होम [जो यज्ञोपवीत में होता है] करके शुद्ध होता है २५

निर्वपेत्तुपुरोडाशंब्रह्मचारीतुपर्वणि
मंत्रैःशाकलहोमांगैरग्नावाज्यंचहोमयेत् २६
ब्रह्मचारीतुयःस्कंदेत्कामतःशुक्रमात्मनः
अवकीर्णिव्रतंकुर्यात्स्नात्वाशुद्ध्येदकामतः २७
भिक्षाटनमटित्वातुस्वस्थोह्येकान्नमश्नुते
अस्नात्वाचैवयोभुंक्तेगायत्र्यष्टशतंजपेत् २८
शूद्रहस्तेनयोभुंयात्पानीयंवापिबेत्क्वचित्
अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति २९
भुक्त्वापर्युषितोच्छिष्टंभुक्त्वान्नंकेशदूषितम्
अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ३०
शूद्रस्यभाजनेभुक्त्वाभुक्त्वावाभिन्नभाजने

ब्रह्मचारी पर्व के दिन पुरोडाश दे और शाकल होम के मंत्रों से घृत का होम करे २६

यदि ब्रह्मचारी जान बूझ कर अपने वीर्य को निकासे तो अव कीर्णि के प्रायश्चित्त से, और अज्ञान से वीर्य निकस जाय तो स्नान करके शुद्ध होता है २७

जो भीक मांग कर अपनी स्वस्थ अवस्था में एक का अन्न खाता है अथवा जो विना स्नान किये खाता है वह आठ सं ८०० गायत्री जपै २८

जो शूद्र के हाथ का भोजन अथवा पानी पीता है वह अहोरात्र उपवास करके पंचगव्य से शुद्ध होता है २९

वासी उच्छिष्ट और जिसमें केशपड़े हों ऐसे अन्न को खा कर अहोरात्र उपवास करके पंचगव्य से शुद्ध होता है ३०

अहोरात्रोषितोभूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ।
दिवास्वपितियःस्वस्थोब्रह्मचारीकथंचन
स्नात्वासूर्यंसमीक्षेतगायत्र्यष्टशतंजपेत् ३२
एषधर्मःसमाख्यातःप्रथमाश्रमवासिनां ।
एवंसंवर्तमानस्तुप्राप्नोतिपरमांगतिं ३३
अतोद्विजःसमावृतःसवर्णांस्त्रियमुद्वहेत्
कुलेमहतिसंभूतांलक्षणैस्तुसमन्वितां ३४
ब्राह्मेणैवविवाहेनशीलरूपगुणान्वितां
अतःपंचमहायज्ञान्कुर्यादहरहर्द्विजः ३५

शूद्रों के बरतन में अथवा टूटे बरतन में खाकर अहोरात्र उपवास करके पंचगव्य पीने से शुद्ध होता है ३१

जो ब्रह्मचारी स्वस्थअवस्थामें दिनमें कदाचित् सोवेतो स्नान करके सूर्य का दर्शन करै और आठ सौ ८०० गायत्री जपे ३२

यह धर्म प्रथम आश्रम वासि (ब्रह्मचारी) यों का कहा जो इसके अनुसार वर्तता है वह परम गतिको प्राप्त होता है ३३

इस ब्रह्मचर्य आश्रम से समावृत्त (लौटा) हुआ द्विज ऐसी स्त्री को बिवाहै जो अपने वर्णकी हो अच्छे कुल में पैदा हुई हो—और शुभलक्षणों से युक्त हो ३४

और शील रूप गुण इनसे भी युक्त हो और उस स्त्री को ब्राह्म (१) विवाह से विवा है और इसके अनंतर प्रति दिन पांच महा यज्ञ द्विज करै ३५

---

(१) उत्तम वस्त्र और भूषण पहनाकर विद्यावान् और सुशील लड़के को बुलाकर कन्या को देना—यह विवाह ब्राह्म होता है ॥

नहापयेत्तुतान्शक्तःश्रेयस्कामःकदाचन
हानिंतेषांतुकुर्वीतसदामरणजन्मनोः ३६
विप्रोदशाहमासीतदानाध्ययनवर्जितः
क्षत्रियोद्वादशाहानिवैश्यःपंचदशैवतु३७
शूद्रःशुद्ध्यतिमासेनसंवर्त्तबचनंयथा
प्रेतायान्नंजलंदेयंस्नात्वातद्गोत्रजैःसह ३८
प्रथमेन्हितृतीयेचसप्तमेनवमेतथा
चतुर्थेहनिकर्तव्यमस्थिसंचयनंद्विजैः ३९
ततःसंचयनादूर्ध्वमंगस्पर्शोविधीयते
चतुर्थेहनिविप्रस्यषष्ठेवैक्षत्रियस्यच ४०

कल्याण का अभिलाषी द्विज उनको कदाचित् भी न त्यागे—परन्तु जन्म और मरण सूतक में उनको कभी न करे३६

उक्त सूतक में दान और पढ़ने से रहित दशदिन तक क्षत्रिय बारह दिन तक वैश्य पंद्रह दिन तक रहै ३७

और संबर्त ऋषिके वचन के अनुसार शूद्र एक महीने में शुद्ध होता है और संपूर्ण सगोत्री मिलिकर प्रेतको अन्न और जल दें ३८

पहिले तीसरे—सातवें—नौमे—अथवा चौथे दिन में द्विज अस्थि संचय करें ३९

फिर अस्थि संचयन के पीछे देह का किसी के संग स्पर्श करें अर्थात् पहिले किसी को न छुवें चौथे दिन में ब्राह्मण का और छटे दिन में क्षत्रिय का ४०

आठवें दिन वैश्यका और दश में दिन शूद्रका स्पर्श(छूना)

अष्टमेदशमेचैवस्पर्शःस्याद्वैश्यशूद्रयोः
जातस्यापिविधिर्दृष्टएवमहर्षिभिः ४१
दशरात्रेणशुद्ध्येतविप्रोवेदविवर्जितः
जातेपुत्रेपितुःस्नानंसचैलंतुविधीयते ४२
माताशुद्ध्येद्दशाहेनस्नानात्तुस्पर्शनंपितुः
होमंतत्रप्रकुर्वीतशुष्कान्नेनफलेनवा ४३
पंचयज्ञविधानंतुनकुर्यान्मृत्युजन्मनोः
दशाहात्तुपरंसम्यग्विप्रोधीयीतधर्मवित् ४४
दानंतुविविधंदेयमशुभानांविनाशनं
यद्यदिष्टतमंलोकेयच्चास्यदयितंभवेत् ४५

कहा है—और महान् ऋषियों ने जन्म सूतक में यही विधि देखी है ४१

जिसने वेद न पढ़ा हो ऐसा ब्राह्मण दशरात्र में शुद्ध होता है पुत्र के पैदा होने पर पिता को सचैल स्नान करना कहा है ४२

माता दश दिन में शुद्ध होती है और पिता का स्नान करने से भी स्पर्श करना उचित है और जन्म सूतक में सूके अन्न वा फल से होम करै ४३

मरण—और जन्म सूतक में पांच यज्ञों की विधि न करै दशदिन के अनंतर धर्म को जानने वाला ब्राह्मण भली प्रकार पढ़ै ४४

अशुभों (पापों) का नाश करने वाला अनेक प्रकार का दानदे—और जो २ जगत् में इस मनुष्य को इष्ट और प्यारा हो ४५

ततद्गुणवतेदेयंतदेवाक्षयमिच्छता
नानाविधानिद्रव्याणिधान्यानिसुबहूनिच ४६
समुद्रेयानिरत्नानिनरोविगतकल्मषः
दत्वागुणाढ्यविप्रायमहतींश्रियमाप्नुयात् ४७
गंधमाभरणंमाल्यंयःप्रयच्छतिधर्मवित्
ससुगंधःसदाहृष्टोयत्रतत्रोपजायते ४८
श्रोत्रियायकुलीनायाभ्यर्थिनेहिविशेषतः
यद्दानंदीयतेभक्त्यातद्भवेत्सुमहत्फलम् ४९
आहूयशीलसंपन्नंश्रुतेनाभिजनेनच
शुचिंविप्रंमहाप्राज्ञंहव्यकव्यैःसुपूजयेत् ५०

अपने अक्षय (जिसका नाश न हो) पुण्य की इच्छा करने ले पुरुष को वही २ गुणवान् को देनी—नाना प्रकार के द्रव्य ोर बहुत से अन्न ४६

मुद्रा और रत्न इनको पाप रहित मनुष्य गुण वाले ब्राह्मण को देकर बड़ी लक्ष्मी को प्राप्त होता है ४७

गंध—भूषण—फूल—इनको धर्म का ज्ञाता देकर सुगंध सहित और सदा प्रसन्न जहां तहां पैदा होता है ४८

जो दान वेद पाठी और कुलीन और बिशेष कर अभ्यागत को दिया जाता है वह बड़े फल को देता है ४९

सुशील—वेद जानने वाले और कुलीन और शुद्ध और अत्यंत बुद्धिमान ब्राह्मण को बुलाकर हव्य(देवताओं के अन्न)से और कव्य (पितरों के) अन्न से पूजे ५०

नानाविधानिद्रव्याणिरसवंतीप्सितानिच
श्रेयस्कामेनदेयानितदेवाक्षयमिच्छता ५१
वस्त्रदातासुवेषःस्याद्रूप्यदोरूपमेवच
हिरण्यदःसमृद्धिंचतेजश्चायुश्चविंदति ५२
भूताभयप्रदानेनसर्वान्कामानवाप्नुयात्
दीर्घमायुश्चलभतेसुखीचैवसदाभवेत् ५३
धान्योदकप्रदायीचसर्पिदःसुखमेधते
अलंकृतस्त्वलंकारंदाताप्नोतिमहत्फलम् ५४
फलमूलानिविप्रायशाकानिविविधानिच
सुरभीणिचपुष्पाणिदत्वाप्राज्ञस्तुजायते ५५

नाना प्रकार के द्रव्य जो रसवाले हों और लेनेवाले को जो वांच्छित हों वे २ ही कल्याण और अक्षय फल के पुरुष को देने ५१

वस्त्र के दाता का उत्तम वेष और चांदी के दाता का सुदंर रूप होता है और सोने के दाता को धनकी वृद्धि और आयुः (अवस्था) मिलती है ५२

प्राणियों को अभयदान देने से संपूर्ण कामना—वड़ी अवस्था और सदा सुख मिलते हैं ५३

अन्न जल घी का देने वाला सुख भोगता है और जो भूषण वालाहो वह भूषण को देकर वड़े फल को प्राप्त होता है ५४

फल—मूल—नाना प्रकार के शाक (भाजी) और सुगन्ध वाले फूल—इन्हें ब्राह्मण को देकर पंडित होता है ५५

तांबूलंचैवयोदद्याद्ब्राह्मणेभ्योविचक्षणः
मेधावीसुभगःप्राज्ञोदर्शनीयश्चजायते ५६
पादुकोपानहौछत्रंशयनान्यासनानिच
विविधानिचयानानिदत्वाद्रव्यपतिर्भवेत् ५७
दद्याद्यःशिशिरेवन्हिंबहुकाष्टंप्रयत्नतः
कायाग्निदीप्तिप्राज्ञ वरूपंसौभाग्यमाप्नुयात् ५८
औषधंस्नेहमाहारंरोगिणोरोगशांतये
दत्वास्याद्रोगरहितःसुखीदीर्घायुरेवच ५९
इंधनानिचयोदद्याद्विप्रेभ्यःशिशिरागमे
नित्यंजयतिसंग्रामेश्रियायुक्तस्तुदीप्यते ६०

जो बुद्धिमान् पुरुष ब्राह्मणों को पान देता है वह बुद्धिमान् पंडित और दर्शनीय और भाग्यशाली होता है ५६

खड़ाउं—जूता—छत्री—शय्या—आसन और नाना प्रकार के यान (सवारी) इनको देकर द्रव्य पति (धनी) होता है ५७

जो शिशिर (जाड़े) में अग्नि बहुत सा काठ प्रयत्न से देता है वह जठराग्नि की दीप्ति वाला और पंडित और रूपवान् और भाग्यवान् होता है ५८

औषध स्नेह [घी] मिला भोजन इनको रोगियोंके रोग दूर करने के लिये देकर रोगरहित—और सुखी और दीर्घ [बड़ी] अवस्था वाला होता है ५९

जो पुरुष जाड़े के दिनों में ब्राह्मणों को इंधन देता है वह युद्ध में शत्रुओं को जीतता है और लक्ष्मी युक्त होकर दिपता है ६०

अलंकृत्यतुयःकन्यांवरायसदृशायवै
ब्राह्मेणतुविवाहेनदद्यात्तांतुसुपूजितां ६१
सकन्यायाःप्रदानेनश्रेयोविंदतिपुष्कलं
साधुवादंसर्वेसद्भिःकीर्तिंप्राप्नोतिपुष्कलां ६२
ज्योतिष्टोमातिरात्राणांशतंशतगुणीकृतं
प्राप्नोतिपुरुषोदत्वाहोममंत्रैश्चसंस्कृतां ६३
तांदत्वातुपिताकन्यांभूषणाच्छादनाशनैः
पूजयन्स्वर्गमाप्नोतिनित्यमुत्सववृद्धिषु ६४
रोमकालेतुसंप्राप्तेसोमोभुंक्तेथकन्यकां
रजोदृष्ट्वातुगंधर्वाःकुचौदृष्ट्वातुपावकः ६५

जो भली प्रकार पूजित कन्या को भूषण और वस्त्र पहना कर कन्या के समान वरको ब्रह्म विवाह से देता है ६१

वह कन्या के देने से बड़े कल्याण को प्राप्त होता है और सज्जनों में साधुवाद [भलाई] और बड़ी कीर्ति को प्राप्त होता है ६२

होम के मंत्रोंसे संस्कार को प्राप्त हुई कन्या को देकर दश सहस्र ज्योतिष्टोम और आतिरात्र यज्ञ के फ़ल के फल को प्राप्त होता है ६३

भूषण और वस्त्रों से कन्या की उत्सव और वृद्धि (पुत्र जन्म) में नित्य पूजा करता हुआ पिता स्वर्ग को प्राप्त होता है ६४

रोम फूटने के समय कन्या को चंद्रमा और जो दर्शन के समय गंधर्व और कुचाओं को देखकर अग्नि—भोगता है ६५

अष्टवर्षाभवेद्गौरीनवनर्षातुरोहिणी
दशवर्षाभवेत्कन्या अतऊर्ध्वंरजस्वला ६६
माताचैवपिताचैवज्येष्ठोभ्रातातथैवच
त्रयस्तेनरकंयांतिदृष्ट्वाकन्यांरजस्वलां ६७
तस्माद्विवाहयेत्कन्यांयावन्नर्तुमतीभवेत्
विवाहोह्यष्टवर्षायाःकन्यायास्तुप्रशस्यते ६८
तैलामलकदाताचस्नानाभ्यंगप्रदायकः
नरःप्रहृष्टश्चासीतसुभगश्चोपजायते ६९
अनड्वाहौतुयोदद्याद्द्विजेसीरेणसंयुतौ
अलंकृत्ययथाशक्त्याधूर्वहौशुभलक्षणौ ७०

आठ वर्ष की कन्या गौरी और नौ वर्ष की रोहिणी—और दश वर्ष की कन्या और इसके पीछे रजस्वला होती है ६६

माता पिता जेठाभाई ये तीनों रजस्वला कन्या को देखकर नरक में जाते हैं ६७

तिससे जब तक रजस्वला न हो तब तक ही कन्या का विवाह करदे और आठ वर्ष की कन्या का विवाह श्रेष्ठ कहा है ६८

तैल—आंवले—स्नान—उबटना—इनको जो देता है वह मनुष्य सदा आनंद में मग्न रहता है और भाग्यवान् होता है ६९

जो पुरुष जोतने के योग्य और अच्छे लक्षण वाले हल सहित दो बैल यथाशक्ति अलंकृत (सजाना) करके ब्राह्मण को देता है ७०

सर्वपापविशुद्धात्मासर्वकामसमन्वितः
वर्षाणिवसतेस्वर्गेरोमसंख्याप्रमाणतः ७१
धेनुंचयोद्विजेदद्यादलंकृत्यपयस्विनीं
कांस्यवस्त्रादिभियुक्तांस्वर्गलोकेमहीयते ७२
भूमिसंस्यवतींश्रेष्टांब्राह्मणेवेदपारगे
गांदत्वार्द्धप्रसूतांचस्वर्गलोकेमहीयते ७३
यावंतिसस्यमूलानिगोरोमाणिचसर्वशः
नरस्तावंतिवर्षाणिस्वर्गलोकेमहीयते ७४
योददातिशफैरौप्यैर्हेमशृङ्गीमरोगिणीं
सवत्सांवाससावीतांसुशीलांगांपयस्विनीं ७५

सब पापों से शुद्ध होकर सब कामना सहित वह पुरुष उतने वर्ष तक स्वर्ग में बसता है जितने रोम बैलों के देहपर हों ७१

जो दूध देती और कांसी का पात्र (लोटा) और वस्त्र सहित गौ को भूषित (सजा) करके ब्राह्मण को देता है वह स्वर्ग लोक में पुजता है ७२

अन्न जिस में खड़ा हो ऐसी श्रेष्ठ पृथ्वी और आधी व्यानी गौ इन्हें वेद के पार जानने वाले ब्राह्मण को देकर स्वर्ग लोक में पुजता है ७३

और जितनी अन्नके पोदे की जड़ हैं और जितनी गौ को रोम हैं उतने बर्ष वह मनुष्य स्वर्ग में पुजता है ७४

चांदी के खुरों वाली और सोने के सींग वाली हो और जिसके बछड़ा अथवा बछिया हो और जिसे कोई रोग न हो और जो वस्त्रसे ढकी हो और जो सुशील हो और दूध देती हो ऐसी गौ को जो देता है ७५

तस्यांयावंतिरोमाणिसवत्सायांदिबंगत
तावंतिवत्सरांतानिसनरोब्रह्मणोंतिके ७६
योददातिबलीवर्दमुक्तेनविधिनाशुभम्
अव्यंगगोप्रदानेनदत्तंदशगुणंफलं ७७
अग्नेरपत्यंप्रथमंसुवर्णं
भूर्वैष्णवीसूर्यसुताश्चगावः
लोकास्त्रयस्तेनभवंतिदत्ताः
यःकांचनंगांचमहींचदद्यात् ७८
सर्वेषामेवदानानामेकजन्मानुगंफलं
हाटकक्षितिगोरीणांसप्तजन्मानुगंफलं ७९
अन्नदस्तुभवेन्नित्यंसुतृप्तोनिभृतःसदा
अंबुदश्चसुखीनित्यंसर्वकर्मसमन्वितः ८०

उस गौ और बछड़े के जितने रोम हैं उतने ही वर्षों के अंत तक वह मनुष्य ब्रह्मा के समीप रहता है ७६

और पूर्वोक्त विधि से जो मनुष्य बैल को देता है वह सावधान गौ के दान से दशगुने फल को प्राप्त होता है ७७

सुवर्ण प्रथम पुत्र अग्नि का है और पृथ्वी वैष्णवी (विष्णु की पुत्री) है और गौ सूर्य की पुत्री हैं इससे जो मनुष्यसोना गौ--पृथ्वी इनको देताहै वह त्रिलोकी को ही मानोदेता है७८

संपूर्ण दानों का फल अगले एकही जन्म में मिलता है और पृथ्वी गौ इनका फल सात जन्म तक मिलता है ७९

अन्नका दाता नित्य तृप्त और पुष्ट रहता है और जल का दाता सुखी और सब कर्मों से युक्त रहता है ८०

सर्वेषामेवदानानामन्नदानंपरंस्मृतं
सर्वेषामेवजंतूनांयतस्तज्जीवितंपरं ८१
यस्मादन्नात्प्रजाःसर्वाःकल्पेकल्पेसृजत्प्रभुः
तस्मादन्नात्परंदानंविद्यतेनहिकिंचन ८२
अन्नाद्भूतानिजायंतेजीवंतिचनसंशयः
मृत्तिकागोशकृद्दर्भानुपवीतंतथोत्तरम् ८३
दत्वागुणाढ्यविप्रायकुलेमहतिजायते
मुखवासंतुयोदद्याद्दंतधावनमेवच ८४
शुचिगंधसमायुक्तोऽवाग्दुष्टस्सदाभवेत्
पादशौचंतुयोदद्यात्तथातुगुदलिंगयोः ८५

सब दानों में अन्न का दान उत्तम कहा है क्योंकि सब प्राणियों का अन्न ही जीवित (जीना) है ८१

जिससे ब्रह्मा ने कल्प २ में अन्न से ही संपूर्ण प्रजा रची तिससे उत्तम और कोई दान नही है ८२

अन्न से प्राणी होते हैं और अन्न से ही जीवते हैं इसमें संशय नही मिट्टी गोबर कुशा और यज्ञोपवीत उत्तम ८३

इनको अनेक गुण वाले ब्राह्मण को देकर बड़े कुल में पैदा होता है जो मनुष्य ब्राह्मण को मुख वास (पान वा सुपरी वा इलायची) अथवा दतोन देता है ८४

वह शुद्ध गंधवाला होता है और कभी भी वाग्दुष्ट (तोतला वा गूंगा) नही होता जो पुरूष पैर गुदालिंग इनके शौच के लिये जल ८५

यःप्रयच्छतिविप्रायशुद्धबुद्धिःसदाभवेत्
औषधंपथ्यमाहारंस्नेहाभ्यंगंप्रतिश्रयं ८६
यःप्रयच्छतिरोगिभ्यःसभवेदव्याधिवर्जितः
गुडमिक्षुरसंचैवलवणंव्यंजनानिच ८७
सुरभीणिचपानानिदत्वात्यंतंसुखीभवेत
दानैश्चविविधैःसम्यक्फलमेतदुदाहृतं ८८
विद्यादानेनसुमतिर्ब्रह्मलोकेमहीयते
अन्योन्यान्नप्रदाविप्राअन्योन्यप्रतिपूजकाः ८९
अन्योन्यंप्रतिगृह्णंतितारयंतितरंतिच
दानान्येतानिदेयानितथान्यानिविशेषतः ९०
दानार्हंकृपणार्थिभ्यःश्रेयस्कामेनधीमता

ब्राह्मण को देता है वह सदा शुद्ध बुद्धि होता है जो औषध—पथ्य भोजन तेल का उबटना रहने को स्थान ८६

इनको रोगियों को जो पुरुष देता है वह व्याधि से रहित रहता है—गुड़गांडे का रस लवण और व्यंजन ८७

और सुगंध वाले पान इनको देकर अत्यंत सुखी रहता है यह नाना प्रकार के दानों का फल कहा ८८

विद्या के दान से अच्छी बुद्धि वाला पुरुष ब्रह्मलोक में पुजता है परस्पर अन्न के दाता और परस्पर पूजा के कर्ता ८९

और परस्पर दान लेने वाले ब्राह्मण औरों को पार करते हैं और आप भी पार होते हैं ये [पूर्वोक्त] दान और अन्य भी दान विशेष कर देने ९०

दीन अभ्यागतों को कल्याण का अभिलाषी पुरुष दान

ब्रह्मचारियतिभ्यस्तुबपनंयस्तुकारयेत् ६१
नखकर्मादिकंचैवचक्षुष्मान्जायतेनरः
देवागारेद्विजातीनांदीपंदद्याच्चतुष्पथे ६२
मेधावीज्ञानसंपन्नश्चक्षुष्मान्ससदाभवेत्
नित्येनैमित्तिकेकाम्येतिलान्दत्त्वास्वशक्तितः ६३
प्रजावान्पशुमांश्चैवधनवान्जायतेनरः
योयदाभ्यर्थितोविप्रैर्यद्यत्संप्रतिपादयेत् ६४
तृणकाष्ठादिकंचैवगोप्रदानसमंभवेत्
नवैशयीततमसानयज्ञेनानृवतंदेत् ६५
अपवदेन्नविप्रस्यनदानंपरिकीर्तयेत्

है [शास्त्रोक्त से अर्था] दे - ब्रह्मचारी और सन्यासी का जो मुंडन करवाता है ६१

अथवा नख कटवाता है वह मनुष्य नेत्रों वाला होता है देवता और ब्राह्मणों के मंदिर में और चतुष्पथ [चौराहा] में जो दीपक देता है ६२

वह सदा बुद्धिमान् और ज्ञानी और नेत्रों वाला होता है नित्य और नैमित्तिक और काम्य कर्म में शक्ति के अनुसार तिलों को देकर ६३

मनुष्य प्रजा — पशु — धन — वाला होता है — जो पुरुष ब्राह्मणों के मांगने से जिस समय जो २ देदे ६४

तृण वा काठ आदि वह सब गोदान के तुल्य है अंधकार में न सोवे और यज्ञ में झूठ न बोले ६५

ब्राह्मण की निंदा न करे और देकर कहै नहीं झूठ से—

यज्ञोऽनृतेनक्षरतितपःक्षरतिविस्मयात् ९६
आयुर्विप्रापवादेनदानंचपरिकीर्तनात्
चत्वार्येतानिकर्माणिसंध्यायांवर्जयेद्बुधः ९७
आहारंमैथुनंनिद्रांतथासंपाठमेवच
आहाराज्जायतेव्याधिगर्भोवैरौद्रमैथुनात् ९८
निद्रातोजायतेऽलक्ष्मीसंपाठादायुषःक्षयः
ऋतुमतींतुयोभार्यांसंनिधौनोपगच्छति ९९
तस्यारजसितन्मासंपितरस्तस्यशेरते
कृत्वागृह्याणिकर्माणिस्वभार्यापोषणेरतः१००
ऋतुकालाभिगामीचप्राप्नोतिपरमांगतिं

यज्ञ और अभिमान से तप नष्ट होते हैं ९६

ब्राह्मण की निंदा से अवस्था और कथन से दान नष्ट होते हैं—ये चार काम ज्ञानवान् संध्या समय न करै ९७

भोजन—मैथुन—सोना और पठना भोजन से व्याधि और मैथुन से रौद्र (भयंकर गर्भ) ९८

सोने से दरिद्रता और पठने से अवस्था का नाश होताहै जो ऋतु वाली स्त्री के समीप नहीं जाता ९९

उस मनुष्य के पिता उस महीने में उस स्त्री के रज में सोते हैं जो मनुष्य गृहस्थ के कर्म करके अपनी स्त्री के पोषण में तत्पर हैं १००

और ऋतु काल में स्त्री संग का कर्त्ता परमगति को प्राप्त

उषित्वैवंगृहेविप्रोद्वितीयादाश्रमात्परः १०१
वलीपलितसंयुक्तस्तृतीयंतुसमाश्रयेत्
वनंगच्छेत्ततप्राज्ञःसभार्यःस्त्वेकएववा १०२
गृही:वाचाग्निहोत्रंचहोमंतत्रनहापयेत्
कृत्वाचैवपुरोडाशंवन्यैर्मेध्यैर्यथाविधि १०३
भिक्षांचभिक्षवेदद्याच्छाकमूलफलादिभिः
कुर्यादध्ययनंनित्यमग्निहोत्रपरायणः १०४
इष्टिंपार्वायणीयांतुप्रकुर्यात्प्रतिपर्वसु
उषित्वैवंवनेविप्रोविधिज्ञःसर्वकर्मसु १०५

होता है इस प्रकार दूसरे आश्रम में तत्पर ब्राह्मण घरमें बस कर १०१

वली और पलित(सपेद केश] से युक्त हुआ तीसरे आश्रम (वानप्रस्थ] का आश्रय ले फिर एका की अथवा स्त्रीसहित वन में चला जाय १०२

और वन में अग्नि होत्रको ग्रहण करके होम को न त्यागे और वन के कंद मूलों से पुरोडाश को विधि से बनाकर १०३

शाक मूल फलादिक को भिखारी को भीक दे—और अग्नि होत्र में तत्पर होकर नित्य अध्ययन [पठना] करै १०४

सब पर्वों में पर्व[मावस आदि]में करने योग्य इष्टि[यज्ञ वा श्राद्ध] करै संपूर्ण कर्मों की विधि जानने वाला ब्राह्मण इस प्रकार वन में बस कर १०५

चतुर्थमाश्रमंगच्छेज्जितक्रोधोजितेंद्रियः
अग्निमात्मनिसंस्थाप्यद्विजःप्रव्रजितोभवेत् १०६
वेदाभ्यासरतोनित्यमात्मविद्यापरायणः
अष्टौभिक्षाःसमादायसमुनिःसप्तपंचवा १०७
अद्भिःप्रक्षाल्यताःसर्वाभुंजीतसुसमाहितः
अरण्येनिर्जनेतत्रपुनरासीतमुक्तवान् १०८
एकाकीचिंतयेन्नित्यंमनोवाक्कायकर्मभिः
मृत्युंचनाभिनंदेतजीवितंवाकथंचन १०९
कालमेवप्रतीक्षेतयावदायुःसमाप्यते
संसेव्यचाश्रमान्सर्वान्जितक्रोधोजितेंद्रियः ११०

और क्रोध और इंद्रियों को जीत कर चौथे आश्रम (संन्यास) को ले और आत्मा में अग्नि को रखकर संन्यासी होजाय १०६

वेद के अभ्यास में और आत्मविद्या में तत्पर और बिचार वाला वह संन्यासी आठ वा सात वा पांच भिक्षा ग्रहण कर के १०७॥

और उन भिक्षाओं को जल से प्रक्षालन (छिड़कना) कर के साव धानी से सब भोजन करै और फिर जहां कोई जन न हो ऐसे उस वन में मुक्ति का अभिलाषी संन्यासी बैठै १०८

मन वाणी देह और कर्म से एकाकी नित्य ब्रह्मका विचार करै और मरण और जीने की कभीभी प्रशंसा न करै १०९

इस प्रकार इतने अवस्था समाप्त हो काल की प्रतीक्षा करै (वाट देखे) क्रोध और इंद्रियों को जीतकर ब्राह्मण चारों आश्रमों का सेवन करके ११०

ब्रह्मलोकमवाप्नोतिवेदशास्त्रार्थविद्द्विजः
आश्रमेषुचसर्वेषुप्रोक्तोयंप्राश्रिकोविधिः १११
अतःपरंप्रवक्ष्यामिप्रायश्चित्तविधिंशुभं
ब्रह्मघ्नश्चसुरापश्चस्तेयीचगुरुतल्पगः ११२
महापातकिनस्त्वेतेतत्संयोगीचपंचमः
ब्रह्मघ्नश्चवनंगच्छेद्वल्कवासाजटीध्वजी ११३
वन्यान्येवफलान्यश्नन्सर्वकामविवर्जितः
भिक्षार्थीविचरेद्ग्रामंवन्यैर्यदिनजीवति ११४
चातुर्वर्ण्येचरेद्भैक्ष्यंवद्धांगीसंयतःसदा
भिक्षास्त्वेवंसमादायवनंगच्छेत्ततःपुनः ११५

और वेद और शास्त्रार्थका जानने वाला द्विज ब्रह्मलोक को प्राप्त होता है—यह चारों आश्रमों के प्रश्न (जो तुमने पूछा था) की विधि कही १११

इससे आगे प्रायश्चित्त की शुभविधि को कहता हुं ब्रह्म हत्यारा मदिरा पीने वाला चोर गुरू की शय्या में गमन करने वाला ११२

ये चारों और पांचवा इनका संगी महापातकी होते हैं ब्रह्महत्यारा वन में चला जाय और वक्कल जटा और ध्वजा (एक हत्यारे का चिन्ह) इनको रक्खै ११३

संपूर्ण कामों को छोड़ कर वनके ही फल मूल खाय यदि उनसे न जीवे तो भिक्षा के लिये गांव में विचरे ११४

चारों वर्णों में भिक्षा मांगे और हत्या के चिन्ह को बांधे रहै और मन को सदा वश में रक्खै इस प्रकार भिक्षा लेकर फिर वन में चला जाय ११५

वनवासीसपापःस्यात्सदाकालमतंद्रितः
ख्यापयन्मुच्यतेपापाद्ब्रह्महापापकृत्तमः ११६
अनेनतुविधानेनद्वादशाब्दव्रतंचरेत्
सन्नियम्येंद्रियग्रामंसर्वभूतहितेरतः ११७
ब्रह्महत्यापनोदायततोमुच्येतकिल्बिषात्
अतःपरंसुरापस्यनिष्कृतिंश्रोतुमर्हथ ११८
गौडीमाध्वीचपैष्टीचविज्ञेयात्रिविधासुरा
यथैवैकातथासर्वानपातव्याद्विजोत्तमैः
सुरापस्तुसुरांतप्तांपिबेत्तत्पापमोक्षकः
गोमूत्रमग्निवर्णांवागोमयंवातथाविधं १२०

वह पापी (हत्यारा) आलस्यको छोड़ कर सदा वन में ही रहै वड़ा भी पापी अपने पाप को प्रसिद्ध करता हुआ पाप से छूटता है ११६

इस रीति से वारह वर्ष का व्रत करै और सब इंद्रियों को रोके और सब भूतों के हित में तत्पर रहैं ११७

ब्रह्महत्या के दूर करने के लिये पूर्वोक्त आचरण करै फिर पाप से छूटता है अब मदिरा पीने वाले का प्रायश्चित्त सुनो ११८

गौड़ी (गुडकी) माध्वी [सहत वाम हुआ की] पैष्टी (पिसी दवा वा चन आदि की) यह तीन प्रकार की मदिरा होती है इन में जैसी एक ऐसी सब हैं इससे ब्राह्मण मदिरा को न पीवे ११९

मदिरा पीने वाला ब्राह्मण उसके पीने के पाप से छूटा चाहै तो तपाई मदिरा अथवा अग्नि से तपाये गोमूत्र वा गोवर को पीवे १२०

घृतंवात्रीणिपेयानिसुरापोव्रतमाचरेत्
मुच्यतेतेनपापेनप्रायश्चित्तेकृतेसति १२१
अरण्येवावसेत्सम्यक्सर्वकामविवर्जितः
चांद्रायणानिवात्रीणिसुरापव्रतमादिशेत् १२२
एवंशुद्धिःसुरापस्यभवेदितिनसंशयः
मद्यभांडोदकंपीत्वापुनःसंस्कारमर्हति १२३
स्तेयंकृत्वासुवर्णस्यस्तेयंराज्ञेनिवेदयेत्
ततोमुशलमादायस्तेनंहन्यात्सकृन्नृपः १२४
यदिजीवतिसस्तेनस्ततःस्तेयाद्विमुच्यते
अरण्येचीरवासावाचरेद्ब्रह्महणोव्रतं १२५

अथवा उष्ण घी पीवे ये तीन पीने योग्य हैं फिर मदिरा पीने का व्रत करै प्रायश्चित्त किए पीछे उस पापसे छूटता है १२१

अथवा भली प्रकार सब कामों को छोड़ कर बन में बसे अथवा मदिरा पीने के तीन चांद्रायण प्रायश्चित्त करै १२२

इस प्रकार मदिरा पीने वालेकी शुद्धि होतीहै इसमें संदेह नहीं है मदिरा के पात्र का जल पीकर फिर संस्कार के योग्य होता है १२३

सोने की चोरी करके उस चोरी को राजा को देदे फिर राजा मुशल लेकर एक वारही चोर को मारदे १२४

यदि वह चोर जीजाय तो चोरी के पापसे छुट जाता है अथवा बन में जाकर पड़े हुए वस्त्र पहन कर ब्रह्म हत्या का व्रत करै १२५

एवंशुद्धिःकृतास्तेयेसंवर्तबचनंयथा
गुरुतल्पेशयानस्तुतप्तेस्वप्यादयोमये १२६
समालिंगत्स्त्रियंवापिदीप्तांकार्ष्णायसीकृतां
चांद्रायणानिकुर्याच्चचत्वारित्रीणिवाद्विजः १२७
मुच्यतेचततःपापात्प्रायश्चित्तेकृतेसति
एभिःसंपर्कमायातियःकश्चित्पापमोहितः १२८
तत्तत्पापविशुद्ध्यर्थंतस्यतस्यव्रतंचरेत्
क्षत्रियस्यबधंकृत्वात्रिभिःकृच्छ्रैर्विशुद्ध्यति १२९
कुर्याच्चैवानुरूपेणत्रीणिकृच्छ्राणिसंयतः
वैश्यहत्यांतुसंप्राप्तःकथंचित्काममोहितः १३०

संवर्त्त ऋषि के वचनानुसार इस प्रकार शुद्धि कही है गुरुकी शय्या पर गमन करके तपाये हुए लोहे के पात्र [कड़ाहा] में सोवे १२६

अथवा लोहे की स्त्री बना कर और उसे तपाकर स्पर्श करै अथवा चार वा तीन चांद्रायण द्विज करै १२७

फिर प्रायश्चित्त किए पीछे उस पापसे छुटता है जो कोई पाप से मोहित पुरुष इनका संबंध करता है १२८

वह भी उस २ पाप की शुद्धि के लिये उसी २ पाप का प्रायश्चित्त करै—क्षत्रिय को मारकर ब्राह्मण तीन कृच्छ्रों से भली प्रकार शुद्ध होता है १२९

और क्रम से तीन कृच्छ्र सावधान होकर करै जो काम से मोहित मनुष्य कदाचित् वैश्य की हत्या को प्राप्त हो १३०

कृच्छ्रातिकृच्छ्रौकुर्वीतसनरोवैश्यघातकः
कुर्याच्छूद्रवधेविप्रस्तप्तकृच्छ्रं यथाविधि १३१
एवंशुद्धिमवाप्नोतिसंवर्त्त वचनंयथा
गोघ्नस्यातःप्रवक्ष्यामिनिष्कृतिंतत्वतःशुभां १३२
गोघ्नःकुर्वीतसंस्कारंगोष्ठेगोरुपसन्निधौ
तत्रैवक्षितिशायीस्यान्मासार्द्धंसंयतेंद्रियः १३३
स्नानंत्रिषवणंकुर्यान्नखलोमविवर्जितः
सक्तुयावकभिक्षाशीपयोदधिशकृन्नरः १३४
एतानिक्रमशोश्नीयाद्द्विजस्तत्पापमोक्षकः
गायत्रींचजपेन्नित्यं पवित्राणिचशक्तितः १३५

तो वैश्य के मारने वाला वह मनुष्य कृच्छ्र और अति कृच्छ्र व्रत करै और शूद्र के मारने में ब्राह्मण विधि से तप्त कृच्छ्र करै १३१

संवर्त के वचनानुसार इस प्रकार शुद्ध होता है अब गो हिंसा करने वाले का यथार्थ उत्तम प्रायश्चित्त कहता हूं १३२

गौ को जो मारे वह गौशाला में और गौ के समीप अपना संस्कार करै और गौ शाला में ही इंद्रियों को वश में रखकर पंद्रह दिन तक सोवे १३३

वह मनुष्य तीन काल स्नान करै और नख और लोम इनको न रक्खै—और सत्तू और जौ दूध—दही गोबर १३४

इनको क्रमसे गोहत्या के पाप को छुटाने वाला द्विज भोजन करै—और शक्ति से गायत्री औरइतर पवित्रमंत्रआदिको नित्य जपे १३५

पूर्णेचैवार्द्धमासेचसविप्रान्भोजयेद्द्विजः
भुक्तवत्सुचविप्रेषुगांचदद्याद्विचक्षणः १३६
व्यापन्नानांबहूनांतुरोधनेबंधनेपिवा
भिषङ्मिथ्योपचारेचद्विगुणंव्रतमाचरेत् १३७
एकाचेद्बहुभिःकाचिद्दैवाद्व्यापादिताक्वचित्
पादंपादंतुहत्यायाश्चरेयुस्तेपृथक्पृथक् १३८
यंत्रणेगोश्चिकित्सार्थेगूढगर्भविमोचने
यदितत्रविपत्तिःस्यान्नसपापेनलिप्यते १३९
औषधंस्नेहमाहारंदद्याद्गोब्राह्मणेषुच
दीयमानेविपत्तिःस्यात्पुण्यमेवनपातकं १४०

जब आधा महीना समाप्त होजाय तो वह द्विज ब्राह्मणों को जिमावे जब ब्राह्मण भोजन करते हों उस समय गोदान भी करे १३६

रोकने अथवा बांधने में अथवा उलटी चिकित्सा से बहुत गौ मरजांय तो गो हत्या का दूना व्रत करे १३७

यदि कभी कोई एक गौ बहुतों ने मारडाली होय तो वे पृथक् २ गो हत्या का चौथाई प्रायश्चित्त करें १३८

चिकित्सा के लिये बंध करने में अथवा गूढ [मराहुआ] गर्भ के निकास ने में यदि किसी से गौ मरजाय तो वह पाप का भागी नहीं होता १३९

औषधि घी भोजन देने से यदि गौ अथवा ब्राह्मण मरजाय तो पुण्य ही होता है पाप नहीं १४०

प्रायश्चित्तस्यपादंतुरोधेपूब्रतमाचरेत्
द्वौपादौबंधनेचैवपादोनंयंत्रणेतथा १४१
पापाणैर्लकुडैर्दंडैस्तथ शस्त्रादिभिर्नरः
निपातनेचरेत्सर्वप्रायश्चित्त दिनत्रयं १४२
हस्तिनंतुरगंहत्वामहिषोष्ट्रकंपिस्तथा
एषांवधे द्विजःकुर्यात्सप्तरात्रमभोजनं १४३
व्याघ्रं श्वानंखरंसिंहंऋक्षंसूकरमेवच
एतान्हत्वाद्विजोमोहात्त्रिरात्रेणैवशुद्ध्यति १४४
सर्वासामेवजातीनांमृगाणांवनचारिणां
अहोरात्रोषितस्तिष्ठेज्जपन्वैजातवेदसं १४५
हंसंकाकंबलाकांवर्हिकारंडवावपि

रोकने से यदि गौ मरे तो चौथाई प्रायश्चित्त और बांधने से आधा और वश में करने से मरे तो पादोन [पौन]करे १४१

पत्थर लोटा दंड और शस्त्र इनसे गौ मरजाय तो तीन दिन तक पूरा प्रायश्चित्त करै १४२

हाथी—घोड़ा—भैंस—ऊंठ—वानर—इनके मारने पर द्विज सात दिन तक भोजन न करै १४३

वाघ [भेड़िया] कुत्ता—गधा—सिंह—ऋक्ष—सूकर इनको अज्ञान से मार कर तीन रात्र में सद्ध होता है १४४

वन में विचरते संपूर्ण जाति के मृगों के मारने में अहो रात्र उपवास करके जात वेद अग्नि का जप करता हुआ टिकै १४५

हंस कौआ वगला मोर कारंडव (हंस भेद)सारस चाष

सारसंचाषभासौचहत्वात्रिदिवसंक्षिपेत् १४६
चक्रवाकंतथाक्रौंचंसारिकाशुकतित्तिरीन्
श्येनगृध्रानुलूकांश्चपारावतमथापिवा १४७
टिट्टिभंजालपादंचकोकिलंकुक्कुटंतथा
एषांवधेनरःकुर्यादेकरात्रमभोजनं १४८
पूर्वोक्तानांतुसर्वेषांहंसादीनामशेषतः
अहोरात्रोषितस्तिष्ठेज्जपन्वैजातवेदसं १४९
मंडूकंचैवहत्वाचसर्पमार्जारमूषकान्
त्रिरात्रोपोषितस्तिष्ठेत्कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् १५०
अनस्थीन्ब्राह्मणोहत्वाप्राणायामेनशुद्ध्यति
अस्थिमतांवधेविप्रःकिंचिद्दद्याद्विचक्षणः १५१

भास इनको मारकर तीन दिन उपवास करै १४६

चकवा—कूंज—मैना—तोता—तित्तर—शिखरा—गीध—ऊलू—कबूतर १४७

ठिट्टिभ (टटीरी) जालपाद (हंसभेद)कोयल मुरगा इन के मारने में मनुष्य एक रात्र उपवास करै १४८

पहिले कहे सब जीव और विशेषकर हंस आदि के मारने में अहोरात्र उपवास करके अग्नि मंत्र का जप करताहुआ टिके१४९

मेंडक—सांप—बिलाव—मूसा—इनको मारकर तीन उपवास और ब्राह्मण भोजन करावे १५०

जिनमें हड्डी नहो ऐसे जीवों को मारकर ब्राह्मण प्राणायामसे शुद्ध होताहै और जिनमें हड्डीहै ऐसे क्षुद्र जीवोंके मारने में कुछ दान करै १५१

यश्चांडालींद्विजोगच्छेत्कथंचित्कामनोहितः
त्रिभिःकृच्छ्रैस्तुशुद्ध्येतप्राजापत्यानुपूर्वकैः १५२
पुंश्चलीगमनंकृत्वाकामतोकामतोपिवा
कृच्छ्रचांद्रायणेतस्यपावनेपरमेस्मृत १५४
शैलूषीरजकीचैववेणुचर्मोपजीविनी
एतागत्वाद्विजोमोहाच्चरेच्चांद्रायणंव्रतं १५५
क्षत्रियामथवैश्यांवागच्छेद्यःकाममोहितः
तस्यसांतपनःकृच्छ्रोभवेत्पापापनोदनः १५६
शूद्रांतुब्राह्मणोगत्वामासंमासार्द्धमेववा

जो कामदेव से मोहित हुआ द्विज चांडाली के संग गमन करै वह क्रम से प्राजा पत्य आदि तीन कृच्छ्रों से शुद्ध होता है १५२

ज्ञान से अथवा अज्ञान से जो व्यभिचारिणी के संग गमन करै कृच्छ्र और चांद्रायण दोनों उसके अच्छीतरे शोधकहैं १५३

नटनी—धोबिन—वांस और चमड़े से जीने वाली इनके संग मोहसे गमन करके द्विज चांद्रायण व्रतकरै १५४

क्षत्रिया अथवा वैश्याके संग जो कामदेव से मोहित ब्राह्मण गमन करता है उसके पाप का दूर करने वाला सांतपन कृच्छ्र है १५५

एक महीना अथवा पंद्रह दिन तक शूद्रणी के संग गमन करके—पंद्रह दिन तक गोमूत्र और जौंको खाकर शुद्ध होता है १५६

अन्य कुटुंब की ब्राह्मणी के संग गमन करके प्राजापत्य

गोमूत्रयावकाहारोमासार्द्धेनविशुद्ध्यति १५७
विप्रामस्वजनांगत्वाप्रजापत्येनशुद्ध्यति
स्वजनांतुद्विजोगत्वाप्राजापत्यंसमाचरेत् १५८
क्षत्रियांक्षत्रियोगत्वातद्देवव्रतमाचरेत्
नरोगोगमनंकृत्वाकुर्याच्चांद्रायणंव्रतं १५६
मातुलानींतथाश्वश्रूंसुतांवैमातुलस्यच
एतागत्वास्त्रियोमोहात्पराकेणविशुद्ध्यति १६०
गुरोर्दुहितरंगत्वास्वसारंपितुरेवच
तस्यादुहितरंचैवचरेच्चांद्रायणंव्रतम् १६१
पितृव्यदारगमनेभ्रातुर्भार्यागमेतथा
गुरुतल्पव्रतंकुर्यान्निष्कृतिर्नान्यथाभवेत् १६२

से शुद्ध होता है स्वकुटुंब कीस्त्रीके संग भी गमन से द्विज प्राजापत्य से शुद्ध होता है १५७

क्षत्रिय क्षत्रिया के संग गमन करके प्राजापत्य ही करै और मनुष्य गौके संग गमन करके चांद्रायण व्रत करै १५८

मामा की स्त्री—सास—मामाकी पुत्री—अज्ञान से इनके संग गमन करके पराक व्रत करने से भली प्रकार शुद्ध होता है १६०

गुरुकी पत्री—पिताकी वहन—फूफीकी पुत्री इनके संग गमन करके चांद्रायण व्रत करै १६१

चाचा और भाईकी स्त्री इनके संग गमन करने में गुरु की स्त्रीके गमन का प्रायश्चित्त करै अन्य था पाप की निवृत्ति नहीं होती है १६२

पितृभार्यांसमारुह्यमातृवर्जैनराधमः
भगिनींमातुराप्तांचस्वसारंचान्यमातृजाम् १६३
एतास्तिस्त्रःस्त्रियोगत्वातप्तकृच्छ्रं समाचरेत्
कुमारीगमनेचैवव्रतमेतत्समाचरेत् १६४
पशुवेश्याभिगमनेप्राजापत्यं विधीयते
सखिभार्यांसमारुह्यश्वश्रूंवाशालिकांतथा १६५
मातरंयोधिगच्छेच्चस्वसारंपुरुषोधमः
नतस्यनिष्कृतिर्हृद्यास्त्स्वांचैवतनुजांतथा १६६
नियमस्थांव्रतस्थांवायोभिगच्छेत्स्त्रियंद्विजः
सकुर्यात्प्राकृतंकृच्छ्रं धेनुंदद्यात्पयस्विनीं १६७

माता से अन्य पिताकी स्त्री—और माता की सुशील वहिन—और दूसरीमातामें पैदा हुई माता की वहिन मनुष्यों में नीच १६३

इन तीनों स्त्रियों के संग गमन करके तप्त कृच्छ्र करै और कुमारी (जिसका विवाह न हुआ हो) के गमन में भी यही तप्त कृच्छ्र करै १६४

पशु और वेश्या के गमन में प्राजापत्य करै—मित्र की स्त्री—सास—साले की स्त्री १६५

माता—वहिन—और अपनी लडकी, जो पुरुषों में नीच इनके संग गमन करता है उसका प्रायश्चित नहीं है १६६

नियम और व्रतमें टिकी स्त्रीके संग जो द्विज गमन करता है वह प्राकृत कृच्छ्र करै और दूधदेती गौका दान करै १६७

रजस्वलांतुयोगच्छेद्गर्भिणींपतितांतथा
तस्यपापविशुद्ध्यर्थमतिकृच्छ्रोविधीयते १६८
वैश्यजांब्राह्मणोगत्वाकृच्छ्रमेकंसमाचरेत्
एवंशुद्धिःसमाख्यातासंवर्तस्यवचोयथा १६९
कथंचिद्ब्राह्मणींगत्वाक्षत्रियोवैश्यएवच
गोमूत्रयावकाहारोमासेनैकेनशुद्ध्यति १७०
शूद्रस्तुब्राह्मणींगच्छेत्कदाचित्काममोहितः
गोमूत्रयावकाहारोमासेनैकेनशुद्ध्यति १७१
ब्राह्मणीशूद्रसंपर्केकदाचित्समुपागते
कृच्छ्रचांद्रायणंतस्याःपावनंपरमंस्मृतं १७२

रजस्वला—गर्भवती और पतित स्त्रीके संग जो गमन करता है उसकी पाप निवृत्ति के अर्थ अति कृच्छ्र कहा है १६८

वैश्य की कन्या के संग गमन करके ब्राह्मण एक कृच्छ्र करै संवर्त वचन के अनुसार इस प्रकार शुद्धि कही है १६९

क्षत्रिय और वैश्य कदाचित् ब्राह्मणी के संग गमन करैं तो गो मूत्र और जौंको खाकर एक महीने में शुद्ध होते हैं १७०

यदि कदाचित काम देवसे मोहित हुआ शूद्र ब्राह्मणी के संग गमन करै तो गो मूत्र और जौंको खाकर एक महीने में शुद्ध होता है १७१

कदाचित् ब्राह्मणी ही शूद्रका संग करै तो उस ब्राह्मणी का पवित्र करने वाला कृच्छ्र चांद्रायण कहा है १७२

चांडालंपुल्कसंचैवश्वपाकंपतितंतथा
एताःश्रेष्ठाःस्त्रियोगत्वाकुर्याच्चांद्रायणत्रयं १७३
अतःपरंप्रदुष्टानांनिष्कृतिंश्रोतुमर्हथ
संन्यस्यदुर्मतिःकश्चिदपत्यार्थंस्त्रियंव्रजेत् १७४
कुर्यात्कृच्छ्रंसमानंतत्षण्मासांस्तदनंतरं
विषाग्निश्यामशवलास्तेषामेवंविनिर्दिशेत् १७५
स्त्रीणांतथाचचरणेह्यधिमासगमेतथा
पतनेष्वप्ययंदृष्टःप्रायश्चित्तविधिःशुभः १७६
नृणांविप्रतिपत्तौचपावनःप्रेत्यचेहच
गोविप्रप्रहतेचैवतथाचैवात्मघातिनि १७७

चांडाल पुल्कस श्वपाक पतित इनकी स्त्रियोंके संग श्रेष्ठ (द्विजाति) पुरुष गमन करके तीन चांद्रायण करै १७३

इससे आगे अत्यंत दुष्टों का प्रायश्चित सुनो यदि कोई दुष्ट बुद्धि पुरुष संन्यास लेकर संतान के लिये स्त्रीका संग करता है १७४

वह निरंतर छः महीने तक कृच्छ्रव्रत करै और विष और अग्नि से जो काले और कबरे होजांय वे भी पूर्वोक्त कृच्छ्र व्रतही करैं १७५

स्त्रियों को भी संन्यास लेकर संतान के लिये फिर गृहस्थ की इच्छा में और एक माससे अधिक में पूर्वोक्त ही प्रायश्चित्त कहा है १७६

मनुष्यों की सब विपत्तियों पूर्वोक्तमें कृच्छ्र इस लोक और परलोक में पवित्र करने वाला है गौ और ब्राह्मण से हते (मरा) और जो आत्मघात से मरा हो १७७

नैवाश्रु पतनंकार्यंसद्भिःश्रेयोभिकांक्षिभिः
एषामन्यतमंप्रेतंयोवहेतदहेतवा १७८
कृत्वाचोदकदानंतुचरेच्चांद्रायणव्रतं
तच्छवंकेवलंस्पृष्ट्वाश्रु नोपातितंयदि १७९
पूर्वकेप्वप्यकारीचेदेकाहंक्षपणांतथा
महापातकिनांचैवतथाचैवात्मघातिनां १८०
उदकंपिंडदानंचश्राद्धंचैवहियत्कृतं
नोपतिष्ठतितत्सर्वंराक्षसैर्विप्रलुप्यते १८१
चांडालैस्तुहतायेतुद्विजादंष्ट्रिसरीसृपैः
श्राद्धंतेषांनकर्तव्यंब्रह्मदंडहताश्चये १८२

इनके मरने पर अपने हितके अभिलाषी सज्जन न रोवे और इनमें कोई प्रेम से जो श्मशानमें प्रेतको लेजाय अथवा जलावे १७८

वह जल दान करके चांद्रायण व्रत करै और केवल इन शवोंका स्पर्श करै और रोदन न किया होय १७९

और पूर्वोक्त प्रायश्चित्त न करसकता हो तो एक दिन उपवास करै महापात की और आत्मघाती १८०

इनको जल पिंड दान श्राद्ध जो किया हो वह सब नहीं मिलता उसे राक्षस नष्ट करदेते हैं १८१

जो द्विज चांडाल दाढ वाले (कुत्ता आदि) सांप और ब्राह्मण का शाप इनसे मरे हों उनके लिये श्राद्ध नहीं करना १८२

कृत्वामूत्रपुरीषेतुभुक्त्वोच्छिष्टस्तथाद्विजः
श्वादिस्पृष्टोजपेद्देव्याःसहस्रंस्नानपूर्वकं १८३
चांडालंपतितंस्पृष्ट्वाशवमंत्यजमेवच
उदक्यांसूतिकांनारींसवासाःस्नानमाचरेत् १८४
स्पृष्टेनसंस्पृशेद्यस्तुस्नानंतस्यविधीयते
ऊर्ध्वमाचमनंप्रोक्तंद्रव्याणांप्रोक्षणंतथा १८५
चांडालाद्यैस्तुसंस्पृष्टउच्छिष्टश्चेद्द्विजोत्तमः
गोमूत्रयावकाहारस्त्रिरात्रेणविशुद्ध्यति १८६
शुनापुष्पवतीस्पृष्टापुष्पवत्यान्ययातथा
शेषाण्यहान्युपवसेत्स्नात्वाशुद्ध्येद्घृताशना १८७

भोजन से उच्छिष्ट ब्राह्मण को और जिसने लघुशंका और मल का त्याग किया हो उसको यदि कुत्ता आदि छूलें तो वह स्नान करके एक हजार गायत्री जपे १८३

चांडाल—पतित, शव (मुर्दा) अंत्यज रजस्वला और सूति का स्त्री इनका स्पर्श करके सचैल स्नान करे १८४

इनके स्पर्श करने वाले ने जिसका स्पर्श किया हो वह स्नान ही करे फिर आचमन करे और द्रव्यों (वस्त्र आदि) को जलसे छिड़क ले १८५

यदि उच्छिष्ट ब्राह्मण को चांडाल आदि छूलें तो गोमूत्र और जौंको खाकर तीन रात्र में शुद्ध होता है १८६

यदि उच्छिष्ट ब्राह्मण को चांडाल आदि छूले तो शुद्धि के जो दिन हैं उतने दिन उपवास और स्नान कर के घी के खाने से शुद्धि होती है १८७

चांडालभांडसंस्पृष्टंपिबेत्कूपगतंजलं
गोमूत्रयावकाहारस्त्रिरात्रेणविशुद्ध्यति १८८
अंत्यजैःस्वीकृतेतीर्थेतडागेपुनदीपुच
शुद्ध्यतेपंचगव्येनपीत्वातोयमकामतः १८९
सुराघटप्रपातोयंपीत्वानासाजलंतथा
अहोरात्रोपितोभूत्वापंचगव्यंपिबेद्द्विजः १९०
कूपेविण्मूत्रसंस्पृष्टाःप्राश्यचापोद्विजातयः
त्रिरात्रेणविशुद्ध्यंतिकुंभेसांतपनंस्मृतम् १९१
वापीकूपतडागानामुपहतानांविशोधनं
अपांघटशतोद्धारःपंचगव्यंचनिक्षिपेत् १९२

चांडाल के पात्र का जिसमें स्पर्श हो ऐसे कुये के जल को पीकर गोमूत्र और जौ को खाकर तीन रात्र में शुद्ध होता है। १८८

अंत्य जों के स्वीकृत (अपनाये) जो तीर्थ तालाव नदी— इनके जलको अज्ञान से पीकर पंचगव्य से शुद्ध होता है १८९

मदिरा के घडे प्याउ इनके—और नासिका से—जलको द्विज पीकर अहोरात्र उपवास करके पंचगव्य पीवे १९०

विष्ठा अथवा मूत्र मिला है जिनमें ऐसे कूप और ऐसे ही घडे के जलको पीकर क्रमसे तीन दिन उपवास और सांतपन कृच्छ्र से तीनों द्विजातिशुद्ध होते हैं १९१

अपवित्र वस्तु जिनमें पडाहो ऐसे वावडी—कूप—तालाव इनका शोधन यह है कि सौ घडे जलके निकासे और पंचगव्य डालदे १९२

स्त्रीक्षीरमाविकंपीत्वासंधिन्याश्चैवगोःपयः
तस्यशुद्धिस्त्रिरात्रेणद्विजानांचैवभक्षणे १६३
विरामूत्रभक्षणेचैवप्राजापत्यंसमाचरेत्
श्वकाकोच्छिष्टगोच्छिष्टभक्षणेतुत्र्यहंद्विजः१६४
विडालमूषिकोच्छिष्टेपंचगव्यंपिवेद्द्विजः
शूद्रोच्छिष्टंतथाभुक्त्वात्रिरात्रेणैवशुद्ध्यति १६५
पलांडुंलशुनजग्ध्वातथैवग्रामकुक्कुटम्
छत्राकंविड्वराहंचचरेत्सांतपनंद्विजः १६६
श्वविडालखरोष्ट्राणांकपेर्गोमायुकाकयोः
प्राश्यमूत्रपुरीषेवाचरेच्चांद्रायणंव्रतम् १६७

स्त्री—भेड—और संधिनी(जो गर्भवती हो और दूध भी देती हो) गौ—इनके दूधको जो पीवे उसकी शुद्धि त्रिरात्र उपवास और ब्राह्मणों के भोजन से होती है १६३

विष्ठा और मूत्रके भक्षण में प्रजापत्य व्रत करे—और कुत्ता कौआ गौ इनके उच्छिष्ठ को भक्षण करके द्विज तीन दिन उपवास करै १६४

बिलाव—मूसा इनके उच्छिष्ट को खाकर द्विज पंचगव्य पीवे और शूद्रके उच्छिष्ठ को खाकर तीन रात्र उपवास से शुद्ध होता है १६५

पलांडु (सलजम) लस्सन और गांवका मुरगा—छत्राक(जो चौमासे में घूरेमें जमता है जिसके ऊपर छत्रीसी होती है) विष्टाखाने वाला सूकर इनको खाकर द्विज सांतपन करै १६६

कुत्ता—बिलाव—गधा—ऊंट—वानर—गीदड—कौआ इनके मूत्र वा विष्ठाको खाकर चांद्रायण व्रत करे ,१६७

अन्नंपर्युषितंभुक्त्वाकेशकीटैरुपद्रुतं
पतितैःप्रेक्षितम्वापिपंचगव्यंद्विजःपिबेत् १९८
अंत्यजाभाजनेभुक्त्वाह्युदक्याभाजनेतथा
गोमूत्रयावकाहारोमासार्द्धेनविशुद्ध्यति १९९
गोमांसंमानुषंचैवशुनोहस्तात्समाहृतं
अभक्ष्यंतद्भवेत्सर्वंभुक्त्वाचांद्रायणंचरेत् २००
चांडालेसंकरेविप्रःश्वपाकेपुल्कसेपिवा
गोमूत्रयावकाहारोमासार्द्धेनविशुद्ध्यति २०१
पतितेनतुसंपर्कंमासंमासार्द्धमेववा
गोमूत्रयावकाहारोमासार्द्धेनविशुद्ध्यति २०२

जो अन्न बासी हो—अथवा जिसमें केश—कीडे पडे हों अथवा जिसें पतितों ने देखाहो उस अन्नको खाकर द्विज पंचगव्य पीवे १९८

अंत्यज स्त्रीके अथवा रजस्वला के पात्रमें खाकर गोमूत्र और जोंको खाकर पंद्रह दिनमें शुद्ध होता है १९९

गोका और मनुष्य का मांस अथवा जो कुत्तेके हाथसे आया हो वह संपूर्ण मांस अभक्ष्य है उसे खाकर चांद्रायण करै २००

चांडाल—वर्णसंकर—श्वपाक—और पुल्कस इनके भोजन को करके पंद्रह दिन में शुद्ध होता है २०१

एक मास अथवा पंद्रह दिन पतित का संसर्ग करै तो गोमूत्र और जोंको खाकर पंद्रह दिन में शुद्ध होता है २०२

पतिताद्द्रव्यमादत्तेभुंक्तेवाब्राह्मणोयदि
कृत्वातस्यसमुत्सर्गमतिकृच्छ्रं चरेद्द्विजः २०३
यत्रयत्रचसंकीर्णमात्मानंमन्यतेद्विजः
तत्रतत्रतिलैर्होमोगायत्र्याप्रत्यहंद्विजः २०४
एषएवमयाप्रोक्तःप्रायश्चित्तविधिःशुभः
अनादिष्टेषुपापेषुप्रायश्चित्तंनचोच्यते २०५
दानैर्होमैर्जपैर्नित्यंप्राणायामैर्द्विजोत्तमः
पातकेभ्यःप्रमुच्येतवेदाभ्यासान्नसंशयः २०६
सुवर्णदानंगोदानंभूमिदानंतथैवच
नाशयंत्याशुपापानिह्यन्यजन्मकृतान्यपि २०७
तिलधेनुंचयोदद्यात्संयतायद्विजातये

जो ब्राह्मण पतित के द्रव्यको लेताहै अथवा खाता है वह उस अन्नका त्याग (वमन) करके अति कृच्छ्र करै २०३

जिस२ कर्ममें द्विज अपने को संकीर्ण (पतित) समझें उसी२ कर्ममें गायत्री और तिलोंसे प्रतिदिन होम करै २०४

यहमें प्रायश्चित्त की श्रेष्ठ विधि कही और जो पाप अनादिष्ट (शास्त्रमें नहीं कहे) हैं उनका प्रायश्चित्त भी नहीं कहा है २०५

दान होम जप—प्राणायाम—और वेद पाठ—इनसे ब्राह्मण सदैव पाप से छूटता है २०६

सोना—गौ—पृथ्वी इनका दान अन्य जन्म के किये पाप को भी शीघ्र नष्ट करता है २०७

जो जितेन्द्रिय ब्राह्मण को तिल वा गौ देता है वह ब्रह्म

ब्रह्महत्यादिभिः पापैर्मुच्यतेनात्रसंशयः २०८
माघमासेतुसंप्राप्तेपौर्णमास्यामुपोषितः
ब्राह्मणेभ्यस्तिलान्दत्वासर्वपापैःप्रमुच्यते २०९
उपवासीनरोभूत्वापौर्णमास्यांतुकार्तिके
हिरण्यंवस्त्रमन्नंचदत्वातरतिदुष्कृतं २१०
अयनेविषुवेचैवव्यतीपातेदिनक्षये
चन्द्रसूर्यग्रहेचैवदत्तेभवतिचाक्षयं २११
अमावास्यांचद्वादश्यांसंक्रांतौचविशेषतः
एताःप्रशस्तास्तिथयोभानुवारस्तथैवच २१२
तत्रस्नानंजपोहोमोब्राह्मणानांचभोजनं
उपवासस्तथादानमेकैकंपावयेन्नरम् २१३

हत्या आदि पापों से छूटता है इसमें संशय नहीं है २०८

माघ महीनेकी पूर्णमासी को उपवास करकेजो तिल दान देता है वह सब पापोंसे छूटता है २०९

कार्तिक की पूर्णमासी को उपवास करके सौना—वस्त्र अन्न इनको देकर पापको तरता है २१०

दक्षिणायन और उत्तरायण—औरविषव(तुलमेष)कीसंक्रांति व्यति पात—तिथिकी हानि और चन्द्र और सूर्यग्रहण—इनमें दियादान अक्षय होता है २११

मावस द्वादशी संक्राति विशेष कर ये तिथी और ऐतवार बहुत श्रेष्ठ हैं २१२

इनमें किये स्नान, जप होम, ब्राह्मणों को भोजन उपवास और दान एक एक भी मनुष्य को पवित्र करते हैं २१३

स्नातःशुचिर्धौतवासाःशुद्धात्माविजितेंद्रियः
सात्विकंभावमास्थायदानंदद्याद्विचक्षणः २१४
सप्तव्याहृतिभिःकार्योद्विजैर्होमोजितात्मभिः
उपपातकशुद्ध्यर्थंसहस्रपरिसंख्यया २१५
महापातकसंयुक्तोलक्षहोमंसदाद्विजः
मुच्यतेसर्वपापेभ्योगायत्र्याचैवपावितः २१६
अभ्यसेच्चतथापुण्यांगायत्रींवेदमातरं
गत्वारण्येनदीतीरेसर्वपापविशुद्धये २१७
स्नात्वाआचम्यविधिवत्ततःप्राणान्समापयेत्
प्राणायामैस्त्रिभिःपूतोगायत्रींतुजपेद्द्विजः २१८
अक्लिन्नवासाःस्थलगःशुचौदेशेसमाहितः

स्नान करके और शुद्ध हो धुले सपेद वस्त्र पहन शुद्ध मन हो और इंद्रियों को जीतकर और सात्विकस्वभाव (सुशील) होकर ज्ञानवान् पुरुष दानदे २१४

जीताहै मन जिन्हों ने ऐसे द्विज उतपातक की शुद्धि के लिये एक हजार सात व्याहृतियों से होम करैं २१५

और महापातकी लक्ष (लाख)गायत्री काहोम करैक्योंकि गायत्री से पवित्र किया ब्राह्मण सब पापों से छूटता है २१६

सब पापों की शुद्धि के लिये वेदों की माता और पवित्र गायत्री को वनमें जाकर नदीके तटपर जपै २१७

स्नान और आचमन करके प्राणों को स्थिर करै प्रथम तीन प्राणायामों से पवित्र द्विज गायत्री को जपै २१८

क्लिन्न (गीले) वस्त्र न पहने—और शुद्ध स्थान में स्थल

पवित्रपाणिराचांतोगायत्र्याजपमाचरेत् २१९
ऐहिकामुष्मिकंपापंसर्वं निरवशेषतः
पंचरात्रेणगायत्रींजपमानोऽव्यपोहति २२०
गायत्र्यास्तुपरंनास्तिशोधनंपापकर्मणां
महाव्याहृतिसंयुक्तांप्रणवेनचसंजपेत् २२१
ब्रह्मचारीनिराहारःसर्वभूतहितेरतः
गायत्र्यालक्षजप्येनसर्वपापैःप्रमुच्यते २२२
अयाज्ययाजनंकृत्वाभुक्त्वाचान्नं विगर्हितम्
गायत्र्यष्टसहस्रंतुजपंकृत्वाविशुद्ध्यति २२३
अहन्यहनियोधीतेगायत्रींवैद्विजोत्तमः
मासेनमुच्यतेपापादुरगःकंचुकाद्यथा २२४

में बैठे सावधान होकर कुशाओं की पवित्री धारकर आचमन के अनतर गायत्री का जप करै २१९

पांच रात्रि तक गायत्री का जप करता हुआ पुरुष इस जन्म और अन्य जन्म के संपूर्ण पापको नष्ट करता है २२०

पापियों का शोधक गायत्री से परे नहीं है महाव्याहृति और ओंकार सहित गायत्री का जप करै २२१

ब्रह्मचारी भोजन को छोड़ सबके कल्याण में तत्पर हुआ गायत्री के लाख जप करने से सब पापों से छूटता है २२२

यज्ञ कराने के अयोग्य पुरुष को यज्ञ कराकर और निंदित अन्न को खाकर आठ हजार गायत्री जप करनेसे शुद्ध होता है २२३

जो ब्राह्मण प्रति दिन गायत्री जपता है वह पापसे इस प्रकार छूटता है जैसे कांचली से सांप २२४

गायत्रींयस्तुविप्रोवैजपेतनियतःसदा
सयातिपरमंस्थानंवायुभूतःखमूर्तिमान् २२५
प्रणवेनचसंयुक्ताव्याहृतीःसप्तनित्यशः
गायत्रींशिरसासार्द्धंमनसात्रिःपठेद्द्विजः २२६
निगृह्यचात्मनःप्राणान्प्राणायामोविधीयते
प्राणायामत्रयंकुर्यान्नित्यमेवसमाहितः २२७
मानसंवाचिकंपापकायेनैवचयत्कृतं
तत्सर्वंनाशमायातिप्राणायामप्रभावतः २२८
ऋग्वेदमभ्यसेद्यस्तुयजुःशाखामथापिवा
सामानिसरहस्यानिसर्वपापैःप्रमुच्यते २२९
पावमानींतथाकौत्सींपूरुषंसूक्तमेवच

जो ब्राह्मण इंद्रियों को वशमें करके सदा गायत्री को जपता है वह वायु और आकाश रूप होकर परम स्थान (वैकुंठ) को जाता है २२५

ओंकार सहित सातव्याहृति और शिरस मंत्र सहित गायत्री इनको अर्थात् प्राणायाम को द्विज तीन वार नित्य पढ़े २२७

प्राणोंको वशमें करने को ही प्राणायाम कहते हैं सावधान होकर प्रतिदिन तीन प्राणायाम करे २२७

मन वाणी देह से किया जो पाप है वह सब प्राणायाम के प्रभाव से नष्ट होजाता है २२८

ऋग्वेद यजुर्वेदकी शाखा और रहस्य सहित सामवेद इन का अभ्यास (पाठ) करके मनुष्य सब पापों से छूटता है १२९

जप्त्वापापैःप्रमुच्येतसपित्र्यंमाधुछंदसं २३०
मंडलंब्राह्मणंरुद्रसूक्तोक्ताश्चबृहद्यथा
वामदेव्यंबृहत्सामसर्वपापैःप्रमुच्यते २३१
धर्मशास्त्रमिदंपुण्यंसंवर्तेनतुभाषितं
अधीत्यब्राह्मणोगच्छेद्ब्रह्मणःसद्मशाश्वतं २३२
चांद्रायणंतुसर्वेषांपापानांपावनंपरम्
कृत्वाशुद्धिमवाप्नोतिपरमंस्थानमेवच २३३
इतिसंवर्त्त प्रणीतंधर्मशास्त्रंसमाप्तं ॥ ॥

पावमानी—और कौत्सी ऋचा-और पुरुष सूक्त-पितरों के मंत्र मधुछांदस मंत्र इनको जप कर सब पापों से छूटता है२३० ।

मंडल ब्राह्मण रुद्र सूक्त की ऋचा बृहत् वाम देव का बृहत्साम वेद इनके जप से भी सब पापों से छूटता है २३१

संवर्त ऋषि के कहे पवित्र इस धर्म शास्त्र को ब्राह्मण पठ कर सनातन ब्रह्मलोक में जाता है २३२

सब पापों से पवित्र करने वाले और उत्तम चांद्रायण व्रत को करके उत्तम स्थान को प्राप्त होता है २३३

इति संवर्त प्रणीतं धर्मशास्त्रं समाप्तम् ८

श्रीगणेशायनमः अथकात्यायनस्मृतिप्रारंभः

अथातोगोभिलोक्तानामन्येषांचैवकर्मणां
अस्पष्टानांविधिंसम्यग्दर्शयिष्येप्रदीपवत् १
त्रिवृदूर्ध्ववृतंकार्यंतंतुत्रयमधोवृतं
त्रिवृतंचोपवीतंस्यात्तस्यैकोग्रन्थिरिष्यते २
पृष्ठवंशेचनाभ्यांचधृतंयद्विंदतेकटिं
तद्धार्यमुपवीतंस्यान्नातोलंबंनचोच्छ्रितं ३
सदोपवीतिनाभाव्यंसदाबद्धशिखेनच
विशिखोव्युपवीतश्चयत्करोतिनतत्कृतं ४
त्रिःप्राश्यापोद्विरुन्मृज्यमुखमेतान्युपस्पृशेत्
आस्यनासाक्षिकर्णांश्चनाभिवक्षःशिरोंसकान् ५

कात्यायन स्मृति ८

इसके अनंतर गोभिल ऋषि के कहे और अस्पष्ट इतर कर्मों की बिधि दीपक के समान भली प्रकार दिखाता हु १

त्रिवृत् तीन तार एक सूत के ऊपर को और फिर वे तीनों त्रिवृत [तिगुने] नीचे को ऐसा त्रिवृत् उपवीत (जनेउ) होता है उसकी एक ग्रन्थि (गांठ) कही है २

पीठ के वांस और नाभि पर रक्खा हुआ जो कटि तक ओलाय उस जनेउ को धारै न बहुत लंबा हो और न बहुत छोटा ३

सदैव जनेउ पहने और शिखामें गांठ सदैवदे जिसके शिखा और जनेउ नहीं वह जोकाम करताहे वह न किये केसमानहैं४

तीन बार जल पीकर दो बार मुख पूंछ कर मुख नासिका नेत्र कान नाभि छाती शिर और कंधे इनका स्पर्श करे ५

संहताभिस्त्र्यंगुलिभिरास्यमेवमुपस्पृशेत्
अंगुष्ठेनप्रदेशिन्याघ्राणंचैवमुपस्पृशेत् ६
अंगुष्ठानामिकाभ्यांचचक्षुःश्रोत्रंपुनःपुनः
कनिष्ठांगुष्ठयोर्नाभिंहृदयंतुतलेनवै ७
सर्वाभिस्तुशिरःपश्चाद्बाहूचाग्रेणसंस्पृशेत्
यत्रोपदृश्यतेकर्मकर्तुरंगंनतूच्यते ८
दक्षिणस्तत्रविज्ञेयःकर्मणांपारगःकरः
यत्रदिङ्नियमोनस्याज्जपहोमादिकर्म्मसु ९
तिस्रस्तत्रदिशःप्रोक्ताऐन्द्रीसौम्यापराजिताः
तिष्ठन्नासीनःप्रह्वोवानियमोकुत्रनेदृशः १०

मिली हुई बीच की तीन अंगुलियों से मुखका और अंगूठा और प्रदेशिनी (कन्नो) से घ्राण नासिका का स्पर्श करै ६

अंगूठा और अनामिका से वारंवार नेत्र और कानों का और कनिष्ठा और अंगूठे से नाभि का, और तलवे से हृदय का स्पर्श करै ७

सब अंगुलियों से शिरका और पीछे से हाथ के अग्रभाग से भुजाओं का स्पर्श करै—जहां कर्म शास्त्र में कहा हो और करने वाले का अंग [अवयव] न कहा हो ८

वहां दाहिना कर (हाथ)जो कर्मों को पार(पूर्णित)करता है जानना जहां जप होम आदि कर्मोंमें दिशाका नियम न हो९

तहां तीन दिशा कही हैं—पूर्व—उत्तर—पश्चिम—और यह नियम नहीं है कि खड़ा हुआ वा बैठाअथवाप्रह्व [शिरउठाये) बैठा उस कर्म को करै १०

तदासीनेनकर्त्तव्यंनप्रह्वेणनतिष्ठता
गौरीपद्माशचीमेधासावित्रीविजयाजया ११
देवसेनास्वधास्वाहामातरोलोकमातरः
धृतिःपुष्टिस्तथातुष्टिरात्मदेवतयासह १२
गणेशेनाधिकाह्येतावृद्धौपूज्यांश्चतुर्दश
कर्म्मादिषुतुसर्व्वेषुमातरःसगणाधिपाः १३
पूजनीयाःप्रयत्नेनपूजिताःपूजयंतिताः
प्रतिमासुचशुभ्रासुलिखित्वावापटादिषु १४
अपिवाक्षतपुंजेषुनैवेद्यैश्चपृथग्विधैः
कुड्यलग्नांवसोर्धारांसप्तधारांघृतेनतु १५

उस कर्म को बैठकर करना—खड़ा होकर वा नीचे शिर से बैठकर न करना—गौरी—पद्मा—शची—मेधा—सावित्री—विजया—जया ११

देवसेना—स्वधा—स्वाहा—मातर—लोकमातर—धृति—पुष्टि—तुष्टि—और आत्म देवता १२

गणेश है अधिक जिनमें ऐसी इन चौदह मातृका ओंको वृद्धि (नांदी मुख जो पुत्र जन्म आदि में करते हैं) में पूजे और गणेश सहित इन मातृकाओं को सब कर्मों में १३

यत्न से पूजे क्योंकि पूजा को प्राप्त हुई यें पूजने वाले को पूजवाती हैं इनको सपेद मूर्तियों में अथवा पट्टे पर लिख कर १४

अथवा अक्षतों के पुजों (ढेरी) में पृथक २ के नैवेद्यों से पूजे—और कुड्य (भींत) पर लगी हुई घी से सात धारा १५

कारयेत्पंचधारांवानातिनीचांनचोच्छ्रितां
आयुष्याणिचशांत्यर्थंजप्यात्तत्रसमाहितः १६
षड्भ्यःपितृभ्यस्तदनुभक्त्याश्राद्धमुपक्रमेत्
अनिष्ट्वातुपितृञ्छ्राद्धेनकुर्यात्कर्मवैदिकं १७
तत्रापिमातरःपूर्वंपूजनीयाःप्रयत्नतः
वशिष्ठोक्तोविधिःकृत्स्नोद्रष्टव्योऽत्रनिरामिषः १८
अतःपरंप्रवक्ष्यामिविशेषइहयोभवेत् १९
इतिश्रीकात्यायनस्मृतौप्रथमखंडःसमाप्तः १
प्रातरामंत्रितान्विप्रान्युग्मानुभयतस्तथा
उपवेश्यकुशान्दद्यादृजुनैवहिपाणिना १
हरितायज्ञियादर्भाःपीतकापाकयज्ञिगः

वा पांच धारा करवावे और वे धारा बहुत नीची हों न ऊंची और शांति के लिये अवस्था ने वाले मंत्र सावधानी से जप करै १६

फिर छः पितरों के आर का भक्ति से प्रारंभ करै श्राद्ध में पितरों के विना पूजे लौक कर्म न करै १७

वहांभी यत्नसे—मातृ(षोडश मातृका)सब से पहिलेपूजनी और श्राद्ध मेंवशिष्ठ ऋषकी भी लक्ककिलिसंपूर्ण बिधि कहीं हैं १८

१ खंड

प्रातःकाल दिया है निमंत्रण जिनको ऐसे दो२ ब्राह्मण दोनों पक्ष (माता और पिता) में बैठाकर कोमल हाथों से कुशा ओं को दे १

यज्ञ की कुशा हरी—और पाक यज्ञ की पीली—पितर और देवताओं के लिये जड़ सहित—और विश्वे देवताओं के

सम्मूलाःपितृदैवत्याःकल्माषावैश्वदेविकाः २
हरितावैसपिञ्जल्याःशुष्काःस्निग्धाःसमाहिताः
रत्निमात्रप्रमाणेनपितृतीर्थेनसंस्तृताः ३
पिंडार्थंयेस्तृतादर्भास्तर्पणार्थंतथैवच
घृतैःकृतेचविण्मूत्रेत्यागस्तेषांविधीयते ४
दक्षिणंपातयेज्जानुंदेवान्परिचरन्सदा
पातयेदितरंजानुंपितॄन्परिचरन्नपि ५
निपातोनहिसव्यस्यजानुनोविद्यतेक्वचित्
सदापरिचरेद्भक्त्यापितॄनप्यत्रदेववत् ६
पितृभ्यइतिदत्तेषुउपवेश्यकुशेषुतान्
गोत्रनामभिरामंत्र्यपितॄनर्घ्यंप्रदापयेत् ७

लिये कल्माष (काले) २

हरी—पीली—रूखी—चिकनी—सावधानी से रक्खी और रत्नि (मुटो वंधा हाथ) के प्रमाण भर और पितृ तीर्थ से संस्कृत (रक्खी) हुई ३

पिंड और तर्पण के लिये कुशाओं को रख कर यदि विष्टा और लघुशंका करै तो उन कुशाओं का त्याग कहा है ४

देवताओं की पूजा करताहुआ मनुष्य दाहने गोडे को और पितरों को पूजता हुआ वायें गोड़े को नवावे ५

वांये गोड़े का निवाना कहीं भी नहीं है परंतु वांये गोड़े को नवाकर पितरों का देवताओं के समान पूजन करै ६

पितृभ्य इदं कुशासनंस्वधा—इस मंत्र से दी कुशाओं पर वैठा कर और नाम और गोत्र से वुलाकर पितरों को अर्घ दे ७

नात्रापसव्यकरणंनपित्र्यंतीर्थमिष्यते
पात्राणांपूरणादीनिदैवेनैवहिकारयेत् ८
ज्येष्ठोत्तरकरान्युग्मान्कराग्राग्रपवित्रकान्
कृत्वार्घ्यंसंप्रदातव्यंनैकैकस्यात्रदीयते ९
अनंतगार्भिणंसाग्रंकौशंद्विदलमेवच
प्रादेशमात्रंविज्ञेयंपवित्रंयत्रकुत्रचित् १०
एतदेवहिपिंजल्यालक्षणंसमुदाहृतं
आज्यस्योत्पवनार्थंयत्तदप्येतावदेवतु ११
एतत्प्रमाणमेवैकेकौशीमेवार्द्रमंजरीं
शुष्कांवाशीर्णकुसुमांपिंजलींपरिचक्षते १२

पात्रों के पूरण आदि कर्म देव तीर्थ से ही करे इससे इन में अपसव्य करना और पितृ तीर्थ नहीं है ८

ज्येष्ठ (दाहना) हाथ है आगे जिनके ऐसे दोनों हाथ और हाथों के आगे पवित्री करके अर्घ देना और एक हाथ से न देना ९

जिस कुशा के बीच में गर्भ न हो और जिसका अग्रभाग हो ऐसे दोदल की कुशा की बनी हुई प्रादेश मात्र (विलस्त) भर की पवित्री जिस तिस कर्म में जानना १०

यही पिंजली कुशा का लक्षण (पहचान) कहा है और घी के पवित्र करने की कुशा भी इतनी ही होती है ११

और कितने ऋषि इतने ही प्रमाण की कुशा की पवित्री कहते हैं गीली हो अथवा सूकी परन्तु फल उसके गिरगये हों उसको पिंजली कहते हैं १२

पित्र्य मंत्रानुद्रवण आत्मालंघऽभेमेक्षणे
अधोवायुसमुत्सर्गप्रहासेऽन्हतभाषणे १३
मार्जारमूषकस्पर्शे आक्रुष्टेक्रोधसंभवे
निमित्तेष्वेषुसर्वत्रकर्म्मकुर्वन्नपःस्पृशेत् १४
इति कात्यायनस्मृतौ द्वितीयः खंड २
अक्रियात्रिविधाप्रोक्ताविद्वद्भिःकर्म्मकारिणां
अक्रियाचपरोक्ताचतृतीयाचायथाक्रिया १
स्वशाखाश्रयमुत्सृज्यपरशाखाश्रयंचयः
कर्तुमिच्छतिदुर्मेधामोघंतत्तस्यचेष्ठितं २

पितरों के मंत्रों से अनुद्रवण (जो मंत्रों को सुन पितरों मग्न न हो) आत्मा मन न हो अथवा कोई नीच देखले अथवा अधोवायु होजाय अथवा हंसी आजाय अथवा झूंठ बोल जाय १३

बिल्लाव मूसा ये छूलें अथवा कोई गाली कही जाय अथवा क्रोध आजाय ये जोनिमित्त होजांय तो सब जगे कर्म करता हुआ मनुष्य जल का स्पर्श करे १४

२ खण्ड पूर्ण

कर्म करने वालों की अक्रिया (निंदित कर्म) विद्वानों ने तीन प्रकार की कही है १ अक्रिया (कर्म को न करना) २ परोक्त किसी के कहने से कर्म करना) ३ अन्यथा क्रिया (जैसे चाहिये वैसे न करना) १

अपनी शाखा के कर्मों को छोड़ कर दूसरे की शाखा के कर्म करने की जो कुबुद्धि इच्छा करता है वह उसका चेष्टित [करना] निष्फल है २

यन्नाम्नातंस्वशाखायांपरोक्तमविरोधिच
विद्वद्भिस्तदनुष्ठेयमग्निहोत्रादिकर्म्मवत् ३
प्रवृत्तमन्यथाकुर्य्याद्यदिमोहात्कथंचन
यतस्तदन्यथाभूतंततएवसमापयेत् ४
समाप्तेयदिजानीयान्मयैतदयथाकृतम्
तावदेवपुनःकुर्यान्नावृत्तिःसर्व्वकर्म्मणः ५
प्रधानस्यक्रियायत्रसांगंतत्क्रियतेपुनः
तदंगस्याक्रियायांचनावृत्तिर्नैवतत्क्रिया ६
मधुमध्वितियस्तत्रत्रिर्जपोऽशितुमिच्छतां
गायत्र्यनंतरंसोऽत्रमधुमंत्रविवर्जितः ७

जो अपनी शाखा में नही कहा और अपने कर्म का बिरोधी जो न हो ज्ञान वान् मनुष्य दूसरे के कहे हुए उस कर्म को अग्नि होत्र वत् करै ३

प्रारंभ किये कर्म को यदि किसी प्रकार अज्ञान से अन्यथाकरै तो जहां से वह कर्म अन्यथा हुआ है वहांसे ही समाप्त करदे ४

यदि समाप्त (पूरा) हुए पर यह प्रतीत होजाय कि मैं यह कर्म अन्यथा किया तो जितना कर्म अन्यथा हुआ हो उतना ही फिर करदे—संपूर्ण कर्म को फिर न करै ५

जहां प्रधान (मुख्य) कर्म नही किया हो वहां सांग (सब) कर्म फिर करना—और उस कर्म का कोई अंग न किया होय तो वहां सब कर्म का प्रारंभ न करै ६

मधु मधु मधु यह जो भोजन करने वालों का तीन वार जप है वह यहां (श्राद्ध में) गायत्री के पीछे मधु वाता इत्यादि मंत्र के विना करना ७

नचाश्नत्सुजपेदंत्रकदाचित्पितृसंहितां
अन्यएवजपःकार्य्यःसोमसामादिकःशुभः ८
यस्तत्रप्रकरोऽन्नस्यातिलवद्यववत्तथा
उच्छिष्टसन्निधौसोऽत्रतृप्तेषुविपरीतकः ९
संपन्नमितितृप्ताःस्थप्रश्नस्थानेविधीयते
सुसंपन्नमितिप्रोक्तेशेषमन्नंनिवेदयेत् १०
प्रागग्रेष्वथदर्भेषुआद्यमामंत्र्यपूर्ववत्
अपःक्षिपेन्मूलदेशेऽवनेनिक्ष्वेतिपात्रतः ११
द्वितीयंचतृतीयंचमध्यदेशाग्रदेशयोः
मातामहप्रभृतींस्त्रीनेतेषामेववामतः १२

ब्राह्मणों के भोजन करते समय श्राद्ध में पितृ संहिता न जपै इतर ही सोम और साम आदि शुभ पाठ करै ८

तिल और जौं के समान जो अन्न का प्रकर (विकिरपिंड) है वह उच्छिष्ट के समीप देना और ब्राह्मणों के तृप्त होने पर विपरीत (जहां उच्छिष्ट न हो) जगे देना ९

सम्पन्न (अच्छी तरे किया) तृप्त हुए यह तो यजमान प्रश्न (पूछने) के समय कहै—जब ब्राह्मण [भली प्रकार तृप्त हुये] यह कहदें तो शेष अन्नको यजमान दे दे १०

पूर्व को है अग्रभाग जिनका ऐसी कुशाओं पर आद्य (पिता) का पूर्वके समान आमंत्रण करके पात्र में से अवनेनिक्ष्व (पुष्ट हो वा शुद्ध हो) इस मंत्र से कुशाओं की जड़में जल गेरै ११

पिता मह को कुशा के मध्य में और प्रपितामह को कुशा के अग्रभाग में जलदे—माता मह (नाना) आदि तीनों को भी इनकी बांई ओर जल दे १२

सर्वस्मादन्नमुद्धृत्यव्यंजनैरुपसिच्यच
संयोज्ययवकर्कन्धूदधिभिःप्राङ्मुखस्ततः १३
अवनेजनवत्पिंडान्दत्वाबिल्बप्रमाणकान्
तत्पात्रक्षालनेनाथपुनरप्यवनेजयेत् १४
इतिकात्यायनस्मृतौतृतीयः खंडः ३
उत्तरोत्तरदानेनपिंडानामुत्तरोत्तरः
भवेदधश्चाधराणामधरःश्राद्धकर्मणि १
अस्माच्छ्राद्धेषुसर्वेषुवृद्धिमत्स्वितरेषुच
मूलमध्याग्रदेशेषुईषत्सक्तांश्चनिर्वपेत् २
गन्धाशीर्भिःक्षिपेत्तूष्णींततआचामयेद्द्विजान्

सब अन्न में से निकास कर और व्यंजन (भाजी) से युक्त करके और जौं,बेर, दही, मिलाकर—फिर पूर्वाभिमुख होकर १३

बेलके समान है प्रमाण जिनका ऐसे पिंडों को अवनेजन जहां २ दिया था वहां २ देकर अवनेजन के पात्र को धोकर प्रत्यवनेजन दे १४

३ खण्ड समाप्त

उत्तर २ क्रमसे पिंडों के देने से उत्तर २ (पिछला २)अधः (नीचे) होता है इससे श्राद्ध कर्म में निचलों को नीची २ जगे पिंड देने १

तिससें वृद्धि के श्राद्ध वा इतर श्राद्धों में कुशा की जड़ मध्यम अग्र भाग में कुछ लगे हुए पिंड दें २

विनामंत्र गंध आदि दे और फिर द्विजों को आचमन

अन्यत्राप्येषएवस्यात्यवादिरहितोविधिः ३
दक्षिणाप्लवनेदेशेदक्षिणाभिमुखस्यच
यस्तत्रप्रकरोऽन्नस्यतिलवद्यववत्तथा
दक्षिणाग्रेषुदर्भेषुएषोऽन्यत्रविधिःस्मृतः ४
अथाग्रभूमिमासिंचेत्सुसंप्रोक्षितमस्त्विति
शिवाआपःसन्त्वितिचयुग्मानेवोदकेनच ५
सौमनस्यमस्त्वितिचपुष्पदानमनन्तरं
अक्षतञ्चारिष्टंचास्त्वित्यक्षतान्प्रतिपादयेत् ६
अक्षय्योदकदानंतुअर्घ्यदानवदिष्यते
षष्ठ्यैवनित्यंतत्कुर्यान्नचतुर्थ्याकदाचन ७
अर्घ्येऽक्षय्योदकेचैवपिंडदानेऽवनेजने

करावे इतरश्राद्धों (पार्वणआदि) में जौ के विना यही विधि होती है ३

जो देश दक्खन को नीचा हो उसमें यजमान भी दक्षिणाभिमुख वैठे और दक्षिणाग्र ही कुशों पर पिंड आदि दे यह विधि इतर श्राद्धों में कही है ४

फिर यजमान जलसे अपने आगे की पृथ्वी—को सुसंप्रोक्षितं अस्तु—इस से और शिवा आपः संतु इस मंत्र से सींचे और फिर २ ब्राह्मणों को ५

सौमनस्यमस्तु इस मंत्र से पुष्प दे और अक्षतं चारिष्टमस्तु इस मंत्र से अक्षत दे ६

अर्घ देने के समान अक्षय्य जलका देना कहा है और उस अक्षय्योदक को षष्ठी (पितः आदि) विभक्ति बोलकर दे और चतुर्थी (पित्रे) बोल कर कभी न दे ७

अर्घ अक्षय्योदक—पिंडदान—अवनेजन और स्वधा के

तंत्रस्यतुनिवृत्तिःस्यात्स्वधावाचनएवच ८
पवित्रांतर्हितान्पिंडान्सिंचेदुत्तानपात्रकृत् ९
युग्मानेवस्वस्तिवाच्यमङ्गुष्ठाग्रग्रहंसह
कृत्वाधुर्यस्यविप्रस्यप्रणम्यानुब्रजेत्ततः १०
एषःश्राद्धविधिःकृत्स्नउक्तःसंक्षपतोमया
येविन्दंतिनमुह्यंतिश्राद्धकर्मसुतेक्वचित् ११
इदंशास्त्रंचगुह्यंचपरिसंख्यानएवच
वसिष्ठोक्तंचयोवेदसश्राद्धंवेदनेतरः १२
इतिकात्यायनस्मृतौचतुर्थः खंडः ४

वचन- इन कर्मों में तन्त्र (एक संकल्प में सबको अर्घ आदि देना) को त्याग दे (न करे) ८

ब्राह्मणों ने दिया जो यजमान की प्रार्थना का उत्तर उसके अनंतर अर्घ के पात्रों को सीधे करके पवित्रियों से ढके हुए पिंडों को सींचे ९

दो २ पिंडों को सींच के स्वस्ति वाचन और अंगूठों का ग्रहण प्रथम मुख्य ब्राह्मण का करे नमस्कार करके ब्राह्मणों के पीछे चले १०

यह श्राद्ध की संपूर्ण बिधि संक्षेप से मैं कही जो इस विधि को जानते हैं वे कभी भी श्राद्ध के कर्म में मोह को प्राप्त नही होते ११

इस शास्त्र को और शास्त्र की गुप्त विधि को और वशिष्ठ जी के कहे शास्त्र को जो जानता है वही श्राद्ध को जानता है इतर नही १२

४ खण्ड पूर्ण हुआ

असकृद्यानिकर्माणिक्रियेरन्कर्मकारिभिः
प्रतिप्रयोगंनैताःस्युर्मातरःश्राद्धमेवच १
आधानेहोमयोश्चैववैश्वदेवेतथैवच
बलिकर्म्मणिदर्शेचपौर्णमासेतथैवच २
नवयज्ञेचयज्ञज्ञावदन्त्येवंमनीषिणः
एकमेवभवेच्छ्राद्धमेतेषुनपृथक्पृथक् ३
नाष्टकासुभवेच्छ्राद्धंनश्राद्धेश्राद्धमिष्यते
नसोष्यन्तीजातकर्म्मप्रोषितागतकर्म्मसु ४
विवाहादिःकर्म्मगणोयउक्तो
गर्भाधानंशुश्रुमयस्यचान्ते
विवाहादावेकमेवात्रकुर्यात्
श्राद्धंनादौकर्म्मणःकर्म्मणःस्यात् ५

वारंवार जिन कर्मों को कर्म करने वाले करते हैं उन प्रत्येक कर्मों में ये षोड़शमातृ का और श्राद्ध (नांदी मुख)नहीं होते १

गर्भाधान—होम—बलिवैश्वदेव—बलि के देने में—मावस और पूर्णमासी के कर्म में २

और नव (नई) यज्ञ में यज्ञ के जानने वाले पण्डित ऐसे कहते हैं कि एकही श्राद्ध होता है पृथक २ नहीं ३

अष्टकाओं में और एक श्राद्ध के समय में दूसरा श्राद्ध नहीं होता—परदेश में रहती हुई सोष्यंती (जिसके बालक हुआ हो) जातकर्म न करै—पूर्व कहे कर्मों में ४

विवाह आदि कर्म का जो समूह कहा वह और गर्भाधान यह हमने सुना उसके पीछे और विवाह की आदि में एकही श्राद्ध होता है प्रति कर्म की आदि में (पहिले) नहीं होता ५

प्रदोषेश्राद्धमेकंस्याद्गोनिष्क्रामप्रवेशयोः
नश्राद्धं युज्यतेकर्तुंप्रथमेपुष्टिकर्म्मणि ६
हलाभियोगादिषुतुषट्सुकुर्यात्पृथक्पृथक्
प्रतिप्रयोगमन्येषामादावेकन्तुकारयेत् ७
वृहत्पत्रिक्षुद्रपशुस्वस्त्यर्थंपरिविष्यतोः
सूर्य्येन्द्वोःकर्म्मणीयेतुतयोःश्राद्धं नविद्यते ८
नदशाग्रंथिकेचैवविषवद्दष्टकर्म्मणि
कृमिदष्टचिकित्सायांनैवशेषेषुविद्यते ६
गणशःक्रियमाणेषुमातृभ्यःपूजनंसकृत्
सकृदेवभवेच्छ्राद्धमादौनपृथगादिषु १०

प्रदोष में भी एकही श्राद्ध होता है—और गौके निकालने और प्रवेशमें और पहिले पुष्टि के लिये किये कर्म में श्राद्ध न करै ६

हलका अभियोग (प्रथम जोतना] आदि छः कर्मों में पृथक् २ श्राद्ध होता है इससे प्रत्येक कर्म की आदि में एक श्राद्ध करावे ७

बडे २ पक्षी और छोटे २ पशु इनके कल्याण के लिये किये और सूर्य और चद्रमा के परिवेष [चारों ओर मंडलाकार होना] के समय में किये कर्म में श्राद्ध न करै ८

दशाग्रंथि कर्म में—विषवाले के डसेपर जो कर्म होता है उसमें और कीड़े के डसे की चिकित्सा में और जो कर्म शेष हो उसमें श्राद्ध नही हैं ६

समूह से [एक वार] किये कर्मों में षोड़श मातृका ओंका पूजन और कर्मकी आदि में श्राद्ध एक वार होता है पृथक् २ कर्म की आदि में नहीं १०

यत्रयत्रभवेच्छ्राद्धं तत्रतत्रचमातरः
प्रासङ्गिकमिदंप्रोक्तमतःप्रकृतमुच्यते ११
इतिकात्यायनस्मृतौपंचमः खंडः ५
आधानकालायेप्रोक्तास्तथायाश्चाग्नियोनयः
तदाश्रयोग्निमादध्यादग्निमानग्रजोयदि १
दारांदिगमनाधानेयःकुर्यादग्रजाग्रिमः
परिवेत्तासविज्ञेयःपरिवित्तिस्तुपूर्व्वजः २
परिवित्तिपरिवेत्तारौनरकंगच्छतोध्रुवं
अपिचीर्णप्रायश्चित्तौपादोनफलभागिनौ ३
देशान्तरस्थक्लीबैकवृषणानसहोदरान्

जहां २ श्राद्ध होता है वहां २—१६ मातृ का होता हैं—यहां तक प्रासंगिक [प्रसंग में आया] कहा अब प्रकृत (जिसका प्रकरण था) कहे हैं ११

५ खण्ड पूर्ण हुआ

जो अग्नि के आधान के समय हैं और जो अग्नि के कारण हैं तदाश्रय [उन्हीमें] अग्नि होत्री जेठा भाई अग्न्याधान (अग्निहोत्र का ग्रहण] करे १

जो छोटा भाई बड़े भाई से पहिले विवाह और अग्न्याधान करताहै वह परिवेत्ता और जेठा भाई परिवित्ति जानने २

परिवित्ति और परिवेत्ता दोनों निश्चय से नरक में जाते हैं यदि वे दोनों प्रायश्चित्त करलें तो पादोन [तीन भाग] फल के भागी होते हैं ३

यदि जेठा भाई परदेश में हो वा नपुंसक वा जिसके एक ही वृषण [अंड कोश] हो वा अपना सहोदर [सगा] भाई न हो

वेश्यातिसक्तपतितशूद्रतुल्यातिरोगिणः ४
जडमूकान्धबधिरकुब्जवामनकुंडकान्
अतिवृद्धानभार्यांश्चकृषिसक्तान्नृपस्यच ५
धनवृद्धिप्रसक्तांश्चकामतःकारिणस्तथा
कुलटोन्मत्तचोरांश्चपरिविन्दन्नदुष्यति ६
धनवार्द्धुषिकंराजसेवकंकर्म्मकंतथा
प्रोषितञ्चप्रतीक्षेतबर्षत्रयमपित्वरन् ७
प्रोषितंयद्यशृण्वानमब्दादूर्ध्वंसमाचरेत्

वा वश्या गामी हो वा पतित हो—वा शूद्र के समान हो—वा अत्यंत रोगी हो ४

जड (महा अज्ञानी) हो—वा मूक (गूंगा) हो—अंधा हो वा वधिर (वहरा) कुब्ज (कुवड़ा हो—वामन (विलंदिया)हो वा कुंडक (पिता के जीते जारसे पैदा हुआ) वा अत्यन्त बूढ़ा हो वा जिसके स्त्री न हो—वा जो राजा की खेती करता हो ५

धन के बढ़ा ने में आसक्त हो—वा अपनी इच्छा के अनुसार जो कर्म करता हो वा कुलट (घर २ में जो फिरे) वा उन्मत्त वा चोर इतने जेठे भाईयों के परिवेदन [पहिले विवाह वा अग्नि होत्रलेना) में छोटा भाई दोष भागी नहीं होता ६

यदि जेठा भाई व्याज से धन को बढ़ाने वाला हो—वा राजा का सेवक हो—वा कर्म को करने वाला हो—वा परदेश में हो ऐसे की शीघ्रता करने वाला भी छोटा भाई तीन बर्ष तक प्रतक्षा करे ७

यदि परदेश में रहते की खबर न हो तो एक वर्ष पीछे बिवाह आदि करले यदि जेठा भाई फिर आजाय तो उस पाद

आगतेतुपुनस्तस्मिन्पादंतच्छुद्धयेचरेत् ८
लक्षणेप्राग्गतायास्तुप्रमाणंद्वादशाङ्गुलं
तन्मूलसक्तायोदीचीतस्याएतन्नवोत्तरं ९
उदग्गतायाःसंलग्नाःशेषाःप्रादेशमात्रिकाः
सप्तसप्तांङ्गुलांस्त्यक्त्वाकुशेनैवसमुल्लिखेत् १०
मानक्रियायामुक्तायामनुक्तेमानकर्त्तरि
मानकृद्यजमानःस्याद्विदुषामेषनिश्चयः ११
पुण्यवानादधीताग्निंसहिसर्वैःप्रशस्यते
अनर्द्धुकत्वंयत्तस्यकाम्यैस्तन्नीयतेशमं १२

की शुद्धि के लिये चौथाई प्रायश्चित्त करे ८

पहिले कही कुशा के लक्षण (परीक्षा में बारह अंगुल का प्रमाण है और कुशा की जड़ में फंठी जो उदीची उत्तर की तरफ कुशा उसका प्रमाण अधिक से अधिक नो अंगुल का है ९

और इस उदीची से लगी हुई जो शेष कुशा हैं वे प्रादेश (वितस्ति) प्रमाण की हैं—सात २ अंगुल को कुशाओं को छोड़ कर कुशा से उल्लेखन करे १०

जहां प्रमाण की क्रिया कही हो और प्रमाण का करने वाला न कहा हो वहां विद्वानों का यह निश्चय है कि प्रमाण (जैसा कि बारह अंगुल की कुशा लेनी) का कर्ता यजमान होता है अर्थात् यजमान की अंगुलियों से कुशा मापनी ११

पवित्रहस्तकर अग्नि में अग्निहोत्र करे क्योंकि उसकी प्रशंसा करतेहैं इस अग्निके नही बढ़नेकी दशाकोकामनाके कर्म शांत करदेते हैं १२

यस्यदत्ताभवेत्कन्यावाचासत्येनकेनचित्
सोऽन्त्यांसमिधमाधास्यन्नादधीतैवनान्यया १३
अनूढैवतुसाकन्यापञ्चत्वंयदिगच्छति
नतथाव्रतलोपोऽस्यतेनैवान्यांसमुद्वहेत् १४
अथचेन्नलभेतान्यांयाचमानोऽपिकन्यकां
तमग्निमात्मसात्कृत्वाक्षिप्रंस्यादुत्तराश्रमी १५

इतिकात्यायनस्मृतौषष्ठः खंडः ६

अश्वत्थोयःशमीगर्भःप्रशस्तोर्वीसमुद्भवः
तस्ययाप्राङ्मुखीशाखावोदीचीवोर्ध्वगापिवा १

यदि किसी ने सत्यवाणी से किसी को कन्या दी हो अर्थात् सगाई करदी हो वह (वर) पिछली समिधों का आधान (विवाह का होम) करना चाहै तो अन्य स्त्री से न करै अर्थात् जिसके संग सगाई हुई थी उस स्त्री सहित ही अग्निहोत्र ले १३

यदि वह कन्या बिना विवाही मरजाय तो तिससे इस पुरुष के व्रत (अग्निहोत्र लेने की प्रतिज्ञा) का नाश नही होता उसी अग्नि से दूसरी स्त्री को विवाह लें १४

यदि मांगने से भी अन्य कन्या न मिले तो आत्मा में उस अग्नि को मान कर संन्यास को ग्रहण करै १५

६ खण्ड पूर्ण हुआ

पवित्र भूमि में उत्पन्न जो अश्वत्थ (पीपल) शमीगर्भ है (जिसमें शमी जमी हो) उस की पूर्व को अथवा उपर को गई जो शाखा (डाली) है १

अरणीस्तन्मयीप्रोक्तातन्मध्येवोत्तरारणिः
सारवद्दारवञ्चात्रमोविलीचप्रशस्यते २
संसक्तमूलोयःशम्याःसशमीगर्भउच्यते
अलाभेत्वशमीगर्भादुद्धरेदविलम्बितः ३
चतुर्विंशतिरंगुष्ठदैर्घ्यंषडपिपार्थिवं
चत्वारउच्छ्रयेमानमरण्योःपरिकीर्त्तितम् ४
अष्टाङ्गुलःप्रमन्थःस्याच्चत्रंस्याद्द्वादशाङ्गुलं
उविलीद्वादशैवस्यादेतन्मंथनयंत्रकं ५
अङ्गुष्ठाङ्गुलमानन्तुयत्रयत्रोदिश्यते

उसकी नीचली और ऊपर की अरणी (जिस में वर्में को दबाकर वर्मा फरते हैं)होती हैं और दृढ़ काठका चत्र और ओवली [जो वर्में के नीच ऊपर के छोट २ काठ होतेहैं) श्रेष्ठ कहे हैं २

पीपल में लगा जो शमी (छोंकर वाजांडी) का मूल(जड़) उसे शमी गर्भ कहते हैं यदि शमी गर्भ न मिले तो जो शमी गर्भ नहीं उसी पीपल से अरणी के लिये शीघ्र शाखा को ग्रहण करे ३

चौबीस अंगुल की लंवाई और छः अथवा चार अंगुल की मटाई का प्रमाण दोनों अरणियों का कहा है ४

आठ अंगुल का प्रमथ (वर्मा) होता है वारह अंगुल का चत्र और ओवली होते हैं ये सब मिलकर मथने का यंत्र होता है ५ ॥

जहां २ अंगूठे के अंगुल का प्रमाण कहा है तहां२ वृह

तत्रतत्रवृहत्पर्वग्रंथिभिर्मिनुयात्सदा ६
गोबालैःशणसंमिश्रैस्त्रिवृत्तममलात्मकं
व्यामप्रमाणंनेत्रं स्यात्प्रमथ्यस्तेनपावकः ७
मूर्द्धाक्षिकर्णवक्त्राणिकन्धराचापिपञ्चमी
अङ्गुष्ठमात्राण्येतानिद्व्यंगुष्ठंवक्ष उच्यते ८
अंगुष्ठमात्रंहृदयंत्र्यंगुष्ठमुदरंस्मृतं
एकांगुष्ठाकटिर्ज्ञेयाद्वौबस्तिर्द्वेचगुह्यके ९
उरूजंघेचपादौचचतुस्त्र्येकैर्यथाक्रमं
अरण्यवयवाह्येतेयाज्ञिकैःपरिकीर्तिताः १०
यत्तदगुह्यमितिप्रोक्तंदेवयोनिस्तुसोच्यते

स्पर्व [बीच की गांठ] से सदैव प्रमाण करे अर्थात् मापै ६

शणजिन में मिला हो ऐसे गौ के बालों से त्रिवृत [तिगुना] और निर्मल और व्याम [३ हाथ] जिसका प्रमाण हो ऐसा नेत्र [नतना] होता है उससे अग्नि को मथे ७

शिर—नेत्र—कान—मुख—कंधरा [नाड़] जिस से ये पांचों अंगूठे की तुल्य हों और दो अंगूठे भर छाती हो ८

एक अंगूठे भर हृदय—तीन अंगूठे भर उदर हो—एक अगूठे भर कमर—दो अगूठ भर वस्ति [नाभि से निचला भाग] और गुदा हों ९

ऊरू [रान) जंघा [पोंडी] पाद (पैर) ये तीनों क्रम से चार तीन एक अंगुल भर होतेहैं ये सब यज्ञ कर्ताओंने अरणीके अवयव कहे हैं १०

जो पूर्व गुह्य कहा है उसे देव (अग्नि) की योनि [कारण]

अस्यांयोजायतेवन्हिःसकल्याणकृदुच्यते ११
अन्येपुयेतुमथ्नंन्तितेरोगभयमाप्नुयुः
प्रथमेमन्थनेत्वेपनियमोनोत्तरेषुच १२
उत्तरारणिनिष्पन्नःप्रमंथःसर्वदाभवेत्
योनिसंकरदोषेणयुज्यतेह्यन्यमन्थकृत् १३
आर्द्रासशुषिराचैवघूर्णांगीपाटितातथा
नहितायजमानानामरणिश्चोत्तरारणिः १४
इतिकात्यायनस्मृतौ सप्तमःखंड ७ः
परिधायाहतंवासःप्रावृत्यचयथाविधि
बिभृयात्प्राङ्मुखोयन्त्रमावृतावक्ष्यमाणया १

कहते हैं इस में जो अग्नि होता हैं वह कल्याण करने वाला कहा है ११

अन्य जगे जो अग्नि को मथते हैं वेरोग और भय को प्राप्त होते हैं पहिले मथने का ही इनमें नियम है दुवारा का नही वह चाहै जैसा हो १२

ऊपर की अरणी से पेदा हुआ हो सदा प्रमंथ होता है और योनि कारणके संकर, (हेलमेल, के दोषसे अन्य मथनका कर्ता युक्त होता है १३

गीली—सुषिरा (घुनी) घुर्ण (फटो) ये दोनों अरणी यजमान को हित नहीं होती १४

७ खण्ड पूर्ण हुआ

नवीन वस्त्र पहन कर और यंत्र की प्रदक्षिणा करके और पूर्वाभि मुख होकर—जिसे आगे वर्णन करेंगे ऐसी आवृत् से यंत्र को धारणकरे १

चत्रबुध्नेप्रमन्थाग्रंगाढंकृत्वाविचक्षणः
कृत्वोत्तराग्रामरणितद्बुध्नमुपरिन्यसेत् २
चत्राधःकीलकाग्रस्थामोविलीमुदगग्रकान्
विष्टंभाद्धारयेद्य न्त्रंनिष्कम्पंप्रयतःशुचिः ३
त्रिरुद्वेष्ठयाथनेत्रेणचक्रंपत्न्योहतांशुकाः
पूर्वंमन्थन्त्यरणयान्ताःप्राच्यग्नेःस्याद्यथाच्युतिः ४
नैकयापिविनाकार्य्यमाधानंभार्य्ययाद्विजैः
अकृतंतद्विजानीयात्सर्वान्वाचारमन्तियत् ५

चत्र—को वृध्न और प्रमंथ का अग्र भाग इन सबको गाठ (जोर से पकड़ना) करके और ऊपर को है अग्रजिसका ऐसी अरणीको करके उस वृध्न को ऊपर रखदे २

चत्र के नीचे की कीलके अग्र भाग में टिकी और ऊपर को है अग्र भाग जिसका ऐसी आवली को रक्खे और बड़े यत्न स सावधान होकर नहीं कंपता हुआ यजमान यंत्र को पकड़े ३

पत्नी(यजमान की स्त्रियां) नवीन वस्त्र पहन कर और चत्र को नेत्र (नेता)से तीन वार लपेट कर यजमान से पहिले इस प्रकार मथें जैसे अरणी के अत भाग से पूर्व दिशा में अग्नि गिरे ४

एक भार्या के विना भी द्विज अग्नि का आधान न करे यदिकरेतो उसको नहीं किया जाने,जिससेस्त्री सब मनुष्योंको वाणी से वश करती हैं ५

वर्णज्येष्ठयेनबह्वीभिःसवर्णाभिश्चजन्मतः
कार्यमग्निच्युतेराभिःसाध्वीभिर्मथनपुनः ६
नात्रशूद्रींप्रयुञ्जीतनद्रोहद्वेपकारिणीं
नचैवाव्रतस्थांनान्यपुंसाचसहसंङ्गतां ७
ततःशक्ततरापश्चादासामन्यतरापिवा
उपेतानांवान्यतमामन्थेदग्निंनिकामतः ८
जातस्यलक्षणंकृत्वातप्रणीयसमिध्यच
आधायसमिधंचैवब्राह्मणंचोपवेशयेत् ९
ततःपूर्णाहुतिंहुत्वासर्वमंत्रसमन्वितां
गांदद्याद्यज्ञवानन्तेब्रह्मणेवाससीतथा १०

यदि बहुत स्त्री हों तो जो उत्तम वर्ण की हो उनसे और यदि उत्तम बर्ण की भी बहुत होंय तो जो अवस्था में बड़ी हो उससे अग्नि का आधान करैं यदि मथित अग्नि नष्ट होजाय तो साधु स्वभाव वाली स्त्रियां फिर मथन करैं ६

अग्नि के मथने में इन स्त्रियों को नियुक्त न करै--कि शूद्री हिंसा और द्रोह करने वाली जो व्रत में नहिंकी हो—जिसने अन्य पुरुष का संगम किया हो ७

फिर इन स्त्रियोंमें जो अत्यंत समर्थहो और कोई सोहो और यज्ञमें प्राप्त हुई स्त्रियोंमें कोई हो वह इच्छा पूर्वक अग्निकोमथे ८

पैदा हुई अग्नि के लक्षण प्रकाश करे और अग्निशाला में लाकर और प्रज्वलित करके और समिध (ढाककी लकड़ी) रखकर वहां ब्राह्मणको बैठाय दे ९

फिर संपूर्ण मंत्रों से युक्त पूर्णाहुति देकर यज्ञ के अन्त में ब्राह्मणको दो वस्त्र और गौ दे १०

होमपात्रमनादेशेद्रवद्रव्येस्रुवःस्मृतः
पाणिरेवेतरस्मिंस्तुस्रुचैवात्रतुहूयते ११
खादिरोवाथपालाशोद्विवितस्तिःस्रुवःस्मृतः
स्रुग्बाहुमात्राविज्ञेयावृतस्तुप्रग्रहस्तयोः १२
स्रुवाग्रेघ्राणवत्खातंद्व्यंगुष्टपरिमंडलम्
जुह्वाःशरावखातंसनिर्वाहंषडङ्गुलम् १३
तेषांप्राक्शःकुशैःकार्य्यःसंप्रमार्गोजुहूषता
प्रतापनञ्चलिप्तानांप्रक्षाल्योष्णेनवारिणा १४
प्राच्यंप्राञ्चमुदगग्रैरुदगग्रंसमीपतः

जहां कोई पात्र न कहा हो वहां होम का पात्र समझना जहां द्रव द्रव्य (घी आदि) कहे हों वहां स्रुव समझना और इतर साकल्य में हाथ लेना और यज्ञ में होम स्रुक सेही होता है ११

खैर अथवा ढाक का और दोविलस्त का स्रुव कहा है और एक भुजा की स्रुक होती है इन दोनोंका अग्रहण[पकड़नेकी जगे] वृत्त [गोल] होती है १२

स्रुव के अग्र भाग में नासिका के समान खात (गट्ठा) अंगूठे की बराबर करना—और जुहू (होमका पात्र) के अग्र भाग में शराव (सरवा) के समान सनिर्वाह (पनाले के समान) छः अंगुल का गड्ढा करना १३

उनके प्राक (पहिले) भाग में कुशाओं से प्रमार्ग (अच्छी सफाई) हवन करने वाला करै—यदि ये तीनों घी आदि से लिपे होंय तो उष्ण जल से धोकर इनको तपाय ले १४

पूर्व २ द्रव्य को अग्नि के समीप उत्तर दिशा में तिल २

तत्तथासादयेद्द्रव्यंयद्यथाविनियुज्यते १५
आज्यहव्यमनादेशेजुहोतिषुबिधीयते
मंत्रस्यदेवतायाश्चप्राजापतिरितिस्थितिः १६
नांगुष्ठादधिकाग्राह्यासमित्स्थलतयाक्वचित्
नवियुक्तात्वचाचैवनसकीटानपाटिता १७
प्रादेशान्नाधिकानोनानतथास्याद्विशाखिका
नसपर्णानिर्व्वीर्य्याहोमेषुचविजानता १८
प्रादेशद्वयमिध्मस्यप्रमाणंपरिकीर्त्तितं
एवंविधाःस्युरेवेहसमिधःसर्वकर्मसु १९

द्रव्य को ऐसे प्रकार से रक्खे जिस २ क्रमसे वह द्रव्य नियुक्त किया (दिया) जायगा १५

सब होमों में जहां किसी द्रव्य का नाम नहीं कहा वहां घी को ही हव्य कहा है जहां किसी मंत्र का देवता नहीं कहा प्रजापति देवता समझना यही मर्य्यादा है १६

अंगूठे से अधिक मोटी—और जिसके त्वचा (वक्कल) न हो—और जिसमें कीड़े हों—और जो फटी हो ऐसी समिध नहीं लेनी १७

जो प्रादेश (अंगूठा और तर्जनी का प्रमाण) से अधिक हो वा न्यून—और जिसके शाखा (डाली) नहो—और जिसके पत्ते हों—और जो घुनी हो—ज्ञान वान् पुरुष होम में ऐसी समिध न ले १८

दो उक्त प्रादेश इंधन का प्रमाण कहा है सब कर्मों ऐसी ही समिधे होती हैं १९

समिधोऽष्टादशेध्मस्यप्रवदन्तिमनीषिणः
दर्शेचपौर्णमासेचक्रियास्वन्यासुविंशतिः २०
समिधादिषुहोमेषुमंत्रदैवतवर्जिता
पुरस्ताच्चोपरिष्टाच्चहीन्धनार्थसमिद्भवेत् २१
इध्मोऽप्येधार्थमाचार्य्यैर्हविराहुतिषुस्मृतः
यत्रचास्यनिवृत्तिःस्यात्तत्स्पष्टीकरवाणयहं २२
अंगहोमसमित्तंत्रसोष्यन्त्वाख्येषुकर्म्मसु
येषांचैतदुपर्य्युक्तंतेषुतत्संदृशेषुच २३
अक्षभंगादिविपदिजलहोमादिकर्म्मणि

विद्वान् मनुष्य मावस और पूर्णमासी के होम में (इध्म इंधन) की अठारह १८ समिध कहते हैं और अन्य कर्मों में बीस ॥ २०

जो होम समिधों से किये जाते हैं उनके पहिले अथवा पीछे इंधन के लिये जो समिध होती हैं उसका मंत्र और देवता कोई भी नहीं होता २१

एध (इंधन) के लिये इध्म [अठारह समिध) को भी आचार्य कहते हैं कि यह भी आहुतियों में हवि (साकल्य) है और जिस कर्म में यह इध्म नहीं उसको में स्पष्ट (प्रकट) करता हुं २२

अंग होम (बड़े यज्ञ में कर्तव्य छोटे यज्ञ में जो होता है) समित्तंत्र गर्भाधान आदि संस्कार—और जिन में पहिले कहा है उनमें और उनके समान कर्मों में २३

नेत्र के भंग (फूटना) आदि विपत्ति में जलके निमित्त

सोमादितिषुसर्वासुनैतेष्विध्मोविधीयते २४
इतिकात्यायनस्मृतौ अष्टमःखंडः ८
सूर्य्येऽन्तशैलमप्राप्तेषट्त्रिंशद्भिःसदांगुलैः
प्रादुष्करणमग्नीनांप्रातर्भासांचदर्शनात् १
हस्तादूर्ध्वैरविर्यावद्गिरिंहित्वानगच्छति
तावद्धोमविधिःपुण्योनात्येत्युदितहोमिनां २
यावत्सम्यग्नभाव्यंतेनभस्यृक्षाणिसर्वतः
नचलौहित्यमापैतितावत्सायंचहूयते ३
रजोनीहारधूमाभ्रवृक्षाग्रान्तरितेरवौ

जो होम तिलमें और संपूर्ण सोम और अदिति यज्ञों में इध्म नही कहा है २४

८ खंड पूर्ण भया

जिस समय सूर्य अस्ताचल पर्वत से छत्तीस अंगुल ऊपर है उस समय संध्या को और प्रातःकाल किरणों के दीखने पर अग्नियों को प्रज्वलित करे १

सूर्योदय पर होम करने वालों की होम विधि तब तक भ्रष्ट नही होती जब तक उदयाचल से हाथ से ऊपर सूर्य न पहुंचे अर्थात् एक हाथ सूर्य के चढने परभी उदय काल ही रहता है २

इतने सब आकाश में भली प्रकार नक्षत्र दीखें और प्रकाश की लाली दूर न हो तब तक संध्या का होम करे ३

यदि सूर्य धूल—नीहार (कोहर) धूम—मेघ—वृक्ष—इन

संध्यामुद्दिश्य जुहुयाद्धुतमस्यनलुप्यते ४
नकुर्यात्क्षिप्रहोमेषुद्विजःपरिसमूहनं
वैरूपाक्षंचनजपेत्प्रपदंचविवर्जयेत् ५
पर्युक्षणांचसर्वत्रकर्तव्यमदितेन्विति
अंतेचवामदेव्यस्यगानंकुर्यादृचस्त्रिधा ६
अहोमकेष्वपिभवेद्यथोक्तंचंद्रदर्शनं
वामदेव्यंगणेष्वन्तेवल्यन्तेवैश्वदेविके ७
यान्यधस्तरणान्तानिनतेषुतरणांभवेत्
एककार्यार्थसाध्यत्वात्परिधीनपिवर्जयेत् ८

से ढका हो उस समय संध्या समझ कर जो होम करै उसका होम नष्ट नहीं होता ४

द्विज क्षिप्र (शीघ्रता को) होमों में परि समूह न (कुशाओं से वेदी की स्वच्छता) न करै—और विरूपाक्ष मंत्र न जपे और प्रपद (प्रारंभ) भी न करै ५

सब होमों की आदि में पर्युक्षण (कुशाओं से होम की वस्तु छिड़कना) और अंत मे वामदेव ऋचा का तीनवार गान (पाठ) होता है ॥

जिन पर्विमाओं में होम नही होता उनमें चंद्रमा का दर्शन जैसे होता है ऐसे सब गणों (यज्ञों के समूहों) के अंत में और वलिवैश्वदेव के अंत में वामदेव सूक्त (साम वेद के मंत्र) का जप होता है ७

अधस्तरण के अंत तक जितने कर्म हैं उनमें तरण नही होता—एक कार्य के लिये होने से परिधियों (जो कुण्ड के चारों तरफ मर्यादा की जाती है) को भी उन कर्मों न करै ८

बर्हिःपर्य्युक्षणंचैववामदेव्यजपस्तथा
कृत्वाहुतिषुसर्व्वासुत्रिकर्मतन्नविद्यते ६
हविष्येषुयथामुख्यास्तदनुव्रीहयःस्मृताः
माशकोद्रवगौरादिसर्वालाभेऽभिवर्जयेत् १०
पाण्याहुतिर्द्वादशपर्व्वपूरिका
कंसादिनाचेत्स्रुवमात्रपूरिका
दैवेनतीर्थेनचहूयतेहविः
स्वंगारिणिस्वर्च्चिषितच्चपावके ११
योऽनर्च्चिषिजुहोत्यग्नौव्यंगारिणिचमानवः
मन्दाग्निरामयावीचदरिद्रश्चसजायते १२

बर्हिः [१६ कुशा] पर्य्युक्षण—वामदेव का जप—ये तीन कर्म संपूर्ण यज्ञों की आहुतियों में नहीं होते अर्थात् कहीं होते हैं कहीं नहीं ६

सब हविष्यों में जो मुख्य है वे न मिलें तो व्रीहि [धान] होते हैं यदि ये न मिलें तो उड़द—कोदो—गेहूं इनको वर्ज दे और तिल आदि की आहुति देदे १०

हाथ से जो आहुति दे तो इतने की दे जिससे बारह पर्व (अंगुल) चारों अंगुलियों के भर जांय—यदि पात्र से दे तो स्रुवे को भरके दे और साकल्य को देव तीर्थ [अंगुलियों के अग्र भाग में होता है] से ऐसी अग्नि में आहुति दे जिसमें अंगार और ज्वाला अत्यन्त हैं। ११

जिसमें ज्वाला और अंगार नहीं ऐसी अग्नि में जो मनुष्य होम करता हैं वह मंदाग्नि और रोगी और दरिद्री होता है १२

तस्मात्समिद्धे होतव्यंनासमिद्धे कदाचन
आरोग्यमिच्छतायुश्चश्रियमात्यंतिकींपरां १३
होतव्येचहुतेचैवंपाणिसूर्पस्फ्यदारुभिः
नकुर्यादग्निधमनंकुर्याद्वाव्यंजनादिना १४
मुखेनैकेधमन्त्यग्निंमुखाद्ध्येषोऽध्यजायत
नाग्निंमुखेनेतिचेल्लौकिकेयोजयन्तितम् १५
इतिकात्यायनस्मृतौनवमःखंडः ९
यथाहनितथाप्रातर्न्नित्यंस्नायादनातुरः
दन्तान्प्रक्षाल्यनद्यादौगृहेचेत्तदमन्त्रवत् १

तिससे आरोग्य—अवस्था—और अत्यन्त श्रेष्ठ लक्ष्मी की इच्छा करने वाला पुरुष अच्छी जलती अग्नि में होम करै—जो अग्नि न जलती हो उसमें कभी न करे १३

जिस अग्नि में होम करना हो वा किया हो उसको हाथ - सूप—स्फ्य [एक यज्ञ का पात्र] काठ इनसे प्रज्वलित न करे किन्तु बीजने आदिसे ही करै १४

कोई मुख से अग्नि को जलाते हैं क्योंकि यह अग्नि मुख सेही पैदा हुआ है और कोई यह कहते हैं कि मुख से अग्नि को न जलावे यह कहना लौकिक (साधारण] अग्नि के विषै है यज्ञ की अग्नि में नहीं १५

९ खंड पूर्ण हुआ

रोग रहित मनुष्य जैसे दिन में स्नान करै तैसेही प्रातः काल भी करै—नदी आदि में दांतों का धोकर और घरमें स्नान करै तो मंत्रों के बिना करै १

नारदाद्युक्तवार्क्षंयदष्टाङ्गुलमपाटितं
सत्वचंदन्तकाष्ठंस्यात्तदग्रेणप्रधावयेत् २
उत्थायनेत्रेप्रक्षाल्यशुचिर्भूत्वासमाहितः
परिजप्यचमन्त्रेणभक्षयेद्दंतधावनं ३
आयुर्बलंयशोवर्च्चःप्रजापशून्वसूनिच
ब्रह्मप्रज्ञाञ्चमेधाञ्चतन्नोधेहिवनस्पते ४
मासद्वयंश्रावणादिसर्व्वानद्योरजस्वलाः
तासुस्नानंनकुर्वीतवर्जयित्वसमुद्रगाः ५
धनुःसहस्राण्यष्टौतुगतिर्यासांनविद्यते
नतानद्यशब्दवहागर्तास्ताःपरिकीर्तिताः ६

नारद आदि ऋषियों ने कहे जो वृक्ष उनकी और आठ अंगुल की बिना फटी और त्वचा [वक्कल] सहित—दंतोन न होती है उसके अग्रभाग से दांतो को अच्छी तरे धोवे २

उठकर नेत्रों को धोकर और सावधानी से शुद्ध होकर और मंत्र को जप कर दतोन करे ३

यह दतोन का मंत्र है कि हे वृक्ष तूमुझे अवस्था—बल यश—तेज, प्रजा, पशु, धन, वेद उत्तम बुद्धि इनको दे ४

श्रावण आदि दो महीनों में सब नदी रजस्वला होती हैं जो नदी समुद्र तक जाती हैं उनको छोड़ कर रजस्वला नदियों में स्नान न करे ५

आठ हजार धनुष तक जो नदी नही जाती वे शब्द से बहने वाली नही हैं किन्तु वे नदी गर्त कहे हैं ६

उपाकर्म्मणिचोत्सर्गेप्रेतस्नानेतथैवच
चन्द्रसूर्यग्रहेचैवरजोदोषोनविद्यते ७
वेदाश्छंदांसिसर्वाणिब्रह्माद्याश्चदिवौकसः
जलार्थिनोऽथपितरोमरीच्याद्यास्तथर्षयः ८
उपाकर्म्मणिचोत्सर्गेस्नानार्थंब्रह्मवादिनः
पिपासूननुगच्छंतिसंतुष्टाःस्वशरीरिणः ९
समागमस्तुयत्रैषांतत्रहत्यादयोमलाः
नूनंसर्व्वेक्षयंयान्तिकिमुतैकंनदीरजः १०
ऋषीणांसिच्यमानानामन्तरालंसमाश्रितः
संपिबेद्यःशरीरेणपर्षन्मुक्तजलच्छटाः ११

उपाकर्म और उत्सर्ग (१) में प्रेतके निमित्त स्नान करने में चन्द्रमा और सूर्य के ग्रहण में रजस्वला दोष नहो है ७

वेद, संपूर्णछंद ब्रह्मादिक देवता और जलके अभिलाषी पितर और मरीचि आदि ऋषी ८

ये सब उस समय उनके पीछे चलते हैं जिस समय संतो पी ब्रह्म (वेद) के ज्ञाता देहधारी उपाकर्म और उत्सर्ग के स्नान के निमित्त जाते हैं ९

जहां इन वेद आदिकों का समागम है वहां हत्या आदि सब दोष निश्चय से नष्ट होते हैं नदी का रज क्यों न होगा १०

सींचे जाते (हुए) ऋषियों के मध्य में टिका जो मनुष्य अपने शरीर के द्वारा पत्थर से छुटी जलकी छटा (बूंद) ओं को पीता है ११

---

१ ये दोनों कर्म श्रावणी में होते है

विद्यार्द्दीन्ब्राह्मणःकामान्वरादीन्कन्यकाध्रुवं
आमुष्मिकान्यपिसुखान्प्राप्नुयात्सनसंशयः १२
अशुच्यशुचिनादत्तमाममन्तर्जलादिना
अनिर्गतदशाहास्तुप्रेतारक्षांसिभुञ्जते १३
स्वर्धुन्यंभःसमानिस्युःसर्वाण्यम्भांसिभूतले
कूपस्थान्यपिसोमार्कग्रहणेनात्रसंशयः १४
इतिकात्यायन स्मृतौदशमः खंडः इतिकर्म्मप्र
दीपेपरिशिष्टेकात्यायनविरचितेप्रथमःप्रपाठकः१
अतऊर्द्ध्वंप्रवक्ष्यामिसंध्योपासनकंविधिं
अनर्हःकर्म्मणांविप्रःसंध्याहीनोयतःस्मृतः १
सव्येपाणौकुशान्कृत्वाकुर्य्यादाचमनक्रियां

वह यदि ब्राह्मण होय तो विद्या आदि मनोरथों को—कन्या वरको प्राप्त होती हैं और परलोक के भी सुखों को प्राप्त होते हैं इसमें संशय नहीं १२

मर के दश दिन के भीतर अशुद्ध पुरुष ने दिया जो निर्मल अन्न और जलादि है उसको राक्षस भोगते हैं १३

संपूर्ण पृथ्वी परके और कुये के जल चन्द्रमा और सूर्य के ग्रहण में गंगा जल के समान हैं १४

१० खंड पूर्ण हुआ—और कात्यायन के रचे परिशिष्टकर्म प्रदीप में प्रथम प्रपाठक पूर्ण हुआ।

इससे आगे संध्या वंदन की विधि कहता हूं जिससे संध्या हीन ब्राह्मण सब कर्मों के अयोग्य कहा है १

बांये हाथ में कुशा रख कर आचमन करै कुशा छोटी

ह्रस्वाःप्रचरणीयाःस्युःकुशादीर्घास्तुबर्हिषः २
दर्भाःपवित्रमित्युक्तमतःसंध्यादिकर्म्मणि
सव्यःसोपग्रहःकार्य्योदक्षिणःसपवित्रकः ३
रक्षयेद्वारिणात्मानंपरिक्षिप्यसमंततः
शिरसोमार्जनंकुर्य्यात्कुशैःसोदकबिन्दुभिः ४
प्रणवोभूर्भुवःस्वश्चसाबित्रीचतृतीयका
अब्दैवत्यंत्र्यृचश्चैवचतुर्थमितिमार्जनं ५
भूराद्यास्तिस्त्रएवैतामहाव्याहृतयोऽव्ययाः
महर्जनस्तपःसत्यंगायत्रीचशिरस्तथा ६
आपोज्योतीरसोमृतंब्रह्मभूर्भुवःस्वरितिशिरः
प्रतिप्रतीकंप्रणवमुच्चारयेदन्तेचशिरसः ७

कही हैं बर्हि बड़ी २

इससे संध्या आदि कर्म में दर्भ (कुशा) पवित्र कही हैं बांये हाथ में उपग्रह (१६कुशा)ले और दाहने में पवित्री ३

अपने शरीरके चारों तरफ जलफेंक कर देहकी रक्षा करै और जलको लेकर कुशाओं से शिरकामार्जन करै ४

ॐकार भुः भवःस्वः और तीसरी गायत्री जल है देवताजिन का ऐसी तीन ऋचा(आपो हिष्ठा आदि)यह चौथा मार्जन है ५

भूः भुवः स्वः ये तीन अव्यय (नष्ट न हो) महा व्याहृती हैं महःजन तप सत्य और गायत्री और शिरः ६

आपोज्योती रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वः यह शिर मंत्रहै प्रत्येक मंत्रके आगे और शिरः मंत्र के पीछे ॐकार का उच्चारण करै७

एताएतांसहानेनतथैभिर्दशभिःसह
त्रिर्जपेदायतप्राणःप्राणायामःसउच्यते ८
करेणोद्धृत्यसलिलंघ्राणमासज्यतत्रच
जपेदनायतासुर्व्वात्रिःसकृद्वाघमर्षणं ९
उत्थायार्कंप्रतिप्रोहेत्त्रिकेणाञ्जलिनाम्भसः
ओंचित्रमृग्द्वयेनाथचोपतिष्ठेदनन्तरं १०
संध्याद्वयेऽप्युपस्थानमेतदाहुर्मनीषिणः
मध्येत्वन्हंउपर्यस्यविभ्राडादीच्छयाजपेत् ११
तदसंसक्तपार्ष्णिर्वाएकपादर्द्धपादपि

ये सात व्याहृति और गायत्री और यह शिरः मंत्र और ओंकार इन दशों को प्राणों को रोक कर तीन वार जो जपै है उसे प्राणायाम कहते हैं ८

हाथ से जलको उठाकर और नासिका से लगाकर तीन वार वा एकवार प्राणों को रोके हुए वा न रोके हुए अघमर्षण (ऋतंच सत्यं इत्यादि) मंत्र को जपै ९

उठकर जलकी अंजलि से सूर्य के सन्मुख हो अर्थात् अंजली दे फिर ओं चित्रं इत्यादि दो ऋचाओं से सूर्य की स्तुति करै १०

किदोनों सध्याओं में यही सूर्य का उपस्थान (स्तुति) है (ज्ञान वान् कहते हैं) और मध्यान्ह में इस स्तुति के पीछे अपनी इच्छा से विभ्राड इत्यादि को जपै ११

उस स्तुति के समय एड़ी पृथ्वी पर न लगे अथवा एक ही पैर से खड़ा रहे अथवा आधे पैर से—फिर हाथ जोड़कर

कुर्यात्कृताञ्जलिर्वापिऊर्द्ध्वबाहुरथापिवा १२
यत्रस्यात्कृच्छ्रभूयस्त्वंश्रेयसोऽपिमनीषिणः
भूयस्त्वंब्रुवतेतत्रकृच्छ्राच्छ्रेयोह्यवाप्यते १३
तिष्ठेदुदयनात्पूर्वांमध्यमामपिशक्तितः
आसीनउद्गमाच्चान्त्यांसंध्यांपूर्वत्रिकंजपन् १४
एतत्संध्यात्रयंप्रोक्तंब्राह्मण्यंयत्रतिष्ठति
यस्यनास्त्यादरस्तत्रनसब्राह्मणउच्यते १५
सन्ध्यालोपाच्चचकितःस्नानशीलश्चयःसदा
तंदोषानोपसर्पन्तिगरुत्मन्तमिवोरगाः १६

अथवा ऊपर को भुजा करके सूर्य की स्तुति करै १२

जिस कर्म में कष्ट बहुत होता है उसी में कल्याण भी बहुत होता है यह बुद्धिमान् कहते हैं क्योंकि कष्ट से ही कल्याण होता है १३

प्रातः कालकी संध्या उदयसे पूर्व और मध्यान्हकी अपनी शक्ति के अनुसार अर्थात् मध्यान्ह में अथवा कुछ काल इधर वा उधर और सायंकाल की सूर्यास्त होनेपर तीनों सूर्य की स्तुति के मन्त्र जपता हुआ करै १४

ये जो तीन संध्या कही हैं इन्हीं में ब्राह्मण्य (ब्राह्मणपना) टिकता है जिसका इन तीनों में आदर नहीं वह ब्राह्मण भी नहीं १५

जो सन्ध्या के न करने से भयभीत है और स्नान में सदा तत्पर हैं उसके समीप दोष इस प्रकार नहीं आते जैसे गरुड के पास सर्प १६

वेदमादित आरभ्य शक्तितोऽहरहर्जपेत्
उपतिष्ठेत्ततो रुद्रं सर्वाद्वा वैदिकाञ्जपात् १७
इति कात्यायनस्मृतौ एकादशः खंडः ११

अथाद्भिस्तर्पयेद्देवान्सतिलाभिः पितॄनपि
नमस्ते तर्पयामीति आदावोमिति च ब्रुवन् १

ब्रह्माणं विष्णुं रुद्रं प्रजापतिं वेदान् देवाञ्छन्दांस्यृषीन् पुराणाचार्यान्गंधर्वानितरान्मासं संवत्सरं सावयवं देवीरप्सरसो देवानुगान्नागान्सागरान्पर्वतान्सरितो दिव्यान्मनुष्यानितरान् यक्षान् रक्षांसि सुपर्णान् पिशाचान् पृथिवीमोषधीः पशून्वनस्पतीन् भूतग्रामं चतुर्विधमित्युपवीत्यथ प्राचीनावीती यमं यमपुरुषान् कव्यवाहमन

प्रति दिन प्रथम से आरंभ करके शक्ति के अनुसार वेद को (वि)चारे उस के पीछे वा पहिले महादेव की स्तुति करे १७

११ खण्ड पूर्ण हुआ

फिर आदि में ओं और अंत में नमस्तर्पयामि (ओं ब्रह्म(ण)ो नमस्तर्पयामी त्यादि) कहता हुआ मनुष्य जलों से देवता(ओं)ओं—और तिल सहित जलों से पित्तरों का तर्पण करै १

उसका यह क्रम है—ब्रह्मा—विष्णु—रुद्र—प्रजापति—(व)ेद देव—छंद—ऋषि—पुराणाचार्य—गंधर्व—इतर—मास—(स)ावयव संवत्सर—देवी—अप्सरा—देवानुग—नाग—सागर—(प)र्वत—सरित्—दिव्य मनुष्य—इतर मनुष्य—यक्ष—रक्षः—(स)ुपर्ण-पिशाच-पृथिवी-औषधी-पशु-वनस्पति-भूतग्राम चतुर्विध

लंसोमंयममर्य्यमणमग्निष्वातान्सोमपोथान्बर्हिष
दोऽथस्वान्पितॄन्सकृत्सकृन्मातामहांश्चेतिप्रतिपुरु
षमभ्यस्येज्ज्येष्ठभ्रातृश्वशुरपितृव्यमातुलांश्चपितृवं
शमातृवंशोयेचान्येमत्तउदकमर्हन्तितांस्तर्पयामीत्यय
मवसानाञ्जलिरथश्लोकाः २

छायांयथेच्छेच्छरदातपार्तःपयःपियासुःक्षुधितोऽलमन्नं
वालोजनित्रींजननीचबालंयोषित्पुमांसंपुरुषश्चयोषां३
तथासर्वाणिभूतानिस्थावराणिचराणिच
विप्रादुदकमिच्छन्तिसर्वाभ्युदयकृद्धिसः ४

इनका तर्पण सव्य होकर करै फिर अपसव्य होकर यम यम पुरुष कव्य वाड़नल सोम यम अर्यमा अग्निष्वात्ता सोमपीथ-बर्हिषद इसके अनंतर अपने पितरों का और माता महों का एक २ वार तर्पण करै और प्रत्येक पितरों का नाम ले ज्येष्ठ भ्राता श्वशुर पितृव्य मातुल फिर पिता और माता के वंश में जो है अथवा और जो मेरे से जलकी इच्छा करते हैं उनको तृप्त करता हुं यह सबसे पीछे अंजलि दे २

अब श्लोक कहते हैं जैसे धूप से दुःखी मनुष्य छाया की इच्छा करता है और तृषावाला मनुष्य जलकी क्षुधावाला अन्नको बालक माता की और माता बालक की स्त्री पुरुष की और पुरुष स्त्री की इच्छा करते हैं ३

तिसी प्रकार स्थावर और जंगम संपर्ण प्राणी ब्राह्मण से जल चाहते हैं क्योंकि ब्राह्मण सबके वढाने वाला है ४

तस्मात्सदैवकर्त्तव्यमकुर्वन्महतैनसा
युज्यतेब्राह्मणःकुर्वन्विश्वमेतद्बिभर्त्तिहि ५
अल्पत्वाद्धोमकालस्यबहुत्वात्स्नानकर्म्मणः
प्रातर्नतनुयात्स्नानंहोमलोपोहिगर्हितः ६
इतिकात्यायनस्मृतौद्वादशः खंडः १२
पंचानामथसत्राणांमहतामुच्यतेविधिः
यैरिष्ट्वासततंविप्रःप्राप्नुयात्सद्मशाश्वतं
देवभूतपितृब्रह्ममनुष्याणामनुक्रमात्
महासत्राणिजानीयात्तएवेहमहामखाः २

तिससे ब्राह्मण सदैव तर्पण करै जो नही करता है वह वड़े पापसे युक्त होता है और जो करता है वह इस जगत् को पालता है ५

होम का समय थोड़ा है और स्नान का समय बहुत है इससे प्रातः काल में स्नान विस्तार से न करै क्योंकि होम का लोप निंदित है ६

१२ खंड पूर्ण हुआ

इस के अनंतर उत्तम जो पांच यज्ञ उनकी विधि कहता हुं जिनको ब्राह्मण निरंतर करके सनातन स्थान [वैकुन्ठ] को जाता है १

देव यज्ञ, भूत यज्ञ, पितृयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, मनुष्ययज्ञ, ये पांच क्रम से महासत्र जानने और येही पांच महामख (वड़े यज्ञ) कहे हैं २

अध्यापनंब्रह्मयज्ञःपितृयज्ञस्तुतर्पणं
होमोदैवोबलिर्भौतोनृयज्ञोतिथिपूजनं ३
श्राद्धं वापितृयज्ञःस्यात्पित्र्योबलिरथापिवा
यश्चश्रुतिजपःप्रोक्तोब्रह्मयज्ञःसचोच्यते ४
सचार्वाक्तर्पणात्कार्यःपश्चाद्वाप्रातराहुतेः
वैश्वदेवावसानेवानान्यत्रतौनिमित्तिकात् ५
अप्येकमाशयेद्विप्रं पितृयज्ञार्थसिद्धये
अदैवंनास्तिचेदन्योभोक्ताभोज्यमथापिवा
अप्युद्धृत्ययथाशक्त्याकिंचिदन्नं यथाविधि
पितृभ्योऽथमनुष्येभ्योदद्यादहरहर्द्विजे ७

पढाना ब्रह्म यज्ञ है तर्पण पितृ यज्ञ है होम देवयज्ञ बलि वैश्वदेव भूत यज्ञ है और अतिथि का पूजन मनुष्य यज्ञ है ३

अथवा श्राद्ध को वा पितरों की बलि को पितृयज्ञ—और श्रुति (गायत्री वा वेद) का जप जो कहा है उसको ब्रह्मयज्ञ कहते हैं ४

उस ब्रह्म यज्ञ को तर्पण से पहिले अथवा प्रातः काल की होम से अथवा वैश्व देव के पीछे करे किसी निमित्त के बिना अन्य समय में न करे ५

यदि अन्य भोजन का कर्त्ता या भोजन न मिले तो विश्वे देवाओं के विना ही एक ब्राह्मण को पितृयज्ञ की सिद्धि के निमित्त जिमावे ६

यथाशक्ति थोड़ा सा अन्न निकास कर विधिसे पितरों और मनुष्यों के निमित्त द्विज को प्रतिदिन दें ७

पितृभ्यइदमित्युक्त्वास्वधाकारमुदीरयेत्
हन्तकारंमनुष्येभ्यस्तदर्धेनिनयेदपः ८
मुनिभिर्द्विरसनमुक्तंविप्राणांमर्त्यवासिनांनित्यं
अहनिचतथातमस्विन्यांसार्द्ध प्रथमयामान्तः ९
सायंप्रातर्वैश्वदेवःकर्तव्योबलिकर्म्मच
अनश्नतापिसततमन्यथाकिल्विषीभवेत् १०
अमुष्मैनमइत्येवंबलिदानंविधीयते
बलिदानप्रदानार्थंनमस्कारःकृतोयतः ११
स्वाहाकारवषट्कारनमस्कारादिवौकसां
स्वधाकारःपितृणांचहन्तकारोनृणांकृतः १२

पितृभ्यइदं यह कहकर स्वधा कहदे— इस अन्न से स्वधा अन्नहंत कार के निमित्त जलसे मनुष्यों को दे ८

भूलोक के वासी ब्राह्मणों को दो समय (दिन और रात्रि में) भोजन कराना डेढ़ पहर दिन चढे वा रात गयेतक मुनियों ने कहा है ९

भोजन न करै तोभी सायंकाल और प्रातःकाल को बलि वैश्वदेव करै जो न करै तो पाप भागी होता है १०

अमुष्मै (इसको) =नमः इस मंत्र से बलिदेना कहा है क्योंकि बलि के लिये नमस्कार किया है ११

देवताओं को स्वाहा—वषट्—नमस्कार—और पितरों को स्वधा और मनुष्यों को हंतकार करना कहा है १२

=यथा ब्रह्मणे नमः इत्यादि

स्वधाकारेणनिनयेत्पित्र्यं बलिमतःसदा
तदध्येकेनमस्कारंकुर्व्वतेनेतिगौतमः १३
नावराद्धर्यावलयोभवन्तिमहामार्गश्रवणप्रमाणात्
एकत्रचेदविकृष्टाभवंतीतरेतरसंसक्ताश्च १४
इतिकात्यायन स्मृतौत्रयोदश खंडः १३

अतस्तद्धिन्यासोवृद्धिपिंडानिवोत्तरांश्चतुरोबलीन्निदध्या-
त् पृथिव्यैवायवेविश्वेभ्योदेवेभ्यःप्रजापतयइतिसव्यतए
तेषामेकैकमभ्यश्रोषधिवनस्पतिभ्यआकाशायकामायेत्ये
तेषामपिमन्यवइन्द्रायवासुकयेब्रह्मणइत्येतेषामपिरक्षो
जनेभ्यइतिसर्वेषांदक्षिणतः पितृभ्यइतिचतुर्दशनित्याश्रा

इससे स्वधा कहकर पितरों को बलि सदैव दे उस के पीछे नमस्कार करे यह कोई ऋषि कहते हैं और गौत्तम ऋषि कहते हैं कि न करे १३

अपनी ऋद्धि (धन आदि) से कम बलि नहीं होती सनातन मार्ग (संप्रदाय) का जो श्रवण वही इसमें प्रमाण है यदि व्यवधान न हो अथवा परस्पर संबंध (मेळ) हो तो एक जगै हो बलि देदे १४

१३ खंड पूर्ण हुआ

अब बलि देने के क्रम कहते हैं—नांदी मुख के पिंडों के समान चार बलि उत्तर दिशा में दे पृथिवी—वायु—विश्वेदेवा प्रजा पति ४—इनके दक्षिण में जल—औषधि—वनस्पति—आकाश—काम—और मन्युइन्द्र—वासुकी—ब्रह्मा—और रक्षो जन—और सबसे दक्षिण दिशा में पितरों को ये सब बलि

शस्यप्रभृतयःकाम्याःसर्वेषामुभयतोऽद्भिःपरिषेकःपिंडव
च्चपश्चिमाप्रतिपत्तिः १

नस्यातांकाम्यसामान्येजुहोतिबलिकर्म्मणी
पूर्वन्नित्यविशेषोक्तंजुहोतिबलिकर्म्मणोः २
कामंतेभवेयातांनतुमध्येकदाचन
नैकस्मिन्कर्म्मणिततेकर्म्मान्यदापतेयतः ३
कृत्यादिर्गौतमाद्युक्तोहोमःशाकलएवच
अनाहिताग्नेरप्येषयुज्यतेवलिभिःसह ४
स्पृष्ट्वापोवीक्ष्यमाणोऽग्निंकृतांजलिपुटस्ततः

नित्य हैं और आकाश आदि वह कामना के देने वाली है दो नों ओर की सब वलियों को जलसे सींचे और इस से पिछला कर्म पिंड के समान है १

सामान्य काम्य कर्म में होम और बलि कर्म नहीं होते क्योंकि होम और बलि कर्म को नित्य कर्म से विशेष कहा है २

कर्मके अंत में चाहे इन्हें करले परन्तु बीच में कभी नहीं क्योंकि एक कर्म का जहां प्रारंभ हो वहां दूसरा कर्म प्रारंभ करना नहीं कहा ३

गौतम आदि ऋषि का कहा अग्नि और शाकल ऋषिका कहा होम और वलिवैश्वदेव इनको वह ब्राह्मण भी करै जो अग्नि होत्री न हो ४

आचमन करके अग्नि को देखता हुआ हाथ जोड़कर और वामदेव सूक्त के जाप से पहिले—धन की वृद्धि की प्रार्थ

वामदेव्यजपात्पूर्वंप्रार्थयेद् विणोदयं ५
आरोग्यमायुरैश्वर्यंधीर्धृतिःशंबलंयशः
ओजोवर्चःपशून्वीर्य्यंब्रह्मब्राह्मणयमेवच ६
सौभाग्यंकर्मसिद्धिंचकुलज्यैष्ठयंसुकर्त्तृतां
सर्वमेतत्सर्वसाक्षिन्द्रविणोदरिरीहितः ७
नब्रह्मयज्ञादधिकोऽस्तियज्ञोनतत्प्रादानात्परमस्तिदानं
सर्वेतदंताःक्रतवःसदानानान्तोदृष्टःकैश्चिदस्यद्विकस्य ८
ऋचःपठन्मधुपयःकुल्याभिस्तर्पयेत्सुरान्
घृतामृतौघकुल्याभिर्यजूंष्यपिपठन्सदा ९
सामान्यपिपठन्सोमघृतकुल्याभिरन्वहं

ना करै ५

आरोग्य—अवस्था—ऐश्वर्य—बुद्धि—धैर्य—सुख—बल यश—ओज—वर्च (तेज)—पशु—वीर्य—वेद—ब्राह्मणत्व ६

सौभाग्य-कर्मकी सिद्धि उत्तम कुल उत्तमकर्तृता-ये सब जो पदार्थ हैं सब के साक्षी द्रविणोदय (कुबेर) हमको दे ७

ब्रह्मयज्ञ से अधिक यज्ञ और उसके दान से अधिक दान नहीं है दान सहित सब यज्ञ वहांतक हीकर्ह हैं इससे इनदोनों (यज्ञ और यज्ञ में दान) का अंत किसीने नहीं देखा ८

ऋग्वेद के पढने से सहत और दूध की कुल्या (छोटीनदी वा गल) ओं से देवताओं को और सदैव यजर्वेद पढने से घृत और अमृत की कुल्याओं से ९

सामवेद के पढने से सोम (अमृत की लता कारस) और घृत की कुल्याओं से—और आंगिरस अथ वर्ण वेद के पढने

मेदःकुल्याभिरपिचआथर्वांगिरसःपठन् १०
मांसक्षीरोदनमधुकुल्याभिस्तर्पयेत्पठन्
वाकोवाक्यंपुराणानिइतिहासानिचान्वहं ११
ऋगादीनामन्यतमंतेषांशक्तितोन्वहं
पठन्मध्वाज्यकुल्याभिःपितॄनपिचतर्पयेत् १२
तेतृप्तास्तर्पयंत्येनंजीवंतंप्रेतमेवच
कामचारीचभवतिसर्वेषुसुरसद्मसु १३
गुर्वप्येनोनतंस्पृश्येत्पंक्तिंचैवपुनातिसः
यंयंक्रतुंचपठतिफलभाक्तस्यतस्यच १४
वसुपूर्णांवसुमतींत्रिर्दानफलमाप्नुयात्

से मेदा की कुल्याओं से १०

वाको वाक्य--पुराण और इतिहास इनको प्रतिदिन पढने से मांस दूध और ओदन (भात) इनकी कुल्याओं से पुरुष देवताओं को तृप्त करता है ११

इन ऋग्वेद आदिकों में कोई से को शक्ति से प्रति दिन पढने से सहत घी की कुल्यासे पितरों को भी तृप्त करताहै १२

तृप्त हुए वे पितर इस मनुष्य को जीते और मरे हुएको भी तृप्त करते हैं और वह पुरुष सबदेवताओं के(स्वर्गों)में इच्छा पूर्वक जाने वाला होता है १३

बड़ाभी पाप उसको नहीं लगाता और जिस पंक्ति में वह बैठे उसको भी पवित्र करता है जिस२ यज्ञ को वह पढता (करता) है उस२ के फलका भागी होता है १४

धनसे भरी हुई पृथ्वी के तीन वार दान के फलको प्राप्त

ब्रह्मयज्ञादपिब्रह्मदानमेवातिरिच्यते १५

इतिकात्यायनस्मृतौचतुर्दशःखंडः १६

ब्रह्मणोदक्षिणादेयायत्रयापरिकीर्त्तिता।
कर्मांतेऽनुच्यमानापिपूर्णपात्रादिकाभवेत् १
यावतांबहुभोक्तुस्तुतृप्तिःपूर्णोनविद्यते
नावराद्ध्र्यमतःकुर्यात्पूर्णपात्रमितिस्थितिः २
छिंदध्याद्धौत्रमन्यश्चेद्दक्षिणार्द्धहरोभवेत्
स्वयंचेदुभयंकुर्य्यादन्यस्मैप्रतिपादयेत् ३
कुलर्त्विजमधीयानंसन्निकृष्टंतथागुरु
नातिक्रमंत्सदादित्सन्यइच्छेदात्मनोहितम् ४

होता है ब्रह्मयज्ञ से अधिक एक ब्रह्म (विद्या) का दान हीं है १५

१४ खंड पूर्ण हुआ

जहां २ जो कही है वही दक्षिणा ब्रह्मा को देनी यदि किसी कर्मके अंत में नही हो तो पूर्णपात्रकी दक्षिणा होती है १

बहुत खाने वाले मनुष्य की तृप्ति जिस भरे हुए पात्र से हो उससे कम वा आधा पूर्ण पात्र न करै यह मर्यादा है २

यदि यह समझे कि आधी दक्षिणा ब्रह्मा लेगा और आधी होता तो होताही को ब्रह्मा बनाले यदि होता और ब्रह्मा का कर्म आप ही करै तो किसी और को पूर्ण पात्र देदे ३

कुलका ऋत्विज यदि पठित हो अथवा गुरु समीप में होय तो अपने कल्याण को चाहता हुआ मनुष्य दान देने के समय इन दोनों का अवलंघन न करै अर्थात् इन्ही को दे ४

अहमस्मैददानीतिएवमाभाष्यदीयते
नैतावपृष्ट्वा वाददतःपात्रेऽपिफलमस्तिहि ५
दूरस्थाभ्यामपिद्वाभ्यांप्रदायमनसावरं
इतरेभ्यस्ततोदेयादेपदानविधिःपरः ६
सन्निकृष्टमधीयानंब्राह्मणंयोव्यतिक्रमेत्
यद्ददातितमुल्लंघ्यततस्तेयेनयुज्यते ७
यस्यत्वेकगृहेमूर्खोदूरस्थश्चगुणान्वितः
गुणान्विताथदातव्यंनास्तिमूर्खेव्यतिक्रमः ८
ब्राह्मणातिक्रमोनास्तिविप्रेवेदविवर्जिते
ज्वलन्तमग्निमुत्सृज्यनहिभस्मनिहूयते ९

मैं इसको देताहुं यह कहकर दिया जाता है इनदोनों के बिना पूछे सुपात्र के देने से भी दाता को फल नहीं होता ५

यदि ये दोनों दूरदेश में हों तो उत्तम वस्तु मन से इन दोनों को देकर इतर मनुष्यों को देनी यह उत्तम दान की विधि है ६

समीप के पंडित ब्राह्मण को छोड़ कर जो इतर को दे जितना द्रव्य देता है उतने द्रव्य की चोरी के फल को वह भोगता है ७

जिसके घर में एक मूर्ख है और गुणी दूर है वह गुणी को दे क्योंकि मूर्ख का अवलंघन नहीं कहा ८

वेद से रहित ब्राह्मण का अवलंघन नहीं है क्योंकि जलती हुई अग्नि को छोड़ कर भस्म में आहुति नहीं दीजाती ९

आज्यस्थालीचकर्तव्यातैजसद्रव्यसंभवा
महीमयीवाकर्तव्यासर्वास्वाज्याहुतीषुच १०
आज्यस्थाल्याःप्रमाणंतुयथाकामन्नु कारयेत्
सुदृढामव्रणांभद्रामाज्यस्थालींप्रचक्षते ११
तिर्यगूर्ध्वंसमिन्मात्रादृढानातिवृहन्मुखी
मृन्मय्यौदुंबरीवापिचरुस्थालीप्रशस्यते १२
स्वशाखोक्तःप्रसुस्विन्योह्यदग्धोऽकठिनःशुभः
नचातिशिथिलःपाच्योनचरुश्चारसस्तथा १३
इध्मजातीयमिध्मार्धप्रमाणंमेक्षणंभवेत्

घीकी सब आहुतियों में सोने की वा मिट्टी की आज्यस्थाली (घी का पात्र) करनी १०

आज्यस्थाली का प्रमाण अपनी इच्छा के अनुसार करै परन्तु दृढ छिद्र रहित को ही विद्वान् आज्यस्थाली कहते हैं ११

जो तिरछी और ऊंची समिध की तुल्य हो और दृढ हो और चौड़ा जिसका मुख न हो ऐसी चरुस्थाली (साकल्य पात्र) श्रेष्ठ है १२

जो अपनी शाखा में कहा हो जिसमें जल न टपके जला न हो—कड़ा नहो—सुन्दर हो—बहुत गला न हो—रस वालाहो ऐसे चरु को पकावे १३

जिस काठ का इध्म हो उसी काठ का और इध्म कोही बराबर—और गोल—और अंगूठी के समान जिसका मोटा अग्रभाग हो और जो चरू के चलाने में समर्थ हो ऐसा मेक्षण

हस्तंचांगुष्ठपृथ्वग्रमवदानक्रियाक्षमं १४
एषैवदर्व्वीयस्तत्रविशेषस्तमहंब्रुवे
दर्व्वीद्व्यंगुलपृथ्वग्रातुरीयोनन्तरक्षणं १५
मुसलोलूखलेवार्क्षेस्वायतेसुदृढेतथा
इच्छाप्रमाणेभवतःशूर्पंवैणवमेवच १६
दक्षिणंवामतोवाह्यमात्माभिमुखमेवच
करंकरस्यकुर्व्वीतकरणेन्यच्चकर्मणः १७
कृत्वाग्न्यभिमुखौपाणीस्वस्थानस्थौसुसंयतौ
प्रदक्षिणंतथासीनःकुर्यात्परिसमूहनं १८
वाहुमात्राःपरिधयऋजवःसत्वचोऽव्रणाः

(कलछी) होता है १४

इसी को दर्वि कहते हैं दर्वी में जो विशेष है उसे मैं कहताहुं दर्विका दो अंगुल मोटा अग्रभाग होता है मेक्षण उस से आधा अंगुल मुटाई में कम होता है १५

मुसल और ओखल काठ के होते हैं अच्छे चौड़े — और दृढ़ और अपनी इच्छानुसार प्रमाण वाले होते हैं और सूपवांस का होता है १६

दाहना हाथ बांये हाथ से आगे अपने सन्मुख रक्खे— यही पांच कर्म (पांचों यज्ञ) में करने चाहियें १७

पूर्वोक्त रीति से यथावत् टिक्के और सावधान दोनों हाथ अग्नि के सन्मुख करके दक्षिण दिशा में बैठा हुआ परि समूहन [वुहारना] करै १८

भुजाकी बराबर—कोमल—वक्कल सहित—जोघुनी ना

त्र्यणोभवन्तिशीर्णाग्राएकेषान्तुचतुर्दिशं १६
प्रागग्रावलिभिःपश्चादुदगग्रमथापरं
न्यसेत्परिधिमन्यंचेदुदगग्रःसपूर्वतः २०
यथोक्तवस्त्वसंपत्तौग्राह्यं तदनुकारियत्
यवानामिवगोधूमाव्रीहीणामिवशालयः २१
इतिकात्यायनस्मृतौपंचदशः खंडः १५
पिंडान्वाहार्य्यकंश्राद्धं क्षीणेराजनिशस्यते
वासरस्यतृतीयांशेनातिसन्ध्यासमीपतः १

हो आगे से पटी तीन परिधि होती हैं किन्ही ऋषियों के मत मे चारों दिशाओं में चार होती है १६

एक बलिओ से पीछे ऐसी परिधि (नीचे रखने की लकड़ी) होती है जिसका अग्रभाग पूर्व दिशा में हो—और दूसरी का अग्र भाग उत्तर को होता है और तीसरी परिधि का भी अग्रभाग उत्तर को होता है और पूर्व में रक्खी जाती है—अर्थात् दक्षिण दिशा में नहीं होती २०

यदि शास्त्र में कही हुई वस्तु न मिले तो उसके सदृश को ग्रहण करे जों के सदृश गेहूं हैं और ब्रीहि (धान) के समान शालि (चावल सपेद) होते हैं २१

१५ खंड पूर्ण हुआ

पिंडान्वाहार्यक (जो मावस को होता है) क्षीणचन्द्रमा के दिन और दिन के तीसरे प्रहर में कुछ संध्या के समीप काल में उतम होता है १

यदाचतुर्द्दशीयामंतुरीयमनुपूरयेत्
अमावास्याक्षीयमाणातदैवश्राद्धमिष्यते २
यदुक्तंयदहस्त्वेवदर्शनंनेतिचन्द्रमाः
अनयापेक्षयाज्ञेयंक्षीणेराजनिचेत्यपि ३
यच्चोक्तंदृश्यमानेपितच्चतुर्द्दश्यपेक्षया
अमावास्यांप्रतीक्षेततदन्तेवापिनिर्वपेत् ४
अष्टमें शेचतुर्द्दश्याःक्षीणोभवतिचन्द्रमाः
अमावास्याष्टमांशेचपुनःकिलभवेदणु ५
आग्रहायणयामावस्यातथाज्येष्ठस्ययाभवेत्
विशेषमाभ्यांब्रुवतेचन्द्रचारविदोजनाः ६

जब चतुर्द्दशी प्रहर दिन चढे तक हो और अमावस्या की हानि हो उस दिन श्राद्ध करना कहा है २

जो यह कहा है कि जिस दिन चन्द्रमा दीखे इसी (पूर्वोक्त) चतुर्द्दशी में मावस के अनुरोध से क्षीण चन्द्र के दिन श्राद्ध करना यह भी जानना ३

और जो किसी ने कहा हैं कि चन्द्रमा दीखै तो भी करै यह चतुर्द्दशी के अनुरोध से है परंतु मावस की प्रतीक्षा देखै अथवा चतुर्द्दशी के अंत में पिंड देदे ४

चोदस के आठवें भाग में ही चन्द्रमाक्षीण होता है और अमावस्या के आठवें भाग में अणु (सूक्ष्म) रूप होता हैं ५

अगहन और जेठ की जो मावस हैं इन दोनों में चंद्रमा की गति के जानने वाले विशेष कहते हैं ६

अत्रेन्दुराद्ये प्रहरेवतिष्ठतेचतुर्थभागोनकलावशिष्ठः
तदन्तएवक्षयमेतिकृत्स्नमेवज्योतिश्चक्रविदोवदन्ति
यस्मिन्नब्देद्वादशैकश्चयव्यस्तस्मिंस्तृतीययापरिदृश्यो
नोपजायते एवंचारंचन्द्रमसोविदित्वाक्षीणेतस्मिन्नप
राग्हेवदद्यात् ८

सम्मिश्रायाचतुर्दश्याअमावस्याभवेत्क्वचित्
स्वर्चितांतांविदुःकेचिद्गताध्वामितिचापरे ९
वर्द्धमानाममावस्यांलभेच्चेदपरेहनि
यामांस्त्रीनधिकान्वापिपितृयज्ञस्ततोभवेत् १०
पक्षादावेवकुर्व्वीतसदापक्षादिकंचरुं

इन दोनों मावसों में पहिले प्रहर में चन्द्रमा रहता है और एक एक कला का चौथा भाग कला का रहता है उसके पीछे सब क्षय होजाता हैं ऐसे ज्योतिष के ज्ञाता कहते हैं ७

जिस संवत् में तेरह महीने होते हैं उसमें तीसरे पहर से पीछे चौदस को चन्द्रमा नहीं दीखे इस प्रकार चन्द्रमा की गति जान कर क्षीण चंद्रमा के समय मध्यान्ह के पीछे पिंड दे ८

यदि कभी चौदस से मिली मावस होय तो उसे कोई स्वर्चिता और कोई गताध्वा कहते हैं ९

यदि अगले दिन तीन पहर वा अधिक मावस मिले तो उस दिन पितृ यज्ञ (श्राद्ध) होता है १०

पक्ष की आदिका चरु पक्ष की आदि (१में) मध्यान्ह से

पूर्वाह्णएवकुर्वन्तिविद्धेऽप्यन्येमनीषिणः ११
सपितुःपितृकृत्येषुह्यधिकारीनविद्यते
नजीवन्तमतिक्रम्यकिंचिद्दद्यादितिश्रुतिः १२
पितामहेजीवतिचपितुःप्रेतस्यनिर्वपत्
पितुस्तस्यचवृत्तस्यजीवेच्चेत्प्रपितामहः १३
पितुःपितुःपितुश्चैवतस्यापिपितुरेवच
कुर्यात्पिंडत्रयंयस्यसंस्थितःप्रपितामहः १४
जीवन्तमतिदद्याद्वाप्रेतायान्नोदकेद्विजः
पितुःपितृभ्योवा दद्यात्सपितेत्यपराश्रुतिः १५
पितामहःपितुःपश्चात्पञ्चत्वंयदिगच्छति

पूर्व वा विद्व (मध्याह्न) में करै यह कोई कहते हैं ११

वह पुरुष पिता के पितृ कर्म में अधिकारी नहीं है जो जीते हुए का अवलंघन करके अर्थात् जीवते पिता आदिको कुछ नही देता यह वेद में लिखा है १२

पिता—पितामह—प्रपिता मह इनतीनों को ३ पिंड दे यदि पिता मरगया हो और प्रपितामह जीवता है १३

तो वृद्ध प्रपिता मह (बूढा पड़बाबा) और पितामह और अपना पिता इनके लिये तीन पिंड वह पुरुष करै जिसका प्रपितामह मरगया हो १४.

जीवते हुये का अवलंघन करके मरे हुए को द्विज अन्न और जल दे अथवा पिता के पितरों को दे क्योंकि वे मरे हुए भी उसके पिता (रक्षा देने वाले) हैं यह दूसरी श्रुति हैं १५

यदि पिता से पीछे पितामह मरे तो पोता एकादश आ-

पौत्रेणैक दशाहादिकर्तव्यंश्राद्धषोडशं १६
नैतत्पौत्रेणकर्तव्यंपुत्रवांश्चेत्पितामहः
पि॒तुःसपिंडनंकृत्वाकुर्यान्मासानुमासिकं १७
असंस्कृतौनसंस्कार्य्यौपूर्वौपौत्रप्रपौत्रकैः
पितरंतत्रसंस्कुर्यादितिकात्यायनोऽब्रवीत् १८
पापिष्ठमपिशुद्धेनशुद्धंपापकृतापिवा
पितामहेनपितरंसंस्कुर्यादितिनिश्चयः १९
ब्राह्मणादिहतेतातेपतितेसगवर्जिते
व्युत्क्रमाच्चमृतेदेयंयेभ्यएवददात्यसौ २०
मातुःसपिंडीकरणंपितामह्यासहोदितं

दि सोलह श्राद्ध करै १६

यदि पितामह के कोई इतर पुत्र होय तो पौता न करै पुत्र पिता को सपिंडी करके महीने२ में मासिक श्राद्ध करै १७

पितामह आदि यदि संस्कार ही न होंय तो पोते वा प्रपोते उनका संस्कार(दाह आदि) न करें यदि पिता संस्कार हीन होय तो उसका संस्कार पुत्र करै यह कात्यायन ऋषि कहते हैं १८

और यह निश्चय है कि पापी भी शुद्ध के संग शुद्ध हो जाता है पापी भी पिता मह के संग पिता का संस्कार (श्राद्ध आदि) पुत्र करै १९

यदि पिता ब्राह्मण आदि से मरा हो वा पतित हो वा सत्संग से हीन हो अथवा फांसी से मरा हो तोभी उसे और जिनको यह देता है सबको दे २०

माता की सपिंडी दादी के संग शास्त्रोक्त बिधि से करै

यथोक्तो नैवकल्पेनपुत्रिकायानचेत्सुतः २१
त्रयोपिभ्यःपृथग्दद्यादवसानदिनादृते
स्वभर्तृपिंडमात्राभ्यस्तृप्तिरासांयतःस्मृताः २२
मातुःप्रथमतःपिंडंनिर्वपेत्पुत्रिकासुतः
द्वितीयंतुपितुस्तस्यास्तृतीयन्तुपितुःपितुः २३
इतिकात्यायनस्मृतौषोडशःखंडः १६
पुरतोयाःमनःकुर्युःसापूर्वापरिकीर्यते
मध्यमादक्षिणेनास्यास्तद्दक्षिणतउत्तमा १
वायव्यग्निदिङ्मुखान्तास्ताःकार्य्याःसार्द्धांगुलान्तराः

यदि पुत्रिका [जो इस प्रतिज्ञा से विवाही जाती है कि जो इस के लड़का हो सो मैं लूंगा] का पुत्र न हो २१

मरण के दिन से विना स्त्रियों को पति से पृथक् [पिंडादि] न दे क्योंकि स्त्रियों का तृप्ति पति के पिंड के लेश से ही कही है २२

जो पुत्रिका का पुत्र है वह पहिला पिंड माता को—दूसरा नाना को तीसरा पड़नाना को दे २३

१६ खंड पूर्ण हुआ

जो कुशा अपने आगे रक्खी जाती है उसे पूर्वा और पूर्वा से जो दक्षिण की तरफ रक्खी जाती है उसे मध्यमा—और मध्यमा से दक्षिण की तरफ जो रक्खी जाती है उसे उत्तमा कहते हैं १

इन तीनों को ऐसे क्रमसे रक्खे जैसे वायव्य दिशा में इन की जड़ और अग्नि दिशा में अग्र भाग हो और डेढ अंगुल का

तीक्ष्णाग्रान्तायवमध्यांश्चमध्यंनावइवोत्किरेत् २
शंकुश्चखादिरःकार्य्योरजतेनविभूषितः
शंकुश्चैवोपवेशश्चद्वादशांगुलइष्यते ३
अग्न्याशाग्रैःकुशैःकार्य्यंकर्षणांस्तरणांघनैः
दक्षिणांतंतदग्रैस्तुपितृयज्ञेपरिस्तरेत् ४
स्थगरंसुरभिज्ञेयंचंदनादिविलेपनं
सौवीरांजनमित्युक्तंपिंजलीनांयदंजनं ५
स्वस्तरेसर्वमासाद्ययथावदुपयुज्यते
देवपूर्वंततःश्राद्धमत्वरःशुचिरारभेत् ६

बीच रहे और इन तीनों का अग्रभाग पैना और बीच भाग जौके समान हो जैसा कि नावका आकार होता है २

चांदी जिस में लगी हो और खैर का हो ऐसा शंकु करना यह शंकु और उपवेश [पितृवश पितरों के बैठने की कुशा] बारह अंगुल के होते हैं ३

अग्नि की दिशा में है अगभाग जिनका ऐसी कुशाओं से कर्षुओं को बिछावे और पितरों के श्राद्ध में दक्षिण को है अगभाग जिनका ऐसी कुशाओं का कर्षू [बिछाने की कुशा] करै ४

सुगंध वाले चंदन आदि के लेपन को स्थगर और पिंजली यों के अंजन (रखना) को सौवीरांजन कहते हैं ५

अच्छे आसन पर सब वस्तुओं को यथोचित रखकर शीघ्रता को न कहकर देवताओं का पूजन आदि पूर्वक शुद्ध होकर श्राद्ध का प्रारंभ करै ६

आसनाद्यर्घपर्यन्तंवसिष्ठेनयथेरितं
कृत्वाकर्माथपात्रेषुउक्तंदद्यात्तिलोदकं ७
तूष्णींपृथगपोदत्वामंत्रेणातुतिलोदकं
गन्धोदकंचदातव्यंसन्निकर्षक्रमेणतु ८
आसुरेणतुपात्रेणयस्तुदद्यात्तिलोदकं
पितरस्तस्यनाश्नन्तिदशवर्षाणिपंचच ९
कुलालचक्रनिष्पन्नमासुरंमृन्मयंस्मृतं
तदेवहस्तघटितंस्थाल्यादिदैविकंभवेत् १०
गंधान्ब्राह्मणसात्कृत्वापुष्पाण्यृतुभवानिच
धूपंचैवानुपूर्वेणह्यग्नौकुर्यादनन्तरं ११
अग्नौकरणहोमश्चकर्तव्यउपवीतिना

आसन आदि अर्घ पर्यंत कर्म वशिष्ठजी ने जैसे कहा है उस प्रकार करके पात्रोंमें पूर्वोक्त तिलोदक दे ७

प्रथम मंत्र के विना पृथक् २ जल देकर तिल जल दे और समीप के क्रम से फिर गंधोदक दे ८

आसुर पात्र से जो तिलोदक देता है पंद्रह वर्षतक उस के यहां पितर नहीं खाते ९

कुलाल के चाक से जो मिट्टी का पात्र वनता है उसें आसुर (राक्षसों का) कहते हैं और मिट्टी का पात्र स्थाली आदि हाथ से वनता है उसे दैविक (देवताओं का) पात्र कहते हैं १०

गंध और ऋतु में पैदा हुए फल और धूप ब्राह्मणों को क्रम से देकर अग्नौकरण (एक अग्नि होम) करै ११

अग्नौ करण होम सव्य होकर करै और पूर्व को मुखकर

प्राङ्मुखेनैवदेवेभ्योजुहोतीतिश्रुतिःश्रुता १२
अपसव्येनवाकार्यंदक्षिणाभिमुखेनच
निरूप्यहविरन्यस्माअन्यस्मैनहिहूयते १३
स्वाहाकुर्यान्नचात्रान्तेनचैवजुहुयाद्धविः
स्वाहाकारेणहुत्वाग्नौपश्चान्मंत्रंसमापयेत् १४
पित्र्येयःपंक्तिमूर्द्धन्यस्तस्यपाणावनग्निमान्
हुत्वामंत्रवदन्येषांतूष्णींपात्रेषुनिःक्षिपेत् १५
नोकुर्याद्धोममंत्राणांपृथगादिषुकुत्रचित्
अन्येषांचाविकृष्टानांकालेनाचमनादिना १६
सव्येनपाणिनेत्येवंयदत्रसमुदीरितं

के देवताओं के निमित्त होम करे यह वेद की श्रुति है १२

अथवा दक्षिण को मुख कर के अप सव्य होकर करे और एक के निमित्त साकल्प देकर दूसरे को न दे १३

और इस अग्नौ करण में मन्त्र के अंत में स्वाहा न कहे और हविः का होम न करे केवल पहिले स्वाहा कह कर होम करे और पीछे मंत्र पढै १४

पितरों के कर्म में जो पंक्ति में मुख्य हैं उसके हाथ में मंत्र पढ कर आहुति दे और शेषों के पात्रों में बिना मंत्र हविः को वह रक्खे जो अग्नि होत्री न हो १५

होम के मंत्रों को आदि में कहीं२ पृथक२ ॐ न कहैं— और इतर जो समीप केहैं उनके आचमन आदि से १६

जो सव्य हाथ से करना कर्म यहां कहा है उससे कि

परिग्रहणमात्रंतत्सव्यस्यादिशतिव्रतं १७
पिंजल्याद्यभिसंगृह्यदक्षिणेनेतरात्करात्
अन्वारभ्यचसव्येनकुर्यादुल्लेखनादिकं १८
यावदर्थमुपादायहविषोऽर्भकमर्भकं
चरुणासहसन्नीयपिंडान्दातुमुपक्रमेत् १६
पितुरुत्तरकर्ष्वंशेमध्यमेमध्यमस्यतु
दक्षिणेतत्पितुश्चैवपिंडान्पर्वणिनिर्वपेत् २०
वाममावर्तनंकेचिदुदगंतंप्रचक्षते
सर्वंगौतमशांडिल्यौशांडिल्यायनएवच २१
आवृत्यप्राणमायम्यपितृन्ध्यायन्यथार्थतः

दक्षिण हाथ से ग्रहण कर के वह कर्म करे यही निश्चय है १७

पिंजली आदि कुशाओं को दाहने हाथ से ग्रहण (पकड़) करके और फिर बांए हाथ से भी पकड़ कर उल्लेखन वेदी पर स्रुवे से (कुछ लकीर करना) आदि करै १८

थोड़ी२ हविको यथाप्रयोजन लेकर और चरु (साकल्य) के संग मिलाकर पिंड देने का प्रारंभ करै १६

पिता को उत्तर के कर्षू (पिंड के नीचे की कुशा) के स्थान में और मध्य के कर्षू पर पितामह को और दक्षिण के कर्षु पर प्रपितामह को इस क्रम से पर्व के दिन पिंडों को दे २०

वामा वर्तन (दक्षिण दिशा से प्राणों को रोक कर उत्तरत क लेजाना) को उत्तर दिशा तक करना यह गौतम शांडिल्य और शांडिल्यायन सब ऋषि कहते हैं २१

प्राणों को रोक कर और फेर कर और यथार्थ पितरों को

जपंस्तेनैवचावृत्यततःप्राणांप्रमोचयेत् २२
शाकंचफाल्गुनाष्टम्यांस्वयंपत्न्यपिवापचेत्
यस्तुशाकादिकोहोमःकार्योऽपूपाष्टकावृतः २३
अन्वष्टक्यांमध्यमायामितिगोभिलगौतमौ
वार्कखंडिश्चसर्वासुकौत्सोमेनेष्टकासुच २४
स्थालीपाकंपशुस्थानेकुर्याद्यद्यनुकल्पितं
स्नपयेत्तंसवत्सायास्तरुण्यागोपयस्यनु २५
इतिकात्यायनस्मृतौसप्तदशःखंडः १७
सायमादिप्रातरंतमेकंकर्मप्रचक्षते
दर्शांतंपौर्णमास्याद्यमेकमेवमनीषिणः १

ध्याना करता और प्राणायाम के मंत्र को जपता हुआ फिर लौटाकर प्राणों को छोड़ दे (स्वांस ले) २२

फागुन की अष्टमी के दिन पत्नी भी आप शाक को पकावे और जो शाक आदि का होम है वह अपूपाष्टका श्राद्ध में करना। २३

और अन्वष्टका के श्राद्ध मध्यमा (बीच की) अष्टका में करे यह गोभिल और गौतम ऋषि कहते हैं वार्कखंडि और कौत्स ऋषि यह कहते हैं कि सब अष्टकाओं में करें २४

और पशु का जहां लेख हो वहां पशु की जगे स्थालीपाक (ओदन आदि) करे और उसे बछड़े वाली—नई—गौ के दूध में पकावे २५

१७ खंड पूर्ण हुआ

सायंकाल से प्रातः काल तक का जो कर्म है उसे कोई बुद्धिमान एक ही कहते हैं और पूर्णिमास से मावस तक का जो कर्म है उसे एकही कोई कहते हैं १

ऊर्द्ध्वं पूर्णाहुतेर्दर्शःपौर्णमासोऽपिवाग्रिमः
यआयातिसहोतव्यःसएवादिरितिश्रुतिः २
ऊर्ध्वंपूर्णाहुतेःकुर्यात्सायंहोमादनंतरं
वैश्वदेवंतुपाकांतेबलिकर्मसमन्वितं ३
ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चादभिरूपान्स्वशक्तितः
यजमानस्ततोऽश्नीयादितिकात्यायनोब्रवीत् ४
वैवाहिकाग्नौकुर्वीतसायंप्रातस्त्वतंद्रितः
चतुर्थीकर्मकृत्वैतदेतत्कात्यायनेर्मतं ५
ऊर्ध्वंपूर्णाहुतेःप्रातर्हुत्वातांसायमाहुतिं
प्रातर्होमस्तदैवस्यादेषएवोत्तरोविधिः ६

विवाह की पूर्ण आहुति से पीछे मावस वा पूर्णिमा जो आवे उसी में होम करै क्योंकि वही आदि है यह वेद में कहा है २

सायंकाल के होम से पीछे पूर्णा हुति देकर पाक हुयेपर बलिवैश्व देव करै ३

फिर अपनी शक्ति से जो पंडित हों ऐसे ब्राह्मणों को जिमावे और फिर यजमान भोजन करै यह कात्यायन ऋषि कहते हैं ४

विवाह की अग्नि में चतुर्थी कर्म को करके आलस्य को छोड़ कर बलिवैश्व देव करै यह कात्यायन ऋषि का मत है ५

इस सायंकाल की आहुति को देकर प्रातःकाल पूर्णाहुति से पीछे बलिवैश्वदेव करै और तभी प्रातर्होम होता है यही विधि उत्तर २ (प्रति दिन) समझनी ६

पौर्णमास्यात्ययेहव्यंहोतावायदहर्भवेत्
तदहर्जुहुयादेवममावास्यात्ययेपिच ७
अहूयमानेनश्चंश्चेन्नयेत्कालंसमाहितः
सम्पन्नेतुयथातत्रहूयतेयदिहोच्यते ८
आहुत्यपरिसंख्यायपात्रेकृत्वाहुतीःसकृत्
मंत्रेणविधिवद्धुत्वाधिकमेवापराअपि ९
यत्रव्याहृतिभिर्होमःप्रायश्चित्तात्मकोभवेत्
चतस्रस्तत्रविज्ञेयाःस्त्रीपाणिग्रहणेयथा १०
अपिवाज्ञातमित्येषाप्राजापत्यापिवाहुतिः
होतव्यात्रिविकल्पोऽयंप्रायश्चित्तविधिःस्मृतः ११

पूर्णमासी और मावस के पीछे जिस दिन हव्य (साक ल्य) वा होता मिले उसी दिन होम करै ७

यह कब करै जब जितने दिन होम न भया हो उतने दिन विना भोजन बिताये हों—और संपन्न (यदि भोजन किया हो) हो तो जैसे होम करै वह प्रकार (यहां कहता हूं ८

जितनी आहुति न दी हों उतनी गिन कर पात्र में रक्खै वा अधिक उन सबको एक मंत्र से बिधि पूर्वक हुकर और आ हुति (उस दिन की) दे ९

जहां प्रायश्चित के निमित्त व्याहृतियों से होम हो वहां औरविवाह में चार आहुति जाननी १०

अथवा ज्ञात इस मंत्र से वा प्रजापति के मंत्र से आहुति दे यह यहां भेद है और प्रायश्चित की विधि भी यही कही है ११

यद्यग्निरग्निनान्येनसंभवेदाहितःक्वचित्
अग्नयेविविचयइतिजुहुयाद्वाघृताहुतिं १२
अग्नयेऽप्सुमतेचैवजहुयाद्वैघृतेनचेत्
अग्नयेशुचयेचैवजुहुयाच्चदुरग्नि १३
गृहदाराग्निनाग्निस्तुयष्टव्यःक्षमामवांद्विजैः
दावाग्निनाचसंसर्गेहृदयंयदितप्यते १४
द्विर्भूतोयदिसस्टज्येत्संसृष्टमुपशामयेत्
असंसृष्टंजागरयेद्गिरिशर्मैवमुक्तवान् १५
नस्वेऽग्नावन्यहोमःस्यन्मुक्त्वैकांसमिदाहुतिं
स्वर्गवासक्रियार्थाश्चयावन्नासौप्रजायते १६

यदि होम की अग्नि दूसरी अग्नि से कभी आहित (ढकी) होजाय तो अग्नये विविचये इस मंत्र से वा केवल घीसेही आहुति दे १२

यदि घीसेही बझजाय तो अग्न येप्सुमते चैव इस मंत्र से और दूसरी बुरी अग्नि से ढकी जाय तो अग्न येशुचये इस मंत्र से होम करै १३

यदि घर में अग्नि लगजाय और उससे अग्नि शांत होजाय तो द्विज अग्नि का पूजन करै और यदि दावाग्नि से अग्नि का संसर्ग होजाय और उससे हृदय में दुःख होजाय तो १४

दो बार के संसर्ग में तो अग्नि की शांति करादे और संसर्ग न हुआ होय तो अग्नि को जगाले यह गिरिशर्माने कहा है १५

इतने अपने गर्भ के सत्कर्म (गर्भाधान आदि) अग्नि में नहो तब तक अपनी अग्नि में एक समिध की आहुति के विना दूसरा होम न करै १६

अग्निस्तुनामधेयादौहोमेसर्व्वत्रलौकिकः
नहिपित्रासमानीतःपुत्रस्यभवतिक्वचित् १७
यस्याग्नावन्यहोमःस्यात्सवैश्वानरदैवतं
चरुं निरूप्यजुहुयात्प्रायश्चित्तंतुतस्यतत् १८
परेणाऽग्नौहुतेस्वार्थंपरस्याग्नौहुतेस्वयं
पितृयज्ञात्ययेचैववैश्वदेवद्वयस्यच १६
अनिष्ट्वानवयज्ञेननवान्नप्राशनेतथा
भोजनेपतितान्नस्यचरुर्वैश्वानरोभवेत् २०
स्वपितृभ्यःपितादद्यात्सुतसंस्कारकर्मसु

नाम करण आदि संस्कारों में सब जगे लौकिक अग्नि होती है और पिता जिस अग्नि को लावें वह कभी भी पुत्र की नहीं होती १७

और जिस अग्नि होत्रीकी होम में दूसरे मनुष्य का होम होजाय तो वह अग्नि है देवता जिसका ऐसे चरु को बनाकर आहुति दे क्योंकि उसका वही प्रायश्चित्त है १८

दूसरे का अग्नि होत्र आप करै अथवा दूसरा अपना अग्नि होत्र करै अथवा पितृयज्ञ का नाश होजाय अथवा दोनों विश्व देवाओं का यज्ञ नष्ट होजाय १६

नवीन अन्न के प्राशन में जो नव यज्ञ न करै अथवा पतित के अन्न का भोजन करले इतने कर्मों में वैश्वानर चरु होता है अर्थात् उस से होम करै २०

पुत्र के नामकरण आदिकर्मों में पिता अपने पितरों को पिंडआदि दे क्योंकि वह उनके पिंडों का दाता है यदि पिता

पिंडानोद्वहनात्तेषांतस्यभावेतुतत्क्रमात् २१
भूतिप्रवाचनेपत्नीयद्यसन्निहिताभवेत्
रजोरोगादिनातत्रकथंकुर्वंतियाज्ञिकाः २२
महानसेऽन्नंयाकुर्यात्सवर्णांतांप्रवाचयेत्
प्रणवाद्यपिवाकुर्यात्कात्यायनवचोयथा २३
यज्ञवास्तुनिमुष्ट्यांचस्तंबेदर्भबटौयथा
दर्भसंख्यानविहिताविष्टरास्तरणेषुच २४
इतिकात्यायनस्मृतौ अष्टादशःखंडः१८
निक्षिप्याग्निंस्वदारेषुपरिकल्प्यर्त्विजंतथा
प्रवसेत्कार्य्यवान्विप्रोवृथैवनचिरंक्कचित् १

न होय तो पिता के क्रम से जो अधिकारी हो वही पिंड दे २१

यदि भूति प्रवाचन (ऋत्वजों से आशीर्वाद आदि लेना) में रजो दर्शन वा रोग आदि से पत्नी समीप न होय तो यज्ञ करने वाले कैसे यज्ञ करें २२

महानस (रसोई) में जो अन्न पकावे और अपनी सजातीय भी वह होय तो उससे भूति प्रवाचन करावे अथवा कात्यायन के कथनानुसार ॐकार आदि करले २३

यज्ञ के वास्तु (घर) में मुट्ठी में स्तंभमें—दर्भके बट में और विष्टर के आस्तरणमें कुशाओं की गिनती नहीं कही २४

१८ खंड पूर्ण भया

अपनी स्त्री को अग्नि सौंप कर और एक ऋत्विज नियत करके कार्य वाला ब्राह्मण संन्यास ले क्योंकि चिरकाल कहीं भी नहीं रहना है १

मनसानैत्यिकंकर्म्मप्रवसन्नप्यतंद्रितः
उपविश्यशुचिःसर्वंयथाकालमनुव्रजेत् २
पत्न्याचाप्यवियोगिन्याशुश्रूष्योऽग्निर्विनीतया
सौभाग्यवित्तावैधव्यकामयाभर्त्तृभक्तया ३
यावास्याद्वीरसूरासामाज्ञासंपादिनीप्रिया
दक्षाप्रियंवदाशुद्धातामत्रविनियोजयेत् ४
दिनत्रयेणवाकर्म्मयथाज्यैष्ठंस्वशक्तितः
विभज्यसहवाकुर्य्युर्यथाज्ञानंचशास्त्रवत् ५
स्त्रीणांसौभाग्यतोज्यैष्ठंविद्ययैवद्विजन्मनां

अपने नित्य के कर्म को आलस्य छोड़कर शुद्ध होकर बैठे और समय पर संपर्ण कर्म करे २

पति के बियोग को नचाहती हुई सौभाग्य-धन-विधवा न होना- इनकी कामना के लिये पतिमें है भक्ति जिसकी ऐसी पत्नी भी नम्र होकर अग्नि की सेवा करे ३

जिसके बहुत स्त्री हों वह पुरुष अग्नि की सेवा में उस स्त्री को नियक्त करे जो वीरसू(पत्रवाली) आज्ञाकारिणी प्यारी चतुर- प्रियवचन कहने वाली-और शुद्ध हो ४

अथवा सब स्त्री तीन दिन में बड़ी स्त्री के क्रमसे अपनी शक्ति के अनसार विभाग (पारी २ से) वा एक बार अग्नि की सेवा करलें अथवा जैसा शास्त्र का ज्ञान उनको हो वैसे सब करें ५

स्त्रियों की बडाई सौभाग्य से है और ब्राह्मणों की बड़ाई विद्या से क्योंकि प्रसिद्धि और तप से भर्ता स्त्रियों पर प्रसन्न

नहिस्त्र्यात्यानतपसाभर्तातुष्पतियोषितां ६
भर्तुरादेशवर्त्तिन्यायथोमाबहुभिर्व्रतैः
अग्निश्चतोषितोऽमुत्रसास्त्रीसौभाग्यमाप्नुयात् ७
विनयावनतापिस्त्रीभर्तुर्यादुर्भगाभवेत्
अमुत्रोमाग्निभर्तॄणामवज्ञातिकृतातया ८
श्रोत्रियंसुभगांगांचअग्निमग्निचितिंतथा
प्रातरुत्थाययःपश्येदापद्भ्यःसप्रमुच्यते ९
पापिष्ठंदुर्भगामन्यंनग्नमुत्कृत्तनासिकं
प्रातरुत्थाययःपश्येत्सकलेरुपयुज्यते १०
पतिमुल्लंघ्यमोहात्स्त्रीकिंकिन्ननरकंव्रजेत्

नहीं होता ६

पति की आज्ञा करने वाली जिस स्त्रीने बहुत व्रतों से पार्वती को और अग्नि को प्रसन्न किया है वह स्त्री परलोक में सौभाग्य को प्राप्त होती है ७

पति में प्रेमसे नवती हुई स्त्री जोत्तिमेंदुर्भागिन हो उसने पूर्व जन्म वा पर लोक में पार्वती, अग्नि, और पति, इनका तिरस्कार किया है ८

वेदपाठी—सुहागिन स्त्री—गौ—अग्निहोत्र—इनको प्रातः काल उठ कर जो देखता है वह विपत्तियों से छूट जाता है ९

पापशील—दुर्भागिन (विधवा) अन्य पुरुष नग्न—नकटा इनको जो प्रातःकाल उठकर देखता है वह कलह को प्राप्त होता है १०

अज्ञान से पति का अवलंघन करके स्त्री किसर नरक में

कृच्छ्रान्मनुष्यतांप्राप्यकिंकिंदुःखंनविन्दति ११
पतिशुश्रूषयैवस्त्रीकान्नलोकान्समश्नुते
दिवःपुनरिहायातासुखानामम्बुधिर्भवेत् १२
सदारोऽन्यान्पुनर्दारान्कथंचित्कारणांतरात्
यइच्छेदग्निमान्कर्तुंकहोमोऽस्यविधीयते १३
स्वेऽग्नावेवभवेद्धोमोलौकिकेनकदाचन
नह्याहिताग्नेःस्वंकर्मलौकिकेऽग्नौविधीयते १४
षडाहुतिकमन्यनजुहुयाद्भुवदर्शनात्
नत्वात्मनोऽर्थंस्यात्तावद्यावन्नपरिणीयते १५

नहीं जाती बड़े कष्ट से मनुष्य योनि को प्राप्त होकर किस २ दुःख को नहीं प्राप्त होती है ११

पति की सेवा से स्त्री कौन२ लोक (स्वर्गादि) के सुख नहीं भोगती और स्वर्ग से फिर भूलोक में आकर सुखों का समुद्र होती है १२

जो स्त्री सहित अग्निहोत्री पुरुष किसी प्रकार और किसी कारण से अन्य स्त्री बिवाहने की इच्छा करै तो इसको होम कहां कहा है अर्थात् होम का अधिकार उसे नहीं रहता १३

अपनी अग्नि में ही होम होता है लौकिक (साधारण) अग्नि में कभी नहीं क्योंकि अग्नि होत्री का निज कर्म लौकिक अग्नि में नहीं कहा है १४

भूमि के दर्शन होने पर छः आवश्यक आहुति अन्य अग्नि में भी इतने दे और अपने लिये न दे जबतक बिवाह न करै १५

पुरस्तात्त्रिविकल्पंयत्प्रायश्चित्तमुदाहृतं
ततःषडाहुतिकंशिष्टैर्यज्ञविद्भिःप्रकीर्तितं १६

इतिकात्यायनस्मृतौएकोनविंशःखंडः १९

इतिकात्यायनविरचितेकर्मप्रदीपेद्वितीयःप्रपाठकः २

असमक्षंतुदंपत्योर्होतव्यंनर्त्विगादिना
द्वयोरप्यसमक्षंहिभवेद्धुतमनर्थकम् १
विहायाग्निंसभार्यश्चेत्सीमामुल्लंघ्यगच्छति
होमकालात्ययेतस्यपुनराधानमिष्यते २
अरण्योःक्षयनाशाग्निदाहेष्वग्निंसमाहितः
पालयेदुपशांतेस्मिन्पुनराधानमिष्यते ३

पहिले जो त्रिविकल्प प्रायश्चित्त कह आये हैं उसको शिष्ट (सज्जन) यज्ञ के जानने वाले षड़ाहुतिक कहते हैं १६

१९ खंड पूर्ण हुआ

कात्यायन का रचे कर्म प्रदीप में २प्रपाठ पूरा हुआ

स्त्री और पुरुष के बिना ऋत्विक आदि होम न करें क्योंकि उन दोनों के बिना होम निष्फल होता है १

यदि स्त्री को छोड़कर स्त्रीवाला पुरुष ग्राम की सीमा को लंघकर चला जाय और उसके होम का समय बीत जाय तो फिर अग्नि का आधान वह करे २

अरणीयों के नाश और अग्नि के दाह (जलना) में सावधानी से अग्नि की रक्षा करै यदि अग्नि शांत होजाय तो फिर अग्निका आधान करे ३

ज्येष्ठाचेद्बहुभार्य्यस्यअतिचारेणगच्छति
पुनराधानमत्रैकइच्छन्तिनतुगौत्तमः ४
दाहयित्वाग्निभिर्भार्य्यांसदृशींपूर्वसंस्थितां
पात्रैश्चाथाग्निमादध्यात्कृतदारोऽविलंबितः ५
एवंवृत्तांसवर्णांस्त्रींद्विजातिःपूर्वमारणीं
दाहयित्वाग्निहोत्रेणयज्ञपात्रैश्चधर्म्मवित् ६
द्वितीयांचैवयःपत्नींदहेद्वैतानिकाग्निभिः
जीवंत्यांप्रथमायांतुब्रह्मघ्नेनसमंहितत् ७
मृतायांतुद्वितीयायांयोऽग्निहोत्रंसमुत्सृजेत्
ब्रह्मोज्झितंविजानीयाद्यश्चकामात्समुत्सृजेत् ८

यदि वहुत स्त्री वाले पुरुष जेठीस्त्री व्यभिचार आदि से चले तो ऐसी अवस्था में कोई ऋषि फिर अग्नि का आधान कहते हैं और गौत्तम ऋषि नहीं कहते ४

अपने समान वर्ण की और पहिले जो मरी ऐसी स्त्री को अग्नि से दग्ध करके और शीघ्र विवाह के अनतर अग्नि का आधान करै ५

ऐसा है आचरण जिसका ऐसी अपनी जाति की और पूर्वमरी स्त्री को अग्नि होत्र की अग्नि और यज्ञ के पात्रों से दग्ध करके धर्म का जानने वाला जो पुरुष ६

दूसरी स्त्री को भी होम की अग्नि से दग्ध करता है अथवा प्रथम स्त्री के जीवते हुए भी दूसरी होम की अग्नि से जलाता है वह ब्रह्म हत्यारे के समान है ७

दूसरी स्त्री के मरेपर जो जान बूझ कर अग्निहोत्र को त्यागता है उसको वेद के त्यागने वाला जाने ८

मृतायामपिभार्य्यायांवैदिकाग्निंनहित्यजेत्
उपाधिनापितत्कर्म्मयावज्जीवंसमापयेत् ९
रामोऽपिकृत्वासौवर्णीं सीतांपत्नींयशस्विनीं
इजेयज्ञैर्वहुविधैःसहभ्रातृभिरच्युतः १०
योदहेदग्निहोत्रेणस्वेनभार्य्यांकथंचन
सास्त्रीसंपद्यतेतेनभार्य्यावास्यपुमान्भवेत् ११
भार्य्यामरणमापन्नादेशांतरगतापिवा
अधिकारीभवेत्पुत्रोमहापातकिनिद्विजे १२
मान्याचेन्म्रियतेपूर्वंभार्य्यापतिविमानिता
त्रीणिजन्मानिसापुंस्त्वंपुरुषःस्त्रीत्वमर्हति १३

स्त्री के मरे पर भी वैदिक (होमकी) अग्नि का परित्याग न करै उपाधि (कुशा वा धातु की स्त्री बनाकर) से अपने जीवने तक अग्नि होत्र के कर्म को पूरा करै ९

रामचन्द्र ने भी यशवाली सोने की सीता स्त्री को बना कर भाईयों सहित बड़ी२ यज्ञों से भगवान् को पूजा १०

जो अपनी होम की अग्नि से कभी अपनी स्त्री को दग्ध करता है वह पुरुष स्त्री होता है और उसकी स्त्री पुरुष होती है ११

यदि स्त्री मरगई हो वा परदेश में चलीगई हो वा अग्नि होत्री को हो महापातक लगगया हो तो अग्नि होत्र का अधिकारी पुत्र होता है १२

यदि पति के तिरस्कार से मान के योग्य स्त्री पहिले मर जाय तो वह स्त्री तीन जन्म तक पुरुष और वह पुरुष स्त्री होता है १३

पूर्वैवयोनिःपूर्वावृत्पुनराधानकर्म्मणि
विशेषोवाऽग्न्युपस्थानमाज्याहुत्यष्टकंतथा १४
कृत्वाव्याहृतिहोमान्तमुपतिष्ठेतपावकं
अध्यायःकेवलाग्नेयःकस्तेजामिरमानसः १५
अग्निमीडेअग्नआयाह्यग्नआयाहिवीतये
तिस्रोऽग्निर्ज्योतिरित्यग्निंदूतमग्नेमृडेतिच १६
इत्यष्टावाहुतीर्हुत्वायथाविध्यनुपूर्वशः
पूर्णाहुत्यादिकंसर्वमन्यत्पूर्ववदाचरेत् १७
अरण्योरल्पमप्यङ्गंयावत्तिष्ठतिपूर्वयोः
नतावत्पुनराधानमन्यारण्योर्विधीयते १८
विनष्टस्रुक्स्रुवंन्युब्जंप्रत्यक्स्थलमुदर्च्चिषि

दूसरे अग्नि के आधान में पहिलेही योनि (अरणी) और आवृत होते हैं केवल अग्नि की स्तुति और आठ आहुति यों का विशेष होता है १४

व्याहृतियों से होम करके अग्नि की स्तुति करै और उस स्तुति में अग्नि का अध्याय और कस्तेजामिरमानसः १५

और अग्नि मीडे—अग्ने आ याहि—अग्न आ याहिवीतये तीनये और अग्निज्योतिः—अग्निदूतं—अग्नेमृड—१६

इन आठ आहुतियों को क्रम से विधि पूर्वक देकर पूर्णा हुति आदि सब अन्य कर्म पूर्व के समान करै १७

इतने पहिली दोनों अरणीयों का थोड़ा भी अंग शेष रहै तब तक अन्य दो अरणीयों का फिर आधान न करै १८

नष्ट हुये स्रुक् और स्रुवे को औंधा करके और नष्ट

प्रत्यगग्रंचमुशलंप्रहरेज्जातवेदसि १९
इतिकात्यायनस्मृतौविंशतिःखंडः २०
स्वयंहोमासमर्थस्यसमीपमुपसर्पणम्
तत्राप्यसक्तस्यततःशयनाच्चोपवेशनं १
हुतायांसायमाहुत्यांदुर्लभश्चेद्गृहीभवेत्
प्रातर्होमस्तदैवस्याज्जीवेच्चेत्सःपुनर्नवा २
दुर्बलंस्नापयित्वातुशुद्धचैलाभिसंवृतं
दक्षिणाशिरसंभूमौबर्हिष्मत्यांनिवेशयेत् ३
घृतेनाभ्यक्तमाप्लाव्यसवस्त्रमुपवीतिनं
चंदनोक्षितसर्वांगंसुमनोभिर्विभूषितं ४

हुए मुशल को सीधा करके अच्छी जलती हुई अग्नि में गेरदे अर्थात् जलादे १९

२० खंड पूर्ण हुआ

यदि आप होम करने की सामर्थ्य न हो तो अग्नि के समीप जा बैठे यदि समीप भी न जाया जाय तो शय्या से नीचे उतर बैठे १

यदि सायंकाल के होम किये पीछे गृहस्थी दुर्बल (मरने के समान) होजाय तो प्रातः काल होम तभी होगा यदि वह जीवेगा—नहीं तो न होगा २

दुर्बल (मरने के समीप जो हो) को स्नान कराकर शुद्ध वस्त्र पहनावे और दक्षिण दिशा की तरफ शिर करके पृथ्वी में रक्खे ३

और घी का उबटना करके स्नान करावे वस्त्र जनेउ पहनावे—सब अंग पर चंदन छिड़के पुष्पों से शोभित करे ४

हिरण्यशकलान्यस्यक्षिप्त्वाच्छिद्रेषुसप्तसु
मुखेष्वथापिधायैनंनिर्हरेयुःसुतादयः ५
आमपात्रेऽन्नमादायप्रेतमग्निपुरःसरं
एकोऽनुगच्छेत्तस्यार्द्धमर्द्धं पर्य्युत्सृजेद्भुवि ६
अर्धमादहनंप्राप्तआसीनोदक्षिणामुखः
सव्यंजान्वाच्यसनकैःसतिलंपिंडदानवत् ७
अथपुत्रादिराप्लुत्यकुर्य्याद्दारुचयंमहत्
भूप्रदेशेशुचौदेशेपश्चाच्चित्यादिलक्षणे ८
तत्रोत्तानंनिपात्यैनंदक्षिणाशिरसंमुखे

और सोने के टुकड़े सातों छिद्रों (मुख आदि) में गेरै और शव (मुर्दे) के मुख को ढककर पुत्र आदि श्मशानमें ले जांय ५

कच्चे मिट्टी के पात्र में अन्न लेकर एक मनुष्य पीछे २ चले और अग्नि को आगे और प्रेत को पीछे ले जाय और इस अन्न में से आधे अंन्न को मार्ग के अर्ध भाग से पृथ्वी पर पुत्र छोड़दे ६

और जब श्मशानभूमि के आधे भाग में शव पहुंचजाय तब दक्षिण को मुख करके बैठे और शने २ तिल सहित उस अन्न को पिंडदान की बिधि से दे ७

जो चिता के योग्य हो ऐसे भूमि के शुद्ध देश में इसके अनन्तर पुत्र आदि स्नान करके बड़ी चिता बनावे ८

तिस चिता में दक्षिण की तरफ शिर है जिसका ऐसे इस अग्नि होत्री को सीधा रक्खे और दक्षण को है अग्र भाग जिस

आज्यपूर्णांस्त्रुचंदद्यादक्षिणाग्रांनसिस्त्रुवं ९
पादयोरधरांप्राचीमरणीमुरसीतरां
पार्श्वयोःशूर्पचमसेसव्यदक्षिणयोःक्रमात् १०
मुशलेनसहन्युब्जमन्तरूर्वोरुलूखलं
जत्रौवीळीकमत्रैवमनश्रुनयनोविभीः ११
अपसव्येनकृत्वैतद्वाग्यतःपितृदिङ्मुख :
अथाग्निंसव्यजान्वक्तोदद्याद्दक्षिणतःशनैः १२
अस्मात्त्वमधिजातोऽसित्वदयंजायतांपुनः
असौस्वर्गायलोकायस्वाहेतियजुरीरयन् १३

का ऐसी घी से भरी स्रुक् मुख में और स्रुव को नाक में रख दे ९

नीचे की अरणी को पैरों में और ऊपर की अरणी को छाति पर—और बांऐ और दाहने पार्श्व (कड़वठ) में सूप और चमस क्रम से रख दे १०

और मुशल और ओखल और चत्र और ओखली जंघा ओं के बीच में भय रहित और न रोता हुआ पत्र रखदे ११

दक्षिण की तरप मुख करके वाणी को रोके हुए अप सव्य से पूर्वोक्त कर्म करके बांये गोडे को नवाय के चितामें दक्षिण दिशा की ओर धने २ अग्नि जलावे १२

और उस समय इस यजुर्वेद के मंत्र को पढे कि हेजीव और हे देह तू इस अग्नि से पैदा हुआ था और हे अग्नि तेरे से यह देह आदि फिर पैदा हो इस से प्रज्वलित अग्नि में इस प्राणीको स्वर्ग लोक की प्राप्ति के निमित्त यह स्वाहा है १३

एवंगृहपतिर्दग्धःसर्वंतरतिदुष्कृतं
यश्चैनंदाहयेत्सोपिप्रजांप्राप्नोत्यनिन्दिताम् १४
यथास्वायुधधृक्पांथोह्यरण्यान्यपिनिर्भयः
अतिक्रम्यात्मनोभीष्टंस्थानमिष्टंचविन्दति १५
एवमेषोऽग्निमान्यज्ञपात्रायुधविभूषितः
लोकानन्यानतिक्रम्यपरंब्रह्मैवविन्दति १६
इतिकात्यायनस्मृतौएकविंशतिमःखंडः २१
अथानवेक्षमेत्यापःसर्वएवशवस्पृशः
स्नात्वासचैलमाचम्यदद्युरस्योदकस्थले १
गोत्रनामानुवादान्तेतर्पयामीत्यनतरं

इस प्रकार किया है दाह जिसका ऐसा गृहस्थी सब पापों से छूटता है और जो दाह करता है वह भी उत्तम प्रजा(संतान) को प्राप्त होता है १४

जैसे अपने उत्तम शस्त्रोंको लेकर मार्ग में चलने वाला पुरुष निर्भय होकर वनोंको लंघकर अपने वांछित स्थान को पहुंचता है और अपने मनोरथ को प्राप्त होता है १५

तिसी प्रकार अपने यज्ञ पात्ररूप शस्त्रों से शोभायमान यह अग्नि होत्री भी स्वर्ग आदि लोकोंको लंघकर परब्रह्म को प्राप्त होता है १६

२१ खंड पूर्ण हुआ

फिर चिताको न देखते हुए सब शवके स्पर्श करने वाले सचैल स्नान और आचमन करके प्रेतको स्थल (जहां जल न हो ऐसी भूमि) पर जल दें

गोत्र और प्रेतके नामके अंतमें तर्पयामि कहैं और दक्षिण

दक्षिणाग्रान्कुशान्कृत्वासतिलन्तुपृथक्पृथक २
एवंकृतोदकान्सम्यक्सर्वान्शाद्वलसंस्थितान्
आप्लुत्यपुनराचान्तान्वदेयुस्तेऽनुयायिनः ३
माशोकंकुरुतानित्येसर्वस्मिन्प्राणधर्मणि
धर्म्मंकुरुतयत्नेनयोवःसहगमिष्यति ४
मानुष्येकदलीस्तंभेनिःसारेसारमार्गणं
यःकरोतिससंमूढोजलबुद्बुदसन्निभे ५
ग.त्रीवसुमतीनाशमुदधिर्दैवतानिच
केनप्रख्यःकथन्नाशंमर्त्यलोकोनयास्यति ६

को अग्रभाग जिनका ऐसे जो कुशा ओं को करके तिल सहित जल पृथक्२ दें २

इस उत्तम प्रकार से दिया है जल जिन्हों ने और जो हरे घास पर बैठे हुए—और फिर स्नान करके किया है आचमन जिन्होंने ऐसे प्रेतके सब कुटुंबियों को– उनके संग जो श्मशान में गयेथे वे यह कहैं कि ३

सब प्राणी अनित्य हैं इससे शोक मत करो किंतु धर्म करो जो धर्म तुम्हारे संग चलेगा ४

केले की पोंडी के समान और सार (उत्तमता) से हीन और जल के बुलबुले की तुल्य मनुष्य लोक में जो सार ढूंढता है वह अत्यन्त मूर्ख है ५

यदि पृथ्वी—समुद्र—देवता—येभी नाश को प्राप्त होंगे तो यह मर्त्य लोक ऐसा किस के समान है और कैसे नाश को प्राप्त न होगा ६

पंचधासंभृतःकायोयदिपंचत्वमागतः
कर्मभिःस्वशरीरोत्थैस्तत्रकापरिदेवना ७
सर्वेक्षयांतानिचयाःपतनांताःसमुच्छ्रयाः
संयोगाविप्रयोगांतामरणांतंहिजीवितं ८
श्लेष्मास्त्रुबांधवैर्मुक्तंप्रेतोभुंक्तेयतोऽवशः
अतोनरोदितव्यंहिक्रियाःकार्य्याःप्रयत्नतः ९
एवमुक्त्वाव्रजेयुस्तेगृहांल्लघुपुरःसराः
स्नानाग्निस्पर्शनाद्याश्चैःशुध्येयुरितरेतरैः १०
इतिकात्यायनस्मृतौद्वाविंशतितमःखंडः २२
एवमेवाहिताग्नेस्तुपात्रन्यासादिकंभवेत्

और यदि पंच भूतों से बना देह अपने देह से किये कर्मों से पंचत्व (मरण) को प्राप्त होजाय तो इसमें क्या शोक है ७

जितने संचय हैं वे सब क्षय तक हैं और जितने ऊंचे हैं वे पतनतक हैं और जितने संयोग (मेल) हैं वे सब वियोग (बिछुड़ना) तक हैं और जीना मरण तक हैं ८

जो आंसू बंधु छोड़ते हैं उन्हें पराधीन होकर प्रेत खाता है इससे रोना नहीं किंतु यत्न से कर्म करना ९

ऐसे वे सब कह कर और छोटे बालकों को आगे करके घरको चलें और प्रेतके बांधवों से इतर सब मनुष्य स्नान और अग्नि के स्पर्श से वंधन से प्रेमके छूटते हैं १०

२२ खंड पूर्ण हुआ

इसी प्रकार आहिताग्नि (अग्नि होत्री) का भी मात्र

कृष्णाजिनादिकश्चात्रविशेषःसूत्रचोदितः १
विदेशमरणेऽस्थीनिह्याहृत्याभ्यज्यसर्पिषा
दाहयेदूर्णयाच्छाद्यपात्रन्यासादिपूर्ववत् २
अस्थ्नामलाभेपर्णानिसकलान्युक्तयाऽऽवृता
भर्जयेदस्थिसंख्यानिततःप्रभृतिसूतकं ३
महापातकसंयुक्तोदैवात्स्याद्ग्निमान्यदि
पुत्रादिःपालयेदग्नीन्युक्तआदोषसंक्षयात् ४
प्रायश्चित्तंनकुर्याद्यःकुर्वन्वाम्रियतेयदि
गृह्यंनिर्वापयेच्छ्रौतमप्स्वस्येत्सपरिच्छदं ५

आदि का रखना होता है और सूत्र में कही काली मृगछाला इससे अधिक होती है १

यदि कोई विदेश में मरजाय तो विदेश से अस्थीलाकर और घी से छिड़क कर और ऊनसे ढककर दाह करै और पात्र जो होम के हैं उन का रखना पूर्व के समान है २

यदि अस्थीभी न मिलें तो अस्थियों के तुल्य पत्ते ले और उन्हें पूर्व कही आवृत् से भून (फूक दे) अर्थात् पुत्तल दहन करै उसी दिन से सूतक होते हैं ३

यदि अग्नि होत्री को दैव से महापातक लगजाय तो दोष की निवृत्ति तक पुत्र सावधान होकर अग्नि की पालना करै ४

यदि महापात की प्रायश्चित्त न करै वा प्रायश्चित्त करता २ ही मरजाय तो श्रुति में कही सामग्री सहित अग्निहोत्र को जल मे फैंक दे ५

सादयेदुभयंवाप्सुहृद्भ्योग्निरमवद्यतः
पात्राणिदद्याद्विप्रायदहेदप्स्वेववाक्षिपेत् ६
अनयैवावृतानारीदग्धप्रायाव्यवस्थिता
अग्निप्रदानमंत्रोस्यनप्रयोज्यइतिस्थितिः ७
अग्निनैवदहेद्भार्यांस्वतंत्रापतितानचेत्
तदुत्तरेणपात्राणिदाहयेत्पृथगंतिके ८
अपरेद्युस्तृतीयेवाअस्थ्नांसंचयनंभवेत्
यत्तत्रविधिरादिष्टऋषिभिःसोधुनोच्यते ९
स्नानांतंपूर्ववत्कृत्वागव्येनपयसाततः
सिंचेदस्थीनिसर्वाणिप्राचीनावीत्यभाषयन् १०

अथवा अग्नि और पात्रों को जल में रखदे क्योंकि जल से हि अग्न हुआ है और पात्रों को ब्राह्मण को देदे अथवा जलादे अथवा जल में डालदे ६

इसी प्रकार से जो अग्नि होत्री की स्त्री मरे उसका दाह करै परंतु अग्नि देने का मंत्र न पढै यह मर्यादा है ॥

यदि स्त्री स्वतंत्र और पतित न होय तो अग्नि होत्र की अग्नि से ही उसका दाह करै परंतु होम के पात्र स्त्री के उत्तर दिशा में समीप पृथक् रखदे ८

दूसरे वा तीसरे दिन अस्थि संचय न होता है जो वहां विधि ऋषियों ने कही है उसे अब कहते हैं ९

पूर्ववत् स्नान तक कर्म करके गौके दूध से संपूर्ण अस्थी छिड़के और अपसव्य रहै और मौन भी धारण करै १०

शमीपलाशशाखाभ्यामुद्धृत्योद्धृत्यभस्मनः
आज्येनाभ्यज्यगव्येनसेचयेद्गंधवारिणा ११
मृत्पात्रसंपुटंकृत्वासूत्रेणपरिवेष्ट्यच
श्वभ्रं खात्वाशुचौभूमौनिखनेद्दक्षिणामुखः १२
पूरयित्वावटंपंकपिंडशैवालसंयुतं
दत्वोपरिसमंशेषंकुर्यात्पर्वाणहकर्मणा १३
एवमेवागृहीताग्नेःप्रेतस्यविधिरिष्यते
स्त्रीणामिवाग्निदानंस्यादथातोऽनुक्रमुच्यते १४
इतिकात्यायनस्मृतौत्रयोविंशतितमःखंडः २३

शमी (छोंकर) और ढाक की शाखा से भस्म मे से अस्थियों को निकास २ कर घीके घी और गंध के जलसे छिड़के ११

मिट्टी के पात्र को संपुट (सीधा) करे और उसमें अस्थियों को रख कर सूत से लपेट कर शुद्ध भूमि में गढ्ढा खोद कर उसमें दक्षिण को मुख करके गाड़ दे १२

और उस गढे को गारे और शिर वाल से भर कर और उसके उपर कुछ रखकर सम (एकसा) करदे और यह सब पूर्वान्ह में करे १३

इसी प्रकार जो प्रेत अग्नि होत्री नहो उसकी भी विधि होती है और स्त्रियों के समान स्त्रियों को अग्नि देना होता है अब जो नहीं कहा उसे कहते हैं १४

२३ खंड पूर्ण हुआ

सूतकेकर्मणांत्यागःसंध्यादीनांविधीयते
होमःश्रौतेतुकर्तव्यःशुष्कान्नेनापिवाफलैः १
अकृतंहोमयेत्स्मार्त्तेतदभावेकृताकृतं
कृतंवाहोमयेदन्नमन्वारंभविधानतः २
कृतमोदनसक्त्वादितंडुलादिकृताकृतं
व्रीह्यादिचाकृतंप्रोक्तमितिहव्यंत्रिधाबुधैः ३
सूतकेचप्रवासेषुचाशक्तौश्राद्धभोजने
एवमादिनिमित्तेषुहोमयेदितियोजयेत् ४
नत्यजेत्सूतकेकर्मब्रह्मचारीस्वकंक्वचित्
नदीक्षणयात्परंयज्ञेनकृच्छ्रादितपश्चरन् ५

सूतक में संध्या आदि कर्मों का त्याग कहा है और वेद में कहे होम को तो सूके अन्न वा फल से करे १

स्मृति में कहे कर्म में अकृत को और अकृत न मिले तो कृता कृतको—अथवा कृत अन्नकी आहुति दे परंतु अन्वारंभ (ब्रह्मा से मिल कर) विधिसे यह करे २

ओदन (भात) सत्तू आदि को कृत और तंडुल आदि को कृताकृत और व्रीहि आदि को अकृत कहते हैं यह तीन प्रकार का हव्य विद्वानों ने कहा है ३

सूतक में परदेश में असामर्थ्य में—श्राद्ध के भोजन में इन आदि निमित्तों में इन तीनों हव्यों को लेकर आहुति दे ४

सूतक में ब्रह्मचारी अपने कर्म को कभी न छोड़े और दीक्षा लेने से आगे यज्ञ में और कृच्छ्र आदि तप करता हुआ भी न छोड़े ५

पितर्य्यपिमृतेनैषांदोषोभवतिकर्हिचित्
अशौचंकर्मणोऽतेस्यात्त्र्यहंवाब्रह्मचारिणः ६
श्राद्धमग्निमतःकार्यंदाहादेकादशेऽहनि
प्रत्याब्दिकंतुकुर्वीतप्रमीताहनिसर्व्वदा ७
द्वादशप्रतिमास्यानिआद्यं षाण्मासिकेतथा
सपिंडीकरणंचैवएतद्वैश्राद्धषोडशं ८
एकाहेनतुषण्मासायदास्युरपिवात्रिभिः
न्यूनाःसंवत्सरश्चैवस्यातांषाण्मासिकेतदा ९
यानिपंचदशाद्यानिअपुत्रस्येतराणितु
एकस्मिन्नह्निदेयानिसपुत्रस्यैवसर्वदा १०

पिता के मरे पर भी इनको दोष कभी नहीं होता अथवा ब्रह्मचारी को प्रारंभ किये कर्म के पीछे तीन दिन आशौच होता है ६

अग्नि होत्री का श्राद्ध दाहसे ग्यारवें दिन करै और प्रति वर्ष में भी मरने के दिन श्राद्ध करै ७

और बारह वर्ष प्रति मास के श्राद्ध और आद्य श्राद्ध दोषाण्मासिक और सपिंडी करण ये सोलह श्राद्ध होते हैं ८

ये दोषाण्मासिक तब होते हैं जब छः महीने वा वर्ष में एक वा तीन दिन कम हों तब छटे महीने में दो श्राद्ध करने ९

पहिले जो पंद्रह श्राद्ध हैं वे जिसके पुत्र न हो उसके एकही दिन में करदे और जिसके पुत्र हो उसके सर्वदा (पृथक् २) करै १०

नयोपायाःपतिर्दद्यादपुत्रायात्र्पिकचित्
नपुत्रस्यपितादद्यान्नानुजस्यतथाग्रजः ११
एकादशेऽन्हिनिर्वर्त्य अर्वाग्दर्शाद्यथाविधि
प्रकुर्वीताग्निमान्पुत्रोमातापित्रोःसपिंडतां १२
सपिंडीकरणादूर्ध्वंसदद्यात्प्रतिमासिकं
एकोद्दिष्टेनविधिनादद्यादित्याहगौतमः १३
कर्षूसमन्वितंमुक्त्वातथाद्यंश्राद्धषोडशं
प्रत्याब्दिकंचशेषेषुपिंडाःस्युःषडितिस्थितिः १४
अर्घेऽक्षय्योदकेचैवपिंडदानेऽवनेजने
तंत्रस्यतुनिवृत्तिःस्यात्स्वधावाचनएवच १५

जिन स्त्री के पुत्र न हो उनको पति उसे श्राद्ध में पिंड न दे और पुत्र को पिता न दे छोटे भाई को बडा भाई न दे ११

ग्यारवें दिन म वस म पहिले कर्म को निवृत कर कर अग्नि होत्री पुत्र माता पिता की सपिंडी विधि से करे १२

सपिंडो किये पीछे प्रति महीने में पिंड न दे और गौतम ऋषि यह कहते हैं कि एकोद्दिष्ट की विधि से सपिंडी से पीछे भी प्रति महीने में दे १३

कर्षू (अर्घा) सहित आद्य श्राद्ध और षोडश १६ श्राद्ध और प्रत्याब्दिक (क्षयी) इतने श्राद्धों को छोड़ कर शेष श्राद्धों में छः ६ पिंड होते हैं यह मर्यादा है १४

अर्घ—अक्षय्योदक—पिंडदान—अवने जन—और स्वधा वाचन इतने काम तंत्र (अर्थात् सबको एक वार अर्घ आदि देना) सेन करे १५

ब्रह्मदंडादियुक्तानांयेषांनास्त्यग्निसत्क्रिया
श्राद्धादिसत्क्रियाभाजोनभवन्तीहतेक्कचित् १६
इतिकात्यायनस्मृतौचतुर्विंशतितमःखंडः २४
मंत्राम्नायेऽग्नइत्येतत्पंचकंलाघवार्थिभिः
पठ्यतेतत्प्रयोगेस्यान्मंत्राणामेवविंशतिः १
अग्नेःस्थानेवायुचन्द्रसूर्यावहुवदूह्यच
समस्यपंचमीसूत्रेचतुश्चतुरितिश्रुतेः २
प्रथमेपंचकेपापिलक्ष्मीरितिपदंभवेत्
अपिपंचसुमंत्रेषुइतियज्ञविदोविदुः ३
द्वितीयेतुपतिघ्नीस्यादपुत्रेतितृतीयके

ब्रह्मदंड (शाप) आदि युक्त जिन पुरुषों का सत्कर्म नहीं हुआ वे श्राद्ध आदि सत्कर्म के भागी इस लोक में कभी नहीं होते १६

२४ खंड पूर्ण हुआ

मंत्रों के वेद में अग्नि इत्यादि जो पांच मंत्र लाघव की इच्छा करने वाले ऋषियोंने पठे है उन मंत्रों के प्रयोग में वीस मंत्र होते हैं १

क्योंकि अग्ने इसपद के स्थान में वायु—चन्द्र—सूर्य इनको पठकर पंचमी, सूत्र में सब जगे चार२ आहुति हुई इस श्रुति से २

पहिले पंचक में पापी लक्ष्मीपद पांचों मंत्रों में होता है यह यज्ञ के जानने वाले जानते हैं ३

दूसरे पंचक में पतिघ्नीपद और तीसरे पंचक में अप

चतुर्थेस्त्वपसव्येतिइदमाहुतिविंशकम् ४
घृतिहोमेनप्रयुंज्यादनामसुतथाष्टसु
चतुर्थ्यामघ्न्यइत्येतत्गोनामसुहिहूयते ५
लताग्रपल्लवोगूढःशुंगेतिपरिकीर्त्यते
पतिव्रताव्रतवतीब्रह्मबंधुस्तथाऽश्रुतः ६
शलाटुनीलमित्युक्तंग्रंथःस्तवकउच्यते
कपुष्णिकाभितःकेशामूर्धिपश्चात्कपुच्छलं ७
श्वाविच्छल्लकःशल्लीतथावीरतरःशरः
तिलतंडुलसम्पक्कःकृसरःसोभिधीयते ८

तीसरे और चौथ पचक में अपसव्यापद होता है ये बीस आहुति है ४

घृत के होमों में और आठों गोनाम होमों में यह प्रयोग न करे चौथे और गोनामोंमें और अघ्न्ये इस मंत्रसे आहुति दीजाती है ५

लता के आगे का जो पत्ता गुप्त है उसे शुंगा कहते हैं और पति व्रता को व्रतवती और जो वेद न पढा हो उसे ब्रह्म बंधु कहते हैं ६

नीलको शलाटु, और स्तवक (गुच्छा) को ग्रन्थ कहतेहैं और स्त्री के शिर पर दोनों तरफ कर्णों को कपुष्णिका और पीछे के केश के जूडे कोक कपुच्छल कहते हैं ७

शल्ली (सेह) को श्वावित और शल्ल का—और वाणको वीरतर कहे हैं और इकट्ठे पके तिल चावलों को कृसर कहते हैं ८

नामधेयेनुनिवसु पिशाचावाहुवत्सदा
यक्षाश्चपितरोदेवाद्यष्टव्यातिथिदेवताः ९
आग्नेयाद्य थ सर्पाद्ये विशाखाद्ये तथैवच
आषाढाद्ये धनिष्ठाद्ये अश्विन्याद्ये तथैवच १०
द्वंद्वान्येत निनक्षत्राणिजुहुयात्सदा
द्वन्द्वद्वयं द्विवच्छेषमवशिष्टं यथैकवत् ११
देवतास्वपिहूयंतेबहुवत्सर्वपित्तयः
देवाश्चवसवश्चैवद्विपदेवाश्विनोसदा १२
ब्रह्मचारीसमादिष्टोगुरुणा व्रतकर्मणि
बाढमोमितिवाब्रूयात्तथैवानुपपालयेत् १३

सनि वसु पिशाच, यक्ष, पितर, देव और तिथि देवता इनको बहुवचनांत नाम लेकर पढ़े (जैसे मुनिभ्यःस्वाहा इति) ९

कृत्तिका—श्लेषा—विशाखा—पूर्वाषाढ और अश्विनी १०

इतने नक्षत्र द्वंद्व (दोर) हैं इनको सदैव बहु वचन पद से (यथाकृत्ति काभ्यः स्वाहा इत्यादि) आहुति दे और शेष दो द्वंद्वों को द्विवचनांतपद से और बाकी के नक्षत्रों को एक वचनांत पद से आहुति दे ११

देवताओं में भी सर्वपितरों और देव—वसु द्विपदेव—अश्विनी कुमार इनको बहुवचनांत पद से १२

जिस व्रत के कर्म में गुरु ब्रह्मचारी को आज्ञा दें उसमें बाढ (सत्य है) अथवा ओं (अंगीकार है) ऐसे कहै—यदि ऐसे गुरु की आज्ञा को न पाले १३

सशिखंवपनंकार्यमास्नानाद्ब्रह्मचारिणा
आशरीरविमोक्षायब्रह्मचर्य्यंनचेद्भवेत् १४
नगात्रोत्सादनंकुर्य्यादनापदिकदाचन
जलक्रीडामलंकारान्ब्रतीदंडइवाप्लुवेत् १५
देवतानांविपर्य्यासेजुहोतिषुकथंभवेत्
सर्वंप्रायश्चितंहुत्वाक्रमेणजुहुयात्पुनः १६
संस्काराश्चतिपत्येरन्स्वकालाच्चेत्कथंचन
हुत्वातदैवकर्तव्यायेतूपनयनादधः १७
अनिष्ट्वानवयज्ञेननवान्नंयोऽत्यकामतः

तो शिखासहित मुंडन और स्नान इनको ब्रह्मचारी करै यह मुण्डन आदि जब करै जो शरीर के मरण तक ब्रह्मचर्य उसका न हो १४

ब्रह्मचारी आपत्ति के विना गातों पर उवटना न करै और जल में क्रीड़ा भूषण धारण इनको भी न करै और मुसल वत् स्नान करै १५

यदि कभी होम में देवताओं का विपर्यास (आगे का पीछे वा पीछे का आगे) होजाय तो प्रायश्चित्त की सब आहुति देकर फिर क्रम से होम करै १६

यदि यज्ञोपवीत से पहिले संस्कारों (जात कर्मादि) की अति पत्ति (शास्त्रोक्त समय पर न होना) होजाय तो प्रायश्चित्त की सब आहुति देकर करने १७

जो पुरुष अज्ञान से नव यज्ञ किये विना नवीन अन्नको खाता है उसका प्रायश्चित्त वैश्वानर (अग्नि का) चरु है अर्थात्

वैश्वानरश्चरुस्तस्यप्राशश्चित्तंविधीयते १८
इतिकात्यायनस्मृतौपचविंशतितमःखंडः २५
चरुःसमश्ननीयोयस्तथागोयज्ञकर्मणि
वृषभोत्सर्जनेचैवअश्वयज्ञेतथैवच १
श्रावणयांवाप्रदोषेयःकृष्यारंभेतथैवच
कथमेतेषुनिर्वापाःकथंचैवजुहोतयः २
देवतासंख्ययाग्राह्यानिर्वापास्तुपृथक्पृथक्
तूष्णींद्विरेवगृह्हीयाद्धोमश्चापिपृथक्पृथक् ३
यावताहोमनिर्वृत्तिर्भवेद्यायत्रकीर्तिता
शेषंचैवभवेत्किंचित्तावन्तंनिर्वपेच्चरुं ४
चरौसमशनीयेतुपितृयज्ञेचरौयथा

उससे होम करै १८

२५ खंड पूरा हुआ

जो समश्ननीय (खाने योग्य) चरु है वह और गो यज्ञ कर्म में वृषोत्सर्ग में—अश्वमेध में १

और श्रावणी में प्रदोष में कृषि (खेती) के आरंभ में इतनी जगे निर्वाप और आहुति कैसे होती है २

जितने देवताहों उतनेही पृथक् २ निर्वाप लेने—और आहुति भी तूष्णीं (मंत्र के विना) दो पृथक् २ लेनी ३

जितना होम जहां कहा हो वा जितने से होम होसके—और कुछ शेष भी रहजाय उतनाहि चरु बनावे ४

समश नीय चरु में और होम के चरु में इनमें तो मेक्षण (जिसमें घी निचड़ता हो) से होम करै और अन्य चरु में घी

होतव्यमेक्षणेनान्यउपस्तीर्णाभिघारितं ५
कालःकात्यायनेनाक्तोविधिश्चैवसमासतः
वृषोत्सर्गोयतोनोत्रगोभिलेनतुभाषितः ६
पारिभाषिकएवस्यात्कालोगोवाजयज्ञयोः
अन्यस्मादुपदेशात्तुस्वस्तरारोहणस्यच ७
अथवामार्गपाल्येऽन्हिकालोगोयज्ञकर्मणः
नीराजनेऽन्हिवाश्वानामिमितित्रांतरविधिः ८
शरद्वसन्तयोःकेचिन्नवयज्ञप्रचक्षते
धान्यपाकवशादन्येश्यामकोवनिनःस्मृतः ९
आश्वयुज्यांतथाकृष्यांवास्तुकर्मणियाज्ञिकाः

संयुक्त से करके उपस्तीर्ण (एकत्र किया) किये से होम करै ५

काल और विधि संक्षपसे कात्यायन ने कहे हैं वृषोत्सर्ग में और गोभिल ऋषि ने नही कहे ६

गौ और अश्व के यज्ञ में समय वही है जो परिभाषिक (स्वयं नियत किया) हो यह अन्य ऋषि के उपदेश से स्वस्तर और आरोहण में भी होता है ७

अथवा मार्ग पाल (रखवाला) दिन में गो यज्ञ कर्म क और नीराजन (दिवाली) के दिन अश्वमेध का काल होता है यह शास्त्रान्तरोंकी विधि है ८

कोई ऋषि शरद और वसंत में नव यज्ञ कहते हैं और कोई अन्न के पकने परकहे हैं और बानप्रस्थ को श्यामाक (समा)पकने पर कहा है ९

आश्विन की पूर्णिमा—कृषि—और वास्तु कर्म—इनमें

यज्ञार्थतत्त्ववेत्तारो होममेवं प्रचक्षते १०
द्वे पंच द्वे क्रमेणैतां हविराहुतयः स्मृताः
शेषा आज्येन होतव्या इति कात्यायनोऽब्रवीत् ११
पयो यदाज्यसंयुक्तं तत्पृषातकमुच्यते
दध्येके तदुपासाद्य कर्त्तव्यः पायसश्चरुः १२
व्रीहयः शालयो मुद्गा गोधूमाः सर्षपास्तिलाः
यवाश्चौषधयः सप्त विपदं घ्नंति धारिताः १३
संस्काराः पुरुषस्यैते स्मर्य्यंते गौतमादिभिः
अतोऽष्टकादयः कार्य्याः सर्वे कालक्रमोदिताः १४
सकृदप्यष्टकादीनि कुर्यात्कर्माणि यो द्विजः

यज्ञ तत्त्व के ज्ञाता यज्ञ करने वाले इस प्रकार होम कहते हैं १०

दो २—पांच ५—फिर दो २ क्रमसे इतनी आहुति हवि (साकल्य) की और शेष आहुति घी की देनी यह कात्यायनने कहा है ११

घी मिला है जिस में ऐसे दूध को पृषातक कहते हैं और कोई यह कहते हैं कि उसमें दधि मिलाकर पायस चरु बनाना १२

व्रीहि वा शालि (चावल) मूंग—गेहूं—सरसों—तिल—जो—ये सात धान्य धारण करने से विपद को दूर करती हैं १३

ये गौतम आदि ऋषियों ने पुरुष के संस्कार कहे हैं इस से अष्टका आदि सब कर्म जिस समय में कहे हैं उसी में करने १४

जो द्विज अष्टका आदि कर्मों को एक बार भी करता है

सपंक्तिपावनोभूत्वालोकान्प्रैतिघृतश्च्युतः १५
एकाहमपिकर्मस्थोयोऽग्निशुश्रूषकःशुचिः
नयत्यत्रतदेवास्यशताहंदिविजायते १६
यस्त्वाधायाग्निमाशास्यदेवादीन्नैभिरिष्टवान्
निराकर्त्तामरादीनांसविज्ञेयोनिराकृतिः १७
इतिकात्यायनस्मृतौषड्विंशतितमःखंडः २६
यच्छ्राद्धंकर्मणामादौयाचान्तेदक्षिणाभवेत्
अमावास्यांद्वितीयंयदन्वाहार्य्यंतदुच्यते १
एकसाध्येयवर्हिःपुनस्यात्परिसमूहनं

वह पंक्ति का पावन (पवित्र करने वाला) होकर घी से सींच हुए लोकों (स्वर्गादि) को प्राप्त होता है १५

जो अग्नि का सेवक एक दिन को भी यहां कर्म मे टिक कर बिताता है वही दिन स्वर्ग में सौ १०० दिन होजाते हैं १६

जो अग्नि का आधान करके और देवताओं से आशीर्वाद की आशा से इन यज्ञों से देवताओं को पूजता है और फिर देवताओं का तिरस्कार करता है उसको निराकृति (निंदित) जानना १७

२६ खंड पूर्ण हुआ

कर्मों की आदि में जो श्राद्ध होता है और कर्मों के अंत में जो दक्षिणा होती है और मावस को जो दूसरा श्राद्ध होता है उसे अन्वाहार्य्य कहते हैं १

एक दिन के होमोंमें और वर्हि भिन्न२ कुशाओं में परिसमूहन और उत्तर२ पात्रों का रखना नहीं होता क्योंकि वो

नोदगासादनंचैवक्षिप्रहोमाहितेमताः २
अभावेव्रीहियवयोर्दध्नावापयसापिवा
तदभावेयवाग्वावाजुहुयादुदकेनवा ३
रौद्रन्तुराक्षसंपित्र्यमासुरंचाभिसारिकं
उक्त्वामंत्रंस्पृशेदापआलभ्यात्मानमेवच ४
यजनीयेन्हिसोमश्चेद्वारुण्यांदिशिदृश्यते
तत्रव्याहृतिभिर्हुत्वादंडंदद्याद्द्विजातये ५
लवणंमधुमांसंचक्षारांशोयेनहूयते
उपवासेनभुंजीतनोरात्रौनकिंचन ६
स्वकालेसायमाहुत्याअप्राप्तौहोतृहव्ययोः

क्षिप्रहोम कहे हैं २

व्रीहि और जों के अभाव में दही वा दूध से और उनके भी अभाव में लपसी से वा जल से ही होम करैं ३

भयानक मंत्र और राक्षसों के मंत्र—पितरों के मंत्र—असुरों के मंत्र—अभिचार [मारना] के मंत्र—इनको उच्चारण करके मन को रोक कर आचमन करै ४

यदि यज्ञ के दिन चंद्र वा अमृत वल्ली वरुण दिशा में दीखें तो वहां व्याहृति [भूः आदि] यों से होम करके द्विजातियों को दंड दे अर्थात् प्रायश्चित्त करावे ५

लवण—सहत—मांस—क्षार [चातक वा मोर] का भाग इनका जो होम करै वह दिन में उपवास करैं और रात्रि में अधिक न खाय ६

सायंकाल को समय पर यदि होता और हव्य न मिलैं

प्राक्प्रातराहुतेःकालःप्रायश्चित्ते हुतेसति ७
प्राक्सायमाहुतेःप्रातर्होमकालानतिक्रमः
प्राक्पौर्णमासाद्दर्शस्यप्राग्दर्शादितरस्यतु ८
वैश्वदेवेत्वतिक्रान्तेअहोरात्रमभोजनं
प्रायश्चित्तमथोहुत्वापुनःसन्तनुयाद्व्रतं ९
होमद्वयात्ययेदर्शपौर्णमासात्ययेतथा
पुनरेवाग्निमादध्यादितिभार्गवशासनं १०
अनूचोमाणवोज्ञेयएणःकृष्णमृगःस्मृतः
रुरुर्गौरमृगःप्रोक्तस्तंबलःशोणउच्यते ११
केशान्तिकोब्राह्मणस्यदंडःकार्यःप्रमाणतः

तो प्रातःकाल में प्रायश्चित्त की आहुति के पीछे आहुति दे ७

और सायंकाल की आहुति से पहिले भी प्रायश्चित की दे इस प्रकार करने से होम के समय का अवलंघन नहीं होता है पूर्णमासी से पहिले मांवसके और मावससे पहले पूर्णिमाके ८

बलिवैश्वदेव का अवलंघन (न करना) होजाय तो अहोरात्र भोजन करै फिर प्रायश्चित्त की आहुति देकर व्रत का आरंभ करै ९

यदि दो होम का अवलंघन होजाय वा मांवस और पूर्णिमा का अवलंघन होजाय तो फिर अग्नि का आधान करै यह भार्गव का शिक्षा है १०

अनूच माणवक को कहते हैं और काले मृग को एण-- और गोरे को रुरु और लाल को तम्बल कहते हैं ११

केशांतक ब्राह्मण का— मस्तक तक क्षत्रिय का —नासिका

लक्ष्टसंमितोराज्ञःस्यात्तु नासांतिकोविशः १२
ऋजवस्तेतुसर्वेस्युरव्रणाःसौम्यदर्शनाः
अनुद्वेगकरान्णांसत्वचोऽनग्निदूषिताः १३
गौर्विशिष्टतमाविप्रैर्वेदेष्वपिनिगद्यते
नततोऽन्यद्वरंयस्मात्तस्माद्गौर्वरमुच्यते १४
येषांव्रतानामन्तेषुदक्षिणानविधीयते
वरंतत्रभवेद्दानमपिवाच्छादयेद्गुरुं १५
अस्थानोच्छ्वासविच्छेदघोषणाध्यापनादिकं
प्रमादिकंश्रुतौयत्स्याद्यातयामत्वकारितत् १६
प्रत्यब्दंयदुपाकर्मसोत्सर्गंविधिवद्द्विजैः

तक वैश्य का दंड ब्राह्मण से होता है १२

और वे दंड ऐसे हों कि—कोमल—घंनन हों—दीखने में अच्छे हों—मनुष्यों को डराने वाले न हों—और जले न हों १३

ब्राह्मणों ने वेदों में भी गौ को उत्तम कहा है और जिससे गौ से और कोई वर (श्रेष्ठ) नही हैं तिससे गौ को वर कहतेहैं १४

जिन व्रतों के अंत में दक्षिणा नहीं कही हैं वहां वर (गौ) दक्षिणा दे अथवा गुरु को वस्त्रों से ढक दे १५

इनसे वेद अयातयाम (जिसमें सार न हो) होजाते हैं कि अस्थान (जिसस्थान से बोलना चाहिये उससे पदों को ना बोलना) ऊंचे स्वांस से बोलना विच्छेद (विभाग) से बोलन बड़े शब्द से बोलना—यदि ये प्रमाद से होजांय तो सारहीन होता है १६

प्रति वर्ष जो उपाकर्म वा उत्सर्ग (श्रावणी में जो होते हैं)

क्रियतेछंदसांतेनपुनराप्यायनंभवेत् १७
अयातयामैश्छंदोभिर्यत्कर्म्मक्रियतेद्विजैः
क्रीडमानैरपिसदातत्तेषांसिद्धिकारकं १८
गायत्रींचसगायत्रांबार्हस्पत्यमितित्रिकं
शिष्येभ्योऽनूच्यविधिवदुपाकुर्य्यात्ततःश्रुतिं १९
छंदसामेकविंशानांसंहितायांयथाक्रमं
तच्छन्दस्कभिरेवर्ग्भिराद्याभिर्होमइष्यते २०
पर्व्वभिश्चैवगानेषुब्राह्मणोपूतरादिभिः
अंगेषुचर्चामंत्रेषुइतिषष्टिर्जुहोतयः २१
इतिकात्यायनस्मृतौसप्तविंशतितमःखंडः २७

द्विज करते हैं उससे फिर वेदों का आप्यायन (सार पना) होता है १७

अयातयाम [सार वाले] वेदों से जो कर्म क्रीड़ासे भी द्विज करते हैं वह कर्म उनको सिद्धि करने वाला होता है १८

गायत्री—और गायत्र और बृहस्पत्य (बृहस्पति का सूक्त) इन तीनों को शिष्यों को जो नहीं पढावे वह फिर वेद का उपाकर्म करै १९

संहिता में क्रमसे इक्कीस छंद हैं (त्रिष्टुभ १ आदि) और इन छंदों की जो सनातन ऋचा हैं उन्ही से होम कहा है २०

गान (सामवेद) में पर्वों से और ब्राह्मण वेद में पूतरादि से और अंग चर्चा मंत्रों में जो हैं वेही साठ ६० आहुति है २१

२७ खंड पूर्ण हुआ

अक्षतासुयवाःप्रोक्ताभृष्टाधानाभवंतिते
भृष्टास्तुव्रीहयोलाजाघटाःखांडिकउच्यते १
नाधीयीतरहस्यानिसान्तरश्चविचक्षणः
नचोपानत्पदश्चैवषण्मासान्दक्षिणायनात् २
उपाकृत्योदगयनेततोऽधीयीतधर्म्मवित्
उत्सर्गश्चैकएवैषांतैष्यांप्रोष्ठपदेऽपिवा ३
अजातव्यंजनालोमीनतस्यासहसंविशेत्
अयुगःकाकवन्ध्यायाजातातांनविवाहयेत् ४
संसक्तपदविन्यासस्त्रिपदःप्रक्रमःस्मृतः
स्मार्त्तकर्म्मणिसर्वत्रश्रौतेत्वध्वर्युणोदितः ५

जोंको अक्षत कहते हैं और वेही जों भुनेहुए धान कहाते हैं और भुने ब्रीहियों को लाजा (खील) कहते हैं और घड़ों को खांडिक कहते हैं १

व्यवधान(दूर बैठा)से विद्वान् मनुष्य रहस्यों को न पढ़े जूता पहने न पढ़े और छः महीने तक दक्षिणायन में भी न पढ़े २

उपाकर्म करके फिर उत्तरायण में धर्म का ज्ञाता वेदोंको और द्विजोंकेलिये उत्सर्ग तैषी वा भाद्रपद में एकही कहा है ३

जिस की योनि में लोम न जमें हों उस स्त्री के संग भोग न करै और जो स्त्री अयुग(कन्या)ःवा काक वंध्याहो उसे न विवाहै ४

संसक्त (मिले) पदों का विन्यास (बोलना) यह त्रिपद प्रक्रम (आरंभ) स्मृति में जो सब कहे हैं उनमें होता है और श्रुति में जो कर्म कहे हैं उनमें अध्वर्यु के कथन के अनुसार होता है ५

यस्यांदिशिबलिंदद्यात्तामेवाभिमुखोबलिं
अवणाकर्म्मणिभवेत्पंचकर्मनसर्वदा ६
बलिशेषस्यहवनमग्निप्रणयनन्तथा
प्रत्यहंनभवेयातामुल्मकन्तुभवेत्सदा ७
पृष्ठातकप्रेषणयोर्नवस्यहविषस्तथा
शिष्टस्यप्राशनेमंत्रस्तत्रसर्वेऽधिकारिणः ८
ब्राह्मणानामसान्निध्येस्वयमेवपृषातकं
अवेक्षेद्धविषःशेषंनवयज्ञेऽपितक्षयेत् ६
सफलाबदरीशाखाफलवत्यभिधीयते
घनाविसिकताशंकाःस्मृताजातशिलास्तुताः १०
नष्टोविनष्टोमणिकःशिलानाशेतथैवच

जिस दिशा में बलि दे उसी दिशा के संमुख बैठे—श्रार श्रावणी कर्म मेंही पांच कर्म होते हैं सदा नहीं ६

बलि के शेष का होम और अग्नि का प्रणयन—(लाना) ये प्रति दिन नहीं होते और उल्मुक तो प्रति दिन होता है ७

वृषातक और प्रेषण में और नवीन हविः में और हविके शेष के भोजन में जो मंत्र हैं उसमें सब अधिकारी हैं ८

यदि ब्राह्मण समीप में न हों तो आपही पृषातक को देखले और नवयज्ञ में हवि के शेष को न देखे ६

फलवाली वेरी की शाखा को फलवती कहते हैं और घन (दृढ) और जिनपर रेत न हो और संदेह भी न हो उन वेर की शाखा को जातशिला कहते हैं १०

और जो शिला के नाश में उसी वेरी को नष्ट वा विनष्ट

तदैवाहृत्य संस्कारः कुर्यान्नापेक्षेदाग्रहायणीं ११
श्रवणाकर्मलुप्तं चेत्कथंचित्सूतकादिना
आग्रहायणिकं कुर्याद्बलिवर्जमशेषतः १२
ऊर्ध्वं स्वस्तरशायी स्यान्मासमर्द्धमथापि वा
सप्तरात्रं त्रिरात्रं वा एकां वा सद्य एव वा १३
नोर्द्ध्वं मंत्रप्रयोगः स्यान्नाग्न्यागारं नियम्यते
नाहृतास्तरणं चैव न पार्श्वं चापि दक्षिणं १४
दृढश्चेदाग्रहायण्यामकृत्वा वापि कर्मणः
कुंभौ मंत्रवदासिंचेत्प्रतिकुंभमृचं पठेत् १५
अल्पानां यो विघातः स्यात्स बाधो बहुभिः स्मृतः

वा अधिक कहते हैं इतर न मिले तो ऐसी ही बेरी को लाकर संस्कार करले आग्रहायणी की प्रतीक्षा न करे ११

यदि किसी प्रकार सूतक आदि से श्रावणी का कर्म न हुआ होय तो बलि कर्म को छोड़कर सब कर्म अग्रहायणी (अगहन शुदी १५) को करै १२

फिर महीने वा पंद्रह दिन—वा सातरात—वा तीन वा एक—रात वा उसी समय यथाशक्ति अच्छे बिस्तर पर सोवे १३

फिर बिस्तर के सोने के पीछे मंत्र का प्रयोग और अग्नि की शाला का नियम और न अच्छा आस्तरण (बिछौना) और न दाहिना पार्श्व (करवट) होता है १४

यदि मनुष्य दृढ हो और कर्म को भी जिसने आग्रहायणी के दिन न किया हो तो दो घड़े मंत्र से सींचे और प्रत्येक घड़े पर ऋचा को पढे १५

प्राणसम्मितइत्यादिवसिष्ठं बाधितंयथा १६
विरोधोयत्रवाक्यानांप्रामाण्यंतत्रभूयसां
तुल्यप्रमाणकत्वेतुन्यायएवंप्रकीर्तितः १७
त्रैयंबकं.करतलमपूपामंडकाःस्मृताः
पालाशगोलकाश्चैवलोहचूर्णंचचीवरं १८
स्पृशन्ननामिकाग्रेणक्वचिदालोकयन्नपि
अनुमंत्रणीयंसर्वंप्रसदेवमनुमंत्रयेत् १९
इतिकात्यायनस्मृतौअष्टाविंशतितमःखंडः
क्षालनंदर्भकूर्चेनसर्वत्रस्त्रोतसांपशोः
तूष्णीमिच्छाक्रमेणस्यादपार्थंप्राणदारुणी १

छोटे कर्मों का जो विघात (नाश) है उसे बहुत ऋषि बाध कहते हैं जैसे प्राण संमित (शक्ति के अनुसार) इत्यादि वसिष्ठ ऋषि का कहा बाधित (बाध) है १६

जहां वचनों का परस्पर विरोध हो वहां बहुत ऋषियों का वचन प्रमाण होता है और जहां दोनों में तुल्य प्रमाण हों वहां यह न्याय कहा है—१७

कि हाथ के तल को त्रैयंबक—और अपपों (पडे) को मंडक—और ढाकों को गोलक—और लोहे के चूर्ण को चीवर कहते हैं १८

इनका अनामिका के अगभाग से स्पर्श करता हुआ वा किसी कर्म में इन को देखता हुआ भी सब कर्मों में मंत्र पढै और सदा इसी प्रकार पढै—१९

२८ खंड पूर्ण हुआ

सप्ततावन्मूर्धन्यानितथास्तानचतुष्टयं
नाभिःश्रोणिरपानंचगोस्रोतांसिचतुर्दश २
क्षुरोमांसावदानार्थःकृत्स्नास्विष्टकृदावृता
वपामादायजुहुयात्तत्रमंत्रं समापयेत् ३
हृज्जिह्वाक्रोडमस्थीनियकृद्वृक्कौगुदंस्तनाः
श्रोणिस्कंधसटापार्श्वेपश्वंगानिप्रचक्षते ४
एकादशानामंगानामवदानानिसंख्यया
पार्श्वस्यवृक्कसक्थ्नोश्चद्वित्वादाहुश्चतुर्दश ५
चरितार्थाश्रुतिःकार्य्यायस्मादप्यनुकल्पशः

पशु के स्रोतों को दर्भ [कुशा] के कूचे [कूची] से धोवेबिना मंत्रमौन होकर अपनी इच्छानुसार के क्रमसे अर्थात् चाहै जिस स्रोत को पहिले धोवे वपाके लिये जो वपा श्रपणी काठ है १

गोके ये चोदह स्रोत हैं सात तो ऊपर के चार थन— नाभी (डोंडी) योनी और गुदा २

मांस के निकासने का छुराहोता स्विष्ट है से सब आवृत् कृत्से जो वपाहै उसे लेकर होम करै और उस समय मंत्र को समाप्त करै अर्थात् फिर न पढै ३

पशु के ये अंग होते हैं हृदा—जिह्वा—छाती—हाड़—विष्टावृक्ष गुदा—स्तन—श्रोणी—स्कंध—औरसटा(ठांट)—केदोनोंपार्श्व ४

इन ग्यारह अंगों की संख्या से ग्यारह अवदान होते हैं और पार्श्व वृक्ष [अंड कोश] और सक्थी [हड्डी] ये दो २ होते हैं इससे पशु के चोदह अंग कहे हैं ५

जिसमें कल्प२ श्रुति को चरितार्थ करना है इस जगह

अतोऽष्टर्च्चेनहोमःस्यच्छागपक्षेचरावपि ६
अवदानानियावन्तिक्रियेरन्प्रस्तरेपशोः
तावंतपायसान्पीडान्यश्वभावेपिकारयेत् ७
ऊहनव्यंजनास्त्वंतुपश्वभावेऽपिपायसं
मद्रवंश्रपयेतद्वदन्वष्टवयेऽपिकर्म्मणि
प्राधान्यंपिंडदानस्यकेचिदाहुर्मनीषिणः
गयादौपिंडमात्रस्यदीयमानत्वदर्शनात् ६
भोजनस्यप्रधानत्ववदंत्यन्येमहर्षयः
ब्राह्मणस्यपरीक्षायांमहायत्नप्रदर्शनात् १०
आमश्राद्धविधानस्यविनापिंडैःक्रियाविधिः
तदालब्ध्याध्यनध्यायविधानश्रवणादपि ११

[अष्टगा) की चरु में भी आठ ऋचाओं से होम होता है ६

पशु के प्रस्तर (यज्ञ) में जितने अवदान किये जांय उतने ही पायस खीर के पिंड देदे जो पशु नहो तब ७

ऊहन जो व्यंजन कहा जाता है वह भी पशु के अभाव में पायस का होता है और अन्वष्टका के कर्म में उस पायस को सद्रव ढीला पकावे ८

और कोई विद्वान् पिंडदान को ही प्रधान कहते हैं क्योंकि गया आदि तीर्थों में पिंड ही दिया जाता है ६

कोई ऋषि भोजन को ही मुख्य कहते हैं क्योंकि ब्राह्मण की परीक्षा में श्राद्ध में बहुत प्रयत्न देखा गया है १०

आम श्राद्धका विधान यहहैकिबिना पिंडही कर्म करनाश्रेष्ठहै क्योंकि ब्राह्मणके मिलनेपरभीअनध्यायकीविधिशास्त्रसेसुनं है ११

विद्वन्मतमुपादायममाप्येतद्धृदिस्थितं
प्राधान्यमुभयोर्यस्मात्तस्मादेषसमुच्चयः १२
प्राचीनावीतिनाकार्य्यंपित्र्येपुप्रोक्षणंपशोः
दक्षिणोद्वासनान्तंचचरोर्निर्वपणादिकं १३
सन्नयश्चावदानानांप्रधानार्थोनहीतरः
प्रधानहवनचैवशेषंप्रकृतिवद्भवेत् १४
द्वीपमुन्नतमाख्यातंशादाचैवेष्टकास्मृता
कीलिनसजलंप्रोक्तंदूरखातोदकोमरुः १५
द्वारेगवाक्षस्तम्भैःकर्दमभित्यन्तकोणवेधैश्च
नेष्टंवास्तुद्वारंविदमनाक्रांतमार्य्यैश्च १६

बिद्वानों के मत को जानकर मेरेभी हृदय में यही है क्योंकि जिससे दोनों को प्राधान्य (मुख्यता) है जिससे यह समुच्चय अर्थात् भोजन और श्रेष्टताआश्रद्दे नोंहोने चाहियें १२
पितरोंके कर्म में पशुका प्रोक्षण(मंत्रोंसेछिड़कना)अपसव्यहोकर करै और दक्षिणा देने तक चरुका देना भीअपसव्य से करै १३
अवदानों का सन्नय (सन्निधि में करना) भी और प्रधान होम ये दोनों प्रधान कर्म के लिये अन्य नहीं और शेष कर्म प्रकृति यज्ञ के समान होता है १४
ऊंचे को द्वीप कहते हैं और इसका इंटों का शादा—और जल सहित को कीलिन और दूर खोदने से जल निकसे उसे मरु मार वाड़ कहते हैं १५
ऐसा घरका द्वार इष्ट (अच्छा) नहीं होता जिसमें गवाक्ष खिड़की हों और कर्दम गारा की जिसकी भीत हो कोण का जिसमें वेध हों अथवा जिसमें सज्जन नहीं हों १६

वशंगमाविति व्रीहींश्च्छंस्वश्चेतियवांस्तथा
असावित्यत्रनामोक्त्वाजुहुयात्क्षिप्रहोमवत् १७
साक्षतंसुमनोयुक्तमुदकंदधिसंयुतम्
अर्घ्यंदधिमधुभ्यांचमधुपर्कोविधीयते १८
कांस्येनैवार्हणीयस्यनिनयेदर्घ्यमंजलौ
कांस्यापिधानंकांस्यस्थंमधुपर्कंसमर्पयेत् १६
इतिकात्यायनस्मृतौएकोनत्रिंशत्तमःखंडः २६
इतिकात्यायनविरचितेकर्मप्रदीपेतृतीयःप्रपाठकः
समाप्तेयंकात्यायनसंहिता शुभंभूयात्

वशंगमौ० इस मंत्र से ब्रीहि और छंस्वश्च इस मंत्र से जौं का क्षिप्रहोम के समान होम करे परंतु जो मंत्र में असौपद है वहां जो नाम हो उसे कहे १७.

अक्षत-फल-जल-दही जिसमें हो वह अर्घ होता है और दही दूध जिसमें हों उसे मधुपर्क कहते हैं १८

जिस अपने पूजने योग्य को अर्घ देना हो उसकी अंजलि में कांसी के पात्र से अर्घ दे -और कांसी के पात्र से ढके हुए कांसी के पात्र में रखकर मधुपर्क दे १६

२६ खंड पूरा हुआ

इति कात्यायन ऋषि की रचे कर्म के प्रदीप में तीसरा प्रपाठक पूरा हुआ

इति कात्यायन स्मृति समाप्त

श्रीगणेशायनम अथ बृहस्पति स्मृतिप्रारंभः

इष्ट्वाक्रतुशतंराजासमाप्तवरदक्षिणं
भगवंतगुरुं श्रेष्ठंपर्यपृच्छद्बृहस्पतिं १
भगवन्केनदानेनसर्वतःसुखमेधते
यदक्षयंमहार्थंचतन्मेब्रूहिमहत्तम २
एवमिंद्रेणपृष्टोसौदेवदेवपुरोहितः ४
सुवर्णरजतंवस्त्रंमणिरत्नंचवासव
सर्वमेवभवेद्दत्तंवसुधांयःप्रयच्छति ५
फालकृष्टांमहींदत्वासबीजांसस्यमालिनीं
यावत्सूर्यकृतालोकास्तावत्स्वर्गेमहीयते ६

और श्रेष्ठ दक्षिणा जिनमें ऐसी सौ यज्ञों को समाप्त करके भगवान् और उत्तमगुरु बृहस्पति जी को इंद्र ने पूछा १

कि हे भगवन् किस दान से सब जगे सुख होता है और जिस दान का अक्षय और महान् फल हैं उस दान को हे बड़ों में बड़े मुझे कहो २

इस प्रकार इन्द्र ने पूछा है जिनको ऐसे इन्द्र के पुरोहित और वाणी के पति और महान् विद्वान् बृहस्पति बोले कि ३

हे इन्द्र सोना—पृथ्वी—गौ— इनको जो देता है वह सब पापों से छूटता है ४

जो हे इन्द्र मनुष्य वसुधा (पृथ्वी को देता है उसने सोना—चांदी—वस्त्र—मणि—रत्न ये सब दिये ५

हलसे जुती—और जिसमें बीज पड़ा हो और खेत को जिसमें शोभायमान हो ऐसी पृथ्वी को देकर इतने स्वर्ग में रहता है जब तक सूर्य का जगत् में प्रकाश है ६

यत्किंचित्कुरुतेपापंपुरुषोवृत्तिकर्शितः
अपिगोचर्ममात्रेणभूमिदानेनशुद्ध्यति ७
दशहस्तेनदंडेनत्रिंशद्दंडान्निवर्त्तनं
दशतान्येवविस्तारोगोचर्मैतन्महाफलम् ८
सवृषंगोसहस्रंतुयत्रतिष्टत्यतंद्रितं
बालवत्साप्रसूतानांतद्गोचर्मइतिस्मृतं ९
विप्रायदद्याच्चगुणान्विताय तपोनियुक्ताय जितेंद्रियाय
यावन्महीतिष्ठतिसागरांतातावत्फलंतस्यभवेदनंतं १०
यथाबीजानिरोहंतिप्रकीर्णानिमहीतले
एवंकामाःप्ररोहंतिभूमिदानसमर्जिताः ११

आजीविका से दुःखी मनुष्य जो पाप करता है वह मनुष्य गौ के चर्म की बराबर पृथ्वी को देकर शुद्ध होजाता है ७

दश हाथ के दंड से तीस दंड भर जिसकी लंबाई और चौड़ाई हो यह महान् फल का देने वाला गोचर्म होता है ८

जहां हजार गौ और बैल आनंद से टिकें और उन गौओं में जो प्रसूता (ब्यानी) हो उनके बाल बछड़े भी टिके उसे गो चर्म कहते हैं ९

जो इस पृथ्वी को ऐसे ब्राह्मण को दे जो गुणी हो—तपस्वी हो जितेंद्री हो - उस पुरुष को समुद्र तक पृथ्वी इतने रहेगी तब तक अनंत फल होता है १०

जैसे पृथ्वी के तल पर प्रकीर्ण (बोये) हुए बीज जमते हैं ऐसे पृथ्वी के दान से संचय किये सब काम (इच्छा) जमते हैं ११

यथाप्सुपतितःशक्रतैलबिंदुःप्रसर्पति
एवंभूमिकृतंदानंसस्येसस्येप्ररोहति १२
अन्नदाःसुखिनोनित्यंवस्त्रदश्चैवरूपवान्
सनरःसर्वदोभूपयोददातिवसुंधरां १३
यथागौर्भरतेवत्संक्षीरमुत्सृज्यक्षीरिणी
स्वयंदत्तासहस्राक्षभूमिर्भरतिभूमिदं १४
शंखभद्रासनछत्रं वरस्थावरवारणाः
भूमिदानस्यपुण्यानिफलंस्वर्गःपुरंदर १५
आदित्योवरुणोवन्हिर्ब्रह्मासोमोहुताशनः
शूलपाणिश्चभगवानभिनंदतिभूमिदं १६

हे इन्द्र जैसे जल में पड़ी तेल की बूंद फैलती है ऐसे किया हुआ भूमि का दान खेत २ में जमता है १२

अन्न का दाता सदा सुखी—वस्त्र का दाता रूपवाला—होता है और वह मनुष्य सदैव राजा होता है जो पृथ्वी को देता है १३

जैसे दूध देती गौ दूध को छोड़(झरना)कर बछड़े को तृप्त करती है हे इन्द्र ऐसे ही अपने हाथ से दी पृथ्वी भी अपने दाता को पुष्ट करती है १४

शंख—और भद्रासन (राज गद्दी) छत्र—चवर—उत्तम हाथी हे इन्द्र ये पृथ्वी के दान के पुण्य हैं और स्वर्ग फल है १५

सूर्य-वरुण-अग्नि-ब्रह्मा-चंद्रमा-होम की अग्नि-और शिव और विष्णु-ये पृथ्वी के दाता की प्रशंसा करते हैं १६

आस्फोटयंतिपितरःप्रवल्गंतिपितामहाः
भूमिदाताकुलेजातःसचत्राताभविष्यति १७
त्रीण्याहुरतिदानानिगावःपृथ्वीसरस्वती
तारयंतीहदातारंजपवापनदोहनैः १८
प्रावृतावस्त्रदायांतिनग्नायांतिववस्त्रदाः
तृप्तायांत्यन्नदातारःक्षुधितायांत्यनन्नदाः १६
कांक्षंतिपितरःसर्वेनरकाद्भयभीरवः
गयांयास्यतियःपुत्रसनस्त्राताभविष्यति २०
एष्टव्याबहवःपुत्रायद्येकोपिगयांव्रजेत्
यजेतवाश्वमेधेननीलंवावृषमुत्सृजेत् २१

पितर भुजाओं को हाथ से मल्लों के समान बजाते हैं और पितामह भली प्रकार आनंद का यद्ध करते हैं कि हमारे कुल में पृथ्वी का दाता जन्मा है वही हमारी रक्षा करने वाला होगा १७

गौ पृथ्वी और विद्या ये तीन महादान हैं ये तीनों दाता को क्रमसे दुहना—बोना—और जपकरना इनसें तारती हैं १८

वस्त्र के दाता वस्त्र से ढ़के हुये—और जिन्होंने वस्त्र नहीं दिये वे नंगे और अन्न के दाता तृप्त हुए—और जिन्होंने अन्न नहीं दिया वे भूखे—जाते हैं १६

नरक के भय से डरते पितर यह वांच्छा करते हैं कि जो पुत्र गया में जायगा वही हमारी रक्षा करने वाला होगा २०

बहुत से पुत्रों की इच्छा करै परंतु उनमें एकतो अवश्य गया को जाय वा अश्वमेध यज्ञ करै वा नील बैल से वृषोत्सर्गकरै २१

लोहितोयस्तुवर्णोनपुच्छाग्रेयस्तुपांडुरः
श्वेतःखुरविषाणाभ्यांसनीलोवृषउच्यते २२
नीलःपांडुरलांगुलस्तृणमुद्धरतेतुयः
षष्टिवर्षसहस्राणिपितरस्तेनतर्पिताः २३
यस्यशृङ्गगतंपंकंकूलात्तिष्ठतिचोद्धृतं
पितरस्तस्यचाश्नंतिसोमलोकंमहाद्युतिम्२४
पृथोर्यदोर्दिलीपस्यनृगस्यनहुषस्यच
अन्येषांचनरेंद्राणांपुनरन्योभविष्यति २५
बहुभिर्वसुधायत्ताराजभिःसगरादिभिः
यस्ययस्ययथाभूमिस्तस्यतस्यतथाफलम् २६

उसे नील बैल कहते हैं जिसका रंग लाल हो—और जो पुंछ के अग्रभाग में पीला हो—और सींग जिसके सपेद हैं। २२

नील जिसका रंग हो पीली जिसकी पुंछ हो और जो तृणों को उखाड़ सके ऐसे बैल के दान से साठ हजार वर्ष तक पितर तृप्त होते हैं २३

कूल से उखाड़ा हुआ पंक (कीच) जिसके सींग पर टिके ऐसे बैल के दाता के पितर प्रकाश मान चंद्रमा के लोक को भोगते हैं २४

पृथ—यदु—दिलीप—नृग—नहुष—और इतर राजाओं में फिर मरे पीछे अन्यही राजा होता है २५

बहुतसे सगर आदि राजाओं ने पृथिवी भोगी जिस२को जैसी २ पृथ्वी हुई उस २ को वैसा २ ही फल हुआ २६

यस्तुब्रह्मघ्नस्त्रीघ्नोवायस्तुवैपितृघातकः
गवांशतसहस्राणांहंताभवतिदुष्कृतो २७
स्वदत्तांपरदत्तांवायोहरेतवसुंधराम्
श्वविष्ठायांकृमिर्भूत्वापितृभिःसहपच्यते २८
आक्षेप्ताचानुमंताचतमेवनरकंव्रजेत्
भूमिदोभूमिहर्ताचनापरपुण्यपापयोः २९
ऊर्ध्वंच धोवतिष्ठेतयावदाभूत संप्लवं
अग्नेरपत्यंप्रथमंसुवर्णंभूर्वैष्णवीसूर्यसुताश्चगावः
लोकास्त्रयस्तेनभवतिदत्तायःकांचनंगांचमहींददद्यात्
षडशीतिसहस्राणांयोजनानांवसुंधरा ३१

जो ब्रह्म हत्यारा—और स्त्री को मारने वाला है—वह पापी लक्ष गौओं को मारने वाला होता है २७

और जो अपनी वा पराई दी हुई पृथ्वी को छीन लेता है वह कुत्ते की विष्ठा में कीड़ा होकर पितरों सहित पकाया जाता है २८

मारने वाला और अनुमति देने वाला एक ही नरक में जाते हैं पृथ्वी का दाता और पृथ्वी का हरने वाला अपने २ पुण्य वा पाप से २९

क्रमसे स्वर्ग में वा नरक में प्रलय पर्यंत टिकते हैं—अग्नि का प्रथम पुत्र सोना है और पृथ्वी विष्णु की पुत्री है और सूर्य की पुत्री गौ हैं ३०

जो पुरुष सोना गौ पृथ्वी इनको देता है उसने मानो तीनों लोक दिये छासी हजार योजन पृथ्वी ३१

स्वयंदत्तातुसर्वत्रसर्वकामप्रदायिनी
भूमियःप्रतिगृह्णातिभूमिंयश्चप्रयच्छति ३२
उभौतौपुण्यकर्माणौनियतंस्वर्गगामिनौ
सर्वेषामेवदानानामेकजन्मानुगंफलम् ३३
हाटकक्षितिगौरीणांसप्तजन्मानुगंफलम्
योनहिंस्यादहंह्यात्माभूतग्रामंचतुर्विधं ३४
तस्यदेहाद्वियुक्तस्यभयंनास्तिकदाचन
अन्यायेनहृताभूमिर्यैर्नरैरपहारिता ३५
हरंतोहारयंतश्चहन्युस्तेसप्तमंकुलं
हरतेहारयेद्यस्तुमंदबुद्धिस्तमोवृतः ३६
सबद्धोवारुणैःपाशैस्तिर्यग्योनिषुजायते

जिसने दी है वह पृथ्वी उसको सब कामना देती है जैसे पृथ्वी का दान लेता है और जो पृथ्वी को देते हैं ३२
वे दोनों पुण्यात्मा निरंतर स्वर्ग में जाते हैं सब दानों का फल एकही जन्म में मिलता है ३३
सोना—पृथ्वी—गौ इनका फल सात जन्म तक मिलता है—जो पुरुष मैं सबका आत्माहुं ऐसे समझ कर चार प्रकार (अंडज स्वेदज उद्भिज जरायुज)के भूतों को दुःख नहीं देता ३४
देह से जुदे हुए उस जीवात्मा को कभी भी भय नहीं होता जिन मनुष्यों ने अन्याय से पृथ्वी छीनी वा छिनवाई है ३५
वे दोनों छीनने और छिनवाने वाले सात कुलों को नष्ट कारते हैं जो मंद बुद्धि और अज्ञानी हरता है वा हरवाता है ३६
वह वरुण के फांसमें बंधा हुआ तिरछी (सूर्पआदि) योनि

असुभिःपतितैस्तेषांदानानामवकीर्तनं ३७
ब्राह्मणस्यहृतेक्षेत्रेहंतित्रिपुरुषंकुलं
वापीकूपसहस्रेणअश्वमेधशतेनच ३८
गवांकोटिप्रदानेनभूमिहर्तानशुद्ध्यति
गामेकांस्वर्णमेकंवाभूमेरप्यर्धमंगुलं ३९
हरन्नरकमायातियावदाभूतसंप्लवं
हुतंदत्तंतपोधीतयत्किंचिद्धर्मसंचितम् ४०
अर्धांगुलस्यसीमायांहरणेनप्रणश्यति
गोवीथींग्रामरथ्यांचश्मशानंगोपितंतथा ४१
संपीड्यनरकंयातियावदाभूतसंप्लवम्
ऊषरेनिर्जलेस्थानेप्रास्तंसस्यंविवर्जयेत् ४२

थों में पैदा होता है क्योंकि उनकी आंशु गिरने से दान भी नष्ट होजाते हैं ३७

ब्राह्मण के खेत को जो हरता है उसकी तीन पीढी नष्ट होती हैं हजार बावड़ी और कूपों के बनाने से औरसौ अश्वमेध यज्ञ करने से ३८

और एक किरोड़ गौओं के देने से भी पृथ्वी के हरने वाला शुद्ध नहीं होता एक गौ एक सोना (असरफी) और पृथ्वी का आधा अंगुल इनके ३९

हरने से प्रलय तक नरक में आता है होम दान तप पढना और जो धर्म से इकट्ठा किया है वह सब ४०

आध अंगुल की सीम हरने से नष्ट होजाता है—गौओं का मार्ग—ग्राम की गली श्मशान और गोपित(रक्खाहुआखेत)४१

जलाधारस्यकर्त्तव्योव्यासस्यवचनंयथा
पंचकन्यान्तंहंतिदशहंतिगवान्तं ४३
शतमश्वान्तंहंतिसहस्त्रंपुरुषान्तं
हंतिजातानजातांश्चहिरण्यार्थेन्तंवदन् ४४
सर्वंभूम्यन्तंहंतिमास्मभूम्यन्तंवदी
ब्रह्मस्वेनरतिंकुर्यात्प्राणैःकंठगतैरपि ४५
अनौषधमभैषज्यंविषमेतद्धलाहलं
नविषंविषमित्याहुर्ब्रह्मस्वंविषमुच्यते ४६

इनके पीड़ने (तोड़ना) से प्रलय तक नरक में जाता है ऊषर और जहां जल न हो वहां खेत न बोवे ४२

जहां जल हो वहां व्यास जी के वचन के अनुसार खेत करना—कन्या के निमित्त झूठ बोलने में पांचको और गौके निमित्त झूट बोलने में दश को ४३

घोड़ के निमित्त बोलने में सौ को और पुरुष के निमित्त झट बोलने में हजार को मारता है और सोने के निमित्त झूट बोलने में जो पैदा हुए हैं और जो पैदा होंगे उन सबको मार ता है ४४

और पृथ्वी के निमित्त झूठ बोलने में सबको मारता है इससे पृथवी के निमित्त झूठ मत बोल—चाहैं प्राण कंठ में आजांय परंत ब्राह्मण के धन में प्रीति न करै अर्थात् लेने की इच्छा न करै ४५

यह ब्राह्मण का धन ऐसा हलाहल विष है जिसकी औषधि और चिकित्सा नहीं है क्योंकि बुद्धिमान् यह कहे हैं कि वष विषनहीं है किन्तु ब्राह्मण का धन बिष है ४६

विषमेकाकिनंहंतिब्रह्मस्वंपुत्रपौत्रकं
लोहचूर्णाश्मचूर्णंचविषंचजरयेन्नरः ४७
ब्रह्मस्वंत्रिषुलोकेषुकःपुमान्जरयिष्यति
मन्युप्रहरणाविप्राराजानःशस्त्रपाणयः ४८
शस्त्रमेकाकिनंहंतिब्रह्ममन्युःकुलत्रयं
मन्युप्रहरणाविप्राचक्रप्रहरणोहरिः ४९
चक्रात्तीव्रतरोमन्युस्तस्माद्विप्रन्नकोपयेत्
अग्निदग्धाप्ररोहंतिसूर्यदग्धास्तथैवच ५०
मन्युदग्धस्यविप्राणामंकुरोनप्ररोहति
तेजसाग्निश्चदहतिसूर्योदहतिरश्मिना ५१

विष एककोही मारता है और ब्राह्मण का धन पुत्र और पौत्रों को भी मारता हैं—लोहे और पत्थर काचूर्ण विष इनको भी मनुष्य पचा सकता है ४७

तीनों लोकों में ऐसा कौन पुरुष है जो ब्राह्मण के धनको पचासके—ब्राह्मणोंका शस्त्र क्रोधहै राजाओंके हाथ मेंशस्त्रहै४८

शस्त्र एककोही मारता है और ब्राह्मण का मन्य तीन कुल को नष्ट करता है ब्राह्मणों का प्रहार (शस्त्र) क्रोध है और बिष्णु का प्रहार चक्र है ४९

चक्र से क्रोध बड़ा पैना है तिससे ब्राह्मण को क्रोध न करावे अग्नि और सूर्य के जले भी जम आते हैं ५०

और ब्राह्मणों के क्रोध से दग्ध हुयों का अंकुर भी नहीं जमता अग्नि अपने तेज से और सूर्य अपनी किरणों से दग्ध करते हैं ५१

राजादहतिदंडेनविप्रोदहतिमन्युना
ब्रह्मस्वेनतुयत्सौख्यंदेवस्वेनतुयारतिः ५२
तद्धनंकुलनाशायभवत्यात्मविनाशनं
ब्रह्मस्वंब्रह्महत्याचदरिद्रस्यचयद्धनम् ५३
गुरुमित्रहिरण्यंचस्वर्गस्थमपिपीडयेत्
ब्रह्मस्वेनतुयच्छिद्रंतच्छिद्रं नप्ररोहति ५४
प्रच्छादयतितच्छिद्रमप्यत्रतुविसर्पति
ब्रह्मस्वेनतुपुष्टानिसाधनानिबलानिच ५५
संग्रामेतानिलीयंतेसिकतासुयथोदकं
श्रोत्रियायकुलीनायदरिद्रायचवासव ५६

राजा दंड से और ब्राह्मण क्रोध से दग्ध करता है—ब्राह्मण के धन से जो सुख होता है और देवता के धन से जो रति (क्रीड़ा) होती हैं ५२

वह धन कुल और आत्मा को नष्ट करता है—ब्राह्मण की धन ब्राह्मण की हत्या और दरिद्र का धन ५३

गुरु और मित्र का सुवर्ण ये स्वर्ग में रहते को भी दुखी करते हैं और ब्राह्मण के धन से जो छिद्र (दोष) वह नहीं मिटता ५४

जो उस छिद्र को छिपाता है तो भी वह फैलता है ब्राह्मण के धन से पुष्ट हुए साधन (कारण) और सेना ५५

वे संग्राम में ऐसे लीन होते हैं जैसे रेत में जल हे इन्द्र कुलीन और दरिद्री वेद पाठी ब्राह्मण को ५६

संतुष्टायविनीतायसर्वभूतहितायच
वेदाभ्यासस्तपोज्ञानमिंद्रियाणांचसंयमः ५७
ईदृशायसुरश्रेष्ठयद्दत्तंह्यितदक्षयं
आमपात्रेयथान्यस्तंक्षीरंदधिघृतमधु ५८
विनश्येत्पात्रदौर्बल्यात्तच्चपात्रंविनश्यति
एवंगांचहिरण्यंचवस्त्रमन्नंमहीतिलान् ५९
अविद्वान्प्रतिगृह्णातिभस्मीभवतिकाष्टवत्
यस्यचैवगृहेमूर्खोदूरेचापिबहुश्रुतः ६०
बहुश्रुतायदातव्यंनास्तिमूर्खेव्यतिक्रमः
कुलंतारयतेधीरःसप्तसप्तचवासव ६१

और वह संतोषी हो नम्र हो और सब भूतों का हित कारी भी हो और जो वेद का अभ्यासी हो और तपस्वी हो और जो इंद्रियों को रोकता हो ५७

हे देवताओं में उत्तम जिसने ऐसे को दिया वह दान अक्षय होता है कच्चे पात्र में रक्खा दूध-पृथ्वी-दही घी सहत जैसे ५८

पात्र की दुर्बलता से नष्ट होता है और वह पात्र भी नष्ट होता है इसीप्रकार गौ सुवर्ण—वस्त्र—पृथ्वी—तिल इनको ५९

जो मूर्ख लेता है वह काष्ठ के समान भस्म होता है— जिस पुरुष के घरमें मूर्ख और बहुश्रुत (पंडित) दूर है ६०

तो पंडित को दे कुछ मूर्खका अवलंघन नहीं होता और पंडित को देनेसे हे इंद्र वह अपने इक्कीस कुलों को तारता है ६१

यस्तडागंनवंकुर्यात्पुराणंवापिखानयेत्
ससर्वंकुलमुद्धृत्यस्वर्गलोकेमहीयते ६२
वापीकूपतडागानिउद्यानोपवनानिच
पुनःसंस्कारकर्ताचलभतेमौलिकंफलं ६३
निदाघकालेपानीयंयस्यतिष्ठतिवासव
सदुर्गंविषमंकृत्स्नंनकदाचिदवाप्नुयात् ६४
एकाहंतुस्थितंतोयंपृथिव्यांराजसत्तम
कुलानितारयेत्तस्यसप्तसप्तपराण्यपि ६५
दीपालोकप्रदानेनवपुष्मान्सभवेन्नरः
प्रेक्षणीयप्रदानेनस्मृतिंमेधांचविंदति ६६

जो पुरुष नया तालाव बनाता है वा पुराणे को खुदवाता है वह सब कुल का उद्धार करके स्वर्ग में पूजता है ६२

वावड़ी - कूप - तड़ाग—बाग—और उपवन (छोटा बगीचा) इन को जो फिर संस्कार करता है वह नये बनाने के फल को प्राप्त होता है ६३

उष्ण (गरमी) काल में जिसके यहां जल रहता है वह कठोर जो सब दुर्ग (दुख) इन को कभी नहीं भोगता है ६४

जिसकी खोदी पृथवी में जल एक दिन भी जल टिकता है हे राजाओं में उत्तम वह अगलेभी अपने सात कुलों को तारता है ६५

दीपक के देने से सुंदर शरीर वाला मनुष्य होता है और जल के दान से स्मरण और वुद्धि को प्राप्त होता है ६६

कृत्वापिपापकर्माणियोदद्यादन्नमर्थिने
ब्राह्मणायविशेषेणनसपापेनलिप्यते ६७
भूमिर्गावस्तथादाराःप्रसह्यह्रियतेयदा
नचावेदयतेयस्तुतमाहुर्ब्रह्मघातकं ६८
निवेदितश्चराजावैब्राह्मणैर्मन्युदीपितैः
ननिवारयतियस्तुतमाहुर्ब्रह्मघातकं ६९
उपस्थितविवाहेचयज्ञेदानेचवासव
मोहाच्चरतिविघ्नंयःसमृतोजायतेकृमिः ७०
धनंफलतिदानेनजीवितजीवरक्षणात्
रूपमारोग्यमैश्वर्यमहिंसाफलमश्नुते ७१
फलमूलाशनात्पूज्यंस्वर्गःसत्येनलभ्यते

निंदित कर्म करके भी जो अभ्यागत को और विशेष कर ब्राह्मण को अन्न देता है वह पाप से नहीं लिपता ६७

जो पुरुष बलसे पृथवी—गौ और स्त्री इनको हरता है और कहता नहीं उसको ब्रह्महत्यारा कहते हैं ६८

क्रोध से दपित ब्राह्मणों की प्रार्थना से जो राजा उस हरने वाले को मने नहीं करता उसको ब्रह्महत्यारा कहते हैं ६९

विवाह—दान—यज्ञ इनके समय में जो मोहसे विघ्न करता है वह मरने के अनन्तर कीड़ा होता है ७०

दान से धन और जीव की रक्षा से जीवन फलता (बढता) है वह रूप आरोग्य ऐश्वर्य ये जो हिंसा न करने के फल हैं इनको भोगता है ७१

फल और मूल जो खाता है वह पूजा को और सत्य से

प्रायोपवेशनाद्राज्यंसर्वंचसुखमश्नुते ७२
गवाढ्यःशक्रदीक्षायाःस्वर्गगामीतृणाशनः
स्त्रियस्त्रिषवणस्नायीवायुंपीत्वाक्रतुंलभेत् ७३
नित्यस्नायीभवेदेकःसंध्यद्वेचजपन्द्विजः
नवंसाधयतेराज्यंनाकपृष्ठमनाशक ७४
अग्निप्रवेशेनियतंब्रह्मलोकेमहीयते
रसनाप्रतिसंहारेपशून्पुत्रांश्चविंदति ७५
नाकेचिरंसवसतेउपवासीचयोभवेत्
सततंचैकशायथिःसलभेदीप्सितांगतिं ७६
वीरासनंवीरशय्यांवीरस्थानमुपाश्रितः

स्वर्ग को प्राप्त होता है और मरण के निमित्त तीर्थ आदि पर बैठने से राज्य और संपूर्ण सुखों को भोगता है ७२

हे इन्द्र मंत्र के उपदेश लेने से मनुष्य गौओं से युक्त होता है और जो तृणों को खाता है वह स्वर्ग को प्राप्त होता है तीन काल में जो स्नान करता है वह स्त्रियों को प्राप्त होता है औरवायु को जो पीता है वह यज्ञ के फल को प्राप्तहोता है ७३

जो मनुष्य नित्य स्नान करता है और दानों संध्याओं में जप करता है वह सूर्य रूप है और जो अनशन व्रत करता है वह नये राज्य और सदैव स्वर्ग वास को प्राप्त होता है ७४

जो अग्नि में प्रवेश करता है वह ब्रह्मलोक में पूजता है जो अपनी जिह्वा को वश में रखता है वह पशु और पुत्रों को प्राप्त होता है ७५

जो उपवास करता है वह चिरकाल तक स्वर्ग में वसता

अक्षय्यास्तस्यलोकाःस्युःसर्वकामागमास्तथा ७७
उपवासंचदीक्षांचअभिषेकंचवासव
कृत्वाद्वादशवर्षाणिचिरस्थानाद्विशिष्यते ७८
अधीत्यसर्ववेदान्वैसद्योदुःखात्प्रमुच्यते
पावनंचरतेधर्मंस्वर्गलोकेमहीयते ७९
बृहस्पतिमतंपुण्यंयेपठंतिद्विजातयः
चत्वारितेषांवर्द्धंतेआयुर्विद्यायशोबलं ८०
इतिश्री बृहस्पतिप्रणीतंधर्मशास्त्रंसमाप्तम्

है जो निरता एक शय्यापर सोता है अर्थात् एकही स्त्री को भोगे हैं वह जो गति चाहता है उसी को प्राप्त होता है ७६

जो वीर आसन—वीर शय्या—और वीर स्थान में टिकता हैं उसके सब लोक और सबकाम अक्षय होते हैं ७७

उपवास—दीक्षा—और अभिषेक इनको जो द्वादश १२ वर्ष तक करता है वह चिरस्थान (स्वर्ग आदि) में उत्तम होता है ७८

सब वेदों को पढकर शीघ्रही दुःख से छूटता है और जो पवित्र धर्म करता है वह स्वर्ग लोक में पूजता है ७९

बृहस्पति के पवित्र मतको जो द्विजाती पढते हैं उनकी अवस्था विद्या—यश—बल ये चारों बढते हैं ८०

इति बृहस्पति का रचा धर्मशास्त्र समाप्त हुआ

श्रीगणेशायनमः अथ पाराशरस्मृतिप्रारंभः
अथातोहिमशैलाग्रेदेवदारुवनालये
व्यासमेकाग्रमासीनमपृच्छन्नृषयःपुराः १
मानुषाणांहितंधर्मंवर्तमानेकलौयुगे
शौचाचारंयथावच्चवदसत्यवतीसुत २
तच्छ्रुत्वाऋषिवाक्यंतुसशिष्योऽग्न्यर्कसन्निभः
प्रत्युवाचमहातेजाःश्रुतिस्मृतिविशारदः ३
नचाहंसर्वतत्वज्ञःकथंधर्मंवदाम्यहं
अस्मत्पितैवप्रष्टव्यइतिव्यासःसुतोवदत् ४
ततस्तेऋषयसर्वेधर्मतत्वार्थकांक्षिणः
ऋषिंव्यासंपुरस्कृत्यगतावदरिकाश्रमं ५

इसके अनंतर देवदारु वृक्षों का है वन जिसमें ऐसे हिमालय पर्वत के ऊपर एकाग्र बैठे हुए व्यासजी को पहिले कभी ऋषियों ने पूछा १

वर्तमान कलियुग में मनुष्यों का हितकारी धर्म और शौच और आचार हे सत्यवती के पुत्र कहो २

उस ऋषियों के वाक्य को सुन कर शिष्यों समेत और अग्नि और सूर्य के तुल्य—बड़े तेजवाले और श्रुति और स्मृति में चतुर व्यासजी ऋषियों के प्रति बोले ३

कि मैं सब तत्वों को नही जानता कैसे धर्म को कहूंगा—हमारे पिता को ही पूछो यह पाराशर के पुत्र व्यास ने कहा ४

तिसके अनंतर धर्म के तत्व को चाहते वे सब ऋषि व्यास ऋषि को आगे लेकर ऐसे बदरिका आश्रम में गये ५

नानापुष्पलताकीर्णंफलपुष्पैरलंकृतं
नदीप्रस्रवणोपेतंपुण्यतीर्थोपशोभितं ६
मृगपक्षिनिनादाढ्यं देवतायतनावृतं
यक्षगंधर्वसिद्धैश्चनृत्यगीतैरलंकृतं ७
तस्मिन्नृषिसभामध्येशक्तिपुत्रंपराशरं
सुखासीनंमहातेजामुनिमुख्यगणावृतं ८
कृतांजलिपुटोभूत्वाव्यासस्तुऋषिभिःसह
प्रदक्षिणाभिवादैश्चस्तुतिभिःसमपूजयत् ९
अथसंतुष्टहृदयःपराशरमहामुनिः
आहसुस्वागतंब्रूहीत्यासीनोमुनिपुंगवः १०

जो नाना प्रकार के पुष्प और लता से युक्त है और फल फूलों से शोभाय मान है—नदीयों के झरनो से युक्त है—और पवित्र तीर्थों से जिसकी शोभा है ६

मृग और पक्षियों का जिसमें शब्द हैं और जिसमें देवताओं के मन्दिर हैं—और यक्ष—गंधर्व—सिद्ध—नृत्य और गीत इनसे जो शोभित है ७

तिस बद्रिका श्रम में ऋषियों की सभा के बीच सुखसे बैठे और मुनियों में जो मुख्य उनके समूह जिनके चारों ओर बैठे हैं ऐसे शक्ति के पुत्र पाराशर को—बड़े तेज वाले ८

ऋषियों समेत व्यासजीने हाथ जोड़ कर परिक्रमा—नमस्कार—और स्तुति से पूजा की ९

इसके अनंतर संतोष को प्राप्त है हृदय जिसका—और जो मुनियों में उत्तम हैं ऐसे बैठे हुए पाराशर महामुनि व्यास जी को बोलेकि तुम भलीप्रकारस्वागत(आनंदसे आना)कहो१०

कुशलंसम्यगित्युक्त्वाव्यासःपृच्छत्यनंतरं
यदिजानासिमेभक्तिंस्नेहाद्वाभक्तवत्सल ११
धर्मंकथयमेतातअनुग्राह्योस्म्यहंत्व
श्रुतामेमानवाधर्माःवासिष्ठाःकाश्यपास्तथा १२
गार्गीयागौतमीयाश्चतथाचोशनसास्मृताः
अत्रेर्विष्णोश्चसंवर्ताद्दक्षादंगिरसस्तथा १३
शतातपाच्चहारीतायाज्ञवल्क्यात्तथैवच
आपस्तंबकृताधर्माःशंखस्यलिखितस्यच १४
कात्यायनकृताश्चैवतथाप्राचेतसान्मुनेः
श्रुताह्येतेभवत्प्रोक्ताःश्रौतार्थामेनविस्मृताः १५

भलीप्रकार कुशल है यह कह कर पीछे से यह व्यासजी ने पूछा कि जो तुम मेरी भक्ति को जानते हो जिससे वा स्नेह से हे भक्त वत्सल (दयावाले) ११

हे पितः मुझे धर्म कहो और मैं आपके अनुग्रह करने योग्य हुं—मैंने मनु के कहे और वशिष्ठ के कहे और कश्यप के कहे धर्म सुने १२

और गर्ग के कहे—गौतम के कहे—और उशनाके कहे अत्रिके कहे—बिष्णुके कहे—संवर्त क कहे—दक्षके कहे और अंगिरा के कहे १३

और शातातपके कहे—हारीत के कहे—याज्ञवल्क्य के कहे—आपस्तंब के कहे—शंख के कहे और लिखित के कहे धर्म १४

और कात्यायन के कहे—प्राचेतस के कहे इतने धर्म मैंने सुने और उनके अर्थको भी मैं नहीं भूला १५

अस्मिन्मन्वंतरेधर्माकृतत्रेतादिकेयुगे
सर्वेधर्माकृतेजाताःसर्वेनष्टाःकलौयुगे १६
चातुर्वर्ण्यसमाचारंकिंचित्साधारणंवद
चतुर्णामपिवर्णानांकर्त्तव्यंधर्मकोविदैः १७
ब्रूहिधर्मस्वरूपज्ञसूक्ष्मंस्थूलंचविस्तरात्
व्यासवाक्यावसानेषुमुनिमुख्यःपराशरः १८
धर्मस्यनिर्णयंप्राहसूक्ष्मस्थूलंचविस्तरात्
वक्ष्यमाणधर्मतत्वग्रहणायश्रोतृसावधानतांविधत्ते
शृणुपुत्रप्रवक्ष्यामिशृण्वंतुमुनयस्तथा
कल्पेकल्पेक्षयाःसत्याब्रह्मविष्णुमहेश्वराः २०

इस मन्वंतर में और कृत त्रेता आदि युग में जो धर्म किये थे वे सब कलियुग में नष्ट होगये १६

धर्म में पंडित चारों वर्णों को जो करने योग्य है वह चारों वर्णों का किंचित्साधारण आचार कहो १७

हे धर्म के स्वरूप जानने वाले सूक्ष्म और स्थूल (बड़ा) आचार कहो इतने व्यास के वचनों के पीछे मुनियों में मुख्य पाराशर १८

सूक्ष्म और स्थूल धर्म का निर्णय कहते भये—और जो धर्म का तत्व कहेंगे उस के सुनने में ऋषियों को सावधान किया १९

हे पुत्र और मुनियो तुम सुनो कल्प २ में धर्म का क्षय (हानि) है और ब्रह्मा विष्णु—और शिव ये तीनों सत्य है २०

श्रुतिस्मृतिसदाचारनिर्णेतारश्चसर्वदा
नकश्चिद्वेदकर्ताचवेदंस्मृत्वाचतुर्मुखः २१
तथैवधर्मान्स्मरतिमनुःकल्पांतरेंतरे
अन्येकृतयुगेधर्मास्त्रेतायांद्वापरेयुगे २२
अन्येकलियुगेनृणांयुगरूपाऽनुसारतः
तपःपरंकृतयुगेत्रेतायांज्ञानमुच्यते २३
द्वापरेयज्ञमेवाहुर्दानमेवकलौयुगे
कृतेतुमानवाधर्मास्त्रेतायांगौतमाःस्मृताः २४
द्वापरेशंखलिखिताःकलौपाराशराःस्मृताः
त्यजेद्देशंकृतयुगेत्रेतायांग्राममुत्सृजेत् २५

और ये तीनों ही श्रुति-स्मृति और सदाचार के निर्णय करने वाले हैं और वेद का कर्त्ता कोई नहीं है ब्रह्मा वेदका स्मरण करके २१

और तिसी प्रकार मनु कल्प २ के अन्तर(मध्य) में धर्मों का स्मरण करतेहैं कृतयुग-त्रेता-और द्वापरमें धर्मभिन्नहैं२२

और युग के अनुसार मनुष्यों के कलियुग में धर्म और हैं सतयुग में तप उत्तमथा और त्रेता में ज्ञान को कहते हैं २३

और द्वापर में यज्ञ को और कलियुग में एक दान को ही मुख्य कहते हैं और सतयुग में मनु के कहे और त्रेतामें गौतम के कहे धर्म मानने कहे हैं २४

और द्वापर में शंख और लिखित के और कलियुगमें पाराशर के कहे धर्म मानने कहेहैं सतयुग में देश को और त्रेता में ग्राम को त्याग दे अर्थात् जो धर्म न करे २५

द्वापरेकुलमेकंतुकर्त्तारंतुकलौयुगे
कृतेसंभाषणादेवत्रेतायांस्पर्शनेनच २६
द्वापरेत्वन्नमादायकलौपततिकर्मणा
कृतेतात्क्षणिकःशापस्त्रेतायांदशभिर्दिनैः २७
द्वापरेचैकमासेनकलौसंवत्सरेणतु
अभिगम्यकृतेदानंत्रेतास्वाहूयदीयते २८
द्वापरेयाचमानायसेवयादीयतेकलौ
अभिगम्योत्तमंदानमाहूयैवतुमध्यमं २९
अधमंयाचमानायसेवादानंतुनिष्फलं

और द्वापर में एक कुलको और कलियुग में करनेवाले को त्यागदे और सतयुग में बोलने से त्रेतामें स्पर्श से २६

द्वापर में अन्न लेकर और कलियुग में कर्म करने से पतित होता है और सतयुग में उसी समय और त्रेता में दशदिन में शाप लगता था २७

द्वापर में एक महीने में और कलियुग में एक वर्ष में लगता है—और सतयुग में ब्राह्मण के समीप जाकर और त्रेता में ब्राह्मण को बुलाकर दान देते थे २८

द्वापर में मांगने वाले को और कलियुग में जो सेवाकरे उसे देते हैं - समीप जाकर दिया जो दान है वह उत्तम और बुलाकर जो दिया वह मध्यम है २९

मांगने वाले को जो दिया वह अधम और सेवक को जो दिया वह निष्फल है और अधर्म ने धर्मको और झूठ ने सत्य

जितोधर्मोह्यधर्मेणसत्यंचैवानृतेनच ३०
जिताश्चोरैश्चराजानःस्त्रीभिश्चपुरुषाजिताः
सीदंतिचाऽग्निहोत्राणिगुरुपूजाप्रणश्यति ३१
कुमार्यश्चप्रसूयंतेतस्मिन्कलियुगेसदा
कृतेऽस्थिगताःप्राणास्त्रेतायांमांसमाश्रिताः ३२
द्वापरेरुधिरंचैवकलौत्वन्नादिषुस्थिताः
युगेयुगेचयेधर्मास्तत्रतत्रचयेद्विजाः ३३
तेषांनिंदानकर्तव्यायुगरूपाहितेद्विजाः
युगेयुगेतुसामर्थ्यंशेषंमुनिविभाषितं ३४
पराशरेणचाप्युक्तंप्रायश्चित्तंविधीयते
अहमद्यैवतत्सर्वमनुस्मृत्यब्रवीमिवः ३५

को जीत लिया है ३०

चोरों ने राजाओं को स्त्रियों ने पुरुषों को जीत लिया है और अग्निहोत्री दुःखी हैं गुरू की पूजा नष्ट होती है ३१

कुवारियों के संतान होती है ये तीन काम सदैव कलियुग में होते हैं सतयुग में प्राण हाड़ों में रहैं थे और त्रेता में मांस में ३२

द्वापर में रुधिर में और कलियुग में अन्न आदि में रहते हैं युग २ में जो धर्म है और तिस२युग में जो द्विज हैं३३

उनकी निंदा न करनी क्योंकि वे युग के अनुसारी हैं और युग २ में सामर्थ्य (शक्ति) जो मुनियों ने कही है ३४

और पराशर ने भी कही है उसके अनुसार प्रायश्चित्त कहा है उस सबको अभी स्मरण करके कहुंहुं ३५

चातुर्वर्ण्यसमाचारं शृण्वंतु ऋषिपुंगवाः
पराशरमतं पुण्यं पवित्रं पापनाशनं ३६
चिंतितं ब्राह्मणार्थाय धर्मसंस्थापनाय च
चतुर्णामपि वर्णानामाचारो धर्मपालकः ३७
आचारभ्रष्टदेहानां भवेद्धर्मः पराङ्मुखः
षट्कर्माभिरतो नित्यं देवतातिथिपूजकः
हुतशेषं तु भुंजानो ब्राह्मणो नावसीदति ३८
संध्या स्नानं जपो होमो देवतानां च पूजनं
आतिथ्यं वैश्वदेवं च षट्कर्माणि दिने दिने ३९
इष्टो वा यदि वा द्वेष्यो मूर्खः पंडित एव वा

हे ऋषयों में उत्तमो, चारों वर्णों का आचरण सुनो क्योंकि पाराशर का मत पुण्य (पुनीत) है और पवित्र है और पापों का नाशक है ३६

जो मत ब्राह्मणों के लिये धर्म की स्थिति के लिये विचारा है--चारों वर्णों का जो आचार वही धर्म को पालना करने वाला है ३७

जिन का देह आचारसे भ्रष्ट (हीन) है उनसे धर्म भी पराङ्मुख (मुंह फेरे) होता है जो छः कर्मों में नित्यरत है और देवीता और अतिथि को पूजन करता है और जो होम के शेष को खाता है वह ब्राह्मण दुःखी नहीं होता ३८

संध्या—स्नान—जप—होम और देवताओं का पूजन और अतिथि की सेवा-बलिवैश्वदेव-ये छः कर्म प्रति दिन होते हैं ३९

मित्र हो—वा शत्रु हो मूर्ख हो वा पंडित हो जो वैश्वदेव

संप्राप्तोवैश्वदेवांतेसोतिथिःस्वर्गसंक्रमः ४०
दूराच्चोपगतंश्रांतंवैश्वदेवउपस्थितं
अतिथिंतंविजानीयान्नातिथिःपूर्वमागतः ४१
नैकग्रामीणमतिथिंसंगृह्णीतकदाचन
अनित्यमागतोयस्मात्तस्मादऽतिथिरुच्यते ४२
अतिथिंतत्रसंप्राप्तंपूजयेत्स्वागतादिना
तथासनप्रदानेनपादप्रक्षालनेनच ४३
श्रद्धयाचान्नदानेनप्रियप्रश्नोत्तरेणच
गच्छतश्चानुयानेनप्रीतिमुत्पादयेद्गृही ४४
अतिथिर्यस्यभग्नाशोगृहात्प्रतिनिवर्त्तते
पितरस्तस्यनाश्नंतिदशवर्षाणिपंचच ४५

के अंत में प्राप्त हो वह अतिथि स्वर्गके तुल्य है ४०

जो दूरसे आया हो वैश्वदेव के अंत में आया हो उसको अतिथि जाने वैश्वदेव से पहिले आये को नही ४१

एक गांव में रहने वाले अतिथि को कभी न माने जिससे नित्य जो न आवे उसेही अतिथि कहा जाता है ४२

उस समय (वैश्वदेव में) आये अतिथि का (स्वागत) आदि से पूजे और तैसेही आसन देने—पेर धोने ४३

श्रद्धा से अन्न देने प्यार के प्रश्न और उत्तर से जाते के पीछे चलने से गृहस्थी अतिथि का प्यार करै ४४

जिसके घरसे निरास होकर अतिथि चला जाता है उसके यहां पितर पंद्रह वर्ष तक नही खाते ४५

काष्ठभारसहस्रेणघृतकुंभशतेनच
अतिथिर्यस्यभग्नाशस्तस्यहोमोनिरर्थकः ४६
सुक्षेत्रेवापयेद्बीजंसुपात्रेनिक्षिपेद्धनं ।
सुक्षेत्रेचसुपात्रेचह्युप्तंदत्तंननश्यति ४७
नपृच्छेद्गोत्रचरणेनस्वाऽध्यायंश्रुतंतथा
हृदयेकल्पयेद्देवंसर्वदेवमयोहिसः ४८
अपूर्वःसुव्रतीविप्रोह्यऽपूर्वश्चातिथिस्तथा
वेदाभ्यासरतोनित्यंत्रयोऽपूर्वेदिनेदिने ४९
वैश्वदेवेतुसंप्राप्तेभिक्षुकेगृहमागते
उद्धृत्यवैश्वदेवार्थंभिक्षांदत्वाविसर्जयेत् ५०

काष्ठ के हजार भारों से सो घीके घटों से भी उसका होम वृथा है जिसके यहां से अतिथि निराश जाता है ४६

अच्छे खेत में वीज बोवे और सुपात्र को धन दे क्योंकि अच्छे खेत में बोया और सुपात्र को दिया नष्ट नहीं होता ४७

और गोत्र आचरण पढना और वेद इनको भी नही पूछे अपने हृदय में अतिथि को देवता समझे क्योंकि अतिथि सब देवताओं का रूपहै—४८

अच्छे व्रतवाला ब्राह्मण—और ऐसाहि अतिथि और वेद का पढने वाला ये तीनों प्रति दिन भी अपूर्व (नवीन) ही होते हैं ४९

वैश्वदेव के समय यदि भिक्षुक घर में आजाय तो वैश्व देव के लिये अन्न निकास ले और भिक्षा देकर बिदा करै ५०

यतिश्चब्रह्मचारीचंपक्वान्नस्वामिनावुभौ
तयोरन्नमदत्वाचभुक्त्वाचांद्रायणंचरेत् ५१
दद्याच्चभिक्षात्रितयंपरिब्राट्ब्रह्मचारिणां
इच्छायाचततोदद्याद्विभवेसत्यवारितं ५२
यतिहस्तेजलंदद्याद्भैक्ष्यंदद्यात्पुनर्जलं
तद्भैक्ष्यंमेरुणातुल्यंतज्जलंसागरोपमं ५३
यस्यछत्रंहयश्चैवकुंजरारोहमृद्धिमत्
ऐंद्रस्थानमुपासीततस्मात्तं नविचारयेत ५४
वैश्वदेवकृतंपापंशक्तोभिक्षुर्व्यपोहितुं
नहिभिक्षुकृतंदोषंवैश्वदेवोऽव्यपोहति ५५

यति और ब्रह्मचारी ये दोनों पक्व अन्न के अधिकारी हैं इन दोनों को बिना अन्न दिये जो भोजन करै वह चांद्रयण करै ५१

और संन्यासी और ब्रह्मचारियों को तीन भिक्षा दे यदि धन होय तो अपनी इच्छा से और भी दे ५२

पहिले संन्यासी के हाथ मे जलदे फिर अन्न दे और जल दे वह भिक्षा मेरु पर्वत के और वह जल समुद्र के समान है ५३

जिस के छत्र—घोड़ा और चढने के लिये उत्तम हाथी है वह धनी इन्द्र के स्थान का भोग करता है तिससे संन्यासी के देने में वह भी विचार न करै ५४

अर्थात् संन्यासी का अव सत्कार करै वैश्व देव के लिये पाप (भूल) को भिक्षु दूर करने को समर्थ है भिक्षु के लिये पाप को वैश्वदेव दूर नहीं करसकता ५५

अकृत्वावैश्वदेवंतुयेभुंजंतेद्विजातयः
तेषामन्नंनभुंजीतकाकयोनिंव्रजंतिते ५६
अकृत्वावैश्वदेवंतुभुंजंतेयेद्विजाधमाः
सर्वेतेनिष्फलाज्ञेयाःपतंतिनरकेशुचौ ५७
वैश्वदेवविहीनायेआतिथ्येनबहिष्कृताः
सर्वेतेनरकंयांतिकाकयोनिंव्रजंतिच ५८
शिरोवेष्ट्यतुयोभुंक्तेदक्षिणाभिमुखस्तुयः
वामपादकरःस्थित्वास्तद्वैरक्षांसिभुंजते ५९
यतयेकांचनंदत्वाताम्बूलंब्रह्मचारिणे
चोरेभ्योप्यभयंदत्वादातापिनरकंव्रजेत् ६०

वैश्वदेव के विना किये जो द्विजाति भोजन करते हैं उन के अन्न को न खाये क्योंकि वे कौवे की योनि में जाते हैं ५६

वैश्वदेव के विना किये जो द्विजों में नीच भोजन करते हैं वे सब उनका निष्फल है और वे अशुद्ध नरक में पड़ते हैं ५७

जो वैश्वदेव और अतिथि का सत्कार नहीं करते वे सब नरक वा कौवे की योनि में जाते हैं ५८

जो मनुष्य शिरको लपेट कर वा दक्षिण को मुख करके भोजन करता है अथवा बांये पैर पर हाथरख कर खाता है वुह अन्न को राक्षस खाते हैं ५९

सन्यासी को सोना और ब्रह्मचारीयों को पान देकर और चोरों को अभयदान देकर दाता भी नरक में जाता है ६०

शुक्लवस्त्रंचधानंचतांबूलंधातुमेव च
प्रतिगृह्य कुलंहन्यात्प्रतिग्राहातियस्यच ६१
चोरोवायदिचांडालःशत्रुर्वापितृघातकः
वैश्वदेवेतुसंप्राप्तेसोतिथिःस्वर्गसंक्रमः ६२
नगृह्णातितुयोविप्राअतिथिंवेदपारगं
अदत्तं चान्नपात्रंतुभुक्त्वाभुंक्तेतुकिल्बिषं ६३
ब्राह्मणस्यमुखंक्षेत्रंनिरूपममकंटकं
वापयेत्सर्वबीजानिसाकृषिःसर्वकामिका ६४
सुक्षेत्रेवापयेद्बीजंसुपात्रेनिक्षिपेद्धनं
सुक्षेत्रेचसुपात्रेचह्युप्तंतन्नविनश्यति ६५

सपेदवस्त्र -जल-पान- और धातु-इनका प्रतिग्रह लेने वाला और देने वाला अपने कुल का नाश करता है ६१

चोर हो वा चांडाल हो और चाहे पिता के मारने वाला शत्रु भी हो परंतु वैश्वदेव के समय आया वह अतिथि स्वर्ग के समान है ६२

जो ब्राह्मण वेद के पार जानने वाले अतिथि को नही ग्रहण करता वह अतिथि को नही दिये अन्न जल को खाकर पाप का भागी होता है ६३

ब्राह्मण का मुख कांटे रहित और सर्वोत्तम खेत है उसी में सब बीज बोवे क्योंकि यही खेती सब कामना देने वाली है ६४

अच्छे खेत में बीज बोवे और सुपात्र को धन दे अच्छे खेत और सुपात्र में बोये वे नष्ट नही होते ६५

अव्रताह्यनधीयानायत्रभैक्षचराद्विजाः
तंग्रामंदंडयद्राजाचोरभक्तप्रदोहिसः ६६
क्षत्रियोहिप्रजारक्षन्शस्त्रपाणिःप्रदंडवान्
निर्जित्यपरसैन्यानिक्षितिंधर्मेणपालयेत् ६७
नश्रीःकुलक्रमायाताभूषणोल्लिखिताऽपिवा
खड्गेनाक्रम्यभुंजीतवीरभोग्यांवसुंधरां ६८
पुष्पंपुष्पंविचिनुयान्मूलच्छेदंनकारयेत्
मालाकारइवाऽरामेनयथांगारकारकः ६९
लाभकर्मतथ रत्नंगवांचपरिपालनं
कृषिकर्मचवाणिज्यंवैश्यवृत्तिरुदाहृता ७०

जहां व्रतों को न करते और बिना पढ़े ब्राह्मण भिक्षा मांगते हैं उस ग्राम को राजा दंड दे क्योंकि वह ग्राम चोरों को भाग देता है ६६

शस्त्र को हाथ में लिये और प्रजा की रक्षा और दंड देता हुआ क्षत्रिय शत्रुओं की सेनाओं को जीतकर प्रजा को धर्म से पालना करै ६७

क्योंकि लक्ष्मी कुछ कुल परंपरा से नहीं आती और भूषणों से भी नहीं जानी जाती अपने खड्ग से दबाकर पृथ्वी को भोगे क्योंकि पृथ्वी सरवीरों के भोगने योग्य है ६८

फल२ को बीने और मूल (जड़) को न उखाड़े राजा ऐसा रहै जैसा बाग में माली और ऐसा न रहै जैसा कोले बनाने वाला ६९

लाभ का काम और रत्न, गौओं की अच्छी पालना खेती करना व्यापार ये वैश्य की वृत्ति (जीविका) कही हैं ७०

शूद्रस्यद्विजशुश्रूषापरमोधर्मउच्यते
अन्यथाकुरुतेकिंचित्तद्भवेत्तस्यनिष्फलं ७१
लवणंमधुतैलंचदधितक्रंघृतंपयः
नदुष्येच्छूद्रजातीनांकुर्यात्सर्वेषुविक्रयम् ७२
विक्रीणन्मद्यमांसानिह्यभक्ष्यस्यभक्षणं
कुर्वन्नगम्यागमनंशूद्रःपततितत्क्षणात् ७३
कपिलक्षीरपानेनब्राह्मणीगमनेनच
वेदाक्षरविचारेणशूद्रस्यनरकंध्रुवं ७४
इति पाराशरीये धर्मशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः १
अतःपरंगृहस्थस्यकर्माचारंकलौयुगे
धर्मंसाधारणंशक्त्याचातुर्वर्ण्याश्रमागतं १

और शूद्र का परम धर्म द्विजों की सेवा कहा है इससे अन्यथा जो कुछ शूद्र करता है वह उसका निष्फल है ७१

लवण सहत तेल-दही-मठा-घी-और दूध ये शूद्रों के दूषित नही है इनको शूद्र सब जातियों में बेचे ७२

मदिरा और मांस को बेचता हुआ और अभक्ष्य को खाता हुआ और गमन करने के अयोग्य स्त्री के संग गमन करके शूद्र उसी क्षण में पतित होता है ७३

कपिला गौ के दूध पीने से और ब्राह्मणी के संग गमन करने से और वेद के अक्षरों के विचार से शूद्र को निश्चय नरक होता है ७४

इति पाराशरीये धर्मशास्त्रे १ अध्यायः

इसके अनन्तर कलियुगमें गृहस्थका कर्म और आचार और चारों वर्ण और आश्रमों का यथाशक्ति साधारण धर्म जो है १

तंप्रवक्ष्याम्यहंपूर्वंपाराशरवचोयथा
षट्कर्मसहितोविप्रःकृषिकर्मचकारयेत् २
क्षुधितंतृषितश्रांतंबलीवर्द्दंनयोजयेत्
हीनांगंव्याधितंक्लीबंवृषंविप्रोनवाहयेत् ३
स्थिरांगंनीरुजंतृप्तंसुनर्द्दंषंढवर्जितं
वाहयेद्दिवसस्यार्द्धंपश्चात्स्नानंसमाचरेत् ४
जपंदेवार्चनंहोमंस्वाध्यायंचैवमभ्यसेत्
एकद्वित्रिचतुर्विप्रान्भोजयेत्स्नातकान्द्विजः ५
स्वयंकृष्टेतथाक्षेत्रेधान्यैश्चस्वयमर्ज्जितैः
निर्वपेत्पंचयज्ञांश्चक्रतुदीक्षांचकारयेत् ६

उसे पहिले मैं पाराशर के वचना नुसार कहता हूं छः कर्मों सहित विप्र खेती भी करावे २

और ऐसे बैल को न जुतवावे जो भूखा प्यासा थका अंग से हीन रोगी—और नपुंसक हो ३

और जो स्थिरांग (जिसके अंग सबहैं) रोग रहित--तृप्त खूब शब्द करता हो—जो सांडन हो—ऐसे बैल को आधेदिन जुतवावे और पीछे स्नान करै ४

जप देवताओं की पूजा होम और वेदका पाठ इनका अभ्यास करै और एक—दो—तीन—वा चार जो स्नातक (ब्रह्मचारी) हों उन्हें भोजन करावे ५

आप जोते खेत में और आप ही इकट्ठे किये अन्नों से पंच यज्ञ करै और यज्ञ की दीक्षा भी करावे ६

तिलारसानविक्रेयाविक्रेयाधान्यतत्समाः
विप्रस्यैवंविधावृत्तिस्तृणकाष्ठादिविक्रयः ७
ब्राह्मणश्चेत्कृषिंकुर्यात्तन्महादोषमाप्नुयात्
अष्टागवंधर्महलंषड्गवंवृत्तिलक्षणं ८
चतुर्गवंनृशंसानांद्विगवंगोजिघांसुवत्
द्विगवंवाहयेत्पादंमध्यान्हंतुचतुर्गवं ६
षड्गवंतुत्रियामाहेऽष्टभिःपूर्णंतुवाहयेत्
नयातिनरकेष्वेवंवर्तमानस्तुवैद्विजः १०
दानंदद्याच्चवैतेषांप्रशस्तंस्वर्गसाधनं
संवत्सरेणयत्पापंमत्स्यघातीसमाप्नुयात् ११

तिल और रसों को न वेचे अन्न और जो अन्न के समान हैं उनको—और तृण और काठको वेचे ब्राह्मणकी ऐसी वृत्तिहै ७

जो ब्राह्मण खेती करे तो महादोष को प्राप्त हो—आठ जिसमें बैल हों वह हल धर्म का है छः जिसमें हों वह जीवि का के लिये हैं ८

चार जिसमें बैल हों वह हिंसकों का है और दो बैल हों वह हलगो हत्यारे के समान है—और दो बैल वाले हलको चौथाई दिन जोते और चार बैल के हलको मध्यान्ह तक जोते ६

छः बैल के हल को दिन के तीन पहर और आठ बैलके को सब दिन जोते ऐसे वर्तता हुआ द्विज नरक में नही जाता १०

इन ब्राह्मणों को ही स्वर्ग देने वाला उत्तम दान दे—मच्छीयों के मारने वाला एक बर्ष में जिस पाप काभागी होता है ११

अयोमुखेनकाष्ठेनतदेकाहेनलांगली
पाशकोमत्स्यघातीचव्याधःशाकुनिकस्तथा १२
अदाताकर्षकश्चैवपंचैतेसमभागिनः
कंडनीपेषणीचुल्हीउदकुंभीचमार्जनी १३
पंचसूनागृहस्थस्यअहन्यहनिवर्तते
वैश्वदेवोबलिर्भिक्षागोग्रासोहंतकारकः १४
गृहस्थःप्रत्यहंकुर्यात्सूनादोषैर्नलिप्यते
वृक्षंछित्वामहींभित्वाहत्वाचकृमिकीटकान् १५
कर्षकःखलुयज्ञेनसर्वपापैःप्रमुच्यते
योनदद्याद्द्विजातिभ्योराशिमूलमुपागतः १६

लोहा मुखमें जिसके ऐसे काठ(हल)से उस पापकाहल वाला ब्राह्मण एक दिनमें भोगने वाला होताहै-पाशक(फांसी जो दे)म च्छियोंकामारने वाला वह व्याध जो पक्षियोंके मारनेवालाहो१२

और जो दान दे और खेती करने वाला—ये पांच पाप के भागी समान हैं ओखली—चक्की—चुल्हा—जल के घड़े—मार्जनी (बुहारी) १३

ये पांच हत्या गृहस्थी को प्रति दिन लगती हैं—बैश्वदेव बलि—भिक्षा गोग्रास—और हंतकार १४

इन पांचों को जो गृहस्थी प्रति दिन करता है वह पूर्वोक्त पांच हत्याओं के दोष से लिप्त नहीं होता वृक्षों को काटकर पृथ्वी खोद कर और कृमि और कीड़ों को मार कर १५

खेती करने वाला यज्ञ करने से सब पापों से छूटता है जिसके अन्न की राशि हुई हो और वह ब्राह्मणों को न देतो१६

सचोरःसचपापिष्ठोब्रह्मघ्नंतंविनिर्दिशेत्
राज्ञेदत्वातुषड्भागंदेवानांचैकविंशकं १७
विप्राणांत्रिंशकंभागंसर्वपापैःप्रमुच्यते
क्षत्रियोपिकृषिंकृत्वादेवान्विप्रांश्चपूजयेत् १८
वैश्यःशूद्रस्तथाकुर्यात्कृषिवाणिज्यशिल्पकं
विकर्मकुर्वतेशूद्राद्विजशुश्रूषयोज्झिताः १९
भवंत्यल्पायुषस्तेवैनिरयंयांत्यसंशयं
चतुर्णामपिवर्णानामेषधर्मःसनातनः २०
इतिपाराशरीयेधर्मशास्त्रेद्वितीयोध्यायः २
अतःशुद्धिंप्रवक्ष्यामिजननेमरणेतथा
दिनत्रयेणशुद्ध्यंतिब्राह्मणाःप्रेतसूतके १

वह चौर है और पापी है उसे ब्रह्महत्यारा कहते हैं—छटा भाग राजा को और इक्कीसमां भाग देवता ओं को १७

और तीसवां भाग ब्राह्मणों को देकर सब पापों से छूटता है—क्षत्रिय भी खेती करके देवता और ब्राह्मणों को पूजे १८

तिसीप्रकार वैश्य और शूद्र भी खेती वाणिज्य (व्योपार) और कारीगरी—इनको करें द्विजों की सेवा को छोड़कर जो शूद्र खोटा कर्म करते हैं १९

वे थोड़ी अवस्था वाले होते हैं और नरक में जाते हैं इस में संशय नहीं चारों वर्णों का यह सनातन धर्म है २०

इति पाराशरीये धर्म शास्त्रे २ अध्यायः

अब जन्म और मरण में शुद्धि को कहता हुं मरने के सूतक में तीन दिन में ब्राह्मण शुद्ध होते हैं १

क्षत्रियोद्वादशाहेनवैश्यःपंचदशाहकैः
शूद्रःशुद्ध्यतिमासेनपराशरवचोयथा २
उपासनेतुविप्राणामंगशुद्धिश्चजायते
ब्राह्मणानांप्रसूतौतुदेहस्पर्शोविधीयते ३
जातौविप्रोदशाहेनद्वादशाहेनभूमिपः
वैश्यःपंचदशाहेनशूद्रोमासेनशुद्ध्यति ४
एकाहाच्छुद्ध्यतेविप्रोयोग्निवेदसमन्वितः
त्र्यहात्केवलवेदस्तुद्विहीनोदशभिर्दिनैः ५
जन्मकर्मपरिभ्रष्टःसंध्योपासनवर्जितः
नामधारकविप्रस्तुदशाहंसूतकोभवेत् ६
अजागावोमहिष्यश्चब्राह्मणीनवसूतिका

क्षत्री बारह दिन में वैश्य पंद्रह दिन में शूद्र एक महीने में पाराशर के बचनानुसार शुद्ध होते हैं २

ब्राह्मणों की सेवा में शूद्र का देह शुद्ध होता है और जन्म सूतक में शूद्र को ब्राह्मण के देह का स्पर्श कहा है ३

जन्म सूतक में ब्राह्मण दशदिन में क्षत्री बारह दिन में वैश्य पंद्रह दिन में शूद्र एक महीने में शुद्ध होते हैं ४

अग्निहोत्री और वेदपाठी ब्राह्मण एक दिन में और केवल वेद पाठी तीन दिन में जो इन दोनों से हीन हो वह दश दिन में शुद्ध होता है ५

जन्म कर्म से हीन—और संध्योपासन जो न करता हो ऐसा जो नाम धारने वाला ब्राह्मण दश दिन के सूतक का भागी होता है ६

बकरी—गौ—भैंस—नव सूतिका (जिसके प्रथमही संता

दशरात्रेणशुद्ध्येतुभूमिस्थंचनवोदकं ७
एकपिंडास्तुदायादाःपृथग्दारनिकेतनाः
जन्मन्यपिविपत्तौचतेपांतत्सूतकंभवेत् ८
तावत्तत्सूतकंगोत्रेचतुर्थपुरुषेणतु
दायाद्विच्छेदमाप्नोतिपंचमोवात्मवंशजः ९
चतुर्थेदशरात्रंस्यात्षण्निशाःपुंसिपंचमे
षष्ठे चतुरहाच्छुद्धिःसप्तमेतुदिनत्रयात् १०
शृंग्यग्निमरणेचैवदेशांतरमृतेतथा
वालेप्रेतेचसन्यस्तेसद्यःशौचंविधीयते ११

न हुई हो) ब्राह्मणी और पृथ्वी पर टिका जल ये दश दिन में शुद्ध होते हैं ७

जो सपिंड हैं और वंश के भागी हैं और जिनके पृथक् स्त्री और घर है जन्म और मरण का सूतक उन सबको होता है ८

इतने उस गोत्र में चौथी पीढी हो इतनेही वह सूतक भी होता है क्योंकि अपने वंश का पांचवां भी भाग हीन हो जाता है ९

चतुर्थ पीढी तक दश दिन पांचवीं पीढी में छः रात— छठी पीढी में चार दिन—और सातवीं पीढी में तीन दिन में शुद्धि होती है १०

सींग वाले पशुओं से—वा अग्नि से मरने में वा देशांतर के मरने में—बालक के मरने में और संन्यासी के मरने में उसी समय शुद्धि होती है ११

देशांतरमृतःकश्चित्सगोत्रःश्रूयतेयदि
नत्रिरात्रमहोरात्रंसद्यःस्नात्वाशुचिर्भवेत् १२
देशांतरगतोविप्रःप्रयासात्कालकारितात्
देहनाशमनुप्राप्तस्तिथिर्नज्ञायतेयदि १३
कृष्णाष्टमीत्वमावास्याकृष्णाचैकादशीचया
उदकंपिंडदानंचतत्रश्राद्धंचकारयेत् १४
अजातदंतायेबालायेचगर्भाद्विनिःसृताः
नतेषामग्निसंस्कारोनाशौचंनोदकक्रिया १५
यदिगर्भोविपद्येतस्रवतेवापियोषितः
यावन्मासंस्थितोगर्भोदिनंतावत्तुसूतकम् १६

यदि देशांतर में मरा सगोत्री सुना जाय तो न तीन रात्र और न अहोरात्र अशौच होता है किन्तु शीघ्रही स्नान करने से शुद्धि होती है १२

यदि देशांतर में गया ब्राह्मण काल से पैदा हुए परिश्रम से मरजाय और मरने की तिथि मालूम न पड़े १३

तो कृष्ण पक्ष की आठें मावस—वा—एकादशी जो हैं उनमें जलदान और पिंडदान और श्राद्ध करे १४

जो दांतों के जन्म से पहिले वा गर्भ से निकलते ही मर गये हैं उनको अग्नि का दाह और अशौच और जलदान नहीं होता १५

यदि गर्भ में विपत्ति (मरना) होजाय वा स्त्री का गर्भही गिरजाय तो जितने महीने का गर्भ हो उतने ही दिन का सूतक होता है १६

आचतुर्थात्भवेत्स्रावःपातःपंचमषष्ठयोः
अतऊर्द्ध्वंप्रसूतिःस्याद्दशाहंसूतकंभवेत् १७
दंतजातेनुजातेचकृतचूडेचसंस्थिते
अग्निसंस्कारणंतेषांत्रिरात्रमशुचिर्भवेत् १८
अदंताज्जन्मतःसद्यआचूडान्नैशिकीस्मृता
त्रिरात्रमाव्रतादेशाद्दशरात्रमतःपरम् १९
ब्रह्मचारीगृहेयेषांहूयतेचहुताशनः
संपर्कंचेन्नकुर्वंतिनतेषांसूतकंभवेत् २०
संपर्काद्दुष्यतेविप्रोजननेमरणेतथा

चार महीने तक का जो गर्भ गिरै उसे स्राव कहते हैं पांच और छटे महीने का गिरे तो उसे पात कहते हैं इससे आगे प्रसूति होती है उसका सूतक दश दिनका होता है १७

दांत जन्मे पीछे या दांत जन्मतेहो अथवा मुंडन किये पीछे बालक मरजाय तो उसका अग्नि संस्कार करै और तीन रात आशौच होता है १८

और दांतों के जन्म से पहिले जो बालक मरै तो उसी समय और चूड़ा कर्म से पहिले मरेतो एक रात्रि का और यज्ञोपवीत से पहिले मरेतो तीन रात का अशौच होता है इस परे दशरात का होता है १९

जिनके घर में ब्रह्मचारी हो और वह होम कररहा हो यदि वे सूतक वालेका स्पर्श न करै तो उन्हें सूतक नहीं लगता २०

जन्म और मरण सूतक में ब्राह्मण स्पर्श करने से

संपर्काच्चनिवृत्तस्यनप्रेतंनैवसूतकं २१
शिल्पिनःकारुकावैद्यादासीदासाश्चनापिताः
राजानःश्रोत्रियाश्चैवसद्यःशौचाःप्रकीर्तिताः २२
सव्रतोमंत्रपूतश्चआहिताग्निश्चयोद्विजः
राज्ञश्चसूतकंनास्तियस्यचेच्छतिपार्थिवः २३
उद्यतोनिधनेदानेआर्तोविप्रोनिमंत्रितः
तदैवऋषिभिर्दृष्टंयथाकालेनशुद्ध्यति २४
प्रसवेगृहमेधीतुनकुर्यात्संकरंयदि
दशाहाच्छुद्ध्यतेमाताप्यवगाह्यपिताशुचिः २५
सर्वेषांशावमाशौचंमातापित्रोस्तुसूतकं

दूषित होता है यदि संपर्क न करे तो दोनों सूतक नहीं होते २१

शिल्पी (चित्राम बनाने वाला) कारीगर—वैद्य—दासी (टहलनी) दास—नाई—राजा—और वेदपाठी इनकी उसी समय शुद्धि होती है २२

जिसने व्रत ले रक्खा हो—और मंत्र से जो पवित्र हैं—और जो द्विज अग्नि होत्री है और राजा इनको और जिसके सूतक को राजा न चाहे उसको सूतक नहीं है २३

दान में उद्यत (तईयार) मनुष्य यदि मरजाय और आर्त (दुखी) ब्राह्मण को दान देने का नोता दे रक्खा है तो उसी समय दान के समय पर शुद्ध होता है यह ऋषियों ने देखा है अर्थात् कहा है २४

यदि जन्म सूतक में ब्राह्मण संकर (स्पर्श) न करे तो माता दश दिन में और पिता स्नान करके शुद्ध होते हैं २५

शाव (मरने का) आशौच सबको और जन्म सूतक माता

सूतकंमातुरेवस्यादुपस्पृश्यपिताशुचिः २६
यदिपत्न्यांप्रसूतायांसंपर्कंकुरुतेद्विजः
सूतकंतुभवेत्तस्ययदिविप्रःषडंगवित् २७
संपर्काज्जायतेदोषोनान्योदोषोस्तिवैद्विजे
तस्मात्सर्वप्रयत्नेनसंपर्कंवर्जयेद्बुधः २८
विवाहोत्सवयज्ञेषुत्वंतरामृतसूतके
पूर्वसंकल्पितंद्रव्यंदीयमानंनदुष्यति २९
अंतरातुदशाहस्यपुनर्मरणजन्मनी
तावत्स्यादशुचिर्विप्रोयावत्पूर्वंनगच्छति ३०
ब्राह्मणार्थेविपन्नानांबंदीगोग्रहणेतथा

और पिता को ही होता है और उन दोनों में भी माता को ही अशौच होता है पिता तो स्नान सेही शुद्ध है २६

जिस ब्राह्मण की स्त्री प्रसूता हो और वह स्पर्श करे तो चाहे वह छः अंग वेद के जानता हो तोभी उसे सूतक होता है २७

ब्राह्मण को संपर्क का दोष है और कुछ दोष नहीं हैं तिस से सब यत्न से ज्ञान वान् द्विज संपर्क को वर्ज दे २८

विवाह—उत्सव—यज्ञ इनके मध्य यदि मरण और सूतक होजांय तो पूर्व संकल्पित किये द्रव्य के देने का दोष नहीं है २९

यदि दश दिन में फिर मरण वा जन्म होजांय तो ब्राह्मण इसने अशुद्ध होता है जब तक पहिले दश दिन हों ३०

ब्राह्मण के लिये—वंदी (कैद) में गौ के पकड़ने में और

आहवेषुविपन्नानामेकरात्रमशौचकं ३१
द्वाविमौपुरुषौलोकेसूर्यमंडलभेदिनौ
परिव्राट्योगयुक्तश्चरणेचाभिमुखोहतः ३२
यत्रयत्रहतःशूरःशत्रुभिःपरिवेष्टितः
अक्षयांल्लभतेलोकान्यदिक्लीबंनभाषते ३३
संन्यस्तंब्राह्मणंदृष्ट्वास्थानाच्चलतिभास्करः
एषमेमंडलंभित्वापरंस्थानंप्रयास्यति ३४
यस्तुभग्नेषुसैन्येषुविद्रवत्सुसमंततः
परित्रातायदागच्छेत्सचक्रतुफलंलभेत् ३५
यस्यच्छेदक्षतंगात्रंशरमुद्गरयष्टिभिः

संग्राम मे जो मरे हैं इनको अशौच एक रात का होता है ३१

दो पुरुष जगत् में सूर्य मंडल के भेदन करने वाले हैं एक तो योग मार्ग का ज्ञाता संन्यासी और दूसरा जो संग्राम में सन्मुख मरा हो ३२

शत्रुओं के लपेटे (घिराव) से शूरवीर जहां जहां हता (पीडित) गया है वह अक्षय लोकों को प्राप्त होता है जो क्लीव (कातर के) बचन न कहै ३३

संन्यासी ब्राह्मण को देखकर सूर्य अपने स्थान से चलता है क्योंकि सूर्य यह समझता है कि यह सन्यासी मेरे मंडल को लंघकर परम स्थान (वैकुण्ठ) को जायगा ३४

जो मारे पीटे और चारों तरफ भागते हुए सेना के मनुष्यों की रक्षा के लिये जाता है वह यज्ञ के फल को भोगता है ३५

जिसका गात बाण—मुदगर—लाठी इनके छिद्रों से क्षत

देवकन्यास्तुतंवीरंहरंतिरमयंतिच ३६
देवांगनासहस्राणिशूरमायोधनेहतं
त्वरमाणाःप्रधावंतिममभर्ताममेतिच ३७
यंयज्ञसंघैस्तपसाचविप्राःस्वर्गैषिणोवात्रयथैवयांति
क्षणेनयांत्येवहितत्रवीराःप्राणान्सुयुद्धेनपरित्यजंति
जितेनलभ्यतेलक्ष्मीर्मृतेनापिवरांगनाः (३८
क्षणध्वंसिनिकायेस्मिन्काचिंतामरणेरणे ३६
ललाटदेशेरुधिरंश्रवच्चयस्याहवेतुप्रविशेतवक्त्रम्
तत्सोमपानेनकिलास्यतुल्यंसंग्रामयज्ञेविधिवच्चदृष्टं४०

(घाव वाला) है उन मनुष्य को देवताओं की कन्या हरती है और रमावती हैं ३६

संग्राम में हते शूरवीर के सन्मुख हजारों देवताओं की कन्या शीघ्रता करती हुई दौड़ती हैं कि मेरा भर्ता२ है (पति) है ३७

यज्ञों के समूह और तप कर के स्वर्ग की इच्छा करने वाले ब्राह्मण जिस लोक में जिस प्रकार जाते हैं उसी लोक में क्षणमात्र में ही वे शूर बीर जाते हैं जो युद्धमें प्राणों को त्यागते हैं ३८

युद्ध में जय से लक्ष्मी और मरने से अप्सरा मिलती है तो क्षणमात्र में नष्ट होने वाली काया के रण में मरने की क्या चिन्ता है ३६

मस्तक से गिरता है रुधिर जिसपर ऐसा मुख जिसका संग्राम में प्रवेश करता है वह संग्राम की यज्ञ में विधि से देखा मुख उस मुख का तुल्य है जिसने अमृत पान किया हो ४०

अनाथंब्राह्मणंप्रेतंयेवहंतिद्विजातयः
पदेपदेयज्ञफलमानुपूर्व्याल्लभंतिते ४१
नतेषामशुभंकिंचित्पापंवाशुभकर्मणां
जलावगाहनात्तेषांसद्यःशौचंविधीयते ४२
असगोत्रमबंधुंचप्रेतीभूतद्विजोत्तमं
वहित्वाचदहित्वाचप्राणायामेनशुद्ध्यति ४३
अनुगम्येच्छया प्रेतंज्ञातिमज्ञातिमेववा
स्नात्वासचैलस्पृष्ट्वाग्निंघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति ४४
क्षत्रियंमृतमज्ञानाद्ब्राह्मणोयोनुगच्छति
एकाहमशुचिर्भूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ४५

जो द्विजाति अनाथ प्रेत को श्मशानमें लेजाते हैं वे क्रम से पद२ पर यज्ञ के फल को प्राप्त होते हैं ४१

और उन शुभ कर्म करने वालों को कुछ अशुभ है और न पाप है और जलके स्नान से उनकी उसी समय शुद्धि होती है ४२

जो ब्राह्मण अपने गोत्र का न हो और अपना बन्धु भी न हो उसको लेजाकर और दग्ध करके प्राणायाम से शुद्ध होता है ४३

अपनी जाति वा बिना जाति के प्रेत के संग जाकर सचैल स्नान और घी को खाकर शुद्ध होता है ४४

मरे क्षत्रिय के संग जो ब्राह्मण श्मशान में जाता है वह एक दिन अशुद्ध रह कर पंचगव्य से शुद्ध होता है ४५

शवंचवैश्यमज्ञानाद्ब्राह्मणोऽनुगच्छति
कृत्वाशौचंद्विरात्रंचप्राणायामान्षडाचरेत् ४६
प्रेतीभूतंतुयःशूद्रंब्राह्मणोज्ञानदुर्बलः
अनुगच्छेन्नीयमानंत्रिरात्रमशुचिर्भवेत् ४७
त्रिरात्रेतुततःपूर्णे नदींगत्वासमुद्रगां
प्राणायामशतंकृत्वाघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति ४८
विनिर्वर्त्ययदाशूद्राउदकान्तमुपस्थिताः
द्विजैस्तदानुगन्तव्याएषधर्मःसनातनः ४९
तस्माद्द्विजोमृतंशूद्रंनस्पृशेन्नचदाहयेत्
दृष्टेसूर्यावलोकेनशुद्धिरेषापुरातनी ५०
इतिपाराशरीयेधर्मशास्त्रेतृतीयोध्यायः ३

जो ब्राह्मण मरे वैश्य के संग अज्ञान से जाता है वह दो रात का अशौच करके छः प्राणायाम करै ४६

जो अज्ञानी ब्राह्मण मरे शूद्र के संग जाता है वह तीन रात्र अशुद्ध होता है ४७

तीन रात्र के पीछे समुद्र में जो जाती हो उस नदी में जाकर सौ प्राणायाम करै और घी खाकर भली प्रकार शुद्ध होता है ४८

जब श्मशान से लौट कर शूद्र जल के समीप आवें तब द्विज उनके पास जांय यही सदा का धर्म है ४९

तिससे द्विज मरे शूद्र का न तो स्पर्श करै और न दाह यदि मरे शूद्र को देखले तो सूर्य के देखने से शुद्धि होती है यह शुद्धि पुराणी है ५०

इति पाराशरीये धर्मशास्त्रे ३ अध्यायः

अतिमानादतिक्रोधात्स्नेहाद्वायदिवाभयात्
उद्बध्नीयात्स्त्रीपुमान्वागतिरेषाविधीयते १
पूयशोणितसंपूर्णेत्वंधेतमसिमज्जति
षष्टिवर्षसहस्राणिनरकंप्रतिपद्यते २
नाशौचंनोदकंनाग्निंनाश्रुपातंचकारयेत्
वोढारोग्निप्रदातारःपाशच्छेदकरास्तथ ३
तप्तकृच्छ्रेणशुद्ध्यंतीत्येवमाहप्रजापतिः
गोभिर्हतंतथोद्बद्धं ब्राह्मणेनतुघातितं ४
संस्पृशंतितुयेविप्रावोढारश्चाग्निदाश्चये
अन्येयेचावगंतारःपाशच्छेदकराश्चये ५

अत्यन्त आदर से वा अत्यन्त क्रोध से वा स्नेह से वा भय से स्त्री अथवा पुरुष परस्पर फांसी दें तो यह उनकी गति होती है १

राध और रुधिर से भरे नरक में साठ हजार वर्ष तक डूबते हैं २

न उनका अशौच और न जलदान—और न अग्नि दाह और न आसूओं का पात करे और जो उन्हें गंगा आदि में ले जांय और जो उनकी फांसी को काटे ३

वे तप्त कृच्छ्र करने से शुद्ध होते हैं ऐसे प्रजापति ने कहा है—जो पुरुष गौ ने मारा हो वा बंधन (फांसी) से मरा हो वा ब्राह्मण ने मारा हो ४

उसका जो ब्राह्मण स्पर्श करें वा लेजांय वा जो अग्नि दें और जो उसके संग जांय वा जो फांसी काटें ५

तप्तकृच्छ्रेणशुद्धास्तेकुर्युर्ब्राह्मणभोजनं
अनडुत्सहितांगांचदद्युर्विप्रायदक्षिणां ६
त्र्यहमुष्णांपिबेद्वारित्र्यहमुष्णांपयःपिबेत्
त्र्यहमुष्णांपिबेत्सर्पिर्वायुभक्षोदिनत्रयं ७
षट्पलंतुपिबेदंभस्त्रिपलंतपयःपिबेत्
पलमेकंपिबेत्सर्पिस्तप्तकृच्छ्रं विधीयते ८
योवैसमाचरेद्विप्रपतितादिष्वकामतः
पंचाहंवादशाहंवाद्वादशाहमथापिवा ९
मासार्द्धं मासमेकंवामासद्वयमथापिवा।
अब्दार्द्धमब्दमेकंवाभवेदूर्ध्वंहितत्समः १०

वे तप्त कृच्छ्र से शुद्ध हुए ब्राह्मणों का भोजन करावें और एक बैल और गै ब्राह्मण को दक्षिणा दें ६

तीन दिन उष्ण जल पीवे फिर तीन दिन उष्ण दूध पीवे फिर तीन दिन उष्ण घी पीवे फिर तीन दिन वायु को भक्षण करके रहे ७

और छः पल जल—तीन पल दूध—एक पल घी—इस को तप्त कृच्छ्र कहते हैं ८

जो ब्राह्मण पतित आदिकों के संग आचरण (व्यवहार) अज्ञान से पांच दिन--वा दश दिन—वा बारह दिन करता है ९

वा पंद्रह दिन वा एक महीना वा दो महीने वा चार महीने वा एक बर्ष करता है तो वह उस प्रायश्चित्त को करे जो कहेंगे और बर्ष दिन बाद भी करे तो उसी के तुल्य (पतित) होता है १०

त्रिरात्रंप्रथमेपक्षेद्वितीयेकृच्छ्रमाचरेत्
तृतीयेचैवपक्षेतुकृच्छ्रं सांतपनंचरेत् ११
चतुर्थेदशरात्रंस्यात्पराकःपंचमेमतः
कुर्याच्चांद्रायणांषष्ठेसप्तमेत्वैंदवद्वयं १२
शुद्ध्यर्थमष्टमेचैवषण्मासात्कृच्छ्रमाचरेत्
पक्षसंख्याप्रमाणेनसुवर्णान्यपिदक्षिणा १३
ऋतुस्नातातुयानारीभर्तारंनोपसर्पति
सामृतानरकंयातिविधवाचपुनःपुनः १४
ऋतुस्नातांतुयोभार्यांसन्निधौनोपगच्छति
घोरायांभ्रूणहत्यायांयुज्यतेनात्रसंशयः १५
दरिद्रं व्याधितंधूर्तंभर्तारंयावमन्यते

पांच दिन के संग में तीनरात उपवास दश दिन के में एक कृच्छ्र बारह दिन के संग सांतपन कृच्छ्र करे ११

पंद्रह दिन के में दशरात्र व्रत--एक महीन के में पराक व्रत—दो महीने के में चांद्रायण—चार महीने के संग में दो ऐंदव व्रत करे १२

एक वर्ष के संग में छः महीने तक कृच्छ्र करे और पंद्रह दिन के संग में सोने की दक्षिणा भी दे १३

जो स्त्री ऋतु स्नान करके पति के समीप नही जाती वह मर कर नरक में जाती है और बारं बार विधवा होती है १४ जो पुरुष ऋतु का स्नान जिसने किया हो उस अपनी स्त्री के समीप नही जाता उसे घोर भ्रूण हत्या लगती है १५

दरिद्री—रोगी—धूर्त—जो अपना पति हो उसका जो स्त्री

साशुनीजायतेमृत्वासूकरीचपुनःपुनः १६
पत्यौजीवतियानारीउपोष्यव्रतमाचरेत्
आयुष्यंहरतेभर्तुःसानारीनरकंव्रजेत् १७
अपृष्ट्वाचैवभर्तारंयानारीकुरुतेव्रतं
सर्वंतद्राक्षसान्गच्छेदित्येवंमनुरब्रवीत् १८
बांधवानांसजातीनांदुर्वृत्तंकुरुतेतुया
गर्भपातंचयाकुर्यान्नतांसंभाषयेत्क्वचित् १९
यत्पापंब्रह्महत्यायाद्विगुणंगर्भपातने
प्रायश्चित्तंनतस्यास्तितस्यास्त्यागोविधीयते २०
नकार्यमावसथ्येननाग्निहोत्रेणवापुनः
सभवेत्कर्मचांडालोयस्तुधर्मपराङ्मुखः २१

अपमान करती है वह मर कर कुत्ती वा सूवरी ही बार बार होती है १६

पति के जीवते जो स्त्री उपवास करती है वह अपने पति की अवस्था घटाती है और आप नरक में जाती है १७

जो स्त्री अपने पति के बिना पूछे व्रत करती है वह सब राक्षसों को मिलता है यह मनुने कहा है १८

जो स्त्री अपने सजातीय बांधवों के संग दुष्ट आचरण वा गर्भपात करती है उसके संग कभी भी पति न बोले १९

जो पाप ब्रह्म हत्या का है उससे दूना गर्भ के पात (गेरना) में है इसका प्रायश्चित्त नहीं है किंतु उसका त्याग करदे २०

जो गृहस्थ के कर्मों को न करे और अग्नि होत्र भी न करे और जो धर्म से विमुख हो वह कर्म चांडाल होता है २१

ओघवाताहृतंबीजंयस्यक्षेत्रेप्ररोहति
सक्षेत्रीलभतेबीजंनबीजोभागमर्हति २२
तद्वत्परस्त्रियःपुत्रौद्वौसुतौकुंडगोलकौ
पत्यौजीवतिकुंडस्तुमृतेभर्तरिगोलकः २३
औरसःक्षेत्रजश्चैवदत्तःकृत्रिमकःसुतः
दद्यान्मातापितावापिसपुत्रोदत्तकोभवेत् २४
परिवित्तिःपरीवेत्ताययाचपरिविद्यते
सर्वेतेनरकंयांतिदातृयाजकपंचमाः २५
द्वौकृच्छ्रौपरिवित्तेस्तुकन्यायाःकृच्छ्रएवच

जल के वा पवन के वेग से यदि दूसरे के खेत में बीज उप जआवे तो वह खेत वाले ही भाग को पावेगा और बीज वाले को भाग मिलना योग्य नहीं २२

इसी प्रकार दूसरे की स्त्री में जो पुत्र हो वह भी उस का होगा जिसकी वह स्त्री हो—कुण्ड और गोलक दो पुत्र होते हैं एक पति के जीते जो जारसे हो वह कुंड और पति के मरे पीछे होय तो गोलक २३

औरस—क्षेत्रज—दत्तक—और कृत्रिम—ये पुत्र हैं जिस को माता वा पिता देदें वह दत्तक पुत्र होता है २४

(परिवित्ति परिवेत्ता का बडा भाई) और परिवेत्ता (बड़े भाई से पहिले जो विवाह करे) और वह कन्या जिससे वह परिवेत्ता हुआ है और कन्या का दाता और याजक विवाह पढने वाला यें सब नरक में जाते हैं २५

परिवित्ति—दो—कृच्छ्र और कन्या एक कृच्छ्र—दाता

कृच्छ्रातिकृच्छ्रौदातुस्तुहोताचांद्रायणंचरेत् २६
कुब्जवामनषंढेषुगद्‌गदेषुजडेषुच
जात्यंधेबधिरेमूकेनदोषःपरिविंदतः २७
पितृव्यपुत्रःसापत्नःपरनारीसुतस्तथा
दाराग्निहोत्रसंयोगेनदोषःपरिवेदने २८
ज्येष्ठोभ्राताथदातिष्ठेदाधानंनैवकारयेत्
अनुज्ञातस्तुकुर्वीतशंखस्यवचनंयथा २९
नष्टेमृतेप्रव्रजितेक्लीबेचपतितेपतौ
पंचस्वापत्सुनारीणांपतिरन्योविधीयते ३०

कृच्छ्रातिचक्र—होम का कर्ता चांद्रायण करे २६

कुबड़ा—विळंदिया—नपुंसक—तोतला, मूर्ख जन्मांध—बहरा, गूंगा—इनजेठ भाईयों के परिवेदन (पहिले विवाह वा अग्निहोत्र लेना) करने में दोष नहीं २७

यदि जेठा भाई चाचा का पुत्र हो वाभ्रात्र हो—वा दूसरी माका पुत्र हो तो बिवाह और अग्नि होत्र से उसके परिवेदन में दोष नही हैं २८

जेठा भाई होयतो अग्निहोत्र नले और शंख के बचनानुसार उसकी आज्ञा से अग्निहोत्र को ग्रहण करले २९

जिससे सगाई हुई हो वह पति नष्ट (परदेश में गया हो और खबर न हो) हो संन्यासी हो नपुंसक हो—पतित हो—तो इन पांच आपत्तियों में दूसरा पति कहा है अर्थात् सगाई हुये पीछे दूसरे के संग सगाई करदे ३०

मृतेभर्त्तरियानारीब्रह्मचर्यब्रतेस्थिता
साम्‌तालभतेस्वर्गंयथातेब्रह्मचारिणः ३१
तिस्त्रःकोट्योर्धकोटीचयानिलोमानिमानवे
तावत्कालंवसेत्स्वर्गेभर्त्तारंयाऽनुगच्छति ३२
व्यालग्राहीयथाव्यालंबलादुद्धरतेबिलात्
एवंस्त्रीपतिमुद्धृत्यतेनैवसहमोदते ३३
इतिपाराशरेधर्मशास्त्रे चतुर्थोऽध्यायः ४
वृकश्वानशृगालादिदष्टोयस्तुद्विजोत्तमः
स्नात्वाजपेत्सगायत्रींपवित्रांवेदमातरं १
गवांशृं गोदकस्नानान्महानद्योस्तुसंगमे

पति के मरे पीछे जो स्त्री ब्रह्मचर्य ब्रत में टिकती है वह मरकर स्वर्ग में इस प्रकार जाती है जैसे वे ब्रह्मचारी ३१

जो स्त्री पति के संग अनुगमन (सतीहोना) करती है वह साढ़ तीन किरोड़ मनुष्य के शरीर में जो लोम हैं उतने ही वर्ष तक स्वर्ग में बसती है ३२

सांप के पकड़ने वाला जैसे बिले में से सांप को निकाल लेता है ऐसे वह स्त्री भी पति का उद्धार करके उस पति के संगही स्वर्ग में आनन्द भोगता है ३३

इति पाराशरीये धर्मशास्त्रे ४ अध्यायः

भिढा—कुत्ता—गीदड़ आदि जिस ब्राह्मण के काटे वह स्नान करक वेदों की माता गायत्री का जप करे १

कुत्ता जिसें काटे वह गौ के सींग के जलसे स्नानसे वा

समुद्रदर्शनाद्वापिशुनादष्टःशुचिर्भवेत् २
वेदविद्याव्रतस्नातःशुनादष्टोद्विजोयदि
सहिरण्योदकेस्नात्वाघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति ३
सव्रतस्तुशुनादष्टोयस्त्रिरात्रमुपावसेत्
घृतंकुशोदकंपीत्वाव्रतशेषंसमापयेत् ४
अव्रतःसव्रतोवापिशुनादष्टोभवेद्द्विजः
प्रणिपत्यभवेत्पूतोविप्रैश्चक्षुनिरीक्षितः ५
शुनाघ्रातावलीढस्यनखैर्विलिखितस्यच
अद्भिःप्रक्षालनंप्रोक्तमग्निनाचोपचूलनं ६
ब्राह्मणीतुशुनादष्टाजंबुकेनवृकेणवा

वा बड़ी नदियों के संगम के स्नान से वा समुद्र के दर्शन से शुद्ध होता है २

वेद विद्या पढ़े वा ब्रह्मचारी ब्राह्मण को यदि कुत्ता काटे तो वह सोने के जल से स्नान और घी खाकर शुद्ध होता है ३

व्रत वाले ब्राह्मण को कुत्ता काटे तो तीन रात उपवास करै और घृत और कुशा के जल को पीकर शेष व्रत को पूरा करदे ४

व्रत वाले वा बिना व्रतवाले द्विज को कुत्ता काटे तो ब्राह्मणों को प्रणिपात (नमस्कार) करने और ब्राह्मणों के देखने से शुद्ध होता है ५

जोद्रव्य कुत्तेने—सूंघा—वा चाटा हो वा नखों से खोदा हो वह जलसे धोने और अग्नि में तपाने से शुद्ध होता है ६

यदि ब्राह्मणी को कुत्ता वा गीदड़ वा भेड़िया काटे तोवह

उदितंग्रहनक्षत्रंदृष्ट्वासद्यःशुचिर्भवेत् ७
कृष्णपक्षेयदासोमोनदृश्येतकदाचन
यांदिशंव्रजतेसोमस्तांदिशंचाऽवलोकयेत् ८
असद्ब्राह्मणकेग्रामेशुनादष्टोद्विजोत्तमः
वृषंप्रदक्षिणीकृत्यसद्यःस्नात्वाशुचिर्भवेत् ९
चंडालेनश्वपाकेनगोभिर्विप्रैर्हतोयदि
आहिताग्निर्मृतोविप्रोविषेणात्महतोयदि १०
दहेत्तं ब्राह्मणंविप्रोलोकाग्नौमंत्रवर्जितं
स्पृष्ट्वाचोह्यचदग्ध्वाचसपिंडेषुचसर्वदा ११
प्राजापत्यंचरेत्पश्चाद्विप्राणामनुशासनात्
दग्ध्वास्थीनिपुनर्गृह्य क्षीरैःप्रक्षालयेद्द्विजः १२

य हुए नक्षत्रों को देख कर शुद्ध होती है ७

यदि कृष्णपक्ष में किसी प्रकार चन्द्रमा न दीखे तो जिस दिशा को चंद्रमा जाता है उस दिशा को देखले ८

दुष्ट हैं ब्राह्मण जिस में ऐसे ग्राम में यदि ब्राह्मण को कुत्ता काटे तो शीघ्र स्नान करके शुद्ध होता है ९

यदि ब्राह्मण को चांडाल-श्वपुक-गौ-या-ब्राह्मण-मारदें वा विष खाकर मरजाय और वह अग्निहोत्री होय तो १०

उस ब्राह्मण को लौकिक अग्निमें फूंके और यदि सपिंड उसका स्पर्श—लेजांय वा दग्ध करें तो सदैव ११

ब्राह्मणों की आज्ञा से पीछे से प्रजापत्य करें और उस के फूंके हुए हाड़ फिर बीन कर दूध से द्विज धोवें १२

स्वेनाऽग्निनास्वमंत्रेणपृथगेतत्पुनर्दहेत्
आहिताग्निर्द्विजःकश्चित्प्रवसेत्कालचोदितः १३
देहनाशमनुप्राप्तस्तस्याऽग्निर्वसतेगृहे
प्रेताग्निहोत्रसंस्कारःश्रूयतांमुनिपुंगवाः १४
कृष्णाजिनंसमास्तीर्यकुशैस्तुपुरुषाकृतिं
षट्शतानिशतंचैवपलाशानांचवृन्ततः १५
चत्वारिंशच्छिरेदद्याच्छतंकंठेतुविन्यसेत्
बाहुभ्यांदशकंदद्यादंऽगुलीषुदशैवतु १६
शततुजघनेदद्याद्द्विशतंतूदरेतथा
दद्यादष्टौवृषणयोःपंचमेढ्रेतुविन्यसेत् १७

फिर अपनी अग्नि और मंत्रों से दूसरी जगे दग्ध करे यदि अग्निहोत्री ब्राह्मण परदेश में काल से १३

देह के मरण को प्राप्त होजाय और अग्नि उसके घरमें बसती होय तो हे मुनियों में श्रेष्ठों उस प्रेत की अग्नि का संस्कार सुनो १४

काले मृग की छाला बिछाकर कुशाओं से पुरुष का आकार बनावे सातसे ७०० पलास के वृन्त (डांढले)भो उसमें इस प्रकार लगावे १५

चालीस शिरमें—सौ कंठसे दश भुजाओं में और दश अंगुलियों मे लगावे १६

सौ जंघाओं में—दोसौ उदरमें—और आठ वृषणों (आंडकोश) में और पांच मेढ़ (लिंग) में रक्खे १७

एकविंशतिमूरूभ्यांद्विशतंजानुजंघयोः
पादांगुष्ठेषुदद्यात्षट्यज्ञपात्रंततोन्यसेत् १८
शम्यांशिश्नेविनिक्षिप्यअरणींमुष्कयोरपि
जुहूंचदक्षिणेहस्तेवामेतूपभृतंन्यसेत् १९
पृष्ठे तूलूखलदद्यात्पृष्ठे चमुसलंन्यसेत्
उरसिक्षिप्यदृषदंतंडुलाज्यतिलान्मुखे २०
श्रोत्रेचप्रोक्षणींदद्यादाज्यस्थालींचचक्षुषोः
कर्णेनेत्रेमुखेघ्राणेहिरण्यशकलंन्यसेत् २१
अग्निहोत्रोपकरणमशेषंतत्रविन्यसेत्
असौस्वर्गायलोकायस्वाहेत्येकाहुतिंसकृत् २२
दद्यात्पुत्रोथवाभ्राताप्यन्योवापिचबांधवः

इक्कीस ऊरू (रान) ओंमें—दो सौ जानु (गोडे़) और जंघा ओं में और छः पैरों के अंगूठों में रक्खे और फिर यज्ञ केपात्र;भी रक्खे १८

शमी को लिंग पर—और अरणी को अंड कोषपर और दाहने हाथ पर जुहू और बांयें हाथ में उपभृत रक्खे १९

और मुसल और ऊखल पीठ पर रक्खे और छाती पर पत्थर और तंडल घी—तिल मुख पर रक्खे २०

कानों में प्रोक्षणी पात्र—नेत्रौं में आज्य (घी) की थाली रक्खे कान —नेत्र मुख-नाक-इनमें-सोने का टुकड़े रक्खे २१

और होम की सब सामग्री वहां रखदे और असौस्वर्गाय लोकाय इस मंत्र से एक आहुति दे २२

पुत्र--भाई—अथवा अन्य कोई बांधव इस आहुति को

यथादहनसंस्कारस्तथाकार्यंविचक्षणैः २३
ईदृशंतुविधिंकुर्याद्ब्रह्मलोकेगतिःस्मृता
दहंतियेद्विजास्तंतुतेयांतिपरमांगतिं २४
अन्यथाकुर्वतेकर्मत्वात्मबुद्ध्यप्रचोदिताः
भवंत्यल्पायुषस्तेवैपतंतिनरकेशुचौ २५
इतिपाराशरीयेधर्म० पंचमोऽध्यायः ५
अतःपरंप्रवक्ष्यामिप्राणिहत्यासुनिष्कृतिं
पराशरेणपूर्वोक्तांमन्वर्थेपिचविस्तृतां १
क्रौंचसारसहंसांश्चचक्रवाकंदकुक्कुटं
जालपादंचशरभंहत्वाऽहोरात्रतःशुचिः २
बलाकाटिट्टिभौवापिशुकपारावतावपि

वैं जैसे अग्नि से दाह करते हैं, वैसेही विद्वान् सब कर्म करैं २३

जो ऐसी विधि को कर्ता है उसको ब्रह्मलोक होता है और जो द्विज उसको दग्ध करते हैं वेभी परमगति को प्राप्त होते हैं २४

जो अपनी बुद्धि से अन्यथा (और रीति) से कर्म करते हैं वे अल्प अवस्था वाले होतेहैं और अशुद्ध नरकमें पड़तेहैं २५

इति पाराशरीये धर्मशास्त्रे ५ अध्यायः

अब प्राणियों की हत्या का प्रायश्चित्त कहता हुं जो प्रथम पाराशर ने कहो है और मनुने भी विस्तार से कहा है १

क्रौंच (कुंज) सारस—हंस—चकवा—मुरगा—जालपाद (हंस) शरभ (डिड्डी) इनको मार कर अहोरात्र से शुद्ध होता है २

बलाका—टिट्टिभ—तोता—कबूतर—अटीनवक (जो वग

अटीनवकघातीचशुद्ध्यतेनक्तभोजनात् ३
वृककाककपोतानांसारीतित्तिरघातकः
अंतर्जलउभेसंध्येप्राणायामेनशुद्ध्यति ४
गृध्रश्येनशशादीनामुलूकस्यचघातकः
अपक्काशीदिनंतिष्ठेत्त्रिकालंमारुताशनः ५
वल्गुलीटिट्टिभानांचकोकिलाखंजरीटके
लाविकारक्तपक्षेषुशुद्ध्यतेनक्तभोजनात् ६
कारंडवचकोराणांपिंगलाकुररस्यच
भारद्वाजादिकंहत्वाशिवंसंपूज्यशुद्ध्यति ७
भेरुंडचाषभासांश्चपारावतकपिंजलौ

ला उड़ता फिरे)—इन के मारने से रात्रि के भोजन से शुद्ध होता है ३

भेड़िया—कौआ—कपोत—सारी—(पक्षि भेद) तित्तर—इनकोजो मारे वह दोनों संध्या(प्रातःकाल और सायंकाल)ओं में जल के बीच प्राणायाम करने से शुद्ध होता है ४

गीध-शिखरा-शशा-और ऊलू इनको जो मारे वह दिनभर पका अन्न न खा तीन काल पवन को ही खाकर टिके ५

वल्गुली (गोह) टिट्टिभ (टिटिर) कोइल खंजरीट (खंजन) लाविक—रक्तपंख—इनको मार कर नक्त (रात) के भोजन से शुद्ध होता है ६

कारंडव (हंस का भेद) चकोर पिंगला (छोटा ऊलू) कुंज भारद्वाज (ठ्याभ्राट) इन आदिको मारकर शिवजी के पूजन से शुद्ध होता है ७

भेरुंड(भुरंड)चाषभास पारावत कपिंजल और सब पक्षियों

पक्षिणांचैवसर्वेषामहोरात्रमभोजनं ८
हत्वामूषकमार्जारसर्पाऽजगरडुंडुभान्
कृसरंभोजयेद्विप्रान्लोहदंडंचदक्षिणां ९
शिशुमारंतथागोधांहत्वाकूर्मंचशल्लकं
वृंताकफलभक्षीवाप्यहोरात्रेणशुद्ध्यति १०
वृकजंबुकऋक्षाणांतरक्षूणांचघातकः
तिलप्रस्थंद्विजेदद्याद्वायुभक्षोदिनत्रयम् ११
गजस्यचतुरंगस्यमहिषोष्ट्रनिपातने
प्रायश्चित्तमहोरात्रंत्रिसंध्यमवगाहनं १२
कुरंगंवानरंसिंहंचित्रंव्याघ्रंऽचघातयेत्
शुद्ध्यतेसत्रिरात्रेणविप्राणांतर्पणेनच १३

को मार कर अहोरात्र भोजन न करै ८

मूसा बिलार सांप अजगर डुंडुभ कृसर (करकांटा) इन को मारनेवालाब्राह्मणों को जिमाकर लोहे की लाठी दक्षिणा दे९

शिशुमार गोह कछुवा सेह इनको जो मारे वह और जो बैंगन खाय वह अहोरात्र से शुद्ध होता है १०

वृक (भिड़ा) गीदड़ ऋच्छ तरक्ष इनको जो मारे वह ब्राह्मण को प्रस्थ (पंजली भर) तिलदे और तीन दिन वायु को भक्षण करै ११

हाथी घोड़ा भैंसा ऊंट इनको जो मारे वह तीन अहोरात्र व्रत और त्रिकाल स्नान करै १२

मृग वानर सिंह चीता इनको जो मारै वह तीन रात्र व्रत और ब्राह्मणों के भोजन से शुद्ध होता है १३

मृगरोहिद्वराहाणामवेर्वहतस्यघातकः
अफालकृष्टमश्नीयादहोरात्रमुपोष्यसः १४
एवंचतुष्पदानांचसर्वेषांवनचारिणां
अहोरात्रोषितस्तिष्ठेज्जपन्वैजातवेदसं १५
शिल्पिनकारुकंशूद्रंस्त्रियंवायस्तुघातयेत्
प्राजापत्यद्वयंकृत्वावृषैकादशदक्षिणा १६
वैश्यंवाक्षत्रियंवापिनिर्दोषंयोऽभिघातयेत्
सोतिकृच्छ्रद्वयंकुर्याद्गोविंशदक्षिणांददेत् १७
वैश्यंशूद्रंक्रियासक्तंविकर्मस्थंद्विजोत्तमं
हत्वाचांद्रायणंतस्यत्रिंशद्गाश्चैवदक्षिणा १८

रोहितमृग सूकर बकरा मींठा इनको जो मारे वह एक रात उपवास करके उस अन्नको खाय जो बिना जोते पैदा हो १४

इसी प्रकार सब चौपाये और सब वनके बिचरने वालों को मार कर अहोरात्र उपवास करके जात वेदस (अग्नि का मंत्र) जप करता टिके १५

शिल्पी कारीगर शूद्र और स्त्री इनको जो मारे वह दो प्रजापत्य करके ग्यारह बैलकी दक्षिणा दे १६

निर्दोष वैश्य क्षत्रिय इनदोनों को जो मारे वह दो अति कृच्छ्र करै और वीस गौ दक्षिणा दे १७

कर्म में तत्पर वैश्य वा शूद्र को और निंदित कर्म करने वाले ब्राह्मण को जो मारे वह चांद्रायण करै और वीस गौ दक्षिणा दे १८

चांडालंहतवान्कश्चिद्ब्राह्मणोयदिकंचन
प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रं गोद्वयंदक्षिणांददेत् १९
क्षत्रियेणापिवैश्येनशूद्रे णैवेतरेणच
चांडालस्यवधेप्राप्तेकृच्छ्रार्द्धेनविशुद्ध्यति २०
चोरःश्वपाकोचांडालोविप्रेणाभिहतोयदि
अहोरात्रोषितःस्नात्वापंचगव्येनशुद्ध्यति २१
श्वपाकंचापिचांडालंविप्रःसंभाषतेयदि
द्विजसंभाषणंकुर्य्यात्सावित्रींचसकृज्जपेत् २२
चांडालैःसहसुप्तंतुत्रिरात्रमुपवासयेत्
चांडालैकपथंगत्वागायत्रीस्मरणाच्छुचिः २३
चांडालदर्शनेसद्यआदित्यमवलोकयेत्

यदि कोई ब्राह्मण किसी चांडाल को मारे तो प्राजापत्य करै और दो गौ दक्षिणा दे १९

यदि क्षत्रिय वैश्य वा शूद्र ये चांडाल को मारे तो आधे कृच्छ्र से शुद्ध होते हैं २०

यदि ब्राह्मण चौर श्वपाक चांडाल इनको मारें तो अहो रात्र उपवास करके पंचगव्य पीने से शुद्ध होता है २१

यदि श्वपाक चांडाल इनके संग ब्राह्मण संभाषण करें तो ब्राह्मण के संभाषण करके एक वार गायत्री जपे २२

जो ब्राह्मण चांडाल के संग सोवे तो तीन रात उपवास से और चांडाल के संग एक मार्ग में चलै तो गायत्री के स्मरण से शुद्ध होता है २३

चांडाल के दर्शन से शीघ्र सूर्य का दर्शन करै और चांड

चांडालस्पर्शनेचैवसचैलंस्नानमाचरेत् २४
चांडालखातवापीषुपीत्वासलिलमग्रतः
अज्ञानाच्चैकनक्तेनत्वहोरात्रेणशुद्ध्यति २५
चांडालभांडंस्पृष्ट्वापीत्वाकूपगतंजलं
गोमूत्रयावकाहारस्त्रिरात्राच्छुद्धिमाप्नुयात् २६
चांडालघटसंस्थंतुयत्तोयंपिबतद्द्विजः
तत्क्षणात्क्षिपतेयस्तुप्राजापत्यंसमाचरेत्
यदिनक्षिपतेतोयंशरीरेयस्यजीर्यति
प्राजापत्यंनदातव्यंकृच्छ्रंसांतपनंचरेत् २८
चरेत्सांतपनविप्रःप्राजापत्यमनंतरः
तदर्धंतुचरेद्वैश्यःपादंशूद्रस्यदापयेत् २९

ल स्पर्श करै तो सचैल स्नान करै २४

चांडाल की खोदी बावड़ी में पहले हीं अज्ञान से जल पीता है वह एक नक्त और अहोरात्र व्रत से शुद्ध होता है २५

चांडाल के पात्र का स्पर्श वा चांडाल के कुये का जल पीकर गोमूत्र और जौं को खाकर अहोरात्र से शुद्ध होता है २६

यदि चांडाल के घट का जल द्विज पीले और उस जल को उसी क्षण में डाल दे तो प्राजापत्य करै २७

यदि नडाले और उस जलको पचाजाय तो प्राजापत्य न करै किन्तु सांतपन कृच्छ्र करै २८

ब्राह्मण सांतपन क्षत्री प्राजापत्य वैश्य आधाप्राजापत्य और शूद्र चौथाई प्राजापत्य करै २९

भांडस्थमंत्यजानांतुजलंदधिपयःपिवेत्
ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रश्चैवप्रमादतः ३०
ब्रह्मकूर्चोपवासेनद्विजातीनांतुनिष्कृतिः
शूद्रस्यचोपवासेनतथादानेनशक्तितः ३१
भुंक्तेज्ञानाद्द्विजश्रेष्ठःचांडालान्नंकथंचन
गोमूत्रयावकाहारोदशरात्रेणशुद्ध्यति ३२
एकैकंग्रासमश्नीयाद्गोमूत्रेयावकस्यच
दशाहंनियमस्थस्यव्रततत्तुविनिर्दिशेत् ३३
अविज्ञातस्तुचंडालोयत्रवेश्मनितिष्ठति
विज्ञातउपसंन्यस्यद्विजाःकुर्युरनुग्रहं ३४
मुनिवक्त्रोद्गतान्धर्मान्गायंतोवेदपारगाः

यदि अंत्यजों के भांडे का जल दही दूध ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र प्रसन्नता से पीवें तो ३०

ब्रह्मकूर्च उपवास से द्विजातियों की और एक उपवास और दान से शूद्र की शुद्धि होती है ३१

यदि किसी प्रकार अज्ञान से ब्राह्मण चांडाल के अन्न के खाले तो गोमूत्र और जों का खाकर दशरात्र में शुद्ध होता है ३२

और गो मूत्र में जों का एक ग्रास खाय और दश दिन तक नियम में टिके यही उसको व्रत कहै ३३

यदि विना जाने चांडाल घर में टिके तो जाने पर उसे निकास कर द्विज उस ब्राह्मण पर दया करैं ३४

मुनियों के मुख से निकसे धर्मों को गाते हुए वेद के पार

पतंतमुद्धरेयुस्तंधर्मज्ञाःपापसंकरात् ३५
दध्नाचसर्पिषाचैवक्षीरगोमूत्रयावकं
भुंजीतसहभृत्यैश्चत्रिसंध्यमवगाहनं ३६
त्र्यहंभुंजीतदध्नाचत्र्यहंभुंजीतसर्पिषा
त्र्यहंक्षीरेणभुंजीतएकैकेनदिनत्रयं ३७
भावदुष्टंनभुंजीतनोच्छिष्टंकृमिदूषितं
दधिक्षीरस्यत्रिपलंपलमेकंघृतस्यतु ३८
भस्मनातुभवेच्छुद्धिरुभयोःकांस्यताम्रयोः
जलशौचेनवस्त्राणांपरित्यागेनमृन्मयम् ३९
कुसुंभगुडकार्पासलवणंतैलसर्पिषी

जानने वाले धर्म के ज्ञाता पतित हुए उस ब्राह्मण को पाप से उद्धार करें ३५

फिर दही - घी - गोमूत्र और जो इनको भृत्यों (नोकर) के संग खाय और त्रिकाल स्नान करै ३६

फिर तीन दिन दही से खा—तीन दिन घी से खा—तीन दिन दूध से खा और तीन दिन एक२ दही आदि खा ३७

जो मन को न भावे - उच्छिष्ट - जिस में कृमि हों उसे न खाय—दही और घी तीन २ पल (टका भर) और घी एक पल खा ३८

उस घरके कांसी तांबे की शुद्धि भस्म से—जल में धोने से वस्त्रों की—और त्यागने से मट्टीके पात्रकी शुद्धि होती है ३९

फिर घर के द्वारपर कुसूम—गुड़—कपास—लवण—तेल

द्वारेकृत्वातुधान्यानिदद्याद्वेश्मनिपावकं ४०
एवंशुद्धस्ततःपश्चात्कुर्याद्ब्राह्मणतर्पणं
त्रिंशतंगावृषंचैकंदद्याद्विप्रेषुदक्षिणां ४१
पुनर्लेपनखातेनहोमजाप्येनशुद्ध्यति
आधारेणचविप्राणांभूमिदोषोनविद्यते ४२
चांडालैःसहसंपर्कंमासंमासार्द्धमेववा
गोमूत्रयावकाहारोमासार्द्धेनविशुद्ध्यति ४३
रजकीचर्मकारीचलुब्धकीवेणुजीविनी
चातुर्वर्ण्यस्यतुगृहेत्वविज्ञातानुतिष्ठति ४४
ज्ञात्वातुनिष्कृतिंकुर्यात्पूर्वोक्तस्यार्धमेवतु
गृहदाहंनकुर्वीतशेषसर्वंचकारयेत् ४५

धी—अन्न इनको रखकर घर में अग्नि देवै ४०

इस प्रकार शुद्ध होकर ब्राह्मणों को भोजन करावै से तर्पण करै और तीस गौ एक बैल ब्राह्मणों को दक्षिणा दे ४१

दुबारा लीपना—खोदना—और होम-जप-और ब्राह्मणोंके बैठने से पृथ्वी शुद्ध होती है भूमि में दोष नहीं है ४२

यदि चांडालों के संग एक महीना वा पन्द्रह दिन संसर्ग होय तो—मासार्द्ध (१५ दिन) तक गो मूत्र जौ खाकर शुद्ध होता है ४३

रजकी (धोबिन) चमारी—व्याधनी—वेणु जीविनी—ये यदि अज्ञान से चारों वर्णों के घरमें टिकें तो ४४

जाने पीछे पूर्वोक्त का आधा प्रायश्चित्त करै घर को जलावै नहीं और सब करै ४५

गृहस्याभ्यंतरंगच्छेच्चांडालोयदिकस्यचित्
तस्मागाराद्विनिःसार्यमृद्भांडंतुविसर्जयेत् ४६
रसपूर्णंतुमृद्भांडंनत्यजेत्तुकदाचन
गोमयेनतुसंमिश्रैर्जलैःप्रोक्षेद्गृहंतथा ४७
ब्राह्मणस्यव्रणद्वारेपूयशोणितसंभवे
कृमिरुत्पद्यतेयस्यप्रायश्चित्तंकथंभवेत् ४८
गवांमूत्रपुरीषेणदधिक्षीरेणसर्पिषा
त्र्यहंस्नात्वाचपीत्वाचकृमिदष्टःशुचिर्भवेत् ४९
क्षत्रियोपिसुवर्णस्यपंचमाषान्प्रदापयेत्
गोदक्षिणांतुवैश्यस्यप्युपवासंविनिर्दिशेत् ५०
शूद्राणांनोपवासःस्यात्शूद्रोदानेनशुद्ध्यति

यदि किसी के घर के भीतर चांडाल चलाजाबतो उसको घर से बाहर निकाल कर मिट्टी के पात्र तो फेंक दे ४६

परंतु रस के भरे मिट्टी के पात्रों को कदापि न त्यागे और गोबर मिले जलसे घरको लीपे वा छिड़के ४७

राध और रुधिर से भरे ब्राह्मण के घाव में यदि कृमि (कीड़े) पैदा होजांय तो प्रायश्चित्त कैसे होय ४८

गोमूत्र और गोबर दही—दूध—इनसे तीन दिन स्नान और इनको तीन दिन पीकर वह कीड़ों का काटा हुआ पुरुष शुद्ध होता है ४९

क्षत्रिय पांच मासे सोना देकर और वैश्य एक उपवास और गौ की दक्षिणा देकर शुद्ध होता है ५०

शूद्रों को उपवास का निषेध है इससे शूद्रदान से शुद्ध

अच्छिद्रमितियद्वाक्यंवदंतिक्षितिदेवताः ५१
प्रणम्यशिरसाग्राह्यमग्निष्टोमफलंहितत्
जपच्छिद्रंतपश्छिद्रंयच्छिद्रंयज्ञकर्मणि ५२
सर्वंभवतिनिश्छिद्रंब्राह्मणैरुपपादितं
व्याधिव्यसनिनिश्रांतेदुर्भिक्षेडामरेतथा ५३
उपवासोव्रतोहोमोद्विजसंपादितानिवा
अथवाब्राह्मणास्तुष्टाःसर्वंकुर्वंत्यनुग्रहम् ५४
सर्वान्कामानवाप्नोतिद्विजसंपादितैरिह
दुर्बलानुग्रहःप्रोक्तस्तथावैबालवृद्धयोः ५५
ततोऽन्यथाभवेद्दोषस्तस्मान्नानुग्रहःस्मृतः

होता है और जिसको ब्राह्मण अच्छिद्र (पूरा होगया) ऐसे कह दें ५१

इस वाक्य को शिर से नमस्कार करके जो ग्रहण करे उसे अग्निष्टोम यज्ञका फल होता है जपका छिद्र तपका छिद्र और यज्ञ के कर्म का छिद्र ५२

ब्राह्मणों के कहने से वह सब छिद्र रहित होता है-व्याधि और व्यसन से थका—दुर्भिक्ष—और डामर (मूर्ख) इनमें ५३

उपवास—व्रत—होम—द्विजों के कहनेसे होते हैं अथवा प्रसन्न हुए ब्राह्मण सब अनुग्रह करते हैं ५४

ब्राह्मणों के लिये कर्मों से प्राणी सब कामनाओं को प्राप्त होता है निर्बल—बालक—वृद्ध इनपर अनुग्रह करना कहा है ५५

यदि अन्यथा (कुछ में कुछ) होय तो दोष होता है तिससे

स्नेहाद्वायदिवालोभाद्भयाद्ज्ञानतोऽपिवा ५६
कुर्वंत्यनुग्रहंयेतुतत्पापंतेषुगच्छति
शरीरस्याऽत्ययेप्राप्तेवदंतिनियमंतुये ५७
महत्कार्योपराधेननास्वस्थस्यकदाचन
स्वस्थस्यमूढाःकुर्वंतिवदंतिनियमंतुये ५८
तेतस्यविघ्नकर्तारःपतंतिनरकेशुचौ
स्वयमेवव्रतंकृत्वाब्राह्मणंयोऽवमन्यते ५९
वृथातस्योपवासःस्यान्नसपुण्येनयुज्यते
सएवनियमोग्राह्योयमेकोपिवदेद्द्विजः ६०
कुर्याद्वाक्यंद्विजानांतुअन्यथाभ्रूणहाभवेत्

उसको अनुग्रह नहीं कहते स्नेह से भयसे—लोभसे—अज्ञान से ५६

जो अनुग्रह करते हैं वह पाप उनको ही होता है शरीर के अनाशका कारण जो नियम कहते हैं ५७

और बड़े कार्य क अपराध से स्वस्थको कभी भी नियम कहते हैं और जो मूढ स्वस्थ का नियम करते हैं वा कहते हैं ५८

वे सब उस के विघ्न करने वाले अपवित्र नरक में पड़ते हैं जो आपही व्रत करके ब्राह्मण का तिरस्कार करता है ५९

उसका उपवास वृथा है और उसे पुण्य नही होता इससे वही नियम ग्रहण करना जिसे एक भी ब्राह्मण कहै ६०

इससे ब्राह्मण के बचन को करै यदि न करै तो भ्रूण हत्यारा होता है क्योंकि ब्राह्मण जंगमतीर्थ हैं और साधुभी

ब्राह्मणा जंगमं तीर्थं निर्मलं सार्वकामिकम् ब्राह्मणाजंगमंतीर्थंनिर्थभूब्राहिसाधवः ६१
तेषांवाक्योदकेनैवशुद्ध्यंतिमलिनाजनाः
ब्राह्मणायानिभाषंतेमन्यंतेतानिदेवताः ६२
सर्वदेवमयोविप्रोनतद्वचनमन्यथा
उपवासोव्रतंचैवस्नानंतीर्थंजपस्तपः ६३
विप्रैःसंपादितंयस्यसंपूर्णंतस्यतत्फलम्
अन्नाद्ये कीटसंयुक्तेमक्षिकाकेशदूषिते ६४
तदंतरास्पृशेच्चापःतदन्नंभस्मनास्पृशेत्
भुंजानश्चैवयोविप्रोपादहस्तेनसंस्पृशेत् ६५
स्वमुच्छिष्टमसौभुंक्तेयोभुंक्तेभुक्तभाजने

तीर्थ हैं ६१

उन ब्राह्मणों के वाक्य रूप जल से ही मलीन नर शुद्ध होते हैं जो वाक्य ब्राह्मण कहते हैं उन्हें देवता भी मानते हैं ६२

ब्राह्मण सब देवताओं का रूप है इससे उसका वचन अन्यथा नहीं होसक्ता उपवास व्रत स्नान जप तप ये ६३

सब जिसके ब्राह्मण ने संपादन कर दिये हैं उसको ही इनका फल होता है यदि अन्न आदि में कीड़े मिले हों व मक्खी और केश से दूषित होय तो ६४

उस समय जल का स्पर्श करे और उस अन्न में भस्म गेरै जो भोजन करता हुआ ब्राह्मण पैर को हाथ से छूवे तो ६५

वह अपने उच्छिष्ट को खाता है और जो झूंठे पात्र में

पादुकास्थोनभुंजीतपर्यंकस्थःस्थितोपिवा ६६
श्वानचांडालदृष्टचैवभोजनंपरिवर्जयेत्
यदन्नंप्रतिषिद्धंस्यादन्नशुद्धिस्तथैवच ६७
यथापराशरेणोक्तंतथैवाहंवदामिवः
शृतंद्रोणाढकस्यान्नंकाकश्वानोपघातितं ६८
केनेदंशुध्यतेचेतिब्राह्मणेभ्योनिवेदयेत्
काकश्वानावलीढंतुद्रोणान्नंनपरित्यजेत् ६९
वेदवेदांगविद्भिस्तुधर्मशास्त्रानुपालकैः
प्रस्थाद्वात्रिंशतिर्द्रोणःस्मृतोविप्रस्यआढकः ७०
ततोद्रोणाढकस्यान्नंश्रुतिस्मृतिविदोविदुः

वा खड़ाऊं पर बैठ कर खा वा खाट पर बैठ कर खा ६६

कुत्ते और चांडाल को देखता हुआ जो खाय तो उस भोजन को त्याग दे जो अन्न निषिद्ध है वा जैसे अन्न की शुद्धि होती है ६७

पाराशर के कहने के अनुसार उसको तुम्हें में कहता हूं द्रोण और आढक भर अन्न यदि कौआ और कुत्ते से छूआ जाय तो ६८

यह अन्न कैसे शुद्ध हो ऐसे ब्राह्मणों से कहे और काक और कुत्ते से छुए द्रोणभर अन्न को न फेंके ६९

वेद और वेदांग के ज्ञाता और धर्मशास्त्र को मानने वाले ब्राह्मणों ने ब्राह्मण की बत्तीस प्रस्थ (अंजली) का एक द्रोण और बत्तीस द्रोण का एक आढक कहा है ७०

यह द्रोण और आढक अन्न श्रुति और स्मृति के ज्ञाता

काकश्वानावलीढंतुगवाघ्रातंखरेणवा ७१
स्वल्पमन्नंत्यजेद्विप्रःशुद्धिर्द्रोणाढकेभवेत्
अन्नस्ये.द्‌धृत्यतन्मात्रंयच्चलालाहतंभवेत् ७२
सुवर्णोदकमभ्युक्ष्यहुताशेनैवतापयेत्
हुताशनेनसंस्पृष्टंसुवर्णसलिलेनच ७३
विप्राणांब्रह्मघोषेणभोज्यंभवतितत्क्षणात्
स्नेहोवागोरसोवापितत्रशुद्धिःकथंभवेत् ७४
अल्पंपरित्यजेत्तत्रस्नेहस्योत्पवनेनच
अनलज्व.लय शुद्धिर्गोरसस्यविधीयते ७५
इतिपाराशरीयेधर्मशास्त्रेषष्ठोऽध्यायः ६

हो जानते हैं यदि वह अन्न कौआ कुत्ता इन्होंने चाटा हो और गौ और गधेने सूंघा होय तो ७१

थोड़ा सा अन्न उसमें से फेंक दे यह द्रोण आढक अन्नकी शुद्धि होती है और जितने अन्न में लार लगी हो उतना निकासन से शुद्ध होती है ७२

फिर सोने के जल से छिड़क कर अग्नि से तपावे क्योंकि जिसमें अग्निका और सोने के जलका स्पर्श होता है ७३

जहां ब्राह्मणों का वेद पाठ होता हो वह अन्न उसी समय खाने योग्य होता है यदि स्नेह (घी आदि) हो वा गोरस (दूध आदि) होय तो उसकी शुद्धि कैसे हो ७४

उसमें से थोड़ा सा त्याग दे और घी आदि स्नेह की और को अग्नि की ज्वाला से तपा कर शुद्धि कही है ७५

इति पाराशरीये धर्म शास्त्रे ६ अध्यायः

अथातोद्रव्यशुद्धिस्तुपराशरवचोयथा
दारवाणांतुपात्राणांततूक्षणाच्छुद्धिरिष्यते १
मार्जनाध्यज्ञपात्राणांपाणिनायज्ञकर्मणि
चमसानांग्रहाणांचशुद्धिःप्रक्षालनेनच २
चरूणांस्रुक्स्रुवाणांचशुद्धिरुष्णेनवारिणा
भस्मनाशुद्ध्यतेकांस्यंताम्रमम्लेनशुद्ध्यति ३
रजसाशुद्ध्यतेनारीविकलंयानगच्छति
नदीवेगनशुद्ध्येतलेपोयदिनदृश्यते ४
वापीकूपतडागेषुदूषितेषुकथंचन
उद्धृत्यवैकुंभशतपंचगव्यनशुद्ध्यति ५
अष्टवर्षाभवेद्गौरीनववर्षातुरोहिणी

अब पराशर के वचनानुसार द्रव्य की शुद्धि कहुं हूं काठके पात्रोंकी तो उसी समय शुद्धिमानी है १

यज्ञमें यज्ञके पात्रोंकी हाथ से मांजने से और चमस और ग्रह जो पात्रहैं उनकी शुद्धि जलमें धोनेसे होती है २

चरु (साकल्य) स्रुक—स्रुवा इनकी उष्णजल से—कांसी के पात्रकी भस्म और तांवेके पात्र की खटाईसे शुद्धि होती है ३

स्त्री रजो दर्शनसे शुद्ध होतीहै जो वह स्त्री विकल (निरंतर गमन) न करै—और नदी वेगसे शुद्ध होती है जो वह नदी मार्ग में लोप (नाश) को प्राप्त हो ४

बावडी—कूप—तालाव—यदि ये किसी प्रकार दूषित हो जांय तो सौ घडे जल निकास कर पंच गव्य से शुद्ध होतेहैं ५

आठ वर्षकी कन्या को गौरी नो वर्षकी को रोहिणी और दश

दशवर्षाभवेत्कन्याअतऊर्ध्वंरजस्वला ६
प्राप्तेतुद्वादशेवर्षेयःकन्यांनप्रयच्छति
मासिमासिरजस्तस्याःपिबंतिपितरोनिशं ७
माताचैवपिताचैवज्येष्ठोभ्रातातथैवच
त्रयस्तेनरकंयांतिदृष्ट्वाकन्यांरजस्वलां ८
यस्तांसमुद्वहेत्कन्यांब्राह्मणोमदमोहितः
असंभाष्योह्यपांक्तेयःसविप्रोवृषलीपतिः ९
यःकरोत्येकरात्रेणवृषलीसेवनंद्विजः
सभैक्ष्यभुग्जपन्नित्यंत्रिभिर्वर्षैर्विशुद्ध्यति १०
अस्तंगतेयदासूर्येचांडालंपतितंस्त्रियं
सूतिकांस्पृशतेचैवकथंशुद्धिर्विधीयते ११

वर्षकीकोकन्याहोकहतेहैं औ दश वर्ष पीछे रजस्वला हो जाती है ६

जो मनुष्य बारह वर्षकी को नहीं देता है उस मनुष्य के पितर महीने२ में उस लडकी के रजको रातदिन पीते हे ७

माता—पिता—और जेठा भाई ये तीनों रजस्वला कन्या को देख कर नरक में जाते हैं ८

जो मद से मोहित उस रजस्वला कन्या को बिवाहै वह संभाषण करने और पंक्ति में बैठाने योग्य नहीं क्योंकि वह शूद्राका पति है ९

जो द्विज एक रात भर वृषली (शूद्रा) का सेवन करे वह तीन वर्ष तक भिक्षा का अन्नखाता और जप करता हुआ शुद्ध होता है १०

यदि सूर्य के अस्त होने पर चांडाल पतित और सूतिका स्त्री इनका स्पर्श करे तो कैसे शुद्धि कही है ११

जातवेदंसुवर्णंचसोममार्गंविलोक्यच
ब्राह्मणानुमतश्चैवस्नानंकृत्वाविशुद्ध्यति १२
स्पृष्ट्वारजस्वलान्योन्यंब्राह्मणीब्राह्मणींतथा
तावत्तिष्ठेन्निराहारात्रिरात्रेणैवशुद्ध्यति १३
स्पृष्ट्वारजस्वलान्योन्यंब्राह्मणीक्षत्रियांतथा
अर्द्ध कृच्छ्रं चरेत्पूर्वापादमेकंत्वऽनंतरा १४
स्पृष्ट्वारजस्वलान्योन्यंब्राह्मणीवैश्यजांतथा
पादहीनंचरेत्पूर्वापादमेकमनंतरा १५
स्पृष्ट्वारजस्वलान्योन्यंब्राह्मणीशूद्रजांतथा
कृच्छ्रेणशुद्ध्यतेपूर्वाशूद्रादानेनशुद्ध्यति १६
स्नातारजस्वलायातुचतुर्थेहनिशुद्ध्यति

अग्नि—सोना—और चन्द्रमा का मार्ग इनको देखकर और ब्राह्मणों की आज्ञा से स्नान करके शुद्ध होता है १२

यदि रजस्वला ब्राह्मणी परस्पर स्पर्श करें तो शुद्धि (४ दिन) तक निराहार रहै और तीनकी रात से शुद्ध होती है १३

यदि ब्राह्मणी और क्षत्रिया परस्पर स्पर्श करलें तो ब्राह्मणी अर्द्ध कृच्छ्र और क्षत्रिया चौथाई कृच्छ्र करै १४

यदि रजस्वला ब्राह्मणी और वैश्या परस्पर स्पर्श करलें तो ब्राह्मणी पोन कृच्छ्र और वैश्या चौथाई कृच्छ्र करैं १५

यदि रजस्वला ब्राह्मणी और शूद्रा परस्पर स्पर्श करलें तो ब्राह्मणी एक कृच्छ्र से और शूद्रा दानसे शुद्ध होती है १६

जो रजस्वला स्त्री वह स्नान करके चौथे दिन शुद्ध होती है

कुर्याद्रजोनिवृत्तौतुदेवपित्र्यादिकर्मच १७
रोगेणयद्रजःस्त्रीणामन्वहंतुप्रवर्त्तते
नाऽशुचिःसाततस्तेनतत्स्याद्वैकारिकंमलं १८
साध्वाचारानतावत्स्याद्रजोयावत्प्रवर्त्तते
रजोनिवृत्तौगम्यास्त्रीगृहकर्मणिचैवहि १९
प्रथमेहनिचांडालीद्वितीयेब्रह्मघातिनी
तृतीयेरजकीप्रोक्ताचतुर्थेहनिशुद्ध्यति २०
आतुरेस्नानउत्पन्नेदशकृत्वोह्यनातुरः
स्नात्वास्नात्वास्पृशेदेनंततःशुद्ध्येत्सआतुरः २१
उच्छिष्टोच्छिष्टसंस्पृष्टःशुनाशूद्रेणवापुनः
उपोष्यरजनीमेकांपंचगव्येनशुद्ध्यति २२

वह रज के निवृत्त होने पर पितृ आदिकों का कर्म करै १७

जो रज रोग से प्रतिदिन स्त्रियों के जाता है उस रज से वह स्त्री अशुद्ध नहीं होती क्योंकि वह विकार का मल है १८

इतने रजो दर्शन रहै तब तक शुद्ध आचरण न करै रज की निवृत्ति होने परही गृहस्थ का काम और संग करने योग्य होती है १९

पहिले दिन चांडाली—दूसरे दिन ब्रह्महत्यारी—तीसरे दिन रजकी (धोबिन) जाननी और चौथे दिन शुद्ध होती है २०

यदि रोगी को स्नान करना पड़े तो नीरोग मनुष्य दश बार स्नान कर२ रोगी का स्पर्श करै तब वह आतुर शुद्ध होता है २१

यदि उच्छिष्ट वा कुत्ता—शूद्र स्पर्श करलें तो एकरात्र उपवास और पंचगव्य पीने से शुद्ध होता है २२

अनुच्छिष्टेनशूद्रेणस्पर्शेस्नानंविधीयते
तेनोच्छिष्टेनसंस्पृष्टःप्राजापत्यंसमाचरेत् २३
भस्मनाशुद्ध्यतेकांस्यंसुरयायन्नलिप्यते
सुरामात्रेणसंस्पृष्टंशुद्ध्यतेऽग्न्युपलेखनैः २४
गवाघ्रातानिकांस्यानिश्वकाकोपहतानिच
शुद्ध्यंतिदशभिःक्षारैःशूद्रोच्छिष्टानियानिच२ ५
गडूषंपादशौचंचकृत्वावैकांस्यभाजने
षण्मासान्भुविनिक्षिप्यउद्धृत्यपुनराहरेत् २६
आयसेष्वायसानांचसीसस्याग्नौविशोधनं
दंतमस्थितथाशृंगरौप्यंसौवर्णभाजनं २७

यदि जो उच्छिष्ट नहो ऐसा शूद्र स्पर्श करले तो स्नान ही करे यदि उच्छिष्ट शूद्र स्पर्श करले तो प्राजापत्य करे २३

जिसमें मदिरा न लगी हो ऐसा कांसी का पात्र भस्म से और जिसमें मदिरा लगी हो वह अग्नि में तपाने से शुद्ध होता है २४

गौ के सूंघे कुत्ता और कौआ के छूए-और शूद्र के झूठे कांसी के पात्र दशखारी वस्तु लगाने से शुद्ध होते हैं २५

कांसी के पात्र में कुल्ला करके और पैर धोकर उसे छः महीने पृथ्वी में गाड़ कर फिर निकासे और बर्ते २६

लोहे और कांसी के पात्रों की शुद्धि अग्नि से होती है दांत—हाड़—सींग—और चांदी सोने का पात्र २७

मणिपात्राणिशंखश्चेत्येतान्प्रक्षालयेज्जलैः
पाषाणेतुपनर्घर्षएषाशुद्धिरुदाहृता २८
मृन्मयेदहनाच्छुद्धिर्धान्यानांमार्जनादपि
वेणुवल्कलचीराणांक्षौमकार्पासवाससां २९
श्रौर्णानेत्रपटानांचप्रोक्षणाच्छुद्धिरिष्यते
मुंजोपस्करशूर्पाणांशणस्यफलचर्मणां ३०
तृणकाष्ठस्यरज्जूनामुदकाभ्युक्षणंमतम्
तूलिकाद्युपधानानिरक्तवस्त्रादिकानिच ३१
शोषयित्वार्कतापेनप्रोक्षणाच्छुद्धतामियुः
मार्जारमक्षिकाकीटपतंगकृमिदर्दुराः ३२
मेध्यामेध्यंस्पृशंतोपिनोच्छिष्टंमनुरब्रवीत्

और मणि का पात्र—और शंख इनको जलसे धोवे और पत्थर के पात्र को फिर घिसे तब शुद्ध होता है २८

मिट्टी के पात्र को अग्नि में पकाने से और अन्नों की मार्जन (सफाई) से और बांस वक्कल चीर (जीर्ण कपड़ा) रेशम और कपास के वस्त्र २९

ऊन और नेत्र (वेतआदि) के वस्त्र इनको धोने से शुद्धि मानी है—मूंजकी वस्तु-सूप-शण--फल और चाम ३०

तृण काठ रस्सी इनको जल छिड़कने से शुद्धि मानी है रुई छोटे २ अन्न और लाल वस्त्र आदि ३१

धूप में सुकाने और जल छिड़कने से शुद्धि को प्राप्त होते हैं बिलाव—मक्खी—कीट—पतंग—कृमि—मेंडक ३२

ये पवित्र वा अपवित्र वस्तु का स्पर्श करें तो वह वस्तु

महींस्पृष्ट्वागतंतोयंयश्चाप्यन्योन्यविप्रुषः ३३
भुक्तोच्छिष्टं तथास्नेहेनोच्छिष्टं मनुरब्रवीत्
तांबूलेक्षुफलान्येवभुक्तस्नेहानुलेपने ३४
मधुपर्केचसोमेचनोच्छिष्टं धर्मतोविदुः
रथ्याकर्दमतोयानिनावःपंथास्तृणानिच ३५
मारुतार्केणशुद्ध्यंतिपक्वेष्टकचितानिच
अदुष्टासंतताधारावातोद्धूताश्चरेणवः ३६
स्त्रियोवृद्धाश्चबालाश्चनदुष्यंतिकदाचन
क्षुतेनिष्ठीवनेचैवदंतोच्छिष्टेतथानृते ३७
पतितानांचसंभाषेदक्षिणांश्रवणांस्पृशेत्

उच्छिष्ट नहीं होता यह मनु ने कहा है पृथ्वी मे बहता जल और परस्पर बोलने की बूंद ३३

भोजनसे उच्छिष्ट स्नेह (घी आदि) ये उच्छिष्ट नहीहोते यह मनुने कहा है पान गांडा फल खाये स्नेह का लगा रहना ३४

मधुपर्क—सोम—(अमृत की लता) इनमें धर्म के अनुसार उच्छिष्ट नही है—रथ्या (गली) कीच—जल—नाव—मार्ग—तृण—ये और—३५

पकी इटों से चिने (मंदिर आदि) पवन और सूर्य से शुद्ध होते हैं—निरंतर मेघ की धारा—और पवन की उड़ाई धूल ३६

स्त्री—बाल—वृद्ध—ये कभी—दूषित नहीं हैं—छींकना थूकना—दांतों की झूंठ और झूठ बोलना ३७

और पतितों के संग बोलना—इनमें दाहने कान का

अग्निरापश्चवेदाश्चसोमसूर्यानिलास्तथा ३८
एतेसर्वेपिविप्राणांश्रोत्रेतिष्ठंतिदक्षिणे,
प्रभासादीनितीर्थानिगंगाद्याःसरितस्तथा ३९
विप्रस्यदक्षिणेकर्णे सान्निध्यंमनुरब्रवीत्
देशभंगप्रवासेवाव्याधिषुव्यसनेष्वपि ४०
रक्षेदेवस्वदेहादिपश्चाद्धर्मंसमाचरेत्
येनकेनचधर्मेणमृदुनादारुणेनवा ४१
उद्धरेद्दीनमात्मानंसमर्थोधर्ममाचरेत्
आपत्कालेतुनिस्तीर्णेशौचाऽचारंनचिंतयेत् ४२
शुद्धिं समुद्धरेत्पश्चात्स्वस्थोधर्मंसमाचरेत् ४३
इति पाराशरीये धर्मशास्त्रे सप्तमोऽध्यायः ७

स्पर्श करे—अग्नि—जल—वेद—चंद्रमा—सूर्य और अग्नि ३८

ये सब ब्राह्मण के दाहने कान में टिकते हैं और प्रभास आदि तीर्थ और गंगा आदि नदी ३९

इन सबका भी ब्राह्मण के दाहिने कानमें टिकना मनुने कहा है—देशका नाश परदेश रोग और व्यसन (जूआ मदिरा आदि) इनमें ४०

अपने देहकी रक्षा करै और पीछे धर्मका आचरण करै कोमल वा कठोर जिस किसी धर्मसे ४१

दीन आत्मा का उद्धार करै और समर्थ हुआ धर्म करै और आपत्काल बिताने पर सौच आचार की चिन्ता न करै ४२

देहकी शुद्ध करै और पीछेसे धर्मका आचरण करै ४३

इति पाराशरीये धर्म शास्त्रे ७ अध्याय

गवांबंधनयोक्त्रेषुभवेन्मृत्युरकामतः
अकामकृतपापस्यप्रायश्चित्तंकथंभवेत् १
वेदवेदांगविदुषांधर्मशास्त्रंविजानतां
स्वकर्मरतविप्राणांस्वकंपापंनिवेदयेत् २
अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामिउपस्थानस्यलक्षणं
उपस्थितोहिन्यायेनव्रतादेशनमर्हति ३
सद्योनिःसंशयेपापेनभुंजीतानुपस्थितः
भुंजानोवर्द्धयेत्पापंपर्षद्यत्रनविद्यते ४
संशयेतुनभोक्तव्यंयावत्कार्यविनिश्चयः
प्रमादस्तुनकर्त्तव्योयथैवासंशयस्तथा ५

यदि अज्ञान से बांधने वा खिलाने से गौओं की मृत्यु हो जाय—तो अज्ञान से किये पाप का प्रायश्चित्त कैसे हो १

वेद वेदांग और धर्मशास्त्र को जो जानते हों और जो अपने कर्म में तत्पर हों ऐसे ब्राह्मणों को अपना पाप निवेदन करै २

इससे आगे उपस्थान (किस प्रकार निवेदन करै) का स्वरूप कहता हु क्योंकि जो नीति से उपस्थान करता है वही व्रत के उपदेश योग्य है ३

यदि शीघ्रही पाप का निश्चय होजाय तो उपस्थान किये बिना भोजन न करै जो भोजन करता है वह पाप को बढाता है यदि वहां सभा न हो ४

यदि संशय होय तो कार्य के निश्चय तक भोजन न करै और असंदेह के अर्थ प्रमाद न करैं ५

कृत्वापापंनगूहेतगूह्यमानंविवर्द्धते
स्वल्पंवाथप्रभूतंवाधर्मविद्भ्योनिवेदयेत् ६
तेहिपापकृतावैद्याहंतारश्चैवपाप्मनाम्
व्याधितस्ययथावैद्याबुद्धिमंतोरुजापहाः ७
प्रायश्चित्ते समुत्पन्नेह्रीमान्सत्यपरायणः
मृदुरार्जवसंपन्नःशुद्धिं गच्छेतमानवः ८
सचैलंवाग्यतःस्नात्वाक्लिन्नवासाःसमाहितः
क्षत्रियोवाथवैश्योवाततःपर्षदमाव्रजेत् ९
उपस्थायततःशीघ्रमार्तिमान्धरणींव्रजेत्
गात्रैश्चशिरसाचैवनचकिंचिदुदाहरेत् १०

पाप को करके न छिपावे—क्योंकि छिपाया हुआ पाप बढ़ता है—थोड़ा पाप हो वा बहुत हो उसे धर्म के ज्ञाताओं को निवेदन करे ६

क्योंकि वेही पापके लिये वैद्य हैं और पाप के नाश करने वाले हैं—जैसे बुद्धिमान् वैद्य रोगी के रोग को दूर करने वाले होते हैं ७

प्रायश्चित्त के समय—लज्जासहित—और धर्म में तत्पर और बारंबार नम्र—जो मनुष्य है वह शुद्धि को प्राप्त होता है ८

मौन धार सचैल स्नान करके गीले वस्त्र पहिने साव धान होकर क्षत्री वा वैश्य फिर पर्षद (धर्म सभा) में जाय ९

समीप जाकर शीघ्र दुखी हुआ गात और शिरसे (साष्टांग) भूमी में पड़जाय और कुछ न कहे १०

सावित्र्याश्चापिगायत्र्याःसंध्योपास्त्यग्निकार्ययोः
अज्ञानात्कृषिकर्तारोब्राह्मणानामधारकाः ११
अव्रतानाममंत्राणांजातिमात्रोपजीविनां
सहस्रशःसमेतानांपरिषत्त्वंनविद्यते १२
यद्वदंतितमोमूढा मूर्खाधर्ममतद्विदः
तत्पापंशतधाभूत्वातद्वक्तॄनधिगच्छति १३
अज्ञात्वाधर्मशास्त्राणिप्रायश्चित्तंददातियः
प्रायश्चित्तीभवेत्पूतःकिल्बिषंपर्षदिव्रजेत् १४
चत्वारोवात्रयोवापियंब्रूयुर्वेदपारगाः
सधर्मइतिविज्ञेयोनेतरैस्तुसहस्रशः १५

सूर्य देवता जिसका ऐसी गायत्री—संध्या वंदन और अग्निहोत्र इनको जो न जाने और खेती करते हों वे नाम के ब्राह्मण हैं ११

जिनके व्रत और मंत्र नहीं हैं और जाति ही से जो जीते हैं ऐसे चाहे हजार भी जिसमें हों वह परिषत् (धर्म सभा) नहीं है १२

धर्म के न जानने वाले अज्ञानी मूर्ख जो (प्रायश्चित्त आदि) कहते हैं वह पाप सौ प्रकार का होकर उन कहने वालों को होता है १३

जो धर्म शास्त्रों को न जान कर प्रायश्चित्त देता है वह पापी तो पवित्र होजाता है और पाप पर्षद में जाता है १४

चार वा तीन वेद के पार जानने वाले जो कहैं वही धर्म जानना और इतर हजार भी जिसे कहैं वह नहीं १५

प्रमाणमार्गंमार्गंतोयेऽधर्मंप्रवदंतिवै
तेषामुद्विजतेपापंसद्भूतगुणवादिनां १६
यथाश्मनिस्थितंतोयंमारुतार्केणशुद्ध्यति
एवंपरिषदादेशान्नाशयेत्तद्गदुष्कृतं १७
नैवगच्छतिकर्तारंनैवगच्छतिपर्षदं
मारुतार्कादिसंयोगात्पापंनश्यतितोयवत् १८
चत्वारोवात्रयोवापियेवेदवंतोग्निहोत्रिणः
ब्राह्मणानांसमर्थायेपरिषत्साविधीयते १६
अनाहिताग्नयोयेन्येवेदवेदांगपारगाः
पंचत्रयोवाधर्मज्ञाःपरिषत्साप्रकीर्तिता २०

प्रमाण के मार्ग को ढूंढते हुये जो धर्म को कहते हैं सत्य के कहने वाले उनसे पाप कंपता है १६

जैसे पत्थर पर पड़ा जल पवन और सूर्य से शुद्ध होता है ऐसे परिपत् को आज्ञा से पाप भी नष्ट होता है १७

वह पाप न करने वाले पर जाते हैं और न सभापर किंतु पवन और सूर्य के संयोग से जलके समान नष्ट होजाते हैं १८

वेद के ज्ञाता अग्निहोत्री चार वा तीन जो ब्राह्मणों में समर्थ हो उसे परिषत् कहते हैं १९

जो अग्निहोत्री नहीं और वेद और वेदांग के पार को जानाने वाले और धर्म के ज्ञाता पांच वा तीन हों उसे परिषत् कहते हैं २०

मुनीनामात्मविद्यानांद्विजानांयज्ञयाजिनां
वेदव्रतेषुस्नातानामेकोपिपरिषद्भवेत् २१
पंचपूर्वंमयाप्रोक्तास्तेषांचासंभवेत्रयः
स्ववृत्तिपरितुष्टायेपरिषत्साप्रकीर्तिता २२
अतऊर्द्ध्वंतुयेविप्राःकेवलंनामधारकाः
परिषत्वंनतेष्वस्तिसहस्रगुणितेष्वपि २३
यथाकाष्ठमयोहस्तीयथाचर्ममयोमृगः
ब्राह्मणस्त्वनधीयानस्त्रयस्तेनामधारकाः २४
ग्रामस्थानंयथाशून्यंयथाकूपस्तुनिर्जलः
यथाहुतमनग्नौचअमंत्रोब्राह्मणस्तथा २५

मुनि और आत्मविद्या (वेदांत) के ज्ञाता और यज्ञ कराने वाले और वेद व्रतों के करने वाले ब्राह्मणों में यदि एक भी होय तो उसे भी परिषत् कहते हैं २१

जो पहिले मैं पांच कहे हैं यदि वे न मिलें तो अपनी वृत्ति (जीविका) करने वाले हों संतोषी हैं उसे भी परिषत् कहते हैं २२

इससे आगे जो ब्राह्मण केवल नाम के धारण करनेवाले हैं वे चाहें हजार गुणभी हों उनको परिषतपना नहीं होता२३

काठ का हाथी और चाम का मृग और विना पढा ब्राह्मण ये तीनों नामके ही धारण करने वाले हैं २४

जैसा शून्य का ग्राम—और जैसा जल के विना कूप—और जैसा विना अग्नि आहुति है ऐसा ही विनामंत्र (वेद) ब्राह्मण है २५

यथापंढोऽफलःस्त्रीषुयथागौरुपराफला
यथाचाज्ञेफलंदानंतथाविप्रोऽनृचोफलः २६
चित्रकर्मयथानेकैरंगैरुन्मील्यतेशनैः
ब्राह्मण्यमपितद्वद्धिसंस्कारैर्मंत्रपूर्वकैः २७
प्रायश्चित्तंप्रयच्छंतियेद्विजानामधारकाः
तेद्विजाःपापकर्माणःसमेतानरकंययुः २८
येपठंतिद्विजावेदंपंचयज्ञरताश्चये
त्रैलोक्यंतारयंत्येवपंचेंद्रियरताअपि २६
संप्रणीतःश्मशानेषुदीप्तोग्निःसर्वभक्षकः
तथाचवेदविद्विप्रःसर्वभक्षोऽपिदैवतं ३०

जैसे नपुंसक स्त्रियों में वृथा है और जैसे ऊसर गौ वृथा है जैसे मूर्ख को दान देना वृथा है ऐसेही वेदहीन ब्राह्मण वृथा है २६

जैसे चित्राम का चित्र रंग अनेक रंगों से धनै २होता है इसी प्रकार मंत्रों के द्वारा अनेक संस्कारों से ब्राह्मणत्व (ब्राह्मण पना) होता है २७

जो नाम धारने वाले ब्राह्मण प्रायश्चित्त देते हैं वे सब पाप के कर्त्ता इकट्ठे होकर नरक में जाते हैं २८

जो ब्राह्मण वेद पढ़ते हैं वा जो पंच यज्ञ में तत्पर हैं— पांचों इंद्रियों के रोकने में तत्पर हैं वे त्रिलोकी को भी तारते हैं २६

जैसे ज्वलती हुई श्मशान की अग्नि सबकी भक्षक भी संप्रणीत (देवता) है इसी प्रकार सर्व भक्षक भी वेद का ज्ञाता देवता ही है ३०

अमेध्यानितुसर्वाणिप्रक्षिप्यंतेयथोदके
तथैवकिल्बिषंसर्वंप्रक्षिपेच्चद्विजानले ३१
गायत्रीरहितोविप्रःशूद्रादप्यशुचिर्भवेत्
गायत्रीब्रह्मतत्वज्ञाःसंपूज्यंतेजनैर्द्विजाः ३२
दुःशीलोपिद्विजःपूज्योनतुशूद्रोजितेंद्रियः
कःपरित्यज्यगांदुष्टांदुहेच्छीलवतींखरीं ३३
धर्मशास्त्ररथारूढावेदखड्गधराद्विजाः
क्रीडार्थमपियद्ब्रूयुःसधर्मःपरमःस्मृतः ३४
चातुर्वेदद्वोविकल्पीचअंगविद्धर्मपाठकः
त्रयश्चाश्रमिणोमुख्याःपर्षदेषादशावरा ३५

जैसे संपूर्ण अपवित्र वस्तु जल में फेंकी जाती हैं तैसेही संपूर्णपाप ब्राह्मण रूप अग्नि में फेंक दे ३१

गायत्री से हीन ब्राह्मण शूद्र से भी अशुद्ध होता है— और गायत्री और वेद के तत्व के ज्ञाता ब्राह्मणों को मनुष्य पूजते हैं ३२

दुष्ट स्वभाव वाला भी ब्राह्मण पूजने योग्य हैं और जितेन्द्रिय भी शूद्र नहीं—क्योंकि ऐसा कौन है जो दुष्ट गौ को छोड़कर सुशीला गधी को दुहे ३३

धर्मशास्त्र रूपी रथ में बैठे—वेद रूपी खड्ग को धारे— ब्राह्मण क्रीड़ा से भी जो कहैं वह उत्तम धर्म कहा है ३४

चारों विद्याओं का ज्ञाता—संदेह रहित—अंगों का ज्ञाता—धर्मशास्त्र का पाठक—और आश्रम वाले तीन मुख्य, यह कम से कम दशकी पर्षत् होती है ३५

राज्ञश्चानुमतेस्थित्वाप्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत्
स्वयमेवनकर्तव्यंकर्तव्यास्वल्पनिष्कृतिः ३६
ब्राह्मणांस्तानतिक्रम्यराजाकर्तुंयदीच्छति
तत्पापंशतधाभूत्वाराजानमनुगच्छति ३७
प्रायश्चित्तं सदादद्याद्देवतायतनाग्रतः
आत्मकृच्छ्रं ततःकृत्वाजपेद्वैवेदमातरं ३८
सशिखंवपनंकृत्वात्रिसंध्यमवगाहनं
गवांमध्येवसेद्रात्रौदिवागाश्चाप्यनुव्रजेत् ३९
उष्णेवर्षतिशीतेवामारुतेवातिवाभृशं
नकुर्वीतात्मनस्त्राणंगोरकृत्वातुशक्तितः ४०

राजा की अनुमति में होकर प्रायश्चित्त बतावे आपही न करै परंतु स्वल्प प्रायश्चित्त तो स्वयं भी करले ३६

उन ब्राह्मणों का अवलंबन करके जो राजा किया चाहै तो वह पाप सौ प्रकारका होकर राजा को लगता है ३७

सदैव देवता के मन्दिर के आगे प्रायश्चित्त दे फिर अपना कृच्छ्र (प्रायश्चित्त) करके गायत्री जपै ३८

शिखा सहित मुंडन करके त्रिकाल स्नान करै और रात्रि को गौओं के बीच वसे और दिन में गौओं के पीछे गमन करै ३९

अत्यंत उष्णकाल में—वर्षा में—शीतकाल में—और अंत्यज—पवनमें—इतने अपनी रक्षा का उपाय न करै जब तक शक्ति के अनुसार गौ की रक्षा न करले ४०

आत्मनोयदिवाऽन्येषांगृहेक्षेत्रेथवाखले
भक्षयंतींनकथयेत्पिबंतंचैववत्सकं ४१
पिवंतीषुपिवेत्तोयंसंविशंतीषुसंविशेत्
पतितांपंकलग्नांवासर्वप्राणैःसमुद्धरेत् ४२
ब्राह्मणार्थेगवार्थेवायस्तुप्राणान्परित्यजेत्
मुच्यतेब्रह्महत्यायागोप्तागोब्राह्मणस्यच ४३
गोवधस्यानुरूपेणप्राजापत्यंविनिर्दिशेत्
प्राजापत्यंततःकृच्छ्रं विभजेतचतुर्विधं ४४
एकाहमेकभक्ताशीएकाहंनक्तभोजनः
अयाचितश्चैकमहरेकाहंमारुताशनः ४५
दिनद्वयंचैकभक्तोद्विदिनंनक्तभोजनः

अपने अथवा अन्य के घरवाले खेत में खाती हुई गौ को न वतावै और दूध पीते बछड़े को भी न बतावे ४१

गौ ओं के जल पीने पर जल पीवे और सोने पर सोवे और कीच में पड़ी गौ को सब प्राणों से उठा वे ४२

जो ब्राह्मण और गौओं के निमित्त प्राणों को त्यागे अथवा गौ और ब्राह्मण की रक्षा करै वह ब्रह्महत्या सें भी छूटता है ४३

गै के वध के अनुसार प्राजापत्य प्रायश्चित्त बतावे फिर इस प्रायश्चित्त को चार भाग में वाटैं ४४

एक दिन एक भक्त (अन्न) खा—और एक दिन नक्त भोजन करै—और एक दिन विना मांगे जो मिलै उसे खा—और एक दिन पवन कोही खा ४५

दो दिन एक भक्त खा—फिर तीन दिन नक्त भोजन करै

दिनद्वयमयाचीस्याद्द्विदिनंमारुताशनः ४६
त्रिदिनंचैकभक्ताशीत्रिदिनंनक्तभोजनः
दिनत्रयमयाचीस्यात्त्रिदिनंमारुताशनः ४७
चतुरहंत्वेकभक्ताशीचतुरहंनक्तभोजनः
चतुर्दिनमयाचीस्याच्चतुरहंमारुताशनः ४८
प्रायश्चित्तेततस्तीर्णेकुर्याद्ब्राह्मणभोजनं
विप्राणांदक्षिणांदद्यात्पवित्राणिजपेद्द्विजः ४९
ब्राह्मणान्भोजयित्वातुगोघ्नःशुद्ध्येन्नसंशयः
इतिपाराशरीयेध० अष्टमोऽध्यायः ८
गवांसंरक्षणार्थायनदुष्येद्रोधबंधयोः

फिर दो दिन बिना मांगे जो मिले उसे खा—फिर दो दिन पवन खा ४६

फिर तीन दिन एक भक्त खा—फिर तीन दिन नक्त (रात्र) भोजन करै—फिर तीन दिन विना मांगे जो मिले उसे खा फिर तीन दिन पवन खा ४७

फिर चार दिन एक भक्त खा—और चार दिन नक्त भोजन करै—फिर चार दिन विना मांगे जो मिले उसे खा—और चार दिन पवन को ही खा ४८

प्रायश्चित्त के किये पीछे द्विज ब्राह्मणों को भोजन करावे और दक्षिणा दे और पवित्रों (गायत्री आदि) को जपे ४९

ब्राह्मणों को भोजन करा कर गोवध का करने वाला शुद्ध होता है इसमें संशय नहीं ५०

इतिपाराशरीये धर्म शास्त्रे ८ अध्यायः

तद्वधंतुनतंविंद्यात्कामात्कामकृतंतथा १
दंडादूर्ध्वंयदान्येनप्रहाराद्यदिपातयेत्
प्रायश्चित्तंतदाप्रोक्तंद्विगुणंगोवधेचरेत् २
रोधबंधनयोक्त्राणिघातश्चेतिचतुर्विधं
एकपादंचरेद्रोधेद्वौपादौबंधनेचरेत् ३
योक्त्रेषुतुत्रिपादंस्याच्चरेत्सर्वंनिपातने
गोघाटेवागृहेवापिदुर्गेष्वप्यसमस्थले ४
नदीष्वथसमुद्रेषुत्वन्येषुचनदीमुखे
दग्धदेशेमृतागावःस्तंभनाद्रोधउच्यते ५

गौओं की रक्षा के लिये रोकने और बांधने में गौ मरजाय तो वह गोबध नहीं जानना चाहै वह बांधने की इच्छा से भी हो १

दंड से पीछे यदि दूसरे प्रहारसे गौ को मारे तो गोबध में कहे से दूना प्रायश्चित्त करै २

रोकना बंधबांधना—योक्त्र(जोत आदि) और मारना यह चार प्रकार का है रोकने में एक पाद—बंधन में दो पाद ३

योक्त्र में तीन पाद और मारने में संपूर्ण प्रायश्चित्त करै गौ घाट में—घर में—दुर्ग (जहां सेना जा सके) में और ऊंची नीची जगा में ४

नदीयों में—समुद्र में—वा अन्य किसी जगे में—नदीके मुखमें—जले हुए देश में इनमें रोकने से गौ मरे तो उसे रोध कहते हैं ५

योक्त्रदामकरारैश्चकंठाभरणभूषणैः
गृहेचापिवनेवापिबद्धःस्याद्गौर्मृतोयदि ६
तदेवबंधनंविद्यात्कामाकामकृतंचयत्
हलेवाशकटेपंक्तौपृष्ठेवापीडितोनरैः ७
गोपतिर्मृत्युमाप्नोतियौक्त्रोभवतितद्वधः
मत्तःप्रमत्तउन्मत्तश्चेतनोवाऽप्यचेतनः ८
कामाकामकृतोक्रोधोदंडैर्हन्यादथोपलैः
प्रहतावामृतावापितद्धिहेतुर्निपातने ९
अंगुष्ठमात्रस्थूलस्तुबाहुमात्रःप्रमाणतः
आर्द्रस्तुसपलाशश्चदंडइत्यभिधीयते १०

जोत—रस्सी—हाथ—भारा कंठ की शोभा का भूषण इनसे घर वा वन में बंधी हुई गौ यदि मरजाय तो ६

ज्ञान वा अज्ञान से किये उसी को बंधन जानना—हलमें वा गाड़ी में—वा पंक्ति में पीठ में मनुष्यों से पीड़ा को प्राप्त हुआ ७

बैल मरजाय तो उसवधको योक्त्र कहा है—मत्त—प्रमत्त उन्मत्त—चेतन वा अचेतन जो मनुष्य ८

ज्ञान वा अज्ञान से क्रोध करके दंड से वा पत्थर से गौपर प्रहार करै और वह गौ मरजाय तो उसे निपातन (मरण) का हेतु कहते हैं ९

अंगूठे भर मोटा और भुजा कितना लंबा—गीला—और पत्तों वाला जो हो उसे दंड कहते हैं १०

मूर्छितःपतितोवापिदंडेनाभिहतःसतु
उत्थितस्तुयदागच्छेत्पंचसप्तदशाथवा ११
ग्रासंवायदिगृह्णीयात्तोयंवापिपिबेद्यदि
पूर्वंव्याध्युपसृष्टश्चेत्प्रायश्चित्तंनविद्यते १२
पिंडस्थेपादमेकंतुद्वौपादौगर्भसंमिते
पादोनंव्रतमुद्दिष्टंहत्वागर्भमचेतनं १३
पादेंगरोमवपनंद्विपादेश्मश्रुणोपिच
त्रिपादेतुशिखावर्जंसशिखंतुनिपातने १४
पादेवस्त्रयुगंचैवद्विपादेकांस्यभाजनं
त्रिपादेगोवृषंदद्याच्चतुर्थेगोद्वयंस्मृतं १५

मूर्छा को प्राप्त हुआ—वा पडा—दंड से ताड़ा हुआ जे पांच वा सात पैर उठकर चल पड़े ११

अथवा एकग्रास खाले वा जल पीले अथवा पहिला उसे कोई रोग होय तो प्रायश्चित्त नही हैं १२

यदि देह में गर्भ की पींडी हो वा गर्भ ही हो वा अचेतन गर्भ हो तो क्रमसे एक पाद—दो पाद—और पोन व्रत कहा है १३

पाद में देह की रोम मुंडावे—दोपाद में श्मश्रु भी मुंडावे—त्रिपाद (पोन) में शिखा को छोड़कर मुंडावे—और निपात में शिखा सहित मुंडावे १४

पाद में दो वस्त्र दे—दो पाद में कांसी का पात्र दे—त्रिपाद में बैल दे—और चौथे में दो गौ दे १५

निष्पन्नसर्वगात्रेषुदृश्यतेवासचेतनः
अंगप्रत्यंगसंपूर्णोद्विगुणंगोव्रतंचरेत् १६
पाषाणेनैवदंडेनगावोयेनाभिघातिताः
शृंगभंगेचरेत्पादंद्वौपादौनेत्रघातने १७
लांगूलेपादकृच्छ्रंतुद्वौपादावस्थिभंजने
त्रिपादंचैवकर्णेतुचरेत्सर्वंनिपातने १८
शृंगभंगेस्थिभंगेचकटिभंगेतथैवच
यदिजीवतिषण्मासान्प्रायश्चित्तंनविद्यते १९
व्रणभंगेचकर्तव्यःस्नेहाभ्यंगस्तुपाणिना
यवसश्चोपहर्तव्योयावद्दृढबलोभवेत् २०

यदि सब अंग हैं जिसमें ऐसा चेतन और अंग और प्रत्यंग से पूर्ण गर्भ दीखे तो उसके गिराने में गो वध से दूना प्रायश्चित्त करै १६

पत्थर वा दंड से जिसने गौ ताड़ी हो उससे यदि सींग टूट जाय तो पाद और नेत्र फटजाय तो दो पाद प्रायश्चित्त करै १७

पूंछ टूटजाय तो पाद कृच्छ्र—हाड़ टूटे तो दो पाद—कान टूटे तो तीन पाद और मरजाने पर संपूर्ण प्रायश्चित्त करै १८

सींग टूटने पर वा हाड़—कटि (पीठ) टूटने पर छः महीने जीवे तो प्रायश्चित्त नहीं है १९

घाव से यदि कोई अंग भंग होजाय तो स्नेह से हाथ से उस घाव को दूर करै और इतना बैल दृढवान् हो तब तक घास खिलावे २०

यावत्संपूर्णसर्वांगस्तावत्तं पोषयेन्नरः
गोरूपंब्राह्मणस्याग्रेनमस्कृत्वाविसर्जयेत् २१
यद्यसंपूर्णसर्वांगोहीनदेहोभवेत्तदा
गोघातकस्यतस्यार्द्धं प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् २२
काष्ठलोष्ठकपाषाणैःशस्त्रेणैवोद्धतोबलात्
व्यापादयतियोगांतुतस्यशुद्धिं विनिर्दिशेत् २३
चरेत्सांतपनंकाष्टेप्राजापत्यंतुलोष्ठके
तप्तकृच्छ्रं तुपाषाणेशस्त्रेणैवातिकृच्छ्रकं २४
पंचसांतपनेगावःप्राजापत्येतथात्रयः
तप्तकृच्छ्रेभवंत्यष्टावतिकृच्छ्रेत्रयोदश २५

इतने वह संपूर्ण अंगवाला हो तब तक मनुष्य उसका पोषण करे फिर गौ को ब्राह्मण के आगे नमस्कार करके छोड़ दे २१

यदि सब अंगों से संपूर्ण न हो और हीनदेह (दुबला) हो जाय तो गौ के मारने वाले से आधा प्रायश्चित्त उसे बतावे २२

काठ—ढेला—पत्थर—वा शस्त्र से जो उद्धत मनुष्य गौ को मारे उसकी शुद्धि इस प्रकार बतावे २३

काठ से मारने में सांतपन—ढेले से मारने में प्राजापत्य पत्थर से मारने में तप्तकृच्छ्र—शस्त्र से मारने में अति कृच्छ्र करै २४

और सांतपन में पांचगौ—प्राजापत्य में तीन गौ तप्तकृच्छ्र में आठ गौ—और अतिकृच्छ्र में तेरह गौ दे २५

प्रमापणे प्राणभृतांदद्यात्तत्प्रतिरूपकं
तस्यानुरूपंमूल्यंवादद्यादित्यब्रवीन्मनुः २६
अन्यत्रांकनलक्ष्मभ्यांवाहनेमोचनेतथा
सायंसंगोपनार्थंचनदुष्येद्रोधबंधयोः २७
अतिदाहेतिवाहेचनासिकाभेदनेतथा
नदीपर्वतसंचारेप्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् २८
अतिदाहेचरेत्पादंद्वौपादौवाहनेचरेत्
नासिक्येपादहीनंतुचरेत्सर्वंनिपातने२९
दहनात्तु विपद्येत अनड्वान्योक्त्रयंत्रितः
उक्तंपराशरेणैवह्येकंपादंयथाविधि ३०

प्राणियों के मारने में तिस २ का प्रति रूपक (जिसे मारे वही) दे अथवा उसका मोल दे यह मनु ने कहा है २६

आंकने और चिन्ह करने को छोड़ कर—वाहन अथवा छोड़ने में अथवा सायंकाल में रक्षा के लिये रोकने बांधने में दोष नहीं है २७

अत्यन्त दग्ध करने में वा अत्यन्त जोतने में—वा नाकके छेदन में—नदी और पर्वत पर जुताने पर यह प्रायश्चित बतावे २८

कि अत्यन्त दग्ध करने में पाद और अत्यन्त वाहन में दो पाद और नासिका के भेदन में तीन पाद और मारने में सब प्रायश्चित करै २९

यदि जोत में बंधा बैल अग्नि से मरजाय तो पाराशर ऋषि के कहे चौथाई प्रायश्चित को विधि से करै ३०

रोधनंबंधनंचैवभारप्रहरणंतथा
दुर्गप्रेरणयोक्त्रंचनिमित्तानिवधस्यषट् ३१
बंधपाशसुगुप्तांगोम्रियतेयदिगोपशुः
भुवनेतस्यपापःस्यात्प्रायश्चित्तार्द्धमर्हति ३२
ननारिकेलैर्नचशाणवालैर्नचापिमौंजैर्नचवल्कशृंखलैः
एतैस्तुगावोननिबंधनीयाबध्वातुतिष्ठेत्परशुंगृहीत्वा ३३
कुशैःकाशैश्चबध्नीयाद्गोपशुंदक्षिणामुखं
पाशलग्नाग्निदग्धेषुप्रायश्चित्तंनविद्यते ३४
यदितत्रभवेत्काष्ठंप्रायश्चित्तंकथंभवेत्
जपित्वापावनींदेवींमुच्यतेतत्रकिल्बिषात् ३५

ये छः वध के कारण हैं रोकना बांधना भार प्रहार (मारना) दुर्ग (जाने के अयोग्यमें) प्रेरण और योक्त्र (जोत) ३१

यदि बंध—पाश (रस्सी) से बंधी गौ वा पशु मरजाय तो उस मनुष्य के घर में पाप होता है इससे वह आधे प्रायश्चित्त के योग्य है ३२

नारीयल—शण—मूंज—बक्कल—सांकल—इनसे गौओं को न बांधे यदि बांधे तो परशु (कुहाड़ा) लिये खडा रहै ३३

पशु का मुख दक्षिण को करके बांधे कुशा और काश से यदि पास में लगी अग्निसे पशु दग्ध होजाय तो प्रायश्चित्त नहीं है ३४

जो गोशाला में काठ पडा होय तो प्रायश्चित्त कैसे हो—ऐसी जगे पवित्र गायत्री का जप करके पापसे छुटता है ३५

प्रेरयन्कूपवापीषुवृक्षच्छेदेपुपातयन्
गवाशनेषुविक्रीणांस्ततःप्राप्नोतिगोवधं ३६
आराधितस्तुयःकश्चिद्भिन्नकक्षोयदाभवेत्
श्रवणौहृदयंभिन्नंमग्नोवाकूपसंकटे ३७
कूपादुत्क्रमणेचैवभग्नोवाग्रीवपादयोः
सएवम्रियतेतत्रत्रीन्पादांस्तुसमाचरेत् ३८
कूपखातेतटाबंधे नदीबंधे प्रपासुच
पानीयेपुविपन्नानांप्रायश्चित्तं नविद्यते ३९
कूपखातेतटाखातेदीर्घखातेतथैवच
स्वल्पेषुधर्मखातेषुप्रायश्चित्तंनविद्यते ४०

कूप और बावड़ी में प्रेरना (धकाता) और वृक्षों के काटते समय गिराता और गौ कोजोभक्षण करें उनको बचता हुआ मनुष्य गोवध के ही प्रायश्चित्त को प्राप्त होजाता है ३६

यदि सेवाकरते समय किसी बैल की कुक्षि बींधजाय वा कांन हृदा बींधजांय वा कूप के संकट में बैल बींधजाय ३७

अथवा कूप के कूंदने में नाड वा पैर बींधजाय और फिर वह बैल मरजाय तो तीन पाद करै ३८

कूप के खोदने में वा कूप के पास बांधने में वा नदीपर बांधने में वाप्याउ पर बांधने में वा जलों में जो बैल मरगये हों उनका प्रायश्चित्त भी नहीं है ३९

कूप–तट–दीर्घ (बड़ा जल का स्थान) वा छोटे २ धर्म के जो खात (खोदे हुए) हैं उनमें भी मरने से प्रायश्चित्त नहीं है ४०

वेश्मद्वारेनिवासेषुयोनरःखातमिच्छति
स्वकार्येगृहखातेषुप्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ४१
निशिवंधनिरुद्धेषुसर्पव्याघ्रहतेषुच
अग्निविद्युद्विपन्नानांप्रायश्चित्तं नविद्यते ४२
ग्रामघातेशरौघेणवेश्मभंगनिपातने
अतिवृष्टिहतानांचप्रायश्चित्तं नविद्यते ४३
संग्रामेपरहतानांचयेदग्धावेश्मकेषुच
दावाग्निग्रामघातेषुप्रायश्चित्तं नविद्यते ४४
यंत्रितागौश्चिकित्सार्थंमूढगर्भविमोचने
यत्नेकृतेविपद्येतप्रायश्चित्तं नविद्यते ४५

यदि घरके द्वार पर वा घर में जो नर खोदा चाहैं तो और अपने लिये घर के खोदने में भी प्रायश्चित्त बता वे ४१

रातके बांधने की रोक से वा सांपसिंहा से वा अग्नि—बिजली से जो बैल मरे होय तो प्रायश्चित्तनही है ४२

ग्राम के घात (हत्या) से वाण के वेग से—घरके भंग (गिराना) वा गिरने से वा अत्यन्त बर्षा से जो मरे हों तोभी प्रायश्चित्त नहीं है ४३

संग्राम में जो मरे हों वा घरमें जो जलगये हों वनकी अग्नि और ग्राम के घात (पीडा) से जो जलगये हों तोभी प्रायश्चित्त नहीं है ४४

मरे गर्भ के निकासने के लिये जो गौ बांधी हो यदि यत्न करने पर भी मरजाय तो प्रायश्चित्त नही है ४५

व्यापन्नानां बहूनां च रोधने बंधनेपि वा
भिषङ्मिथ्याप्रचारे च प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ४६
गोवृषाणां विपत्तौ च यावंतः प्रेक्षका जनाः
अनिवारयतां तेषां सर्वेषां पातकं भवेत् ४७
एको हतो यैर्बहुभिः समेतैर्न ज्ञायते यस्य हतोभिघातात्
दिव्येन तेषामुपलभ्य हंता निवर्त्तनीयो नृपसन्नियुक्तैः ४८
एका चेद्बहुभिः काचिद्दैवाद्व्यापादिता क्वचित्
पादं पादं तु हत्यायाश्चरेयुस्ते पृथक् पृथक् ४९
हते तु रुधिरं दृश्यं व्याधिग्रस्तः कृशो भवेत्

बहुत मनुष्यों ने मारी हों वा रोकने से वा बांधने से मरी हों वा वैद्य की अन्यथा चिकित्सा से मरी हों तो प्रायश्चित्त बतावे ४६

गौ और बैलों के मारने में जितने मनुष्य देखने वाले हों और वे मने न करें तो सबको पातक होता है ४७

यदि एक को बहुतों ने मारा हो और यह प्रतीत नहो कि किसके प्रहार से मरा है तो दिव्य (ज्योतिष आदि) से उन में से मारने वाले को जानकर इतरों को, सत्पुरुषों समेत राजा पाप से निवृत्त करै ४८

यदि दैवाधीन कभी एक कोई गौ बहुतों ने मारी हो तो वे हत्या का पाद २ प्रायश्चित्त पृथक् २ करें ४९

और उनमें मारने वाले को ऐसे ढूंढे—कि जिसके मारने पर रुधिर निकसे—रोग होजाय—कृश होजाय—वा देखेपर

ललाभवतिद्वष्टेपुएवंमन्वेषणांभवेत् ५०
ग्रासार्थंचोदितोवापिअध्वानंनैवगच्छति
मनुनाचैवमेकेनसर्वशास्त्राणिजानता ५१
प्रायश्चित्तं तुतेनोक्तंगोघ्नश्चांद्रायणंचरेत
केशानांरक्षणार्थायद्विगुणंव्रतमाचरेत् ५२
द्विगुणेव्रतआदिष्टेदक्षिणाद्विगुणाभवेत्
राजावाराजपुत्रोवाब्राह्मणोवाबहुश्रुतः ५३
अकृत्वावपनंतेषांप्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत्
यस्यनद्विगुणन्दानङ्केशश्चपरिरक्षितः ५४
तत्पापंतस्यतिष्ठेतत्यक्त्वाचनरकंव्रजेत्
यत्किंचित्क्रियतेपापंसर्वंकेशेषुतिष्ठति ५५

ललाट पकने लगे ५०

और जिसकी हती गौ ग्रास के लिये भेजी मार्ग भी न चले सब शास्त्र जानने वाले मनु ने उसका ५१

प्रायश्चित्त यह कहा है कि वह गो हत्यारा चांद्रायण करै यदि अपने केशों को रक्खा चाहै तो दूना व्रत करै ५२

और दूने व्रत में दूनी ही दक्षिणा होती है—राजा वा राजा का पुत्र—वा बहुत पढालिखा ब्राह्मण ५३

उनका मुंडन कराये विना प्रायश्चित्त बतावे जिसका दान दूना नही हो और केशभी रक्खे जांय ५४

वह उसका पाप शेष रहता है और वह देह को त्यागकर नरक में जाता है जो कुछ पाप किया जाता है वह सब केशोंमें टिकता है ५५

सर्वान्केशान्समुद्धृत्यछेदयेदंगुलिद्वयं
एवंनारीकुमारीणांशिरसोमुंडनंस्मृतं ५६
नस्त्रियांकेशवपनंनदूरेशयनासनं
नचगोष्ठे वसेद्रात्रौंनदिवागाअनुव्रजेत् ५७
नदीषुसंगमेचैवअरण्येषुविशेषतः
नस्त्रीणामजिनंवासोव्रतमेवंसमाचरेत् ५८
त्रिसंध्यंस्नानमित्युक्तंसुराणामर्चनंतथा
बंधुमध्येव्रतंतासांकृच्छ्चांद्रायणादिकं ५९
गृहेषुसततंतिष्ठेच्छुचिर्नियममाचरेत्
इहयोगोबधं कृत्वाप्रच्छादयितुमिच्छति ६०
सयातिनरकंघोरंकालसूत्रमसंशयं

सब केशों को ऊपर को उठार कर दो २ अंगुल काटे इस प्रकार स्त्रियों के शिरका मुण्डन कहा है ५६

स्त्री के केशों का मुंडन नही होता और न पति आदि से दूर सोना और बैठना होता—और न स्त्री रात्रि में गोशाला में बस और न दिन में गौओं के पीछे चले ५७

नदीयों के संग में और विशेषकर वनों में स्त्री बसे और न मृगछाला का धारण करै किंतु इसप्रकार ब्रत करैं कि ५८

त्रिकाल स्नान और देवताओं का पूजन करैं और संपूर्ण बंधुओं के बीचही कृच्छ्र और चांद्रायण करै ५९

और घर में निरंतर रहै और शुद्ध हुई नियम करैं जो यहां गौ का बध करके जो छिपाया चाहता है ६०

वह निः संदेह काल सूत्र घोर नरक में जाता है और

विमुक्तोनरकात्तस्मान्मर्त्यलोकेप्रजायते ६१
क्लीबोदुःखीचकुष्ठीचसप्तजन्मानिवैनरः
तस्मात्प्रकाशयेत्पापंस्वधर्मंसततंचरेत् ६२
स्त्रीबालभृत्यगोविप्रेष्वतिकोपंविवर्जयेत् ६३
इतिपाराशरीयेधर्मशास्त्रेनवमोऽध्यायः ९
चातुर्वर्ण्येषुसर्वेषुहितांवक्ष्यामिनिष्कृतिं
अगम्यागमनेचैवशुद्धौचांद्रायणंचरेत् १
एकैकंह्रासयेद्ग्रासंकृष्णेशुक्लेचवर्द्धयेत्
अमावास्यांनभुंजीतह्येषचांद्रायणोविधिः २
कुक्कुटांडप्रमाणंतुग्रासंवैपरिकल्पयेत्

उस नरक में से निकल कर मृत्यु लोक में पैदा होता है ६१

और वह सात जन्म तक नपुंसक- दुखी - कुष्टी—होता है तिससे पाप को प्रकाश करै और अपना धर्म निरंतर करै ६२

और स्त्री बालक- भृत्य—गौ—और ब्राह्मण इन पर अत्यन्त कोप को बर्ज दे ६३

इति पाराशरीये धर्मशास्त्रे ९ अध्यायः

सब चारों बर्णों के मनुष्यों की निष्कृति (प्रायश्चित्त) कहता हूं—गमन करने के अयोग्य स्त्री के संग गमन करे तो शुद्धि के लिये चांद्रायण करे १

कृष्ण पक्ष में एक २ ग्रास कम करै और शुक्ल पक्ष में एक२ ग्रास बढ़ावे और अमावस को भोजन न करै यह चांद्रायण की बिधि है २

और मुरगे के अन्डेके समान ग्रास बनावे इससे अन्यथा

अन्यथा जातदोषेण न धर्मो न च शुद्ध्यते ३
प्रायश्चित्ते ततश्चीर्णे कुर्याद्ब्राह्मणभोजनं
गोद्वयं वस्त्रयुग्मं च दद्याद्विप्रेषु दक्षिणां ४
चांडालीं वा श्वपाकीं वा अनुगच्छति यो द्विजः
त्रिरात्रमुपवासी च विप्राणामनुशासनात् ५
सशिखं वपनं कृत्वा प्राजापत्यद्वयं चरेत्
ब्रह्मकूर्चं ततः कृत्वा कुर्याद्ब्राह्मणतर्पणं ६
गायत्रीं च जपेन्नित्यं दद्याद्गोमिथुनद्वयं
विप्राय दक्षिणां दद्याच्छुद्धिमाप्नोत्यसंशयं ७
गोद्वयं दक्षिणां दद्याच्छुद्धिं पाराशरोऽब्रवीत्
क्षत्रियो वाथ वैश्यो वा चांडालीं गच्छतो यदि ८

करने के दोष से न धर्म है और न शुद्धि है ३

फिर प्रायश्चित्त किये पर ब्राह्मणों को भोजन करावे और दो गौ और वस्त्र ब्राह्मणों को दक्षिणा दे ४

जो द्विज चांडाली वा श्वपाकी के संग गमन करता है वह ब्राह्मणों की आज्ञा से तीन रात्र उपवास करके ५

और शिखा समेत मुंडन कराके दो प्राजापत्य करै फिर ब्रह्मकूर्च करके ब्राह्मणों को तृप्त करै ६

और नित्य गायत्री जपै और दो गौओं के मिथुन (२ दो बैल) दान करै और ब्राह्मण को दक्षिणा दे तो निःसंदेह शुद्धि को प्राप्त होता है ७

और दो गौ दक्षिणा दे यह शुद्धि पाराशर ने कही है— क्षत्री वा वैश्य यदि चांडाली के संग गमन करैं तो ८

प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रं चतुर्गोमिथुनंददेत्
मातरंयदिगच्छेत्तुभगिनींस्वसुतांतथा १०
एतास्तुमोहितोगत्वात्रीणिकृच्छ्राणिसंचरेत्
चांद्रायणत्रयंकुर्याच्छिरच्छेदेनशुद्ध्यति ११
मातृष्वसृगमेचैवआत्ममेढ्रनिकृंतनं
अज्ञानेनतुयोगच्छेत्कुर्याच्चांद्रायणद्वयं १२
दशगोमिथुनंदद्याच्छुद्धिं पाराशरोब्रवीत्
पितृदारान्समारुह्यमातुराप्तांचभ्रातृजां १३
गुरुपत्नींस्नुषांचैवभ्रातृभार्यांतथैवच
मातुलानींसगोत्रांचप्राजापत्यत्रयंचरेत् १४

दो प्राजापत्य करें और गो मिथुन (२ गौ) दक्षिणा दें—यदि श्वपाकी वा चांडाली के संग यत्र गमन करे तो ६

प्राजापत्य कृच्छ्र करे और चार गो मिथुन दान करै—और माता—बहन अपनी लड़की १०

अज्ञान से इनके संग गमन करके तीन कृच्छ्र वा तीन चांद्रायण करे और शिर के छेदन करने से शुद्ध होता है ११

माता की भगिनी (मांवसी) के संग गमन करने में भी अपने लिंग का छेदन करै यदि अज्ञान से गमन करै तो दो चांद्रायण करै १२

और दश गो मिथुन दे यह शुद्धि पाराशर ने कही है—पिता की स्त्री और माता की धर्म बहिन—और भाई की कन्या १३

गुरु की स्त्री—और लड़के की स्त्री—भाई की स्त्री—मामी अपने गोत्र की स्त्री—इनके संग गमन करके तीन प्राजापत्य करै १४

गोद्वयंदक्षिणांदत्वामुच्यतेनात्रसंशयः
पशुवेश्यादिगमनेमहिष्युष्ट्रीकपीस्तथा १५
खरींचशूकरींगत्वाप्राजापत्यंसमाचरेत्
गोगामीचत्रिरात्रेणगामेकांब्राह्मणेददेत् १६
महिष्युष्ट्रखरीगामीत्वहोरात्रेणशुद्ध्यति
डामरेसमरेवापिदुर्भिक्षेवाजनक्षये १७
बंदिग्राहेभयार्तोवासदास्वस्त्रींनिरीक्षयेत्
चांडालैःसहसंपर्कंयानारीकुरुतेततः १८
विप्रान्दशावरान्कृत्वास्वयंदोषंप्रकाशयेत्
आकंठसंमितेकुपेगोमयोदककर्दमे १९

और दो गौ दक्षिणा देकर पाप से छूटता है इसमें संदेह नहीं है—और पशु वेश्या—भैंस—ऊंटनी—बंदर: इनके संग गमन करने में १५

खरी (गधी) सूकरी—इनके संग गमन करके प्राजापत्य करै और गौ के संग गमन करने वाला तीन रात्रि उपवास करै और एक गौ ब्राह्मण को दे १६

भैंस—ऊंटनी—गधी—इनके संग गमन करके प्राजापत्य करने वाला अहोरात्र के उपवास से शुद्ध होता है—डामर(महा पीड़ा) संग्राम—दुर्भिक्ष—जनोंका नाश—इनमें १७

बंदीग्रह (कैद की जगे) भय—पीड़ा—इनमें अपनी स्त्री को सदा देखै जो स्त्री चांडालों के साथ संग करती है फिर वही स्त्री १८

कमसे कम दश ब्राह्मणों को अपना दोष प्रकट करै कंठ तक गहरे कूपे में गोबर जल इनके कीच को भरे १९

तत्रस्थित्वानिराहारात्वहोरात्रेणनिष्क्रमेत्
सशिखंवपनंकृत्वाभुंजीयाद्यावकौदनं २०
त्रिरात्रमुपवासित्वात्वेकरात्रंजलेवसेत्
शंखपुष्पीलतामूलंपत्रंवा कुसुमंफलम् २१
सुवर्णपंचगव्यंचक्वाथयित्वापिबेज्जलं
एकभक्तंचरेत्पश्चाद्यावत्पुष्पवतीभवेत् २२
व्रतंचरतितद्यावत्तावत्संवसतेवहिः
प्रायश्चित्ते ततश्चीर्णेकुर्याद्ब्राह्मणभोजनं २३
गोद्वयंदक्षिणांदद्याच्छुद्धिं पाराशरोब्रवीत्
चातुर्वर्णस्यनारीणांकृच्छ्रंचांद्रायणव्रतं २४
यथाभूमिस्तथानारीतस्मात्तांनतुदूषयेत्

उसमें अहोरात्र निराहार टिक कर निकस आवे और शिखा समेत मुंडन कराकर जौ और चावल खावे २०

फिर तीन रात उपवास करके एक रात्र जल में वसे—फिर शंख पुष्प की जड वा—पत्ता—वा फूल—वा फल २१

सोना—पंचगव्य—इन सब के क्वाथ के जल को पीवे फिर रजो दर्शन तक एक समय ही भोजन करै २२

और इतने उस व्रत को करै जब तक घरसे बाहर बसे फिर प्रायश्चित्त किये पीछे ब्राह्मणों को जिमावे २३

और दो गौ दक्षिणा दे यह शुद्धि पाराशर ने कही है चारों वर्णों की स्त्रियों को कृच्छ्र वा चांद्रायण कहा है २४

जैसी पृथ्वी वैसी ही स्त्री होती है तिससे स्त्री को दोष न

बंदिग्राहेणयाभुक्ताहत्वाबध्वाबलाद्भयात् २५
कृत्वासांतपनंकृच्छ्ं शुद्ध्येत्पाराशरोब्रवीत्
सकृद्भुक्तातुयानारीनेच्छंतीपापकर्मभिः २६
प्राजापत्येनशुद्ध्येतऋतुप्रश्रवणेनच
पतत्यर्द्धं शरीरस्ययस्यभार्यासुरांपिबेत् २७
पतितार्द्ध शरीरस्यनिष्कृतिर्नविधीयते
गायत्रींजपमानस्तुकृच्छ्ं सांतपनंचरेत् २८
गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकं
एकरात्रोपवासश्चकृच्छ्ंसांतपनस्मृतं २९

लगावे—मार कर वा बांधकर जो स्त्री बल से रोककर भोगी हो २५

वह सांतपन कृच्छ्र से शुद्ध होती है यह पाराशर ने कहा है यदि स्त्री की इच्छा के विना स्त्री एकवार पापियों ने भोगी हो २६

वह स्त्री प्राजापत्य व्रत से और रजो दर्शन से शुद्धि होती है—जिस मनुष्य की स्त्री मदिरा पीले उसका आधा शरीर पतित होता है २७

जिसका आधा शरीर पतित हो उसका प्रायश्चित्त नहीं कहा है—वह गायत्री का जप करता हुआ सांतपन कृच्छ्र करे २८

गो मूत्र—गोबर—दूध—दही—घी—और कुशा का जल और एक रात्र उपवास यह सांतपन कृच्छ्र कहा है २९

जारेणजनयेद्गर्भंमृतेत्यक्तेगतेपतौ
तांत्यजेदपरेराष्ट्रेपतितांपापकारिणीं ३०
ब्राह्मणीतुयदागच्छेत्परपुंसासमन्विता
सातुनष्टाविनिर्दिष्टानतस्यागमनंपुनः ३१
कामान्मोहाच्चयागच्छेत्त्यक्त्वाबंधून्सुतान्पतिं
सापिनष्टापरेलोकेमानुषेषुविशेषतः ३२
मदमोहगतानारीक्रोधाद्दंडादितािडता
अद्वितीयंगताचैवपुनरागमनंभवेत् ३३
दशमेतुदिनेप्राप्तेप्रायश्चित्तंनविद्यते
दशाहंनत्यजन्नारींत्यजेन्नष्टश्रुतांतथा ३४
भर्त्ताचैवचरेत्कृच्छ्रंकृच्छ्रार्द्धंचैवबांधवाः

पति के मरे वा त्यागे पीछे जो स्त्री जार से गर्भ को पैदा करै उस पाप करनेवाली पतित स्त्रीको दूसरे देशमें त्यागदे ३०

जो ब्राह्मणी दूसरे पुरुष के संग चलीजाय उसे नष्टाकहते हैं उसका फिर लौटना नहीं है ३१

इच्छा से वा अज्ञान से—बंधु—पुत्र—वा पति इनको त्याग कर जो चलीजाय वह स्त्री भी परलोक में और बिशेष कर मनुष्य लोक में नष्टा है ३२

मद और मोह में आई और क्रोध से दंड आदि से ताडी जो स्त्री अकेली चलीजाय तो उसका फिर आना होता है ३३

दश दिन गयो को होजांय तो प्रायश्चित्त नहीं है—क्योंकि दश दिन तक स्त्री को न त्यागे परन्तु नष्टा सुनी जाय तो उस को त्याग दे ३४

उस स्त्री का पति कृच्छ्र और पति के बांधव कृच्छ्रार्द्ध

तेषु भुक्त्वाथवा पीत्वा चाहोरात्रेण शुद्ध्यति ३५
ब्राह्मणी तु यदा गच्छेत्परपुंसा विवर्जिता
गत्वा पुंसां शतं याति त्यजेयुस्तां तु गोत्रिणः ३६
पुंसो यदि गृहं गच्छेत्तदा शुद्धं गृहं भवेत्
पितृमातृगृहं यच्च जारस्यैव तु तद्गृहम् ३७
उल्लिख्य तद्गृहं पश्चात्पंचगव्येन सेचयेत्
त्यजेच्च मृन्मयं पात्रं वस्त्रं काष्ठं च शोधयेत् ३८
संभारान्शोधयेत्सर्वान्गोकेशैश्च फलोद्भवान्
ताम्राणि पंचगव्येन कांस्यानि दशभस्मभिः ३९
प्रायश्चित्तं चरेद्विप्रो ब्राह्मणैरुपपादयेत्

करै और उनके यहां खा वा पीकर अहोरात्र से शुद्ध होता है ३५

जो ब्राह्मणी मने की हुई पर (अन्य) पुरुष के संग चली जाय वह यदि दूसरे पुरुष का संग करके घास उसी अपने पति के समीप आवे तो सगोत्री इसे त्याग दे ३६

यदि वह पुरुष के घर में चली आवे तो वह घर और उस स्त्री के पिता—और माता का घर अशुद्ध होजाते हैं क्योंकि वे घर जार केही हैं ३७

उस घर को छील कर पीछें पंचगव्य से छिड़के और मिट्टी के पात्र फेंक दे और वस्त्र और काठ को शुद्धि करै ३८

और सब सामिग्रीयों को शुद्ध करै—फलकी सामग्रीयो को गौ के चवर से तांबे की वस्तु पचगव्य से और कांसी की वस्तु दश बार भस्म लगाकर शुद्ध करै ३९

ब्राह्मणों को निवेदन करके वह ब्राह्मण प्रायश्चित्त करै

गोद्वयंदक्षिणांदद्यात्प्राजापत्यद्वयंचरेत् ४०
इतरेषामहोरात्रंपंचगव्यंचशोधनम्
उपवासैर्व्रतैःपुण्यैःस्नानसंध्यार्चनादिभिः ४१
जपहोमदयादानैःशुध्यंतेब्राह्मणादयः
आकाशंवायुरग्निश्चमेध्यंभूमिगतंजलं ४२
नदुष्यंतिचदर्भाश्चयज्ञेषुचमसायथा ४३
इतिपाराशरीयेधर्मशास्त्रेदशमोऽध्यायः १०
अमेध्यरेतोगोमांसंचांडालान्नमथापिवा
यदिभुक्तंतुविप्रेणकृच्छ्रंचांद्रायणंचरेत्
शूद्रोऽप्येवंयदाभुंक्तेप्राजापत्यंसमाचरेत् २

और दो गौ दक्षिणा दे और दो प्राजापत्य करै ४०

और इतर वर्ण अहोरात्र उपवास और पंचगव्य पीवें उपवास - व्रत - पुण्य - स्नान - संध्या - पूजन - आदि से ४१

और जप - होम - दया - दान इनसे ब्राह्मण आदि शुद्ध होते हैं - आकाश - पवन अग्नि और पृथ्वी में पड़ाजल ४२

कुशा ये इस प्रकार अशुद्ध नहीं होते जैसे यज्ञों में चमसा (पात्र विशेष) ४३

इति पाराशरीये धर्म शास्त्रे १० अध्यायः

अशुद्ध पदार्थ वीर्य गौ का मांस और चांडाल का अन्न इनको यदि ब्राह्मण खाले तो चांद्रायण करै १

और क्षत्री इनको खाले तो अर्द्ध चांद्रायण करै और शूद्र भी इसी प्रकार खाले तो प्राजापत्य करै २

पंचगव्यंपिबेच्छूद्रोब्रह्मकूर्चंपिबेद्विजः
एकद्वित्रिचतुर्गांवादद्याद्विप्राद्यनुक्रमात् ३
शूद्रान्नंसूतकान्नंवाअभोज्यस्यान्नमेवच
शंकितंप्रतिषिद्धान्नंपूर्वोच्छिष्टंतथैवच ४
यदिभुक्तंतुविप्रेणअज्ञानादापदापिवा
ज्ञात्वासमाचरेत्कृच्छ्ं ब्रह्मकूर्चंतुपावनं ५
व्यालैर्नकुलमार्जारैरन्नमुच्छिष्टितंयदा
तिलदर्भोदकैःप्रोक्ष्यशुद्ध्यतेनात्रसंशयः ६
शूद्रोप्यभोज्यंभुक्त्वान्नंपंचगव्येनशुद्ध्यति
क्षत्रियोवापिवैश्यश्चप्राजापत्येनशुद्ध्यति ७

और शूद्र पंचगव्य पीवे और द्विज ब्रह्मकूर्च को पीवें और ब्राह्मण आदि चारों वर्ण क्रम से एक दो तीन चार गौओं का दान करें ३

शूद्र का अन्न सूतक का अन्न और अभोज्य(जिसका भोजन करना मने हो)का अन्न जिसमें कुछ अशुद्ध आदि की शंका हो वह अन्न निषिद्धों का अन्न और उच्छिष्ट अन्न ४

इन अन्नों को अज्ञान से वा आपत्त (विपत्ति) से ब्राह्मण खाले तो जानकर कृच्छ्र करै और पवित्र करने वाला जो ब्रह्मकूर्च उसे भी करै ५

सांप नौला बिलाव इनों ने जो अन्न उच्छिष्ट(झूंठा) किया हो वह तिल और कुशा का जल छिड़कने से शुद्ध होता है इसमें संशय नहीं है ६

शूद्र भी अभोज्य अन्न को खाकर पंचगव्य से शुद्ध होताहै और क्षत्री और वैश्य प्रजापत्य से शुद्ध होते हैं ७

एकपंक्त्युपविष्टानांविप्राणांसहभोजने
यद्येकोपित्यजेत्पात्रंशेषमन्नं नभोजयेत् ८
मोहाद्भुंजीतयस्तत्रपंक्तावुच्छिष्टभोजने
प्रायश्चित्तं चरेद्विप्रः कृच्छ्रं सांतपनंतथा ९
पीयूषंश्वेतलशुनंवृं ताकफलगृंजने
पलांडुं वृक्षनिर्यासान्देवस्वंकवकानिच १०
उष्ट्रीक्षीरमवीक्षीरमज्ञानाद्भुंजतेद्विजः
त्रिरात्रमुपवासेनपंचगव्येनशुद्ध्यति ११
मंडूकंभक्षयित्वातुमूषिकामांसमेवच
ज्ञात्वाविप्रस्त्वहोरात्रंयावकान्नेनशुद्ध्यति १२

संग भोजन करते और एक पंक्ति में बैठे हुए ब्राह्मणों में यदि एक ब्राह्मण भी पात्र को त्यागदे अर्थात् भोजन करता खड़ा हो जाय तो सब ब्राह्मण शेष अन्न को नखावें ८

उस पंक्ति में उच्छिष्ट भोजन को जो अज्ञान से खाता है वह ब्राह्मण सांतपन कृच्छ्र प्रायश्चित्त करै ९

पेवसी—श्वेत लसन—वेंगन गाजर पलांडु (सलजम) वृक्ष का गोंद—देवता का द्रव्य कवक (पृथ्वी की ढाल)१०

ऊंटनी और भेड़ का दूध इनको जो द्विज अज्ञान से खाता है वह तीन रात्र उपवास और पंचगव्य से शुद्ध होता है ११

मेंडक और मूसे के मांस को जानकर ब्राह्मण खावतो अहोरात्र जौं खाकर शुद्ध होता है १२

क्षत्रियश्चापिवैश्यश्चक्रियावंतौशुचिव्रतौ
तद्गृहेषुद्विजैर्भोज्यंहव्यकव्येषुनित्यशः १३
घृतंक्षीरंतथातैलंगुडंतैलेनपाचितं
गत्वानदीतटेविप्रोभुंजीयात्शूद्रभाजने १४
मद्यमांसरतंनित्यंनीचकर्मप्रवर्तकं
तंशूद्रंवर्जयेद्विप्रः श्वपाकमिवदूरतः १५
द्विजशुश्रूषणारतान्मद्यमांसविवर्जितान्
स्वकर्मनिरतान्नित्यंतांश्छूद्रान्नत्यजेद्द्विजः १६
अज्ञानाद्भुंजतेविप्राः सूतकेमृतकेपिवा
प्रायश्चित्तंकथंतेषांवर्णोवर्णोविनिर्दिशेत् १७

जो क्रिया वाले क्षत्रिय वैश्य और शुद्ध व्रत (आचरण) करते हैं उनके घर हव्य और कव्य (यज्ञ और श्राद्ध) में सदा भोजन करैं १३

घी—दूध—तेल—तेल से पका गुड़ इनको नदी के तट पर जाकर शूद्र के पात्र में भी खाले १४

जो शूद्र मदिरा और मांस में रत हो और नीच कर्म में वर्तता हो उस शूद्रको श्वपाक के समान दूरसेही वर्ज दे १५

द्विजों की सेवा में तत्पर और मदिरा और मांस विवर्जित और अपने कर्म में तत्पर जो शूद्र उनका ब्राह्मण त्याग न करै १६

जो ब्राह्मण अज्ञान से सूतक वा मृतक में जीमते हैं उन का प्रायश्चित्त वर्ण २ में कैसे कहा है १७

गायत्र्यष्टसहस्रेणशुद्धिः स्याच्छूद्रसूतके
वैश्येपंचसहस्रेणत्रिसहस्रेणक्षत्रिये १८
ब्राह्मणस्ययदाभुंक्तेद्वेसहस्रंतुदापयेत्
अथवावामदेव्येनसाम्नाचैकेनशुद्ध्यति १९
शुष्कान्नं गोरसंस्नेहंशूद्रवेषेणआहृतं
पक्वं विप्रगृहेभुंक्ते भोज्यंतंमनुरब्रवीत् २०
आपत्कालेतुविप्रेणभुक्तंशूद्रगृहेयदि
मनस्तापेनशुद्ध्येतद्रुपदांवासकृज्जपेत् २१
दासनापितगोपालकुलमित्रार्द्धसीरिणः

शूद्र के सूतक में आठ हजार गायत्री से वैश्य के में पांच हजार गायत्री से और क्षत्रिय के में एक हजार गायत्री से शुद्धि होती है १८

यदि ब्राह्मण के सूतक में खायतो दो हजार गायत्री जपै अथवा वामदेव ऋषि के कहे एक सामवेद से ही शुद्ध होता है १९

शूद्र का अन्न और गोरस और स्नेह (घी आदि) ये सब यदि शूद्र के घरसे लाकर ब्राह्मण के घर पर पके खाय तो वह भोजन के योग्य हैं यह मनुने कहा है २०

यदि आपत्काल में ब्राह्मण ने शूद्र के घर भोजन करलिया होय तो मनके पश्चात्ताप से शुद्ध होता है वा एकबार द्रुपदा मंत्र को जपै २१

दास—नाई—गोपाल कुल का मित्र अर्द्धसीरी (१ शीकि

एतेशूद्रेषुभोज्यान्नायश्चात्मानंनिवेदयेत् २२
शूद्रकन्यासमुत्पन्नोब्राह्मणेनतुसंस्कृतः
असंस्काराद्भवेद्दासः संस्कारादेवनापितः २३
क्षत्रियाच्छूद्रकन्यायांसमुत्पन्नस्तुयः सुतः
सगोपालइतिख्यातोभोज्योविप्रैर्नसंशयः २४
वैश्यकन्यासमुद्भूतोब्राह्मणेनतुसंस्कृतः
सह्यार्द्धिकइतिज्ञेयोभोज्योविप्रैर्नसंशयः २५
भांडस्थितमभोज्येषुजलंदधिघृतंपयः
अकामतस्तुयोभुंक्तेप्रायश्चित्तंकथंभवेत् २६

सान) इतनों का और अपने आपे को ऐसे निवेदन करते कि मैं आप का हुं, उसका अन्न भोजनके योग्य है २२

ब्राह्मण से जो शूद्र की कन्या में पैदा हो यदि उसका संस्कार न होय तो वह दास (धीमर) और संस्कार होय तो नापित (नाई) होता है २३

क्षत्रिय से जो पुत्र शूद्र की कन्या में पैदा हो उसे गोपाल कहते हैं उस के यहां ब्राह्मण निःसंदेह भोजन करैं २४

वैश्य की कन्या में जो ब्राह्मण से पैदा हो और जिसके संस्कार भी हों उसे अर्द्धिक कहते हैं उसके यहां भी ब्राह्मण निसंदेह भोजन करैं २५

जिनका भोजन अनुचित है उनके पात्र में रक्खे जल—दही—घी—दूध—इनको जो खाता है उसका प्रायश्चित्त कैसे हो २६

ब्राह्मणः क्षत्रियोवैश्यः शूद्रोवाउपसर्पति
ब्रह्मकूर्चोपवासेनयाज्यवर्णस्यनिष्कृतिः २७
शूद्राणांनोपबासः स्याच्छूद्रोदानेनशुद्ध्यति
ब्रह्मकूर्चमहोरात्रं श्वपाकमपिशोधयेत् २८
गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिः कुशोदकं
निर्दिष्टंपंचगव्यंचपवित्रं पापशोधनं २९
गोमूत्रंकृष्णवर्णायाः श्वेताया श्चैवगोमयं
पयश्चताम्रवर्णायारक्तायागृह्यतेदधि ३०
कपिलायाघृतंग्राह्यं सर्वंकापिलमेववा
मूत्रमेकपलंदद्यादंगुष्ठार्द्धं तुगोमयं ३१

ब्राह्मण—क्षत्रिय—वैश्य—शूद्र जो खांयतो यज्ञ के योग्य तीनों वर्णों का प्रायश्चित्त ब्रह्मकूर्च उपवास से होता है २७

और शूद्रों को उपवास नहीं होता है किन्तु शूद्रदान से ही शुद्ध होता है अहोरात्र का उपवास श्वपाक को भी शुद्ध करसकता है २८

गोमूत्र—गोबर—दूध—दही—घी—कुशा का जल—यह पवित्र और पापों का नाशक पंचगव्य कहा है २९

काली गौ का गोमूत्र, सपेद गौ का गोबर, तांबे के रंगकी का दूध, लाल की दही ३०

कपिला का घी लेना अथवा कपिला ही के सबले वे, एक पल गोमूत्र आधे अंगठे भर गोमय ३१

क्षीरंसप्तपलंदद्याद्दधित्रिपलमुच्यते
घृतमेकपलंदद्यात्पलमेकंकुशोदकं ३२
गायत्र्यादायगोमूत्रंगंधद्वारेतिगोमयं
आप्यायस्वेतिचक्षीरंदधिक्राव्णा स्तथादधि ३३
तेजोसिशुक्रमित्याज्यंदेवस्यत्वाकुशोदकं
पंचगव्यमृचापूतंस्थापयेदग्निसन्निधौ ३४
आपोहिष्ठेतिचालोड्यमानस्तोकेतिमंत्रयेत्
सप्तावरास्तुयेदर्भा अच्छिन्नाग्राः शुकत्विषः ३५
एतैरुद्धृत्यहोतव्यंपंचगव्यंयथाविधि
इरावतीइदंविष्णुर्मानस्तोकेचशंवती ३६

सातपल दूध तीन पल दही एक पल घी और एक पल कुशा का जल हो ३२

गायत्री पढ़कर गोमूत्र ले गंधद्वारा इस मंत्र से गोबर— आप्यायस्व इस मंत्र से दूध दधिक्राव्णा इस से दही ले ३३

तेजोसिशुक्र इस मंत्र से घी देवस्यत्वा इस मंत्रसे कुशा का जल—इस प्रकार ऋचा से पवित्र पंचगव्य को अग्नि के समीप रक्खे ३४

आपोहिष्ठा इस मंत्र से चलावें मानस्तो के इसमंत्र से मथे कम से कम सात और जिन के अग्रभाग हो और जो तोते केरंगकी हैं। ३५

उन कुशाओं से उठा कर विधि से पंचगव्य का होम करै इरावती—इदंविष्णु—मानस्तो के, शंवती ३६

एताभिश्चैवहोतव्यंहुतशेषंपिबेद्द्विजः
आलोड्यप्रणवेनैवनिर्मथ्यप्रणवेनतु ३७
उद्धृत्यप्रणवेनैवंपिबेच्चप्रणवेनतु
यत्त्वगस्थिगतंपापंदेहेतिष्ठतिदेहिनाम् ३८
ब्रह्मकूर्चंदहेत्सर्वंयथैवाग्निरिवेन्धनम्
पवित्रंत्रिषुलोकेषुदेवताभिरधिष्ठितं ३९
वरुणश्चैवगोमूत्रे गोमयेहव्यवाहनः
दध्निवायुःसमुद्दिष्टःसोमःक्षीरेघृतेरविः ४०
पिबतःपतितंतोयंभाजनेमुखनिःस्टतं
अपेयंतद्विजानीयाद्भुक्त्वाचांद्रायणंचरेत् ४१

इन ऋचाओं से होम करै और शेष को द्विज पीवें ॐ कार से ही चलाकर और ॐकार से मथकर ३७

और ॐकार से उठाकर—ॐकार सेही पीवे, जोत्वचा और हाड़ों में देह धारियों का पाप टिकता है ३८

उसको ब्रह्मकूर्च इस प्रकार दग्ध करता है जैसे अग्नि इंधन को तीनों लोकों में पवित्र और देवता ओं से अधिष्ठित (जिसमें देवता रहें) पंचगव्य होता है क्योंकि ३९

गोमूत्र में वरुण—गोबर में अग्नि—दधि में पवन दूध में चंद्रमा घी में सूर्य कहा है ४०

जल पीते हुए मनुष्य के मुख से निकला जल यदि जल के पात्र में गिरपड़े तो वह जल पीने के अयोग्य हैयदि उसे पीवे तो चांद्रायण करै ४१

कूपेचपतितंदृष्ट्वास्वसृगालौचमर्कटं
अस्थिचर्मादिपतिताःपीत्वामेध्याअपोद्विजः ४२
नारंतुकुणपंकाकंविड्वराहंखरोष्ट्रकं
गावयंसौप्रतीकंचमायूरंखड्गकंतथा ४३
वैयाघमार्क्षंसैंहंवाकूपेयदिनिमज्जति
तडागस्याऽप्यदुष्टस्यपीतंस्यादुदकंयदि ४४
प्रायश्चित्तंभवेत्पुंसः क्रमेणैतेनसर्वशः
विप्रः शुद्ध्येत्रिरात्रेणक्षत्रियस्तुदिनद्वयात् ४५
एकाहेनतुवैश्यस्तुशूद्रोनक्तेनशुद्ध्यति
परपाकनिवृत्तस्यपरपाकरतस्यच ४६

कूप में पड़े हुए कुत्ता गीदड़ बंदर हाड चाम इनको देख कर और इस अशुद्ध जल को पीकर द्विज ४२

और मनुष्य का देह कौआ विष्ठा खाने वाला सूकर गधा ऊंट गवय (नीलगाय) हाथी मोर गेंडा ४३

भेड़ा रीछ सिंह ये यदि कूप में डूबजाय और निषिद्ध तालाब का जल भी यदि पीया जाय तो ४४

सब पुरुषों का क्रमसे यह प्रायश्चित्त है कि ब्राह्मण तीन रात्र, क्षत्रिय दो दिन के उपवास से ४५

वैश्य एक दिनके, उपवास शूद्रनक्त (रातका भोजन) से शुद्ध होता है जो दूसरेका बनाया हुआ न खाता हो और जो खाता हो ऐसे दो प्रकार के ४६

अपचस्यचभुक्त्वान्नं द्विजश्चांद्रायणं चरेत्
अपचस्यतुयद्दानन्दातुरस्यकुतःफलं ४७
दाताप्रतिगृहीताचद्वौतौनिरयगामिनौ
गृहीत्वाग्निं समारोप्यपञ्चयज्ञान्ननिर्बपेत् ४८
परपाकनिवृत्तोसौमुनिभिःपरिकीर्तितः
पञ्चयज्ञान्स्वयंकृत्वापरान्नेनोपजीवति ४९
सततंप्रातरुत्थायपरपाकरतस्तुसः
गृहस्थधर्मोयोविप्रोददातिपरिवर्जितं ५०
ऋषिभिर्धर्मतत्त्वज्ञैरपचः परिकीर्तितः
युगेयुगेतुयेधर्मास्तेषुतेषुचयेद्विजाः ५१

अपच का अन्न खाकर द्विज चांद्रायण करै अपच को दान जो दे उसके दाता को फल कहां ४७

दाता और लेनेवाला ये दोनों नरक में जाते हैं जो अग्नि होत्र का नियम लेकर पंचयज्ञ न करै ४८

और अग्नि को आत्मा में रखकर अर्थात् संन्यास लेकर मुनियों ने इसे परपाक निवृत्ति कहा है और जो आप पांचयज्ञ करके पराये अन्न से जीवै ४९

और निरंतर प्रातःकाल उठ कर परपाक में रतहो और गृहस्थ धर्म में जो ब्राह्मण हो और दान से बर्जित हो अर्थात् नले ५०

धर्म तत्त्व के ज्ञाता ऋषियों ने उसे अपच कहा है युग २ में जो धर्म हैं और युग में जो द्विज हैं ५१

तेषांनिंदानकर्तव्यायुगरूपाहितेद्विजाः
हुंकारंब्राह्मणस्योक्त्वात्वंकारंचगरीयसः ५२
स्नात्वातिष्ठन्नहः शेषमभिवाद्यप्रसादयेत्
ताडयित्वातृणेनापिकंठेबध्वापिवाससा ५३
विवादेनापिनिर्जित्यप्रणिपत्यप्रसादयेत्
अवगूर्य्यत्वहोरात्रंत्रिरात्रंक्षितिपातने ५४
अतिकृच्छ्रंचरुधिरेकृच्छ्रोऽभ्यंतरशोणिते
नवाहमतिकृच्छ्रीस्यात्पाणिपूरान्नभोजनः ५५
त्रिरात्रमुपवासः स्यादऽतिकृच्छ्रः सउच्यते
सर्वेषामेवपापानांसंकरेसमुपस्थिते ५६

उन ब्राह्मणों की निन्दा नहीं करनी क्योंकि वे ब्राह्मण युग के अनुरूप हैं अत्यन्त बड़े ब्राह्मण को हुंकार और त्वंकार (हुं त्वं) कहकर ५२

जितना दिन शेष हो उतने दिन स्नान कर बैठा रहै और नमस्कार करके प्रसन्न (राजी) करै तृण से भी ब्राह्मण को ताड़ कर और ब्राह्मण के कंठ में वस्त्र भी बांधकर ५३

और ब्राह्मण को विवाद से जीतकर नमस्कार करके प्रसन्न करै और झिटक कर अहोरात्र और पृथ्वी पर गिराकर त्रिरात्र उपवास ५४

और रुधिर निकालने पर अति कृच्छ्र—और रुधिर न निकाले तो कृच्छ्र करै—जो नौ ९ दिन तक अंजलि भर अन्न खा वह अति कृच्छ्र होता है ५५

वा तीन रात उपवास करै इसे अतिकृच्छ्र कहते हैं यदि सब पापों का संकर होजाय तो ५६

दशसाहस्रमभ्यस्तागायत्रीशोधनंपरं
इतिपराशरेधर्म्मशास्त्रेएकादशोऽध्यायः ११
दुःस्वप्नंयदिपश्येत्तुवांतेवाक्षुरकर्मणि
मैथुनेप्रेतधूमे चस्नानमेवंविधीयते १
अज्ञानात्प्राश्यविण्मूत्रंसुरासंस्पृष्टमेवच
पुनः संस्कारमर्हंतित्रयोवर्णाद्विजातयः २
अजिनंमेखलादंडोभैक्षचर्याव्रतानिच
निवर्त्ततेद्विजातीनांपुनः संस्कारकर्मणि ३
विण्मूत्रस्यचशुद्ध्यर्थंप्राजापत्यंसमाचरेत्
पंचगव्यंचकुर्वीतस्नात्वापीत्वाशुचिर्भवेत् ४

दश हजार गायत्री का अभ्यास परम शुद्धि करने वाला है ५७

इति पाराशरीये धर्मशास्त्रे ११ अध्यायः

वमन—क्षौरकर्म - मैथुन—प्रेत का धूम—इनमें वा इन का स्वप्न देखे तो स्नान कहा है १

अज्ञान से विष्ठा—मूत्र—और जिसमें मदिरा मिली हो उसको खाकर तीनों द्विजाति फिर संस्कारके योग्य होते हैं २

द्विजातियों के फिर (दुवारा) संस्कार कर्म में मृगछाला कोंदनी (मूंजकी) दंड—भिक्षा का मांगनां ये सब निवृत्त हो जाते हैं ३

विष्ठा और मूत्र इन्हें को खाकर) प्राजापत्य करै और पंचगव्य बनावे स्नान करके पंचगव्य को पीकर शुद्ध होता है ४

जलाग्निपतनेचैवप्रवृज्यानाशकेषुच
प्रत्यवसितवर्णानांकथंशुद्धिर्विधीयते ५
प्राजापत्यद्वयेनैवतीर्थाभिगमनेनच
वृषैकादशदानेनवर्णाःशुद्ध्यंतितेत्रयः ६
ब्राह्मणस्यप्रवक्ष्यामिवनंगत्वाचतुष्पथे
सशिखंवपनंकृत्वाप्राजापत्यद्वयंचरेत् ७
गोद्वयंदक्षिणांदद्याच्छुद्धिंपाराशरोऽब्रवीत्
मुच्यतेतेनपापेनब्राह्मणत्वंचगच्छति ८
स्नानानिपंचपुण्यानिकीर्तितानिमनीषिभिः
आग्नेयंवारुणंब्राह्मंवायव्यंदिव्यमेवच ९
आग्नेयंभस्मनास्नानमवगाह्यतुवारुणं

जल और अग्नि में पड़ने और संन्यास धर्म को जो नष्ट करैं उन प्रत्यवसित (धर्म से पतित) वर्णों की कैसे शुद्धि कीजाय ५

दो प्राजापत्य से—तीर्थों की यात्रा से—ग्यारह बैल के दान से वे तीनों (क्षत्री वैश्य शूद्र) वर्ण क्रम से शुद्ध होते हैं ६

ब्राह्मण का प्रायश्चित्त कहता हुं वह वन में जाकर चौराहे में शिखा समेत मुंडन कराकर दो प्राजापत्य करै ७

और दो गौ दक्षिणा दे यह शुद्धि पाराशर ने कही है फिर ब्राह्मण उस पाप से छूटता है और ब्राह्मण होजाता है ८

बुद्धिमानों ने पांच स्नान पवित्र कहे हैं—१ आग्नेय २ वारुण ब्राह्म—४ वायव्य—५ दिव्य ९

भस्म का स्नान के आग्नेय—जल के को वारुण—आपो

अपोहिष्ठेतिचब्राह्मं वायव्यंगोरजः स्मृतं १०
यत्तु सातपवर्षेणस्नानंतद्दिव्यमुच्यते
तत्रस्नात्वातुगंगायांस्नातोभवतिमानवः ११
स्नातुंयांतं द्विजंसर्वेदेवाः पितृगणैः सह
वायुभूतास्तुगच्छंतितृषार्ताः सलिलार्थिनः १२
निराशास्तेनिवर्तंतेवस्त्रनिष्पीडनेकृते
तस्मान्नपीडयेद्वस्त्रमकृत्वापितृतर्पणं १३
रोमकूपेष्ववस्थाप्ययस्तिलैस्तर्पयेत्पितॄन्
तर्पितास्तेनतेसर्वेरुधिरेणमलेनच १४

हिष्ठा इन तीन ऋचाके को ब्राह्म—गौओं की रजके को वायव्य कहते हैं १०

और बर्षाके समय धूप भी निकसरही हो उस समय मेघ की बूंदों से जो स्नान उसे दिव्य कहते हैं क्योंकि उस समय स्नान करके मनुष्य को गंगा के स्नान का फल होता है ११

जिस समय द्विज स्नान करने को जाता हो उस समय सब देवता--पितरों के गण तृषा से पीड़ित हुए जल के लिये वायु का रूप धार कर चलते हैं १२

यदि तर्पण से पहिले वस्त्र (धोती) निचोडले तो वे निराश होकर लौट आते हैं तिससे पितरों का तर्पण किये बिना वस्त्र को न निचोड़े १३

रोमोंपर तिलों को रखकर जो मनुष्य पितरों का तर्पण करता है उसने रुधिर और मल से पितर तृप्त किये १४

अवधुनोतियः केशान्स्नात्वाप्रस्नवतेद्विजः
आचामेद्वाजलस्थोपिबाह्यः सपितृदैवतैः १५
शिरःप्रावृत्यकंठंवामुक्तकक्षशिखोपिवा
विनायज्ञोपवीतेनआचांतोप्यशुचिर्भवेत् १६
जलेस्थलस्थोनाचामेज्जलस्थश्चबहिस्थले
उभेस्पृष्ट्वासमाचामेदुभयत्रशुचिर्भवेत् १७
स्नात्वापीत्वाक्षुतेसुप्तेभुक्त्वारथ्योपसर्पणे
आचांतःपुनराचामेद्वासोविपरिधायच १८
क्षुतेनिष्ठीवनेचैवदंतोच्छिष्टे तथाऽनृते

जो द्विज स्नान करके केशों को कंपाता है वा केशों में से जल टपकाता है और जल में खड़ा वा बैठा आचमन करता है वह मनुष्य पितर और देवताओं से बाह्य (इनके कर्म के अयोग्य) है १५

शिर वा कंठ को फेर कर और कक्ष (लंवा) शिखा को खोल कर—अथवा जनेऊ के विना जो आचमन करता है वह आचमन करके भी अशुद्ध होता है १६

स्थल में बैठा मनुष्य जल में और जल में बैठा स्थल में आचमन नकरै किंतु दोनों जगे बैठा दोनो जगे ही आचमन करै (अर्थात् जहां बैठा हो तहांही) तो शुद्ध होता है १७

आचमन किये पाछे यदि स्नान करके और जल पीकर छींककर सोकर खाकर अथवा गली में चलकर वा वस्त्र पहन करफिर आचमन करै १८

छींकना—थूकना—दांतों का उच्छिष्ट—अथवा झूंठ बो-

पतितानांचसंभाषेदक्षिणंश्रवणंस्पृशेत् १६
भास्करस्यकरैः पूतंदिवास्नानंप्रशस्यते
अप्रशस्तंनिशिस्नानंराहोरन्यत्रदर्शनात् २०
मरुतोवसवोरुद्रा आदित्याश्चाथदेवताः
सर्वेसोमेप्रलीयंतेतस्माद्दानंतुसंग्रहे २१
खलयज्ञेविवाहेचसंक्रांतौग्रहणेतथा
शर्वर्य्यांदानमस्त्येवनाऽन्यत्रतुविधीयते २२
पुत्रजन्मनियज्ञेचतथाचात्ययकर्मणि
राहोश्चदर्शनेदानंप्रशस्तंनान्यदानिशि २३
महानिशातुविज्ञेयामध्यस्थंप्रहरद्वयं

लना—वा पतितों के संग संभाषण करना इनमें दाहिने कान का स्पर्श करले १६

सूर्य की किरणों से पवित्र जो दिन का स्नान वह पवित्र और राहु के दर्शन (ग्रहण) को छोड़ कर रात्रि का स्नान अधम कहाहै २०

मरुत—आठ वसु—ग्यारह रुद्र—और बारह सूर्य—और देवता ये सब ग्रहण के समय चद्रमा में लीन (छिपे) होते हैं तिससे ग्रहण में दान दे २१

खलियान—बिवाह—संक्रांति—और ग्रहण—इनमें रात्रि में दान कहा है अन्यत्र नहीं है २२

पुत्र का जन्म—यज्ञ—और मृतक के कर्म—राहु का दर्शन इनमें रात्री को दान उत्तम कहा है अन्यत्र नहीं २३

रात्रि के बीचके दो२ पहरों को महानिशा कहाहै इस से

प्रदोषपश्चिमौयामौदिनवत्स्नानमाचरेत् २४
चैत्यवृक्षश्चितिः यूपश्चंडालःसोमविक्रयी
एतांस्तुब्राह्मणःस्पृष्ट्वासवासाजलमाविशेत् २५
अस्थिसंचयनात्पूर्वंरुदित्वास्नानमाचरेत्
अन्तर्दशाहेविप्रस्यह्यूर्ध्वमाचमनंस्मृतं २६
सर्वंगंगासमंतोयंराहुग्रस्तेदिवाकरे
सोमग्रहेतथैवोक्तंस्नानदानादिकर्मसु २७
कुशैःपूतंभवेत्स्नानंकुशेनोपस्पृशेद्द्विजः
कुशेनचोद्धृतंतोयंसोमपानसमंभवेत् २८

प्रदोष (सर्यास्त) से पिछले प्रहर में दिन के समान स्नान करै २४

चैत्य का वृक्ष (जिसे बुद्धि के मतवाले पूजते हैं) चिता—राध—चांडाल—सोम (एक लता) का बेचने वाला—इनका स्पर्श करके ब्राह्मण सचैल स्नान करै २५

अस्थि संचयन (मरे के फूल चुगने) से पहिले रोकर स्नान करै ब्राह्मणों को मरने से दशदिन वीतेपर आचमन करना कहा है २६

जिस समय राहु सूर्य वा चंद्रमा को ग्रसे उस समय स्नान—दान आदि कर्मोंमें सब जल गंगा के समान कहे हैं २७

स्नान कुशाओं से पवित्र होता है और कुशासेही द्विज आचमन करै क्योंकि कुशा से उठाया जल सोम के पानतुल्य होता है २८

अग्निकार्यात्परिभ्रष्टाः संध्योपासनवर्जिताः
वेदंचैवानधीयानाः सर्वेतेवृषलाःस्मृताः २६
तस्माद्वृषलभीतेनब्राह्मणोनविशेषतः
अध्येतव्योप्येकदेशोयदिसर्वंनशक्यते ३०
शूद्रान्नरसपुष्टस्याधीयमानस्यनित्यशः
जपतोजुह्वतोवापिगतिरूर्द्ध्वानविद्यते ३१
शूद्रान्नं शूद्रसंपर्कः शूद्रे णतुसहासनं
शूद्राज्ज्ञानागमश्चापिज्वलंतमपिपातयेत् ३२
यःशूद्र्यापाचयेन्नित्यंशूद्रीचगृहमेधिनी
वर्जितः पितृदेवेभ्योरौरवंयातिसद्विजः ३३

जो ब्राह्मण अग्नि होत्रसे भ्रष्ट और सध्योपासन से बर्जित हैं औ वेद को नहीं पढते व सब शूद्र कहे हैं २६

तिनसे शूद्र होजान के भय से ब्राह्मण विशेष कर यदि सब वेद को न पढसके तो वेद का एक देशही पढने योग्य है ३०

जो ब्राह्मण शूद्र के दिये अन्नके रससे पुष्ट हो प्रतिदिन अध्ययन जप–होम करते हुए भी उस ब्राह्मण को ऊर्द्ध (बैकुंठ) गति नहीं होती ३१

शूद्र का अन्न–शूद्र का संपर्क (मेल) शूद्र के संग एक जगे बैठना–शूद्र से ज्ञान लेना–ये प्रतापी को भी पतित करते हैं ३२

जो द्विज शूद्री से भोजन बनवाता हो वा जिसकी शूद्री स्त्री हो वह द्विज पितर और देवताओं से बर्जित है और रौरव नरक में जाता है ३३

मृतसूतकपुष्टांगंद्विजंशूद्रान्नभोजिनं
अहंतन्नविजानामिकांकांयोनिंगमिष्यति ३४
गृध्रोद्वादशजन्मानिदशजन्मानिसूकरः
श्वयोनौसप्तजन्मानिइत्येवंमनुरब्रवीत् ३५
दक्षिणार्थंतुयोविप्रः शूद्रस्यजुहुयाद्धविः
ब्राह्मणस्तुभवेच्छूद्रः शूद्रस्तुब्राह्मणोभवेत् ३६
मौनव्रतंसमाश्रित्यआसीनोनवदेद्द्विजः
भुंजानोहिवदेद्यस्तुतदन्नंपरिवर्जयेत् ३७
अर्द्धभुक्तेतुयोविप्रस्तस्मिन्पात्रेजलंपिबेत्
हतंदैवंचपित्र्यंचआत्मानंचोपघातयेत् ३८

मृतक के सूतक से जिसका अंग पुष्ट हो और जो शूद्र के अन्न को खाता हो मैं नहीं जानता कि वह किस २ योनि में जायगा ३४

परंतु मनुने ऐसे कहा है कि बारह जन्मगीध—दश जन्म सूकर—सात जन्म तक कुत्ते को योनि में जन्म लेता है। ३५

जो ब्राह्मण दक्षिणा के लिये शूद्र की हविः (साकल्य) का होम करै वह ब्राह्मण शूद्र होता है और वह शूद्र ब्राह्मण ३६

मौनव्रत को धारके जो द्विज बैठे वह न बोले—और जो भोजन करता बोले वह उस अन्न को त्यागदे ३७

आधा भोजनकिये पीछे जो द्विज उसी भोजन के पात्र में जल पीवे उसका देवताओं का और पितरों का कर्म नष्ट हैं और वह अपने आत्मा को भी नष्ट करता है ३८

भुंजानेषुतुविप्रेषुयोग्रेपात्रंविमुंचति
समूढःसचपापिष्ठोब्रह्मघ्नः सखलूच्यते ३६
भाजनेषुचतिष्ठत्सुस्वस्तिकुर्वंतियेद्विजाः
नदेवास्तृप्तिमायांतिनिराशाः पितरस्तथा ४०
अस्नात्वावैनभुंजीतअजश्वाग्निमपूज्यच
नपर्णपृष्ठेभुंजीतरात्रौदीपंविनातथा ४१
गृहस्थस्तुदयायुक्तोधर्ममेवानुचितयेत्
पोष्यवर्गार्थसिद्ध्यर्थंन्यायवर्तीसबुद्धिमान् ४२
न्यायोपार्जितवित्तेनकर्त्तव्यंत्द्यात्मरक्षणं

जो ब्राह्मणों के भोजन करते हुए पहिले पात्र को छोड़ता (खड़ा होता) है वह मूढ बड़ा पापी और ब्रह्महत्यारा कहा है ३६.

भोजन करते हुए जो ब्राह्मण स्वस्ति (कल्याण हो) कहते हैं उसपर देवता तृप्त नहीं होते और पितर भी निरास जाते हैं ४०.

विना स्नान किये—और विना अग्नि के पूजे—भोजनन करे और पत्ते की पीठ पर और रात्रि में दीपक के विना भोज न न करे ४१

दया वाला गृहस्थ धर्म की ही चिन्ता करैं अपने पोष्ग बर्ग (पुत्र वा भृत्य आदि) इन के प्रयोजन की सिद्धिके लियेय बुद्धिमान् सदैव न्याय से वर्ते ४२

न्याय से संचय किये द्रव्य से अपनी रक्षा करनी जो

अन्यायेनतुयोजीवेत्सर्वकर्मबहिष्कृतः ४३
अग्निचित्कपिलासत्रीराजाभिक्षुर्महोदधिः
दृष्टमात्राःपुनंत्येतेतस्मात्पश्येत्तु नित्यशः ४४
अरणिंकृष्णमार्जारंचंदनंसुमणिंघृतं
तिलान्कृष्णाजिनंछागंगृहेचैतानिरक्षयेत् ४५
गवांशतंसैकवृषंयत्रतिष्ठत्ययंत्रितं
तत्क्षेत्रं दशगुणितंगोचर्मपरिकीर्तितं ४६
ब्रह्महत्यादिभिर्मर्त्यैर्मनोवाक्कायकर्मभिः
एतद्गोचर्मदानेनमुच्यतेसर्वकिल्बिषैः ४७
कुटुंबिनेदरिद्रायश्रोत्रियायविशेषतः

अन्याय से जीता है वह सब धर्मों से बाहर (अनधिकारी) है ४३

अग्नि की चित्ति (होम) जो करै—कपिलागौ—यज्ञ करने वाला—राजा—भिक्षुक—समुद्र—ये देखने से ही पवित्र करते हैं तिससे इनको नित्य देखै ४४

अरणि—काला बिलाव—चंदन—उत्तम मणि—घी—तिल काली मृगछाला—बकरी—इनकी घर में रक्षा करै ४५

जहां सौ गौ और एक बैल ये दशगुने अर्थात् दश हजार गौ और दश बैल—विना बांधे टिके उस क्षेत्र को गोचर्म कहते हैं ४६

इस गोचर्म मात्र भूमि के दान से मनुष्य मन—वाणी देह और कर्मों से किये ब्रह्म हत्या आदि पापों से छूटता है ४७

कुटुंबी—दरिद्र—विशेषकर—वेदपाठी इनको जो दान

यद्दानं दीयते तस्मै तद्दानं शुभकारकं ४८
वापिकूपतडागाद्यैर्वाजपेयशतैर्मखैः
गवां कोटिप्रदानेन भूमिहर्ता न शुद्ध्यति ४९
अष्टादशदिनादर्वाक्स्नानमेव रजस्वला
अत ऊर्ध्वं त्रिरात्रं स्यादुशना मुनिरब्रवीत् ५०
युगं युगद्वयं चैव त्रियुगं च चतुर्युगं
चांडालसूतकोदक्यापतितानामधः क्रमात् ५१
ततः सन्निधिमात्रेण सचैलं स्नानमाचरेत्
स्नात्वावलोकयेत्सूर्यमज्ञानात्स्पृशते यदि ५२
विद्यमानेषु हस्तेषु ब्राह्मणो ज्ञानदुर्बलः

दिया जाता है वही शुभका करने वाला है ४८

भूमि के हरने वाला मनुष्य बावडी कूप तालाब आदि से और सो १०० वाजपेय यज्ञों से और कोटि गौ देने से भी शुद्ध नहीं होता ४९

यदि जो दर्शन से अठारवें दिन से पहिले आगे कहे चांडाल आदि का स्पर्श रजस्वला स्त्री करे तो स्नान ही करे और अठारह दिन से आगे स्पर्श करे तो तीनरात उपवास करे यह उशना मुनने कहा है ५०

यदि चार दिन आठ दिन बारह दिन सोलह दिन क्रम से चांडालसूतिका रजस्वला पतित रजस्वला इनके ५१

समीप करे तो सचेल स्नान करे यदि अज्ञान से स्पर्श (छूना) भी करले तो स्नान करके सूर्य का दर्शन करे ५२

हाथों के विद्यमान रहते जो अज्ञानी ब्राह्मण पात्र में मुख

तोयंपिबतिवस्त्रेणश्वयोनौजायतेध्रुवं ५३
यस्तुक्रुद्धःपुमान्ब्रूयाज्जायांयस्त्वगम्यतां
पुनरिच्छतिचेदेनांविप्रमध्येतुश्रावयेत् ५४
श्रांतःक्रुद्धस्तमोंधोवाक्षुत्पिपासाभयार्दितः
दानंपुण्यमकृत्वावाप्रायश्चित्तंदिनत्रयम् ५५
उपस्पर्शेत्त्रिषवणंमहानद्युपसंगमे
चीर्णांतेचैवगांदद्याद्ब्राह्मणान्भोजयेद्दश ५६
दुराचारस्यविप्रस्यनिषिद्धाचरणस्यच
अन्नंभुक्त्वाद्विजःकुर्याद्दिनमेकमभोजनं ५७
सदाचारस्यविप्रस्यतथावेदांगवेदिनः

लगाकर जल पीता है वह निश्चय करके कुत्ते की योनि में पैदा होता है ५३

जो मनुष्य क्रोध में आकर अपनी स्त्री को ऐसा कहै तू मेरे गमन करने के योग्य नहीं है और फिर उस स्त्री की इच्छा करे तो इसबात को ब्राह्मणों को सुनादे ५४

थका—वा क्रोधी अज्ञानसे भयः क्षुधा और प्याससे दुखी वह ब्राह्मण दान और पुण्य न करें तो तीन दिन प्रायश्चित्त करै ५५

और त्रिकाल महानदी (गंगाआदि) के संगम (मेल) में स्नान और आचमन करै औ प्रायश्चित्त किये पीछे त्रिकाल गो दान करै और दश ब्राह्मण जिमावे ५६

दुराचारी और निषिद्ध आचरण के करने वाले ब्राह्मण के अन्न को खाकर द्विज एक दिन भोजन न करै ५७

भुक्त्वान्नं मुच्यतेपापादहोरात्रांतरान्नरः ५८
ऊर्ध्वोच्छिष्टमधोच्छिष्टमंतरिक्षमृतौतथा
कृच्छ्रत्रयंप्रकुर्वीतअशौचमरणेतथा ५९
कृच्छ्रं देऽव्ययुतंचैवप्राणायामशतद्वयं
पुण्यतीर्थेनार्द्रशिराःस्नानंद्व दशसंख्यया ६०
द्वियोजनंतीर्थयात्राकृच्छ्रमेकंप्रकल्पितं
गृहस्थः कामतः कुर्याद्रे तसः स्खलनंयदि ६१
सहस्रंतुजपेद्देव्याः प्राणायामैस्त्रिभिःसह
चतुर्विद्योपपन्नस्तुविधिवद्ब्रह्मघातके ६२

उत्तम आचरण का कर्ता और वेदान्त का जानने वाला ब्राह्मण के अन्न को खाकर मनुष्य अहोरात्र के अंतर से पाप से छूटता है ५८

ऊर्द्ध (बड़े) के उच्छिष्ट को वा अधः (छोटे) के उच्छिष्ट को और अंतरिक्ष में जो मरे उसके अशौच के अन्न को और मृतक के अशौच भोजन को खाकर तीन कृच्छ्र करे ५९

दश हजार गायत्री—दो से २०० प्राणायाम—और पवित्र तीर्थ में बारह बार शिर भिगोकर स्नान, ये एक कृच्छ्र का फल देते हैं ६०

और दो योजन तक तीर्थ की यात्रा को भी एक कृच्छ्र माना है—यदि गृहस्थ जान कर अपने वीर्य को गिराता है ६१

वह तीन प्राणायाम करे और एक हजार गायत्री जपे—विधि से जो चारों विद्याओं से युक्त हो और ब्रह्महत्या करे तो ६२

समुद्रसेतुगमनंप्रायश्चित्तंसमादिशेत्
सेतुबंधपथेभिक्षांचातुर्वर्ण्यात्समाचरेत् ६३
वर्जयित्वाविकर्मस्थान्छत्रोपानहवर्जितः
अहंदुष्कृतकर्माविमहापातककारकः ६४
गृहद्वारेषुतिष्ठामिभिक्षार्थीब्रह्मघातकः
गोकुलेषुवसेच्चैवग्रामेषुनगरेषुच ६५
तपोवनेषुतीर्थेषुनदीप्रस्रवणेषुच
एतेषुख्यापयन्नेनःपुण्यंगत्वातुसागरं ६६
दशयोजनविस्तीर्णंशतयोजनमायतं
रामचन्द्रसमादिष्टंनलसंचयसंचितं ६७

उने सेतुबंधरामेश्वर पर जाना प्रायश्चित बताया और वह सेतुबन्ध के मार्ग में चारों वर्णों से भिक्षा मांगे ६३

कुमार्गियों को छोड़ दे और छत्री और जूता न रक्खे—और ऐसे कहै कि मैं खोटे कर्म का करने वाला और महा पातकी ६४

ब्रह्महत्यारा भिक्षा के लिये घरके द्वारा पर खड़ाहुं और गोशाला ग्राम नगर इनमें वसे ६५

तपोवनों में तीर्थों में नदी के जहां प्रवाह हों वहां इन में अपने पाप को जताता हुआ पवित्र सागर पर जाकर ६६

दश योजन चौड़ा और सौ योजन लंबा रामचंद्र जी के कहने से नलवानर के बनाये हुए ६७

सेतुंदृष्ट्वासमुद्रस्यब्रह्महत्यांव्यपोहति
सेतुंदृष्ट्वाविशुद्धात्मात्ववगाहेतसागरं ६८
यजेतवाश्वमेधेनराजातुपृथिवीपतिः
पुनः प्रत्यागतोवेश्मवासार्थमुपसर्पति ६९
सपुत्रःसहभृत्यश्चकुर्याद्ब्राह्मणभोजनं
गाश्चैवैकशतंदद्याच्चातुर्विद्येषुदक्षिणां ७०
ब्राह्मणानांप्रसादेनब्रह्महातुविमुच्यते
विंध्यादुत्तरतोयस्यसंवासःपरिकीर्तितः ७१
पराशरमतंतस्यसेतुबंधस्यदर्शनात्
सवनस्थांस्त्रियंहत्वाब्रह्महत्याव्रतंचरेत् ७२
सुरापश्चद्विजःकुर्यान्नदींगत्वासमुद्रगां

समुद्र के सेतु को देखकर ब्रह्महत्या को दूरकरता है सेतु को देख विशुद्ध मन होकर सागर मे स्नान कर ६८

और पृथ्वी का पति राजा ब्रह्महत्या करै तो अश्वमेध यज्ञ करै फिर लौट कर घरमें बसने के लिये आवे ६९

पुत्र और भृत्यों समेत ब्राह्मणों को जिमावे और चार विद्या वाले ब्राह्मणों को सो १०० गौ दक्षिणा दे ७०

ब्राह्मणों की प्रसन्नता से ब्रह्महत्या से छुटजाता है विन्ध्याचल से उत्तर जो बसता है ७१

उसे पाराशर अपने सेतुबंध का दर्शन कहा है—प्रसूति में, टिकी स्त्री को मारकर ब्रह्म हत्या का व्रत करै ७२

मदिरा पीने वाला द्विज समुद्र में आने वाली नदी पर

चांद्रायणेततश्चीर्णेकुर्याद्ब्राह्मणभोजनं ७३
अनडुत्सहितांगांचदद्याद्विप्रेषुदक्षिणां
सुरापानंसकृत्कृत्वाअग्निवर्णांसुरांपिबेत् ७४
सपावयेदिहात्मानमिहलोकेपरत्रच
अपहृत्यसुवर्णंतुब्राह्मणस्यततः स्वयं ७५
गच्छेन्मुशलमादायराजानंस्ववधायतु
हतःशुद्धिमवाप्नोतिराज्ञाऽसौमुक्तएवच ७६
कामतस्तुकृतंयत्स्यान्नान्यथावधमर्हति
आसनाच्छयनाद्यानात्संभाषात्सहभोजनात् ७७
संक्रामंतीहपापानितैलबिंदुरिवांभसि

जाकर चांद्रायण व्रत करके ब्राह्मणों को जिमावे ७३

एक बैल सहित एक गौ ब्राह्मणों को दक्षिणा दे- एक वार मदिरा को पीकर अग्नि के समान है रंग जिसका (अत्यन्त उष्ण) ऐसी मदिरा को जो पीवे ७४

वह इस लोक और परलोक में अपने आत्मा को पवित्र करता है ब्राह्मण के सुवर्ण को चुराकर आपही ७५

मुसल को अपने मारने के लिये लेकर राजा के समीप जाय—फिर राजा से मर कर वह शुद्ध होता है और मुक्ति को भी प्राप्त होता है ७६

यदि जानकर करा होय तो मारने के योग्य है अन्यथा नहीं है—एक जगे आसन से—सोने से—गमन से बोलने से संग भोजन से ७७

इस प्रकार पाप लगते हैं जैसे जल में तेल की बूंद—

चांद्रायणंयावकंचतुलापुरुषएवच ७८
गवांचैवानुगमनंसर्वपापप्रणाशनं
एतत्पाराशरंशास्त्रंश्लोकानांशतपंचकम् ७९
द्विनवत्यासमायुक्तंधर्मशास्त्रस्यसंग्रहः
यथाध्ययनकर्माणिधर्मशास्त्रमिदंतथा ८०
अध्येतव्यंप्रयत्नेननियतंस्वर्गकामिना
इतिश्री पाराशरेधर्म्मशास्त्रेसकलप्रायश्चित्त
निर्णयोनामद्वादशोध्यायः

चांद्रायण - यावक (जौं को ही खाना) और तुला पुरुष ७८

गौओं के पीछे गमन—ये सब पापों को नाश करने वाले हैं यह पाराशर ऋषि का कहा धर्मशास्त्र जिसमें पांच सौ ५०० श्लोक ७९

बानवें ९२ समेत हैं और धर्मशास्त्र का यह संग्रह (इकट्ठा करना) है जैसे अध्ययन के कर्म हैं वैसाही यह धर्मशास्त्र है ८०

स्वर्ग की इच्छा करने वाले पुरुष को यह यत्न से पढना—८१

इति पाराशरीये धर्मशास्त्रे सकल प्रायश्चित्त निर्णयो नाम

१२ अध्याय

११ पाराशर स्मृति समाप्त हुई

श्रीगणेशायनमः

अथव्यासस्मृति प्रारंभः

वाराणस्यांसुखासीनंवेदव्यासंतपोनिधिं
पप्रच्छुर्मुनयोऽभ्येत्यधर्मान्वर्णव्यवस्थितान् १
सपृष्टःस्मृतिमान्स्मृत्वास्मृतिंवेदार्थगर्भितां
उवाचाथप्रसन्नात्मामुनयःश्रूयतामिति २
यत्रयत्रस्वभावेनकृष्णसारोमृगःसदा
चरतेतत्रवेदोक्तोधर्मोभवितुमर्हति ३
श्रुतिस्मृतिपुराणानांविरोधोयत्रदृश्यते
तत्रश्रौतंप्रमाणंतुतयोर्द्वैधेस्मृतिर्वरा ४

काशी में सुखसे बैठे तप के समुद्र वेदव्यास को समीप आकर मुनियों ने वर्णों के धर्म पूछे १

मुनियों के पूछे बुद्धिमान् वे व्यास जी वेद का अर्थ है गर्भ (बीच) में जिसके ऐसी स्मृति का स्मरणकरके और प्रसन्न होकर तुम सुनो ऐसे बोले २

जिस २ देश में स्वभाव से काला मृग सदैव बिचरे उस देश में वेद में कहा धर्म होना चाहिये ३

जिस कर्म में श्रुति (वेद) स्मृति और पुराण इनका परस्पर विरोध दीखे वहां वेदोक्त कर्म प्रमाण हैं और स्मृति और पुराण के बिरोध में स्मृति उत्तम है अर्थात् स्मृति का कहा कर्म करना चाहिये ४

ब्राह्मणक्षत्रियविशस्त्रयोवर्णाद्विजातयः
श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तधर्मयोग्यास्तुनेतरे ५
शूद्रोवर्णश्चतुर्थोऽपिवर्णत्वाद्धर्ममर्हति
वेदमंत्रस्वधास्वाहावषट्कारादिभिर्विना ६
विप्रवद्विप्रविन्नासुक्षत्रविन्नासुक्षत्रवत्
जातकर्माणिकुर्वीततत:शूद्रासुशूद्रवत् ७
वैश्यासुविप्रक्षत्राभ्यांततःशूद्रासुशूद्रवत्
अधमादुत्तमायास्तुजातःशूद्राधमःस्मृतः ८
ब्राह्मण्यंशूद्रजनितश्चांडालोधर्मवर्जितः

ब्राह्मण—क्षत्री—वैश्य ये तीन वर्ण द्विजाति हैं और ये ही तीनों वेद—स्मृति—और पुराणों में कहे धर्म के योग्य हैं इतर नहीं हैं ५

चौथा शूद्र भी वर्ण होने से वेद का मंत्र स्वधा स्वाहा वषट्कार आदि के विना धर्म करने योग्य है ६

ब्राह्मण कुल मे जो विवाही उसकी संतान के जात कर्म आदि संस्कार ब्राह्मणों के समान और क्षत्रियों के कुलसे जो विवाही उसकी संतान के क्षत्रियों के समान और शूद्र कुल से विवाही की संतान के शूद्रोंके समान होते हैं ७

ब्राह्मण और क्षत्रिय ने विवाही जो वैश्या और वैश्य ने ने विवाही जो शूद्रा इन दोनों की संतान के कर्म शूद्रके समान होते हैं निचले वर्णसे उत्तम वर्णकी कन्या में जो पैदा हो वह शूद्रसे भी नीच कहा है ८

ब्राह्मणी में जो शूद्रसे पैदा हो वह धर्मोंसे वर्जित चांडाल

कुमारीसंभवस्त्वेकःसगोत्रायांद्वितीयकः ९
ब्राह्मण्यांशूद्रजनितश्चांडालस्त्रिविधःस्मृतः
बर्द्धकोनापितोगोपआशायः कुंभकारकः १०
वणिक्किरातकायस्थमालाकारकटुंबिनः
वरटोमेदचंडालदासः श्वपचकोलकाः ११
एतेंऽत्यजाः समाख्यातायेचान्येचगवाशनाः
एषांसंभाषणात्स्नानंदर्शनादर्कवीक्षणं १२
गर्भाधानंपुंसवनंसीमंतोजातकर्मच
नामक्रियानिष्क्रमणोऽन्नाशनंवपनक्रिया १३

होता है वह दो प्रकार का होता है एक वह जो कुमारी से पैदा हो दूसरा वह जो सगोत्रा (विवाही) के पैदा हो ९

ब्राह्मणी में शूद्रसे पैदा हुआ चांडाल तीन प्रकार का होता है वर्द्धकी, नापित, और गोप—और आशासे जो घड़े बनावे वह (कुह्मार) १०

वणिक् (जो लेनदेन करै और निषिद्ध जाति हो) किरात कायस्थ—माली—कुटुंबी—वरट—मेद—चंडाल—दास—श्वपच—कोलक ११

ये सब और जो गौओं को खावें अंत्यज कहेहैं इनके संग बोलने से स्नान करै और इनके देखने से सूर्य का दर्शन करै १२

१ गर्भादान—२ पुंसवन—३ सीमंत—४ जातकर्म—५ नाम करण—६ निष्क्रमण—७ अन्न प्राशन—८ मुन्डन १३

९ कर्णबेध—१० यज्ञोपवीत—११ वेदारंभ—१२ केशांत

कर्णवेधोव्रतादेशोवेदारंभक्रियाविधिः
केशांतः स्नानमुद्वाहोविवाहाग्निपरिग्रहः १४
त्रेताग्निसंग्रहश्चेतिसंस्काराः षोडशस्मृताः
नवैताःकर्णवेधांतामंत्रवर्जंक्रियाःस्त्रियः १५
विवाहोमंत्रतस्तस्याः शूद्रस्यामंत्रतोदश
गर्भाधानंप्रथमतस्तृतीयेमासिपुंसवः १६
सीमंतश्चाष्टमेमासिजातेजातक्रियाभवेत्
एकादशेऽह्निनामार्कस्येक्षामासिचतुर्थके १७
षष्ठेमास्यन्नमाश्नीयाच्चूडाकर्मकुलोदितं
कृतचूडेचबालेचकर्णवेधोविधीयते १८

---

१३ स्नान - १४ विवाह - १५ विवाह की अग्नि का ग्रहण १४

१६ त्रेता (तीनों वेदों की विधि से) अग्नि का ग्रहण ये गर्भाधान आदि सोलह संस्कार कहे हैं कर्णवेध तक जो नौ ९ संस्कार हैं वे स्त्री के विनामन्त्र होते हैं १५

विवाह स्त्री का भी मंत्रों से होता है और शूद्रों के ये दशों बिना मंत्र होते हैं गर्भाधान प्रथम (पहिले रजोदर्शन में) होता है तीन मास का जब गर्भ हो तब सीमंत होता है १६

आठवें महीने में सीमंत पैदा हुए पर जात कर्म - ग्यारवें दिन नाम कर्ण चौथे महीने अर्केक्षा (निष्क्रमण) अर्थात् सूर्य का दर्शन बाहर निकास कर बालक को कराना १७

छटे महीने अन्न प्राशन (अन्न खाना) और मुंडन कुलकी रीति के अनुसार करना बालक का जब मुंडन हो चुके तब कर्णबेध (कनछेदी वा प्रयोजन) करना १८

विप्रोगर्भाष्टमेवर्षेक्षत्रएकादशेतथा
द्वादशेवैश्यजातिस्तुव्रतोपनयमर्हति १९
तस्यप्राप्तव्रतस्यायंकालःस्याद्द्विगुणाधिकः
वेदव्रतच्युतोव्रात्यःसव्रात्यस्तोममर्हति २०
द्वेजन्मनीद्विजातीनांमातुःस्यात्प्रथमंतयोः
द्वितीयंछंदसांमातुर्ग्रहणाद्विधिवद्गुरोः २१
एवंद्विजातिमापन्नोविमुक्तोवान्यदोषतः
श्रुतिस्मृतिपुराणानांभवेदध्ययनक्षमः २२
उपनीतोगुरुकुलेवसेन्नित्यंसमाहितः
बिभृयाद्दंडकौपीनोपवीताजिनमेखलाः २३

ब्राह्मण आठवें वर्ष क्षत्रिय ग्यारवें वर्ष वैश्य बारवें वर्ष व्रतोपनयन (जनेउ) के योग्य होते हैं १९

यदि इनके यज्ञोपवीत का जो समय है उससे दूने से अधिक समय बीतजाय और यज्ञोपवीत न हो तो वेद के व्रत से पतित व्रात्य होजाते हैं व व्रात्यस्तोमयज्ञ करने योग्य हैं २०

द्विजातियों के जन्म दो होते हैं उन दोनों में पहिला माता से और दूसरा गुरु से वेदों की माता (गायत्री) के विधिपूर्वक ग्रहण करने से २१

ऐसे द्विजाति को प्राप्त हुआ और अन्य दोषों से निवृत्त होकर श्रुति स्मृति पुराण इनके पढ़ने के योग्य होता है २२

यज्ञोपवीत होने पर गुरु के कुलमें सावधान होकर बसे और दंड कौपीन जनेऊ मृगछाला और मेखला (कौंदनी) इन को धारण करैं २३

दुणयेन्हिगुर्वनुज्ञातःकृतमंत्राहुतिक्रियः
स्मृत्वोंकारंचगायत्रीमारभेद्वेदमादितः २४
शौचाचारविचारार्थंधर्मशास्त्रमपिद्विजः
पठेतगुरुतःसम्यक्कर्मतद्दिष्टमाचरेत् २५
ततोभिवाद्यस्थविरान्गुरुंचैवसमाश्रयेत्
स्वाध्यायार्थंतदापन्नःसर्वदाहितमाचरेत् २६
नापक्षिप्तोऽपिभाषेतनाव्रजेत्ताडितोऽपिवा
विद्वेषमथपैशून्यंहिंसनंचार्कवीक्षणं २७
तौर्य्यत्रिकानृतोन्मादपरिवादानलंक्रियां
अंजनोद्वर्त्तनादर्शस्त्रग्विलेपंनयोषितः २८: २८

फिर पवित्र दिन में गुरु की आज्ञा से मंत्रों से होम, और ॐकार और गायत्री का स्मरण कर के आदि से वेद का आरंभ करे २४

और द्विज शौच आचार के बिचार करने के लिये गुरु से धर्मशास्त्र को भी पढे और गुरु के कहे कर्म को भली प्रकार करे २५

फिर वृद्धोंको नमस्कार करके गुरुका आश्रय ले और पढने के लिये सावधानी से गुरुके हितका आचरण करै २६

निंदा करने पर भी गुरुके सनमुख न बोले और गुरुकी ताडना से भी वहां से न आवे वैर पैशून्य (चुगलपन) हिंसा सूर्यका दर्शन २७

तौर्यत्रिक (गाना वजाना) झूट–उन्माद–निंदा भूषण अंजन–उवटना–आदर्श (सीसा) का देखना–माला चंदन आदिका लगाना और स्त्री २८

वृथाटनमसंतोषंब्रह्मचारीविवर्जयेत्
ईषच्चलितमध्यान्हेऽनुज्ञातोगुरुणास्वयं २६
अलोलुपश्चरेद्भैक्षंजातिषूत्तमवृत्तिषु
सद्योभिक्षान्नमादायवित्तवत्तदुपस्पृशेत् ३०
कृतमाध्यान्हिकोऽश्नीयादनुज्ञातोयथाविधि
नाद्यादेकान्नमुच्छिष्टंभुक्त्वाचाचामितामिथात् ३१
नान्यद्भिक्षितमादद्यादापन्नोद्रविणादिकं
अनिंद्यामंत्रितःश्राद्धेपैत्रेद्यादगुरुचोदितः ३२
एकान्नपथ्यविरोधेव्रतानांप्रथमाश्रमी
भुक्त्वागुरुमुपासीतकृत्वासंधुक्षणादिकं ३३

वृथा फिरना—असतोष इनको ब्रह्मचारी वर्जे और जब कुछ मध्यान्ह ढले उस समय गुरुकी आज्ञासे आपही २६

चंचलता को त्यागकर उत्तम आचरण वाली जातियों में भिक्षा मांगे और शीघ्र भिक्षाके अन्नको लेकर धनके समान उसका स्पर्श करे ३० |

फिर मध्यान्ह का कर्म करके गुरुकी आज्ञा ले विधि से भोजन करै और एक मनुष्य का अन्न और उच्छिष्ट इनको न खा यदि खाय तो आचमन करै ३१

अन्यके मांगे द्रव्य आदिको आपत्ति में भी न ले और अनिंद्य (शुद्ध) के निमंत्रण देने पर पितरोंके श्राद्धमें गुरुके कहने से भोजन करै ३२

यदि विरोध बुराई व्रतोंकी न होय तो ब्रह्मचारी एकके अन्नको भी खाकर संधुक्षण (मार्जन) आदि करके गुरुकी सेवा करै ३३

समिधोऽग्नावादधीततः परिचरेद्गुरुं
शयीतगुर्वनुज्ञातः प्रह्वश्चप्रथमंगुरोः ३४
एवमन्वहमभ्यासीब्रह्मचारीवृत्तंचरेत्
हितोपवादःप्रियवाक्सम्यग्गुर्वर्थसाधकः ३५
नित्यमाराधयेदेनमासमाप्तश्रुतिग्रहात्
अनेनविधिनाधीतोवेदमंत्रोद्विजंनयेत् ३६
शापानुग्रहसामर्थ्यमृषीणांचसलोकतां
पयोऽमृताभ्यांमधुभिःसाज्यैःप्रीणांतिदेवताः ३७
तस्मादहरहर्वेदमनध्यायमृतेपठेत्
यदंगंतदनध्यायेगुरोर्वचनमाचरेत् ३८

अग्नि में समिधें रक्खें फिर गुरुकी सेवा करे और प्रथम गुरुको नमस्कार करके गुरुकी आज्ञासे शयन करे ३४

ऐसे प्रति दिन है अभ्यास करता हुआ ब्रह्मचारी व्रतों को करै—और हित से बोले प्यारी वाणी रक्खे और भली प्रकार गुरु के कार्य को साधे ३५

वेद के आने को समाप्ति तक नित्य गुरु की आराधना (सेवा) करै इस बिधि से पढाहुआ वेदका मंत्र, द्विज को ऐसा करता है कि ३६

शाप देना और अनुग्रह (वर) करने में समर्थ और ऋषियों के लोक में जाने योग्य होता है—दूध—अमृत - मधु—और आज्य (घी) इनसे देवता प्रसन्न होते हैं ३७

तिससे अनध्यायों को छोड़ कर प्रति दिन वेद पढे और जो बेद के अंग (व्याकरण आदि) हैं उन्हें अनध्यायों में पढे और गुरु के बचन को करै ३८

व्यतिक्रमादसंपूर्णमनहंकृतिराचरेत्
परत्रेहचतद्ब्रह्मअनधीतमपिद्विजं ३६
यस्तूपनयनादेतदात्तमृत्योर्व्रतंचरेत्
सनैष्ठिकोब्रह्मचारीब्रह्मसायुज्यमाप्नुयात् ४०
उपकुर्व्वाणकोयस्तुद्विजः षड्विंशवार्षिकः
केशांतकर्मणात्त्रयथोक्तचरितव्रतः ४१
समाप्यवेदान्वैदौवावेदंचाप्रसभं द्विजः
स्नायीतगुर्वनुज्ञातः प्रवृत्तोदितदक्षिणः ४२
इतिश्रीवेदव्यासीयेधर्म्मशास्त्रे प्रथमो ध्यायः १

व्यतिक्रम (उलटा पलटी) से असंपूर्ण (पूरा नही होता) रहता है इससे अहंकार को छोड़कर यही आचरण करै, वह वेद चाहे द्विज न पढै तो भी इस लोक और परलोक में सुख देता है ३६

जो यज्ञोपवीत से लेकर मृत्यु पर्यंत इस व्रत को करै वह नैष्ठिक ब्रह्मचारी ब्रह्मसायुज्य मुक्ति को प्राप्त होता है ४०

जो छब्बीस वर्ष का द्विज केशांत कर्म तक शास्त्र में कहे के अनुसार किये हैं व्रत जिसने ऐसा हो उसे उपकुर्वाणक कहते हैं ४१

चारों वेदों को वा दो वेदों को वा एक वेद को समाप्त करके और गुरुकीआज्ञा से और गुरु को दक्षिणा देकर जो स्नान (गृहस्थ में आने के समावर्तन कर्ममें जिसे करते हैं) करै उसे प्रवृत्त कहतेहैं ४२

इति श्रीवेदव्यासीय धर्मशास्त्रे १ अध्यायः

एवंस्नातकतांप्राप्तोद्वितीयाश्रमकांक्षया
प्रतीक्षेतविवाहार्थमनिंद्यान्वयसंभवां १
अरोगादुष्टवंशोत्थामशुल्कादानदूषितां
सवर्णामसमानार्षाममातृपितृगोत्रजां २
अनन्यपूर्विकांलघ्वींशुभलक्षणसंयुतां
धृताधोवसनांगौरींविख्यातदशपूरुषां ३
ख्यातनाम्नःपुत्रवतः सदाचारवतः सतः
दातुमिच्छोदुहितरंप्राप्यधर्मेणचोद्वहेत् ४

गृहस्थ आश्रम की इच्छा से ऐसे स्नातक रूप को प्राप्त हुआ द्विज शुद्ध वंश में पैदा हुई स्त्री की विवाह के लिये प्रतीक्षा करे (बाट देखे १

और जिस स्त्री के रोग न हो—दुष्ट वंश की न हो मोल न लीहो अर्थात् जिसका बाप रुपया न ले, अपने वर्णकी हो—अपने प्रवर की न हो—और माता और पिता के गोत्र की न हो २

जिसकी पहिले सगाई न हुई हो—लघ्वी (छोटी वा पतली) हो शुभलक्षण वाली हो—अधोवस्त्र (लहंगा) पहनती हो गौरी (८ वर्ष की) हो और जिसके बड़े दश पुरुष तक विख्यात हों ३

और विख्यात नाम वाले और पुत्रवाले और अच्छे आचरणवाले की और जो दिया चाहता हो उसकी पुत्री को, जानकर धर्म से विवाह ले ४

ब्राह्मोद्वाहविधानेनतदभावेपरोविधिः
दातव्यैषासदृक्षायवयोविद्यान्वयादिभिः ५
पितृतत्पितृभ्रातृपितृव्यज्ञातृमातृषु
पूर्वाभावेपरोदद्यात्सर्वाभावेस्वयंव्रजेत् ६
यदिसादातृवैकल्याद्रजः पश्येत्कुमारिका
भ्रूणहत्याश्चयावत्यः पतितः स्यात्तदप्रदः ७
तुभ्यंदास्याम्यहमितिग्रहीष्यामीतियस्तयोः
कृत्वासमयमन्योन्यंभजतेनसदंडभाक् ८

और ब्राह्मविवाह की विधि से विवाहै और ब्राह्मविवाहके अभाव में दूसरी (देव आदि विवाहों की) विधि कही है— और यह कन्या उसे देनी जो अवस्था—विद्या और वंशमें समान हो ५

पिता—पितामह—भाई—चाचा ज्ञाति के मनुष्य—माता—इनमें पहिले २ के अभाव में अगला२ दे यदि इनमें कोई न होय तो कन्या आपही पतिके यहां चली जाय ६

यदि वह कन्या देने वाले की विलकता (असावधानी) से रज (कपड़ों से होना) को देखले तो जितने रज देखे उतनीही भ्रूण हत्या देने वाले को लगती हैं इससे जो उक्त कन्या को न विवाहै वह पतित होता है ७

में तुझे दूंगा और में ग्रहण करूंगा ऐसे परस्पर समय (निश्चय वा प्रतिज्ञा) वर और दाता दोनों करके यदि उन दोनों में जो अपनी प्रतिज्ञा पर नरहै वही दंड का भागी है ८

त्यजन्नदुष्टं दंड्यः स्याद् दूषयंश्चाप्यदूषितां
ऊढायांहिसवर्णायामन्यांयाकाममुद्वहेत् ६
तस्यामुत्पादितः पुत्रोनसवर्णात्प्रहीयते
उद्वहेत्क्षत्रियांविप्रोवैश्यांचक्षत्रियोविशां १०
नतुशूद्रांद्विजःकश्चिन्नाधमः पूर्ववर्णजां
नानावर्णासुभार्य्यासुसवर्णासहचारिणी ११
धर्म्माधर्म्मेषुधर्मिष्ठाज्येष्ठातस्यस्वजातिषु
पाटितोऽयंद्विजः पूर्वमेकदेहःस्वयंभुवा १२
पतयोर्द्धेनचार्द्धेनपत्न्यो भूवन्नितिश्रुतिः

जो दुष्ट स्त्री न हो उसे जो त्यागे वह और जो दूषित न हो उसे जो दूषण लगावे वह ये दोनों दंड के योग्य हैं -यदि अपने वर्ण की एक विवाहली होय तो दूसरे वर्ण की अन्यस्त्री को भी यथेच्छ विवाह ले ६

उस अन्य वर्ण कीस्त्री में जो पुत्र होता है वह सवर्णही होता है ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्या को बिवाहै और क्षत्रिय बैश्या को १०

और कोईभी द्विज शूद्रा को, और नीचा वर्ण उत्तम वर्ण की को न बिवाहै—अनेक वर्ण की स्त्रियों में जो सवर्णा है [अपने वर्णकी] वही सहचारिणी ११

धर्म वा अधर्म में है—और वही धर्मिष्ठा है और वही अपनी जातिमें ज्येष्ठा (बड़ी) है—हे द्विजो यह एक देह पहिले ब्रह्मा ने फाड़ा है १२

आधे देह से पति और आधे से स्त्री हुई हैं यह श्रुति

यावन्नविंदतेजायांतावदर्द्धोभवेत्पुमान् १३
नार्द्धःप्रजायतेसर्वंप्रजायेतेत्यपिश्रुतिः
गुर्वीसाभूस्त्रिवर्गस्यवोढुंनान्येनशक्यते १४
यतस्ततोन्वहंभूत्वास्ववशोबिभृयाच्चतां
कृतदारोऽग्निपत्नीभ्यांकृतवेश्मागृहंवसेत् १५
स्ववृत्त वित्तमासाद्यवैतानाग्निंनहापयेत्
स्मार्तंवैवाहिकेवन्हौश्रौतंवैतानिकाग्निषु १६
कर्मकुर्यात्प्रतिदिनंविधिवत्प्रीतिपूर्वतः
सम्यग्धर्मार्थकामेषुदंपतिभ्यामहर्निशं १७

(वेद) है इतने पुरुष स्त्री को न बिवाहै तबतक आधाहोता है १३

कुछ ब्रह्मासे सब आधेही नही होते यह भी श्रुति है वह स्त्री धर्म अर्थ—काम की बड़ी भारी भूमि (पैदा करने वाली) है उसे पति के बिना अन्य कोई नही बिवाह सकता है १४

जिससे अन्य नही बिवाह सकता तिससे प्रतिदिन स्वतंत्र होकर उस स्त्री की पालना करै बिवाह करके अग्नि और पत्नी सहित पुरुष घर को बना कर गृह में बसे १५

अपने पैदा किये धन को प्राप्त होकर बैतानाग्नि (यज्ञ की) को न त्यागे स्मृति में कहे कर्म बिवाह की अग्नि में और वेदोक्त कर्म वैतानाग्नि में १६

प्रति दिन विधि और प्रीति से उक्त कर्मों को करै— स्त्री और पुरुष धर्म अर्थ—कामों में रात दिन भलीप्रकार १७

एकचित्ततयाभाव्यंसमानव्रतवृत्तितः
नपृथग्विद्यतेस्त्रीणांत्रिवर्गविधिसाधनं १८
भावतोह्यतिदेशाद्वाइतिशास्त्रविधिः परः
पत्युःपूर्वंसमुत्थायदेहशुद्धिं विधायच १९
उत्थायशयनाद्यानिकृत्वावेश्मविशोधनं
मार्जनैर्लेपनैः प्राप्यसाग्निशालांस्वमंगणं २०
शोधयेदग्निकार्याणिस्निग्धान्युष्णेनवारिणा
प्रोक्षणैरितितान्येवयथास्थानंप्रकल्पयेत् २१
द्वंद्वपात्राणिसर्वाणिनकदाचिद्वियोजयेत्
शोधयित्वातुपात्राणिपूरयित्वातुधारयेत् २२

एक मन—एक व्रत—एक वृत्ति से रहै स्त्रियों को पतिसे पृथक् धर्म अर्थ काम का कोई कारण नहीं १८

भाव (पति के अभिप्राय) से वा आज्ञा से यही शास्त्र की उत्तम विधि है—स्त्री पति से पहिले उठकर और देह की शुद्धि को करके १९

शय्या आदि को उठाकर और घर का शोधन (सफाई) करके मार्जन (बुहारना) और लीपने से अग्नि की शाला और अपने आंगन को २०

शुद्ध करै और उष्ण जलसे अग्नि के जो कार्य (पात्र आदि) चिकने हैं उनको प्रोक्षणै इसमंत्रसे शुद्ध करै फिर उन्हें जहां के तहां रखदे २१

जोड़े के जो पात्र (सड़ांसी वटलोआदि) हैं उन्हें कभी भी पृथक् न रक्खे फिर पात्रों को शुद्ध करके और जल आदि से भर कर रखदे २२

महानसस्यपात्राणिबहिः प्रक्षाल्यसर्वथा
मृद्भिश्चशोधयेच्चुल्लींतत्राग्निंविन्यसेत्ततः २३
स्मृत्वानियोगपात्राणिरसांश्चद्रविणानिच
कृतपूर्वाह्णकार्याचस्वगुरूनभिवादयेत् २४
ताभ्यांभर्तृपितृभ्यांवाभ्रातृमातुलबांधवैः
वस्त्रालंकाररत्नानिप्रदत्तान्येवधारयेत् २५
मनोवाक्कर्मभिः शुद्धापतिदेशानुवर्तिनी
छायेवानुगतास्वच्छासखीवहितकर्मसु २६
दासीवादिष्टकार्येषुभार्याभर्तुः सदाभवेत्
ततोऽन्नसाधनंकृत्वापतयेविनिवेद्यतत् २७
वैश्वदेवकृतैरन्नैर्भोजनीयांश्चभोजयेत्

चौके से बाहर महानस (रसोई) के सब पात्र धोकर मिट्टि से चूल्हे को लीप कर उसमें अग्नि को रखदे २३

बर्तने के पात्रों को और रस द्रव्य को स्मरण (याद) कर के पूर्वान्ह (दुपहर से पहिले) का काम करके अपने गुरु [माता पिता] ओं को नमस्कार करै २४

माता—पिता—पति—श्वशुर—भाई—मांमा—बांधव इन केही दिये वस्त्र - भूषणों को धारण करै २५

मन—वाणी कर्म इनसे शुद्ध और पति की आज्ञामें बर्ते और छाया के समान पतिके पीछे चले और स्वच्छ हुई सखी के समान पतिका हित करै २६

पतिके कहे कार्यों में स्त्री सदैव दासी के समान रहे फिर अन्न को सिद्ध (बना) कर पति को निवेदन करके २७

किया है बलिवैश्वदेव जिससे ऐसे अन्न से जिमाने के

पतिंचैवाभ्यनुज्ञातासिद्धमन्नादिनात्मना २८
भुक्त्वानयेदहः शेषमायव्ययविचिंतया
पुनः सायंपुनःप्रातर्गृहशुद्धिं विधायच २९
कृतान्नसाधनासाध्वीसुभृशंभोजयेत्पतिम्
नातितृप्त्यास्वयंभुक्त्वागृहनीतिंविधायच ३०
आस्तीर्यसाधु शयनंततः परिचरेत्पतिं
सुप्तेपतौतदभ्यासेस्वपेत्तद्गतमानसा ३१
अनग्नाचाप्रमत्ताचनिष्कामाचजितेंद्रिया
नोच्चैर्वदेन्नपरुषंनबहून्पत्युरप्रियं ३२

योग्यों [पुत्र आदि] को और पति को जिमावे और पति की आज्ञा से शेष [बचे] अन्न को आप खावे २८

भोजन करके शेष दिन को आय (आमदनी) व्यय (खर्च) की चिंता से बितावे फिर सायंकाल फिर प्रातःकाल घरकी शुद्धि करके २९

किया है अन्न का साधन जिसने ऐसी साध्वी स्त्री बड़ी प्रीति से पति को जिमावे अत्यन्त तृप्ति के विना आप खाकर और घरकी नीति को करके ३०

भली प्रकार शय्या को बिछाकर पति की सेवा करे जब पति सोजांय तब पतिमें है मन जिसका ऐसी स्त्री उसके समीप सोजाय ३१

नंगी न रहै—प्रमत्त नहो—निष्काम और जितेंद्रिय रहै ऊंचे और कठोर वाणीसे न बोले बहुत ऐसे वचन न कहै जो पति को प्यारे न हों ३२

नकेनचित्विवदेच्चअप्रलापविलापिनी
नचापिव्ययशीलास्यान्नधर्म्मार्थविरोधिनी ३३
प्रमादोन्मादरोषेर्ष्यावंचनंचातिमानितां
पैशुन्यहिंसाविद्वेषमहाहंकारधूर्तता ३४
नास्तिक्यंसाहसंस्तेयंदंभान्साध्वीविवर्जयेत्
एवंपरिचरंतीसापतिंपरमदैवतं ३५
यशः शमिहयात्येवपरत्रचसलोकतां
योषितोनित्यकर्मोक्तंनैमित्तिकमथोच्यते ३६
रजोदर्शनतोदोषात्सर्वमेवपरित्यजेत्

किसी के संग लड़ाई न करै अनर्थक वृथा न बोले—व्यय (खर्च) में मन न रक्खै—धर्म और अर्थ का विरोध न करै ३३

असावधानी—उन्माद—क्रोध—ईर्ष्या—ठगाई—अत्यन्त मान—चुगलपन—हिंसा—बैर—बड़ा अहंकार—धूर्तपन ३४

नास्तिक पना—साहस (शीघ्रता में चाहै जो कर बैठना) चोरी—दंभ—इन सब को साध्वी स्त्री बर्ज्जदे ऐसे परमदेवत रूप पति की सेवा करती वह स्त्री ३५

इस लोकमें यश और सुख को और परलोक में पति के लोक को प्राप्त होती है यह स्त्री का नित्य करने का धर्म कहा इसके आगे नैमित्तिक (जो किसी निमित्त से हो) कर्म कहते हैं ३६

रजोदर्शन होनेपर दोष के भय से सबको त्यागदे जहां

सर्वैरलक्षिताशीघ्रं लज्जितांतगृहेवसेत् ३७
एकांबरावृतादीनास्नानालंकारवर्जिता
मौनिन्यधोमुखीचक्षुःपाणिपद्भिरचचला ३८
अश्नीयात्केवलंभक्तंनक्तंमृन्मयभाजने
स्वपेद्भूमावप्रमत्ताक्षपेदेवमहस्त्रयं ३९
स्नायीतचत्रिरात्रांतेसचैलमुदितेरवौ
विलोक्यभर्तुर्वदनंशुद्धाभवतिधर्मतः ४०
कृतशौचापुनः कर्मपूर्ववच्चसमाचरेत्
रजोदर्शनतोयास्यूरात्रयः षोडशर्तवः ४१

सब कोई न देखैं वहां शीघ्रही घरके भीतर लज्जा को प्राप्त हुई वसै ३७

एक वस्त्र धारण किये दीन हुई और स्नान और भूषण से वर्जित और मौन हुई नीचे को मुख किये नेत्र हाथ--पैर इनको न चलावे ३८

एक अन्न रात्रि के समय मिट्टीके पात्र में खाय—अप्रमत्त हुई पृथ्वी पर सोवे ऐसे तीन दिन बितावे ३९

सूर्य का उदय होने पर त्रिरात्र के पीछे ४दिन सचैल स्नान करै फिर अपने पतिके मुख को देखकर धर्म से शुद्ध होती है ४०

किया है शौच जिसने ऐसी वह स्त्री फिर पहिले के समान कामों को करै—रजोदर्श से लेकर जो सोलह ऋतु की रात्रि होती हैं ४१

ततः पुंबीजमक्लिष्टंशुद्धेक्षेत्रेप्ररोहति
चतस्त्रश्चादिमारात्रीःपर्ववच्चविवर्जयेत् ४२
गच्छेध्युग्मासुरात्रीषुपौष्णापित्रर्क्षराक्षसान्
प्रच्छादितादित्यपथेपुमान्गच्छेत्स्वयोषितः ४३
क्षमालंकृदवाप्नोतिपुत्रंपूजितलक्षणं
ऋतुकालेऽभिगम्यैवंब्रह्मचर्यैव्यवस्थितः ४४
गच्छन्नपियथाकामंनदुष्टःस्यादनन्यकृत्
भ्रूणहत्यामवाप्नोतिऋतौभार्यापराङ्मुखः ४५
सात्ववाप्यान्यतोगर्भंत्याज्याभवतिपापिनी

उन रात्रियों में पुरुष का बीज बिना क्लेश शुद्ध क्षेत्र में जमता है चार पहिली रात्रियों को ऐसे बर्जदे जैसे पर्व मावस आदि ४२

युग्म सम रात्रियों में रेवती—मघा श्लेषा—इन नक्षत्रों में गमन न करै और अपनी स्त्री के संग ऐसे स्थान में गमन करै जहां सूर्य की किरण न आती हों ४३

क्षमा से शोभायमान वह पुरुष, प्रशंसा के योग्य हैं लक्षण जिसके ऐसे पुत्र को प्राप्त होता है ऋतु के समय ब्रह्मचारी भी ऐसे स्त्री का संग करके ४४

यथेच्छ गमन करता हुआ दुष्ट नहीं होता यदि इतर निंदित कर्म आदि न करै जो ऋतुकाल में स्त्री को संग नहीं करता वह भ्रूणहत्यारा होता है ४५

महा पातकों से दुष्टा और पति के गर्भ का नाश करने

महापातकदुष्टाचपतिगर्भविनाशिनी ४६
सद्वृत्तचारिणींपत्नींत्यक्त्वापततिधर्मतः
महापातकदुष्टोऽपिनाप्रतीक्ष्यतयापतिः ४७
अशुद्धेक्षयमादूरंस्थितायामनुचिंतया
व्यभिचारेणदुष्टानांपतीनांदर्शनादृते ४८
धिक्कृतायामवाच्यायामन्यत्रवासयेत्पतिः
पुनस्तामार्तवस्नातांपूर्ववद्व्यवहारयेत् ४९
धूर्तांचधर्मकामघ्नीमपुत्रांदीर्घरोगिणीं

वाली वह पापिनी त्यागने योग्य है जो अन्य पुरुष से गर्भ को धारण करै ४६

अच्छा आचरण करने वाली स्त्री को त्यागकर पुरुष धर्म से पतित होता है और महापातक से दुष्ट पति की शुद्धितक भी वह स्त्री प्रतीक्षा करै (बाटदखे) ४७

महा पातकी की शुद्धि पर्यंत व्यभिचारी जो दुष्ट पति उनके दर्शन को छोड़कर दूरस्थान में चिंता से टिकी स्त्री को ४८

और जिसे धिक्कारदो हो वा जिस के संग बोलना छोड़ दिया हो उसे दूसरे स्थान में वसादे फिर जब वह ऋतु स्नान काले तब पर्वके समान उसके संग वर्ताव करै ४९

जो स्त्री धूर्त हो और जो धर्म और काम को नष्ट करै और जिसके पुत्र न हो और जिसको दीर्घ रोग हो जो अत्यन्त दुष्ट हो जिसे कुछ व्यसन (मदिरा पीना आदि) हो जो अ

सुदुष्टांव्यसनासक्तान्महितान्धिवासयेत् ५०
आधिविन्नाअपिविभुःस्त्रीणांतुसमतांभियात्
विवर्णादीनवदनादेहसंस्कारवर्जिता ५१
पतिव्रतानिराहाराशोष्यतेप्रोषितेपतौ
मृतंभर्तारमादायब्राह्मणीवन्हिमाविशेत् ५२
जीवंतीचेत्त्यक्तकेशातपसाशोधयेत्वपुः
सर्वावस्थासुनारीणांनयुक्तंस्यादरक्षणं ५३
तदेवानुक्रमात्कार्य्यंपितृभर्तृसुतादिभिः
जाताःसुरक्षितावायेपुत्रपौत्रप्रपौत्रंकाः ५४

ना हित न चाहती हो इन स्त्रियों का अधिवास न करै अर्थात् इनके ऊपर द्वितीय बिवाह करले ५०

वह अधिबिन्ना स्त्री जिस पर दूसरा बिवाह किया भी है पति की अन्य स्त्रियों के समान ही होती है यदि मलीनवर्ण दीनमुख देह के संस्कार उबटना आदि को बर्ज दे ५१

और पति में ब्रत रक्खे निराहार रहै और पति परदेश में जाय तो देहको सुखादे ऐसी ब्राह्मणी मरे पति को लेकर अग्नि में प्रवेश करे (सतीहोजाय) ५२

यदि जीवे तो केशोंको मुंडाले तपसे शरीर को शुद्ध करै स्त्रियों की सब अवस्था (बालक से वृद्ध तक) में अरक्षा युक्त है ५३

इससे क्रमसे तीनों अवस्थाओं में पिता पति पुत्रआदि स्त्रियों की रक्षा करें पैदा हुए और जिनकी रक्षा कीहै ऐसे पुत्र पौत्र और प्रपौत्र वेही हैं ५४

येयजंतिपितृन्यज्ञैर्मोक्षप्राप्तिमहोदयैः
मृतांतामग्निहोत्रेणदाहयेद्विधिपूर्वकं
दाहयेदविलंबेनभार्याचात्रव्रजेतसा ५५
इतिश्रीवेदव्यासीयेधर्म्मशास्त्रेद्वितीयोध्यायः २
नित्यंनैमित्तिकंकाम्यमितिकर्मत्रिधामतं
त्रिविधंतच्चवक्ष्यामिगृहस्थस्यावधार्य्यतां १
यामिन्याःपश्चिमेयामेत्यक्तनिद्रोहरिंस्मरेत्
आलोक्यमंगलद्रव्यंकर्मावश्यकमाचरेत् २
कृतशौचोनिषेव्याग्नीन्दन्तान्प्रक्षाल्यवारिणा
स्नात्वोपास्यद्विजःसंध्यांदेवादींश्चैवतर्पयेत् ३

जो मोक्ष देनेवाले यज्ञों से पितरों को पूजते हैं और मरी हुई को अग्नि होत्र करके विधि से दग्ध करते हैं जिस स्त्री को इसो अग्नि होत्र की अग्नि में दाह करै वह भी स्वर्ग में जाती है ५५

इति श्रीवेदव्यासीये धर्म शास्त्रे २ अध्यायः

गृहस्थी का नित्य नैमित्तक काम्य यह तीन प्रकार का कर्म कहा है उनके तीनों प्रकार कहता हुं तुम सुनो १

रात्रि के पिछले पहरमें उठकर विष्णु का स्मरणकरै फिर मंगल द्रव्य (गोआदि) को देखकर आवश्यक कर्म को करै २

शौच को करके और अग्नि की सेवा और जलसे दांतों को धोकर और स्नान करके द्विज, संध्या करने के अनंतर देवता और पितरों का तर्पण करै ३

वेदवेदांगशास्त्राणिइतिहासानिचाभ्यसेत्
अध्यापयेच्चसच्छिष्यान्सद्विप्रांश्चद्विजोत्तमः ४
अलब्धंप्रापयेल्लब्ध्वाक्षणमात्रंसमापयेत्
समर्थोहिसमर्थेननाविज्ञातः क्वचिद्वसेत् ५
सरित्सरःसुवापीषुगर्तप्रस्रवणादिषु
स्नायीतयावदुद्धृत्यपंचपिंडानिवारिणा ६
तीर्थाभावेप्यशक्तोवास्नायात्तोयैःसमाहृतैः
गृहांगनगतस्तत्रयावदंबरपीडनं ७
स्नानमब्दैवतैःकुर्य्यात्पावनैश्चापिमार्जनं

फिर वेद—वेदांग—शास्त्र और इतिहास इनका अभ्यास करै फिर अच्छे शिष्य और उत्तम ब्राह्मण इनको शास्त्र पढावे ४

अलब्ध् (जो अपने यहां न हो) वस्तु की प्राप्तिका उपाय करै और उस वस्तु को पाकर क्षणभर पढाने को समाप्त करै और समर्थ होकर किसी समर्थ के विना जाने कहीं न बसे अर्थात् जहां अपने को कोई जानता हो वहां बसे ५

नदी छोटा तलाव - बावड़ी—कुन्ड—झरने— इनमें स्नान जलसे तब करै जब पहिले पांच पिंड मिट्टी के बाहर निकासले ६

तीर्थ नहो वा तीर्थ तक जानेका सामर्थ्य न हो कूये से जल को निकास कर स्नान करै और घरके आंगन में जितने जल से वस्त्र (धोती) भीजे उतने जलसे ७

जल है देवता जिनका ऐसे मंत्रों से स्नान करै और पवित्र

मंत्रैःप्राणांस्त्रिराचम्यसौरैश्चार्कंविलोकयेत् ८
तिष्ठन्स्थित्वातुगायत्रींततःस्वाध्यायमारभेत्
ऋचांचयजुषांसाम्नामथर्वांगिरसामपि ६
इतिहासपुराणानांवेदोपनिषदांद्विजः
शक्त्यासम्यक्पठेन्नित्यमल्पमप्यासमापनात् १०
सयज्ञदानतपसामखिलंफलमाप्नुयात्
तस्मादहरहर्वेदंद्विजोऽधीयीतवाग्यतः ११
धर्म्मशास्त्रेतिहासादिसर्वेषांशक्तितःपठेत्
प्रथमंकृतस्वाध्यायःतर्पयेच्चाथदेवताः १२
जान्वाच्यदक्षिणांदर्भैःप्रागग्रैःसयवैस्तिलैः

करने वाले मंत्रों से मार्जन करे—और मन्त्रों से तीन प्राणायाम करके सूर्य के मंत्रों से सूर्य को देखे ८

फिर खड़ा होकर गायत्री का और फिर वेदका अभ्यास करे—ऋग्वेद—यजुर्वेद—सामवेद और अथर्वणवेद ६

इतिहास—पुराण और वेदऔर उपनिषद इनके अल्प भाग को भी समाप्ति होने तक अपनी शक्ति से जो द्विज भला प्रकार पढता है १०

वह यज्ञ—दान—और तप इनके संपूर्ण फलको प्राप्त होता है तिससे प्रति दिन द्विज मौन होकर वेद को पढे ११

और धर्मशास्त्र इतिहास इनकोभी अपनी शक्तिकेअनुसार पढे स्वाध्याय को करके प्रथम देवताओं का तर्पण इस प्रकार करै १२

दाहिने गोडे को नवाय कर पूर्व को है अग्रभाग जिनका

एकैकांजलिदानेनप्रकृतिस्थोपवीतकः १३
समजानुद्वयोब्रह्मसूत्रहारउदङ्मुखः
तिर्यग्गर्भैश्चवामाग्रैर्यवैस्तिलविमिश्रितैः १४
अम्भोभिरुत्तरक्षिप्तैःकनिष्ठामूलनिर्गतैः
द्वाभ्याद्वाभ्य.मंजलिभ्यांमनुष्यांस्तर्पयेत्ततः १५
दक्षिणाभिमुखःसव्यंजान्वाच्यद्विगुणैःकुशैः
तिलैर्जलैश्चदेशिन्यामूलदर्भाद्विनिःसृतैः १६
दक्षिणांसोपवीतः स्यात्क्रमेणांजलिभिस्त्रिभिः
संतर्पयेत्दिव्यपितॄ स्ततूपरांश्चपितॄन्स्वकान्१७

ऐसी कुशा और जों—तिल—आदि लेकर स्वभाव से यज्ञोपवीत धारे बैठा हुआ एक २ अंजुलि देकर तर्पण करै १३

और दोनों गोड़े हैं बराबर जिसके और जनेऊ हैं कंठ में जिसके उत्तर को मुख जिसका—बांये को है अग्रभाग जिनका ऐसी तिरछी कुशा और तिल मिले हुये जों से १४

कनिष्ठा अंगुली के मूल से उत्तर में जो गिरैं ऐसे जलों से दो२ अंजलियों से फिर मनुष्यों का तर्पण करै १५

दक्षिण को मुख करके बांया गोड़ा निवाय कर द्विगुण कुशाओं और तिल और देशिनी (तर्जनी) के मूल और कुशा से गिरते जलों से १६

दाहिने कंधपर जनेऊ रक्खे हुए क्रमसे तीन२ अंजली देकर देवतारूप पितरों का तर्पण करके अपने पितरों का तर्पण करै १७

मातृमातामहांस्तद्वत्त्रीनेवंहित्रिभिस्त्रिभिः
मातामहस्ययेऽप्यन्येगोत्रिणोदाहवर्जिताः १८
तानेकांजलिदानेनतर्पयेच्चपृथक्पृथक्
असंस्कृतप्रमीतायेप्रेतसंस्कारवर्जिताः १६
वस्त्रनिष्पीडितांभोभिस्तेषामाप्यायनंभवेत्
अतर्पितेषुपितृषुवस्त्रंनिष्पीडयेच्च यः २०
निराशाः पितरस्तस्यभवंतिसुरमानुषैः
पयोदर्भस्वधाकार गोत्रनामतिलैर्भवेत् २१
सुदत्तंतत्पुनस्तेषामेकेनापिविनावृथा
अन्यचित्तेनयद्दत्तंयद्दत्तं विधिवर्जितं २२

और माता—और मातामह (नाना) आदि तीनों काभी इसी प्रकार तीन२ अंजलियों से तर्पण करे—और मातामह के गोत के जो अन्यदाह से वर्जित हैं १८

उनका भी एक २ अंजाली देकर पृथक्२ तर्पण करे और जो विना संस्कार मरे हैं और प्रेत के संस्कार से बर्जित हैं १६

उनकी बस्त्र निचोड़ने के जल से तृप्ति होजाती हैं जो पुरुष पितरों के तृप्ति हुए विना वस्त्र को निचोड़ता है २०

उसके पितर देवता और मनुष्यों समेत निराश होते हैं जलकुशा स्वधा—गोत्र नाम तिल इनसे जो दिया जाता है २१

वह देना अच्छा देना होता है फिर वह सब बस्त्र के नि- चोड़ने से वृथा होजाता है—अन्य में मन रखकर वाविधि से बर्जित जोदिया है २२

अनासनस्थितेनापितज्जलंरुधिरायते
एवंसंतर्पिताः कामैस्तर्पकांस्तर्पयंतिच २३
ब्रह्मविष्णुशिवादित्यमित्रावरुणनामभिः
पूजयेल्लक्षितैर्मंत्रैर्जलमंत्रोक्तदेवताः २४
उपस्थायरविंकाष्ठांपूजयित्वाचदेवताः
ब्रह्माग्नीन्द्रौषधीजीवविष्णूनामहतांधसा २५
अपांयतेतिसत्कारंनमस्कारैः स्वनामभिः
कृत्वामुखंसमालभ्यस्नानमेवंसमाचरेत् २६
ततः प्रविश्यभवनमावसथ्येहुताशने
पाकयज्ञांश्चचतुरोविदध्याद्विधिवद्द्विजः २७

अथवा विना आसन बैठेहुए ने जो दिया है वह सब रुधिर के समान है इस प्रकार तृप्त किये पितर तर्पण करने वालों को कामनाओं से तृप्त करते हैं २३

ब्रह्मा—विष्णु—शिव—आदित्य—मित्रवरुण—येनाम जिन मंत्रों में हों उन मंत्रों से जलके मंत्रोंमें कही हुई देवताओं का पूजन करै २४

सूर्य की स्तुति करके और पूर्वदिशा को पूजकर ब्रह्मा अग्नि इन्द्र औषधी जीव विष्णु इन निर्दोषों का २५

अपांपते इस मत्र से नमस्कार और अपने २ नामों से सत्कार करके और मुख को पूंछकर इस प्रकार स्नान करै २६

फिर भवन में जाकर घरकी अग्नि में चतुरद्विज विधि से पाक यज्ञ करै २७

अनाहितावसथ्याग्निरादायान्नंघृतप्लुतं
शाकलेनविधानेनजुहुयाल्लौकिकेऽनले २८
व्यस्ताभिर्व्याहृतीभिश्चसमस्ताभिस्ततः परं
षड्भिर्देवकृतस्येतिमंत्रवद्भिर्यथाक्रमं २९
प्राजापत्यंस्विष्टकृतंहुत्वैवंद्वादशाहुतीः
ओंकारपूर्वःस्वाहांतस्त्यागःस्विष्टविधोमतः ३०
भुविदर्भान्समास्तीर्यबलिकर्मसमाचरेत्
विश्वेभ्योदेवेभ्यइतिसर्वेभ्योभूतेभ्यएवच ३१
भूतानांपतयेचेतिनमस्कारेणशास्त्रवित्

घरकी अग्नि में जिसने अग्नि होत्र ग्रहण न किया हो ऐसा पुरुष घी से भरे अन्न को लेकर शाकल ऋषि की कही विधि से लौकिक अग्नि में होम करै २८

व्यस्त (पृथक् २) व्याहृतियों से और फिर समस्त व्याहृतियों से छः आहुति देवकृतस्य इस मंत्र से ति क्रमसे देकर २९

और इसी प्रकार स्विष्टकृत प्राजापत्य की बारह आहुति देकर और स्विष्टि की विधि से ओंकार पहिले हों और स्वाहा जिसके अन्त में हो ऐसा आहुति का त्याग (देना) होता है (ओं प्रजापतये स्वाहा) ३०

पृथ्वी पर कुशा बिछाकर बलिवैश्वदेव करै विश्वेभ्योदेवेभ्योनमः सर्वेभ्योभूतेभ्योनमः ३१

और भूतानांपतयेनमः इस प्रकार शास्त्र का जानने वाला

दद्याद्बलित्रयंचाग्रेपितृभ्यश्चस्वधानमः ३२
पात्रनिर्णेजनंवारिवायव्यांदिशिनिः क्षिपेत्
उद्धृत्यषोडशग्रासमात्रमन्नं घृतोक्षितं ३३
इदमन्नं मनुष्येभ्योहंतेत्युक्त्वासमुत्सृजेत्
गोत्रनामस्वधाकारैःपितृभ्यश्चापिशक्तितः ३४
षड्भ्योऽन्नमन्वहंदद्यात्पितृयज्ञविधानतः
वेदादीनांपठेत्तुकिंचिदल्पंब्रह्ममखाप्तये ३५
ततोऽन्यदन्नमादायनिर्गत्यभवनाद्बहिः
काकेभ्यःश्वपचेभ्यश्चप्रक्षिपेद्ग्रासमेवच ३६
उपविश्यगृहद्वारितिष्ठेद्यावन्मुहूर्तकम्

फिर तीन बलि अग्र(द्वार पर)भाग में दे पितृभ्यःस्वधानमः इस से पितरों को दे ३२

पात्रों के धोने का जल वायव्य दिशा में फेंके फिर घी से छिड़के सोलह ग्रास भर अन्न को निकाल कर ३३

इदमन्नं मनुष्येभ्योहंत— यह कहकर (हंतकार) देदे और गोत्र नाम स्वधा कहकर शक्ति से पितरों को भी दे ३४

पितृ यज्ञ की विधि से छः (३ पितृ पक्ष के ३ मातृ पक्ष के) को अन्न नित्य दे फिर ब्रह्म यज्ञ की प्राप्ति के निमित्त कुछ वेद आदि को पढ़े ३५

फिर अन्य अन्नको ले औरघर से बाहर जाकर—काक—कुत्ते पशु इन को भी दे और गौ को ग्रास भी दे ३६

फिर घरके द्वारपर बैठकर दो घड़ी टिके और भोजन न

अन्नमुक्तोऽतिथिंलिप्सुर्भावशुद्धः प्रतीक्षकः ३७
आगतंदूरतः शांतंभोक्तुकाममकिंचनम्
दृष्ट्वासंमुखमभ्येत्यसत्कृत्यप्रश्रयार्च्चनैः ३८
पादधावनसंमानाभ्यंजनादिभिरर्च्चितः
त्रिदिवंप्रापयेत्सद्योयज्ञस्याभ्यधिकोऽतिथिः ३९
कालागतोऽतिथिर्दृष्टवेदपारोगृहागतः
द्वावेतौपूजितौस्वर्गंनयतोऽधस्त्वपूजितौ ४०
विवाह्यस्नातकक्ष्मास्पदाचार्यसुहृदृत्विजः
अर्घ्याभवंतिधर्म्मेणप्रतिवर्षंगृहागताः ४१

करै और अतिथि की आकांक्षा करता हुआ और मन से शुद्ध होकर अतिथि की बाट देखै ३७

जो दूरसे आया हो शांतस्वभाव हो—निर्धन हो ऐसे को देखकर सन्मुख जाकर और नम्रता और पूजन से सत्कार करके ३८

पैरों का धोना—अच्छा—सत्कार—उबटना—इनसे पूजा हुआ अतिथि यज्ञ से भी अधिक स्वर्ग को प्राप्त करता (पहुंचाता) है ३९

समय पर आया अतिथि और बेद के पार जानने वाला घर आये यें दोनों पूजे होंय तो स्वर्ग में, और न पूजे होंय तो नरक में लेजाते हैं ४०

जो अपने यहां विवाहा हो—और ब्रह्मचारी—राजा—आचार्य—मित्र—ऋत्विज्—यें सब घर पर आये प्रतिवर्ष धर्म से पूजने योग्य हैं ४१

गृहागतायसत्कृत्यश्रोत्रियाययथाविधि
भक्त्योपकल्पयेदेकंमहाभागंविसर्जयेत् ४२
विसर्जयेदनुव्रज्यसुतृप्तश्रोत्रियातिथीन्
मित्रमातुलसंबंधिबांधवान्समुपागतान् ४३
भोजयेद्गृहिणोभिक्षांसत्कृतांभिक्षुकोऽर्हति
स्वाद्वन्नमश्नन्नस्वादुददद्गच्छत्यधोगतिम् ४४
गर्भिण्यातुरभृत्येषुबालवृद्धातुरादिषु
बुभुक्षितेषुभुंजानोगृहस्थोऽश्नातिकिल्बिषं ४५
नाद्यादृहद्धयेन्नपाकाद्यंकदाचिदनिमंत्रितः

घर आये वेद पाठी को विधि से सत्कार करके श्रद्धा से एक बड़ा भाग (हिस्सा) देकर विदा करदे ४२

भली प्रकार तृप्त हुये अतिथियों के पीछे कुछ दूर चलकर विसर्जन करै और मित्र—मामा—संबधि बांधव—घर आये इनको ४३

भी भोजन करावे—और सत्कार से दी गृहस्थों की भिक्षा को भिक्षुक ग्रहण करने योग्य होता है और जो गृहस्थी स्वादु अन्न को खाकर अस्वादु अन्न को देता है वह अधोगति (नरक) को प्राप्त होता है ४४

गर्भवती स्त्री—रोगी—भृत्य—बालक—और वृद्ध इनके भूखे रहते जो गृहस्थी भोजन करता है वह पाप का भागी होता है ४५

निमंत्रणके विना पकान्न आदि को न खाय और न इच्छा

निमंत्रितो पिनिंद्यो नप्रत्याख्यानंद्विजोर्हति ४६
शूद्राभिशस्तवार्धुष्यावाग्दुष्टक्रूरतस्कराः
क्रुद्धापविद्धवद्धोग्रवधबंधनजीविनः ४७
शैलूषशौंडिकोन्नद्धोन्मत्तव्रात्यव्रतच्युताः
नग्ननास्तिकनिर्लज्जपिशुनव्यसनान्विताः ४८
कन्दर्पस्त्रीजितानार्य्यपरबादकृतानराः
अनीशाः कीर्तिमंतोऽपिराजदेवस्वहारकाः ४९
शयनासनसंसर्गकृतकर्मादिदूषिताः
अश्रद्दधानाः पतिताभ्रष्टाचारादयश्चये ५०

करै यदि निंदित निमंत्रण भी दे तो भी द्विज मने करने को योग्य हैं ४६

शूद्र—जिसे शाप लगा हो—व्याज लेनेवाला—गूंगा दुष्ट कठोर—चौर क्रोधी—पतित और बांधना बड़ी हिंसा बंधन—इनसे जो जीते हैं ४७

नट, कलाल—उन्नद्ध(उत्कट) उन्मत्त व्रात्य (जिसका जनेउ न हुआ हो) जिसने व्रत को छोड़ दिया हो नंगा नास्तिक—निर्लज्ज चुगल व्यसनी (जो मदिरा आदि पीता हो) ४८

कामदेव और स्त्रियोंने जिसे जीता हो असज्जन परका निंदक असमर्थ और कीर्तिवाले होकर भी जो राजा और देवता के द्रव्य को हरें ४९

शय्या आसन संसर्ग व्रत कर्म इनमें जो किसी प्रकार दूषित हों और श्रद्धाहीन पतित भ्रष्टाचार आदि ये नट आदि सब ५०

अभोज्यान्नाःस्युरन्नादोयस्ययःस्यात्सतत्समः
नापितान्वयमित्रार्द्ध सीरिणोदासगोपकाः ५१
शूद्राणामप्यमीषान्तुभुक्त्वान्नं नैवदुष्यति
धर्मेणान्योन्यभोज्यान्नाद्विजास्तुविदितान्वयाः ५२
स्ववृत्तोपार्जितंमेध्यमाकरस्थममाक्षिकं
अश्वलीढमगोघ्रातमस्पृष्टंशूद्रवायसैः ५३
अनुच्छिष्टमसंदुष्टमपर्यु षितमेवच
अम्लानवाह्यमन्नाद्यमाद्यं नित्यंसुसंस्कृतं ५४
कृसरापूपसंयावपायसंशष्कुलीतिच

अभोज्यान्न कहेहैं (अर्थात् इन के अन्न कोनखा) क्योंकि जो जिसके अन्न को खाता है वह उसी के समान होजाता है नाई वंश का मित्र अर्द्धसीरी दास और गोप ५१

इतने शूद्रों के भी अन्न को खाकर दोष भागी नहीं होता प्रसिद्ध है वंश जिनका ऐसे द्विज परस्पर भोज्यान्न (वह उसके अन्न को और वह उसके को खालें) कहे हैं ५२

अपनी जीविका से जो संचय किया हो वह और सहत को छोड़कर आकर (खान) की वस्तु, और घोड़े का चाटा और गौ का न चाटा और जिसको शूद्र काकने न छूआ हो ये सब पवित्र हैं ५३

और जो उच्छिष्ट न हो वासी न हो म्लान (दुर्गंध) नहो ऐसे भली प्रकार बनाये अन्न आदि को नित्य खाले ५४

कृशर, मालपूड़े, मोहनभोग, खीर, पूरी इनको भी खाले

नाश्नीयाद्ब्राह्मणोमांसमनियुक्तःकथंचन ५५
क्रतौश्राद्धे नियुक्तोवाअनश्नन्पततिद्विजः
मृगयोपार्जितंमांसमभ्यर्च्यपितृदेवताः ५६
क्षत्रियोद्वादशोनंतत्क्रीत्वावैश्योऽपिधर्मतः
द्विजोजग्ध्वावृथामांसंहत्वाप्यविधिनापशून् ५७
निरयेष्वक्षयंवासमाप्नोत्याचन्द्रतारकं
सर्वान्कामान्समासाद्यफलमश्वमखस्यच ५८
मुनिसाम्यमवाप्नोतिगृहस्थोऽपिद्विजोत्तमः
द्विजभोज्यानिगव्यानिमाहिष्याणिपयांसिच ५९
निर्दशासंधिसंबंधिवत्सवंतीपयांसिच

नियुक्त (नोता) किये विना और मांस ब्राह्मण कभी नखा ५५

यज्ञ श्राद्ध इनमें नोता हुआ द्विज न खाव तो पतित होता है मृगया करके लाया हुआ जो मांस उसे पितर और देवताओं को पूजकर ५६

क्षत्री और उसमें से बारवें १२ भाग को मोल लेकर वैश्य भी खाले--और द्विज वृथामांस (जो यज्ञ वा श्राद्ध का नहो) को खाकर और विना विधि के पशुओं को मार कर ५७

सदैव नरक में तब तक वसता है जब तक चंद्रमा और तारे हैं सब कामना और अश्वमेध यज्ञ के फल को प्राप्त होकर ५८

गृहस्थी भी ब्राह्मण मुनियों की तुल्य होता है द्विजों के खाने योग्य गौ और भैंस के दूध होते हैं ५९

और वे दूध खाने योग्य हैं जो व्याने से दश दिन के पीछे

पलांडुंश्वेतवृंताकंरक्तमूलकमेवच ६०
गृंजनारुणवृक्षासृग्जंतुगर्भफलानिच
अकालकुसुमादीनिद्विजोजग्ध्वैंदवंचरेत् ६१
वाग्दूषितमविज्ञातमन्यपीडनकार्यपि
भूतेभ्योन्नमदत्वाचतदन्नंगृहिणोदहेत् ६२
हैमराजतकांस्येषुपात्रेष्वद्यात्सदागृही
अभावेसाधुगंधेषुलोधद्रुमलतासुच ६३
पलाशपद्मपत्रेषुगृहस्थोभोक्तुमर्हति
ब्रह्मचारीयतिश्चैवश्रेयोयद्भोक्तुमर्हति ६४

के हों असंधि (जोग्याभन हो और दूध दे) गौका न हों बछड़े वा बछिया वाली के हों, और पलांडु (प्याज) सफेद बेंगन, और लाल मूली ६०

गाजर वृक्षका लाल गूंद—गूलर के फल बिना समय के फूल इनको द्विज खाकर ऐंदव प्रायश्चित्त करे ६१

वाणी से दूषित (गोभी आदि) और जिसे न जाने वह जिससे दूसरे को दुःख हो वह इनको खाकर ऐंदव करे भूतों को बिना दिये जो अन्नखाता है वह अन्न गृहस्थी को दग्ध करता है ६२

सुवर्ण चांदीकांसी इनके पात्रोंमें गृहस्थी सदाखा, पात्रन होय तो अच्छीहैं गंध जिनमें ऐसेलोध आदि वृक्षोंके पत्तोंमेंखा ६३

गृहस्थी ढाक और कमल के पत्तों में भोजन करने योग्य है ब्रह्मचारी और यति (संन्यासी) भी उक्त पत्तों में खांय तो श्रेष्ठ है ६४

अभ्युक्ष्यान्नं नमस्कारैर्भुविदद्याद्बलित्रयम्
भूपतयेभुवःपतयेभूतानांपतयेतथा ६५
अपः प्राश्यततःपश्चात्पंचप्राणाहुतीःक्रमात्
स्वाहाकारेणजुहुयाच्छेषमद्याद्यथासुखम् ६६
अनन्यचित्तोभुंजीतवाग्यतो ह्यमकुत्सयन्
आतृप्तेरन्नमश्नीयादक्षुण्णंपात्रमुत्सृजेत् ६७
उच्छिष्टमन्नमुद्धृत्यग्रासमेकंभुविक्षिपेत्
आचांतःसाधुसंगेनसद्विद्यापठनेनच ६८
वृत्तवृद्धकथाभिश्चशेषाहमतिवाहयेत्

अन्न को छिड़क कर और नमस्कार करै और पृथ्वीमें तीन यें वली (थोड़ा २ अन्न) दे कि भूपतये नमः—भुवःपतये नमः—भूतानांपतयेनमः ६५

फिर आचमन करके पांच (१) प्राणों की आहुति स्वाहा कहकर दे और फिर सुख से शेष अन्न को खा ६६

मौन होकर अन्नकी निंदा को न करता हुआ मनुष्य एकाग्र मन को करके तृप्ति पर्यंत भोजन करै और पात्र को क्षुण्ण (खाली) न छोड़ ६७

उच्छिष्ट अन्न को उठाकर एकग्रास पृथ्वी पर फेंकदे फिर आचमन करके साधुओंकी संगति, उत्तम विद्या के पढनेसे ६८

और सदाचरण में जो बड़े उनकी कथाओंसे शेषदिनको बितावे औरअग्नि हो त्रकरके भृत्यों समेत सायंकाल को संध्या करै ६९

---

(१) प्राणाय स्वाहा १—ओंअपनायस्वाहा २—ओंउदानायस्वाहा ३—ओंसमानाय स्वाहा ४—ओंव्यानाय स्वाहा ५—

सायंसंध्यामुपासीतहुत्वाग्निंभृत्यसंयुतः ६९
आपोशानक्रियापूर्वमश्नीयादन्वहंद्विजः
सायमप्यतिथिः पूज्योहोमकालागतोनिशम् ७०
श्रद्धया शक्तितो नित्यंश्रुतंहन्यादपूजितः
नातितृप्तउपस्पृश्यप्रक्षाल्यचरणौशुचिः ७१
अप्रत्यगुत्तरशिराःशयीतशयनेशुभे
शक्तिमानुदितेकालेस्नानंसंध्यांनहापयेत् ७२
ब्राह्मे मुहूर्तेचोत्थायचिंतयेद्धितमात्मनः
शक्तिमान्मतिमान्नित्यंव्रतमेतत्समाचरेत् ७३
इतिश्रीवेदव्यासीयेधर्मशास्त्रेतृतीयोध्यायः ३

आपोशान (भोजन से पहिले आचमन) करके द्विजनित्य भोजन करै होम के समय आये अतिथी को सायंकाल में भी सदैव पूजे ७०

श्रद्धा और शक्ति के अनुसार नहीं पूजा अतिथि वेदपाठ को नष्ट (निष्फल) करता है अत्यन्त तृप्त [छिकना] नहीं हुआ चरणों को धोकर शुद्ध मनुष्य ७१

उत्तम शय्यापर सोवे परंतु पश्चिम उत्तरको सिर न करै समर्थ होकर सूर्योदय के समय स्नान, संध्या कोन छोड़े ७२

ब्राह्म मुहूर्त [४ घड़ी रात से] में उठकर अपने हित को चिंताकरै शक्ति और बुद्धि वाला मनुष्य इस व्रत को नित्य करै ७३

इति वेदव्यासीये धर्म शास्त्रे ३ अध्यायः

इतिव्यासकृतंशास्त्रंधर्मसारसमुच्चयं
आश्रमेयानिपुण्यानिमोक्षधर्माश्रितानिच १
गृहाश्रमात्परोधर्मोनास्तिनास्तिपुनःपुनः
सर्वतीर्थफलंतस्ययथोक्तंयस्तुपालयेत् २
गुरुभक्तोभृत्यपोषीदयावाननुसूयकः
नित्यजापीचहोमीचसत्यवादीजितेंद्रियः ३
स्वदारेयस्यसंतोषःपरदारनिवर्तनं
अपवादोऽपिनोयस्यतस्यतीर्थफलंगृहे ४
परदारान्परद्रव्यंहरतेयोदिनेदिने

धर्म के सारका है संग्रह जिसमें ऐसा यह व्यासजी का कहा भाग है आश्रम में जो पुण्य है और जो पुण्य मोक्ष के धर्मों में हैं १

इन सब में गृहस्थ आश्रम से परे धर्म नहीं है जो गृहस्थ के यथोक्त धर्म की पालना करै उसको संपूर्ण तीर्थों का फल घरमेंही मिलता है २

गुरुका भक्त भृत्यों की पालना और दया करने वाला और जो निन्दा न करै और नित्य जप और होम जो करै और सत्य बोले और जितेन्द्रिय हो ३

अपनी स्त्री से जिसे संतोष हो और अन्य की स्त्री से निवृत्ति हो और जिसकी निन्दा न हो उस मनुष्य को घरमें भी तीर्थ का फल मिलता है ४

पराई स्त्री और पराये धन को जो दिन पर दिन चुरात हो

सर्वतीर्थाभिषेकेणापापंतस्यननश्यति ५
गृहेषुसवनीयेषुसर्वतीर्थफलंततः
अन्नदस्यत्रयोभागाःकर्ताभागेनलिप्यते ६
प्रतिश्रयंपादशौचंब्राह्मणानांचतर्पणं
नपापंसंस्पृशेत्तस्यबलिभिक्षांददातियः ७
पादोदकंपादघृतंदीपमन्नंप्रतिश्रयं
योददातिब्राह्मणेभ्योनोपसर्पतितंयमः ८
विप्रपादोदकक्लिन्नायावत्तिष्ठतिमेदिनी
तावत्पुष्करपात्रेषुपिबंतिपितरोऽमृतं ९

संपूर्ण तीर्थों के स्नान से भी उसका पाप नष्ट नहीं होता ५

तिससे सवन [यज्ञ वा संतान] है जिसमें ऐसे घरों में सब तीर्थों का फल होता है तीन भाग पुण्य के उसको मिलाते हैं जिसके अन्न से श्राद्ध आदि कियाजाय और जो उक्त कर्मों को करे उसको एक भाग मिलता है ६

नम्रता वा पैरों का धोना और तृप्तिकराना ये जोब्राह्मणों को करता है और जो बलिवैश्वदेव करता है उस मनुष्य को पाप का स्पर्श नही होता ७

पैरों के धोने का जल—पादधृत (जूता वा खड़ाउ) दीपक अन्न—घर इनको जो ब्राह्मणों को देता है उसके पास यमराज नहीं आता ८

ब्राह्मणों के पैरों के जल की गीली पृथ्वी जबतक रहती है तब तक कमल के पत्तों में पितर अमृत पीते हैं ९

यत्फलंकपिलादानेकार्तिक्यांज्येष्ठपुष्करे
तत्फलंऋषयःश्रेष्ठाविप्राणांपादशोधने १०
स्वागतेनाग्नयःप्रीताआसनेनशतक्रतुः
पितरःपादशौचेनअन्नाद्येनप्रजापतिः ११
मातापित्रोःपरंतीर्थंगंगागावोविशेषतः
ब्राह्मणात्परमंतीर्थंनभूतन्नभविष्यति १२
इंद्रियाणिवशीकृत्यगृहएववसेन्नरः
तत्रतस्यकुरुक्षेत्रंनैमिषंपुष्कराणिच १३
गंगाद्वारंचकेदारंसन्निपत्यतथैवच
एतानिसर्वतीर्थानिकृत्वापापैःप्रमुच्यते १४

जो फल कपिला गौ के दान का है और जो फल कार्तिक की पूर्णिमा को पुष्कर के स्नान का है हे श्रेष्ठ ऋषियों वहफल ब्राह्मणों के पैर धोने में हैं १०

ब्राह्मणों के स्वागत (आपने बड़े कृपा की यह कहना) से अग्नि, आसन के देने से इन्द्र, पैर धोने से पितर और अन्न आदि देने से ब्रह्मा, प्रसन्न होते हैं ११

माता और पिता ये परम तीर्थ हैं और विशेष कर गंगा और गौ तीर्थ हैं और ब्राह्मणों से अधिक तीर्थ न हुआ नहो १२

जो मनुष्य इंद्रियों को वशमें करके घरही में वसता है उसको घरमें ही कुरुक्षेत्र—नैमिष—और पुष्कर १३

हरिद्वार केदार—संनिहत—इतने तीर्थ हैं वह इन सब तीर्थों को करके सब पापों से छूटता है १४

वर्णानामाश्रमाणांचचातुर्वर्णस्यभोद्विजाः
दानधर्मंप्रवक्ष्यामियथाव्यासेनभाषितं १५
यद्ददातिविशिष्टेभ्योयच्चाश्नातिदिनेदिने
तच्चवित्तमहंमन्येशेषंकस्याभिरक्षति १६
यद्ददातियदश्नातितदेवधनिनोधनं
अन्येमृतस्यक्रीडंतिदारैरपिधनैरपि १७
किंधनेनकरिष्यंतिदेहिनोऽपिगतायुषः
यद्वर्द्धयितुमिच्छंतस्तच्छरीरमशाश्वतं १८
अशाश्वतानिगात्राणिविभवोनैवशाश्वतः
नित्यंसन्निहितोमृत्युःकर्तव्योधर्मसंग्रहः १९

हे द्विजो वर्ण और आश्रम और चारों वर्ण इनके दान धर्म को व्यासजी के कहने के अनुसार कहता हुं १५

जो उत्तमों को देता है वा नित्य जो खाता है उसको ही मैं वित्त (धन) मानता हुं और शेष किसी अन्य केही धन की रक्षा करता है अर्थात् वह अपना नहीं है १६

जो देता है वा खाता है वही धनी का धन है अन्य जो स्त्री वा धन से क्रीड़ा करते हैं वे मृतक के तुल्य हैं १७

गई है अवस्था जिनकी ऐसे देहधारी धन से क्या करेंगे जिस शरीर से धन को बढाया चाहते हैं वह भी सदा न रहेगा १८

देह और धन सदैव नहीं रहते और मृत्यु नित्य समीप में है इससे धर्म का संग्रह करना १९

यदिनाम न धर्माय न कामाय न कीर्तये
यत्परित्यज्य गंतव्यं तद्धनं किं न दीयते २०
जीवंति जीविते यस्य विप्रमित्राणि बांधवाः
जीवितं सफलं तस्य आत्मार्थे को न जीवति २१
पशवोऽपि हि जीवंति केवलात्मोदरंभराः
किं कायेन सुगुप्तेन बलिना चिरजीविना २२
ग्रासादर्द्धमपि ग्रासमर्थिभ्यः किं न दीयते
इच्छानुरूपो विभवः कदा कस्य भविष्यति २३
अदाता पुरुषस्त्यागी धनं संत्यज्य गच्छति
दातारं कृपणं मन्ये मृतोऽप्यर्थं न मुंचति २४

जो धन धर्म काम (भोग) और कीर्ति के लिये नहो और जिस धन को यहां छोडकर जाना है उस धन को क्यों न दे २०

जिस मनुष्य के जीने से ब्राह्मण मित्र बांधव जीवें उस का जीना सफल है अपने लिये कौन नहो जीता २१

केवल अपने पेट भरने वाले तो पशु भी जीते हैं भली प्रकार रक्षा की है जिसकी ऐसा बल और बहुत जीने वाली काया से मनुष्यों को क्या फल है २२

ग्रास वा आधाग्रास अभ्यागत को क्यों न दे इच्छा के अनुसार धन कब और किसके होगा २३

अदाता न देने वाला पुरुष ही त्यागी है क्योंकि धनको छोडकरजाता है परन्तु मैं दाता को कृपण मानताहुं क्योंकि दाता मरकर भी धन को नहीं छोड़ता अर्थात् मरे पर भी उसे धन मिलता है २४

प्राणनाशस्तुकर्तव्योयःकृतार्थोनसोमृतः
अकृतार्थस्तुयोमृत्युंप्राप्तःखरसमोहिसः २५
अनाहूतेषुयद्दत्तंयच्चदत्तमयाचितम्
भविष्यतियुगस्यांतस्तस्यांतोनभविष्यति २६
मृतवत्सायथागौश्चकृष्णालोभेनदुह्यते
परस्परस्यदानानिलोकयात्रानधर्मतः २७
अदृष्टेचाशुभेदानंभोक्ताचैवनदृश्यते
पुनरागमनंनास्तितत्रदानमनंतकं २८
मातापितृषुयद्द्याद्भ्रातृषुश्वशुरेषुच

प्राणों का नाश तो करना ही है परंतु जो कृतार्थ है वह नहीं मरा और जो अकृतार्थ (धर्म किये विना) मरा है वह गधे के समान है २५

विना बुलाये और विना मांगे जो दान दिया है युगका तो अन्त होगा परन्तु उस दान का अन्त न होगा २६

मरगया है बछड़ा जिसका ऐसी काली गौ को जैसे दूध के लोभ से दुहते हैं इसी प्रकार परस्पर का जो दान वह लोक रीति है धर्म नहीं २७

जो मनष्य पाप को न देखकर (अर्थात् किसी पाप के नाश के लिये न दे) वा दान के भोक्ता को न देखे (यह न चाहे कि इस दान का फल मुझे मिले) और यह भी न चाहे कि फिर मैं जगत् में आऊंगा ऐसे समय में दान का फल अनन्त है अर्थात् किसी कामना से जो न कियाजाय वही दान सफल है २८

माता पिता भाई श्वशुर स्त्री पुत्र वा पुत्री इनको जो दि

जायापत्येषुयद्दद्यात्सोनंतःस्वर्गसंक्रमः २९
पितुः शतगुणंदानंसहस्रंमातुरुच्यते
भगिन्याःशतसाहस्रंसोदरेदत्तमक्षयं ३०
अहन्यहनिदातव्यंब्राह्मणेषुमुनीश्वराः
आगमिष्यतियत्पात्रंतत्पात्रंतारयिष्यति ३१
किंचिद्वेदमयंपात्रंकिंचित्पात्रंतपोमयं
पात्राणामुत्तमंपात्रंशूद्रान्नंयस्यनोदरे ३२
यस्यचैवगृहेमूर्खोदूरेचापिगुणान्वितः
गुणान्वितायदातव्यंनास्तिमूर्खेव्यतिक्रमः ३३
देवद्रव्यविनाशेनब्रह्मस्वहरणेनच
कुलान्यकुलतांयांतिब्राह्मणातिक्रमेणच ३४

या है वह भी ऐसा स्वर्ग में पहुंचता है जिसका अन्त नहीं है ३०

पिता को देना सौगुना– माता को हजार गुना –भगिनी (बहिन) को लाख गुना होता है और भाई कोजो दिया जाय उसका कभी भी नाश नहीं होता ३०

हे मुनियों के ईश्वरो ब्राह्मणों को नित्य देना क्योंकि जो पात्र (सज्जन) आजायगा वह तार देगा ३१

यत् किंचित् पात्र तो वेद पाठी वा तपस्वी होता है और पात्रों में उत्तम पात्र वह है जिसके पेट में शूद्र का अन्न नहो ३२

जिसके घर में तोमूर्ख हो और गुणी दूरहो वह मनुष्य गुणी को दे मूर्ख के अवलंघन में कुछ दोष नहीं ३३

ब्राह्मणातिक्रमोनास्तिविप्रेवेदविवर्जिते
ज्वलंतमग्निमुत्सृज्यनहिभस्मनिहूयते ३५
सन्निकृष्टमधीयानंब्राह्मणंयोऽव्यतिक्रमेत्
भोजने चैवदानेचहन्यात्त्रिपुरुषंकुलं ३६
यथ,काष्ठमयोहस्तीयथाचर्ममयोमृगः
यश्चविप्रोनधीयानस्त्रयस्तेनामधारकाः ३७
ग्रामस्थानंयथाशून्ययथाकूपश्चनिर्जलः
यश्चविप्रोनधीयानस्त्रयस्तेनामधारकाः ३८

देवता के द्रव्य का नाश ब्राह्मण के धन की चोरी और ब्राह्मण का अवलंघन (तिरस्कार) इनसे अच्छे कुल भी दुष्ट कुल होजाते हैं ३४

वेद से हीन ब्राह्मण का अवलंघन नही होता क्योंकि जलती हुई अग्नि को छोड़ कर भस्म में होम नही किया जाता है ३५

भोजन और दान में समीप के पढे हुए ब्राह्मण का जो अवलंघन करता है वह तीन पीढी तक अपने कुल को नष्ट करता है ३६

जैसा काठ का हाथी और जैसा चाम का मृग और वैसाही विना पढा ब्राह्मण - ये तीन नाम के ही धारण करने वाले हैं अर्थात् निरर्थक हैं ३७

जैसा शून्य ग्राम का स्थान—और जैसा जल हीन कूप और वैसाही विना पढा ब्राह्मण ये तीनों नाम के ही धारक हैं ३८

ब्राह्मणेषुचयद्दत्तंयच्चवैश्वानरेहुतं
तद्धनंधनमाख्यातंधनंशेषंनिरर्थकम् ३९
समब्राह्मणेदानंद्विगुणंब्राह्मणब्रुवे
सहस्रगुणमाचार्येह्यनंतंवेदपारगे ४०
ब्रह्मबीजसमुत्पन्नोमंत्रसंस्कारवर्जितः
जातिमात्रोपजीवीचसभवेद्ब्राम्हणःसमः ४१
गर्भाधानादिभिर्मंत्रैर्वेदोपनयनेनच
नाध्यापयतिनाधीतेसभवेद्ब्राह्मणब्रुवः ४२
अग्निहोत्रीतपस्वीचवेदमध्यापयेच्चयः
सकल्पंसरहस्यंचतमाचार्य्यंप्रचक्षते ४३

जो धन ब्राह्मणों को दिया है वा अग्नि में होमा है वही धन कहा है और शेष धन वृथा है ३९

समब्राह्मण कोजो दिया जाय वह सम (उतनाहो)है और ब्राह्मण ब्रुव [सामान्य ब्राह्मण] को जो दिया वह दूना और आचार्य को हज़ार गुना और वेद के पार जानने वाले को दिया अनन्त होता है ४०

जो ब्राह्मणके बीज से पैदा हो और मंत्रों से संस्कार रहित हो और ब्राह्मण जाति से ही जीवे वह ब्राह्मण सम होता है ४१

जिसका गर्भाधान आदि के मंत्रों से और वेदोक्त यज्ञोपवीत से संस्कार हुआ हो परंतु इनको नपढ़ावे और न पढ़े उसका ब्राह्मण ब्रुव कहते हैं ४२

जो अग्निहोत्री हो तपस्वी हो और कल्प और रहस्य सहित वेदों को पढ़ावे उसे आचार्य कहते हैं ४३

इष्टिभिःपशुबंधैश्चचातुर्मास्यैस्तथैवच
अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञैर्येनचेष्टंसइष्टवान् ४४
मीमांसतेचयोवेदान्षडभिरङ्गैःसविस्तरैः
इतिहासपुराणानिसभवेद्वेदपारगः ४५
ब्राह्मणायेनजीवंतिनान्योवर्णःकथंचन
ईदृक्पथमुपस्थायकोऽन्यस्तंत्यक्तुमुत्सहेत् ४६
ब्राह्मणःसभवेच्चैवदेवानामपिदैवतं
प्रत्यक्षंचैवलोकस्यब्रह्मतेजोहिकारणं ४७
ब्राह्मणस्यमुखंक्षेत्रंनिष्कर्करमकंटकं
बापयेत्तत्रबीजानिसाकृषिःसार्वकामिकी ४८

पशुबंध और चतुर्मास्य आदि इष्टि (पूजन) यांसे और अग्निष्टोम आदि यज्ञों से जिसने देवताओं को पूजा उसे इष्ठ वान् कहते हैं अर्थात् उन्ही ने पूजा ४४

और विस्तार सहित छः अंग [व्याकरण आदि] और चारों वेद और इतिहास और पुराण इनको जो विचारे उसे वेद पारग कहते हैं ४५

ब्राह्मण जिससे जीते हैं उससे और वर्ण कभी नही जीते ऐसे मार्ग में टिककर ऐसा अन्य कौन है जो ब्राह्मण का परित्याग करै ४६

वह ब्राह्मण देवताओं का भी देवता है और जगत् का कारण प्रत्यक्ष ब्रह्मतेज ही है ४७

कंकर और कांटे रहित खेत ब्राह्मण का मुख है उसी में बीज बोवे क्योंकि वही खेती सब कामना देनेवाली है ४८

सुक्षेत्रेवापयेद्बीजंसुपात्रेदापयेद्धनं
सुक्षेत्रेचसुपात्रेचक्षिप्तंनैवहिदुष्यति४९
विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणेगृहमागते
क्रीडंत्योषधयःसर्वायास्यामः परमांगतिं ५०
नष्टशौचेव्रतभ्रष्टेविप्रे वेदविवर्जिते
दीयमानंरुदत्यन्नं भयाद्वै दुष्कृतंकृतं ५१
वेदपूर्णमुखंविप्रं सुभुक्तमपिभोजयेत्
नचमूर्खंनिराहारंषड्रात्रमुपवासिनं ५२
यानियस्यपवित्राणिकुक्षौतिष्ठंतिभोद्विजाः
तानितस्यप्रयोज्यानिनशरीराणिदेहिनां ५३

अच्छे खेत में बीज बोवे और सुपात्र को धन दे क्योंकि अच्छे खेत और सुपात्र में जो फेंका है वह कभी भी दूषित नहीं होता ४९

विद्या और बिनय से युक्त ब्राह्मण जब घर में आवे उस समय सब औषधी [अन्न आदि] क्रीड़ा करती हैं कि हम परम गति को प्राप्त होंगी ५०

जो ब्राह्मण नष्ट शौच वा भ्रष्ट व्रत वा वेद से बिहीन है उसको दिया अन्न भय से रोता है कि इसने बुरा किया ५१

वेद से भरा है मुख जिसका ऐसे तृप्त (छिके) ब्राह्मण को भी जिमावे और निराहार छः रात के उपासे भी मूर्ख को न जिमावे ५२

हे द्विजो जिस मनुष्य की जो पवित्र बस्तु (अन्न आदि) जिस बिद्वान् की कोखमें टिकें वे बस्तु ही उसको देनी अन्यथा देह धारियों का देह किसी प्रयोजन का नहीं है ५३

यस्यदेहेसदाश्नंतिहव्यानित्रिदिवौकसः
कव्यानिचैवपितरःकिंभूतमधिकंततः ५४
यद्भुंक्तेवेदविद्विप्रःस्वकर्मनिरतःशुचिः
दातुःफलमसंख्यातंप्रतिजन्मतदक्षयं ५५
हस्त्यश्वरथयानानिकेचिदिच्छंतिपंडिताः
अहंनेच्छामिमुनयःकस्यैताः सर्वसंपदः ५६
वेदलांगलकृष्टेषुद्विजश्रेष्टेषुसत्सुच
यत्पुरापातितंबीजंतस्यैताः सस्यसंपदः ५७
शतेषुजायतेशूरःसहस्रेषुचपंडितः
वक्ताशतसहस्रेषुदाताभवतिवानवा ५८

जिस ब्राह्मण के देह में देवता हव्य और पितर कव्य सदैव खाते हैं उससे परे और कौन होगा ५४

वेदका ज्ञाता और अपने कर्म में तत्पर ब्राह्मण जो खाता है दाता को उसका फल अनगिन होता है और जन्म २ में वह अक्षय होता है ५५

हाथी—घोड़ा—रथ—यान पालकी आदि इनकी कोई पंडित इच्छा करते हैं परन्तु हे मुनियों में नहीं चाहताहुं क्यों कि ये संपदा किसकी खेती की है ५६

वेद रूप हलसे जुते जो सत्पात्र ब्राह्मणों में उत्तम उन में जो पूर्व जन्म में बीज बोया हो उसी की ये अन्न आदि खेती की संपदा हैं ५७

सौ १०० में एक शूरवीर—हजार में एक पंडित—और लाख में एक वक्ता (जो वर्णन करै) होता है और दाता हो वा न हो ५८

नरणेविजयाच्छूरोऽध्ययनान्नचपंडितः
नवक्तावाक्पटुत्वेननदाताचार्थदानतः ५६
इंद्रियाणांजयेशूरोधर्मंचरतिपंडितः
हितप्रायोक्तिभिर्वक्तादातासन्मानदानतः ६०
यश्चैकपंक्त्यांविषमन्ददातिस्नेहाद्भयाद्वायदिवार्थहेतोः
वेदेषुदृष्टंऋषिभिश्चगीतंतद्ब्रह्महत्यांमुनयोवदंति ६१
ऊखरेवापितंबीजभिन्नभांडेषुगोदुहं
हुतंभस्मनिहव्यंचमूर्खेदानमशाश्वतं ६२
मृतसूतकपुष्टांगोद्विजःशूद्रान्नभोजने

रण की जीत से शूर नहीं—पढ़ने से पंडित नहीं—बाणी की चतुराई से बक्ता नहीं—और धन के देने से दाता नहीं—होता ५६

किन्तु इन्द्रियों को जो जीते वह शूर—धर्म को जो करे वह पंडित—हितकी और प्रीति की जो कहै वह वक्ता और सन्मान से जो दान दे वह दाता होता है ६०

स्नेह से वा भय से वा धन आदि के लोभ से जो एक पंक्ति में बैठे ब्राह्मणों को बिषम न्यूनाधिक देता है—वह ब्रह्म हत्या मुनियों ने कही है यह बात वेदों में भी देखी और ऋषियों ने भी कही है ६१

ऊषर में बोया बीज फूटे पात्र में दुहा दूध—भस्म में किया होम—और मूर्ख को दिया हव्य और दान—ये सब अशाश्वत (नष्ट) हैं ६२

मरेके सूतक में खाने से पुष्ट है अंग जिसका वह और

अहमेवंनजानामिकांयोनिंसगमिष्यति ६३
शूद्रान्नेनोदरस्थेनयदिकश्चिन्म्रियेतयः
सभवेत्सूकरोनूनंतस्यवाजायतेकुले ६४ ६४
गृध्रोद्वादशजन्मानिसप्तजन्मानिसूकरः
श्वानश्चसप्तजन्मानिइत्येवंमनुरब्रवीत् ६५
अमृतंब्राह्मणान्नं दारिद्र्यंक्षत्रियस्यच
वैश्यान्नं तुशूद्रत्वंशूद्रान्नान्नरकंब्रजेत् ६६
यश्चमनुष्योऽथशूद्रान्नंमासमेकंनिरंतरं
इहजन्मनिशूद्रत्वंमृतःश्वाचैवजायते ६७
यस्यशूद्रापचेन्नित्यंशूद्रावागृहमेधिनी

शूद्रका भोजन करै, यह मैं नही जानता कि वह किस २ योनि में जायगा ६३

शूद्र का अन्न पेट में रहते जो मरता है वह निश्चय से शूकर होता है अथवा शूद्र केही कुल में जन्म लेता है ६४

वारह जन्म तक गीध—सात जन्म तक शूकर—सात जन्म तक कुत्ता वह होता है ऐसे मनुने कहा है ६५

ब्राह्मण के अन्न से अमृत मोक्ष —क्षत्रिय के अन्न से दरिद्रता—वैश्य के अन्न से शूद्रत्व—और शूद्र के अन्न से नरक होता है ६६

जो मनुष्य एक महीने तक निरंतर शूद्र के अन्न को खा वह इसी जन्म में शूद्र है और मरकर कुत्ता होता है ६७

जिसके यहां शूद्रा स्त्री अन्न (रसोई) को वनावे अथवा जिसकी स्त्री शूद्रा हो वह द्विज पितर और देवताओं से वर्जित

वर्जितःपितृदेवैस्तु रौरवंयातिसद्विजः ६८
भांडसंकरसंकीर्णानानासंकरसंकराः
योनिसंकरसंकीर्णानिरयंयांतिमानवाः ६९
पंक्तिभेदीवृथापाकीनित्यंब्राह्मणनिंदकः
आदेशीवेदविक्रेतापंचैतेब्रह्मघातकाः ७०
इदंव्यासमतंनित्यमध्येतव्यंप्रयत्नतः
एतदुक्ताचारवतःपतनंनैवविद्यते ७१
इतिश्रीवेदव्यासीयेधर्मशास्त्रेचतुर्थोऽध्यायः,समाप्तम् ४

और रौरव नरक में जाता है ६८

पात्रों के संकर से जो संकीर्ण हैं चाहे जिसके पात्र में खाले अनेक संकरों में जिनका मेल है—और योनि संकर से जो संकीर्ण चाहे जिसे विवाह लें इतने मनुष्य नरक में जाते हैं ६९

पंक्ति में जो भेद करै [न्यूनाधिक परसे] और वृथा पाकी जो बलिवैश्व देव न करै अपने लिये ही अन्न पकावे और ब्राह्मणों की सदैव निन्दा करै—और जो आज्ञा को करै (सेवक] और वेद को जो बेचे अर्थात् कुछ द्रव्य के लोभ से पढ़ावे या जपै ये पांच ब्रह्म हत्यारे हैं ७०

इस व्यास जी के मतको यत्न से नित्य पढ़े इसमें कहे हुए आचरणों को जो करता है उनका पतन (नरक में जाना) नहीं होता है ७१

इति श्रीवेदव्यासीये धर्मशास्त्रे ४ अध्यायः

समाप्त

श्रीगणेशायनमः

अथशंखस्मृतिप्रारम्भ

स्वयंभुवेनमस्कृत्यसृष्टिसंहारकारिणे
चातुर्वर्ण्यहितार्थायशंखःशास्त्रमकल्पयत् १
यजनंयाजनंदानंतथैवाध्यापनक्रिया
प्रतिग्रहंचाध्ययनंविप्रकर्माणिनिर्दिशेत् २
दानंचाध्ययनंचैवयजनंचयथाविधि
क्षत्रियस्यचवैश्यस्यकर्मेदंपरिकीर्तितम् ३
क्षत्रियस्यविशेषेणप्रजानांपरिपालनम्
कृषिगोरक्षवाणिज्यंविशश्चपरिकीर्तितम् ४
शूद्रस्यद्विजशुश्रूषासर्वशिल्पानिवाप्यथ
क्षमासत्यंदमःशौचंसर्वेषामविशेषतः ५

सृष्टि और संहार करने वाले ब्रह्मा को नमस्कार करके चारों वर्णों के कल्याण के अर्थ शंख ऋषि ने शास्त्र को रचा १

यज्ञ करना—यज्ञ कराना—दान देना—और पढाना—प्रतिग्रह (दान लेना) और पढना ये छः ब्राह्मण के कर्म कहे हैं २

दान—पढना विधि से यज्ञ करना—ये तीन कर्म क्षत्रिय और वैश्य के कहे हैं ३

और विशेष कर क्षत्रिय का कर्म प्रजा की रक्षा और वैश्य का खेती और गौओं की रक्षा और लेन देन कहा है ४

और शूद्र का कर्म तीनों द्विजों की सेवा और संपूर्णकारीगरी है और बिना विशेष के क्षमा—सत्य—शौच—ये चारों के समान कर्म हैं ५

ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यस्त्रयोवर्णाद्विजातयः
तेषांजन्मद्वितीयंतुविज्ञेयंमौंजिबंधनात् ६
आचार्यस्तुपिताप्रोक्तःसावित्रीजननीतथा
ब्राह्मणक्षत्रियविशांमौंजीबंधनजन्मनि ७
वृत्त्याशूद्रसमास्तावद्विज्ञेयास्तेविचक्षणैः
यावद्वेदेनजायंतेद्विजाज्ञेयास्ततःपरम् ८

इतिश्रीशंखस्मृतौप्रथमोऽध्यायः १

गर्भस्यस्फुटताज्ञानंनिषेकःपरिकीर्तितः
पुरातुस्पंदनात्कार्यंपुंसवनंविचक्षणैः १
षष्ठेष्टमेवासीमंतोजातेवैजातकर्मच

ब्राह्मण--क्षत्रिय—वैश्य—इन तीनों वर्णों को द्विजाति कहते हैं उनका दूसरा जन्म यज्ञोपवीत से जानना ६

ब्राह्मण—क्षत्रिय--वैश्य—इनके यज्ञोपवीत के जन्म में आचार्य तो पिता और गायत्री माता कही है ७

इतनें वे तीनों वेदके विषय न पैदाहों तितने पंडित उन्हें शूद्र के समान जानें और तिससें परे अर्थात् जनेऊ हुए पर द्विज जानने ८

इति श्री शंखस्मृतौ १ अध्यायः

गर्भ की जव प्रकटता हो उस को निषेक कहते हैं और स्पंदन (चलना) सें पहले पंडित पुंसवन कर्म को करें १

छटे वा आठवें महीने में सीमन्त और पैदा होने पर

आशौचेचव्यतिक्रांतेनामकर्मविधीयते २
नामधेयंचकर्त्तव्यंवर्णानांचसमाक्षरम्
मांगल्यंब्राह्मणस्योक्तंक्षत्रियस्यबलान्वितम् ३
वैश्यस्यधनसंयुक्तंशूद्रस्यतुजुगुप्सितम्
शर्मांतंब्राह्मणस्योक्तंवर्मांतंक्षत्रियस्यतु ४
धनांतंचैववैश्यस्यदासान्तंचांत्यजन्मनः
चतुर्थेमासिकर्तव्यंबालस्यादित्यदर्शनम् ५
षष्ठेन्नप्राशनंमासिचूडाकार्यायथाकुलम्

जात कर्म—और सूतक निवृत होने पर नाम कर्म को करें २

और चारों वर्णों का नाम ऐसा हो जिसके अक्षर सम हों (जैसा गंगाराम) और ब्राह्मण का नाम ऐसा हो जिसके उच्चारण में मंगल हो (शिवदत्त) क्षत्रिय का नाम ऐसा हो जिससे बल प्रतीत हो (जैसा इन्द्र दत्त) ३

वैश्य का नाम ऐसा हो जो धन से युक्त हो [जैसा राम धन] शूद्र का नाम ऐसा हो जिस में निन्दा प्रतीत हो (जैसा भीमदास) और ब्राह्मण के नाम के पीछे शर्म और क्षत्रिय के नाम के पीछे वर्म ४

और वैश्य के नाम के अंत में धन शूद्र के नाम के अंत में दास हो और चौथे महीने में बालक को सूर्य का दर्शन करावे ५

और छटे महीने में अन्न प्राशन और मुंडन कुलरीति के

गर्भाष्टमेऽब्देकर्तव्यंब्राह्मणस्योपनायनम् ६
गर्भादेकादशेराज्ञोगर्भात्तुद्वादशेविशः
षोडशाब्दानिविप्रस्यराजन्यस्यद्विविंशतिः ७
विंशतिःसचतुष्कातुवैश्यस्यपरिकीर्तिता
नातिवर्तेतसावित्रीह्यतऊर्ध्वंनिवर्तते ८
विज्ञातव्यास्त्रयोप्येतेयथाकालमसंस्कृताः
सावित्रीपतिताव्रात्याःसर्वधर्मबहिष्कृताः ९
मौंजीज्याब्राधनानांतुक्रमान्मौञ्ज्यःप्रकीर्तिताः
मार्गवैयाघ्रवास्तानिचर्माणिब्रह्मचारिणाम् १०

अनुसार [चाहे जब] करें गर्भ से आठमें वर्ष ब्राह्मण का यज्ञोपवीत ६

और गर्भ सें ग्यारवें वर्ष क्षत्रिय का—गर्भ से बारवें बर्ष वैश्य का करै ब्राह्मण की सोलह वर्ष तक क्षत्रिय की वाईस बर्ष तक ७

और बैश्य की चौवीस बर्ष तक शास्त्र में कही हुई गायत्री अति वर्तन (निवृत्ति) को प्राप्त नही होती और इससे आगे होजाती है ८

अपने २ काल के अनुसार नही हुआ है संस्कार जिनका ऐसे ये तीनों बर्ण गायत्री से पतित और संपूर्ण धर्मों से वहिष्कृत [अनधिकारी] व्रात्य होजाते हैं अर्थात् शूद्र होजाते हैं ९

और मुंजा प्रत्यंचा बाधना (तृणविशष) इनकी क्रमसे ब्राह्मण क्षत्री वैश्यों की मेखला (कोंदनी) और मृग व्याघ्र भेड़ इनके क्रमसे चर्म तीनों ब्रह्मचारीयों के कहे हैं १०

पर्णपिप्पलबिल्वानांक्रमान्दंडाःप्रकीर्तिताः
केशदेशललाटास्यतुल्याःप्रोक्ताःक्रमेणतु ११
अवक्रास्सत्वचस्सर्वेअनग्न्येघास्तथैवच
वस्त्रोपवीतेकार्पासक्षौमोर्णानांयथाक्रमम् १२
आदिमध्यावसानेषुभवच्छब्दोपलक्षितम्
भैक्ष्यस्याचरणंप्रोक्तंवर्णानामनुपूर्वशः १३
इतिश्रीशंखस्मृतौद्वितीयोध्यायः २
उपनीयगुरुःशिष्यंशिक्षयेच्छौचमादितः
आचारमग्निकार्यंचसंध्योपासनमेवच १

और ढाक पीपल बेल इनके क्रम से दंड कहे हैं और वे दंड शिखा माथा मुख तक के प्रमाण से तीनों वर्णों को क्रमसे कहे हैं ११

और टेढे नहीं और त्वचा सहित हों और जले नहीं और तीनों के वस्त्र और जनेउ क्रम से कपास रेशम ऊन के होते हैं १२

और आदि मध्य और अंतमें जिसमें भवति शब्द हो ऐसे वाक्य को कहकर क्रमसे भिक्षा मांगनी कही है अर्थात् ब्राह्मण भवति भिक्षांदेहि यह कहै—और क्षत्री भिक्षांभवतिदेहि और वैश्य भिक्षां देहि भवति—कहै १३

इति शंख स्मृतौ २ अध्यायः

गुरु शिष्य को यज्ञोपवीत कराकर प्रथम शौच आचार अग्निका कार्य और संध्योपासन की शिक्षा दे (सिखावे) १

सगुरुर्यःक्रियाःकृत्वावेदमस्मैप्रयच्छति
भृतकाध्यापकोयस्तुउपाध्यायःसउच्यते २
मातापितागुरुश्चैवपूजनीयास्सदान्तृणाम्
क्रियास्तस्याफलाःसर्वायस्यैतेनादृताःस्त्रयः ३
प्रयतःकल्पउत्थायस्नातोहुतहुताशनः
कुर्वीतप्रणतोभक्त्यागुरूणामभिवादनम् ४
अनुज्ञातस्तुगुरुणाततोध्ययनमाचरेत्
कृत्वाब्रह्मांजलिंपश्यन्गुरोर्वदनमानतः ५
ब्रह्मावसानेप्रारंभेप्रणवंचप्रकीर्तयेत्
अनध्यायेष्वध्ययनवर्जयेच्चप्रयत्नतः ६

जो शिष्य को कर्म [जनेऊ] कराकर वेद पढावे उसे गुरु कहते है और जो कुछ द्रव्य लेकर पढावे उसे उपाध्याय कहते हैं २

माता पिता और गुरु ये तीनों मनुष्यों को सदा पूजने क्योंकि जिसने इन तीनों का आदर नही किया उसके सब कर्म निष्फल हैं ३

प्रातःकाल सावधानी से उठकर स्नान और होम को करके नम्रता से गुरुओं को नमस्कार करे ४

फिर गुरु की आज्ञा लेब्रह्मांजलि को करके और गुरु के मुख को देखता हुआ नम्रहोकर अध्ययन (हाथ जोड़ना)करै ५

वेद पढने के प्रारंभ समय और अंत में (जब पढ कर चुप हो) ओंकार का उच्चारण करै और अनध्यायों (छुट्टी) में यत्न से पढने को वर्ज दे ६

चतुर्दशीं पंचदशीमष्टमीं राहुसूतकम्
उल्कापातं महीकंपमाशौचं ग्रामविप्लवम् ७
इंद्रप्रयाणं श्वहतं सर्वसंघातनिस्वनम्
वाद्यकोलाहलं युद्धमनध्यायान्विवर्जयेत् ८
नाधीयीताभियुक्तो पि यानगो न च नौगतः
देवायतनवल्मीके श्मशानशवसन्निधौ ९
भैक्षचर्यां तथा कुर्याद्ब्राह्मणेषु यथाविधि
गुरुणा चाप्यनुज्ञातः प्राश्नीयात्प्राङ्मुखः शुचिः १०
हितं प्रियं गुरोः कुर्यादहंकारविवर्जितः
उपास्य पश्चिमां संध्यां पूजयित्वा हुताशनम् ११

चौदश पूर्णिमा—अष्टमी—ग्रहण—उल्का (बिजली) का पात—पृथिवी का कंप और अशौच—ग्राम का उपद्रव ७

इन्द्र प्रयाण (वर्षाकाल के धनुष का) दर्शन कुत्ते का मरण सबके समूह का शब्द—बाजों का कोलाहल और युद्ध इतनी (चौदश आदि) अनध्यायों को वर्ज दे ८

यान (सवारी) और नाव में और देव मंदिर में—बामी श्मशान—शव इनके समीप में बैठ कर न पढ़े ९

और ब्राह्मणों में विधि से भिक्षा मांगे और गुरु की आज्ञा से पूर्व को मुख करके शुद्धता से भोजन करे १०

अहंकार को छोड़कर गुरु का प्यार और हित करे और सायंकाल को संध्या और अग्नि की पूजा करके ११

अभिवाद्यगुरुंपश्चाद्गुरोर्वचनकृद्भवेत्
गुरोःपूर्वंसमुत्तिष्ठेच्छयीतचरमंतथा १२
मधुमांसांजनंश्राद्धंगीतंनृत्यंचवर्जयेत्
हिंसांपरापवादंचस्त्रीलीलांचविशेषतः १३
मेखलामजिनंदंडंधारयेच्चविशेषतः
अधःशायीभवेन्नित्यंब्रह्मचारीसमाहितः १४
एवंव्रतस्तुकुर्वीतवेदस्वीकरणंबुधः
गुरवेचधनंदत्वास्नायीततदनुज्ञया १५
इतिश्रीशंखस्मृतौतृतीयोऽध्यायः३

और पीछे गुरु को नमस्कार करके गुरु जो आज्ञा करे उसे करे और गुरु से पहिले उठे और पीछे सोवे १२

मधु (सहत वा मदिरा) मांस अंजन—श्राद्ध का भोजन गान—नांच—हिंसा पराई निन्दा और विशेषकर स्त्रियों की लीला इनको वर्ज दे १३

मूंज आदिकों की मेखला—मृगछाला—दंड इनको विशेष कर धारे—और ब्रह्मचारी सावधानी से अधः पृथिवी पर सोवे १४

वेदपढने के समय ज्ञानवान् ब्रह्मचारी इस प्रकार व्रत नियम आदि करे और फिर गुरु को धन देकर गुरु की आज्ञा से स्नान करे अर्थात् गृहस्थाश्रम को ग्रहण करे १५

इति शंखस्मृतौ ३ अध्यायः

विंदेतविधिवद्भार्यामसमानार्षगोत्रजाम्
मातृतःपंचमीं चापिपितृतस्त्वथसप्तमीं १
ब्राह्मोदैवस्तथैवार्षःप्राजापत्यस्तथासुरः
गांधर्वोराक्षसश्चैवपैशाचाश्चाष्टमोऽधमः २
एभ्योधर्म्यास्तुचत्वारःपूर्वेपेपरिकीर्तिताः
गांधर्वोराक्षसश्चैवक्षत्रियस्यतुशस्यते ३
संप्रार्थितःप्रयत्नेनब्राह्मस्तुपरिकीर्तितः
यज्ञस्थायर्त्विजेदैवआदायार्षस्तुगोद्वयम् ४

जो अपने गोत्र और प्रवर की नहो ऐसी स्त्री को विधि से विवाहै अथवा जो अपनी माता से पांचवी पीठी की और पिता से सातवीं पीठी की हो उसे विवाहै—इनको आजकल आचार से नहीं करते हैं १

ब्राह्म-दैव- आर्ष—प्रजापत्य आसुर—गांधर्व—राक्षस और पैशाच ये आठ प्रकार के विवाह हैं और इनमें आठवां पैशाचअधम है २

इनमें जो पहिले चार कहे हैं वे धर्म विवाह हैं और गांधर्व और राक्षस ये दोनों क्षत्रिय के लिये श्रेष्ठ हैं ३

बड़े यत्न से भली प्रकार प्रार्थना पूर्वक जो विवाह हो उसे ब्राह्म कहते हैं और यज्ञ में बैठे ऋत्विज को जो कन्या दी जाय वह विवाह दैव और वरसे दो गौ लेकर जो कन्या देनी उसे आर्ष विवाह कहते हैं ४

प्रार्थितःसंप्रदानेनप्राजापत्यःप्रकीर्तितः
आसुरोद्रविणादानाद्गांधर्वःसमयान्मिथः ५
राक्षसोयुद्धहरणात्पैशाच्यःकन्यकाछलात्
तिस्रस्तुभार्याविप्रस्यद्वेभार्येक्षत्रियस्यतु ६
एकैवभार्यावैश्यस्यतथाशूद्रस्यकीर्तिता
ब्राह्मणीक्षत्रियावैश्याविप्रभार्याःप्रकीर्तिताः ७
क्षत्रियाचैववैश्या चक्षत्रियस्यविधीयते
वैश्याचभार्यावैश्यस्यशूद्राशूद्रस्यकीर्तिता ८
आपद्यपिनकर्तव्याशूद्राभार्याद्विजन्मना
तस्यांतस्यप्रसूतस्यनिष्कृतिर्नविधीयते ९

कन्या देने के लिये जहां वर की प्रार्थना की जाय उस विवाह को प्राजापत्य और द्रव्य लेकर जो विवाह हो उसे आसुर और कन्या और वरकी संमति से जो विवाह हो उसे गांधर्व कहते हैं ५

और युद्ध करके जो कन्या हरी जाय उसे राक्षस और छलसे जो कन्या बिवाही जाय उसे पैशाच बिवाह कहते हैं ब्राह्मण के तीन स्त्री और क्षत्री के दो स्त्री होती हैं ६

वैश्य और शूद्र के एक २ ही स्त्री होती है ब्राह्मणी—क्षत्रिया—और वैश्या ये तीन ब्राह्मण की भार्या कही हैं ७

क्षत्रिया और वैश्या क्षत्री की भार्या और वैश्य की वैश्या और शूद्र कीशूद्रा ही भार्या होती हैं ८

आपत्काल में भी द्विजाती शूद्रा भार्या को न करें क्योंकि शूद्रा में पैदा हुए द्विजाति का कोई प्रायश्चित्त नहीं है ९

तपस्वीयज्ञशीलश्चसर्वधर्मभृतांवरः
ध्रुवंशूद्रत्वमाप्नोतिश्रुत्वाश्राद्धे त्रयोदशे १०
नोयत्तेतुसपिंडत्वेरेपाःशूद्रःकुलोद्भवः
सर्वेशूद्रत्वमायांतियदिस्वर्गजितश्चते ११
सपिंडीकरणंकार्यंकुलजस्यतथाध्रुवम्
श्राद्धाद्यंकृत्वाश्राद्धेप्राप्तेत्रयोदशे १२
सपिंडीकरणाचार्हेनचशूद्रःकथंचन
तस्मात्सर्वप्रयत्नेनशूद्रांभार्यांविवर्जयेत् १३
पाणिर्ग्राह्यःसवर्णासुगृहीयात्क्षत्रियाशरम्
वैश्याप्रतोदमादद्यात्वेदनेत्वग्रजन्मनः १४

तपस्वी यज्ञशील और संपूर्ण धर्म के धारियोंमें श्रेष्ठ भी ब्राह्मण शूद्र के त्रयोदशाह (तेरवीं) श्राद्ध में जीमने से निश्चय से शूद्रत्व को प्राप्त होजाता है १०

कुलमें पैदा हुआ शूद्र जिनकी सपिंडी करे चाहै वे स्वर्ग के भी जीतने वाले हों तो भी वे सब शूद्र होजाते हैं ११

तिससे कुलमें उत्पन्न हुये का ब्राह्मण का श्राद्ध करके त्रयोदशाह श्राद्ध के दिन अवश्य सपिंड न करे १२

शूद्र कभी सपिंडी करने के योग्य नहीं है तिससे संपूर्ण यत्न से शूद्रा भार्या को त्यागदे १३

ब्राह्मण के विवाह करने में ब्राह्मणी हाथ को क्षत्रिया शरको वैश्या प्रतोद (कोरडा) को ग्रहण करे १४

साभार्यायागृहेदक्षासाभार्यायापतिव्रता
साभार्यायापतिप्राणासाभार्यायाप्रजावती १५
लालनीयासदाभार्याताडनीयातथैवच
ताडितालालिताचैवस्त्रीश्रीर्भवतिनान्यथा १६
इतिशंखस्मृतौचतुर्थोऽध्यायः ४
पंचसूनागृहस्थस्यचुल्लीपेषण्युपस्करः
कंडनीचोदकुंभश्चतस्यपापस्यशांतये १
पंचयज्ञविधानंतुगृहीनित्यंनहापयेत्
पंचयज्ञविधानेनतत्पापंतस्यनश्यति २

जो घर में चतुर हो और जो पतिव्रता हो वा जिसके प्राण पति में बसते हैं अथवा जिसके संतान हो वही भार्या है १५

भार्या को सदैव लालना (लाड़) करै और ताड़नाभी करै क्योंकि लालना और ताड़ने से ही यह स्त्री श्री होती है अन्यथा नहीं १६

इति शंख स्मृतौ ४ अध्यायः

गृहस्थी को ये पांच हत्या होती हैंकि चुल्हो—चक्की—मंजनी (बुहारी) कंडनी (ओखली) और जलका घट—तिसहत्या के पाप की शांति के लिये १

गृहस्थी पांच यज्ञों को प्रतिदिन न त्यागे क्योंकि पांच यज्ञ के करने से गृहस्थी का उन हत्याओं का पाप नष्ट हो जाता है २

देवयज्ञोभूतयज्ञःपितृयज्ञस्तथैवच
ब्रह्मयज्ञोनृयज्ञश्चपंचयज्ञाःप्रकीर्तिताः ३
होमोदैवोवलिर्भौतःपित्र्यःपिंडक्रियास्मृतः
स्वाध्यायोब्रह्मयज्ञश्चनृयज्ञोतिथिपूजनम् ४
वानप्रस्थोब्रह्मचारीयतिश्चैवतथाद्विजः
गृहस्थस्यप्रसादेनजीवंत्येतेयथाविधि ५
गृहस्थएवयजतेगृहस्थस्तपतेतपः
ददातिचगृहस्थश्चतस्माच्छ्रेयान्गृहाश्रमी ६
यथाभर्ताप्रभुःस्त्रीणांवर्णानांब्राह्मणोयथा
अतिथिस्तद्वदेवास्यगृहस्थस्यप्रभुःस्मृतः ७

देवयज्ञ—भूतयज्ञ—पितृयज्ञ—ब्रह्मयज्ञ—और मनुष्ययज्ञ ये पांच यज्ञ कहे हैं ३

होम को देव यज्ञ—बलिवैश्वदेव को भूतयज्ञ—पिंडदान को पितृयज्ञ—वेद पाठ को ब्रह्मयज्ञ—और अतिथि के पूजन को मनुष्य यज्ञ कहते हैं ४

वानप्रस्थ—ब्रह्मचारी—और संन्यासी ये तीनों द्विज गृहस्थी के प्रसाद से यथाविधि (यथार्थसे) जीवते हैं ५

गृहस्थी ही यज्ञ करता है और गृहस्थी ही तप करता है और ग्रहस्थी ही दान देता है तिससे ग्रहस्थाश्रम ही सबसे उत्तम है ६

जैसे स्त्रियों का रक्षक पति है और जैसे वर्णों का रक्षक ब्राह्मण है तिसी प्रकार ग्रहस्थों का प्रभु अतिथि कहा है ७

नव्रतैर्नोपवासैश्चधर्मेणविविधेनच
नारीस्वर्गमवाप्नोतिप्राप्नोतिपतिपूजनात् ८
नव्रतैर्नोपवासैश्चनचयज्ञैःपृथग्विधैः
राजास्वर्गमवाप्नोतिप्राप्नोतिपरिपालनात् ९
नस्नानेननमौनेननैवाग्निपरिचर्यया
ब्रह्मचारीदिवंयातिसंयातिगुरुपूजनात् १०
नाग्निशुश्रूषयाक्षांत्यास्नानेनविविधेनच
वानप्रस्थोदिवंयातियातिभोजनवर्जनात् ११
नदंडैर्नचमौनेनशून्यागाराश्रयेणच
यतिःसिद्धिमवाप्नोतियोगेनाप्नोत्यनुत्तमाम् १२

व्रत उपवास और नाना प्रकार के धर्म से स्त्री स्वर्ग को प्राप्त नहीं होती किंतु पति के पूजन से प्राप्त होती है ८

व्रत—उपवास—और अपने अनेक प्रकार के यज्ञों से राजा स्वर्ग को प्राप्त नहीं होता किंतु प्रजा की रक्षा से प्राप्त होता है ९

स्नान—मौन—अग्नि की सेवा इन से ब्रह्मचारी स्वर्ग में नही जाता किंतु गुरु की पूजा करने से जाता है १०

अग्नि की सेवा—क्षमा—अनेक प्रकार के स्नान इनसे वानप्रस्थ स्वर्ग में तिस प्रकार नहीं जाता जैसे भोजन के त्याग से जाता है ११

दंड—मौन—शून्य स्थान में रहना इनसे संन्यासी सिद्धि को प्राप्त नही होता किंतु योग से ही सर्वोत्तम गति को प्राप्त होता है १२

नयज्ञैर्दक्षिणावद्भिर्वन्हिशुश्रूषयातथा
गृहीस्वर्गमवाप्नोतियथाचातिथिपूजनात् १३
तस्मात्सर्वप्रयत्नेनगृहस्थोतिथिमागतम्
आहारशयनाद्यैर्विधिवत्प्रतिपूजयेत् १४
सायंप्रातश्चजुहुयादग्निहोत्रंयथाविधि
दर्शंचपौर्णमासंचजुहुयाद्विधिवत्तथा १५
यजेतपशुबंधैश्चचातुर्मास्यैस्तथैवच
त्रैवर्षिकाधिकान्नस्तुपिबेत्सोममतंद्रितः १६
इष्टिंवैश्वानरींकुर्यात्तथाचाल्पधनोद्विजः
नभिक्षेतधनंशूद्रात्सर्वंदद्याच्चभिक्षितम् १७

दक्षिणावाली यज्ञों—और अग्नि कीसेवा से गृहस्थी तिस प्रकार स्वर्ग में प्राप्त नहीं होता जैसे अतिथि के पूजन से होता है १३

तिससे गृहस्थी आये हुये अतिथि को संपूर्ण यत्न से भोजन और शय्या आदि देकर विधि पूर्वक पूजे १४

सायंकाल और प्रातःकाल विधिसे अग्निहोत्र करै और दर्श (मावस) और पूर्णिमासी को भी विधि पूर्वक होम करै १५

पशुबंध यज्ञों (अश्वमेधादि) और चातुर्मास्य यज्ञों से ईश्वर को पूजे और तीन वर्ष से अधिक अन्न वाला पुरुष आलस्य को छोड़कर सोम (अमृत नाम की एक लता) को पीवे १६

थोड़ा है धन जिसके ऐसा द्विज वैश्वानरी यज्ञ करै और शूद्र से धन को नमांगे और सब भिक्षा के धनका दान करै १७

वृतंतुनत्यजेद्विद्वान्नृत्विजंपूर्वमेवच
कर्मणाजन्मनाशुद्धं विद्ययाचवृणीततम् १८
एतैरेवगुणैर्युक्तंधर्मार्जितधनंतथा
याजयीतसदाविप्रोग्राह्यस्तस्मात्प्रतिग्रहः १९
इतिश्रीशंखस्मृतौपंचमोऽध्यायः ५
गृहस्थस्तुयदापश्येद्वलीपलितमात्मनः
अपत्यस्यैवचापत्यंतदारण्यं समाश्रयेत् १
पुत्रेषुदारान्निक्षिप्यतयावानुगतोवनम्
अग्नीनुपचरेन्नित्यंवन्यमाहारमाहरेत् २
यदाहारोभवेत्तेन पूजयेत्पितृदेवताः

विद्वान् मनुष्य उन ऋत्विज का त्याग न करै जो नग हो किंतु जन्म और कर्म से शुद्ध उनी ऋत्विज का वरण करै १८

और इन्हो गुणों से जो युक्त हो और न्याय से जिसने धनका संचय किया हो उसीको ब्राह्मण सदैव यज्ञ करावै और उसी से प्रतिग्रहले १९

इति शंखस्मृतौ ५ अध्यायः

गृहस्थी जब अपने देह का वली पलित (बुढापा) देखै और पुत्र के पुत्र को देखै तबही वन में चलाजाय अर्थात् वानप्रस्थ आश्रम को ग्रहण करै १

पुत्रों को अपनी स्त्री को सौंप कर अथवा स्त्री को भी संग लेकर वन के लिये भी अग्नियों की सेवा करै और जो वन में पैदाहों उन कंद मूल आदि का ही भोजन करै २

तेनैवपूजयेन्नित्यमतिथिंसमुपागतम् ३
ग्रामादाहृत्यवाश्नीयादष्टौग्रासान्समाहितः
स्वाध्यायंचतथा कुर्याज्जटाश्चबिभृयात्तथा ४
तपसाशोषयेन्नित्यंस्वयंचैवकलेवरम्
आर्द्रवासास्तुहेमंतेग्रीष्मेपंचतपास्तथा ५
प्रावृष्याकाशशायीचनक्ताशीचसदाभवेत्
चतुर्थकालिकोवास्यात्षष्ठकालिकएववा ६
वृक्षैर्वापिनयेत्कालंब्रह्मचर्यंचपालयेत्
एवंनीत्वावनेकालंद्विजोब्रह्माश्रमीभवेत् ७
इतिश्रीशंखस्मृतौषष्ठोऽध्यायः ६

जो अपना भोजन हो उसीसे पितर और देवता और आये हुये अतिथि का नित्य पूजन करै ३

अथवा ग्राम से लाकर सावधानी से आठ ग्रासों को खाले और वेद को पढे और जटाओं का भी धारण करै ४

और तपसे अपने देह को सुखादें शीतकाल में आर्द्र (गीले) वस्त्र पहिने और ग्रीष्म [उष्णकाल वा गरमी] में पंचाग्नि तपै ५

और वर्षा में आकाश [मैदान] में सोवे और सदैव रात्रि मेंही भोजन करै अथवा चौथे कालमें वा छटे काल मेंभोजनकरै६

अथवा वृक्षों से ही अपने काल को बितावे और ब्रह्मचर्य को पाले इस प्रकार द्विज अपने काल को बिताकर संन्यास आश्रम का ग्रहण करै ७

इति शंखस्मृतौ ६ अध्याय

कृत्वेष्टिंविधिवत्पश्चात्सर्ववेदसदक्षिणाम्
आत्मन्यग्नीन्समारोप्यद्विजोब्रह्माश्रमीभवेत् १
विधूमेन्यस्तमुसलेव्यंगारेभुक्तवज्जने
अतीतेपात्रसंपातेनित्यंभिक्षांयतिश्चरेत् २
सप्तागारांश्चरेद्भैक्ष्यंभिक्षितंनानुभिक्षयेत
नव्यथेच्चतथाऽलाभेयथालब्धेनवर्तयेत् ३
नस्वादयेत्तथैवान्नं नाश्नीयात्कस्यचिद्गृहे
मृन्मयालावुपात्राणियतीनांचविनिर्दिशेत् ४
तेषांसंमार्ज्जनाच्छुद्धिरद्भिश्चैवप्रकीर्तिता

तिसके अनन्तर संपूर्ण वेद और दक्षिणा सहित इष्टि [यज्ञ] को करके और अपने देह वा आत्मा में ही अग्नि को मान कर द्विज संन्यास आश्रम को ग्रहण करै १

जब ग्राम में धूम न उड़ता हो और मुसल भी चाबल निकास कर जहां के तहां रखदिये हैं और मनुष्यों ने भोजन भी करलिया हो और रसोई वा जल के पात्रों का इधर उधर लेजाना भी बंद होजाय तबसंन्यासी भिक्षा के लिये ग्राममें जाय २

सात घरों से भिक्षा मांगे और भिक्षा मांगने वाले के पीछे भिक्षा न मांगे और भिक्षा के न मिलने से दुखी न हो और जितना मिलै उतने से ही निर्वाह करै ३

और अन्नको स्वादु नकरै और किसी के घर में भोजन न करे और मिट्टी अथवा तुंबी के पात्र यतियों के कहे हैं ४

और उनकी शुद्धि जलोंसे मांजने से कही है और दुःख

कौपीनाच्छादनंवासोविभृयादव्यथश्चरन् ५
शून्यागारनिकेतःस्याद्यत्रसायंगृहोमुनिः
दृष्टिपूतंन्यसेत्पादंवस्त्रपूतंजलंपिवेत् ६
सत्यपूतांवदेद्वाचंमनःपूतंसमाचरेत्
सर्वभूतसमोमैत्रःसमलोष्टाश्मकांचनः ७
ध्यानयोगरतोभिक्षुःप्राप्नोतिपरमांगतिम्
जन्मनायस्तुनिर्भुक्तोमरणेनतथैवच ८
आधिभिर्व्याधिभिश्चैवतंदेवाब्राह्मणंविदुः
अशुचित्वंशरीरस्यप्रियाप्रियविपर्ययः ९
गर्भवासेचवसतेतस्मान्मुच्येतनान्यथा

से रहित विचरता हुआ संन्यासी कौपीन और गुदड़ी वस्त्रों का ही धारण करै ५.

और शून्य घरमें सायंकाल के समयमुनिः अपनी स्थितिरक्खै दृष्टि से देखकर पैर रक्खै और वस्त्र से छानकर जल पीवै ६

और सत्य वाणी बोले और मन स पवित्र आचरण करै और सब प्राणियों का सम और मित्र रहै और डेला–पत्थर सोना इनको एकसा समझै ७

ध्यान और योग में रत जो भिक्षु वह परम गति को प्राप्त होजाता है जन्म और मरण से जो डरै और ८

मनकी पीड़ा और देह के रोग से जो डरै देवता उसीको ब्राह्मण कहते हैं शरीर की अशुद्धता और प्रिय की जगे अप्रिय और अप्रिय की जगे प्रिय होजाता है ९

और गर्भ में वसता है इनसे संन्यास के बिना नही छूट

जगदतान्नराक्रंदंनिःसारकमनर्थकं १०
भोक्तव्यमितिनिर्दिष्टोमुच्यतेनात्रसंशयः
प्राणायामैर्दहेद्दोषान्धारणाभिश्चकिल्विषं ११
प्रत्याहारेणसंसर्गान्ध्यानेनानीश्वरान्गुणान्
सव्याहृतिंसप्रणवांगायत्रींशिरसासह १२
त्रिःपठेदायतप्राणःप्राणायामःसउच्यते
मनसःसंयमस्तज्ज्ञैर्धारणेतिनिगद्यते १३
संहारश्चेन्द्रियाणांचप्रत्याहारःप्रकीर्तितः
हृदिस्थध्यानयोगेनदेवदेवस्यदर्शनम् १४

ता यह जगत् बड़ा दारुण है और रहित सार हैं और अनर्थ रूप है १०

इसको भोगना अवश्य है इस बुद्धि से जो इसे भोगता है वह मुक्त होता है इस में संशय नहो है—प्राणायामों से दोषों को और धारणाओं से पाप को भस्म करदे ११

प्रत्याहार से संगों को और ध्यान से अज्ञान आदि गुणों कोदग्ध करै व्याहृति और उंकार शिरःमंत्र सहित गायत्री को १२

प्राणों को रोक कर तीन बार पढने को प्राणायाम कहते हैं धारणा के जानने वाले मन के रोकने को धारणा कहते हैं १३

इन्द्रियों के बिषयों से हटाने को प्रत्याहार कहते हैं और हृदे में ध्यान के योग से ब्रह्म के दर्शन को १४

ध्यानंप्रोक्तंप्रवक्ष्यामिध्यानयोगमतःपरम्
हृदिस्थादेवताःसर्वाहृदिप्राणाःप्रतिष्ठिताः १५
हृदिज्योतींषिसूर्यश्चहृदिसर्वंप्रतिष्ठितम्
स्वदेहमरणिंकृत्वाप्रणवंचोत्तरारणिं १६
ध्याननिर्मथनाभ्यासाद्विष्णुंपश्येद्धृदिस्थितम्
हृदर्कश्चंद्रमासूर्यःसोमोमध्येहुताशनः १७
तेजोमध्येस्थितंसत्त्वंसत्त्वमध्येस्थितोच्युतः
अणोरणीयान्महतोमहीयानात्मास्यजंतोर्निहितोगुहायां
तेजोमयंपश्यतिवीतशोकोधातुःप्रसादान्महिमानमात्मनः

ध्यान कहते हैं इससे आगे ध्यान योग को कहताहूं हृदेमें संपूर्ण देवता और प्राण टिके हुए हैं १५

और तारागण सूर्य ये सब हृदे में ही स्थित हैं अपने देह को नीचे की अरणी और ॐकार को ऊपर की अरणी करके १६

ध्यान के निरंतर अभ्यास से हृदे में टिके विष्णु को देखे और सूर्य–चन्द्रमा और फिर सूर्य चन्द्रमा और इन चारों के बीच में अग्नि हृदे में रहते हैं १७

तेज के मध्य में सत्व गुण हैं और सत्वगुण मेंअच्युत (विष्णु) स्थित हैं और छोटसे भी छोटा और बड़े से भी बड़ा आत्मा इस मनुष्य के हृदय में टिका है और जाता रहाहै शोक जिसका ऐसा पुरुष तेजोरूप आत्मा की महिमा को धाता की दया से देखता है

वासुदेवस्तमोधानांगर्गौरपिपिधीयते १८
अज्ञानपटसंवीतैरिंद्रियैर्विषयेषुभिः
एषवैपुरुषोविष्णुर्व्यक्ताऽव्यक्तःसनातनः १९
एषधाता विधाताचपुराणोनिष्कलःशिवः
वेदाहमेतंपुरुषंमहांतमादित्यवर्णंतमसःपरस्तात्
यंवैविदित्वानबिभेतिमृत्योर्नान्यपंथा विद्यतेऽयनाय
पृथिव्यापस्तथातेजोवायुराकाशमेवच
पंचैतानिविजानीयान्महाभूतानिपंडितः २०
चक्षुःश्रोत्रंस्पर्शनंचरसनंघ्राणमेवच
बुद्धींद्रियाणिजानीयात्पंचेमानिशरीरके २१

और अज्ञान से अंधे मनुष्यों को पत्तों से भी अर्थात् तुच्छों से भी ईश्वर ढका जाता है १८

अज्ञान रूप पट (कपड़े) से ढके और विषयों की अभिलाषी इन्द्रियों से आत्मा ढका जाता है और यह पुरुष [हृदय में सोने वाला) बिष्णु(व्यापक)प्रकट और अप्रकट औरनित्य है १९

और यही धाता—बिधाता, पुराचीन—कलंकहीन कल्याण रूप है और इसको मैं बड़ा पुरुष और सूर्य के समान वर्ण वाला तमोगुण से परे जानता हूं और जिसको जानकर पुरुष मृत्यु से नहीं डरता और इससे अन्य मोक्ष के लिये कोई मार्ग नहीं है और—पृथिवी—जल—तेज वायु—आकाश इनको पांच महा भूत पंडित जाने २०

१ नेत्र—२ कान—३ त्वचा—४ रसना (जिह्वा के अग्र भाग में रहती है) ५घ्राण (नाक के अग्र भाग में रहती है) ये पांच इसी शरीर में ज्ञान इन्द्रिय जानना २१

रूपंशब्दस्तथास्पर्शोरसोगंधस्तथैवच
इंद्रियार्थान्विजानीयात्पंचैवसततंबुधः २२
हस्तौपादावुपस्थंचजिव्हापायुस्तथैवच
कर्मेंद्रियाणिपंचैवनित्यमस्मिन्शरीरके २३
मनोबुद्धिस्तथैवात्माह्यव्यक्तंचतथैवच
इंद्रियेभ्यःपराणीहचत्वारिकथितानिच २४
चतुर्विंशत्यथैतानितत्वःनिकथितानिच
तथात्मानंतदव्यतीतंपुरुषंपंचविंशकम् २५
यंतुज्ञात्वाविमुच्यंतेयेजनाःसाधुवृत्तयः
तदिदंपरमंगुह्यमेतदक्षरमुत्तमम् २६
अशब्दरसमस्पर्शमरूपंगंधवर्जितं

रूप—शब्द—स्पर्श -रस—गंध—ये पांच पाचौं इन्द्रियो के अर्थ (विषय) पंडित को निरंतर जानने २२

हाथ—पांव—लिंग—जिह्वा गुदा ये पांच—इस शरीर में कर्मेन्द्रिय हैं २३

मन बुद्धि—आत्मा (महत्तत्व) अव्यक्त (प्रधान) ये चार तत्व इंद्रियों से परे [आगे वाउत्तम] कहे हैं २४

ये चौबीस तत्व कहेहैं और आत्मा जो पुरुष (ईश्वर है वह पच्चीसमा) है २५

जिसको जानकर जो मनुष्य साधुस्वभावहै वेमुक्तंहोते हैं सो यह ब्रह्म परम (श्रेष्ठ) गुप्त अविनाशी और सर्वोत्तम हैं २६

और उस आत्मा में शब्द नही- रसनहो स्पर्श नही रूप

निर्दुःखमसुखंशुद्धं तद्विष्णोःपरमंपदम् २७
अजनिरंजनंशांतमव्यक्तन्ध्रुवमक्षरं
अनादिनिधनंब्रह्मतद्विष्णोःपरमंपदम् २८
विज्ञानसारथिर्यस्तुमनःप्रग्रहबंधनः
सोध्वनःपारमाप्नोतितद्विष्णोःपरमंपदम् २९
वालाग्रशतशोभागःकल्पितस्तुसहस्त्रधा
तस्यापिशतमाद्भागाज्जीवःसूक्ष्मउदाहृतः ३०
इंद्रियेभ्यःपराह्यर्थाअर्थेभ्यश्चपरंमनः
मनसस्तुपराबुद्धिर्बुद्धेरात्मातथापरः ३१

नही गंध नही है और जिसमें न दुःख है न सुख है वही विष्णु का परम पद है २७

जो जन्म और कर्मों की वासना से शून्य है—और शांत—अप्रत्यक्ष—नित्य—अविनाशी—है और जो आदि और अंत से भी शून्य है और जो ब्रह्मरूप है वह विष्णु का परम पद है २८

जिस मनुष्य का विज्ञान सारथि है और प्रग्रह (रस्सी) बन्धन है वही संसार से परे उस विष्णु के परम पद को प्राप्त होता है २९

बाल (केश) के अग्रभाग के सहस्र टुकड़े किये जांय उन में से एक टुकड़े का जो सौमा भाग उससे भी जीव सूक्ष्म (छोटा) कहा है ३०

इंद्रियों से परे अर्थ (विषय) हैं अर्थों से परे मन है मनसे परे बुद्धि है और बुद्धि से परे आत्मा महत्तत्व है ३१

महतःपरमव्यक्तमव्यक्तात्पुरुषपरः
पुरुषान्नपरंकिंचित्साकाष्ठासापरागतिः ३२
एषुसर्वेषुभूतेषुतिष्ठत्यविकलःसदा
दृश्यतेत्वग्र्ययाबुद्ध्यासूक्ष्मयासूक्ष्मबुद्धिभिः ३३
इतिश्रीशंखस्मृतौसप्तमोऽध्यायः ७
नित्यंनैमित्तिकंकाम्यंक्रियांगंमलकर्षणम्
क्रियास्नानंतथाषष्ठंषोढास्नानंप्रकीर्तितम् १
अस्नातःपुरुषोनर्होजप्याग्निहवनादिषु
प्रातःस्नानंतदर्थंचनित्यस्नानंप्रकीर्तितम् २
चंडालशवपूयाद्यं स्पृष्ट्वास्नानंरजस्वलां

महतत्व से परे अव्यक्त प्रधान है अव्यक्त से परे पुरुष है और पुरुष (ब्रह्म) से परे कुछ नहीं है किंतु वही उत्तम काष्ठा स्थित और गति है ३२

इन संपूर्ण भूतों में सदैव अविकल एकसा टिकता है और सूक्ष्म बुद्धि वाले मनुष्य उत्तम और सूक्ष्म बुद्धि से उस ब्रह्म को देखते हैं ३३

इति शंखस्मृतौ ७ अध्यायः

नित्य—नैमित्तिक—काम्य—क्रियांग—मलकर्षण—क्रिया स्नान—यह छः प्रकार का स्नान कहा है १

विना स्नान किये मनुष्य जप अग्निहोत्र आदि के करने में अयोग्य होता है इस लिये प्रातःकाल का स्नान नित्य स्नान कहा है २

चांडाल शव [मुर्दा) पूय राध और रजस्वला स्त्री इन

स्नानानर्हस्तुयःस्नातिस्नानंनैमित्तिकंचतत् ३
पुण्यस्नानादिकंस्नानंदैवज्ञविधिचोदितम्
तद्धिकाम्यंसमुद्दिष्टंनाकामस्तत्प्रयोजयेत् ४
जप्तुकामःपवित्राणि अर्चिष्यन् देवतान्पितॄन्
स्नानसमाचरेद्यस्तुक्रियांगंतत्प्रकीर्तितम् ५
मलापकर्षणार्थायस्नानमभ्यंगपूर्वकम्
मलापकर्षणार्थायप्रवृत्तिस्तस्यनान्यथा ६
सरित्सुदेवखातेषुतीर्थेषु चनदीषु च
क्रियास्नानंसमुद्दिष्टंस्नानंतत्रमहाक्रिया ७

का स्पर्श करके स्नान के पीछे भी जो स्नान करै वहस्नान नैमित्तिक कहा है ३

पुण्य नक्षत्र आदि समय में जो ज्योतिष शास्त्र में कहा स्नानहै वह स्नान काम्य कहा है और निष्काम मनुष्य उस स्नान को न करै ४

पवित्र मंत्रोंके जपनेके लिये अथवा देवताओंके पूजनेके अर्थ जो मनुष्य स्नान करै उस स्नान को क्रियांग कहतेहैं ५

मैल के दूर करने के लिये उबटना पूर्वक जो स्नान है उसे मलकर्षण कहते हैं क्योंकि उस स्नान करने में मनुष्य की प्रवृत्ति मैल दूर करनेके लिये है अन्यथा नहीं है ६

नदी देवताओं के खोदे कुंड—तीर्थ—और छोटी नदी इनमें क्रिया स्नान करना कहा है क्योंकि इन में स्नान करना उत्तम कर्म है ७

तत्रकाम्यंतुकर्तव्यंयथावद्विधिचोदितम्
नित्यंनैमित्तिकंचैवक्रियांगंमलकर्षणम् ८
तीर्थाभावेतुकर्तव्यमुष्णोदकपरोदकैः
स्नानंतुवन्हितप्तेनतथैवपरवारिणा ९
शरीरशुद्धिर्विज्ञातानतुस्नानफलंलभेत्
अद्भिर्गात्राणिशुद्ध्यंतितीर्थस्नानात्फलंभवेत् १०
सरःसुदेवखातेषुतीर्थेषुचनदीषुच
स्नानमेवक्रियातस्मात्स्नानात्पुण्यफलंस्मृतम् ११
तीर्थंप्राप्यानुषंगेणस्नानंतीर्थेसमाचरेत्

और पूर्वोक्त नदी आदिकों मेंही काम्य स्नान यथोचित विधि से करना और नित्य नैमित्तिक और क्रियांग और मल कर्षण ये चार प्रकार के स्नान हैं ८

तीर्थ के अभाव में उष्ण जल और पूर्वोक्त नदी आदि से भिन्न जल से भी स्नान करना—और अग्नि से तपाये और अन्य मनुष्य के निकासे जल से जो स्नान है ९

वह शरीर की शुद्धि जाननी उससे स्नान का फल नहीं मिलता क्योंकि जलों से गात्र शुद्धहोते हैं और तीर्थ स्नान से फल मिलता है १०

देवताओं के खोदे तालाव—तीर्थ—नदी इनमें स्नान करना ही कर्म है तिससे स्नान करने में पुण्य फल कहा है ११

अकस्मात् तीर्थ में जाकर जो स्नान करै वह स्नान के

स्नानजंफलमाप्नोतितीर्थयात्राफलंनतु १२
सर्वतीर्थानिपुण्यानिपापघ्नानिसदानृणां।
परस्परानपेक्षाणिकथितानिमनीषिभिः १३
सर्वत्रस्रवणाःपुण्याःसरांसिचशिलोच्चयाः
नद्यःपुण्यास्तथासर्वाजान्हवीतुविशेषतः १४
यस्यपादौचहस्तौचमनश्चैवसुसंयतम्
विद्यातपश्चकीर्तिश्चसतीर्थफलमश्नुते १५
नृणांपापकृतांतीर्थेपापस्यशमनंभवेत्
यथोक्तफलदंतीर्थंभवेच्छुद्धात्मनांनृणां १६
इतिश्रीशंखस्मृतौअष्टमोऽध्यायः ८

फल को प्राप्त होगा—तीर्थयात्रा के फल को नहो १२

संपूर्ण तीर्थ पवित्र और सर्व मनुष्यों के पापनाशक और परस्पर अनपेक्ष (अपेक्षारहित) बुद्धिमानों ने कहे हैं १३

सब प्रस्रवण [झरने] और तालाव—पर्वत नदी पवित्र हैं और विशेष कर गंगा पवित्र है १४

जिस के पैर—हाथ—मन—विद्या—तप और कीर्ति अपने वश में हैं वही तीर्थ के फल को भोगता है १५

पापी मनुष्यों के पाप की शांति (नाश) तीर्थ में होजाती है और शुद्ध है मन जिनका ऐसे मनुष्योंको तीर्थ यथोक्त फल का दाता होता है १६

इतिशंख स्मृतौ ८ अध्यायः

क्रियास्नानंतुवक्ष्यामियथावद्विधिपूर्वकम्
मृद्भिरद्भिश्चकर्तव्यंशौचमादौयथाविधि १
जलेनिमग्नउन्मज्ज्यउपस्पृश्ययथाविधि
जलस्यावाहनंकुर्यात्तत्प्रवक्ष्याम्यतःपरम् २
प्रपद्ये वरुणंदेवमंभसांपतिमूर्जितम्
याचितंदेहिमेतीर्थंसर्वपापापनुत्तये ३
तीर्थमावाहयिष्यामिसर्वाघविनिसूदनं
सान्निध्यमस्मिंस्तत्तोयेभजस्वंमदनुग्रहात् ४
रुद्रान्प्रपद्ये वरदान्सर्वानप्सुसदस्तथा

क्रिया स्नान को यथावत् विधि पूर्वक कहता हुं प्रथम मिट्टी और जल से विधि पूर्वक शौच करे १

जल में गोता लगाकर और बाहर निकल कर और आच मन विधि से करके जलका आवाहन करे इससे आगे जल का आवाहन कहता हुं कि २

बड़े और जलों के पति बरुण देवको मैं शरण हुं हे वरुण जिसतीर्थ को मैं चाहुं संपूर्ण पापों के दूर करने के अर्थ उसी तीर्थ को तुम मुझे दो ३

संपूर्ण पापों के दूर करने वाले तीर्थ का मैं आवाहन करताहुं हे तीर्थ इस उत्तम जल में मेरे पर अनुग्रह कर के संनिधि (आना) करो ४

जलमें टिके रुद्रोंकोइतर जलके निवासियोंको अमुकनाम

सर्वानप्सुसदश्चैवप्रपद्ये प्रणतःस्थितः ५
देवमप्सुसदंवन्हिंप्रपद्ये घनिषूदनं
आपःपुण्याःपवित्राश्चप्रपद्ये शरणंतथा ६
रुद्रश्चाग्निश्चसर्पश्चवरुणश्चापएवच
शमयंत्वाशुमेपापंमांरक्षंतुचसर्वशः ७
इत्येवमुक्त्वाकर्तव्यंततःसंमार्जनंजले
आपोहिष्ठेतितिसृभिर्यथावदनुपूर्वशः ८
हिरण्यवर्णांतिवइदग्निश्चतिसृभिस्तथा
शन्नोदेवीतिचतथा शन्नआपस्तथैवच ९
इदमापःप्रवहतस्तथामंत्रमुदीरयेत्

में नमस्कार करके शरण हुं ५

जल के वासी और पाप के नाश करने वाले अग्नि देवत को भी में शरण हुं और पुण्यात्मा और पवित्र जलों को भी में शरण हुं ६

रुद्र—अग्नि—सर्प—वरुण—और जल मेरे पापका शीघ नाश करो और मेरी चारों ओर से रक्षा करो ७

ऐसे कहकर फिर जल में आपोहिष्ठा इत्यादि तीन ऋचा ओं के क्रम से यथोक्त (भली प्रकार) मार्जन करे ८

हिरण्यवर्णा—अग्निश्चतिसृभिः—शन्नो देवी—और शन्न आपः इन मंत्रों को पढे ९

और इदमाप इस मंत्र को कहै इस प्रकार मंत्रों का

एवंमंत्रान्समुच्चार्यछंदांसिऋषिदेवताः १०
अघमर्षणसूक्तस्यसंस्मरन्प्रयतःसदा
छंदआनुष्टुभंतस्यऋषिश्चैवाघमर्षणः ११
देवताभाववृत्तस्तुपापघ्नस्यप्रकीर्तितः
ततोंभसिनिमग्नस्तुत्रिःपठेदघमर्षणम् १२
यथाश्वमेधःक्रतुराट्सर्वपापप्रणाशनः
तथाघमर्षणंसूक्तंसर्वपापप्रणाशनं १३
अनेनस्नात्वाअम्भध्येस्नातवान्धौतवाससा
परिवर्तितवासस्तुतीर्थतीरमुपस्पृशेत् १४
उदकस्याप्रदानाच्चस्नानशाटीन्नपीडयेत्

उच्चारण करके छंद ऋषि और देवता जो १०

अघमर्षण सूक्त के हैं उनको सावधानी से सदैव स्मरण करै अघमर्षण सूक्तका छंद अनुष्टुप् और ऋषि अघमर्षण है ११

पाप के नाशक अघमर्षण का भाववृत्ति देवता कहा है फिर जल में गोता लगाये हुए तीन वार अघमर्षण मंत्र को पढ़े १२

जैसे यज्ञों का राजा अश्वमेध सब पापों का नाशक है इसी प्रकार अघमर्षण सूक्त सब पापों का नाशक है १३

इस विधिसे जल में स्नान करके और धौत वस्त्रको बदल कर तीर्थ के तीर पर आचमन करे १४

और जल दान (तर्पण)किये विना स्नानकी धोती को न

अनेनविधिनास्नातस्तीर्थस्यफलमश्नुते १५
इतिश्रीशंखस्मृतौनवमोऽध्यायः ६
अतःपरंप्रवक्ष्यामिशुभामाचमनक्रियां
कायंकनिष्ठिकामूलेतीर्थमुक्तंमनीषिभिः १
अंगुष्ठमूलेचतथ प्राजापत्यंविचक्षणैः
अंगुल्यग्रेस्मृतंदिव्यंपित्र्यंतर्जनिमूलके २
प्राजापत्येनतीर्थेनत्रिःप्राश्नीयाज्जलंद्विजः
द्विःप्रमृज्यमुखंपश्चात्खान्यद्भिःसमुपस्पृशेत् ३

निचोड़े इस विधि से जो स्नान करता है वही तीर्थ के फल को भोगता है १५

इति शंखस्मृतौ ९ अध्यायः

इससे आगे शोभन आचमन का कर्म कहताहूं कनिष्ठ का (कन्नो) अंगुलि के मूल (जड़) में काय तीर्थ बुद्धिमानों ने) कहा है १

अंगूठे की जड में प्राजापत्य तीर्थ और अंगुलियों के अग्रभाग में देव तीर्थ और तर्जनो (अंगूठे पास की अंगुली) कीजड़ में पित्र्यतीर्थ पंडितों ने कहा है २

प्राजापत्य तीर्थ से तीनबार द्विज जल पीवे फिर दोबार मुख को पूंछे और कानआदि छिद्रों में जल का भली प्रकार स्पर्श करे ३

हृद्गाभिःपूयतेविप्रःकंठगाभिश्चभूमिपः
तालुगाभिस्तथावैश्यःशूद्रःस्पृष्टाभिरंततः ४
अंतर्जानुःशुचौदेशेप्राङ्मुखःसुसमाहितः
उदङ्मुखोवाप्रयतोदिशश्चानवलोकयन् ५
अद्भिःसमुद्धृताभिस्तुहीनाभिःफेनबुद्बुदैः
वन्हिनाचाप्यतप्ताभिरक्षाराभिरुपस्पृशेत् ६
तर्जन्यंगुष्ठयोगेनसंस्पृशेन्नासापुटद्वयं
अंगुष्ठमध्यायोगेनस्पृशेन्नेत्रद्वयंततः ७
अंगुष्ठानामिकायोगेश्रवणौसमुपस्पृशेत्

हृदे में जाने वाले जलोंसे ब्राह्मण—कंठतक जानेवाले जलों से क्षत्रिय और तालवे तक जाने वालों से वैश्य और मुख पर स्पर्श किये जलों से शूद्र पवित्र होता है ४

गोड़ों के भीतर हाथ किये और सावधानी से पूर्व वा उत्तर दिशा की ओर मुख किये और यत्न पूर्वक बैठा और दिशाओं को नही देखता हुआ मनुष्य ५

कूप से निकासे और झाग और बुलबुला जिनमें नहो और जो जल उष्ण नहों और खारे भी न हों ऐसे जलों से आचमन करै ६

अंगूठा और तर्जनी को मिलाकर (दोनों से) नासिका के दोनों छिद्रों का और बीचकी अंगुली और अंगूठे से दोनों नेत्रों का स्पर्श करै ७

अंगूठा और नामिका के योग से दोनों कानों का और

कनिष्ठांगुष्ठयोगेनस्पृशेत्स्कंधद्वयंततः ८
सर्वासामेवयोगेननाभिंचहृदयंतथा
संस्पृशेच्चतथामूर्ध्निएषआचमनेविधिः ९
त्रिःप्राश्नीयाद्यदंभस्तुप्रीतास्तेनास्यदेवताः
ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चभवंतीत्यनुशुश्रुमः १०
गंगाचयमुनाचैवप्रीयतेपरिमार्जनात्
नासत्यदस्रौप्रीयेतेस्पृष्टेनासापुटद्वये ११
स्पृष्टेलोचनयुग्मेतुप्रीयेतेशशिभास्करौ
कर्णयुग्मेतथास्पृष्टेप्रीयेतेअनिलानलौ १२
स्कंधयोःस्पर्शनादस्यप्रीयंतेसर्वदेवताः

कनिष्ठा और अंगुठे के योग से दोनों कंधों का स्पर्श करे ८

पांचों अंगुलियों के योग से नाभि—हृदय—और मस्तक इनका स्पर्श करे यह आचमन की विधि है ९

तीन वार आचमन में जल पीने से ब्रह्मा विष्णु शिव ये तीनों देवता इस मनुष्य पर प्रसन्न होते हैं यह हमने सुना है १०

और मार्जन करने से गंगा यमुना दोनों और दोनो नासिका के छिद्र के स्पर्श से अश्विनी कुमार प्रसन्न होतेहैं ११

दोनों नेत्रों के स्पर्श से चन्द्रमा और सूर्य और दोनों कानों के स्पर्श करने से वायु और अग्नि प्रसन्न होते हैं १२

और दोनों कंधों के स्पर्श से संपूर्ण देवता और मस्तक

अद्भिःसंस्पर्शनादस्यप्रीतस्तुपुरुषोभवेत् १३
विनायज्ञोपवीतेनतथामुक्तशिखोद्विजः
अप्रक्षालितपादस्तुआचांतोप्यशुचिर्भवेत् १४
बहिर्जानुरुपस्पृश्यएकहस्तार्पितैर्जलैः
सोपानत्कस्तथातिष्ठन्नैवशुद्धिमवाप्नुयात् १५
आचम्यचपराप्रोक्तंतीर्थसंमार्जनंतुयत्
उपस्पृशेत्ततःपश्चान्मंत्रेणानेनधर्मतः १६
अंतश्चरतिभूतेषुगुहायांविश्वतोमुखः
त्वंयज्ञस्त्वंवषट्कारआपोज्योतीरसोमृतम् १७
आचम्यचततःपश्चादादित्याभिमुखोजलं

के स्पर्श से मनुष्य पर परमेश्वर प्रसन्न होता है १३

विना यज्ञोपवीत और चोटी में गांठ दिये विना और पैर धोए विना आचमन किये पर भी अशुद्ध रहता है १४

गोड़ों से बाहर हाथ किये और एक हाथ से लिये जलों से और जूता पहिने हुए और खडा होकरजो आचमन करै वह शुद्ध नहीं होता १५

आचमन के पीछे जो तीर्थ का मार्जन कहा हैं तिसको करके धर्म पूर्वक इस मंत्र से आचमन करै १६

हे जल सब भूतों के हृदय में व्यापक—यज्ञ—वषट्कार ज्योति—रस—अमृत—आदि रूप तुम बिचरते हो१७

फिर आचमन के पीछे सूर्य के संमुख मुख करके उदुत्य

उदुत्यंजातवेदसमितिमंत्रेणानिक्षिपेत् १८
एषएवविधिःप्रोक्तःसंध्ययोश्चद्विजातिषु
पूर्वांसंध्यांजपंस्तिष्ठेदासीनःपश्चिमांतथा १९
ततोजपेत्पवित्राणिपवित्रंवाथशक्तितः
ऋषयोदीर्घसंध्यत्वाद्दीर्घमायुरवाप्नुयुः २०
सर्ववेदपवित्राणिवक्ष्याम्यहमतः परम्
येषांजपैश्चहोमैश्चपूयतेमानवः सदा २१
इतिश्रीशंखस्मृतौदशमोऽध्यायः १०
अघमर्षणंदेवव्रतं शुद्धवत्यश्चतरत्समाः

जात वेद से इस मंत्र से जलको फेंके (अंजलि दे) १८

यही विधि द्विजातियोंमें दोनों कालकीसंध्याओं की विधि कही है प्रातः काल की संध्या में खड़ा होकर और सायंकाल की संध्या में बैठ कर जप करे १९

फिर पवित्र मंत्रों को वा किसी एक पवित्र मंत्र को शक्ति के अनुसार जपे ऋषि दीर्घ संध्या (संध्या के समय ईश्वर का अधिक ध्यान) करके दीर्घ (अधिक) अवस्था को प्राप्त हुए २०

इससे आगे संपूर्ण वेद में जो पवित्र [illegible] कहता हूं जिनके जप और होम से सदैव मनुष्य पवित्र होते हैं २१

इति शंखस्मृतौ १० अध्यायः

अघमर्षण—देवव्रत—शुद्धवती ऋचा—कूष्मांडी ऋचा—

कूष्मांड्यःपावमान्यश्चसावित्र्यश्चतथैवच १
अभीष्टद्रुपदाचैवस्तोमानिव्याहृतीस्तथा
भारुंडानिचसामानिगायत्रीचोशनंतथा २
पुरुषसूक्तंचभाषंचतथासोमव्रतानिच
अब्लिंगंबार्हस्पत्यंचवाक्सूक्तममृतंतथा ३
शतरुद्रीयमथर्वशिरस्त्रिसुपर्णमहाव्रतं
गोसूक्तमश्वसूक्तंचइंद्रसूक्तंचसामनी ४
त्रीण्याज्यदोहानिरथंतरंचअग्निव्रतंवामदेवव्रतंच
एतानिगीतानिपुनंतिजतूनजातिस्मरत्वंलभ
तेयदीच्छेत् ५

पवमान सूक्त—और गायत्री—१

द्रुपदा—स्तोम—व्याहृती७—भारुंड सामवेद—गायत्री और उशना मंत्र २

पुरुष सूक्त भाप—सोमव्रत—जलके मंत्र—बृहस्पति के मंत्र—वाक् सूक्त—अमृत ३

शतरुद्री—अथर्व शिर—त्रिसुपर्ण—महाव्रत—गोसूक्त—अश्वसूक्त—दोनों सामवेद ४

तीनों आज्य दोह—रथंतर—अग्निव्रत—वामदेव व्रत ये अघमर्षण आदि सब गाने (पढने) से जीवों को पवित्र करते हैं और जो इच्छा करै इनके जप से उसी जाति में स्मृति (प्रसिद्धि) को मनुष्य प्राप्त होता है ५

इतिश्रीशंखस्मृतौएकादशोऽध्यायः ११

इतिवेदपवित्राण्यभिहितानिएभ्यस्सावित्रीवि
शिष्यतेनास्त्यघमर्षणात्परमंतर्जलेनसावित्र्या
समंजप्यंनव्याहृतिसमंहुतं
कुशशय्यामासीनःकुशोत्तरीयःवाकुशपवित्रपाणिः
प्राङ्मुखःसूर्याभिमुखोवा अक्षमालामुपादायदेव
ताध्यायीजपंकुर्यात्
सुवर्णमणिमुक्तास्फटिकपद्माक्षरुद्राक्षपुत्रजीवका.
नामन्यतमेनादायमालांकुर्यात्
कुशग्रंथिंकृत्वावामहस्तोपायनैर्वागणयेत् आदौदेव

इति शंख स्मृतौ ११ अध्यायः

ये सब वेद में पवित्र कहे हैं इन सब में गायत्री श्रेष्ठ है और जल के भीतर के जपों में अघमर्षण से श्रेष्ठ दूसरा नहीं हैं—और गायत्री के समान जप नहीं है व्याहृतियों के समान होम नहीं है—कुशासन पर बैठ कर वा ओढ़ कर और कुश की पवित्रीयों को धारकर पूर्व को वा सूर्य के संमुख मुख कर के जपकी माला को लेकर देवता का ध्यान करता हुआ मनुष्य जप करै—सोना—मणि—मोती—स्फटिक—कवलगदे—बहेड़े के फल—जीवक इन में से एक किसी को लेकर जप की माला बनावे अथवा कुश की गांठों से या बांये हाथ के अंगु

ताऋषिछंदःस्मरेत् ततःसप्रणवसव्याहृतिकामा
द्यावंतेचशिरसागायत्रीमावर्तयेत्
अथास्याःसवितादेवताऋषिर्विश्वामित्रोगायत्री
छंदः उँ कारप्रणवास्याः उँ भूः उँ भुवः
उँ स्वः उँ महः उँ जनः उँ तपः उँ
सत्यमितिव्याहृतयः
उँ आपोज्योतीरसोमृतंभूर्भुवःस्वरोमितिशिरः
भवंतिचात्रश्लोकाः
सव्याहृतिकांसप्रणवांगायत्रींशिरसासह
येजपंतिसदातेषांनभयंविद्यतेक्वचित् १

लों से गिनती करै—और प्रथम मंत्र के देवता ऋषि—छंद इनका स्मरण करै और फिर आदि में और अंतमें व्याहृति सहित और अंत में शिरः मंत्र सहित गायत्री का जप करै—और गायत्री का सूर्य देवता—विश्वामित्र ऋषि और गायत्री छंद है और उँकार का प्रणव और उँभूः उँभुवः उँस्वः उँमहः उँजनः उँतपः उँसत्यं ये सात व्याहृति उँ आपोज्योती रसो मृतं भूर्भुवःस्वरोम्—इस मंत्र को शिर कहते हैं और यही श्लोकोंमें भी कहा है—व्याहृती प्रणव—शिरः इन सहित गायत्री को जो मनुष्य सदैव जपते हैं उनको कभीभी भय नही होता १

शतजप्तातुसादेवीदिनपापप्रणाशिनी
सहस्रजप्तातुतथापातकेभ्यःसमुद्धरेत् २
दशसहस्रजप्तातुसर्वकल्मषनाशिनी
सुवर्णस्तेयकृद्विप्रोब्रह्महागुरुतल्पगः ३
सुरापश्चविशुद्ध्येतलक्षजप्यान्नसंशयः
प्राणायामत्रयंकृत्वास्नानकालेसमाहितः ४
अहोरात्रकृतात्पापात्तत्क्षणादेवमुच्यते
सव्याहृतिकाःसप्रणवाःप्राणायामास्तुषोडश ५
अपिभ्रूणहनंमासात्पुनंत्यहरहःकृताः

सौ वार जपी हुई गायत्री दिन के पाप को नष्ट करती है और हजार वार जपी पापों से उद्धार करती है २

दश हजार वार जपी सब पापों का नाश करती है सोने का चोर ब्राह्मण-ब्रह्म हत्यारा गुरु की शय्या पर गमन का कर्त्ता ३

मदिरा पीने वाला ये सब लक्ष गायत्री के जप करने से शुद्ध होते हैं स्नान के समय सावधानी से तीन प्राणायाम करके ४

रात दिन में किये पाप से उसी क्षण में छुटता है व्याहृति और ॐकार सहित सोलह प्राणायाम ५

प्रति दिन करने से एक मास में भ्रूणघ्न (गर्भ हत्यारे को

हुतादेवीविशेषेणसर्वकामप्रदायिनी ६
सर्वपापक्षयकरीवरदाभक्तिवत्सला
शांतिकामस्तुजुहुयात्सावित्रीमक्षतैःशुचिः ७
हंतुकामोपमृत्युंचघृतेनजुहुयात्तथा
श्रीकामस्तुतथापद्मैर्बिल्वैःकांचनकामुकः ८
ब्रह्मवर्चसकामस्तुपयसाजुहुयात्तथा
घृतप्लुतैस्तिलैर्वन्हिंजुहुयात्सुसमाहितः ९
गायत्र्ययुतहोमाच्चसर्वपापैःप्रमुच्यते
पापात्मालक्षहोमेनपातकेभ्यःप्रमुच्यते १०

भी पवित्र करते हैं और गायत्री से किया होम सब कामनाओं का देने वाला है ६

भक्ति है प्यारी जिसको और वर के देने वाली गायत्री सब पापों को क्षय करती है जो मनुष्य शांति चाहै वह शुद्ध होकर गायत्री का होम चावलों से करै ७

जो अकाल मृत्यु को दूरकिया चाहै वह घी से और लक्ष्मी की जो चाहै वह कमलों से और जो सोने को चाहै वह बेलों से गायत्री का होम करै ८

जो ब्रह्म तेज को चाहै वह दूध से होम करै और भली प्रकार सावधानी से घी मिले तिलों के होम से ९

और दश हजार गायत्री के होम से सब पापों से छूटता है और पापात्मा मनुष्य लक्ष गायत्री के होम से पापों से छूटता है १०

अभीष्टंलोकमाप्नोतिप्राप्नुयात्काममीप्सतम्
गायत्रीवेदजननीगायत्रीपापनाशिनी ११
गायत्र्याःपरमंनास्तिदिविचेहचपावनम्
हस्तत्राणप्रदादेवीपततांनरकार्णवे १२
तस्मात्तामभ्यसेन्नित्यंब्राह्मणोनियतःशुचिः
गायत्रीजाप्यनिरतंहव्यकव्येषुभोजयेत् १३
तस्मिन्नतिष्ठतेपापमब्बिंदुरिवपुष्करे
जप्येनैवतुसंसिद्ध्येद्ब्राह्मणोनात्रसंशयः १४

और वांछित लोक में प्राप्त होता है और वांछित फल को प्राप्त होता है गायत्री वेदों की माता है और पापों की नाश करने वाली है ११

इस लोक और स्वर्ग में गायत्री से परे पवित्र करने वाला नहीं है और नरक रूप समुद्र में पड़ने वाले मनुष्यों को हाथ पकड़ कर रक्षा करने वाली गायत्री ही है १२

तिससे नियम पूर्वक शुद्धता से ब्राह्मण नित्य गायत्री का अभ्यास करे और गायत्री के जप में तत्पर ब्राह्मण को हव्य (जो अन्न देवताओं के लिये बनाया हो) और कव्य (जो पितरों के निमित्त हो) से जिमावे १३

क्योंकि उस ब्राह्मण में पाप इस प्रकार नहीं टिकते जैसे कमल के पत्ते पर जलकी बूंद—जप से ही ब्राह्मण सिद्धि को प्राप्त होता है इस में संशय नहीं है १४

कुर्यादन्यन्नवाकुर्यान्मैत्रोब्राह्मणउच्यते
उपांशुःस्याच्छतगुणःसाहस्रोमानसःस्मृतः १५
नोच्चैर्जाप्यंबुधःकुर्यात्सावित्र्यास्तुविशेषतः
सावित्रीजाप्यनिरतःस्वर्गमाप्नोतिमानवः १६
गायत्रीजाप्यनिरतोमोक्षोपायंचविंदति
तस्मात्सर्वप्रयत्नेनस्नातःप्रयतमानसः १७
गायत्रींतुजपेद्भक्त्यासर्वपापप्रणाशिनीम्
इतिश्रीशंखस्मृतौद्वादशोऽध्यायः १२
स्नातकृतजप्यस्तदनुप्राङ्मुखोदिव्येनतीर्थेन

वह ब्राह्मण चाहे इतर कर्म करै वा न करै तोभी उसको मैत्र कहते हैं उपांशु (मंदर) जप सौ गुणा और मानस (मनर में) जप हजार गुणा कहा है १५

ज्ञानवान् मनुष्य ऊंचे स्वर से जप न करै और गायत्रीका जप तो ऊंचे स्वर से विशेष कर न करै गायत्री के जप में तत्पर मनुष्य स्वर्ग में प्राप्त होता है १६

गायत्री के जप में तत्पर मनुष्य मोक्ष के उपाय को प्राप्त होता है तिस से सब प्रयत्न करके और स्नान के पीछे मन को रोक कर १७

भक्तिसे सब पापोंके नाश करने वाली गायत्रीको जपै

इति शंख स्मृतौ १२ अध्यायः

स्नान और जप करके पूर्वाभि मुख बैठा पुरुष देवतीर्थ

देवानुदकेनतर्पयेत् अथतर्पणविधि: ॐ भगवन्तं
शेषंतर्पयामिकालाग्निरुद्रं कनकभौमंरौप्य
श्वेतभौमंततःप्रोक्तंपातालानांचसप्तकं १
जंबुद्वीपंततःप्रोक्तंशाकद्वीपंततःपरम्
गोमेदपुष्करंतद्वच्छाकाख्यंचततःपरम् २
शार्वरंततःस्वधामानंततःहिरण्यरोमाणंततः कल्प
स्थायिनोलोकांस्तर्पयेत्लवणोदंततःक्षीरोदंततः
घृतोदंततःइक्षूदंततःस्वादूदंततःइतिसप्तसमुद्रकं
प्रत्यूचपुरुषसूक्तेनोदकाञ्जलीन्दद्यात् पुष्पाणिच

से देवताओं का जल से तर्पण करै अब तर्पण की बिधि कहे हैं- ॐ भगवान् शेष को तृप्त करता हुं फिर काल अग्निरुद्र रुक्म भौम—श्वेत भौम—और सातों पाताल इनको क्रम से तृप्त करै १

फिर जंबूद्वीप—शाक द्वीप—गोमेद—पुष्कर—और शाक द्वीप इन को तृप्त करै २

फिर शार्वर—स्वधामा—हिरण्यरोमा कल्पतक टिकने वाले लोक इनको तृप्त करै फिर लवणोद समुद्र क्षीरोद—घृतोद- इक्षूद—स्वादूद - इन सात समुद्रों को तृप्त करैफिर परमेश्वर को पुरुष सूक्त (सहस्रशीर्षा) को पढकर जलकी अंज ली दे और भक्ति से पुष्पों को दे फिर अपसव्य होकर दक्षिण को मुख किये और गोडों के भीतर हाथ करके पितृ तीर्थ से

थाभक्त्याअथकृतापसव्योदक्षिणा मुखोऽतर्जानुः पित्र्येणपितॄणांयथाश्राद्धं प्रकाम मुदकंदद्यात् सौवर्णेनपात्रेणराजतेनौदुंबरेणखड्गपात्रेणान्य पात्रेणवोदकंपितृतीर्थंस्पृशेद्दद्यात्पित्रेपितामहा यप्रपितामहायमात्रेमातामहायप्रमातामहायमात्रे मातामह्यै प्रमातामह्यै सप्तमान्पुरुषान्पितृ पक्षेयावतांनामजानीयात्पितृपक्षाणांतर्पणंकृत्वा गुरूणांतर्पणंकुर्यात्मातृपक्षाणांतर्पणंकृत्वासंबंधि बांधवानांकुर्यात्भवंतिचात्रश्लोकाः

श्रद्धा के अनुसार यथेच्छ जल पितरों को दे—सने के पात्र से वा चांदी के गूलर के वा गेंडे के अथवा किसी अन्य के पात्र से पितृ तीर्थ का स्पर्श किये जलसे पिता—पितामह (बाबा) प्रपितामह (पड़बाबा)—माता—माता मह (नाना)—प्रमाता मह (पड़नाना) माता—मातामही (नानी) प्रमाता मही (पड़नानी) सात पुरुष पिता पक्ष में जितनों का नाम जाने—पितृ पक्षों का तर्पण करके गुरु और मातृ पक्षों का तर्पण करे और मातृ पक्षों का तर्पण करके संबंधि बांधवों का तर्पण करे और इसी प्रकार तर्पणकरे विषय में श्लोक भी हैं

विनारौप्यसुवर्णेनविनाताम्रतिलेन
विनादर्भैश्चमंत्रैश्चपितॄणांनोपतिष्ठते १
सौवर्णरजताभ्यांचखड्गेनौदुंवरेणच
दत्तमक्षयतांयातिपितॄणांतुतिलोदकं २
हेम्नातुसहयद्दतंक्षीरणमधुनासह
तदप्यक्षयतांयातिपितॄणांतुतिलोदकं ३
कुर्यादहरहःश्राद्धमन्नाद्येनोदकनवा
पयोमूलफलैर्वापिपितॄणांप्रीतिमावहन्
स्नातःसंतर्पणंकृत्वापितॄणांतुतिलांभसा
पितृयज्ञमवाप्नोतिप्रीणातिचपितॄंस्तथा ५

चांदी—सोना—तांबा—तिल—कुशा और मंत्र इनके विना दिया जो जल वह पितरों को प्राप्त नहीं होता १

सोना—चांदी—गैंडा—गूलर—इनके पात्रों से पितरों को दिया जल अक्षय (सदाफल दायक) मिलता है २

सोना—दूध—सहत—इनको मिलाकर जो तिल जल पितरों को दिया हो वह भी अक्षय होता है ३

अन्न आदि से जल वा—दूध—मूल फलों से पितरों को प्रति दिन प्रसन्न रक्खे ४

स्नान के पीछे तिल जल से पितरों का तर्पण करके पितृ यज्ञ के फल को प्राप्त होता है और पितरों को भी तृप्त करता है ५

इतिश्रीशंखस्मृतौत्रयोदशोऽध्यायः १३
ब्राह्मणान्नपरीक्षेतदैवेकर्मणिधर्मवित्
पित्र्येकर्मणिसंप्राप्तेयुक्तमाहुःपरीक्षणं १
ब्राह्मणादेविकर्मस्थावैडालव्रतिकास्तथा
ऊनांगाअतिरिक्तांगाब्राह्मणाःपंक्तिदूषकाः २
गुरूणांप्रतिकूलाश्चवेदाग्न्युत्सादिनश्चये
गुरूणांत्यागिनश्चैवब्राह्मणाःपंक्तिदूषकाः ३
अनध्यायेष्वधीयानाःशौचाचारविवर्जिताः
शूद्रान्नरससंपुष्टाब्राह्मणाःपंक्तिदूषकाः ४

इति शंख स्मृतौ १३ अध्यायः

धर्म का ज्ञाता पुरुष देवताओं के कर्म में ब्राह्मणों की परीक्षा न करै और पितरों का कर्म होय तो परीक्षा का करना कहा है १

जो ब्राह्मण निषिद्ध कर्म को करते हैं अथवा बैडाल व्रत (कठोर चित्त) हैं वा न्यून और अधिक जिनके देहका अंग है वे पंक्ति को दूषित करने वाले हैं २

गुरुओं के जो प्रतिकूल हैं वा वेद को उखाड़ते हैं अर्थात् वेदोक्त कर्म को नही जानते और जो गुरुओं को त्यागते हैं वे भी पंक्ति दूषक हैं ३

जो अनध्यायों में पढते हैं और जो शौच आचार से हीन हैं और जो शूद्र के अन्न रस से पुष्ट हैं वेभी पंक्ति दूषक हैं ४

षडंगविन्त्रिसुपर्णोयश्छन्दोगोज्येष्ठसामगः
त्रिणाचिकेतःपंचाग्निर्ब्राह्मणःपंक्तिपावनः ५
ब्रह्मदेयानुसंतानोब्रह्मदेयाप्रदायकः
ब्रह्मदेयाथतिर्यश्चब्राह्मणःपंक्तिपावनः ६
ऋग्यजुःपारगोयश्चसाम्नांयश्चापिपारगः
अथर्वांगिरसोध्येताब्राह्मणःपंक्तिपावनः ७
नित्यंयोगरतोविद्वान्समलोष्टाश्मकांचनः
ध्यानशीलोहियोविद्वान्ब्राह्मणःपंक्तिपावनः ८

वेद के छः अंगों (शिक्षादि) को जो जाने त्रिसुपर्ण को जो जाने—बहुत ऋचा जिसने पढी हों वा ज्येष्ठ (बड़ा) साम वेद को जो गावे—त्रिणाचिकेत जिसने पढ़ा हो वा पांच अग्नि जो तपे वह ब्राह्मण पंक्ति का पावन (पवित्र करने वाला) है ५

वेद के अनुसार जिसकी संतान हो और जो वेदोक्त का दाता हो—और जिसका उत्तर का समय (आगे) भी वेद के अनुसार हो वह भी पंक्ति का पावन है ६

जो ऋग्वेद और यजुर्वेद और साम वेद के पार को जाने और अथर्व वेद अंगिरस वेद का भाग जिसने पढ़ा हो वह ब्राह्मण भी पंक्ति का पावन है ७

जो नित्य योग मार्ग में रमता है और ज्ञान वान् है और जिसे ढेला—पत्थर सोना तीनों समान हैं और ध्यान शील है और पंडित है वह ब्राह्मण भी पंक्ति का पावन है ८

द्वौदैवेप्राङ्मुखौत्रींश्चपित्र्ये चोदङ्मुखांस्तथा
भोजयेद्विविधान्विप्रानेकैकमुभयत्रवा ६
भोजयेदथवाप्येकंब्राह्मणंपंक्तिपावनं
दैवेकृत्वातुनैवेद्य पश्चाद्वन्हौतुतत्क्षिपेत् १०
उच्छिष्टसन्निधौकार्यंपिंडनिर्वपणंबुधैः
अभावेचतथाकार्यमग्निकार्यंयथाविधि ११
श्राद्ध कृत्वाप्रयत्नेनत्वराक्रोधविवर्जितः
उंच्छमन्न द्विजातिभ्यःश्रद्धयाविनिवेदयेत् १२
अन्यत्रपुष्पमूलेभ्यःपीठकेभ्यश्चपंडितः

दैव (विश्वे देवा) कर्म में पूर्वाभि मुख दो ब्राह्मण और पितृ कर्म में उत्तराभि मुख तीन अथवा अनेक अथवा दोनों जगं एक २ ही ब्राह्मण को जिमावे ९

अथवा एक ही पंक्ति पावन ब्राह्मण को जिमावे और देव कर्म में नैवेद्य बनाकर अग्नि में फेंक दे (होम करे)
और उच्छिष्ट के समीप ही बुद्धिमान् मनुष्य पिंडदान करे और पिंडदान का अभाव किसी कारणसे होयतो विधिसे अग्नि होत्र करे ११

यत्न से श्राद्ध को करके शीघ्रता और क्रोध से रहित मनुष्य उंछ (जोहूं छा हो) अन्न को ब्राह्मणों को श्रद्धा से दे १२

फल और मूल और व्रतवालों का आसन इनपर नहीं बैठाकर अर्थात् शुद्ध कन आदि पर बैठाकर गंध और माला

भोजयेद्द्विविधान्विप्रान्गंधमाल्यसमुज्वलान् १३
यत्किंचित्पच्यतेगेहेभक्ष्यंवाभोज्यमेववा
अनिवेद्य नभोक्तव्यंपिंडमूलेकदाचन १४
उग्रगंधान्यगंधानिचैत्यवृक्षभवानिच
पुष्पाणिवर्जनीयानिरक्तवर्णानियानिच १५
तोयोद्भवानिदेयानिरक्तान्यपिविशेषतः
ऊर्णासूत्रंप्रदातव्यंकार्पासमथवानवम् १६
दशांविवर्तयेत्प्राज्ञोयद्यथाहतवस्त्रजां
घृतेनदीपोदातव्यस्तिलतैलेनवापुनः १७
धूपार्थंगुग्गुलंदद्याद्घृतयुक्तमधूत्कटं

उज्वल विविध ब्राह्मणों को पंडित जिमावे १३

जो कुछ भक्ष्य वा भोज्य घर में पका हो उसको पिंड के पास दिये विना कभीभी भोजन न करे १४

जिन में अधिक सुगंध हो वा सर्वथा गंधन हो जो किसी चैत्य (नमस्कारयोग्य) वृक्षके हों और जो लालरंगके हों ऐसे फूलों को वर्जदे १५

यदि लाल फूल जल में पैदा हुये हों तो विशेष करदे ऊन का सूत वा नया कपास का सूत दे १६

बुद्धिमान् मनुष्य नये वस्त्र की बत्ती बनावे और फिर घी अथवा तिलों के तेलका दीपक दे १७

और धूप के लिये घी और मध (मीठा) जिसमें मिले हों

चंदनंचतथादद्यात्पिष्टांचकुंकुमंशुभं १८
भूतृणांसुरसंशिग्रु पालकंसिंधुकंतथा
कुष्मांडालांबुवार्ताककोविदारांश्चवर्जयेत् १६
पिप्पलीमरिचंचैवतथावैपिंडमूलकं
कृतंचलवणांसर्वंवंशाग्रं तुविवर्जयेत् २०
राजमाषान्मसूरांश्चकोद्रवान्कोरदूपकान्
लोहितान्वृक्षनिर्यासान्श्राद्धकर्मणिवर्जयेत् २१
आम्रमामलकीमिक्षुमृद्वीकादधिदाडिमान्
विदार्यश्चैवरंभाद्यादद्याच्छ्राद्धे प्रयत्नतः २२
धानालाजेमधुयुतेसक्तून्शर्करयातथा

ऐसा गुग्गुल दे और पीस कर चन्दन और कुंकुम दे १८

भूतृण (रोहिष नाम का शाक वा गंधतृण) सुरस (मरुवो) सौजना—पालक—सिंधुक (श्वेतटंकण वृक्ष) पेठा - तुंबी—बैंगन—कचनार इनको श्राद्ध में वर्ज दे १६

पीपल—मिरच—सलजम—बनाया लवण—बांसका अग्र भाग इनको भी वर्जदे २०

राजमाष (रवांस) मसूर—कोदे कोरदूषक—वृक्ष का लाल गोंद इनको भी श्राद्ध कर्म में वर्ज दे २१

कच्चा आंवला—गांडा वा पौंडा—दाख—दही अनार बिदारीकंद—केला—इनको श्राद्ध में यत्न से दे २२

फुलमिले धून और खील—खांड मिले सत्तू—बैठाकर अर्थात् शुद्ध

दद्याच्छ्राद्धे प्रयत्नेनशृंगाटकविसेतकान् २३
भोजयित्वाद्विजान्भक्त्यास्वाचान्तान्दत्तदक्षिणान्
अभिवाद्यपुनर्विप्राननुव्रज्यविसर्जयेत् २४
निमंत्रितस्तुयःश्राद्धेमैथुनंसेवतेद्विजः
श्राद्धंदत्वाचभुक्त्वाचयुक्तःस्यान्महतैनसा २५
कालशाकंसशल्कांश्चमांसंवार्ध्रीणसस्यच
खड्गमांसंतथानंतंयमःप्रोवाचधर्मवित् २६
यददातिगयास्थश्चप्रभासेपुष्करेतथा
प्रयागेनैमिषारण्येसर्वमानंत्यमश्नुते २७

शृंगाटक (जल की एटेहली का फल)—विसेतक (भिस) इनको श्राद्ध में विशेष करके २३

ब्राह्मणों को भक्ति से भोजन कराकर—किया है आचमन जिन्होंने और दी है दक्षिणा जिनको ऐसे ब्राह्मणों को फिर नमस्कार और अनु (पीछे) गमन करके बिसर्जन करै २४

जो श्राद्ध में नोता हुआ ब्राह्मण मैथुन करै उसको जो श्राद्ध में जिमावे वह और भोजन करने वाला दोनों बड़े पाप से युक्त होते हैं २५

समयका शाक—शल्क—वार्ध्रीण (मृगभेद) का मांस ये यमराज ने अनंत फल देने वाले कहे हैं २६

गया—प्रभास—पुष्कर—प्रयाग—नैमिषारण्य—इनमें जाकर जो पितरों को देता है वह अक्षय फलको देता है २७

गंगायमुनयोस्तीरेअयोध्यामरकंटके
नर्मदायांगयातीरेसर्वमानंत्यमुच्यते २८
वाराणस्यांकुरुक्षेत्रेभृगुतुंगेमहालये
सप्तवेण्यृषिकूपेचतदप्यक्षयमुच्यते २९
म्लेच्छदेशेतथारात्रौसंध्यायांचविशेषतः
नश्राद्धमाचरेत्प्राज्ञोम्लेच्छदेशेनचव्रजेत् ३०
हस्तिच्छायासुयद्दत्तंयद्दत्तंराहुदर्शने
विषुवत्ययनेचैवसर्वमानंत्यमुच्यते ३१
प्रौष्ठपद्यामतीतायांमघायुक्तांत्रयोदशीं
प्राप्यश्राद्धंप्रकर्तव्यंमधुनापायसेनवा ३२

गंगा—और यमुना के तीर—अयोध्या—अमरकंटक—नर्मदा—गया का तीर—इनमें देने से अनंत फल भोगता है २८

काशी कुरुक्षेत्र—भृगुतुंग—महालय (कन्यान्त सप्तवेणी—ऋषि कूप—इनमें दान अनंत फल दायक कहा है २९

म्लेच्छों के देश में रात्रि में और विशेष कर संध्या के समय बुद्धिमान् मनुष्य श्राद्ध न करै और म्लेच्छ देश में गमन भी न करै ३०

गजच्छाया (यह योग पहिले लिख आये हैं) ग्रहण—विषुवत्संक्रांति और दोनों अयन इनमें अनंत फल कहा है ३१

यदि प्रोष्ठपदी (भादवेकीपूर्णिमा) किसी कारण से बीत जाय तो मघा नक्षत्र से संयुक्त त्रयोदशी को मधु (सहत वा [illegible]का) से वा खीर से श्राद्ध करै ३२

बैठाक

प्रजापुष्टिं यशःस्वर्गंआरोग्यंचधनंतथा
नृणांश्राद्धैःसदाप्रीताःप्रयच्छंतिपितामहाः ३३
इतिश्रीशंखस्मृतौचतुर्दशोऽध्यायः १४
जननेमरणेचैवसपिंडानांद्विजोत्तम
त्र्यहाच्छुद्धिमवाप्नोतियोऽग्निवेदसमन्वितः १
सपिंडतातुपुरुषेसप्तमेविनिवर्तते
नामधारकविप्रस्तुदशाहेनविशुद्ध्यति २
क्षत्रियोद्वादशाहेनवैश्यःपक्षेणशुद्ध्यति
मासेनतुतथाशूद्रःशुद्धिमाप्नोतिनांतरा ३
रात्रिभिर्मासतुल्याभिर्गर्भस्रावेविशुद्ध्यति

संतान पुष्टता यश स्वर्ग आरोग्य धन इन सब को प्रसन्न हुये पितर सदैव मनुष्यों को देते हैं ३३

इति शंख स्मृतौ १४ अध्यायः

सपिंडों के जन्म अथवा मरण में अग्नि होत्री और वेद पाठी ब्राह्मण तीन दिन में शुद्ध होता है १

और सातवीं पीढ़ी में सपिंडता निवृत्त होजाती है और नाम धारक ब्राह्मण तो दशदिन में शुद्ध होता है २

क्षत्रिय बारह दिन में वैश्य एक पक्ष में शूद्र एक मास में शुद्धि को प्राप्त होता है पहिले नहीं ३

महीनों की तुल्य रात्रियों में गर्भ के स्राव (झरना) में

अजातदंतबालेतुसद्यःशौचंविधीयते ४
अहोरात्रात्तथाशुद्धिर्बालेत्वकृतचूडके
तथैवानुपनीतेतुत्र्यहाच्छुध्यंतिबांधवाः ५
अनूढानांतुकन्यानांतथैवशूद्रजन्मनां
अनूढभार्यःशूद्रस्तुषोडशाद्वत्सरात्परं ६
मृत्युंसमधिगच्छेच्चेन्मासात्तस्यापिबांधवाः
शुद्धिंसमधिगच्छेयुर्नात्रकार्याविचारणा ७
पितृवेश्मनियाकन्यारजःपश्यत्यसंस्कृता
तस्यांमृतायांनाशौचंकदाचिदपिशाम्यति ८

शुद्ध होती है अर्थात् जे महीने का गर्भ हो उतनी ही रात्रियों में और बालक के दांत न जमें हों उस के मरने में तत्काल शुद्धि कही है ४

और मुन्डन से पहिले बालक के मरने में अहोरात्र से और यज्ञोपवीत से पहिले तीन दिन में बांधव शुद्ध होते हैं ५

बिना बिवाही कन्या और बिना बिवाहे शूद्र के मरण में तीन दिन में शुद्धि होती है यदि बिना बिवाहा शूद्र सोलह वर्ष से पीछे ६

मृत्यु को प्राप्त होय तो उसके बन्धु महीने में शुद्ध होते हैं इसमें बिचार नहीं करना ७

यदि बिना बिवाही कन्या पिता के घर पर ही रजस्वला होजाय तो उसके मरणे का अशौच कभी भी निवृत्त नहीं होता ८

हीनवर्णातुयानारीप्रमाद तुप्रसवंव्रजेत्
प्रसवेमरणेतज्जमाशौचंनोपशाम्यति ९
समानंखल्वशौचंतुप्रथमेनसमापयेत्
असमानंद्वितीयेनधर्मराजवचोयथा १०
देशांतरगतःश्रुत्वाकुल्यानांमरणोद्भवौ
यच्छेपंदशरात्रस्यतावदेवाशुचिर्भवेत् ११
अतीतेदशरात्रेतुत्रिरात्रमशुचिर्भवेत्
तथासंवत्सरेतीतेस्नातएवविशुद्ध्यति १२

यदि नीच वर्ण की कन्या बिवाह से पहिले प्रसूता हो जाय तो उसके प्रसव और मरण का दोनों अशौच कभी भी निवृत नहीं होते ९

सजातीय अशौच में यदि दूसरा सजातीय अशौच हो जाय (जन्माशौचमें जन्माशौच और मरणाशौच में मरणाशौच) तो पहिले के संगही दूसरा भी समाप्त होजाता है और यदि दूसरा सजातीय न होय तो धर्मराज के बचन के अनुसार दूसरेके संगदोनों अशौच निवृत होते हैं १०

परदेश में गया मनुष्य दशदिन के बीच में कुल में पैदा हुयों का मरण और जन्म सुनकर दश दिन के शेष दिनों तक की अशुद्ध होताहै ११

यदि दशदिन बीतपर सुने तो तीन रात्रि में और एक बर्ष बीतपर सुने तो स्नान से ही शुद्धि कही है १२

अनौरसेषु पुत्रेषु भार्यास्वन्यगतासु च
परपूर्वासु च स्त्रीषु त्र्यहाच्छुद्धिरिहोच्यते १३
मातामहे व्यतीते तु आचार्ये च तथा मृते
गृहे दत्तासु कन्यासु मृतासु च त्र्यहस्तथा १४
निवासराजनि प्रेते जाते दौहित्रके गृहे
आचार्यपत्नि पुत्रेषु प्रेतेषु दिवसेन च १५
मातुले पक्षिणी रात्रिं शिष्यर्त्विग्बान्धवेषु च
सब्रह्मचारिण्येकाहमनूचाने तथा मृते १६
एकरात्रं त्रिरात्रं च षड्रात्रं मासमेव च
शूद्रे सपिण्डवर्णानामाशौचं क्रमशः स्मृतम् १७

अनौरस पुत्र (दत्तक आदि) और व्यभिचारिणी और परपूर्वा (जो पति को छोड़ कर दूसर को करले अर्थात् धरीलो) इनके मरणे में भी तीन दिन में शुद्धि मानी है १३

नाना, आचार्य, और विवाही कन्या, इनके मरणे मे भी तीन दिन में शुद्धि होती है १४

देश के राजा के मरने और अपने घर में दौहित्र के जन्म, और आचार्य की स्त्री वा पुत्रों के मरने में एक दिन में शुद्धि होती है १५

मामा के मरने में दिनरात और शिष्य ऋत्विक और बांधव इनके मरने में एक रात, सब्रह्मचारी (जो संगवद पढ़ा हो) और अनूचान (जो वेद में अधिक पढ़ा हो) के मरने में

त्रिरात्रमथषड्रात्रंपक्षंमासंतथैवच
वैश्येसपिंडेवर्णानामाशौचंक्रमशःस्मृतं १८
सपिंडेक्षत्रियेशुद्धिःषड्नरात्रंब्राह्मणस्यतु
वर्णानांपरिशिष्टानांद्वादशाहंविनिर्दिशेत् १९
सपिंडेब्राह्मणेवर्णाःसर्वएवाविशेषतः
दशरात्रेणशुध्येयुरित्याहभगवान्यमः २०
भृग्वग्न्यनशनांभोभिर्मृतानामात्मघातिनां
पतितानांचनाशौचंशस्त्रविद्युद्धताश्चये २१

एक दिन अशुद्धि रहती है १६

जो अपना सपिंड शूद्र होगया हो उसके मरने में ब्राह्मण क्षत्रिय—वैश्य और शूद्र ये चारों वर्ण क्रम से एक रात—तीन रात—छः रात—और एक मास में शुद्ध होते हैं १७

वैश्य सपिंड के मरने में चारों वर्णों को तीन रात—छः रात—पक्ष—और मास का अशौच कहाहै १८

क्षत्रिय सपिंड के मरने में ब्राह्मण को छः रात में और शेष तीनों वर्णों को बारह दिन में शुद्धि होती है १९

ब्राह्मण सपिंड के मरने में चारों वर्ण दश रात में शुद्ध होते हैं यह भगवान् यमने कहा है २०

भृगु (ऊंची जगे वा पर्वत की शिखर) अग्नि—अनशन (भोजन का त्याग) जल अपने आप—शस्त्र—विजली इन से जो मरे हो वा जो पतित मरे हों उनका अशौच नहीं होता २१

यतिव्रतिब्रम्हचारीनृपकारुकदीक्षिताः
नाशौचंभाजःकथिताराजाज्ञाकारिणश्चये २२
यस्तुभुंक्तेपराशौचेवर्णीसोप्यशुचिर्भवेत्
अशौचशुद्धौशुद्धिश्चतस्याप्युक्तामनीषिभिः २३
पराशौचेनरोभुक्त्वाकृमियोनौप्रजायते
भुक्त्वान्नं म्रियतेयस्यतस्ययोनौप्रजायते २४
दानंप्रतिग्रहोहोमःस्वाध्यायःपितृकर्मच
प्रेतपिंडक्रियावर्जमाशौचेविनिवर्तते २५
इतिशंखस्मृतौपंचदशोऽध्यायः १५

संन्यासी व्रती (जिसने कोई व्रतधार रक्खा हो) ब्रह्मचारी—राजा—कारीगर—दीक्षित (जिसने यज्ञ आदि में दीक्षा ले रक्खी हो) और राजा की आज्ञा करने वाले ये सब अशुद्ध नहीं कहे हैं २२

जो ब्रह्मचारी पराये अशौच में खाता है वह अशुद्ध होता है परन्तु अशौच की शुद्धि होने पर उसकी भी बुद्धिमानों ने शुद्धि कही है २३

पराये अशौच में खाकर मनुष्य कीड़ों की योनि में जन्म लेता है और जिसके अन्न को खाकर मरता है उसी की जाति में पैदा होता है २४

दान—प्रतिग्रह—होम वेद पाठ—पितरों का कर्म ये सब प्रेत के लिये पिंडो के कर्म को छोड़ कर अशौच में निवृत्त हो जाते हैं २५

मृन्मयंभाजनंसर्वंपुनःपाकेनशुद्ध्यति
मद्यैर्मूत्रैःपुरीषैर्वाष्ठीवनैःपूयशोणितैः १
संस्पृष्टंनैवशुद्ध्येतपुनःपाकेनमृन्मयं
एतैरेवतथास्पृष्टंताम्रसौवर्णराजतम् २
शुद्ध्यत्यावर्तितंपश्चादन्यथाकेवलांभसा
अम्लोदकेनताम्रस्यसीसस्यत्रपुणस्तथा ३
क्षारेणशुद्धिःकांस्यस्यलोहस्यचविनिर्दिशेत्
मुक्तामणिप्रवालानांशुद्धिःप्रक्षालनेनतु ४
अब्जानांचैवभांडानांसर्वस्याश्ममयस्यच

इति शंख स्मृतौ १५ अध्यायः

मट्टी का पात्र दुवारा पकाने से शुद्ध होता है और मदिरा मूत्र—विष्टा—थूक—राध—और रुधिर १

इनका जिसमें स्पर्श हुआ हो ऐसा मट्टी का पात्र दुवारा पाक से शुद्ध नहीं होता है और इनका होहै स्पर्श जिसमें ऐसा तांबे - सोने और चांदी का पात्र २

फिर बनाने से और अन्य किसी प्रकार से अशुद्ध होय तो केवल जल से शुद्ध होता हैं और खटाई के जल से तांबे सीसा लाखकी शुद्धि होती हैं ३

कांसो और लोहे की शुद्धि खारे जल से और मोतीमणि मूंगा इनकी शुद्धि धोने से होती है ४

जल में पैदा हुये और पत्थर के पात्र और शाक की छोड़

शाकवर्जंमूलफलद्विदलानांतथैवच ५
मार्ज्जनाद्यज्ञपात्राणांपाणिनायज्ञकर्मणि
उष्णांभसातथाशुद्धिं सस्नेहानांविनिर्दिशेत् ६
शयनासनयानानांसशूर्पशकटस्यच
शुद्धिःसंप्रोक्षणाद्यज्ञेकटमिंधनयोस्तथा ७
मार्जनाद्वेश्मनांशुद्धिःक्षितेःशोधस्तुतत्क्षणात्
संमार्जितेनतोयेनवाससांशुद्धिरिष्यते ८
बहूनांप्रोक्षणाच्छुद्धिर्धान्यादीनांविनिर्द्दिशेत्
प्रोक्षणात्संहतानांचदारवाणांचतक्षणात् ६
सिद्धार्थकानांकल्केनशृंगदंतमयस्यच

कर मूल—फल और वक्कल इन की शुद्धि धोने से होती है ५

और यज्ञ के पात्रों की यज्ञ के विषे मांजने से और चिकनों की उष्ण जल से शुद्धि कही है ६

शय्या—आसन यान(सवारी)सूप शकट (गाड़ी) चटाई इन्धन—इन की यज्ञ में जल छिड़कने से शुद्धि होती है ७

मार्जन (बुहारना) से घरों की और उसी समय भली प्रकार मार्जन से पृथिवी की और जल से वस्त्रों की शुद्धि होती है ८

बहुत से अन्नों की और संहत (दले हुए) अन्न और काष्ठ के पात्रों की शुद्धि भी छिड़कने से होती है ६

सींग और दांत की वस्तु सरसों की खल से और फलके

गोवालैःफलपात्राणामस्थ्नांशृंगवतांतथा १०
निर्यासानांगुडानांचदारवाणांचतक्षणात्
कुसुंभकुंकुमानांचऊर्णाकार्पासयोस्तथा ११
प्रोक्षणात्कथिताशुद्धिरित्याहभगवान्यमः
भूमिस्थमुदकंशुद्धंशुचितोयंशिलागतम् १२
वर्णगंधरसैर्दुष्टैर्वर्जितंयदितद्भवेत्
शुद्धंनदीगतंतोयंसर्वदैवतथाकरः १३
शुद्धं प्रसारितंपण्यंशुद्धे चाजाश्वयोर्मुखे
मुखवर्जंतुगौःशुद्धामार्जारश्चाश्रमेशुचिः १४
शय्याभार्याशिशुर्वस्त्रमुपवीतंकमंडलुः

पात्र—हाड़ और सींग वालों की शुद्धि गौ के चवर से १०

गूंद—गुड़ लवण—कसूंभ—कुंगू ऊन और कपास इन को ११

शुद्धिभी छिड़कने से कही है यह भगवान यम ने कहा है पृथिवी और शिला पर पड़ा जल शुद्धहोता है १२

यदि वह जल दुष्ट वर्ण लो—रस गंध—इनसे वर्जित हो और नदी का और आकर (खान) का जल शुद्ध है १३

हाट में फैली चीज और बकरी और घोड़े का मुख शुद्ध है और मुख को छोड़कर गौ और आश्रम में बिलाव शुद्ध है १४

शय्या—स्त्री—बालक वस्त्र यज्ञोपवीत पात्र ये अपने ही

आत्मनःकथितंशुद्धं नशुद्धं हिपरस्यच १५
नारीणांचैववत्सानांशकुनीनांशुभंमुखं
रात्रौप्रस्रवणेवृक्षे मृगयायांसदाशुचिः १६
शुद्धाभर्तुश्चतुर्थेन्हिस्नानेनस्त्रीरजस्वला
दैवेकर्मणिपित्र्येचपंचमेहनिशुद्ध्यति १७
रथ्याकर्दमतोयेनष्ठीवनाद्येनवाप्यथ
नाभेरूर्ध्वंनरःस्पृष्टःसद्यःस्नानेनशुद्ध्यति १८
कृत्वामूत्रंपुरीषंवास्नात्वाभोक्तुमनास्तथा
भुक्त्वाक्षुत्वातथासुप्त्वापीत्वाचांभोवगाह्यच १९
रथ्यामाक्रम्यचाचामेद्वासोविपरिधायच

शुद्ध कहे हैं और अन्य के कभी नहीं १५

स्त्री—बछड़े—पक्षि—इन का मुख क्रमसे रात्रि प्रस्रवण (चूंघना) और वृक्ष की मृगया में सदैव शुद्ध है १६

रजस्वला स्त्री चौथे दिन स्नान करके भर्ता के लिये और देवता और पितरों के कर्म में पाचमें दिन शुद्ध होती है १७

यदि मनुष्य की नाभि से ऊपर गली का कीच अथवाजल वा थूक लगजाय तो उसी समय स्नान से शुद्ध होता है १८

लघु शंका—मल का त्याग स्नान—भोजन छींक शयन जल पान और जल में अवगाहन (स्नान आदि) इनको कर के और भोजन से पहिले १९

और गली में चल और वस्त्रों को धार कर आचमन करे

कृत्वामूत्रंपुरीषंचलेपगंधापहंद्विजः २०
उद्धृतेनांभसाशौचंमृदाचैवसमाचरेत्
मेहनेमृत्तिकाःसप्तलिंगेद्वेपरिकीर्तिते २१
एकस्मिन्विंशतिर्हस्तेद्वयेज्ञेयाचतुर्द्दश
तिस्रस्तुमृत्तिकाज्ञेयाःकृत्वानखविशोधनं २२
तिस्रस्तुपादयोर्ज्ञेयाःशौचकामस्यसर्वदा
शौचमेतद्गृहस्थानांद्विगुणंब्रह्मचारिणां २३
त्रिगुणंतुवनस्थानांयतीनांतुचतुर्गुणं
मृत्तिकाचविनिर्द्दिष्टात्रिपर्वापूर्यतेयया २४

और मूत्र और मल का त्याग करके द्विज जिससे दुर्गंध दूर हो२०

ऐसा शौच आप निकाले जल और मिट्टी से करै गुद में सात वार लिंग में तीन वार मट्टी लगानी कही है २१

बांये एक हाथ में वीस वार और फिर दोनों में चादहवार और नखों की शुद्धि करके तीन वार मट्टी लगानी जाननी २२

और शुद्धि की इच्छा वाले पुरुष को तीन वार पैरों में मिट्टी लगानी कही है यह शुद्धि गृहस्थियों की है इससे दूनी ब्रह्मचारियों की २३

और तिगुनी वानप्रस्थों की और चौगुनी संन्यासियों की है और प्रत्येक वार में मिट्टी इतनी ले जिस से तीन अंगुल हाथ के भरें २४

इतिश्रीशंखेषोडशोऽध्यायः

नित्यंत्रिषवणस्नायीकृत्वापर्णकुटींवने
अधःशायीजटाधारीपर्णमूलफलाशनः १
ग्रामंविशेच्चभिक्षार्थंस्वकर्मपरिकीर्तयन्
एककालंसमश्नीयाद्वर्षेतुद्वादशेगते २
हेमस्तेयीसुरापश्चब्रह्महागुरुतल्पगः
व्रतेनैतेनशुद्ध्यंतेमहापातकिनस्त्विमे ३
यागस्थंक्षत्रियंहत्वावैश्यंहत्वाचयाजकं
एतदेवव्रतंकुर्यादात्रेयीविनिषूदकः ४
कूटसाक्ष्यंतथैवोक्त्वानिक्षेपमपहृत्यच

इति शंखस्मृतौ १६ अध्याय

बन में जाय और पत्तों की कुटी बनाकर तीन काल स्नान करै पृथ्वी पर सोवे जटाओं को धारै—पत्ते—मूल—फल इनका भोजन करै १

अपने कर्म को कहता हुआ गांव में जाय बारह वर्ष पर्यंत एक काल भोजन करै २

सोने का चोर—मदिरा पीने वाला ब्रह्म हत्यारा—गुरु स्त्री गामी ये महा पातिक इस व्रत से शुद्ध होते हैं ३

यज्ञ में टिके क्षत्रिय और यज्ञ करने वाले वैश्य को मारकर और रजस्वला स्त्री का गमन कर्ता भी यही व्रत करै ४

झूंटी साक्षी कह कर न्यास (धरोर) को चुराय और शरण

एतदेवव्रतंकुर्यात्त्यक्त्वाचशरणागतं ५
आहिताग्नेःस्त्रियंहत्वामित्रंहत्वातथैवच
हत्वागर्भमविज्ञातमेतदेवव्रतंचरेत् ६
वनस्थंचद्विजंहत्वापार्थिवंचकृतागसं
एतदेवव्रतंकुर्याद्द्विगुणंचविशुद्धये ७
क्षत्रियस्यचपादोनंवधेऽर्द्धं वैश्यघातने
अर्द्धमेवसदाकुर्यात्स्त्रीवधेपुरुषस्तथा ८
पादंतुशूद्रहत्यायामुदक्यागमनेतथा
गोवधेचतथाकुर्यात्परदारगतस्तथा ९
पशून्हत्वातथाग्राम्यान्मासंकृत्वाविचक्षणः

आये को त्याग करके यही ब्रत करै ५

अग्नि होत्री की स्त्री मित्र और बिना जाना गर्भ इनको मार करभी यही ब्रत करै ६

वनवासी ब्राह्मण और अपराधी राजा इनको मारकर विशुद्धि के लिये दूना ब्रत करै ७

वन वासी क्षत्रिय के मारने में पोन वैश्यके और स्त्री के मारने में आध इस ब्रत को करै ८

शूद्र की हत्या और रजस्वला स्त्री के गमन और गोवध और पर स्त्री के गमन में पाद चौथाई इस ब्रत को करै ९

ग्राम के और बन पशुओं को मार कर और उनकी हत्या

आरण्यानांवधेतद्वत्तदर्धंतुविधीयते १०
हत्वाद्विजंतथासर्पंजलेशयविलेशयान्
सप्तरात्रंतथाकुर्याद्व्रतंब्राह्महणस्तथा ११
अनस्थांशकटंहत्वाअस्थांदशशतंतथा
ब्रह्महत्याव्रतंकुर्यात्पूर्णंसंवत्सरंनरः १२
यस्ययस्यचवर्णस्यवृत्तिच्छेदंसमाचरेत्
तस्यतस्यवधेप्रोक्तंप्रायश्चित्त समाचरेत् १३
अपहत्यतुवर्णानांभुवंप्राप्यप्रमादतः
प्रायश्चित्त वधप्रोक्तंब्राह्मणानुमतंचरेत् १४
गोजाश्वस्यापहरणमणीनांरजतस्यच

के अन्य प्रायश्चित्तको न कर के आधा यह व्रत कहा है १०

द्विज सांप जल और बिल में सोने वाले जीव इनको मार कर ब्रह्म हत्या का व्रत सात दिन तक करै ११

बिना अस्थिके जीवों की भरी गाड़ा और अस्थि (हाड़) वालों के एक सहस्त्रो को मार कर मनुष्य वर्ष दिन तक संपूर्ण व्रत ब्रह्म हत्या का करै १२

जिस२ वर्ण की जीविका का अभाव करै उसी२ वर्ण की हत्या का प्रायश्चित्त करै १३

वर्णों की भूमि चोरी से अनजाने लेकर ब्राह्मणों की आज्ञा से हत्या का जो प्रायश्चित्त उसको करै १४

गौ, बकरी, घोड़ा, मणी, चांदी, जल, इन को जो चोरी

जलापहरणेचैवकुर्यात्संवत्सरंव्रतं १५
तिलानांधान्यवस्त्राणांमद्यानामामिषस्यच
संवत्सरार्द्धंकुर्वीतव्रतमेतत्समाहितः १६
तृणेक्षुकाष्ठतक्राणांरसानामपहारकः
मासमेकंव्रतंकुर्याद्द तानांसर्पिषांतथा १७
लवणानांगुडानांचमूलानांकुसुमस्यच
मासार्द्धंतुव्रतंकुर्यादेतदेवसमाहितः १८
लोहानांवैदलानांचसूत्राणांचर्मणांतथा
एकरात्रंव्रतंकुर्यादेतदेवसमाहितः १९
भुक्त्वापलांडुंलशुनंमद्यंचकरकाणिच

करै वह एक वर्ष तक उक्त व्रत को करै १५

तिल, अन्न, वस्त्र, मदिरा, मांस, इनकी चोरी करछःमही ने सावधानी से यह व्रत करै १६

तृण गांडे काट मठा रस दांत घी इनका चोर एक महीना व्रत करै १७

लवण गुड़ मूल फूल इन का चोर सावधानी से पंद्रह दिनयही वृत करै १८

लोहा वैदल (पिटठी वा भिखारी का पात्र) सूत चाम इनका चोर सावधान होकर यही व्रत करै १९

पलांडु (सलजम) लशन मदिरा करक (अनार वा करंज)

नारंमलंतथामांसंविड्वराहंखरंतथा २०
गौधेयकुंजरोष्ट्रं चसर्वंपांचनखंतथा
क्रव्यादकुक्कुटंग्राम्यंकुर्यात्संवत्सरव्रतम् २१
भक्ष्याःपंचनखास्त्वेतेगोधाकच्छपशल्लकाः
खड्गश्चशशकश्चैवतान्हत्वाचचरेद्व्रतं २२
हंसंमद्गुरकंकाकंकाकोलंखंजरीटकं
मत्स्यादांश्चतथामत्स्यान्बलाकंशुकसारिके २३
चक्रवाकंप्लवंकोकंमंडूकंभुजगंतथा
मासमेकंव्रतंकुर्यादेतच्चैवनभक्षयेत् २४

मनुष्य का मल मांस विष्टा खाने वाला सूकर गधा इनको खा कर २०

गोधेय (गोह का बच्चा) हाथी ऊंट संपूर्ण पंचनख मांस खाने वाला जीव और गांव का मुरगा इनको खाकर एक वर्ष तक उक्त व्रत करै २१

गोह—कछुवा—सेह—गेंडा—ससा—ये पांच पंच नख भक्ष्य हैं और इन को मार कर भी व्रत को करे २२

हंस—मद्गुर (मत्स्यभेद) कौआ का कोल (सर्प) खंजरीट (खंजन पक्षि) मत्स्य के खाने वाले—मत्स्य—बगुला—तोता सारिको (मैना) २३

और चकवा—प्लव (जल का पक्षी) कोक(कभीड़ा) मेंडक सर्प इनको खाकर एक महीना व्रत करै और इनको नखाय२४

राजीवान्सिंहतुंडांश्चशकुलांश्चतथैवच
पाठिनरोहितौभक्ष्यौमत्स्येषुपरिकीर्तितौ २५
जलेचरांश्चजलजान्मुखाग्रनखविष्किरान्
रक्तपादान्जालपादान्सप्ताहंव्रतमाचरेत् २६
तित्तिरंचमयूरंचलावकंचकपिंजलं
वार्घ्रीणसंवर्तकंचभक्ष्यानाहयमस्तथा २७
भुक्त्वाचोभयतोदतांस्तथैकशफदंष्ट्रिणः
तथाभुक्त्वातुमांसंवैमासार्द्धंव्रतमाचरेत् २८

राजीव—सिंहतुंड—शकुल—पाठीन—रोहित - इतनेमत्स्य भक्ष्य कहे हैं २५

जलमें जो विवरें और पैदा हैं—और मुखके अग्रभागमें जो नख उससे जो खोदें—जिनके पेर लाल हो—और जिनका जाल के समान् पैर हैं—इनको खाकर सात दिन व्रत करै २६

तित्तर—मोर—लावक [लाल पक्षि) कपिंजल वार्घ्रीणस वर्तक [बत्तक] ये यम राजने भक्षय कहे हैं २७

जिनके दोनों ओर दांत हैं—और जिनके एक खुर हैं दांत वाले इनको एक महीने तक खाकर पंद्रह दिन व्रत करै २८

स्वयं मरे जीव का मांस भैंस और बकरी का मांस जिस

स्वयंमृतंतथामांसंमाहिषंतुवाजमेवच
गोश्चक्षीरंविवत्साया:संधिन्याश्चतथापय: २६
संधिन्यमेध्यंभक्ष्या:या:पक्षंतुव्रतमाचरत्
क्षीराणियान्यभक्ष्याणितद्विकाराशनेबुध: ३०
सप्तरात्रव्रतंकुर्याद्यदेतत्परिकीर्तितं
लोहितान्वृक्षनिर्यासान्व्रश्चनप्रभवांस्तथा ३१
केवलानिचशुक्तानितथापर्युषितंचयत्
गुडशुक्तंतथाभुक्त्वात्रिरात्रंचव्रतीभवेत् ३२
दधिभक्ष्यंचशुक्तेषुयच्चान्यद्दधिसंभवं

का बछड़ा मरगया हो अथवा जो संधिनी हो (ग्याभन होने पर दूधदे) उस गौ का दूध २६

और संधिनी का । वह दूध जो अशुद्ध हो इनको खाकरपंद्रह दिन व्रत करै और जो दूध अभक्षय हैं उन के विकारों को खाकर बुद्धिमान पुरुष ३०

सातरात्रि तक उक्त व्रत को करै लाल वृक्ष का गूंद—और जो गूंद वृक्ष के काटन से हों ३१

केवल शुक्त (कांजी या आल] और वासी पदार्थ—गुड़का शुक—इनको खाकर तीन रात व्रत करै ३२

और शुक्तों में दही और दही का विकार और घी मिला गुड़ का शुक्त ये भक्षय शुक्तों में कहे है ३३

जो—गेहूं—दूध—इनके सब बिकार और राजवाड़व [मूंग

गुडशुक्तंतुभक्ष्यंस्यात्ससर्पिष्कमितिस्थितिः ३३
यवगोधूमजाःसर्वेविकाराःपयसश्चये
राजवाडवकुल्यंचभक्ष्यंपर्युषितंभवेत् ३४
राजीवपक्कंमांसंचसर्वयत्नेनवर्जयेत्
सवत्सरब्रतंकुर्यात्प्राश्यैतानज्ञानतस्तुतान् ३५
शूद्रान्नंब्राह्मणोभुक्त्वातथारंगावतारिणः
चिकित्सकस्यक्षुद्रस्यतथास्त्रीमृगजीविनः ३६
षंडस्यकुलटायाश्चतथ बधनचारिणः
बदधस्यचैवचोरस्यअवीरायास्त्रियस्तथा ३७
चर्मकारस्यवेनस्यक्लीबस्यपतितस्यच
रुक्मकारस्यधूर्तस्यतथावार्द्धुषिकस्यच ३८

भेद) का मल ये वासी भी भक्ष्य हैं ३४

राजीव मृग भेद के पके मांस को सब प्रकार त्याग दे और इनपूर्वोक्तों को ज्ञान से खाकर एक वर्ष तक ब्रत करै ३५

शूद्र रंगावतार रंगरेज बैद्य क्षुद्रबुद्धि,स्त्री और मृगोंसे जो जीवे ३६

नपुंसक व्यभिचारिणी स्त्रीबंधन चारी(डाकिये) बद्ध(कैदी) और पति पुत्र हीन स्त्री ३७

चमार वेनवे क्लीव (नामर्द) पतित सुनार धूर्त वार्धुषिक ब्याज लेने वाला ३८

कदर्यस्यनृशंसस्यवेश्यायाःकितवस्यच
गणान्नं भूमिपालन्नमन्नं चैवश्वजीविनां ३९
मौंजिकान्नं सूतिकान्नं भुक्त्वामासंव्रतंचरेत्
शूद्रस्यसततंभक्त्वाषण्मासान्व्रतमाचरेत् ४०
वैश्यस्यतुतथाभुक्त्वात्रीन्मासान्व्रतमाचरेत्
क्षत्रियस्यतथाभुक्त्वाद्वौमासौव्रतमाचरेत् ४१
ब्राह्मणस्यतथाभुक्त्वामासमेकंव्रतंचरेत्
आपःसुराभाजनस्थाःपीत्वापक्षव्रतंचरेत् ४२
मद्यभांडगताःपीत्वासप्तरात्रव्रतंचरेत्
शूद्रोच्छिष्टाशने मासंपक्षमेकंतथाविशः ४३

कदर्य कायर हिंसक वेश्या कपटी शूद्र आदि जो ये कहे हैं इनके अन्न को और बहुत मनुष्यों और राजा और कुत्तों से जो जीवें उनके अन्न को ३९

मूंज के व्यापारी सूतिका के अन्न को खाकर एक मास व्रत करै और निरंतर शूद्र के अन्नको खाकर छः मास व्रत करै ४०

वैश्य का अन्न खाकर तीन महीने और क्षत्रिय का खाकर दो महीने व्रत करै ४१

ब्राह्मण का खाकर एक महीने तक व्रत करै और मदिरा के पात्र का जल पीकर पंद्रह दिन व्रत करै ४२

गुण की मदिरा के पात्र का जल पीकर सात रात व्रत करै शूद्र का उच्छिष्ट खाकर एक महीना और वैश्य का उच्छिष्ट खाकर पंद्रह दिन व्रत करै ४३

क्षत्रियस्यतु सप्ताहंब्राह्मणस्यतथादिनं
अथश्राद्धाशनेविद्वान्मासमेकंव्रतीभवेत् ४४
परिवित्तिःपरिवेत्तायथयाचपरिविन्दति
व्रतंसंवत्सरंकुर्युर्दातृयाजकपंचमाः ४५
काकोच्छिष्टंगवाघ्रातंभुक्त्वापक्षंव्रतीभवेत्
दूषितंकेशकीटैश्चमूषिकालांगुलेनच ४६
मक्षिकामशकेनापित्रिरात्रंतुव्रतीभवेत्
वृथाकृसरसंयावपायसापूपशष्कुलीः ४७

क्षत्रिय का उच्छिष्ट खाकर सात दिन ब्राह्मण का उच्छिष्ट खाकर एक दिन और श्राद्ध में खाकर एक महीना ज्ञानवान् मनुष्य व्रत करे ४४

परिवेत्ता—परिवित्ति—जो स्त्री परिवेत्ता ने जेठे भाई से पहिले विवाही हो वह स्त्री दाता और पांचवां याजक (बिवाह पढ़ने वाला) ये पांचों एक वर्ष तक व्रत करैं ४५

काक का उच्छिष्ट—गौ का सूंघा इनको खाकर पंद्रह दिन व्रत करैं और केश कीड़ा—मूसा—वानर—इनसे जो दूषित (कूआ आदि) ४६

और मक्खी—मच्छर इनसे दूषित को खाकर तीनरात व्रत करे—और वृथा (केवल अपने लिये)कृसर (मिले हुएतिल चावल) संयाव (मोहन भोग) खीर—पूआ—पूरी ४७

भुक्त्वात्रिरात्रंकुर्वीतव्रतमेतत्समाहितः
नील्याचैवक्षतोविप्रःशुनादष्टस्तथैवच ४८
त्रिरात्रंतुव्रतंकुर्यात्पुंश्चलीदशनक्षतः
पादप्रतापनंकृत्वावन्हिंकृत्वातथाऽयघः ४९
कुशैःप्रमृज्यपादौचदिनमेकंव्रतीभवेत्
नीलीवस्त्रंपरीधायभुक्त्वास्नानार्हणस्तथा ५०
त्रिरात्रंचव्रतंकुर्याच्छित्वागुल्मलतास्तथा
अध्यास्यशयनंयानमासनंपादुकेतथा ५१
पलाशस्यद्विजश्रेष्ठस्त्रिरात्रंतुव्रतीभवेत्

खाकर सावधानी से इस व्रत को तीन रात तक करै जिस ब्राह्मण के शरीर में नील की लकड़ी से घाव होजाय वा जिस ब्राह्मण को कुत्ता काटे ४८

वह तीन रात व्रत करै और जिसके पुंश्चली(वेश्या आदि) के दांतों से घाव होजाय और नीचे अग्नि रखकर जो पैर तपावे ४९

वह कुशाओं से पैरों को शुद्ध कर के एक दिन व्रत करै और नीला वस्त्र पहन कर और जिसके छूने से स्नान करना योग्य है उसका अन्न खाकर ५०

तीन रात व्रत करै—और गुल्म (गुच्छे) लता—और शय्या—यान—आसन और खड़ाऊं इन पर बैठ कर ५१

यदि ये सब पलाश (ढाक) से बनी हैं तो तीन रात व्रत

वाग्दुष्टंभावदुष्टंचभाजनेभावदूषिते ५२
भुक्त्वान्नं ब्राह्मणःपश्चात्त्रिरात्रंतुव्रतीभवेत्
क्षत्रियस्तुरणेदत्वापृष्ठं प्राणपरायणः ५३
संवत्सरव्रतंकुर्याच्छित्वावृक्षं फलप्रदं
दिवाचमैथुनंगत्वास्नात्वानग्नस्तथांभसि ५४
नग्नांपरस्त्रियंदृष्ट्वादिनमेकंव्रतीभवेत्
क्षिप्त्वाग्नावशुचिद्रव्यंतदेवांभसिमानवः ५५
मासमेकंव्रतंकुर्यादुपक्रुध्यतथागुरुं
पीतावशेषंपानीयंपीत्वाचब्राह्मणःक्वचित् ५६
त्रिरात्रंतुव्रतंकुर्याद्वामहस्तेनवापुनः

करे वाणी—भाव—इनसे दुष्ट पदार्थ को भाव से दुष्ट पात्र में अर्थात् जिसे निंदित नाम से बोला हो ५२

खाकर ब्राह्मण तीनरात व्रत करे और अपने प्राणों की रक्षा में तत्पर क्षत्री रण (युद्ध) में पीठ दे कर ५३

एक बर्ष तक व्रत करे—और फल देने वाले वृक्ष को काट कर—दिन में मैथुन करके और जल में नग्न हो स्नान करके ५४

और अन्य की स्त्री को नंगी देखकर एक दिन व्रत करे और अग्नि और जल में अशुद्ध पदार्थ फेंककर ५५

और गुरु पर क्रोध करके एक मास व्रत करे और पीने से बचे पानी को ब्राह्मण कदाचित् पीकर ५६

और बांये हाथ से जल पीकर तीन रात व्रत करे और

एकपंक्त्युपविष्टेषुविषमंयःप्रयच्छति ५७
यश्चयावदसौयच्चकुर्यात्तु ब्राह्मणोव्रतम्
धारयित्वातुलाचार्यंविषमंकारयेद्बुधः ५८
सुरालवणमद्यानांदिनमेकंव्रतीभवेत्
मांसस्यविक्रयंकृत्वाकुर्याच्चैवमहाव्रतम् ५९
विक्रीयपाणिनामद्यं तिलस्यचतथाचरेत्
हुंकारंब्राह्मणस्योक्त्वात्वंकारचगरीयसः ६०
दिनमेकंव्रतंकुर्यात्प्रयतःसुसमाहितः
प्रेतस्यप्रेतकार्याणिकृत्वाचैवापहारकः ६१
वर्णानांयद्व्रतंप्रोक्तंतद्व्रतंप्रयतश्चरेत्

पंक्ति में बैठे हुयों के आगे जो विषम (न्यूनाधिक) पर से ५७

और जो ब्राह्मण जिसके व्रत को करके और तुला(तराजू) लेकर जो बुध बिषम करै ५८

सुरा (मदिरा) लवण—मद्य इनको बेच कर एक दिन व्रत करै और मांस को वेच कर महा (बड़ा) व्रत करै ५९

हाथ से मदिरा और तिल को बेच कर भी व्रत करै और ब्राह्मण को हुं और बडे को तू कहकर ६०

भली प्रकार सावधान होकर यत्न से एक दिन व्रत करै और प्रेत की क्रिया और प्रेत को श्मशान में कंधे पर लेजाय कर ६१

जो वर्णों को व्रत कहा है उसी व्रत को सावधानी से करै

कृत्वापापंनगूहेतगुह्यमानंविवर्द्धते ६२
कृत्वापापंबुधःकुर्यात्पर्षदानुमतंव्रतम्
तस्करश्वापदाकीर्णेबहुव्यालमृगेवने ६३
नव्रतंब्राह्मणःकुर्यात्प्राणबाधभयात्सदा
सर्वत्रजीवनंरक्षेज्जीवन्पापमपोहति ६४
व्रतैःकृच्छ्रैश्चदानैश्चइत्याहभगवान्यमः
शरीरंधर्मसर्वस्वंरक्षणीयंप्रयत्नतः ६५
शरीरात्स्रवतेधर्मःपर्वतात्सलिलंयथा
आलोच्यधर्मशास्त्राणिसमेत्यब्राह्मणैःसह ६६

पाप को करके न छिपावे क्योंकि छिपाने से पाप बढता है ६२

इससे पाप को करके ज्ञान वान् पुरुष पर्षद (धर्म सभा) की अनुमति से व्रत करै—चौर—भेड़िया—सांप—मृग ये जिस में हों ऐसे बन में ६३

ब्राह्मण प्राणों के भय से सदैव व्रत न करै क्योंकि जीवन की रक्षा सब जगे करनी जीता हुआ मनुष्य पाप को दूर कर देगा ६४

व्रत कृच्छ्र दान इनसे—पापको दूर करेगा—यह भगवान् यम ने कहा है—धर्म का सर्वस्व जो शरीरहै वह प्रयत्न से रक्षा करने योग्य है ६५

शरीर में से धर्म इस प्रकार निकस जाता है जैसे पर्वत में से जल इससे ब्राह्मणों के संग धर्म शास्त्रों को देखकर ६६

प्रायश्चित्तं द्विजोदद्यात्स्वेच्छयानकदाचन
इतिश्रीशांखेसप्तदशोऽध्याय १७
त्र्यहंत्रिषवणस्नायीस्नानेस्नानेऽघमर्षणम्
निमग्नस्त्रिःपठेदप्सुनभुंजीतदिनत्रयम् १
वीरासनंचतिष्ठेतगांदद्याच्चपयस्विनीम्
अघमर्षणमित्येतद्व्रतंसर्वाघनाशनम् २
त्र्यहंसायंत्र्यहंप्रातस्त्र्यहमद्यादयाचितम्
त्र्यहंपरंचनाश्नीयात्प्राजापत्यं चरन्व्रतम् ३
त्र्यहमुष्णांपिबेत्तोयंत्र्यहमुष्णंघृतंपिवेत्

द्विज प्रायश्चित्त बतावे अपनी इच्छा से कभी न बतावे
इति शंखस्मृतौ १७ अध्यायः

तीन दिन तक त्रिकाल स्नान करे और तीनों स्नानों में जल में डूबा हुआ तीन२ वार अघमर्षण जपै और तीन दिन तक भोजन न करे १

और वीरासन से खड़ा हो और दूध देती गौ का दान करे यह अघमर्षण व्रत सब पापों का नाशक है २

जो मनुष्य प्राजापत्य व्रत करे वह तीन दिन तक सायं काल और तीन दिन तक प्रातःकाल और तीन दिन तक जो बिना मांगे मिले उसे खावे और तीन दिन तक सर्वथा भोजन न करे ३

तीन दिन तक उष्ण जल तीन दिन उष्ण घी—तीन दिन

ध्यहमुष्णांपयःपीतवावायुभक्षस्त्र्यहंभवेत् ४
तप्तकृच्छ्रंविजानीयाच्छीतैःशीतमुदाहृतम्
द्वादशाहोपवासेनपराकःपरिकीर्तितः ५
विधिनोदकसिद्धान्नंसमश्नीयात्प्रयत्नतः
सक्तुवासोदकान्मासंकृच्छ्रंवारुणमुच्यते ६
बिल्वैरामलकैर्वापिपद्माक्षैरथवाशुभैः
मासेनलोकैस्त्रीकृच्छ्रःकथ्यतेबुद्धिसत्तमैः ७
गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पिःकुशोदकम्
एकरात्रोपवासश्चकृच्छ्रंसांतपनंस्मृतं ८

उष्ण दूध पीवे और तीन दिन वायु को भक्षण करे ४

इसको तप्तकृच्छ्र जाने और पूर्वोक्त क्रमसे यदि शीतल जल आदि पीवे तो शीत कृच्छ्र कहा है और बारह दिन के उपवास से शुद्ध पराक व्रत करे ५

विधि पूर्वक जल से बनाये अन्न को बड़े यत्न से जो खावे यदि वह मनुष्य एक महीने तक सोदक करै अर्थात् भोजन के विना जल न पीवे इसे वारुण कृच्छ्र कहते हैं ६

बेल—आवले—अच्छे कवलगट्टे इनको एक महीने खाने से बुद्धिमानों ने स्त्रियों का कृच्छ्र कहा है ७

गोमूत्र—गोबर—दूध—घी—कुशा का जल इनको खाना और एक दिन का उपवास करना इसको सांतपन कृच्छ्र कहते हैं ८

एतैस्तुत्र्यहमभ्यस्तंमहासांतपनंस्मृतम्
पिण्याकंवामत्तक्रांवुसक्तूनांप्रतिवासरम् ९
उपवासांतराभ्यासात्तुलापुरुषउच्यते
गोपुरीषाद्यवान्नं तुमासंनित्यंसमाहितः १०
व्रतंतुयावकंकुर्यात्सर्वपापापनुत्तये
ग्रासंचंद्रकलावृद्ध्याप्राश्नीयाद्वर्द्धनंसदा ११
ह्रासयेच्चकलावृद्ध्याव्रतंचांद्रायणंचरन्
मुंडस्त्रिषवणस्नायीअधःशायीजितेंद्रियः १२

और तीन दिन तक इनके करने से महा सांतपन कहाहै तिलों का खल बिना जल का मठा—सत्तू इनके प्रतिदिन ९

बीचर में उपवास करके अभ्यास (करना) से तुला पुरुष कहा है—गोबर और जों को एक महीने तक प्रतिदिन साव धानी से खाकर १०

सब पापों के नाश के लिये यावक व्रत को करै चन्द्रमा की कला की वृद्धि के अनुसार एक२ ग्रास प्रति दिन बढाकर खावे ११

और कला की हानि के अनुसार एक२ ग्रास प्रति दिन वह पुरुष घटावे जो चांद्रायण व्रत करै—मुंडन किये हुये—त्रिकाल स्नान—भूमि पर सोना इंद्रियों को जीतना १२

स्त्रीशूद्रपतितानांचवर्जयेत्परिभाषणम्
पवित्राणिजपेच्छक्त्याजुहुयाच्चैवशक्तितः १३
अयंविधिःसविज्ञेयःसर्वकृच्छ्रेषुसर्वदा
पापात्मानस्तपापेभ्यःकृच्छ्रैःसंतारितानराः १४
गतपापादिवंयांतिनात्रकार्याविचारणा
शंखप्रोक्तमिदंशास्त्रंयोधीतेबुद्धिमान्नरः १५
सर्वपापविनिर्मुक्तस्स्वर्गलोकेमहीयते १६

इतिशांखेअष्टादशोऽध्याय १८
इतिशंखस्मृतिःसमाप्ता
श्रीगणेशायनमः

स्त्री—शूद्र—पतित इनके संग न बोलना—और पवित्र स्तोत्र आदि को जपना और शक्ति से होम करना १३

यह विधि सब कृच्छ्रों में सदैव जाननी—कृच्छ्रों के प्रताप से पापों से छूटे पापी पुरुष १४

नष्ट हुआ है पाप जिनका ऐसे होकर स्वर्ग में जाते हैं इसमें कुछ विचार नहीं करना, शंख ऋषि के कहे इस शास्त्रको जो बुद्धिमान् नर पढता है १५

वह सब पापों से निवृत्त होकर स्वर्गलोक में पुजता है १६

इति शंखस्मृतौ १८ अध्यायः

इति

इष्टापूर्तेतुकर्तव्येब्राह्मणेनप्रयत्नतः
इष्टेनलभतेस्वर्गंपूर्तेमोक्षमवाप्नुयात् १
एकाहमपिकर्तव्यंभूमिष्ठमुदकंशुभम्
कुलानितारयेत्सप्तयत्रगौर्वितृपीभवेत् २
भूमिदानेनयेलोकागोदानेनचकीर्तिताः
तांल्लोकान्प्राप्नुयान्मर्त्यःपादपानांप्ररोपणे ३
वापीकूपतडागानिदेवतायतनानिच
पतितान्युद्धरेद्यस्तुसपूर्तफलमश्नुते ४
अग्निहोत्रंतपःसत्यंवेदानांचैवपालनम्

लिखित स्मृति १४

ब्राह्मण प्रयत्न से इष्ट(यज्ञ आदि) और आपूर्त(कूपआदि) को यत्न से करे क्योंकि इष्ट से स्वर्ग मिलता है और पूर्त से मोक्ष को प्राप्त होता है १

जिससे गौ की तृषा निवृत हो जाय इतना जल यदि एक दिन भी पृथिवी में जो करदे वह सात कुलों को तारता है २

भूमि और गौ के दान से जो लोक मिलते हैं उन्ही लोकों को वृक्षों के लगाने से मनुष्य प्राप्त होता है ३

बावड़ी—कूप—तालाव—देवता का मंदिर पतित(पुराने) इनको जो उद्धार करै वह भी पूर्त के फल को भोगता है ४

अग्निहोत्र—तप—सत्य—वेदों की रक्षा—अभ्यागत का

आतिथ्यंवैश्वदेवंचइष्टमित्यभिधीयते ५
इष्टापूर्तेद्विजातीनांसामान्योधर्मउच्यते
अधिकारीभवेच्छूद्रःपूर्तेधर्मेनवैदिके ६
यावदस्थिमनुष्यस्यगंगातोयेषुतिष्ठति
तावद्वर्षसहस्राणिस्वर्गलोकेमहीयते ७
देवतानांपितॄणांचजलेदद्याज्जलांजलिम्
असंस्कृतमृतानांचस्थलेदद्याज्जलांजलिम् ८
एकादशाहेप्रेतस्ययस्यचोत्सृजतेवृषः
मुच्यतेप्रेतलोकात्तु पितृलोकंसगच्छति ९
एष्टव्याबहवःपुत्रायद्यप्येकोगयांव्रजेत्

सत्कार—और बलिवैश्वदेव—इनको इष्ट कहते हैं ५

द्विजातियों के इष्ट और आपूर्त साधारण धर्म कहे हैं और शूद्र पूर्त धर्म का अधिकारी है वेदोक्त का नहीं ६

मनुष्य का हाड़ इतने गंगा जल में टिके उतने हो हजार वर्ष तक स्वर्ग लोक में पुजता है ७

देवता और पितरों को जल में और संस्कार से पहिले जो मरे हों उन को स्थाल में जल की अंजली दे ८

जिस प्रेत के एकादश में वृष का उत्सर्ग होता है वहप्रेत प्रेत लोक से निवृत्त होकर पितृ लोक में जाता है ९

बहुत से पुत्रों की इच्छा करनी यदि उन में एकभी गया

यजेतवाश्वमेधेननीलंवावृषमुत्सृजेत् १०
वाराणस्यांप्रविष्टस्तुकदाचिन्निष्क्रमेद्यदि
हसंतितस्यभूतानिअन्योन्यंकरताडनैः ११
गयाशिरेतुयत्किंचिन्नाम्नापिंडन्तुनिर्वपेत्
नरकस्थोदिवंयातिस्वर्गस्थोमोक्षमाप्नुयात् १२
आत्मनोवापरस्यापिगयाक्षेत्रेयतस्ततः
यन्नाम्नापातयेत्पिंडंतंनयेद्ब्रह्मशाश्वतं १३
लोहितोयस्तुवर्णेनशंखवर्णःखुरस्तथा
लांगूलशिरसाचैवसवैनीलवृषःस्मृतः १४

को जाय अथवा अश्वमेध यज्ञ करे अथवा नील बैल का उत्सर्ग करे वही पुत्र है १०

काशी में प्रवेश करके यदि कदाचित् जो निकलता है उस को सब भूत आपस में ताली देकर हंसते हैं ११

गया में जिस किसी के नाम से पिंड दान करे यदि वह नरक में हो तो स्वर्ग में जाता है और स्वर्ग में होय तो मुक्त होता है १२

अपने वा पर के संबंधी जिस किसी के नाम से जो गया में पिंड देता है वह उसी को सनातन ब्रह्म को पहुंचाता है १३

जिसका रंग लाल—खुर पूंछ—शिर ये सपद हों उसे नील वृष कहते हैं १४

नवश्राद्ध त्रिपक्षेचद्वादशस्वेवमासिकं
षण्मासौचाब्दिकंचैवश्राद्धान्येतानिषोडश १५
यस्यैतानिनकुर्वीतएकोद्दिष्टानिषोडश
पिशाचत्वंस्थिरंतस्यदत्तैःश्राद्धशतैरपि १६
सपिंडीकरणादूर्ध्वंप्रतिसंवत्सरंद्विजः
मातापित्रोःपृथक्कुर्यादेकोद्दिष्टंमृतेऽहनि १७
वर्षेवर्षेतुकर्तव्यंमातापित्रोस्तुसन्ततं
अदैवंभोजयेच्छ्राद्धं पिंडमेकन्तुनिर्वपेत् १८
संक्रान्तावुपरागेचपर्वण्यपिमहालये

नवक श्राद्ध—त्रिपक्ष (१॥ महीने में) बारह १२ बारह महीनों के—दोषाण्मास (५॥ महीने महीने का) बर्षी ये सोलह श्राद्ध है १५

जिसके ये सोलह एकोद्दिष्ट नहीं किये जाते उसको सैंकड़ों श्राद्ध देने से भी प्रेतत्व स्थिर (बना) रहता है १६

सपिंडी किये पीछे प्रति बर्ष माता पिता के मरण के दिन में पृथक्२ एकोद्दिष्ट करे १७

माता पिता का श्राद्ध बर्ष२ मेंनिरंतर करे और बिश्वेदेवा के बिना श्राद्धमें जिमावे और एक पिंड दे १८

संक्रांति—ग्रहण—पर्व—महालय (कनागत) इनमें एक पक्ष में तीन पिंड और मातृ पक्ष में तीन पिंड दे और जो

निर्वाप्यास्तुत्रयःपिंडाएकतरतुक्षयेऽहनि १६
एकोद्दिष्टंपरित्यज्यपार्वणांकुरुतेद्विजः
अकृतंतांद्विजानीयात्सभातापितृघातकः २०
अमावास्यांक्षयोयस्यप्रेतपक्षेऽथवायदि
सपिंडीकरणादूर्ध्वंतस्योक्तःपार्वणोविधिः २१
त्रिदंडग्रहणादेवप्रेतत्वंनैवजायते
अहन्येकादशेप्राप्तेपार्वणस्तुविधीयते २२
यस्यसंवत्सरादर्वाक्सपिंडीकरणंस्मृतम्
प्रत्यहंतत्सोदकुंभंदद्यात्संवत्सरंद्विजः २३
पत्याचैकेनकर्तव्यंसपिंडीकरणंस्त्रियः

क्षया के दिन १६

एकोद्दिष्ट को त्याग कर पार्वण श्राद्ध करता है उस श्रा को नही किया जाने और वह पुत्र माता पित का मारः वाला है २०

और जो मावस को अथवा कनागतों में मरे उसके निमि त्त सपिंडी किये पीछे क्षयो के दिन भी पार्वण ही करै २१

त्रिदंड (संन्यास) क लेनेसे ही प्रेत नही होता उसके मरने से भी ग्यारवे दिन पार्वण कहा है २२

एक वर्ष से पहिले ही जिसका सपिंडी करण कहा है उसके निमित्त भी प्रति दिन द्विज जल से भरा घट दान करै२३

पितामह्यापितत्तस्मिन्सत्येवन्तुक्षयेऽहनि २४
तस्यांसत्यंप्रकर्तव्यतस्याःश्वश्रेतिनिश्चितं
विवाहेचैवनिर्वृत्तेचतुर्थेऽहनिरात्रिषु २५
एकत्वंसागताभर्तुःपिंडेगोत्रेचसूतके
स्वगोत्राद्भृश्यतेनारीउद्वाहात्सप्तमेपदे २६
भर्तृगोत्रेणकर्तव्यंदानपिंडोदकक्रिया
द्विमातुःपिंडदानंतुपिंडेपिंडेद्विनामतः २७
षण्णांदेयास्त्रयःपिंडाएवदातानमुह्यति

स्त्री की सपिंडी एक पति के संग हो करै यदि पति जीता होय तो क्षयी पिता मही के संग करै २४

यदि पितामही (दादी) भी विद्यमान होय तो उसकी सासू के संग करै—विवाह होने पर चौथे दिनकी रात्रि में २५

वह पति के संग पिंड—गोत्र—सूतक—में एक होजाती है और विवाह के पीछे सप्त पदो में स्त्री अपने गोत्र से भ्रष्ट होजाती है २६

पति के गोत्रसे ही उसका पिंड और जल दान कर्म करना—माता को दो पिंड दे और पिंड में दो नाम का उच्चारण करै २७

छः को (पिता—बाबा—पड बाबा—और माता—दादी पड दादी) तीन पिंड देने ऐसे दाता मोह को प्राप्त नहीं होता यदि मंत्रों का ज्ञाता शरीर के पंक्ति को दूषित करने वालों (पाप) से युक्त हो २८

अथचेन्मंत्रविद्युक्तःशारीरैःपंक्तिदूषणैः २८
अदोषन्तंयमःप्राहपंक्तिपावनएवसः
अग्नौकरणशेषन्तुपितृपात्रेप्रदापयेत् २९
प्रतिपाद्य पितृणांत्तुनदद्याद्वैश्वदैविके
अनग्निकोयदाविप्रःश्राद्धंकरोतिपार्व्वणं ३
तत्रमातामहानांचकर्त्तव्यमभयंसदा
अपुत्राथेमृताःकेचित्पुरुषावास्त्रियोपिवा ३१
तेभ्यएवप्रदातव्यमेकोद्दिष्टंनपार्वणम्
यस्मिन्राशिगतेसूर्येविपत्तिःस्याद्‌द्विजन्मनः ३२
तस्मिन्नहनिकर्तव्यंदानंपिंडोदकक्रिया

तो भी इसे निर्दोष यमराज ने कहा है क्योंकि वह पंक्ति को पवित्र करने वाला है अग्नौ करण का शेष अन्न पिता के पात्र में दे २९

पितरों को जो देना हो वह विश्व देवाओं को न दे—और जो ब्राह्मण अग्नि होत्री न हो और पार्वण करे वह ३०

मातामहों (नाना आदि ३) का भी अभय करे अर्थात् इनको भी पिंड दे और जो पुरुष वा स्त्री अपुत्र मरे हों ३१

इनके निमित्त एकोद्दिष्ट करै पार्वण नहीं—जिस राशिके सूर्य में द्विजाति की मृत्यु हो ३२

इसी राशि के उस दिन में ही दान, पिंड, जल दान करै

वर्षवृद्ध्यभिषेकादिकर्तव्यमधिकेनतु ३३
अधिमासेतुपूर्वंस्याच्छ्राद्धं संवत्सरादपि
सएवहेयोदिष्टस्ययेनकेनतुकर्मणा ३४
अभिघातान्तराकार्यंतत्रैवाहःकृतंभवेत्
शालाग्नौपचतेअग्निंलौकिकेनापिनित्यशः ३५
यस्मिन्नग्नौ पचेदन्नं तस्मिन् होमोविधीयते
वैदिकेलौकिकेवापिनित्यं हुत्वाह्यतंद्रितः ३६
वैदिकेस्वर्गमाप्नोतिलौकिकेहंतिकिल्बिषं
अग्नौप्याहुतिभिःपूर्वंहुत्वामंत्रैस्तुशाकलैः ३७

और वर्ष की वृद्धि में अभिषक (स्नान) आदि अधिक न करे ३३

यदि अधिक मास आन पड़े तो बर्ष से पहिले भी श्राद्ध होता है और जिस किसी कर्म के कारण वही दिन (जो बर्ष से पहिले आया) प्रारब्ध में त्यागना इतर में नहीं ३४

मरने के पछे जो कर्तव्य है वह उसी दिन करना समझना शाला की अथवा लोक की अग्नि में प्रति दिन अन्न पकाना ३५

जिस अग्नि में अन्न पकावे उसी अग्नि में होम करना कहा है, वैदिक वा लौकिक अग्नि में आलस्य को छोड़ कर होम करके ३६

वैदिक अग्नि में होम करके स्वर्ग मिलता है और लौकिक अग्नि में होम कर करने से पाप नष्ट होता है प्रथम अग्नि में

सविभागंतुभूतेभ्यस्ततोऽश्नीयादनग्निमान्
उच्छेषणंतुनोत्तिष्ठेद्यावद्विप्रविसर्जनं ३८
ततोगृहवलिंकुर्यादितिधर्म्मोव्यवस्थितः
दर्भाःकृष्णाजिनंमंत्राब्राह्मणाश्चविशेषतः ३९
नैतेनिर्म्माल्यतांयान्तियोक्तव्यास्तेपुनःपुनः
पानमाचमनंकुर्यात्कुशपाणिस्सदाद्विजः ४०
भुक्त्वानोच्छिष्ठतांयातिएषएवविधिःसदा

सात व्याहृति और शाकल ऋषि के कहे हुये मंत्रों से होम करके ३७

भूतों को भाग देकर वह ब्राह्मण भोजन करै जो अग्नि होत्री न हो और इतने ब्राह्मणों का बिसर्जन न हो तब तक उच्छेषण न करै ३८

फिर गृह वलि (बलिवैश्व देव) करै यही धर्म शास्त्र में स्थित [टिका] है, दर्भ, काले मृग का चर्म, मंत्र और विशेष कर ब्राह्मण ३९

ये निर्माल्यता [अशुद्धि] को वारंवार ग्रहण करने से भी प्राप्त नही होते, द्विज सदैव कुशा को हाथ में लेकर जलपान और आचमन करै ४०

और इसी आचमन की सदैव बिधि से भोजन के अनंतर भी उच्छिष्ट नहीं होता, और पीना, आचमन, तर्पण, देव कर्म

पानआचमनेचैवतर्पणेदैविकेसदा ४१
कुशहस्तोनदुष्येतयथापाणिस्तथाकुशः
वामपाणौकुशान्कृत्वादक्षिणेनउपस्पृशेत् ४२
विनाचामन्तियेमूढारुधिरेणाचमंतिते
नीवीमध्येषुयेदर्भाब्रह्मसूत्रेषुयेकृताः ४३
पवित्रांस्तान्विजानीयाद्यथाकायस्तथाकुशाः
पिंडेकृतास्तुयेदर्भायैःकृतंपितृतर्पणं ४४
मूत्रोच्छिष्टंपुरीषंचतेषांत्यागोविधीयते
देवपूर्वंतुयच्छ्राद्धमदैवंचापियद्भवेत् ४५

में सदैव ४१

कुशा हाथ में लिये मनुष्य दूषित नहीं होता क्योंकि जैसा हाथ वैसी ही कुशा होती है बांये हाथ में कुशा लेकर दक्षिण हाथ से आचमन करे ४२

कुशा के विना जो आचमन करते हैं वे मानों रुधिर से आचमन करते हैं नीवी (कटिबंधन) में जनेऊ में जो कुशा रक्खी हैं ४३

वे कुशा पवित्र जाननी क्योंकि कुशा देह के समान हैं और जो कुशा पिंडों पर रक्खी हों वा जिनसे पितरों का तर्पण किया हो ४४

अथवा जिन को लेकर मल मूत्र किया हो उन कुशाओं का त्याग कहा है– जो श्राद्ध विश्वदेव पूर्वक हो वा विश्वेदेव पूर्वक न हो ४५

ब्रह्मचारीभवेत्तत्रकुर्य्याच्छ्राद्धन्तुपैतृकं
मातुःश्राद्धन्तुपूर्वंस्यात्पितृणांतदनंतरं ४६
ततोमातामहानांचवृद्धौश्राद्धत्रयंस्मृतं
क्रतुर्दक्षोवसुःसत्यःकालकामौधूरिलोचनौ ४७
पुरूरवार्द्रवाश्चैवविश्वेदेवाःप्रकीर्तिताः
आगच्छन्तुमहाभागाविश्वेदेवामहाबलाः ४८
येअत्रविहिताःश्राद्धेसावधानाभवंतुते
इष्टिश्राद्धेक्रतुर्दक्षोवसुःसत्यश्चदैविके ४९
कालःकामोऽग्निकार्य्येषुअधरेधूरिलोचनौ
पुरूरवार्द्रवाश्चैवपार्व्वणेषुनियोजयेत् ५०
यस्यास्तुनभवेद्भ्रातानविज्ञायेतवापिता

उसमें ब्रह्मचारी रहै और पितरों के निमित्त श्राद्ध करै और प्रथम माता का और पीछे पितरों का ४६

फिर माता महों (नाना आदि३) का श्राद्ध होता है इस प्रकार वृद्धि श्राद्ध (नांदीमुख) में तीन श्राद्ध होते हैं और क्रतु दक्ष—बसु—सत्य—काल—काम—धुरि—लोचन ४७

पुरुरवा—आर्द्रवा ये विश्वेदेवा कहे हैं वे महाबली और महा भागी विश्वेदेवा आवो ४८

जो इस श्राद्ध में कहे हैं वे सावधान हो—पूजन श्राद्ध में क्रतु और दक्ष—और देव श्राद्ध में वसु—सत्य ४९

अग्नि के कर्म में कालकाम—और यज्ञ में धुरि—लोचन

नोपयच्छेततांप्राज्ञःपुत्रिकाधर्म्मशंकया ५१
अभ्रातृकांप्रदास्य.मितुभ्यंकन्य मलंकृतां
अस्यांयोजायतेपुत्रःसमेपुत्रोभविष्यति ५२
स तुःप्रथमतःपिण्डंनिर्व्वपेत्पुत्रिकासुतः
द्वितीयंतुपितुस्तस्यास्तृतीयन्तत्पितुःपितुः ५३
मृन्मयेषुचपात्रेषुश्राद्धेयोभोजयेत्पितॄन्
अन्नदाताषुरोधाश्चभोक्त चनरकंव्रजेत् ५४

पार्वण में पुरुरवा और आर्द्रवा विश्वे देवा नियुक्त करने (बुला ने) ५०

जिस कन्या के भाई न हो और पिता भी न हो उस कन्या को बुद्धिमान् मनुष्य पुत्रि का धर्म की शका से न बिवाहे ५१

नही है भाई जिसके ऐसी इस अलंकृत (सजाई) कन्य- को तुझें देताहुं इसमें जो पुत्र हो वह मेरा पुत्र होगा इस प्रति ज्ञासे जो कन्या बिवाही जाय उसे पुत्रि का कहते हैं ५२

पुत्रि का पुत्र पहिला पिंड अपनी माता को दूसरा पिंड माता के पिता को तीसरा माता के बाबा को दे ५३

श्राद्ध के बिषे मट्टी के पात्रों में जो पितरों को जिमावे वह अन्नदाता और पुरोहित और भोजन करने वाला ये तीनो नरक में जाते हैं ५४

अलाभेमृन्मयंदद्यादनुज्ञातस्तुतैर्द्विजैः
घृतेनप्रोक्षणंकार्य्यंमृदःपात्रंपवित्रकं ५५
श्राद्धंकृत्वापरश्राद्धे यस्तुभुंजतिविह्वलः
पतन्तिपितरस्तस्यलुप्तपिंडोदकक्रियाः ५६
श्राद्धंदत्वाचभुक्त्वाचअध्वानंयोधिगच्छति
भवन्तिपितरस्तस्यतन्मासंपांसुभोजनाः ५७
पुनर्भोजनमध्वानंभाराध्ययनमैथुनं
दानंप्रतिग्रहोहोमंश्राद्धंकृत्वाष्टवर्जयेत् ५८
अध्वगामीभवेदश्वःपुनर्भोक्ताचवायसः

यदि पीतल आदि के पात्र न मिलें तो ब्राह्मणों की आज्ञा से मट्टी के पात्र भी दे दे और यदि मट्टी के पात्र को घी से छिड़क ले तो पवित्र है ५५

जो मनुष्य श्राद्ध करके दूसरे के यहां श्राद्ध में व्याकुल होकर जीमें, नष्ट हुआ है पिंड और जलदान जिनका ऐसे उस के पितर नरक में गिरते हैं ५६

श्राद्ध को करके और खाकर जो मार्ग में चलता है उसके पितर उस एक महीने में धूल खाते हैं ५७

श्राद्ध करके इन आठ वस्तुओं को त्याग दे दुबारा भोजन मार्ग—भार—(बोझ) पढ़ना—मैथुन—दान—प्रतिग्रह—और होम ५८

कर्म्मकृज्जायतेदासःस्त्रीगमनेचसूकरः ५९
दशकृत्वःपिबेदापःसावित्र्याचाभिमंत्रिताः
ततःसन्ध्यामुपासीतशुध्येततदनन्तरं ६०
आर्द्र वासास्तुयत्कुर्याद्बहिर्जानुचयत्कृतं
सर्वंतन्निष्फलंकुर्य्याज्जपंहोमंप्रतिग्रहम् ६१
चान्द्रायणंनवश्राद्धे पराकोमासिकेतथा
पक्षत्रयेतुकृच्छ्रंस्यात्षण्मासेकृच्छ्रमेवच ६२
ऊनाब्दिकेद्विरात्रंस्यादेकाहःपुनराब्दिके
शावेमासस्तुभुक्त्वावापादकृच्छ्रंविधीयते ६३

श्राद्ध में खाकर जो मार्ग चले वह घोड़ा—और जो पुनः भोजन करै वह काक और जो कर्म करै वह शूद्र—और स्त्री का संग करै वह सूकर होता है ५९

पर्वोक्तपुरुष गायत्री से दशवार पढ़े जल को पीवे और फिर संध्या करके शुद्ध होता है ६०

गीले वस्त्र पहन कर और गोडों से बाहर हाथ रख कर जो जप—होम प्रतिग्रह करै वहउसको निष्फल करता है ६१

नव श्राद्ध में जीम कर चांद्रायण—मासिक में जीम कर पराक—डेढ महीने के श्राद्ध में और छः महीने के श्राद्ध में जीम कर कृच्छ्र करै ६२

ऊनाब्दिक (११॥ महीने के) में त्रिरात्र और वर्षी में एक दिन व्रत—और शव के अशौच में खाकर एक मास व्रत अथवा कृच्छ्र करना कहा है ६३

सर्पविप्रहतानांचश्रृंगिदंष्ट्रिसरीसृपैः
आत्मनस्त्यागिनांचैवश्राद्धमेषांनकारयेत् ६४
गोभिर्हतंतथोद्बद्धं ब्राह्मणेनतुघातितं
तंसंस्पृशंतियेविप्रागोजाश्वाश्चभवंतिते ६५
अग्निदातातथ चान्येपाशच्छेदकराश्चये
तप्तकृच्छ्रेणशुद्ध्यंतिमनुराहप्रजापतिः ६६
त्र्यहमुष्णापिबेदापस्त्र्यहमुष्णंपयःपिबेत्
त्र्यहमुष्णंघृतंपीत्वावायुभक्षोदिनत्रयं ६७
गोभूहिरण्यहरणेस्त्रीणांक्षेत्रगृहस्यच
यमुद्दिश्यत्यजेत्प्राणांस्तमाहुर्ब्रह्मघातकं ६८

सर्प ब्राह्मण-सींगवाले—सरीसृप (सांपका भेद) इनसे मरे और अपने त्यागने वाले जो मनुष्यहैं इनका श्राद्धनकरै ६४

गौके मारे—बंधे (कैदी) ब्राह्मण के मारे—इनका जो ब्राह्मण स्पर्श करैं व गौ बकरी—घोड़ा—होते हैं ६५

दाह का कर्ता और अन्य जन जो फांसी के छेदने वाले वे तप्तकृच्छ्र से शुद्ध होते है यह प्रजा के पति मनुने कहा है ६६

तीन दिन उष्णजल—तीन दिन उष्ण दूध—तीनदिन उष्ण घी—पीवे और तीनदिन वायु को भक्षण करै ६७

गौ, पृथिवी, सोना, स्त्री, खेत, घर, यदि इन को हरले और जिसका दुखी किया मनुष्य प्राणों को त्याग दे उसको ही ब्रह्म हत्यारा कहते हैं ६८

उद्यताःसहधावन्तोयद्यकोधर्मघातकः
सर्व्वेतेशुद्धिमृच्छन्तिसएकोब्रह्मघातकः ६९
पतितान्नंयदाभुंक्तेभुंक्तेचांडालवेश्मनि
समासार्द्धंचरेद्वारिमासंकामकृतेनतु ७०
योयेनपतितेनैवस्पर्शेस्नानंविधीयते
तेनैवोच्छिष्टसंस्पृष्टःप्राजापत्यंसमाचरेत् ७१
ब्रह्महाचसुरापेयीस्तेयीचगुरुतल्पगः
महान्तिपातकान्याहुस्तत्संसर्गीचपंचमः ७२
स्नेहाद्वायदिवालोभाद्भयादज्ञानतोपिवा

जो अनेक मनुष्य शस्त्रउठाकर संग धावें और एक धर्म को नष्ट करै तो वह एकही ब्रह्म घातक है इतर सब शुद्ध हैं ६९

जो पतित का अन्न खावे वा चांडाल के घर में अज्ञान से खावे तो पंद्रह दिन और जान कर खावे तो एक मास जल ही पीवे ७०

जो मनुष्य पतित का स्पर्श करै तो स्नान और उच्छिष्ट पतित ने स्पर्श किया होय तो प्राजापत्य व्रत करै ७१

ब्रह्म हत्यारा, मदिरा पीने वाला, चोर, गुरु की शय्या पर गमन का कर्ता—और पांचवां इनका संसर्गी ये पांच महापात की कहे हैं ७२

स्नेह से—वा लोभ से—वा भय से, वा दया से, जो

कुर्वन्त्यनुग्रहंयेचतत्पापंतेषुगच्छति ७३
उच्छिष्टोच्छिष्टसंस्पृष्टोब्राह्मणस्तुकदाचन
तत्क्षणात्कुरुतेस्नानमाचामेनशुचिर्भवेत् ७४
कुब्जवामनषंढेषुगद्गदेषुजडेषुच ७५
जात्यन्धेबधिरेमूकेनदोषःपरिवेदने ७५
क्लीबेदेशान्तरस्थेचपतितेब्रजितेपिवा
योगशास्त्राभियुक्तेचनदोषःपरिवेदने ७६
परणेकूपवापीनांवृक्षच्छेदनपातने
विक्रीणीतगजंचाश्वंगोवधंतस्यनिर्दिशेत् ७७

अनुग्रह करते हैं अर्थात् पाप का प्रायश्चित्त नहीं कराते वह पाप उनको ही लगता है ७३

यदि कभी उच्छिष्ट ब्राह्मण को उच्छिष्ट छूले तो उसीक्षण में स्नान और आचमन से शुद्ध होता है ७४

कुवड़ा, विलंदिया, नपुंसक, तोतला, महामूर्ख, जन्मांध बहरा, गूंगा, इनके परिवेदन में अर्थात् पूर्वोक्त जेठे भाई होंय तो छोटे भाई के पहिले विवाह करने में दोष नहीं हैं ७५

क्लीव (हीजड़ा) देशांतर में रहता हो पतित संन्यासी और योगी हो तो भी परिवेदन में दोष नहीं हैं ७६

बावड़ी और कूपों को पाटना काटकर वृक्ष को गिराना हाथी और घोड़े को वेचना इनको जो करै वह गो हत्या का प्रायश्चित्त करै ७७

पादेङ्गरोमवपनंद्विपादेश्मश्रुकेवलम्
तृतीयेतुशिखावर्जंचतुर्थेतुशिखावपः ७८
चाण्डालोदकसंस्पर्शेस्नानंयेनविधीयते
तेनैवोच्छिष्टसंस्पृष्टःप्राजापत्यं समाचरेत् ७९
चांडालस्पृष्टभांडस्थंयत्तोयंपिबतिद्विजः
तत्क्षणात्क्षिपतेयस्तुप्राजापत्यंसमाचरेत् ८०
यदिनोत्क्षिप्यतेतोयंशरीरेतस्यजीर्य्यति
प्राजापत्यंनदातव्यंकृच्छ्रंसांतपनंचरेत् ८१
चरेत्सान्तपनंविप्रःप्राजापत्यंतुक्षत्रियः

पाद (चौथाई) कृच्छ्र में सब अंग को रोमों का मुंडन और द्विपाद में डाढी मूछों का और त्रिपाद में शिखा को छोड कर सब केशों का और चौथे (संपूर्ण कृच्छ्र) में शिखा समेत मुंडन कराना ७८

चांडाल के जल छूने से स्नान करै और उच्छिष्ट ब्राह्मण यदि चांडाल के जल को छूलें तो प्राजापत्य व्रत करै ७९

चांडाल के घडे वा पात्र का जल जो द्विज पीलें यदि उस को उसी क्षण में वमन करदे तो प्राजापत्य करै ८०

और यदि वमन न करै और उसके शरीर मेंही पचजाय तो सांतपन कृच्छ्र करै प्राजापत्य नही ८१

ब्राह्मण सांतपन क्षत्रिय प्राजापत्य वैश्य आधा प्राजापत्य

तदर्धंतुचरेद्वैश्यःपादंशूद्रेतुदापयेत् ८२
रजस्वलायदास्पृष्टाशुनासूकरवायसैः
उपोष्यरजनीमेकांपंचगव्येनशुद्ध्यति ८३
अज्ञानतःस्नानमात्रमानाभेस्तुविशेषतः
अतऊर्ध्वंत्रिरात्रंस्यात्तदोयस्पर्शनेमतम् ८४
बालश्चैवदशाहेतुपंचत्वंयदिगच्छति
सद्यएवविशुद्ध्येतनाशौचंनोदकक्रिया ८५
शावसूतकउत्पन्ने सूतकंतुयदाभवेत्
शावेनशुध्यतेसूतिर्नसूतिःशावशोधिनी ८६

और शूद्र चौथाई प्राजापत्य करे ८२

जिस समय रजस्वला स्त्री कुत्ता—सूकर—काक—इनको छूले तो एक रात्र उपवास करके पंचगव्य पीने से शुद्ध होती है ८३

अज्ञान से नाभि तक छूले तो विशेष कर स्नान से ही शुद्धि है और नाभि से ऊपर के अंग से छूले तो तीनरात उपवास उनके स्पर्श में माना (कहा) है ८४

यदि दश दिन के भीतर बालक मरजाय तो उसी समय शुद्धि होती है न अशौच होता है न जलदान ८५

यदि मरण सूतक में जन्म सूतक होजाय तो मरण सूतक के शेष दिनों से ही जन्म सूतक की शुद्धि होती है और जन्म सूतक के दिनों से मरण सूतक निवृत्त नही होता ८६

षष्ठेनशुद्ध्येतैकाहंपंचमेद्व्यहमेवतु
चतुर्थेसप्तरात्रंस्यात्त्रिपुरुषेदशमेऽहनि ८७
मरणारब्धमाशौचंसंयोगोयस्यनाग्निभिः
आदाहात्तस्यविज्ञेयंयस्यवैतानिकोविधिः ८८
आमंमांसंघृतक्षौद्रंस्नेहाश्चफलसंभवाः
अन्यभांडस्थिताह्येतेनिष्क्रांताःशुचयःस्मृताः ८९
मार्जनीरजसासक्तेस्नानवस्त्रघटोदके
नवांभसितथाचैवहंतिपुण्यंदिवाकृतम् ९०
दिवाकपित्थच्छायायांरात्रौदधिचसक्तुषु
धात्रीफलेषुसर्व्वत्रअलक्ष्मीर्वसतेसदा ९१

छटो पीटो में एक दिनका—पांच वी में दो दिनका चौथी में सात दिन का और तीसरी में दश दिनका सूतक होताहै ८७

जो अग्नि होत्री नहो उसे अशौच मरण के दिन से और जो वेदोक्त अग्निहोत्र करता है उसको दाह के दिन से ८८

कच्चा मांस- घृत—सहत—ऐसे स्नेह ले जो फल से पैदा हों—अन्य के पात्र में टिके ये सब निकासने से शुद्ध हैं ८९

स्नान का वस्त्र—घट का जल —और नया जल— इन में यदि मार्जनी (बुहारी) की धूल लगजाय तो पहिले किया पुण्य नष्ट होजाय ९०

दिन में कैंथ की छाया—रात्रि में दही और सत्—और सदैव आमले का फल—इन में सदा अलक्ष्मी वसे है ९१

यत्रयत्रचसंकीर्णमात्मानंमन्यतेद्विजः
तत्रतत्रतिलैर्होमंगायत्र्यष्टशतंजपेत् ६२
इतिश्रीमहर्षिलिखितप्रोक्तंधर्मशास्त्रंसमाप्तं

अथदक्षस्मृतिप्रारंभः

सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञःसर्ववेदविदांवरः
पारगःसर्वविद्यानांदक्षोनामप्रजापतिः १
उत्पत्तिःप्रलयश्चैवस्थितिःसंहारएवच
आत्माचात्मनितिष्ठेतआत्माब्रह्मण्यवस्थितः २
ब्रह्मचारीगृहस्थश्चवानप्रस्थोयतिस्तथा
एतेषांतुहितार्थायदक्षःशास्त्रमकल्पयत् ३

जिस२ कर्म में द्विज अपने को संकीर्ण (पतित) माने वहां२ तिलों से होम और आठ सौ गायत्री जपै ६२

इति लिखितस्मृतिः समाप्ता

श्री—संपूर्ण शास्त्रों का यथार्थ ज्ञाता—और वेद और वेदों के अंग के ज्ञाताओं में श्रेष्ठ—और सब विद्याओं के पार जानने वाला जो दक्ष नामक प्रजाओं का पति हुआ १

उत्पत्ति—प्रलय—पालना—संहार—इनके करने में समर्थ जो आत्मा जिस दक्ष के आत्मा (देह) में टिका था और जिस का मन ब्रह्म में स्थित था २

उस दक्ष ने—ब्रह्मचारी—गृहस्थी—वानप्रस्थ—संन्यासी इन चारों वर्णों के हितके अर्थ धर्मशास्त्र को रचा ३

जातमात्रःशिशुस्तावद्यावदष्टौसमावयः
सहिगर्भसमोज्ञेयोव्यक्तिमात्रप्रदर्शितः ४
भक्ष्याभक्ष्येतथापेयेवाच्यावाच्येऋतानृते
अस्मिन्बालेनदोषःस्यात्सयावान्नोपनीयते ५
उपनीतेतुदोषोस्तिक्रियमाणौर्विगर्हितैः
अप्राप्तव्यवहारोसौबालःषोडशवार्षिकः ६
स्वीकरोतियदावेदंचरेद्वेदव्रतानिच
ब्रह्मचारीभवेत्तावदूर्ध्वंस्नातोभवेद्गृही ७
द्विविधोब्रह्मचारीस्यादुपकुर्वाणकोह्यथ
द्वितीयोनैष्ठिकश्चैवतस्मिन्नेवव्रतेस्थितः ८

इतने आठ वर्ष की अवस्था हो तब तक पैदा हुये के समान है क्योंकि उसे गर्भ तुल्य जाने इसका एक आकार मात्र ही दीखे है ४

भक्ष्य अभक्ष्य—कहने योग्य और न कहने योग्य झूठ सत्य और झूट में—इस बालक को जनेउ होने तक दोष नही ५

जनेउ हुये पीछे किये जो निन्दित कर्म उनका दोष है और सोलह बर्ष तक व्यवहार को यह बालक प्राप्त नही होता ६

जब यह वेद का प्रारंभ करै तब वेदोक्त व्रतों को करै और ब्रह्मचारी रहे फिर स्नातक होकर गृहस्थी होता है ७

दो प्रकार का ब्रह्मचारी होता है एक उपकुर्वाणक—दूसरा नैष्टिक जो जन्म भर ब्रह्मचारी के व्रत में ही टिकै ८

योगृहाश्रममास्थायब्रह्मचारीभवेत्पुनः
नयतिर्नवनस्थश्चससर्वाश्रमवर्जितः ६
अनाश्रमीनतिष्ठेत्दिनमेकमपिद्विजः
आश्रमेनविनातिष्ठन्प्रायश्चित्तीयतेहिसः १०
जपेहोमेतथादानेस्वाध्यायेचरतःसदा
नासौफलमवाप्नोतिकुर्वाणोप्याश्रमादृते ११
त्रयाणामानुलोम्यंहिप्रातिलोम्यंनविद्यते
प्रातिलोम्यनयोयातिनतस्मात्पापकृत्तमः १२
मेखलाजिनदंडैश्चब्रह्मचारीतिलक्ष्यते

जो गृहस्थी होकर फिर ब्रह्मचारी हो और संन्यासी वा वानप्रस्थ न हो वह सब आश्रमों से रहित है ६

द्विज एक दिन भी आश्रम से हीन न टिके क्योंकि आश्रम के विना टिकता हुआ द्विज प्रायश्चित के योग्य होता है १०

आश्रम के विना जप—होम दान और वेद पाठ में तत्पर द्विज कर्म को करता हुआ भी फल को प्राप्त नही होता ११

ब्रह्मचर्य, गृहस्थ वानप्रस्थ इन तीनों आश्रमों का आनुलोम्य (क्रम) है और प्राति लोम्य(उलटा पलटा) नही है इससे जो प्राति लोम्य से वर्तता है उससे पर अत्यन्त पाप का कर्त्ता कोई नही है १२

मेखला (कौंदनी) मृगचर्म दंड इनसे ब्रह्मचारी और

गृहस्थोदानवेदाद्यैर्नविलोमैर्वनाश्रमी १३
त्रिदंडेनयतिश्चैवलक्षणानिपृथक्पृथक्
यस्यैतल्लक्षणंनास्तिप्रायश्चित्तीवनाश्रमी १४
उक्तं कर्मक्रमोनोक्तोनकालोऋषिभिःस्मृतः
द्विजानांचहितार्थायदक्षस्तुस्वयमब्रवीत् १५
इतिदाक्षेधर्म्मशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः
प्रातरुत्थायकर्तव्यंयद्द्विजेनदिनेदिने
तत्सर्वंसंप्रवक्ष्यामिद्विजानामुपकारकम् १
उदयास्तमितंयावन्नविप्रःक्षणिकोभवेत्

गृहस्थी दान और वेद आदि से अनुलोम कर्मों से वानप्रस्थ जान पड़ता है १३

और संन्यासी तीन दंडों से ये चारों आश्रमों के पृथक् २ लक्षण हैं जिस वानप्रस्थ के ये लक्षण नहीं वह प्रायश्चित्त के योग्य है १४

ऋषियों ने कर्म कहा है और क्रम और काल नहीं कहा द्विजों के हित के लिये दक्ष ने स्वयं कहे हैं १५

इति दक्ष स्मृतौ १ अध्यायः

प्रातःकाल उठकर जो द्विज को प्रति दिन करना द्विजों को उपकारी वह सब मैं कहता हूं १

सूर्य के उदय और अस्त पर्यंत ब्राह्मण क्षणिक बुद्धि नहो

नित्यनैमित्तिकैर्युक्तःकाम्यैश्चान्यैरगर्हितैः २
संध्याद्यं वैश्वदेवांतंस्वकंकर्मसमाचरेत्
स्वकंकर्मपरित्यज्ययदन्यत्कुरुतेद्विजः ३
अज्ञानादथवालोभात्सतेनपतितोभवेत्
दिवस्याद्यभागेतुकर्मतस्योपदिश्यते ४
द्वितीयेचतृतीयेचचतुर्थेपंचमेतथा
षष्ठेचसप्तमेचैवअष्टमेचपृथक्पृथक् ५
विभागेष्वेषुयत्कर्मतत्प्रवक्ष्याम्यशेषतः
उषःकालेचसम्प्राप्तेशौचंकृत्वायथार्थवत् ६

किंतु नित्य (संध्या आदि) नैमित्तिक (जात कर्मादि) और अनिंदित काम्य कर्म (यज्ञादि) इनमें युक्त (लगा) रहै २

संध्या आदि बलिवैश्व देव तक जो अपना कर्म है उसे करै और अपने कर्म को छोड़ कर जो द्विज अन्य वर्ण का कर्म करता है ३

अज्ञान से अथवा लोभ से वह द्विज उस अन्य के कर्म करने से पतित होजाता है और उस द्विज को दिन के प्रथम भागमें जो कर्म करना कहा है ४

और दूसरे, तीसरे, चौथे पांचवें छटे सातवे और आठवे भाग में पृथक्२ ५

इन भागों में जो कर्म कहा है उस सब को कहूंहु प्रातः काल जिस समय हो उस समय यथार्थ शौच करके ६

ततःस्नानंप्रकुर्वीतदन्तधावनपूर्वकम्
अत्यन्तमलिनःकायोनवछिद्रसमन्वितः ७
स्रवत्येवदिवारात्रौप्रातःस्नानंविशोधनम्
क्लिद्यन्तीहिप्रसुप्तस्यइन्द्रियाणिस्रवन्तिच ८
अंगानिसमतांयांतिउत्तमान्यधमानिच
नानास्वेदसमाकीर्णःशयनादुत्थितःपुमान् ९
अस्नात्वानाचरेत्किंचिज्जपहोमादिकंद्विजः
प्रातरुत्थाययोविप्रःप्रातःस्नायीभवेत्सदा १०
सप्तजन्मकृतंपापंत्रिभिर्वर्षैर्व्यपोहति

दंत धावन के पीछे स्नान करै यह देह अत्यन्त मलीन है और नो ९ छिद्रों से संयुक्त है ७

रात दिन झरता है प्रातःकाल का स्नान इसका शोधन है सोते हुये मनुष्य की इन्द्रिय ग्लानि को प्राप्त होती है और झरती है ८

और उत्तम और अधम सब अंग एकसे ही होजाते हैं और सोकर उठा मनुष्य नाना प्रकार के पसीनों से पूर्ण होजाता है ९

विना स्नान किये द्विज किंचित् भी जप होमादि न करै जो द्विज प्रातःकाल में ही उठकर स्नान करता है १०

वह सात जन्म में किये पाप को तीन दिन में नष्ट कर दे

उषस्युषसियत्स्नानंसंध्यायामुदितेरवौ ११
प्राजापत्येनतत्तुल्यंमहापातकनाशनम्
प्रातःस्नानंप्रशंसंतिदृष्टादृष्टकरंहितत् १२
सर्वमर्हतिपूतात्माप्रातःस्नायीजपादिकं
गुणादशस्नानपरस्यसाधोरूपंचपुष्टिश्चबलंचतेजः १३
आरोग्यमायुश्चमनोनुरुद्धुःस्वप्नघातुश्चतपश्चमेधा
स्नानादनंतरंतावदुपस्पर्शनमुच्यते १४
अनेनतुविधानेनस्वाचांतःशुचितामियात्

ता है प्रति दिन प्रातःकाल सूर्योदय हुये पर संध्या के समय जो स्नान है ११

वह प्रजापत्य व्रत के तुल्य महा पातकों का नाशक है—इस लोक और लोक के फल का दाता जो प्रातःकाल का स्नान उस की सब प्रशंसा करते हैं १२

प्रातःकाल का स्नान करने वाला मनुष्य देह की पवित्रता से संपूर्ण जप आदि के करने योग्य है—स्नान में तत्पर सज्जन मनुष्य को ये दश गुण होते हैं कि रूप—पुष्टता—बल तेज १३

आरोग्य—अवस्था—मन की प्रसन्नता से बुरे स्वप्नों का न होना—धातु की वृद्धि, तप, और बुद्धि, और स्नान के अनंतर आचमन करना कहा है १४

और इस विधि से किया है आचमन जिसने ऐसा मनुष्य

प्रक्षाल्यहस्तौपादौचत्रिःपिबेदंबुवीक्षितं १५
अंगुष्ठस्यचमूलेनद्विःप्रमृज्यात्ततोमुखम्
संहत्यतिसृभिःपूर्वमास्यमेवमुपस्पृशेत् १६
ततःपादौसमाभ्युक्ष्यअंगानिसमुपस्पृशेत्
अंगुष्ठेनप्रदेशिन्याघ्राणंपश्चादुपस्पृशेत् १७
अंगुष्ठानामिकाभ्यांचचक्षुःश्रोत्रेपुनःपुनः
कनिष्ठांगुष्ठयोर्नाभिंहृदयंतुतलेनवै १८
सर्वाभिश्चशिरःपश्चाद्बाहूचाग्रेणसंस्पृशेत्
संध्यायांचप्रभातेचमध्यान्हेचततःपुनः १६

शुद्ध होता है कि हाथ और पैरों को धोकर तीन बार जल को देख कर पीवे १५

फिर अंगूठे की जड़ से तीनबार मुख को पूछे—और तीन अंगुली मिलाकर पहिले मुखका स्पर्श करै १६

फिर पैरों को छिड़क कर अंगों का स्पर्श करै अंगूठा और प्रदेशिनी (कन्नो) सेनासिका का स्पर्श करै १७

अंगूठा और अनामिका से बारंबार नेत्र और कानों का और अंगूठा और कनिष्ठका से नाभि का और हाथ के तल से हृदय का स्पर्श करै १८

सब अंगुलियों से शिरका—हाथ के अग्रभाग से भुजाओं का स्पर्श करै—संध्या के समय—प्रातःकाल और मध्यान्हमें पूर्वोक्त आचमन करै १६

हृद्गाभिःपूयतेविप्रःकंठगाभिश्चभूमिपः
वैश्यःप्राशितमात्राभिर्जिह्वागाभिःस्त्रियोंघ्रिजाः२०
संध्यानोपासतेयस्तुब्राह्मणोहिविशेषतः
सजीवन्नेवशूद्रःस्यान्मृतःश्वाचैवजायते २१
संध्याहीनोशुचिर्नित्यमनर्हःसर्वकर्मसु
यदन्यःकुरुतेकर्मनतस्यफलभाग्भवेत् २२
संध्याकर्मावसानेतुस्वयंहोमोविधीयते
स्वयंहोमेफलंयत्तुतदन्येननजायते २३
ऋत्विक्पुत्रोगुरुर्भ्राताभागिनेयोर्थविट्पतिः

जोजल हृदय तक पहुंचे उनसे ब्राह्मण—और जो कंठ तक पहुंचें उनसे क्षत्रिय—प्राशित (जो मुख में ही रहैं) मात्र जल से वैश्य—और जिह्वा का स्पर्श जिनसे हो उन जलों से स्त्री और शूद्र—पवित्र होते हैं २०

जो ब्राह्मण विशेष कर संध्योपासन नहीं करता वह जीताही शूद्र है और मरकर कुत्ता होता है २१

संध्याहीन मनुष्य नित्य अशुद्ध है और सब कर्मों के अयोग्य है और वह जो कुछ अन्य कर्म करता है उसके फल का भी भागी नहीं होता है २२

संध्या के पीछे स्वयं होम करना कहा है क्योंकि जो फल स्वयं होम करने का है वह अन्य से कराने पर नहीं होता २३

एभिरेवहुतंयत्तुतद्धुतंस्वयमंवतु २४
देवकार्यंततःकृत्वागुरुमंगलमीक्षणम्
देवकार्यस्यसर्वस्यपूर्वाण्हस्तविधीयते २५
देवकार्याणिपूर्वेण्हमनुष्याणांतुमध्यमे
पितॄणामपराण्हेतुकार्याण्येतानियत्नतः
पौर्वाण्हकंतुयत्कर्मतद्यदासायमाचरेत्
नतस्यफलमाप्नोतिवंध्यास्त्रीमैथुनंयथा २६
दिवसस्याद्यभागेतुसर्वमेतद्विधीयते
द्वितीयेचैवभागेतुवेदाभ्यासोविधीयते २७
वेदाभ्यासोहिविप्राणांपरमंतपउच्यते

ऋत्विज का पुत्र—गुरु—भाई—भानजा—और राजा—इन्होंने जो होम किया है वह स्वयं कियाही है २४

फिर देव कार्य करके गुरु और मंगल (गौआदि) का दर्शन कहा है और देव कार्य मध्यान्ह से पूर्वही करना कहा है २५

देव कार्य पूर्वान्ह में—मनुष्यों के कार्य मध्यदिन में पितरों के कार्य मध्यान्ह के पीछे यत्न से करने २६

पूर्वान्ह में कर्तव्य कर्म को सायंकाल में जो मनुष्य करे वह उसके फल को इस प्रकार प्राप्त नहीं होता जैसे वंध्या स्त्री मैथुन के फल को २७

ब्रह्मयज्ञःसविज्ञेयःषडंगसहितस्तुयः २८
वेदस्वीकरणंपूर्वंविचारोभ्यसनंजपः
प्रदानं चैवशिष्येभ्योवेदाभ्यासोहिपंचधा २६
समित्पुष्पकुशादीनांद्वितीयेसमुदाहृतः
तृतीयेचैवभागेतुपोष्यवर्गार्थसाधनं ३०
मातापितागुरुर्भार्याप्रजादीनःसमाश्रितः
अभ्यागतोतिथिश्चाग्निःपोष्यवर्गउदाहृतः ३१
ज्ञातिबंधुजनःक्षीणस्तथानाथःसमाश्रितः
अन्योपिधनयुक्तस्यपोष्यवर्गउदाहृतः३२
सार्वभौतिकमन्नाद्यं कर्तव्यंतुविशेषतः

दिन के प्रथम भाग में यह सब करना कहा है और दूसरे भाग में वेदका अभ्यास २८

वेदका अभ्यास ब्राह्मणों का परम तप कहा है यदि छः अंगों (व्याकरण आदि)सहित होय तो वही ब्रह्मयज्ञ जानना२६

वेद का अभ्यास पांच प्रकार का है १वेद का स्वीकार—विचार अभ्यास—जप और—शिष्यों को पढ़ाना ३०

पलाशी—फूल—कुशा इनका संग्रह द्वितीय भाग में और पोष्यवर्ग (पालना के योग्य माता आदि) के लिये जीविका तीसरे भाग में करै ३१

माता—पिता—गुरु—स्त्री—संतान—दीन—समाश्रित

ज्ञानविद्भ्यः प्रदातव्यमन्यथा नरकं व्रजेत् ३३
भरणं पोष्यवर्गस्य प्रशस्तं स्वर्गसाधनं
नरकः पीडने तस्य तस्माद्यत्नेन तं भरेत् ३४
स जीवति य एवैको बहुभिश्चोपजीव्यते
जीवंतो मृतकास्त्वन्ये पुरुषाः स्वोदरंभराः ३५
बह्वर्थे जीव्यते कैश्चत्कुटुंबार्थे तथापरैः
आत्मार्थेन्यो न शक्नोति स्वोदरेणापि दुःखितः ३६
दीनानाथविशिष्टेभ्यो दातव्यं भूतिमिच्छता

दास) अभ्यागत-- अतिथि और अग्नि यह पोष्य वर्ग कहा है ३२

और जाति बंधु -- क्षीण (असमर्थ) अनाथ समाश्रित और धनी के इनसे अन्य भी पोष्य वर्ग कहा है ३३

संपूर्ण भूतों के लिये अन्न आदि विशेष कर बनाने और ज्ञानियों को देने अन्यथा जो करै वह नरक में जाता है ३४

पोष्य वर्ग की पालना स्वर्ग का उत्तम साधन है और पोष्य वर्ग की पीड़ा से नरक होता है इससे पोष्य वर्ग को यत्न से पालना करै ३५

कोई बहुतों के लिये जीवते हैं कोई कुटुंब के लिये और कोई अपने उदर के भरण में दुःखी मनुष्य अपने लिये भी समर्थ नहीं होता ३६

यदि अपनी वृद्धि चाहै तो दीन--अनाथ और सज्जन |

अदत्तदानाजायंतेपरभाग्योपजीविनः ३७
यद्ददासिविशिष्टेभ्योयज्जुहोसिदिनेदिने
तत्तु वित्तमहमन्येशेषंकस्यापिरक्षसि ३८
चतुर्थेतुतथाकालेस्नानार्थंमृदमाहरेत्
तिलपुष्पकुशादीनिस्नानंचाकृत्रिमेजले ३९
नित्यंनैमित्तिकंकाम्यंत्रिविधंस्नानमुच्यते
तेषांमध्येतुयन्नित्यंतत्पुनर्भिद्यतेत्रिधा ४०
मलापकर्षणंपश्चान्मंत्रवत्तु जलेस्मृतं
संध्यास्नानमुभाभ्यांतुस्नानभेदाःप्रकीर्तिताः ४१

इनको दे क्योंकि जिन्हों ने दान नहीं दिया वे पराये भाग्य से जीने वाले ही पैदा होते हैं ३७

जो सज्जनों को देता है और जो प्रति दिन होम करता है उसी को मैं धन मानता हूं शेष धन को तो किसी अन्य के को रक्षा करता है ३८

दिन के चौथे भाग में स्नान के लिये जल—तिल—फूल कुशा आदि ल्यावे और ऐसे जल में स्नान करे जो कृत्रिम (बनाये कूप आदि का) न हो ३९

नित्य—नैमित्तिक—काम्य—तीन प्रकार का स्नान कहा है इन तीनों में नित्य स्नान भी तीन प्रकार का होता है ४०

मलाप कर्षण—मंत्रों सहित जल में स्नान—और इन दोनों रीति से संध्या का स्नान ये तीन भेद स्नान के कहे हैं ४१

मार्जनंजलमध्येतुप्राणायामोयतस्ततः
उपस्थानंततःपश्चाद्गायत्रीजपउच्यते ४२
सविताद्देवतायस्यामुखमग्निस्त्रिपात्स्थिता
विश्वामित्रऋषिश्छंदोगायत्रीसाविशिष्यते ४३
पंचमेतुतथाभागेसंविभागोयथार्थतः
पितृदेवमनुष्याणांकीटानांचोपदिश्यते ४४
देवैश्चैवमनुष्यैश्चतिर्यग्भिश्चोपजीव्यते
गृहस्थःप्रत्यहंयस्मात्तस्माच्छ्रेष्ठाश्रमोगृही ४५
त्रयाणामाश्रमाणांतुगृहस्थोयोनिरुच्यते

जल के बीच मार्जन और फिर जल में प्राणायाम—और फिर स्तुति और फिर गायत्री का जप करना कहा है ४२

जिसका सूर्य देवता—अग्नि मुख और विश्वामित्र ऋषि है—और जो त्रिपात्—और गायत्री छंद है वह गायत्री सर्वोत्तम है—४३

दिन के पांचवे भाग में यथा योग्य पितर—देव मनुष्य और कीड़े इनको संविभाग (देना) कहा है ४४

देवता—मनुष्य—तिर्यक्योनि—ये सब जिस कारण गृहस्थ से ही जीते हैं तिससे गृहस्थी श्रेष्ठ है ४५

तीनों आश्रमों की योनि (कारण वा सहायक) गृहस्थी

सीदमानेनतेनेवसीदंतीहीतरेत्रयः ४६
मूलत्राणेभवेत्स्कंधःस्कन्धाच्छाखेतिपल्लवाः
मूलेनैवविनष्टेनसर्वमेतद्विनश्यति ४७
तस्मात्सर्वप्रयत्नेनरक्षणीयोगृहाश्रमी
राज्ञाचान्यैस्त्रिभिःपूज्योमाननीयश्चसर्वदा ४८
गृहस्थोपिक्रियायुक्तोगृहेणनगृहीभवेत्
नचैवपुत्रदारेणस्वकर्मपरिवर्जितः ४९
अहुत्वाचतथाजप्त्वाअदत्वायश्चभुंजते

कहाहै-उसके जगत् में दुखी रहने से इतर तीनों आश्रमदुःखी होजाते हैं ४६

जड़ की रक्षा से स्कंध (डाले) और डालों से डाली और डालियों से पत्ते होजाते हैं और मूल (जड़) के नाश से ये सब नष्ट होजाते हैं ४७

तिससे संपूर्ण यत्न से गृहस्थी की रक्षा और पूजा (सत्कार) और सदैव मान—राजा और तीनों आश्रम करें ४८

क्रिया (कर्म)में परायण गृहस्थी घरमें रहने से गृहस्थी नही होता अर्थात् घर उसका बंधन नही है—और अपने कर्म से हीन गृहस्थी पुत्र और स्त्री से गृहस्थी नहीं होता अर्थात् पुत्र आदि उसके नरक आदि के सहायक नहीं होते ४९

होम और जप के किये विना जो भोजन करते हैं वे

देवादीनामृणीभूत्वादरिद्रश्चभवेन्नरः ५०
एकोहिभुंजतेह्यन्नमपरोन्नं नभुज्यते
नभुज्यतेसएवैकोयोभुंक्तेतुसमांशकं ५१
विभागशीलतायस्यक्षमायुक्तोदयालुकः
देवतातिथिभक्तश्चगृहस्थःसतुधार्मिकः ५२
दयालज्जाक्षमाश्रद्धाप्रज्ञात्यागःकृतज्ञता
गुणायस्यभवंत्येतेगृहस्थोमुख्यएवच ५३
संविभागंततःकृत्वागृहस्थःशेषभुग्भवेत्
भुक्त्वातुसुखमास्थायतदन्नं परिणामयेत् ५४

मनुष्य देवता आदि के ऋणी होकर दरिद्री होते हैं ५०

कोई मनुष्य तो अन्न को खाते हैं और किसी मनुष्य को अन्न ही खाता है और अन्न खाता नही है तो उसको हो नही खाता जो सम भाग खाता है अर्थात देव आदि को देकर खाता है ५१

जिस का बिभाग में स्वभाव है—जो क्षमायुक्त है दयालु और देवता अतिथियों का भक्त है वही गृहस्थी धार्मिक है ५२

दया –लज्जा—क्षमा—श्रद्धा—बुद्धि—त्याग—कृतज्ञता(किये को जानना) ये गुण जिसमें हैं वही गृहस्थी मुख्य है ५३

फिर सब के लिये विभाग करके गृहस्थी शेष अन्न को खाय—और सुख पूर्वक बैठ कर उस अन्न को पचावे ५४

इतिहासपुराणाद्यैः षष्ठं वा सप्तमं नयेत्
अष्टमे लोकयात्रा तु बहिः संध्या ततः पुनः ५५
होमं भोजनकृत्यं च यच्चान्यद् गृहकृत्यकं
कृत्वा चैवं ततः पश्चात्स्वाध्यायं किंचिद् आचरेत् ५६
प्रदोषपश्चिमौ यामौ वेदाभ्यासेन तौ नयेत्
यामद्वयं शयानस्तु ब्रह्मभूयाय कल्पते ५७
नैमित्तिकानि कर्माणि निपतंति यथा यथा
तथा तथा तु कार्याणि न कालस्तु विधीयते ५८
अस्मिन्नेव प्रयुंजानो ह्यस्मिन्नेव प्रलीयते

दिन के छटे वा सातवे भाग को इतिहास और पुराणआदि से बितावे और आठवें भाग में लोक की यात्रा (व्यापार) करै फिर बाहर जाकर संध्या करै ५५

फिर होम—भोजन का कार्य और जो कुछ अन्य घरका कार्य हो उसे करके इस प्रकार कुछ स्वाध्याय (पठना) करै ५६

प्रदोष से पिछले दो प्रहर वेदाभ्यास से बितावे और दो प्रहर सोकर बितावे ऐसा करता हुआ द्विज ब्रह्म को प्राप्त होता है ५७

और नैमित्तिक कर्म जिस२ समय में आन पडें उसी२ समय करने क्योंकि उन के करने का कोई समय नहीं कहा है ५८

और वेदाभ्यास में लगा हुआ वेद में ही लीन होता है

तस्मात्सर्वप्रयत्नेनस्वाध्यायंचसमभ्यसेत् ५६
सर्वत्रमध्यमौयामौहुतशेषहविश्चयत्
भुंजानश्चशयानश्चब्राह्मणोनावसीदति ६०
इतिदाक्षेधर्मशास्त्रेद्वितीयोध्यायः २
सुधानवगृहस्थस्यईषद्दानानिवैनव
नवकर्माणिचतथाविकर्माणिनवैवतु १
प्रछन्नानिनवान्यानिप्रकाश्यानिपुनर्नव २
अदेयानिनवान्यानिवस्तुजातंनिःवंश
नवकानवनिर्दिष्टागृहस्थोन्नतिकारकाः ३

तिससे संपूर्ण यत्नों से वेद का अभ्यास करै ५६

सदैव मध्य के दोनों प्रहरों में (अर्थात दिन रात के) होम से बचे अन्न को खाकर और सोकर ब्राह्मण कभी भी दुःखी नहीं होता ६०

इति दक्षस्मृतौ २ अध्यायः

गृहस्थी की नौ८ सुधा (अमृत) नौ८ ईषत्दान—नौ८ कर्म और नौ८ विकर्म (निंदित) हैं १

और नौ८ प्रच्छन्न (छिपे) और नौ८ प्रकाश के योग्य—नौ८ सफल और नौ८ निष्फल हैं २

और नौ८ वस्तु सदैव अदेय—हैं ये नौ नवक अर्थात् (क्रिया) कहे हैं यही गृहस्थी की उन्नति के कारक हैं ३

सुधावस्तूनिवक्ष्यामिविशिष्टेगृहमागते
मनश्चक्षुर्मुखंवाचंसौम्यंदत्वाचतुष्टयम् ४
अभ्युत्थानंततोगच्छेत्पृच्छालापःप्रियान्वितः
उपासनमनुव्रज्याकार्याण्येतानिनित्यशः ५
ईषद्दानानिचान्यानिभूमिरापस्तृणानिच
पादशौचंतथाभ्यंगआश्रयःशयनानिच ६
किंचिद्द्याद्यथाशक्तिनास्यानश्नन्गृहेवसेत्
मृज्जलंचार्थिनेदेयमेतान्यपिसदागृहे ७
संध्यास्नानंजपोहोमःस्वाध्यायोदेवतार्चनं
वैश्वदेवंक्षमातिथ्यमुद्धृत्यापिचशक्तितः ८

जो सुधा वस्तुओं को कहता हुं सज्जनके अपनेघर आनेपर मन, नेत्र, मुख, वाणी इन चारों को सौम्य रक्खे ४

फिर देख कर उठे आने का प्रयोजन पूछे प्यार से बोले सेवा, अनुगमन (पीछे चलना) ये ६ प्रतिदिन करने ५

और ये जो ईषत (तुच्छ) दान ६ हैं भूमि, जल, तृण, पैर धोना, उबटना, आश्रय (स्थान) शय्या ६

और यथा शक्ति किंचित देना क्योंकि बिना भोजन गृहस्थी के घर में वसना नहीं है और अभ्यागत को मट्टी वा जल देना ये जो ८ ईषद्दान घर में सदा होते हैं ७

और संध्या—स्नान, जप, होम, वेदपाठ, देवता का पूजन बलिवैश्वदेव शक्ति से अन्न को निकास कर क्षमा से अतिथि का सत्कार और ८

पितृदेवमनुष्याणां दीनानाथतपस्विनाम्
मातापितृगुरूणां च संविभागो यथार्हतः ९
एतानि नवकर्माणि विकर्माणि तथा शृणु
अनृतं परदाराश्च तथाऽभक्ष्यस्य भक्षणं १०
अगम्यागमनापेयपानं स्तेयं च हिंसनं
अश्रौतकर्माचरणं मैत्रधर्मबहिष्कृतं ११
नवैतानि विकर्माणि तानि सर्वाणि वर्जयेत्
नवगुह्यमनृतं माया कामः क्रोधस्तथाप्रियं १२
द्वेषो दंभः परद्रोहः [illegible]

पितर, देवता, मनुष्य, दीनअनाथ, तपस्वी, गुरु, माता, पिता इन सबका यथा योग्य विभाग ९

ये नौ कर्म हैं और ये नौ विकर्म हैं कि, झूठ, पराई स्त्री अभक्ष्य का भक्षण १०

अगम्य स्त्री का गमन—पीने के अयोग्य का पान चोरी हिंसा—वेद में जो न हो ऐसे कर्म को करना मित्रकर्म (संध्यादि) से बाहर रहना ११

ये नौ निन्दित कर्म हैं इन सब को वर्जे ९ गुह्य (छुपाने योग्य) झूठ, माया, काम, क्रोध अप्रिय १२

द्वेष दंभ परद्रोह और किसी प्रकार नौ अनिष्ट (छि

आयुर्वित्तंगृहच्छिद्रंमंत्रोमैथुनभेषजे १३
तपोदानापमानेचनवगोप्यानिसर्वदा
प्रायोग्यमृणशुद्धिश्चदानाध्ययनविक्रयाः १४
कन्यादानंवृषोत्सर्गोरहस्येतानिवर्जयेत्
मातापित्रोर्गुरौमित्रेविनीतेचोपकारिणि १५
दीनानाथविशिष्टेषुदत्तंचसफलंभवेत्
धूर्त्तेवंदिनिमल्लेचकुवैद्ये कितवेशठे १६
चाटुचारणचोरेभ्योदत्तंभवतिनिष्फलं
सामान्यंयाचितंन्यासमाधिर्दाराश्चतद्धनं १७

पाने योग्य) हैं अवस्था धन घर का छिद्र (कोई बुरीबात) मंत्र मैथुन भेषज (औषध) १३

तप दान अपमान ये नौ सदैव छिपाने योग्य हैं और अयोग्य ऋण की शुद्धि (देना) दान पढना बेचना १४

कन्या का दान वृषोत्सर्ग इनको एकांत में न करै माता पिता गुरु मित्र नम्र उपकारी १५

दीन—अनाथ—सज्जन इनको देना सफल है—और धूर्त—वंदी (कैदी) मल्ल—कुवैद्य—कपटी—शठ १६

चाटु (मीठा जो बोले) चारण—चौर इनको देना निष्फल है—और इकट्ठी भिक्षा—न्यास (धरोर) आधि (कोश) स्त्री—और स्त्रियों का धन १७

अन्वाहितंचनिःक्षेपंसर्वस्वंचान्वयेसति
आपत्स्वपिनदेयानिनववस्तूनिसर्वदा १८
योददातिसमूर्खस्तुप्रायश्चित्ते नयुज्यते
नवनवकवेत्ताचमनुष्योधिपतिर्नृणां १६
इहलोकेपरत्रापिनीतिस्तंनैवमुंचति
यथैवात्मापरस्तद्वद् द्रष्टव्यःसुखमिच्छता २०
सुखदुःखानितुल्यानियथात्मनितथापरे
सुखंवायदिवादुःखंयत्किंचित्क्रियतेपरे २१
यत्कृतंतुपुनःपश्चात्सर्वमात्मनितद्भवेत्

अन्वाहित (जो विवाह आदि में कन्या को दिया हो) निक्षेप (जो धन आदि अपने ऊपर फेंका गया हो) और वंश के होते सर्वस्व ये नौ८ वस्तु आपत्ति में भी सदैव न देनी १८

जो इन्हे देता है वह मूर्ख है और प्रायश्चित का भागी है इस पूर्वोक्त नव नवक क्यासी ८१ को जो जाने वह मनुष्यों का अधिपति है १६

इह लोक और पर लोक में उसको नीति नहीं छोड़ती सुख की इच्छा करने वाला मनुष्य अपने समान दूसरे को देखै २०

क्योंकि सुख दुःख अपने को जैसे हैं वैसेही दूसरे को है जो सुख वा दुख दूसरे के लिये किया जाता है २१

किया हुआ वह सब अपने आत्मा में होता है और क्षो भ

नकर्षणेनविनाद्रव्यंनद्रव्येणविनाक्रिया २२
क्रियाहीनेनधर्मःस्याद्धर्महीनेकुतःसुखं
सुखंहिजन्तवःसर्वेवाञ्छन्तिसततंनृप २३
तस्माद्धर्मःसदाकार्यःसर्वदैवप्रयत्नतः
न्यायागतेनद्रव्येणकर्तव्यंपारलौकिकं २४
दानंहिविधिनादेयंकालेपात्रेगुणान्विते
शताद्गुणसहस्रानन्त्यंचयथाक्रमात् २५
दानेफलविशेषःस्याद्विशेषाद्यत्नएवहि
सममब्राह्मणेदानंद्विगुणंब्राह्मणब्रुवे २६

से बिना द्रव्य नहीं मिलता और द्रव्य के बिना कर्म नहीं होता २२

कर्म हीन से धर्म नहीं धर्म हीन को सुख नहीं और सब सुख चाहत (भोग) ही है और उनका धर्म से होता है २३

तिससे संपूर्ण यत्न से धर्म को करै और न्याय से प्राप्त हुये धन से परलोक के कर्म (यज्ञादि) करने २४

अच्छे समय पर गुणवान को विधि से दान देवे उस दान का फल क्रमसे शत (शतगुणो)—दूना—सहस्रगुना—और अनंत होता है २५

विशेष यत्न करने से दान में फल भी अधिक होता है ब्राह्मण से अन्य को देना सम है और ब्राह्मणब्रुव (नाम मात्र) को दूना है २६

सहस्रगुणमाचार्येऽनन्तं वेदपारगे
विधिहीने यथापात्रे यो ददाति प्रतिग्रहं २७
न केवलं हि तद्व्यर्थं शेषमप्यस्य नश्यति
व्यसने प्रीतिजीवार्थं कुटुंबार्थं च याचते २८
एवमन्विष्य दातव्यं सर्वदानेष्वयं विधिः
मातापितृविहीनस्य संस्कारोद्वाहनादिभिः २९
यः स्थापयति तस्येह पुण्यसंख्या न विद्यते
यच्छ्रेयोऽग्निहोत्रेण नाग्निष्टोमेन लभ्यते ३०
तच्छ्रेयः प्राप्नुयाद्विप्रो विप्रेणस्थापितेन वै

आचार्य को सहस्रगुना—और वेद के पार ज्ञाता को देने से अनन्त फल होता है और विधि से हीन पात्र को जो प्रतिग्रह देता है २७

केवल वही व्यर्थ नहीं है शेष भी उसका दान नष्ट हो जाता है—दुख में प्रीति और जीने के लिये जो मांगे २८

इसको ढूंढ कर दे यह संपूर्ण दानों में विधि है—माता पिता से विहीन बालक का संस्कार और विवाह आदि के लिये २९

जो मनुष्य धन इकट्ठा करता है उसके पुण्य की संख्या नहीं है और जो कल्याण अग्नि होत्र और अग्निष्टोम यज्ञ से नहीं मिलता ३०

यद्यदिष्ठतमंलोकेयच्चास्मदयितंभवेत् ३१
तत्तद्गुणवतेदेयंतदेवाक्षयमिच्छता
इतिदाक्षेधर्मशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः ३
पत्नीमूलंगृहंपुंसांयदिछंदानुवर्तिनी
गृहाश्रमात्परंनास्तियदिभार्यावशानुगा १
तयाधर्मार्थकामानांत्रिवर्गफलमश्नुते
अनुकूलकलत्रोयःस्वर्गस्तस्यनसंशयः २
प्रतिकूलकलत्रस्यनरकोनात्रसंशयः
स्वर्गेपिदुर्लभंह्येतदनुरागःपरस्परं ३
रक्तमेकंविरक्तंचततःकष्टतरंनुकिं

जिस कल्याण को ब्राह्मण प्राप्त होता है जोर अपने को जगत् में इष्ट और प्रिय हैं ३१

उस२ को अक्षय पुण्य का अभिलाषी पुरुष गुणवान् को दे
इति दक्षस्मृतौ ३ अध्यायः

यदि आज्ञा कारिणी होय तो घर का मूल पत्नी है और स्त्री वश में होय तो गृहस्थाश्रम से परे और कोई श्रेष्ठ नहीहैं१

स्त्री से ही धर्म अर्थ काम के फल को भोगता है जिस के स्त्री अनुकूल हैं उसको घर ही स्वर्ग है इसमें संशय नहींहै २

और जिसकी स्त्री प्रतिकूल है उसको नरक है इसमें संदेह नही स्त्री पुरुष की परस्पर प्रीति स्वर्ग में भी दुर्लभ है ३

एक रक्त हो और दूसरा विरक्त [प्रेमी न हो] उससे

गृहवासःसुखार्थोहिपत्नीमूलंचतत्सुखं ४
सापत्नीयाविनीतास्याच्चित्तज्ञावशवर्त्तिनी
दुःखाह्यन्यासदाखिन्नाचित्तभेदःपरस्परम् ५
प्रतिकूलकलत्रस्यद्विदारस्यविशेषतः
जलौकाइवताःसर्वाभूषणाच्छादनाशनैः ६
सुभृतापिकृतानित्यंपुरुषंह्यपकर्षति
जलौकारक्तमादत्ते केवलंसातपस्विनी ७
इतरातुधनंवित्तमांसंवीर्यंबलंसुखं

अधिक और क्या कष्ट है और घरका वसना सुख के लिये है और उस सुख का मूल [कारण] स्त्री है ४

जो स्त्री नम्र चित्त की बात को जाने—वशमें बर्ते वही पत्नी है और उससे अन्य दुःख रूप हैं क्योंकि उनसे परस्पर चित्त का भेद होता है ५

जिसकी स्त्री प्रति कूल है उसकी और विशेष कर जिस के दो स्त्री हैं उसकी सब स्त्री जलौका [जौक] के समान हैं और भूषण वस्त्र भोजन से ६

भली प्रकार पली हुई भी स्त्री पुरुष को खींचती है जलौका रस को जैसे खीचती है इसी प्रकार वह स्त्री भी तपस्विनी प्रतीत होती है ७

और अन्य स्त्री धन वित्त [वस्त्रादि] मांस—वीर्य —बल

साशंकाबाल्यभावेनुयौवनेभिमुखीयौवने ८
वृद्धाकन्याःपतेर्नारीद्विजभावेन्दकौंपतिम्
सकाम्येवर्त्तेमानाच्चस्नेहान्नैवनिन्दिता ९
सुमुख्यासामस्थैर्यस्वाप्यग्राण्यादिभिर्वेष्टिताः
अनुकूलात्ववाग्दुष्टादक्षासाध्वीपतिव्रता १०
एभिरेवगुणैर्युक्ताश्रीरिवस्त्रीनसंशयः
प्रहृष्टमानसानित्यंस्थानमानविचक्षणा ११
भर्तुःप्रीतिकरीयातुभार्यासाह्येतराजरा

सुख इनको खींचती है और बाल्य अवस्था में कुछ शंका सी करती है परंतु यौवन में अपने अनुकूल होजाती है ८

और वृद्ध अवस्था में स्त्री अपने पति को पुत्र के समान समझती है और अच्छी कामना में रहती और पति के स्नेह को मानती हुई ९

वह स्त्री अपने सन्मुख होजाती है जैसे उपेक्षा से व्याधि [रोग] जो स्त्री अनुकूल हो उत्तम जिसकी वाणी हो चतुर हो साधुस्वभाव हो और पतिव्रता हो १०

इन गुणों से युक्त स्त्री लक्ष्मी ही है इस में संशय नहीं है—और जो स्त्री प्रसन्न मन—स्थान और मान [बड़ाई] की ज्ञाता ११

पति में प्रीति करती है वही भार्या है और अन्य जरा

शिष्योभार्याशिशुर्भ्राताभित्रंदासःसमाश्रितः १२
यस्यैतानिविनीतानितस्यलोकेपिगौरवं
प्रथमाधर्मपत्नीतुद्वितीयारतिवर्द्धिनी १३
दृष्टमेवफलंतत्र नादृष्टमुपपद्यते
धर्मपत्नीसमाख्यातानिर्दोषायदिसाभवेत् १४
दोषेसतिनदोषःस्यादन्याभार्यागुणान्विता
अदुष्टांपतितांभार्यांयौवनेयःपरित्यजेत् १५
सजीवनांतेस्त्रीत्वंचवंध्यत्वञ्चसमाप्नुयात्
दरिद्रंव्याधितञ्चैवभर्तारंयावमन्यते १६

बुढ़ापा) है और शिष्य—भार्या—बालक—भाई—मित्र—दास (और जो अपने आश्रय हो १२

जिसके ये सब बिनीत [नम्र वा शिक्षा पाये] हैं उस की जगत् में भी बड़ाई है और पहिली स्त्री धर्म पत्नी—दूसरी रतिवढाने वाली होती है १३

और उस स्त्री का फल इस लोक मे ही है परलोक में नही और यदि स्त्री में कोई दोष न होय तो धर्म पत्नी कहाती है १४

और यदि भार्या गुणों से युक्त होय तो दोष से भी दोष वाली नही होती—विना दोष और पतित के बिना जो पुरुष स्त्री को त्याग दे १५

वह मरकर वंध्या स्त्री होती है और जो स्त्री दरिद्र वा रोगी पति का तिरस्कार करे १६

शुनीगृध्रीचमकरीजायतेसापुनःपुनः
मृतेभर्तरियानारीसमारोहेद्धुताशनं १७
साभवेत्तु शुभाचारास्वर्गेलोकेमहीयते
व्यालग्राहीयथाव्यालंबलादुद्धरतेबिलात् १८
तथासापतिमुद्धृत्यतेनैवसहमोदते
चांडालपतिताःसितपरिव्राजकतापसाः १९
तेषांजातान्यपत्यानिचांडालैस्सहवासयेत्
इतिदाक्षेधर्मशास्त्रेचतुर्थोऽध्यायः ४
उक्तंशौचमशौचंचकार्यंत्याज्यंमनीषिभिः

वह स्त्री कुत्ती—गीधनी—मच्छी—बारंबार होती है और पति के मरे पीछे जो स्त्री सती होती है १७

वह शुभ आचरण वाली होती है और स्वर्ग में पूजा को प्राप्त होती है जैसे सांपों का पकड़ने वाला बिल में से सांप को बल से निकास लेहै १८

तैसे वह भी पतिका उद्धार करके इसी पति के संग आनन्द भोगती है चांडाल, पतित, संन्यासी—और तपस्वी १९

इन चारों के यदि संतान होय तो उनको चांडालों के संगही बसावे ॥

इति दक्षस्मृतौ ४ अध्यायः

शौचको करना और अशौच का त्यागना बुद्धिमानों नेकहाहै

विशेषार्थंतयोःकिंचिद्वक्ष्याभिहितकाम्यया १
शौचेयत्नःसदाकार्यःशौचमूलोद्विजःस्मृतः
शौचाचारविहीनस्यसमस्तानिष्फलाःक्रियाः २
शौचंचद्विविधंप्रोक्तंबाह्यमाभ्यंतरंतथा
मृज्जलाभ्यांस्मृतंबाह्यं भावशुद्धिरथांतरं ३
अशौचाद्विवरंबाह्यं तस्मादाभ्यंतरंवरं
उभाभ्यांतुशुचिर्यस्तुसशुचिर्नेतरःशुचिः ४
एकालिंगेगुदेतिस्त्रउभयोर्मृत्रयंतथा

इन दोनों की विशेषता हित की इच्छा से कहता हुं १

शौच में सदैव यत्न करना क्योंकि द्विज पने का कारण शौच ही कहा है शौच के आचारण से जो हीन है उसके सब कर्म निष्फल हैं २

और शौचदो प्रकार काहै एक बाह्य(बाहर का)और दूसर आभ्यंतर (भीतर का) बाह्यशौच मट्टी और जल से अंतः शौच मन की शुद्धि से होता है ३

अशौच में बाह्य शौच उत्तम है और बाह्य शौच से आभ्यंतर श्रेष्ठ है इन दोनों से जो शुद्ध है वही शुद्ध है अन्य नही है ४

लिंग में एक वार—गुदामें तीनवार—वा दोनों में तीन वा चार वार और वांये हाथ में दशवार और दोनों हाथों में

चतस्त्रस्तुदशैकस्मिन्न भयोःसप्तमृत्तिकाः ५
गृहस्थशौचमाख्यातंत्रिष्वन्येषुक्रमेणतु
द्विगुणंत्रिगुणंचैवचतुर्थस्यचतुर्गुणं ६
अर्द्धप्रसृतिमात्रातुप्रथमामृत्तिकास्मृता
द्वितीयाचतृतीयाचतदर्द्धं परिकीर्तिता ७
लिंगेप्यत्रसमाख्याताित्रिपर्वापूर्यतेयया
एतच्छौचंगृहस्थानांद्विगुणंब्रह्मचारिणां ८
त्रिगुणंतुवनस्थानांयतीनांचचतुर्गुणं
दातव्यमुदकंतावन्मृदभावोयथाभवेत् ९

सात२ वार मट्टी लगावे ५

यह शौच गृहस्थियों का कहा और ब्रह्मचारी वानप्रस्थ संन्यासी इन तीनों को क्रमसे दूना—तिगुना—चौगुना—करना कहा है ६

पहिली वार मट्टी आधी पसली कही है और दूसरी वा तीसरी वार तिससे आधी कही है ७

और लिंग में मट्टी इतनी लगावे जिससे सब अंगुलियों के तीन अंगुल भरें यह गृहस्थियों का शौच कहा—इससे दूना ब्रह्मचारियों का ८

तिगुना वानप्रस्थों का—चौगुना संन्यासियों का है और इतना जल लगावे जितने से मट्टी दूर होजाय ९

मृत्तिकानांसहस्त्रेणचोदकुंभशतेनच
नशुद्ध्यतिदुरात्मानोयेषांभावोननिर्मलः १०
मृदातोयेनशुद्धिःस्यान्नक्लेशोनधनव्ययः
यस्यशौचेपिशैथिल्यंचित्तंतस्यपरीक्षितं ११
अन्यदेवदिवाशौचमन्यद्रात्रौविधीयते
अन्यदापदिनिर्दिष्टंह्यन्यदेवह्यनापदि १२
दिवाकृतस्यशौचस्यरात्रावर्द्धंविधीयते
तदर्धमात्रंतस्यांतुत्वरायांत्वर्द्धवर्त्मनि १३
दिवायद्विहितंकर्मतदर्धंचनिशिस्मृतं

जिनका अंतःकरण निर्मल नहीं वे दुष्टात्मा सहस्त्र वार मट्टी वा सौ घड़े जल से भी शुद्ध नहीं होते १०

मट्टी और जल से शुद्धि होती है और क्लेश और धन के व्ययसे नही होती ऐसे शौचमें भी जिसकी शिथिलता है उसके चित्त की परीक्षा होगयी अर्थात अशुद्ध है ११

दिन में शौच भिन्न है और रात्रि में भिन्न है और आपत्ति में अन्य है और बिना आपत के अन्य है १२

दिनमें जो शौच किया उसका आधा रात्रि में कहा है और उससे भी आधा रात्रि के अंत में और मार्ग में उससे भी आधा कहा है १३

जो कर्म दिन में कहा है उसका आधा रात्रि में और उस

तद्द्र्धातुरेकालेपथिशूद्रवदाचरेत् १४
न्यूनाधिकंनकर्तव्यंशौचेशुद्धिममीप्सता
प्रायश्चित्तेनयुज्येतविहिताऽतिक्रमेकृते १५
इतिदाक्षेधर्मशास्त्रेपंचमोध्यायः
आशौचंतुप्रवक्ष्यामिजन्ममृत्युनिमित्तकं
यावज्जीवंतृतीयंतुयथावदनुपूर्वशः १
सद्यःशौचंतथैकाहोद्वित्रिचतुरहस्तथा
षट्दशद्वादशाहश्चपक्षोमासस्तथैवच २
मरणांतंतथाचान्यद्दशपक्षास्तुसूतके

 आपदा रोग में और मार्ग में शूद्र के समान आचरण करे १४

शुद्धि की इच्छा करने वाला मनुष्य न्यून वा अधिक शौच न करै विहित कर्म के अवलंघन में प्रायश्चित्त के योग्य होता है १५

इति दक्षस्मृतौ ५ अध्यायः

जन्म और मरण का अशौच कहता हूं और तीसरा अशौच जीने तक क्रमसे तीन अशौच शास्त्रोक्त अशौच हैं १

सद्यः शौच (उसी समय शुद्धि) एक दिन—दोदिन तीन चार दिन छः दिन—दशदिन बारहदिन—और पंद्रहदिन—और एक मास २

और मरण पर्यंत—ये दश पक्षसूतक में हैं वर्ण के

उपन्यासक्रमेणैववक्ष्याम्यहमशेषतः ३
ग्रंथार्थंतोविजानातिवेदमंगैःसमन्वितं
सकल्पंसरहस्यंचक्रियावांश्चेन्नसूतकी ४
राजर्त्विग्दीक्षितानांचबाले देशांतरेतथा।
व्रतिनांसत्रिणांचैवसद्यःशौचंविधीयते ५
एकाहस्तुसमाख्यातोयोग्निवेदसमन्वितः
हीनेहीनतरेचैवत्र्यहश्चतुरहस्तथा ६
जातिविप्रोदशाहेनद्वादशाहेनभूमिपः
वैश्यःपंचदशाहेनशूद्रोमासेनशुद्ध्यति ७

क्रम से इन सब को मैं कहता हुं ३

जो ग्रन्थों के अर्थ को और छः अंगों कल्प और रहस्य समेत वेद को जाने और कर्मों को कर्ता हो वह सूतकी नहीं होता ४

राजा—ऋत्विज—दीक्षित (जिसने यज्ञादि में दीक्षा ले रक्खी हो) बालक—परदेश में जो रहे—व्रती—सत्रीः (यज्ञ आदि में जो बैठे हों) इनको सद्यः शौच कहा है ५

जो ब्राह्मण अग्नि होत्री वा वेदपाठी हो उसे एक दिन का—हीन (न्यून) को तीन दिन का—और अधिक हीन को चार दिन का अशौच होता है ६

जाति मात्र ब्राह्मण को दश दिन का क्षत्रिय को बारहदिन का—वैश्य को पंद्रह दिनका और शूद्र को महीने का अशौच होता है ७

अस्नात्वाचम्यजप्त्वाचदत्वाहुत्वाचभुंजते
एवंविधस्यसर्वस्ययावज्जीवंहिसूतकं ८
व्याधितस्यकदर्यस्यऋणग्रस्तस्यसर्वदा
क्रियाहीनस्यमूर्खस्यस्त्रीजितस्यविशेषतः ९
व्यसनासक्तचित्तस्यपराधीनस्यनित्यशः
श्रद्धात्यागविहीनस्यभस्मांतंसूतकंभवेत् १०
नसूतकंकदाचित्स्याद्यावज्जीवंतुसूतकं
एवंगुणविशेषेणसूतकंसमुदाहृतम् ११
सूतकेमृतकेचैवतथाचमृतसूतके

स्नान - आचमन — जप — दान — और होम किये विना जो भोजन करते हैं उन सबको जीवन पर्यंत अशौच (सूतक) होता है ८

रोगी — कदर्य (कायर) सदैव ऋणी — क्रिया कर्म से हीन मूर्ख — और विशेष कर स्त्री ने जिसे जीत लिया हो ९

और व्यसन (जूआदि) में जिसका चित्त आसक्तहो और नित्य जो पराधीन हो और श्रद्धा और त्याग से जो हीन हो उसको भस्मांत सूतक है १०

सूतक कभी नहीं है और सूतक जीने तक है इस प्रकार गुण विशेष से सूतक कहा है ११

जन्म सूतक में यदि मरण सूतक और मरण सूतक में

एतत्संहतशौचानांमृताशौचेनशुद्ध्यति १२
दानंप्रतिग्रहोहोमःस्वाध्यायश्चनिवर्तते
दशाहात्तु परंशौचं विप्रोर्हतिचधर्म्मवित् १३
दानंचविधिनादेयमशुभात्तारकंहितत्
मृतकांतेमृतोयस्तुसूतकांतेचसूतकं १४
एतत्संहतशौचानांपूर्वाशौचेनशुद्ध्यति
उभयत्रदशाहानिकुलस्यान्नंनभुज्यते १५
चतर्थेहनिकर्तव्यमस्थिसंचयनंद्विजैः
ततःसंचयनादूर्ध्वमंगस्पर्शोविधीयते १६

जन्म सूतक मिलजाय तो दोनों की शुद्धि मरण अशौच के संग होती है १२

सूतक में—दान—प्रतिग्रह—होम—स्वाध्याय ये सब निवृत्त होजाते हैं धर्म के जानने वाला ब्राह्मण दश दिन के पीछे सब कर्मों के योग्य होता है १३

विधि से दान देना क्योंकि वह दान पाप से तारने वाला है—मरण सूतक में जो मरे अथवा जन्म सूतक में जन्म सूतक होजाय तो १४

इन मिले हुये सूतकोंमें पूर्व अशौच के शेष दिनों में शुद्धि होती है दोनों सूतकों में दश दिन तक कुल का अन्ननखा १५

चौथे दिन विद्वान् मनुष्य अस्थि संचयन करै फिर अस्थि संचयन के पीछे अंग का स्पर्श कहा है १६

वर्णानामानुलोम्येनस्त्रीणामेकोयदापतिः
दशषट्त्र्यहमेकाहःप्रसवेसूतकंभवेत् १७
स्वस्थकालेत्विदंसर्वमशौचंपरिकीर्तितं
आपद्गतस्यसर्वस्यसूतकेपिनसूतकं १८
यज्ञेप्रवर्तमानेतुजायेताथम्रियेतवा
पूर्वसंकल्पितेकार्येनदोषस्तत्रविद्यते १९
यज्ञकालेविवाहेचदेवयागेतथैवच
हूयमानेतथाचाग्नौनाशौचंनापिसूतकं २०
इतिदाक्षेधर्म्मशास्त्रेषष्ठोऽध्यायः ६

वर्णों के अनुलोम क्रमसे यदि स्त्रियों का पति एक होय तो ब्राह्मणी क्षत्रिय- वैश्या- शूद्रा इन चारों ब्राह्मण की स्त्रियों को क्रमसे दश छः- तीन- एक- दिनका प्रसव में सूतक होता हैं १७

यह संपर्ण अशौच स्वस्थ अवस्था में कहा है आपत्ति काल में सूतक के समय में भी सूतक नही होता १८

यज्ञ के होने के समय यदि कोई जन्मे वा मरे तो पूर्व जिसका संकल्प होगया हो उसमें दोष नहीं है १९

यज्ञ के समय- विवाह में देव पूजन में अग्निहोत्र में अशौच और सूतक दोनों नही होते २०

इति दक्षस्मृतौ ६ अध्यायः

लोकावशीकृतायेनयेनचात्मावशीकृतः
इंद्रियार्थमतस्तस्ययोगंवक्ष्याम्यशेषतः १
प्राणायामस्तथाध्यानंप्रत्याहारोथधारणा
तर्कश्चैवसमाधिश्चषडंगोयोगउच्यते २
मैत्रीक्रियामुदेसर्वासर्वप्राणिष्ववस्थिता
ब्रह्मलोकंनयत्याशुधातारमिवधारणा ३
नारण्यसेवनाद्योगोनानेकग्रंथचिंतनात्
व्रतैर्यज्ञैस्तपोभिर्वानयोगःकस्यचिद्भवेत् ४
नचपथ्याशनाद्योगोननासाग्रनिरीक्षणात्
नचशास्त्रातिरिक्तेनशौचेनभवतिकचित् ५

लोक (भूआदि) आत्मा (मन) इन्द्रिय और विषय ये सब जिसने वश में किये हैं उसके लिये संपूर्ण योग को कहता हुं १

प्राणायाम—ध्यान—प्रत्याहार—धारणा—तर्क—समाधि ये छः जिसके अंग हैं उसे योग कहते हैं २

मित्रता—आनंद के लिये सब प्राणियों में जो क्रिया वह इस प्रकार ब्रह्मलोक में लेजाती है जैसे धारणा ब्रह्मा को ३

बन की सेवा (वास)—अनेक ग्रंथों की चिंता (बिचार) ब्रत—यज्ञ—और तप—इनसे किसी को योग नही होता ४

पथ्य भोजन—नाक के अग्रभाग को देखना—शास्त्रों की अधिकता और शौच इन से भी योग कभी नही होता ५

नमंत्रंमौनकुहकैरनेकैःसुकृतैस्तथा
लोकयात्रानियुक्तस्ययोगोभवतिकस्यचित् ६
अभियोगात्तथाभ्यासात्तस्मिन्नेवतुनिश्चयात्
पुनःपुनश्चनिर्वेदाद्योगःसिद्ध्यतियोगिनः ७
आत्मचिंताविनोदेनशौचेनक्रीडनेनच
सर्वभूतसमत्वेनयोगःसिद्ध्यतिनान्यथा ८
अध्यात्ममिथुनोनित्यमात्मक्रीडस्तथैवच
आत्मानंदस्तुसततंआत्मन्येवसुभावितः ९
रतिश्चैवसुतुष्टश्चसंतुष्टोनान्यमानसः
आत्मन्येवसुतृप्तोसौयोगस्तस्यप्रसिद्ध्यति १०

मंत्र—मौन कपट अनेक प्रकार के पुण्य इनसे और लोक के व्यवहार में तत्पर को भी योग नही होता ६

अभि योग (योग में तत्परता) से अभ्याससे और योग में ही निश्चयसे और वारंवार निर्वेद (विरक्ति)से योग सिद्ध होता है ७

आत्मा की चिन्ता के आनंद—शौच—आत्मा में क्रीड़ा सब भूतों में समता इनसे योग सिद्ध होता है अन्यथा नहीं ८

नित्य आत्मा में मिला—और आत्मा में क्रीड़ा शील—आत्मा में आनन्द स्वभाव और निरंतर आत्मा में प्रीतिमान् ९

और आत्मा में रमा हुआ—आत्मा में संतुष्ट अन्य में जिसका मन न हो और आत्मा में ही भली प्रकार तृप्त हो ऐसे पुरुष को योग सिद्ध होता है १०

सुप्तोऽपियोगयुक्तश्चजाग्रदेवविशेषतः
ईदृक्चेष्टःस्मृतःश्रेष्ठोगरिष्ठोब्रह्मवादिनां ११
अत्रात्मव्यतिरेकेणद्वितीयंनैवपश्यति
ब्रह्मभूतःसएवेहदक्षपक्षउदाहृतः १२
विषयासक्तचित्तोहियतिर्मोक्षनविंदति
यत्नेनविषयासक्तिंतस्माद्योगीविवर्जयेत् १३
विषयेंद्रियसंयोगंकेचिद्योगंवदंतिवै
अधर्मोधर्मबुद्ध्यातुगृहीतस्तैरपंडितैः १४
आत्मनोमनसश्चैवसंयोगंतुततःपरं

सोता हुआ भी योगी विशेष कर जागता ही है ऐसा जिस की चेष्टा हो वही श्रेष्ठ और ब्रह्मवादियों में बड़ा कही है ११

इह जगत् में आत्मा के बिना जो द्वितीय को न देखे वही ब्रह्मरूप दक्ष ऋषि के पक्ष में कहा है १२

विषय में जिसका चित्त आसक्त हो वह यति (योगी) मोक्ष को प्राप्त नहीं होता तिससे विषयों में आसक्ति को योगी यत्न से वर्जदे १३

कोई मनुष्य विषय और इन्द्रियों के संयोग को कहते हैं उन निर्बुद्धियों ने अधर्म को धर्म बुद्धिसे जाना १४

और उनसे अन्य कोई आत्मा और मन के संयोग को

उक्तानामधिकाह्ये तेकेवलंयोगवंचिताः १५
वृत्तिहीनमनःकृत्वाक्षेत्रज्ञंपरमात्मनि
एकीकृत्यविमुच्यतयोगोयंमुख्यउच्यते १६
कषायमोहविक्षेपलयत्वाहितचेतसः
व्यापाररतुसमाख्यातस्तद्दीनंवशमानयेत् १७
कुटुंवैःपंचभिर्ग्रामःषष्ठस्तत्रमहत्तरः
देवासुरैर्मनुष्यैश्चसजेतुंनैवशक्यते १८
मनस्येवेंद्रियाणयत्रमनश्चात्मनियोजयेत्
सर्वभावविनिर्मुक्तंक्षेत्रज्ञंब्रह्मणिन्यसेत् १९

योग कहे है ये योग के ठग पूर्वोक्तों से भी अधिक हैं १५

मन को वृत्ति से हीन करके और क्षेत्रज्ञ (जीव) को परमात्मा में एक करके मुक्त होजाय यह योग मुख्य कहा है १६

कषाय—मोह और विक्षेप का जो नाश वही उसका व्यापार कहा है जिसका मन वशी भूत हो इस से कषाय आदि से हीन मन को वश में करै १७

पांच कुटुंबों (५ इन्द्रिय) का ग्राम होता है और उस ग्राम में छटा (मन) अत्यन्त बड़ा है उसको जीतने को देवता मनुष्य और असुर समर्थ नहीं होते १८

इन्द्रियों को मन में मन को आत्मा में—और सबभावों (पदार्थों) से रहित क्षेत्रज्ञ को ब्रह्म में मिलावे १९

बलेनपरराष्ट्राणिगृह्णन्शूरस्तुनोच्यते
जितोयेनेंद्रियग्रामःसशूरःकथ्यतेबुधैः २०
बहिर्मुखानिसर्वाणिकृत्वाचाभिमुखानिवै
एतद्ध्यानंतथाज्ञानंशेषस्तुग्रंथविस्तरः २१
त्यक्त्वाविषयभोगांस्तुमनोनिश्चलतांगतं
आत्मशक्तिस्वरूपेणसमाधिःपरिकीर्तितः २२
चतुर्णांसन्निकर्षेणफलंयत्तदशाश्वतं
द्वयोस्तुसन्निकर्षेणशाश्वतंध्रुवमक्षयं २३
यन्नास्तिसर्वलोकस्यतदस्तीतिनिरुच्यते

जो बल से पराये देशों को लेले वह शूरन नही होता किंतु पंडित जन उसेही शूर कहते हैं जिसने इन्द्रियों का ग्राम जीत लिया है २०

वहिर्मुख (बिषयों में लगी) सब इन्द्रियों को अभिमुख (आत्मा में लीन)करके जो टिकना यही ध्यान और ज्ञान कहा है शेष तो ग्रन्थ का बिस्तार है २१

बिषय भोगों को त्याग कर आत्मा की शक्ति रूप से निश्चल हुआ जो मन उसे समाधि कहते हैं २२

चार (योग के पहिले अंग) के संनिकर्ष से जो फल होता है वह अनित्य है और पिछले अंगो से जो फल होता है वह सनातन और नित्य और अक्षय होता है २३

सब लोकों को जो ब्रह्म नास्ति प्रतीत होता है और जो

कथ्यमानंतथान्यस्यहृदयेनाधितिष्ठति २४
स्वयंवेद्यंचतद्ब्रह्मकुमारीमैथुनंयथा
अयोगीनैवजानातिजात्यंधोहियथाघटम् २५
नित्याभ्यसनशीलस्यसुसंवेद्यंहितद्भवेत्
तत्सूक्ष्मत्वादनिर्देश्यंपरंब्रह्मसनातनं २६
बुधास्त्वाभरणंभावंमनसालोचनंतथा
मन्यंतेस्त्रीचमूर्खश्चतदेवबहुमन्यते २७
सत्वोत्कटाःसुरास्तेपिविषयेनवशीकृताः

अस्ति शब्द से कहा जाता है और कहा हुआ भी दूसरे के हृदय में नही टिकता २४

वह ब्रह्म इस प्रकार स्वयं जानने योग्य है जैसे कुमारी का मैथुन और योग मार्ग से हीन उस ब्रह्म को इस प्रकार नही जानता जैसे जन्मांध पुरुष घट को २५

नित्य अभ्यास में है शील जिसका ऐसे मनुष्य को भली प्रकार अनायास से जानने योग्य है और सूक्ष्म होने से वह सनातन पर ब्रह्म अनिर्देश्य (दिखाने के अयोग्य) है २६

पंडितों भाव (बिचार) और मन से ब्रह्म को जो देखना इसको ही भूषण मानते हैं स्त्री और मूर्ख भूषण को ही बहुत उत्तम मानते हैं २७

सत्व गुणी देवता भी बिषयों ने जब वश कर लिये और

प्रमादिभिःक्षुद्रसत्वैर्मनुष्यैरत्रकाकथा २८
तस्मात्त्यक्तकषायेनकर्तव्यंदंडधारणं
इतरस्तुनशक्नोतिविषयैरभिभूयते २९
नस्थिरंक्षणमप्येकमुदंचापियथोर्मिभिः
वाताहतंतथाचित्तंतस्मात्तस्यनविश्वसेत् ३०
ब्रह्मचर्यंसदारक्षेदष्टधारक्षणंपृथक्
स्मरणंकीर्तनंकेलिःप्रेक्षणंगुह्यभाषणं ३१
संकल्पोध्यवसायश्चक्रियानिवृत्तिरेवच
एतन्मैथुनमष्टांगंप्रवदंतिमनीषिणः ३२

प्रमादी क्षुद्र जीव मनुष्यों के तो वध करने की क्या कथा है२८ तिससे जिसने मन के मल त्यागे हों वही दंड का धारण करै और जिसने न त्यागे हों वह दंड धारणे को समर्थ नही हैं और विषय उसका तिरस्कार करते हैं २९

जैसे तरंगों से जल क्षण मात्रभी स्थिर नही रहता इसी प्रकार वासनाओं से हता चित्त भी स्थिर नही रहता तिससे तिसका विश्वास न करै ३०

जिस की आठ प्रकार की रक्षा है उस ब्रह्मचर्य को सदैव रक्षा करै कि स्मरण कीर्तन, क्रीड़ा, प्रेक्षण (देखना) गुप्त बोलना ३१

संकल्प विकल्प—अध्यावसाय (निश्चय) क्रिया की निवृत्ति (होना) यह आठ प्रकार का मैथुन बुद्धिमान् कहते हैं ३२

त्रिदंडव्यपदेशेनजीवंतिबहवोनराः
यस्तुब्रह्मनजानातिनत्रिदंडीहिसस्मृतः ३३
नाध्येतव्यंनवक्तव्यंनश्रोतव्यंकथंनच
एतैःसर्वैःसुसंपन्नोयतिर्भवतिनेतरः ३४
परिब्राज्यंगृहीत्वातुयःस्वधर्मेनतिष्ठति
श्वपदेनांकयित्वातंराजाशीघ्रंप्रवासयेत् ३५
त्रयोग्रामः समाख्यातःऊर्ध्वंतुनगरायते
नगरंहिनकर्तव्यंग्रामोवामैथुनंतथा ३६
एतत्त्रयंतुकुर्वाणाःसुधर्माच्च्यवतेयतिः
राजवार्तादितेषांतुभिक्षावार्तापरस्परं ३७

त्रिदंड के बहाने से बहुत से मनुष्य जीवते हैं परंतु जो ब्रह्म न जाने वह त्रिदंडी (संन्यासी) नही कहें ३३

न पढना—न बोलना—न किसी प्रकार सुनना—इन संपूर्णों से जो युक्त हो वही संन्यासी हैं इतर नही ३४

जो संन्यास लेकर अपने धर्म में न टिके उसके कुत्ते के पैर का दाग देकर शीघ्र ही राजा निकसवाय दे ३५

तीन के संगम को ग्राम कहते हैं इससे अधिकों का संग नगर कहाता है इससे सन्यासी ग्राम—नगर—और मैथुन इन को न करैं ३६

इन तीन को जो यति करता हैं वह उत्तम धर्म से पतित होता है क्योंकि उनमें राजा की अथवा भिक्षा की—बात परस्पर होती हैं ३७

स्नेहपैशून्यमात्सर्यंसन्निकर्षादसंशयं
लाभपूजानिमित्तंहिव्याख्यानंशिष्यसंग्रहः ३८
एतेचान्येचबहवःप्रपंचास्तुतपस्विनां
ध्यानंशौचंतथाभिक्षानित्यमेकांतशीलता ३६
भिक्षोश्चत्वारिकर्माणिपंचमंनोपपद्यते
यस्मिन्देशेभवेद्योगीध्यानयोगविचक्षणः ४०
सोपिदेशोभवेत्पूतःकिंपुनर्यस्यबांधवः
तपोभिर्येकृशीभूताव्याधितावसथार्हणाः ४१
वृद्धारोगगृहीताश्चयेचान्येविकलेंद्रियाः

स्नेह—चुगुलपन—मत्सरता—ये वार्ता आदि संनिकर्ष से होते हैं इसमें संशय नही पढना कहना—और शिष्यों को रखना यह लोभ और पूजा के निमित्त हैं ३८

ये और अन्य भी तपस्वियों के प्रपंच हैं—ध्यान—शौच भिक्षा और एकांत में टिकने का स्वभाव ३६

भिक्षु के ये चार कर्म हैं पांचवा नही हैं—ध्यान और योग में पंडित योगी जिस देश में हो ४०

वह देश भी पवित्र होजाता है उसके बंधु क्योंन होंगे जो तप करने से कृश हैं वा रोगी हैं वे घर को वसाने योग्य हैं ४१

वृद्ध—रोग से युक्त और जिनकी इन्द्रियां में बिकार हैं—ये

नीरुजश्चयुवाचैवभिक्षुर्नावसथ'र्हतः ४२
सदूषयतितत्स्थानंवृद्धादीनूपीडयत्यपि
नीरुजश्चयुवाचैवब्रह्मचर्याद्विनश्यति ४३
ब्रह्मचर्याद्विनष्टश्चकुलंगोत्रंचनाशयेत्
यस्यत्वावसथेभिक्षुर्मैथुनंयदिसेवते ४४
तस्यावसथनाथस्यमूलान्यपिनिकृंतति
आश्रमेतुयतिर्यस्यमुहूर्तमपिविश्रमेत् ४५
किंतस्यान्येनधर्मेणकृतकृत्योहिजायते
संचितंयद्गृहस्थेनपापमात्मनिआाऽदिकं ४६

घर में वसें तो कुछ चिन्ता नही और रोग हीन युवा जो भिक्षु वह घर वसाने योग्य नहीं ४२

और वह उस स्थान को दोष लगता है और वृद्ध आदि को पीड़ा देता है और रोग हीन और युवा भिक्षु ब्रह्मचर्य से नष्ट होता है ४३

और ब्रह्मचर्य से नष्ट होकर कुल और गोत्र को नष्ट करता है जिसके घर में संन्यासी मैथुन को सेवै ४४

उस घर के स्वामी को जड़मूल से नष्ट करता है—और जिसके आश्रय में संन्यासी मुहूर्त मात्र भी वसे ४५

उसको अन्य धर्म से क्या है वह उसके विश्राम से ही कृत कृत्य होता है अपने देह में गृहस्थो ने जो पाप संचय (इकट्ठा) किया है ४६

विग्रहीष्पतितस्सर्वमेकरात्रोषितोयतिः
ध्यानयोगपरिश्रांतंयस्तुभोजयतेयतिं ४७
अखिलंभोजितंतेनत्रैलोक्यंसचराचरं
द्वैतंचैवतथाद्वैतंद्वैताद्वैतंतथैवच ४८
नद्वैतंनापिचाद्वैतमित्येतत्पारमार्थिकं
नाहंनैवतुसबंधोब्रह्मभावेनभावितः ४९
ईदृशायांत्ववस्थायामवाप्तंपरमंपदम्
द्वैतपक्षःसमाख्यातोयेद्वैतेतुव्यवस्थिताः ५०
अद्वैतानांप्रवक्ष्यामियथाधर्मःसुनिश्चितः

उस सब को एक रात्र वसा हुआ भी यति नष्ट कर देता है ध्यान और योग से श्रांत (थका) यति को जो जिमाता है ४७

उसने चर अचर सब त्रिलोकी को जिमाया और द्वैत (दो देखना) अद्वैत (एक ब्रह्मको देखना) और द्वैत और अद्वैत इन तीनों में ४८

न द्वैत है यही परमार्थिक (सच्चा) ज्ञान है न मैं हुं और न मेराहै न किसीसे सबंधहैं किन्तु मैं ब्रह्म रूप से स्थितहुं ४९

ऐसी अवस्था में परम पद प्राप्त होता है जो द्वैत में स्थित हैं उनका द्वैत पक्ष कहा है ५०

जो अद्वैत पक्ष वालोंका भलीप्रकार निश्चित धर्महैउसको कहता हुं इस में जो आत्माके विना द्वितीय को देखता है ५१

अत्रात्मव्यतिरेकेण्द्वितीयंयोविपश्यति ५१
अतःशास्त्राण्यधीयंतेश्रूयतेग्रंथविस्तरः
दक्षशास्त्रे यथाप्रोक्तमाश्रमप्रतिपालनं ५२
अधीयंतेतुयेविप्रास्तेयांतिपरलोकतां
यइदंपठतेभक्त्याश्रृणुयादपियोनरः ५३
सपुत्रपौत्रपशुमान्कीर्तिंचसमवाप्नुयात्
श्रावयित्वात्विदंशास्त्रं श्राद्धकालेपियोद्विजः ४४
अक्षय्यंभवतिश्राद्धं पितॄंश्चैवोपतिष्ठते

इतिदाक्षे धर्मशास्त्रेसप्तमोऽध्यायः

इतिदक्षस्मृतिःसमाप्ता

वही शास्त्रों को पढता है और ग्रंथों के विस्तार को सुन ता है दक्ष ऋषि के इस शास्त्र में कहे आश्रमों के प्रति पालन (रक्ष·) को ५२

जो ब्राह्मण पढते हैं वे परलोक को प्राप्त होते हैं जो इस को पढै अथवा जो अधम वर्ण भी इसको सुने ५३

पुत्र पौत्र और पशु वाला वह मनुष्य कीर्ति को प्राप्त हो ता है श्राद्ध के समय इस शास्त्र को जो द्विज सुनवाता है ५४

उसका श्राद्ध अक्षय होताहै और पितरों को प्राप्तहोता है

इति दक्षस्मृतौ ७ अध्यायः

समाप्तेयं स्मृतिः १५ वीं

श्रीगणेशायनमः अथगौतमस्मृतिप्रारंभः

वेदोधर्म्ममूलंतद्विदांचस्मृतिशीलेदृष्टोधर्म्मव्यतिक्रमःसा
हसचमहतांनतुदृष्टोर्थोपरदौर्बल्यात्नतुल्यबलविरोधेविक
ल्पाउपनयनंब्राह्मणस्याष्टमेनवमे पंचमेवाकाम्यंगर्भादिः
संख्यावर्षाणांतत्द्वितीयजन्मतद्यस्मात्स आचार्योवेदा
नुवचनाच्चएकादशद्वादशयोः क्षत्रियवैश्ययोःआषोडशा
द्ब्राम्हणस्यापतितासावित्रीद्वाविंशतेराजन्यरदृयव्यधिका

गौतमस्मृतिप्रारंभ १६

धर्म का मूल वेद है और स्मृति (मनु आदि) शील (अच्छा स्वभाव) भी धर्म के मूल हैं और धर्म का व्यतिक्रम (कुछ का कुछ) और साहस [बिना बिचारे करना] भी देखे हैं परन्तु महत्पुरुषों को कर्म का कोई दृष्ट (जो इस लोक में हो) अर्थ नहीं है और प्रवल और दुर्वल से तुल्य वल वाले शास्त्रों के बिरोध में विकल्प भी होते हैं अर्थात् जहां दो वाक्यों से दो प्रकार कर्म पाता हो वहां दोनों करने ब्राह्मण का यज्ञोपवीत आठवें वा नव में बर्ष में करना यदि ब्रह्मतेज की कामना होय तो पांचवें में वर्षों की गिनती गर्भ से लेनी—यज्ञोपवीत दूसरा जन्म है जिसमें आचार्य वेद का उपदेश करै है ग्यारवें बर्ष में वैश्य का यज्ञोपवीत करना सोलह वर्ष तक ब्राह्मण की बाईस तक क्षत्रिय की और चौवीस तक वैश्य की गायत्री

यावैश्यस्यमौंजीज्यामौर्वीसौत्र्योमेखलाक्रमशःकृष्णरुरुब
स्ताजिनानिवासांसिशाणक्षौमचीरकुतपाःसर्वेषांकार्पासं
चाविकृतंकाषायमप्येकेवार्क्षंब्राम्हणस्यमांजिष्ठहारिद्रेइ
तरयोः बैल्वपालाशौब्राम्हणस्यदंडौआश्वत्थपैलवौशेषे
यज्ञियोवासर्वेषांअपीडितायूपचक्राःसवल्कलामूर्द्धलला
टनासाग्रप्रमाणाः मुंडजटिलशिख जटाश्चद्रव्यहस्तउ
च्छिष्टोऽनिधायाचामेत् द्रव्यशुद्धिःपरिमार्जनप्रदाहतक्ष

पतित नही होता अर्थात् गौण अधिकार रहता है और मेखला (कोंदनी) क्रमसे मुंज का सूत की ज्या [प्रत्यंचा] की और मूर्वा कीहो तो है काले मृग की रुरुमृग की और मेंढे की चर्म और शण—रेशम—छाल कुशा इनके बस्त्र अथवा कोई यह कहे हैंकि तीनोंवर्णों को कपास के नवीन और गेरू में रंगे वस्त्र धारण करने अथवा मंजीठ वृक्ष के रंग का वस्त्र ब्राह्मण को और हलदी में रंगा क्षत्रिय बैश्य को धारण करना बेल और ढाक को दंड ब्राह्मण पीपल और पील [जाल वृक्ष) क्रम से क्षत्रिय और बैश्य धारें अथवा सब बर्ण किसी यज्ञ के वृक्ष का धारें और वे दंड फटे न हों और बकल सहित हों ब्राह्मण का दंड मूर्द्धातक और क्षत्रिय का मस्तक तक और बैश्य का नासिका तक प्रमाण का हो और तीनों मुंड जटिल और शिखा के विना मुंडन क्रम से करै यदि कोई द्रव्य हाथ में होय

निर्णेजनानितैजसमार्त्तिकदारवतांतवानांतैजसवदुपशा
लमणिशंखशुक्तीनांदारुवदस्थिभूम्योः आवपनंचभूमेः
चैलवद्रज्जुविदलचर्म्मणांउत्सर्गोवात्यंतोपहतानांप्राङ्मु
खोवाशौचमारभेत् शुचौदेशआसीनोदक्षिणंबाहुंजान्वं
तराकृत्वायज्ञोपवीत्यामणिबंधनात्पाणीप्रक्षाल्य वाग्य
तोहृदयस्पृशस्त्रिश्चतुर्वापआचामेत् द्विपरिमृज्यात्पादौ
चाभ्युक्षेत् खानिचोपस्पृशेच्छीर्षण्यानिमूर्द्धनिचदद्यात्
सुत्वाभुक्त्वाक्षुत्वाचपुनःदातश्लिष्टेषुदंतवदन्यत्रजिव्हा

और उच्छिष्ट होजाय तो उसको नीचे रक्खे विना आचमन
धातु–मट्टी–काष्ट सूतक इन चारों द्रव्यों की शुद्धि क्रम से
मांजने दग्ध करने–छीलने और और धोने से होती है और
पत्थर मणि–शंख–सीपी–इनकी शुद्धि तैजस (धातु) के
समान है–हाड़ और भूमि की शुद्धि काष्ट के समान है और
भूमि की बोने से भी होती है रज्ज बद्दिल (वांस का पात्र) इन
की शुद्धि वस्त्र के समान है और अथवा अत्यन्त भ्रष्ट होय तो
त्याग दे–पूर्व अथवा उत्तर को मुख करके शौच का प्रारंभ करै
शुद्ध देश में बैठा दाहिनी भुजा को गोड़ों के बीच करके और
यज्ञो पवीत धारे हुये गट्टों तक दोनों हाथ धोकर मौन धारे हुये
और हृदय का स्पर्श किये तीन वा चार बार जलों का आचमन
करै दो वार मुख का मार्जन करै और पैरों को छिड़के–और

भिमर्शनात् प्राक्च्युतेरित्येकेच्युतेष्वास्त्रावद्विद्यान्नि गिरन्नेवतच्छुचिः नमुख्याविप्रुषउच्छिष्टंकुर्वंतिताश्चेदं गेनिपतंति लेपगंधापकर्षणेशौचममेध्यस्यतदद्भिः पूर्वं मृदाचमूत्रपुरीषरेतोविस्त्रंसनाभ्यवहारसंयोगेषुचयत्रचा म्नायोविदध्यात्पाणिनासव्यमुपसंगृह्याङ्गुष्ठमधीहिभो इत्यामंत्रयेतगुरुः तत्रचक्षुर्मनःप्राणोपस्पर्शनंदर्भैःप्राणा यामास्त्रयःपंचदशमात्राःप्राक्कूलेष्वासनंच ओं पूर्वाव्याहृ तयःपंचसप्तांतागुरोःपादोपसंग्रहणंप्रातर्ब्रह्मानुवचनेचा द्यंतयोरनुज्ञातउपविशेत् प्राङ्मुखोदक्षिणतःशिष्यउद

शिरके सातों छिद्रों का स्पर्श करै और मूर्द्धा पर भी जलका स्पर्श करै शयन भोजन और छींक कर भी फिर आचमन करै यदि जिह्वा से स्पर्श न होय तो दांतों में लगा अन्नादि दांतों के समानहै और कोई यह कहतेहैं इतने दांतोंसे पृथक् न हो तब तक दांतों के समान है और दांतों से पृथक् होने पर आस्त्राव (मुख से जल गिरना वा मूत्र) के समान है इससे उसके मुख से वाहर गेरने से शुद्धि होता है जो मुख की बूंद अपने अंग पर गिरें तो वे अशुद्ध नहीं करती—अशुद्ध वस्तु का लेप और गंध दूर करने के लिये शौच करै—यदि अपवित्र वस्तु लगी हो वा मूत्र—विष्ठा—मैथुन वा वीर्य स्कलित होजाय भोजन इनमें अथवा जहां वेद वा स्मृतियों में कहा हो वहां मट्टी और जल से शौच करै अपने हाथ से शिष्य का दाहिने

ङ्मुखोवासावित्रींचानुवचनमादितोब्रह्मण आदाने ओं का
रस्यान्यत्रापि अंतरागमनेपुनरुपसदनेश्वनकूलमंडूकस
र्पमार्ज्जाराणांत्र्यहमुपवासोविप्रवासश्च प्राणायामाघृ
तप्राशनंचेतरेषां श्मशानाभ्यध्ययनेचैवम्

इतिश्रीगौतमीयेधर्म्मशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः १

हाथ का अंगूठा में पकड़ कर भो शिष्यत् पठ ऐसे गुरु वुलावे—और शिष्य गुरुमें नेत्र और मन को लगाकर कुशाग्रों से अपने प्राणों (हृदय) का स्पर्श और तीन प्राणायाम करे और पंद्रह बूंद जल आचमन का प्रमाण है और पूर्व को है अग्रभाग जिन का ऐसी कुशाग्रों का आसन हो और उँकार है पूर्व जिनके ऐसी पांच वा सात व्याहृति होती है प्रातःकाल और वेदपाठ के आद्यन्त में गुरु के पेरों को शिष्य ग्रहण करे और गुरु की आज्ञा से गुरु को दक्षिण और पूर्व अथवा उत्तर को मुख करके शिष्य वैठे और प्रथम गायत्री और वेद अथवा ओंकार के ग्रहण (पढ़ने) में भी ऐसे ही बैठे—यदि कुत्ता मेंडक—सांप—बिलाव ये पढने के समय गुरु और शिष्य के बीच को निकल जांय तो ब्राह्मण तीन दिन वन में वसकर उपवास करे और क्षत्रिय और वैश्य आदि प्राणायाम और घृत का भोजन करे और श्मशान के समीप पढने में भी यही प्रायश्चित्त है ॥

इति गौतम स्मृतौ १ अध्यायः

प्रागुपनयनात्कामचारवादभक्षः अहुतोब्रह्मचारीयथोप
पादमूत्रपुरीषोभवति नास्याचमनकल्पोविद्यतेअन्यत्राप-
मार्ज्जनप्रधावनावोक्षणेभ्योनतदुपस्पर्शनादशौचं नत्वेवै
नमग्निहवनबलिहरणयोर्नियुंज्यात् नब्रह्माभिव्याहरे
दन्यत्रस्वधानिनयनात् उपनयनादिनियमःउक्तंब्रह्मचर्यं
अग्नीधनभैक्षचरणेसत्यवचनंअपामुपस्पर्शनंएकेगोदाना
दिवहिःसंध्यार्थंतिष्ठेःपूर्वमासोतोत्तरांसज्योतिष्याज्योति
षोदर्शनाद्वाग्यतनआदित्यमीक्षयेतवर्ज्जयेन्मधुमांसगंध

यज्ञोपवीत से पहिले बोलने और भोजन में कामचार है (नियम नहीं) और ब्रह्मचर्य भी नही हैं चाहै जेसे मूत्र पुरीष (विष्ठा) में आचरण करै और आचमन का समूह भी इसको नही है किन्तु मार्जन धोना और जल के छिड़कने के विना और अशुद्ध बालक के स्पर्श से अशुद्धि भी नहा होती और इसको अग्निहोत्र बलिवैश्वदेव में भी न लगावे और स्वधानियन (पिंडदान) के विना वद का उच्चारण भी न करावे—यज्ञोपवीत को आदि से ये नियम है कि जो ब्रह्मचर्य कहा है व करे अग्नि की रक्षा—इंधन भिक्षा मांगना सच बोलना जलों से आचमन करना कोई इन नियमों को गोदान (१६ सोलह वर्ष का मुन्डन) से कहते हैं—कि संध्या के लिये ग्राम से वाहर जाय और प्रातःकाल की संध्या उस समय करै जिस समय तारागण हों और सायंकाल की तारागणों के उदय होने पर मौन होकर

माल्यदिवास्वप्नांजनाभ्यंजनयानोपानच्छत्रकामक्रोध लोभमोहवाद्यवादनस्नानदंतधावनहर्षनृत्यगीतपरिवादभयानि गुरुदर्शनेकंठप्रावृतावसक्थिकायाश्रयणापादप्रसारणानिनिष्ठीवितहिंसनविजृंभितास्फोटनानिस्त्रीप्रेक्षणालंभनेमैथुनशंकायांधूतंहीनसेवामदत्तादानंहिंसा आचार्यतत्पुत्रस्त्रीदीक्षितनामानिशुष्कांवाचंमद्यं नित्यंब्राम्हणःअधःशय्याशायीपूर्वोत्थायीजघन्यसंवेशीवाक्बाहूदरकर्म्मसंयतःनामगोत्रेगुरोःसंमानतोनिर्दिशेत् अर्च्चिते

करै और सूर्य को न देखै और मदिरा—मांस—गंध-फलमाला दिन में सोना—अंजन उबटना यान (सवारी) जूता, छत्री, काम—क्रोध लोभ मोह बाजाबजाना अति स्नान—दतौन, हर्ष (आनन्द) नाचना, गाना, निंदा, और भय इन मदिरा आदि सब को बर्ज दे और गुरु के देखते कंठ को रोके गोड़े उठाकर बैठना और पैरों का फैलाना थूकना, हंसना, जंभाई लेना—आस्फोटन (अंग को हाथ से बजाना) इनको बर्ज दे—स्त्री को देखना और स्पर्श करना और मैथुन शंका और जूआ नीच की सेवा विना दिये लेना—हिंसा आचार्य और आचार्य के पुत्र और स्त्री और दीक्षित इनके नाम का लेना रूखी वाणी और मदिरा इनको भी बर्ज दे—ब्राह्मण नित्य भूमि पर सोवे गुरु से पहिले उठे और नीचे आसन पर बैठे वा सोवे वाणी भुजा और उदर इनको बश में रक्खै और गुरु के नाम और गोत्र सत्कार से ले और इसी प्रकार पूजा के योग्य उत्तम में भी

श्रेयसिचैवंशय्यासनस्थानानिविहायप्रतिश्रवणंअभिक्र
मंवचनाद्दृष्टेनअधःस्थानासनस्तिर्यग्वा तत्सेवायांगुरुदर्श
नेचोत्तिष्ठेत् गच्छंतमनुव्रजेत्कर्म्मविज्ञाप्याख्यायाऽहूता
ध्यायीयुक्तःप्रियहितयोस्तद्भार्यापुत्रेषुचैवं नोच्छिष्टाशन
स्नपनप्रसाधनपादप्रक्षालनोन्मर्दनोपसंग्रहणानिविप्रो
ष्योपसंग्रहणंगुरुभार्याणांतत्पुत्रस्यचनैकेयुवतीनांव्यवहा
रप्राप्तेनसार्ववर्णिकंभैक्षचरणमभिशस्तंपतितवर्ज्जंआदि
मध्यांतेषुभवच्छब्दःप्रयोज्योवर्णानुपूर्व्येण आचार्यज्ञाति

आचरण करै परन्तु नीचे शय्या आसन और स्थान इनको छोड़ कर—गुरु के बचन का श्रवण और सन्मुख गमन के वचन से गुरु आदि के देखै पीछे बैठा न रहै और तिरछा भी न रहै और गुरु की सेवा और दर्शन में खड़ा होजाय और गुरु के चलने पर पीछे चलै और गुरु को अपना काम जताय और कह कर गुरु जब बुलावै तब पढा करै और गुरु के प्रिय और हित में युक्त रहैं और उच्छिष्ट भोजन, स्नान कराना प्रसाधन (वेश बनाना) पैर धोना—उबटना पैरों का स्पर्श इनको छोड़कर गुरु कीस्त्री और पुत्र में भी पूर्वोक्त आचरण करै और परदेश से आकर गुरु की स्त्रियों और पुत्रों के भी पैरों का स्पर्श करै और कोई यह कहते हैं कि युवती गुरु की स्त्रियों का न करै और व्यवहार (न्याय) से प्राप्त हुए द्रव्य की भिक्षा सब वर्णों से हिंसक और पतित को छोड़ कर मांगे और

गुरुस्वेच्छालाभेऽन्यत्र तेषांपूर्वंपरिहरेत्निवेद्यगुरवेनुज्ञा
तोभुंजीतअसंनिधौतद्भार्यापुत्रसब्रम्हचारिसभ्य:वाग्य
तस्तृप्यन्नलोलुप्यमानस्सन्निधायोदकंस्पृशेत्शिष्यशिष्टि
रवधेनाशक्तौरज्जुवेणुविदलाभ्यांतनुभ्यांअन्येनघ्नन्रा
ज्ञाशास्य: द्वादशवर्षाण्येकवेदेब्रम्हचर्य्यंचरेत् प्रतिद्वादश
सर्वेषुग्रहणातंवाविद्यांतेगुरुरर्थेननिमंत्र्य:कृतानुज्ञातस्य

आदि (भवति भिक्षां देहि) मध्य (भिक्षां भवति देहि) अन्त (भिक्षा देहि भवति) में भवत शब्द को ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ये तीनों वर्ण क्रम से कहैं और यदि आचार्य ,जाति गुरु इनसे अन्यत्र अपनी इच्छा [भोजन) पूरी होजाय तो इनमें से पहिले पहिले को वर्ज दे और भिक्षा का अन्न गुरु को निवेदन कर उनकी आज्ञा से भोजन करै परन्तु गुरु की स्त्री पुत्र संगपढने वाले सज्जन इनके समीप मौन होकर चचलता को छोड़ कर भोजन करै और भोजन को रखकर जलसे आचमन न करै गुरु शिष्य को ऐसी ताड़ना करै जिससे वध (हिंसा) नहो और अशक्त को रस्सी वेंत, वांस, वा हाथ आदि से शिक्षा करै यदि अन्य से करै तो राजा गुरु को दंड दे एक वेद के पढने में वारह वर्ष ब्रह्मचर्य धारै और प्रति वेद में इसी प्रकार ब्रह्मचर्य है अथवा जव तक वेद को पठसके और विद्या के अन्त में धन देने के लिये गुरु की प्रार्थना करै आज्ञा से ही

वास्नानं आचार्यः श्रेष्ठो गुरूणां मातेत्येके
इतिगौतमीये द्वितीयोऽध्यायः
तस्याश्रमविकल्पमेके ब्रुवते ब्रम्हचारीगृहस्थोभिक्षुर्वैखानसइतितेषांगृहस्थोयोनिरप्रजनत्वादितरेषांतत्रोक्तंब्रम्हचारिणः आचार्याधीनत्वमात्रंगुरोःकर्म्मशेषेणजपेत् गुर्वभावेतदपत्यवृत्तिस्तदभावेवृद्धे सब्रम्हचारिण्यग्नौवा एवंवृत्तोब्रम्हलोकमेवाप्नोतिजितेंद्रियःउत्तरेषांचैतदविरोधी अनिचयोभिक्षु ऊर्ध्वरेताध्रुवशीलोवर्षासुभिक्षार्थीग्राममि

गृहस्थाश्रम के लिये स्नान करै संपूर्ण गुरुओं में आचार्य श्रेष्ठ है और कोई माता को श्रेष्ठ कहते हैं ॥
इति गौत्तमस्मृतौ २ अध्यायः
कोई ब्रह्मचारी को इस प्रकार आश्रमों का विकल्प कहते हैं कि ब्रह्मचारी—गृहस्थ—भिक्षु—वैखानस इस क्रमसे इन सबका गृहस्थ मूल है क्योंकि अन्य तीनों में संतान नहीं होती—और तिन चारों में ब्रह्मचारी की आधीनता हो कही है गुरु के लिये कर्म को करके ही वह लोकों को जीतता है और गुरु न होय तो गुरु का पुत्र वह भी न होय तो वृद्ध गुरु का शिष्य अथवा अग्नि की सेवा इस प्रकार आचरण करता हुआ जितेन्द्रिय भिक्षु ब्रह्मलोक में हो जाता है और यह भिक्षुक पिछले तीनों [गृहस्था भिक्षुक वैखान से] का विरोधी न हो संचय न करै ऊर्द्ध्वरेताः [वीर्य जिसका मस्तक से न गिरे] और वर्षाकाल में ध्रुवशील (चले फिरै नहीं) रहै और भिक्षाके लिये

थात् जघन्यमनिवृतंचरेत् निवृत्ताशीर्वाक्चक्षुःकर्म्मसंयतः कौपीनाच्छादनार्थंवासोबिभृयात् प्रहीणमेकेनिर्णेजना विप्रयुक्तमौषधीवनस्यतीनामंगमुपाददीतनद्वितीयाम त्तुं रात्रिंग्रामेवसेत् मुंडःशिखीवावर्ज्जयेज्जीववधंसमो तेषुहिंसानुग्रहयोरनारंभो वैखानसोवनेमूलफलाशीत पःशीलःश्रावणकेनाग्निमाधायअग्राम्यभोजीदेवपितृमनुष्यभूतर्षिपूजकःसर्व्वातिथिःप्रतिषिद्धवर्ज्जंभैक्ष्यमप्युपयुंजीतनफालकृष्ठमधितिष्ठेत् ग्रामंचनप्रविशेत्जटिलश्चो

ग्राम में जाय और नीचों को छोड़कर उत्तमों से भिक्षा मांगे किसी से आशीर्वाद न चाहे और वाणी नेत्र और अपना कर्म इनको छिपावे कोपीन आच्छादन (ओढना) के वस्त्र को धारण करे कोई यह कहे हैं कि किसी के त्यागे उस वस्त्र को धारे जो निर्मल और नवीन हो अथवा औषधी वा वनस्पति के अंग (वक्कल) को धारे और भोजन के लिये दूसरी रात्रि में ग्राम में न वसे और मुंड रहे अथवा शिखी [सब केशवाला] जीवकी हिंसा वर्ज दे और अपने समानों में हिंसा और दया के लिये उद्योग न करे वैखानस के धर्म हैं कि वन के मूल वा फल खावे श्रावण में (तपस्वियों की) अग्नि रख कर तप करे ग्राम में भोजन न करे देव पितर—मनुष्य—ऋषि इनको पूजे और निषिद्धों को छोड़कर सबका अतिथि बने भिक्षा को भी मांग ले परन्तु जोतने से जो पैदा हो उस अन्न को न खावे और

राजिनवासाःनातिसांवत्सरंभुंजीतऐकाश्रम्यंत्वाचार्याःप्र
त्यक्षविधानात्गार्हस्थस्य

इतिगौतमेतृतीयोध्यायः

गृहस्थःसदृशींभार्याविंदेतानन्यपूर्वांयवीयसीं असमान
प्रवरैर्विवाहऊर्ध्वंसप्तमात्पितृबंधुभ्योजीविनश्चमातृबं
धुभ्यःपंचमात् ब्राह्मोविद्याचारित्रबंधुशीलसंपन्नायदद्या
दाछाद्यालंकृतांसंयोगमंत्रः प्राजापत्येसहधर्मंचरतामि

ग्राम में भी न जाय जटाओं को धारै चीर (मार्ग में जो पड़े हों) वा मृगछाला के वस्त्र रक्खे वर्षदिन से अधिक के अन्नको न खावे गृहस्थ को प्रत्यक्ष विधि से ऐकाश्रम्य(मुख्य आश्रम) आचर्य कहते हैं ॥

इति गौतमस्मृतौ ३ अध्यायः

गृहस्थ ऐसी भार्या को विवाहै जो अपने समान हो—जिसका किसो के संग संबंध न हुआ हो—जो युवती हो जो जो अपने प्रवर की न हो—और पिता के वंधुओं की सातवीं पोठी से ऊपर और माता के वंधुओं की पांचवी पीठी से ऊपर बिवाह होता है—बिद्या—अच्छा आचरण—वंधु—शील इनसे संपन्न (युक्त) को जो कन्या देनी वह ब्राह्म १ बिवाह है कपड़ों से आच्छादन और भूषणों से शोभित करके (सह धर्म चरताम् तुम दोनों संग संग धर्म करो) इस मंत्र सें जो कन्या देनी वह प्राजापत्य २ बिवाह है कन्या के पिताको दो गौ देकर जो कन्या

ति आर्षं गोमिथुनं कन्यावनेदद्यात् अंतर्वेद्यृत्विजेदानं दैवो लंकृत्येच्छंन्त्याःस्वयंसंयोगोगांधर्व्वः वित्तेनातिस्त्रीमता मासुरःप्रसह्यादानाद्राक्षसः असंविज्ञानोपसंगमनात्पैशा चः चत्वाराधर्म्माःप्रथमाःषडित्येके अनुलोमानंतरैकांतर द्व्यंतरासुजाताः सुवर्णांबष्ठोग्रनिषाददौष्यंतपारशवाः प्रतिलोमासुसूतमागधायोगवक्षत्तृवैदेहकचांडालाःब्राह्म

विवाही जाय वह आर्ष ३ बिवाह हैं—वेदी पर बैठे ऋत्विज को अलंकार करके कन्या को जो दे वह दैव बिवाह है—परस्पर स्वयंइच्छा से जो संयोग होजाय वह गांधर्व बिवाह है—अधिक स्त्री वाले मनुष्य कोधन देकर जो बिबाह करें वह आसुर ६ बिवाह है—बल से जो कन्या को ले आना वह राक्षस ७ बिवाह अज्ञान (बेज्ञान) कन्या के समीप जाकर जो कन्या को लेआना वह पैशाच ८ बिवाह है—इन आठों में पहिले चार धर्म के हैं और कोई पहिले छःही को धर्म के कहते हैं—अनंतरअनुलोम क्षत्रिया) एक का जिसमें अंतर हो ऐसा अनुलोम (वैश्या) और दोका जिसमें अंतर हो ऐसा अनुलोम (शूद्रा) इन स्त्रियों में ब्राह्मण आदि से पैदा हुये पुत्र ये होते हैं विप्र से सुनार अम्बष्ठ क्षत्रिया क्षत्री से उग्रनिषाद वैश्या में दौष्यंत और पारशव वैश्य से शूद्रा में जन्म हैं और नहीं की प्रतिलोम स्त्रियों में ब्राह्मण में क्षत्री से सूत मागध—क्षत्रिया में वैश्य से अयोगव क्षत्त— और वैश्या में शूद्र से वैदेहक चांडाल होते हैं कोई यह कहते हैं कि ब्राह्मणी क्रम से चारों वर्णों के पतियों से इन पुत्रों को

णयजीजनत्पुत्रान्वर्णेभ्यश्चानुपूर्व्यात् ब्राह्मणसूतमागध चांडालान् तेभ्यएवक्षत्रियामूर्धावसिक्तक्षत्रियधीवरपुल्क सान् तेभ्यएववैश्याभूज्जकंटकमाहिष्यवैश्यवैदेहान्तेभ्य एवपारशवयवनकरणशूद्रान्शूद्रेत्येकेवर्णांतरगमनमुत्क र्षापकर्षाभ्यांसप्तमेनपंचमेनचाचार्याःस्टष्ट्यंतरजातानां च प्रतिलोमास्तुधर्म्महीनाःशूद्रायांचअसमानायांचशूद्रा त्पतितवृत्तिःअंत्यःपापिष्ठःपुनंतिसाधवःपुत्रास्त्रिपौरुषा

पैदा करती है कि ब्राह्मण से ब्राह्मण क्षत्रिय से सूत—वैश्य से मागध और शूद्र से चांडाल और तिन से ही क्षत्रिया ब्राह्मण से मूर्द्धावसिक्त क्षत्रिय से क्षत्रिय वैश्य से धीमर और शूद्र से पुष्कस को पैदा करती है और तिन से ही वैश्या विप्र से भूज्ज कटक [भज्जी] और क्षत्रिय से माहिष्य और वैश्य से वैश्य और शूद्र से वैदेह को पैदा करती है और तिनसे शूद्रा ब्राह्मण से पारशव क्षत्रिय से यवन वैश्य से करण और शूद्र से शूद्रको पैदा करती हैं कोई आचार्य यह कहते हैं कि छोटी और बड़ी जाति (वर्ण) के विवाह से सातवी वा पांचवी पीढी में दूसरा वर्ण होजाता है और सृष्टंयतर [अन्यवर्ण]में जो पैदा हुये हैं उन में प्रतिलोम और शूद्रा में उत्पन्न (ऊंचे वर्ण की कन्या में नीच वर्ण से पैदा हुये) और भिन्न वर्ण की स्त्री में जो शूद्रसे हो वह पतित वृत्ति और पापी और अन्त्यज हैं और सज्जन पुत्र तीन २ पीढी तक आर्ष और दैव विवाह से जो पुत्र हों वे दश २ पिछली पीढियों को और प्राजापत्य से जो पुत्र हो वह दश पिछली और दश अगली पीढियों को और ब्राह्म विवाह से

नार्षाद्दशदैवाद्दशैवप्राजापत्याद्दशपूर्वान्दशापरानात्मना च ब्राम्हीपुत्राःब्राम्हीपुत्राः

इतिगौतमीयेचतुर्थोऽध्यायः ४

ऋतावुपेयात्सर्वत्रवाप्रतिषिद्धवर्जंदेवपितृमनुष्यभूतर्षिपूजकःनित्यस्वध्यायःपितृभ्यश्चोदकदानं यथोत्साहमन्यद्भार्यादिराग्निर्दायादिर्वातस्मिन्गृह्याणिदेवपितृमनुष्ययज्ञाःस्वाध्यायश्चबलिकर्माग्नावग्निर्धन्वंतरिर्विश्वेदेवाप्रजापतिःस्विष्टकृदितिहोमःदिग्देवताभ्यश्चयथास्वद्वारेषुमरुद्भ्योगृहदेवताभ्यःप्रविश्यब्रह्मणेमध्येअद्भ्यउदकुंभे

जो हों वे पूर्वोक्त बीस पीठी और अपने को पवित्रकरते हैं।

इति गौतमस्मृतौ ४ अध्यायः

ऋतु (रजो दर्शन से १६ रात्रि) काल में, अथवा निषिद्ध (मावस) आदि को छोड़ कर सदा स्त्री का संग करै और देवता पितर मनुष्य—भूत—ऋषि इनको पूजे नित्य वेद पढ़े और पितरों को जलदे और उत्साह के अनुसार अन्य कर्म को भी करै स्त्री—अग्नि—दायाद (पुत्र आदि) होंय तो गृहस्थ के कर्म होते हैं देव पितर मनुष्य और स्वाध्याय और बलि वैश्वदेव ये यज्ञ हैं—और अग्नि में अग्नि—धन्वंतरि—विश्वेदेवा प्रजापति स्विष्टकृत्—इनके निमित्त होम होता है दिशाओं के देवताओं को उस २ दिशा के द्वार पर अन्न दे जिस२ दिशा का जो स्वामी हो—मरुत् ५० और घर के देवता इनको भी

आकाशायेत्यंतरिक्षेनक्तंचरेभ्यश्चसायं स्वस्तिवाच्यभि
क्षादानप्रश्नपूर्वंतुददातिषुचैवंधर्म्मेषुसमद्विगुणसाहस्रानं
त्यानिफलान्यब्राम्हणब्राह्मणश्रोत्रियवेदपारगेभ्यःगुर्वर्थं
निवेशौषधार्थवृत्तिक्षीणयक्ष्यमाणाध्ययनाध्वसंयोगवैश्व
जितेषुद्रव्यसंविभागोबहिर्वेदिभिक्षमाणेषुकृतान्नमितरे
प्रतिश्रुत्यान्यधर्म्मसंयुक्तायनदद्यात्क्रुद्धहृष्टभीतार्तलुब्ध
बालस्थवीरमूढमत्तोन्मत्तवाक्यान्यनृतान्यपातकानि भो
जयेत्पूर्वमतिथिकुमाररव्याधितगर्भिणीसुवासिनीस्थवि

द्वार पर अन्न दे—घरके भीतर प्रवेश करके ब्रह्मा को मध्य में दे—जलको घट पर दे, अकाश को अन्तरिक्ष में दे और नक्तं चरों (राक्षस) को सायंकाल में दे, ब्राह्मण से स्वस्ति पढ़वाय कर देना वा अब्राह्मण को देने में और इसी प्रकार के धर्मों में सम (उतनाही) फल है और भिक्षा से वा ब्राह्मण को पूर्वोक्त देने वा धर्म में दूना दानधर्मकी वृद्धि से वा श्रोत्रिय को देने व धर्म में सहस्रगुना और प्रश्न पूर्व (बलाकर) देने वा वेद के पारगामी के देने में अनन्त फल होता है, गुरु और भोगता और औषधि इनके लिये और जो जीवका से हीन हो और जो यज्ञ कर्ता हो पढना मार्ग विश्व जित यज्ञ इनमें द्रव्य को देना भिक्षकों को वेदी से बाहिर और अन्यों को पकान्न देन और देने की प्रतिज्ञा करके भी अन्य के धर्म को करते हुए मनुष्य को न दे और क्रोधी आनंदी भीत (डरपोक) रोगी लोभी बालक वृद्ध मूढ मत्त और उन्मत्त इनके झूटे वचनों को पातक नहीं हैं अतिथि बालक रोगी गर्भवाली स्त्री सुहागिन

रान्जघन्यांश्चआचार्यपितृसखीनांचनिवेद्यवचनक्रियाः ऋत्विगाचार्यश्वशुरपितृमातुलानामुपस्थानेमधुपर्कः सं वत्सरेपुनर्यज्ञविवाहोरर्व्वाक्राज्ञश्चश्रोत्रियस्यतुपाद्यम र्घ्यमन्नविशेषांश्चप्रकारयेत् नित्यंवासंस्कारविशिष्टंमध्य तोन्नदानवैद्येसाधुवृत्ते विपरीतेषुतृणोदकभूमिःस्वागत न्ततःपूज्यानत्याशश्चशय्यासनावसथानुव्रज्योपासनानि संदृक्श्रेयसोःसमानानिअल्पशोपिहीनेअसमानग्रामोति

अपने से बड़े और छोटे इनको पहले जिमाकर गृहस्थी भोजन करै और आचार्य पिता और मित्र इनको निवेदन करिके किसी कर्म को करें ऋत्विक आचार्य श्वशुर पिता मामा इनकी पूजा में वरस दिन में एक वार मधुपर्क यज्ञ और बिवाह में राजा से पहले वेद पाठीको मधुपर्क दे और जो वेद न पढा हो उसको आसन और जल दे, और वेदपाठी को पाद्य [पैर धोने को जल] अर्घ और नाना प्रकार के अन्न इनको बनवाकर दे और अच्छे वैद्य को वनाए हुए अन्न में से प्रति दिन अन्न दे और जो वैद्य अच्छा नहीं हो तो तृण जल भूमि इनको दे और कुछ न हो तो स्वागत जरूर करैं और पूजा के योग्य का अवलंघन करिके भोजन न करै और शय्या आसन घर पीछे चलना सेवा ये अपने समान [मित्र] और उत्तम मनुष्य इन दोनों के लिये एक भाव से करैं और जो अपने से हीन हो उसको पूर्वोक्त सत्कार अल्प करैं जो अपने

थिरेकरात्रिकोधिवृक्षसूर्योपस्थायीकुशलामयारोग्याणा मनुप्रश्नोंत्यशूद्रस्याब्राम्हणस्यनातिथिरब्राह्मणेयज्ञेसंवृ तश्चेत् भोजनंतुक्षत्रियस्योर्ध्वंब्राह्मणेभ्यःअन्यान्भृत्यैः सहानृशंसार्थमानृशंसार्थं

इतिगौतमीयेपंचमोऽध्यायः ५

पादोपसंग्रहणंगुरुसमवायेन्वहंअभिगम्यतुविप्रष्यमातृपि तृतद्बंधूनांपूर्वजानांविदयागुरूणांचसन्निपातेपरस्यस्वना म प्रोच्याहमयमित्यभिवादोऽज्ञसमवायेस्त्रीपुंयोगेभिवाद

ग्राम का न हो किसी वृक्ष के नीचे एक रात्रि वसता हो और सूर्य की स्तुति करता हो उसे अतिथि कहते हैं और उसको कुशल और आरोग्य पूछना अत्यज और शूद्र इनका अतिथि ग्राम में न हो और यज्ञ में अच्छे आचरण वाले ब्राह्मण से अन्य भी अतिथि होता है परन्तु क्षत्रिय को ब्राह्मणों के पीछे और अन्य जातियों को भृत्यों के संग अपनी अकठोरता के लिये भोजन करावे ॥

इति गौतमस्मृतौ ५ अध्यायः

गुरुओं के समीप आने पर प्रति दिन पैरों को ग्रहण करना यदि देश से माता पिता और इनके बंधु और जेठे भाई और विद्यागुरु आये हों तो सन्मुख जाकर पैरों को ग्रहण करके यदि ये इकट्ठे मिले तो इनमें से परलेके पैरों को पहिले ग्रहण करे और यह मैं (संकरदत्त) नमस्कार करता

तोऽनियममेकेनाविप्रोष्यस्त्रीणाम्मातृपितृव्यभार्याभगि
नीनांनोपसंग्रहणंश्वश्र्वाश्चऋत्विक्श्वशुरपितृव्यमातु
लानांतुयवीयसांप्रत्युत्थानमनभिवाद्याःतथान्यःपौर्वःपौ
रोशीतिकावरःशूद्रोप्यपत्यसमेनअवरोप्यार्थःशूद्रेणनाम
चास्यवर्ज्जयेत् राज्ञश्चाजयःप्रेष्यःभोभवन्निति वयस्यः
समानेहनिजातोदशवर्षवृद्धःपौरःपंचभिःकलाधरःश्रोत्रि
यश्चारणस्त्रिभिःराजन्यवैश्यकर्म्मविद्याहीनाःदीक्षितश्च

हुं इस प्रकार अपने नाम को कहिकर नमस्कार करना और कोई यह कहते हैं कि मूर्खों के समागम और स्त्री पुरुष के मेल में पूर्वोक्त प्रकार से नाम लेकर नमस्कार का नियम नहीं और जो स्त्री परदेश से आई हो अथवा माता—चाचा—ताई भगिनी—भाई की स्त्री—सासु—इनके पैरों का ग्रहण न करे और अपने से छोटे ऋत्विज—श्वसुर—चाचा—मामा—और अपने से दश बर्ष बड़ा अन्यजाति पुरवासी होय तो इनको देखकर उठै परन्तु नमस्कार न करै—और अस्सी बर्ष का भी अपने पुत्र के समान वैठाने योग्य है और उसका नाम भी शूद्र के समान न ले और जो राजा का भृत्य अजय (जिसे कोई जीत न सके) हो उसको भी भवन् एसे कहिकर बोले—जो एक दिन में पैदा हुआ होय उसे वयस्य और पांच वर्ष अपनेसे बड़ा होयउसे कलाधर वा श्रोत्रिय और तीन बर्ष बड़े को चारण कहते हैं और कर्म बिद्या से हीन क्षत्रिय—वैश्य—और दीक्षित

श्राक्ष्यानुवित्तबंधुकर्मजातिविद्यावयांसिसामान्यानिपर बलीयांसिश्रुतंतुसर्व्वेभ्योगरीयस्तन्मूलत्वाद्धर्मस्यश्रुतेश्च चक्रीदशमीस्थोनुग्राह्यःवधूस्नातकराजभ्यःपथोदानंराज्ञा तुश्रोत्रियाय

इतिगौतमीयेषष्ठोऽध्यायः ६

आपत्कल्पोब्राह्मणस्याब्राह्मणविद्योपयोगोनुगमनंशु श्रूषासमाप्तेर्ब्राह्मणोगुरुःयाजनाध्यापनप्रतिग्रहाःसर्व्वे षांपूर्वःपूर्वोगुरुःतदभावेक्षत्रवृत्तिःतदभावेवैश्यवृत्तिःतस्या

(यज्ञका कर्त्ता)और धन—बंधु—कर्म—जाति—विद्या अवस्था इन सब में परला परला बड़ा है—और वेद सब से बड़ा है— क्योंकि धर्म श्रुति का वही मूल है और रथवान् और नव्वे वर्ष से ऊपर का मनुष्य—दया का पात्र—वंधु स्नातक ब्रह्मचारी— ये राजा को मार्ग छोड़ दें और राजा वेद पाठी को मार्ग छोड़ दे॥

इति गौतम स्मृतौ ६ अध्यायः

आपत्तिकाल में ब्राह्मण अपने भिन्न जाति से भी विद्या पढे और पढन समय में उसके पीछे चले और सेवा करें परंतु जब विद्या समाप्त होजाय तब ब्राह्मण ही गुरु होता है और यज्ञ कराना और पढ़ाना प्रतिग्रह लेना ये सब ब्राह्मणों के धर्म है इन में पहिला पहिला श्रेष्ठ है यदि ब्राह्मण को यें आजीव का न मिलें तो क्षत्रिय की वृत्ति ले और वह भी न मिले तो वैश्य की वृत्ति से जीवका करे परंत ब्राह्मण गंध,रस—पक्का अन्न

पण्यगंधरसकृतान्नतिलशाणक्षौमाजिनानिरक्तनिर्णिक्ते
वाससीक्षीरंसविकारंमूलफलपुष्पौषधमधुमांसतृणोदका
पथ्यानिपशवश्चहिंसासंयोगेपुरुषवशाकुमारीवेहतश्चनि
त्यभूमिव्रीहियवाजाव्यश्वर्षभधेन्वनडुहश्चैकेविनिमयस्तु
रसानांरसैःपशूनांचनलवणाकृतान्नयोस्तिलानांचसमेना
मेनतुपक्कस्यसंप्रत्यर्थेसर्वधातुवृत्तिरशक्तावशूद्रेणतदप्ये
केप्राणसंशयेतद्वर्णसंकराभक्ष्यनियमस्तुप्राणसंशयेब्रा
म्हणोपिशस्त्रमाददीत राजन्योवैश्यकर्म्मवैश्यकर्म्म

तिल—शण—मृगचर्म—रंगेवस्त्र—दूध—और दूध के बिका (पेड़े आदि) मूल फल फूल—औषधि से हत, मांस, तृण, जल अपथ्य की वस्तु और हिंसा के सयोग में (कसाई को) पशु पुरुष, बंध्या स्त्री, कुमारी—वेहत (जिसका गर्भ गिरजाता हो) और भमि—धान—यव—बकरी—भेंड—इनको न वेचें—और कोई यह कहते हैं कि ऋशभ (एक औषधि) गौ—बैल—इनको भी न वेचैं और रसका बिनिमय (पलटना) रसों से न करें पशु लवण, कृतान्न (पक्का अन्न,) तिल, इनका भी अदलो बदलो न करैं) और उसी समय भोजनके लिये कच्चे तुल्यअन्नसे पक्केका बदला तो करले और अशक्ति में सब धातुओं से आजीविक करैं परन्तु शूद्र के संग न करे और कोई यह कहते हैं कि प्राणों के संशय में शूद्र से भी करें परंतु वर्ण संकर अभक्ष्य का नियम रक्खें और प्राणों के संकट में ब्राह्मण भी शस्त्रों का धारे और क्षत्रिय वैश्य का कर्म करै २ ॥

इतिगौतमीयेसप्तमोऽध्यायः७

द्वौलोकेधृतव्रतौराजाब्राह्मणश्चबहुश्रुतःतयोश्चतुर्विध स्यमनुष्यजातस्यांतःसंज्ञानांचलनपतनसर्पणानामायत्तं जीवनंप्रसूतिरक्षणमसंकरोधर्म्मःसएषबहुश्रुतोभवतिलो कवेदवेदांगवित्वाकोवाक्येतिहासपुराणकुशलस्तदपेक्ष स्तद्वृत्तिः चत्वारिंशतासंस्कारैःसंस्कृतःत्रिषुकर्मस्वभिर तःषट्सुवासमयाचारकेस्वभिविनीतःषड्भिःपरिहार्योरा

इति गौतमस्मृतौ ७ अध्यायः

जगत् में दो वृत्त (श्रेष्ठ आचरण) करने वाले हैं १ राजा और २ बहुश्रुत ब्राह्मण और इन दोनों के आधीन इनका जीवन हैं कि चार प्रकार के (ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र) मनुष्ये अंतःसंज्ञों (अनुलोम प्रतिलोम) के संगजो चलना पढना अत्यन्त गमन करते हैं प्रसति (जाति) की जिससे रक्षा हो और जिस में संकर न हो उसे धर्म कहते हैं इसको बहुश्रुत कहते हैं कि जो लोक की रीति बेद वेदांग इनको जाने और वा को वाक्य (वेद का भाग) और इतिहास और पुराण इनमें कुशल हो इन्हो को जिसे अपेक्षा हो और इन्ही से जिस की आजीव का हो और जिसके चालीस संस्कार हुये हों और तीन कर्मों (यजन पठन दान) में वा छः कर्मों (तीन पिछले और याजन पाठन प्रतिग्रह) में तत्पर हो और जो समयर के आचरणों में भली प्रकार शिक्षित हो और जिसमें पूर्वोक्त छः कर्म नही वो

ज्ञावध्यश्चावध्यश्चादंड्यश्चाबहिष्कार्यश्चापरिवाद्यश्चा
परिहार्यश्चेति गर्भाधानपुंसवनसीमंतोन्नयनजातकर्म्म
नामकरणान्नप्राशनंचौलोपनयनंचत्वारिवेदव्रतानिस्ना
नंसहधर्म्मचारिणीसंयोगःपंचानांयज्ञानामनुष्ठानंदेवपि
तृमनुष्यभूतब्रह्मणामेतेषांचअष्टकापार्वणश्राद्धश्रावण्याग्र
हायणीचैत्र्याश्वयुजीतिसप्तपाकयज्ञसंस्थाअग्न्याधेयम
ग्निहोत्रंदर्शपौर्णमासौआग्रहायणंचातुर्मास्यानिनिरूढप
शुबंधसौत्रामणीतिसप्तहविर्यज्ञसंस्थाअग्निष्टोमोत्यग्नि
ष्टोमउक्थ्यःषोडशीवाजपेयोतिरात्रोऽप्तोर्यामइतिसप्त
सोमसंस्थाइत्येतेचत्वारिंशत्संस्काराः अथाष्टावात्मगु

राजा को मारने योग्य है और जिसमें छः कर्म हैं वह राजा को मारने योग्य दंड देने योग्य देश से निकालने योग्य निंदा करने योग्य नहीं हैं गर्भाधान पुंसवन सीमंत जात कर्म नामकरण कर्म अन्नप्राशन मुंडन यज्ञोपवीत और चारों वेदों के चारों व्रत, स्नान, और धर्म चारिणी का संयोग (विवाह) और देव यज्ञ पितृ यज्ञ मनुष्य यज्ञ भूतयज्ञ ब्रह्मयज्ञ इन पांचों यज्ञों का करना और अष्टका और पार्वणश्राद्ध और श्रावणी आग्रहणी (अगहन की १५) चैत्री १५ ये सात पाक यज्ञ के भेद और अग्निका आधान अग्निहोत्र दर्शयज्ञ पौर्णमास यज्ञ आग्रहायण यज्ञ चातुर्मास यज्ञ पशुबंधयज्ञ सौत्रामणि ये सात हविर्यज्ञ के भेद हैं और अग्निष्टोम अत्यग्निष्टोम उक्थ षोडशी वाजपेयअति रात्र आप्तोर्याम ये सात सोमयज्ञ के भेद हैं ये चालीस गर्भाधान

णा:दयासर्व्वभूतेषुक्षांतिरनसूयाशौचमनायासोमंगल
कार्प्पण्यमस्पृहेतियस्यैतेनचत्वारिंशत्संस्काराःनचाष्टा
वात्मगुणानसब्रह्मणःसालोक्यंसायुज्यंचगच्छति यस्य
तुखलुसंस्काराणामेकदेशोप्यष्टावात्मगुणाःअथसब्रह्मणः
सालोक्यसायुज्यंचगच्छतिगच्छति

इतिगौतमीयेअष्टमोध्यायः८

सविधिपूर्वंस्नात्वाभार्यामधिगम्ययथोक्तान्गृहस्थधर्मान्
प्रयुंजानइमानिव्रतान्यनुकर्षेतस्नातकःनित्य शुचिःसुग

आदि संस्कार हैं अब आत्माके आठ गुण कहते हैं सब भूतों में दया १ क्षमा २ दूसरे के गुणों में दोषों को न देखना ३ शौच ४ अनायास (परिश्रम को न मानना) ५ मंगल ६ कृपणता न करनी ७ इच्छा न करनी८ जिसके चालीस संस्कार नहीं और जिसमें आत्मा के आठ गुण नहीं वह ब्रह्माके सालोक्य वैकुंठ में वसना सायुज्य (ब्रह्म में मिलना) मुक्ति को प्राप्त नहीं होता और जिसके उक्त संस्कारों से थोड़े भी संस्कार हों और जिस में आत्मा के आठ गुण हों वह ब्रह्मको सालोक्य और सायुज्य मुक्ति को प्राप्त होता है ॥

इति गौतमस्मृतौ ८ अध्यायः

पहले बिधि से स्नान (जो गृहस्थ में जाने के लिये किया जाता है) करके और स्त्री को बिवाह कर शास्त्रोक्त गृहस्थ केधर्मों को कर्त्ता हुआ स्नातक [गृहस्थी] इन व्रतों को करे कि प्रति दिन शुद्ध रहै और सुगंध लगावे स्नान में शीलरक्खै और

धिःस्नानशीलःसतिविभवेनजीर्णमलवद्वासाःस्यात्नरक्त
मुल्वणमन्यधृतंवावासोबिभृयातनस्त्रगुपानहौनिर्णिक्त
मशक्तौनरूढश्मश्रु रकस्मान्नाग्निमपश्चयुगपद्धारयेत्
नापोमेध्येनसंसृजेत्नांजलिनापिबेत् नतिष्ठन्उद्धृतेनोद
केनाचामेत् नशूद्राशुच्येकपाण्यावर्जितेन नवाय्वग्निवि
प्रादित्यापोदेवतागाश्चप्रतिपश्यन्वामूत्रपुरीषामेध्यान्यु
दस्येत् नैतादेवताःप्रतिपादौप्रसारयेत्नपर्णलोष्टाश्मभि
र्मूत्रपुरीषापकर्षणंकुर्यात्नभस्मकेशनखतुषकपालामेध्या
न्यधितिष्ठेन्नम्लेच्छाशुच्यधार्मिकैःसहसंभाषेतसंभाष्य
पुण्यकृतोमनसाध्यायेत् ब्राम्हणेनवासहसंभाषेतअधेनु

धन होय तो फटे और मैले वस्त्र न पहरे और अत्यन्त लाल और दूसरे का पहरा हुआ वस्त्र भी न धारे और माला और जूता इनको न धारे और अशक्ति [असामर्थ्य) होय तो निर्णिक्त (जीर्ण) वस्त्र को न धारे और अग्नि जल एक वार धारण न करें अंजलि से और खड़ा होकर जल न पीवे आप निकासे हुए जल से आचमन करैं और शूद्र और अशुद्ध एक हात इनसे निकासे हुए जल से आचमन न करे और वायु अग्नि ब्राह्मण सूर्य जल देवता गौ इनको अपने सन्मुख देखता हुआ मूत्र विष्टा अमेध्य (थूक आदि) इनको न त्यागे और इन देवताओं के सन्मुख पैर न पसारे और पत्ते डेला पत्थर इनसें मूत्र और बिष्टे को दूर न करे और भस्म, केश, नख, तुस [भुसी] कपाल, अपवित्र वस्तु इन पर न बैठे और म्लेच्छ अशुद्ध

घ नुंभव्येतिब्रूयात् अभद्रं भद्रमितिकपालंभगालमितिम
णिधनुरितींद्रधनुःगांधयंतींपरस्मैनाचक्षीतनचैनांवारयेत्
नमिथुनीभूत्वाशौचप्रतिविलंबेतुनचतस्मिन्शयनेस्वाध्या
यमधीयीतनचापररात्रमधीत्यपुनःप्रतिसंविशेत्नाकल्पां
नारीमभिरमयेत्नरजस्वलांनचैतांश्लिष्येत् नकन्याम
ग्निमुखोपधमनविगृह्यवादबहिर्गंधमाल्यधारणपापीयसा
वलेखन भार्यासहभोजनांजल्यवेक्षणकुद्वारप्रवेशनपाद
धावनासंदिग्धभोजननदीबाहुतरणवृक्षवृषमारोहणाव

और अधर्मी मनुष्य इनके संग न बोले यदि बोले तो पुण्या
त्मा ओं का मन से ध्यान करै अथवा ब्राह्मण के साथ संभाषण
करै अथवा अधेनु [जो दूध न देती हो] को धनु भव्या ऐसे
कहे अथवा अमंगल वस्तु को मंगल कहै अथवा कपाल को
भगाल कहै अथवा इंद्र धन को मणि धनु कहैं बछड़े को चुख
ती हुई गौ को न बतावे न आप हटावे और मैथुन करके
शौच करने में बिलंब न करै और मैथुन की शैया पर वेद न
पढ़ै और पिछली रात्रि में पढ़ कर फिर न सोवें असमर्थ
स्त्री के संग और रजस्वला के संग भोग न करै रजस्वला का
स्पर्श भी न करै और कन्या के संग मैथुन न करैं और अग्नि
को मुख से फूंकना वैर से बिवाद और शरीर के ऊपर गंध
और फूलों का धारण अत्यन्त पापी के संग लिखना—स्त्री के
संग भोजन—नेत्रों को आंजती हुई स्त्री को देखना खोटे द्वार
में घुसना पैरों को धोना संदिग्ध भोजन भुजाओं से नदी का

रोहण प्राणाऽव्यवस्थानिवर्ज्जयेत्नसंदिग्धांनावमधिरोहे तसर्व्वतएवआत्मानंगोपायेत् नप्रावृत्यशिरोहनिपर्यटेत् प्रावृत्यरात्रौमूत्रोच्चारेचनभूमावनंतर्द्धायनाराद्वावसथा न्नभस्मकरीषकृष्टछायापथिकाम्येषूभेमूत्रपुरीषेदिवाकु र्यात्उदङ्मुखःसंध्ययोश्चरात्रौदक्षिणामुखःपालाशमास नंपादुकेदंतधावनमितिचवर्ज्जयेत् सोपानत्कश्चाशनास नशयनाभिवादननमस्कारान्वर्ज्जयेत् नपूर्वाह्नमध्यन्दि नापराह्नानफलान्कुर्याद्वायथाशक्तिधर्मार्थकामेभ्यस्तेषुच

पैरना विष वृक्ष पर चढना और उतरना—इतनी प्राण व्याधि की अवस्थाओं का वर्जि दे और संदिग्ध (फटी टूटी) नाव पर न चढे सारे से अपने आत्मा की रक्षा करे और दिन में शिर खोले न फिरै और रात्रि को शिर को ढक कर मूत्र और मल त्याग करे परन्तु पृथ्वी को तृण आदि से बिना ढके और घर के समीप और भस्म सूका गोवर जुता खेत छाया मार्ग अच्छी वस्तु इनमें मूत्र और मलका त्यागन करे और दिनमें उत्तरको संध्या और रात्रिकोदक्षिणकोमुखकिये मूत्र और मलका त्याग करे और ढाक के आसन खड़ाऊँ दतोन वर्ज दे और जूता पहरे हुए भोजन आसन [वैठना] सोना स्तुति नमस्कार इनको वर्ज दे पूर्वान् अपरान्ह अर्थात् दिनका पहला दूसरा पिछला भाग इनको निष्फल (वृथा) न करै किन्तु यथाशक्ति धर्म अर्थ काम में बितावे इन तीनों में भी धर्म को उत्तम समझें और दूसरे

धर्म्मोत्तरःस्यात्ननग्नांपरयोषितमीक्षेतनपदासनमाकर्षे
तुर्नशिश्नोदरपाणिपादवाक्चक्षुश्चापलानिकुर्यातच्छेदनभे
दनविलेखनविमर्दनास्फोटनानिनाकस्मात्कुर्यात्नोपरिव
त्सतंतींगच्छेत्नजलकूलेस्यात्नयज्ञमवृतोगच्छेत्दर्शनाय
तुकामंनभक्ष्यानुत्संगेभक्षयेत्नरात्रौप्रेष्याहृतमुद्धृतस्ने
हविलेपनपिण्याकमथितप्रभृतीनिचात्तवीर्याणिनाश्नीया
त्सायंप्रातस्त्वन्नमभिपूजितमनिंदन्भुंजीतनकदाचिद्रा
त्रौनग्नःस्वपेत्स्नायाद्वायच्चात्मवंतोवृद्धाःसम्यग्विनीता

को नग्न स्त्री को न देखे और पैर से आसन को न खींचे और लिंग उदर हात पैर वाणी नेत्र इनको चपल न करै और छेदन भेदन विलेखन (नखों से खोदना) मलना आस्फोटन (हात से हात को व जाना) इनको विना प्रयोजन न करै बत्सतंती [रस्सी] के ऊपर जल के तटपर न बैठे वस्त्र के धारे विना यज्ञ में न जाय और देखने के लिए तो इच्छाके अनुसार जायखाने के पदार्थ को गोदी में रख कर न खाय रात्रिमें भृत्य की लाई, चिकनी न हो खल और विलपन (लपसी) मथित (निर्जलमठा) इनको गरिष्ठ वस्तु को न खाय सायंकाल और प्रातःकाल पूजा (प्रशंसा) किये अन्नको निंदा करके भोजन न करै और रात्रि को कभी भी नंगा न सोवे और नंगा स्नान न करै जिस कर्म को आत्मज्ञानी वृद्ध भली प्रकार शिक्षित दंभ लोभ मोह से रहित वेद के जानने वाले कहैं उस कर्म को करै और योग

दंभलोभमोहवियुक्तावेदविदआचक्षतेतत्समाचरेत् योग क्षेमार्थमीश्वरमधिगच्छेत् नान्यमन्यत्रदेवगुरु धार्म्मिके भ्यःप्रभूतैधोदकयवसकुशमाल्योपनिष्क्रमणमार्य्यजनभूयिष्ठमनलसमृद्धंधार्म्मिकाधिष्ठितंनिकेतनमावसितुंयतेत प्रशस्तमंगल्यदेवतायतनचतुष्पथादीन्प्रदक्षिणमावर्त्तेत मनसावातत्समग्रमाचारमनुपालयेदापत्कल्पःसत्यधर्मा र्य्यवृत्तःशिष्टाध्यापकःशौचशिष्टःश्रुतिनिरतःस्यात् नित्य महिंस्रोमृदुदृढकारीदमदानशीलःएवमाचारोमातापित

क्षेम (शरीर का निर्बाह) के लिये धनी के समीप जाय और देवता गुरु धर्मवान् इनके घर को छोड़ कर इन अन्य घरों में वसने को यत्न न करै कि जिन में काठ जल भुसा कुशा फूल मार्ग बहुत हों और जिस में बहुत सज्जन हों अग्निहोत्र हो— और उत्तम और मंगलिकवस्तु और चोराहा इनको दहिना दे कर गमनकरै और मन से आपत्तिमें भी पूर्वोक्त संपूर्ण धर्मों का पालन करै और सत्य धर्म से सज्जनों का आचरण करै सज्जनों को पढावे शौच की शिक्षा दे वेद में तत्पर रहे और प्रतिदिन हिंसा न करै नम्रता से दृढ कर्म करै और दम इन्द्रियों को रोकना दान इनमें शील रक्खै इस प्रकार आचरण करताहुआ और माता पिता और पहले पिछले संबंधीयों को पाप से छुटाने की इच्छा करता हुआ स्नातक (गृहस्थी) सनातन ब्रह्म

रौपूर्वापरांश्चसंबद्धान्दुरितेभ्योमोक्षयिष्यन्स्नातकःश
श्वद्ब्रह्मलोकान्नच्यवतेनच्यवते

इतिगौतमीयेनवमोऽध्यायः ९

प्रथमःपाठकःद्विजातीनामध्ययनमिज्यादानं ब्राह्मणस्या
धिकाःप्रवचनयाजनप्रतिग्रहाःसर्व्वेषुनियमस्तुआचार्यज्ञा
तिप्रियगुरुधनविद्यानियमेषुब्राह्मणःसंप्रदानमन्यत्रयथो
क्तान्कृषिवाणिज्येचास्वयंकृतेकुसीदंच राज्ञोधिकरक्षणं

लोक से पतित नहीं होता अर्थात् सदैव ब्रह्मलोक में निवास करता है ॥

इति गौतमस्मृतौ ९ अध्यायः

पहला प्रपाठक समाप्त हुआ

तीनों द्विजातियों का पठन यज्ञ करना और दान देना धर्म है औरब्राह्मण का इन से अधिक पढाना यज्ञ कराना और प्रतिग्रह (दान देना) धर्म है और सबमें नियम यह है कि आचार्य्य जाति प्रिय गुरु धन विद्या इनके नियम में ब्राह्मण संप्रदान (उपदेश करने वाला) होता है और शास्त्रोक्त कर्मों को छोड़कर कृषि वाणिज्य (लेन देन) और भृत्यो से कृषी कराना ये धर्म क्षत्रिय औरवैश्यके हैं परन्तु राजा के येअधिकधर्म है कि सब भूतों की रक्षा न्याय से दंड और वेद पाठी ब्राह्मण उद्योग होन अब्राह्मण और अकर (जिन से कर नही लिया जाय साधु आदि)ब्रह्मचारी इनको पालना करै और विजयमें और

सर्व्वभूतानांन्याय्यदंडत्वंविभृयात् ब्राह्मणानश्रोत्रिया
ननिरुत्साहांश्चाब्राह्मणानकरांश्चोपकुर्वाणाश्चायोग
श्चविजयभयेविशेषेणाचर्याचरथधनुर्भ्यांसंग्रामेसंस्थानम
निवृत्तिश्चनदोषोहिंसायामाहवेऽन्यत्रव्यश्वसारथ्यायुध
कृतांजलिप्रकीर्णकेशपराङ्मुखोपविष्टस्थलवृक्षाधिरूढ
दूतगोब्राह्मणवादिभ्यःक्षत्रियश्चेदन्यस्तमुपजीवेत्तद्वृत्तिः
स्यात्जेतालभेतसांग्रामिकंवित्तंवाहनंतुराज्ञउद्धारश्चाप
थक्जयेऽन्यत्तु यथार्हंभाजयेद्राजाराज्ञेवलिदानंकर्षकैर्द

भय में आसक्त न हो और विशेष कर विचरे रथ और धनुष
को लेकर संग्राम में टिके और संग्राम से न लौटे और संग्राम
में हिंसा का दोष नहीं है परन्तु इन को छोड़ कर कि घोड़ा
सारथि शस्त्र ये जिस पर न हों—कृतांजलि जो हो—जिसके
केश खुले हों जो पराङमुख (मुख फेरे) बैठा हो जो वृक्ष पर
चढा हो दूत हो गौ और जो अपने को ब्राह्मण कहै और यदि
दूसरा भी क्षत्रिय हो तो उसी के आश्रय होकर आजीविका करै
और जो भृत्य संग्राम को जीते वही संग्राम की वस्तु ले परंतु
धन और वाहन [सवारी] राजा के हैं यदि लड़ाई में राजा भी
संग होतो उद्धार (अतिश्रेष्ठ वस्तु) वा कुछ द्रव्य का भाग भी
राजा का होता है और अन्य वस्तुओं को राजा यथा योग्य
बांट दे—और खेती करने वाला राजा को दशमा आठमा छठा

शमष्टमं षष्ठं वा पशुहिरण्ययोरप्येके पञ्चाशद्भागं विंशत् भागः शुल्कः पण्ये मूलफलमधुमांसपुष्पौषधतृणेधनानां षष्ठं तद्रक्षणधर्मित्वात्तेषु तु नित्ययुक्तः स्यात् अधिकेन वृत्तिः शिल्पिनो मासि मास्येकैकं कर्म्म कुर्युः एतेनात्मोपजीविनो व्याख्याताः नौचक्रिवंतश्च भक्तं तेभ्यो दद्यात् पण्यं

तृण इंधन इनमें छटा भाग राजा को है क्योंकि इनकी रक्षा करना राजा का धर्म है इससे इनमें राजा नित्य सावधान रहै और कारीगर महीने महीने में एक दिन राजा का काम करैं और अधिक से अपना निर्वाह करै और यही धर्म आत्मोपजीवि (मजूर) यों और नाव और रथवानों का भी कहा है इनको भी भाग राजा दे—और वैश्य धन के बिना बेचने की वस्तु को न दें जिसका स्वामी न हो ऐसा नष्ट (पड़ा) धन मिल जाय तो राजा को विदित करैं और उस धन को राजा पहिले विदित करैं और एक वर्ष रक्षा करै वर्ष पीछे चौथाई जिसे मिला हो उसको और शेष राजा का होता है और रिक्था (भाग) क्रय (लेना) विभाग—परिग्रह [जो मिले] अधिगम लोभ इनमें ब्राह्मण का लब्ध में और क्षत्रिय का विजित (जो जीता होय) में और वैश्य का निर्विष्ट जो सेवा से मिले में अधिक भाग होता है और निधि खजाने का मिलना में राजा को भाग कादे और कोई यह कहते हैं कि पशु और सोने में भी पांचवां भाग और चलने की वस्तु में बीसवां भाग राजा का

वर्णोभिरर्थापचयेनदेयंप्रणष्टमस्वामिकमधिगम्यराज्ञे प्रब्रूयुःविख्याप्यराज्ञासवत्सरंरक्ष्यंऊर्द्ध्वमधिगं श्चतुर्थंरा ज्ञःशेषंस्वामीरिक्थक्रियसंविभागपरिग्रहाधिगमेषुब्राह्म णस्याधिकंलब्धंक्षत्रियस्यविजितंनिर्विष्टंवैश्यशूद्रयोःनि ध्यधिगमोराजधनंनब्राम्हणस्याभिरूपस्यअब्राम्हणोव्या ख्यातःषष्ठंलभेतेत्येकेचौरहृतमुपजीत्ययथास्थानंगमये त् कोशाद्वादद्यात्रक्ष्यंबालधनमाव्यवहारप्रापणादास मावृत्तेर्वावैश्यस्याधिककृषिवणिक्पाशुपाल्यंकुसीदंशूद्र

धन है परन्तु पंडित ब्राह्मण को छोड़ कर कोई यह कहते हैं कि यदि ब्राह्मण से भिन्न बर्ण विख्यात होय तो छटे भाग को ले—चोरी के द्रव्य को जीतकर राजा यथास्थान जिसका हो वहां पहुंचाय दे—अथवा अपने कोष से देदे इतने बालक व्यवहार को न जानें तब तक अथवा गृहस्थी होने तक बालक के धन की राजा रक्षा करे ये धर्म राजा के हैं—और वैश्य के खेती व्यवहार—पशुओं की पालना—कुसीद सूद ये धर्म अधिक हैं—और चौथा वर्ण शूद्र एक जाति अर्थात् द्विजाति सस्कार से हीन होता है उसके भी येही धर्म हैं कि सत्य—क्रोधन करना—शौच—आचमनके लिये हाथ पैर धोना—और कोई यह कहते हैं कि श्राद्ध करना भृत्यों की पालना और शुल्क [मैसूलहै] और फल सहत वा मीठा मांस फूल औषधि

चतुर्थोवर्णएकजातिःतस्यापिसत्यमक्रोधमशौचंआचम
नार्थेपाणिपादप्रक्षालनमेवैकेश्राद्धकर्मभृत्यभरणंस्वदार
तुष्टिःपरिचर्याचोत्तरेषांतेभ्योवृत्तिंलिप्सेतजीर्णान्युपान
च्छत्रवासःकूर्चान्युच्छिष्टाशनंशिल्पवृत्तिश्चयंचार्यमाश्र
यतेभर्तव्यस्तेनक्षीणोपितेनचोत्तरःतदर्थोस्यनिचयःस्यात्
अनुज्ञातोस्यनमस्कारोमंत्रःपाकयज्ञैःस्वयंयजेतेत्येकेसर्वे
चोत्तरोत्तरंपरिचरेयुः आर्यानार्ययोर्व्यतिक्षेपेकर्मणःसा
म्यंसाम्यं

इतिगौतमीयेदशमोऽध्यायः १०

अपने दार पर संतोष—और उत्तर द्विजाति वर्णों की सेवा और उन्हों से अपनी जीविका चाहै—और जीर्ण पुराने जूतो—छत्री वस्त्र और कूर्च कुशा की मुष्ठि इनको धारे और उच्छिष्ट खावे और शिल्प कारीगरी से जीवे—और यह शूद्र जिसके आश्रय रहै वह दीन अवस्था में भी इस शूद्र की पालना करै और वही इस शूद्र का बड़ाई का दाता है और उसके लिये इसके संचय है और शूद्र को नमस्कार का मंत्र भी कहा है और कोई यह कहते हैं कि पाक यज्ञों से शूद्र भी आप पूजन करे और चारों वर्णों में पिछला२ पर्व२ वर्ण को सेवा करै और आर्य (सज्जन) अनार्य [दुर्जन] इनके व्यतिक्षेप उलटा पलटी में दोनों का कर्म तुल्य है २॥

इति गौतमस्मृतौ १० अध्यायः

राजा सर्व्वस्येष्टे ब्राह्मणवर्ज्जं साधुकारी स्यात् साधुवादी त्रय्यामान्वीक्षिक्यां चाभिविनीतः शुचिर्जितेन्द्रियो गुणवत्सहायोपायसंपन्नः समः प्रजासु स्यात् हितं चासां कुर्वीत तमुपर्यासीनमधस्तादुपासीरन्नन्ये ब्राह्मणेभ्यस्तेऽप्येनं मन्येरन् वर्णानाश्रमांश्च न्यायतोऽभिरक्षेत् चलतश्चैनान्स्वधर्म्मे एवस्थापयेत् धर्म्मस्थोंशभाक् भवतीति विज्ञायते ब्राह्मणंच पुरोदधीत विद्याभिजनवाग्रूपवयःशीलसंपन्नं न्यायवृत्तं तपस्विनं तत्प्रसूतः कर्म्माणि कुर्वीत ब्रह्मप्रसूतं हि क्षत्रमृ

ब्राह्मण को छोड कर राजा सबका ईश्वर है राजा अच्छा काम करे और अच्छा बोले कर्म कांड विद्या और ब्रह्म विद्य (वेदांत) में शिक्षित शुद्ध जितेंद्रिय और गुण वाले जिसके सहायक हों और उपायों से युक्त और प्रजामें सम रहे और प्रजाओं का हित करे और अपने ऊपर टिके अर्थात वड उस राजा को ब्राह्मण को छोडकर सब सेवा करें और ब्राह्मण भी उसको माने और चारों वर्ण चारों आश्रमोंको न्याय से रक्षा करें यदि ये अपने धर्म से चलायमान होंय तो इनको अपने२ धर्मपर टिकावे क्योंकि धर्ममें टिकता हुआ राजा अंशका भागी होता है यह वात शास्त्रसे जानीहै और विद्या - देश - वाणी - रूप - अवस्था शीलसंपन्न - न्यायवाला तपस्वी - जो ब्राह्मण उसे पुरोहित करे और ब्राह्मण से उत्पन्न (आधीन) होकर कर्मोंको करे क्योंकि ब्राह्मण से पैदा हुआ क्षत्रिय वढता है और दुखी नहीं होता

ध्यतेनव्यथतइतिचविज्ञायतेयानिचदैवोत्पातचिंतकाःप्र ब्रूयुस्तान्याद्रियेततदधीनमपिह्येके योगक्षेमंप्रतिजानते शांतिपुण्याहस्वस्त्ययनायुष्यमंगलयुक्तान्याभ्युदयिकानि विद्वेषणसंवलनाभिचारद्विषद्व्यृद्धियुक्तानिचशालाग्नौ कुर्यात् यथोक्तमृत्विजोन्यानितस्यव्यवहारोवेदोधर्मशा स्त्राण्यंगान्युपवेदाःपुराणंदेशजातिकुलधर्माश्चाम्नायैर विरुद्धाःप्रमाणंकर्षकवणिक्पशुपालकुसीदकारवःस्वेस्वे वर्गेतेभ्योयथाधिकारमर्थान्प्रत्यवहृत्यधर्मव्यवस्थान्या

यह शास्त्रसे जाना है दैवके उत्पात की चिन्ता करने वाले ज्यो तिषी) जो कहें उसका भी आदर करै क्योंकि कोई एक यह कहते हैं कि इनके ही आधीन योगक्षेम (निर्वाह)है और यह शां ति पुण्याह वाचन (उत्साह के बढाने वाले वेदके मंत्र) स्वस्त्ययन आयुष्य(जिनसे अवस्था बढै) मांगलिक कर्म नांदी मुख इनके और वैरमेल अभिचार (मारना) शत्रुको क्षुद्रका नाश इन सब को अग्निशाला की अग्निमें करै और अन्य कर्म जिसमें ऋत्वि ज कहैं उस अग्निमें करै और उस राजाको ये कर्म करने व्यव हार वेद धर्म शास्त्र अंग उपवेद पुराण इनका पढना और जो वेदसे विरोधीनहो ऐसे देशजाति कुलके धर्म प्रमाण कर्षक धर्म (खेती) व्यापारी पशुओं के पालक व्याज लेने वाले कारु (कारीगर) इनको अपने२ वर्गमें टिकावे अधिकार के अनुसार इन धनको लेकर धर्मकी व्यवस्था करै और न्यायके हुइनमें जो उ

याधिगमेतर्केऽभ्युपायः तेनाभ्यूह्ययथास्थानंगमयेत्तुवि
प्रतिपत्तौत्रैविद्यवृद्धेभ्यःप्रत्यवहृत्यनिष्ठांगमयेत्तथाह्य
स्यनिःश्रेयसंभवति ब्रह्मक्षत्रेणसंपृक्तंदेवपितृमनुष्यान्
धारयतीतिविज्ञायतेदंडोदमनादित्याहुस्तेनादांतान्दम
तुवर्णाश्चाश्रमाश्चस्वकर्मनिष्ठाःप्रेत्यकर्मफलमनुभूय
ततःशेषेणविशिष्टदेशजातिकुलरूपायुःश्रुतवित्तवृत्तसुख
धसोजन्मप्रतिपद्य तेविष्वंचोविपरीतानश्यंतितानाचा
र्योपदेशोदंडश्चपालयतेतस्मात्राजाचार्यावनिंद्यावनिंद्यौ

पाय तर्क (निर्णय) उसे करै और उससे ही निश्चय करके जहां
का तहां द्रव्य को पहुंचा दे और विवाद होय तो विद्यासे जो
अधिक हैं उनको सौंपकर निर्णय करै क्योंकि ऐसे करने से ही
राजाका कल्याण होता है और क्षत्रिय से मिला हुआ राजा ब्रा
ह्मण देवता पितर मनुष्य इनकी पालना करता है यह बात शा
स्त्रसे जानी है और बड़ोंने यह कहीहै कि दमन जिससे हो उसे
दंड कहते हैं उस दंडसे दुष्टोंका दमन करै और अपने२ कर्ममें
टके हुये वर्ण और आश्रम मरणे के पीछे अपने कर्म फल को
भोगकर पुण्यके शेषसे ऐसे जन्म को प्राप्त होते हैं कि जहां
उत्तम हों कि देश जाति कुल रूप अवस्था विद्या धन आचरण
सुख और वुद्धि अपने धर्मसे विपरीत आचरण करते हुए वर्ण
और आश्रम नष्ट होजाते हैं नष्ट हुए इनको आचार्यका उपदेश
और दंड पालना करता है तिससे राजा और आचार्य ये निंदा
करने के योग्य नहीं हैं२ ॥

इतिगौतमीयेएकादशोध्यायः ११

शूद्रोद्विजातीनभिसंधायाभिहत्यचवाग्दंडपारुष्याभ्याम गंमोऽस्यायेनोपहन्यात् आर्यस्त्र्यभिगमनेलिंगोद्धारःस्व ग्रहरणंचगोप्ताचेद्वधोधिकःअथास्यवेदमुपशृण्वतःत्रपु जतुभ्यांश्रोत्रप्रतिपूरणउदाहरणेजिह्वाच्छेदःधारणेशरी रभेदः आसनशयनवाक्पथिषुसमप्रेप्सुर्दंड्यःशतंक्षत्रियो ब्राह्मणआक्रोशदंडपारुष्येद्विगुणम् अध्यर्द्धं वैश्यःब्राह्मणः क्षत्रियेपंचाशत्तदर्धंवैश्येनशूद्रेकिंचित्ब्राह्मणराजन्यव

इतिगौतमस्मृतौ ११ अध्यायः

शूद्र द्विजातियोंको ठगके वाणीदंड और कठोर वचनसे मारे तो जिस अंगसे हते दुःख देता है वही अंग राजा कटवादे और अपने से बड़ोंकी स्त्रीके संग गमन करे तो लिंगको काटले अथवा वह स्वयं ही मरजाय और यदि रक्षा अपनी करै तो उसको अधिक दंड यह है कि राजा इनका वध करै—और जो शूद्र वेद सुने तो सीसे और लाखसे उसके कान भरदे और वेदका उच्चारण करै तो जिह्वा काटले—और वेदको पढ़े तो शरीर का छेदन करै—यदि आस न—शय्या—वाणी—मार्ग इनमें समता (बराबरी) करै तो सौ रुपये दंडदे—और क्षत्रिय ब्राह्मणको दंडदे वा निंदा करै तो दो सौ रुपये दंडदे—और वैश्य कुछ ऊपर आधे दंडदे—यदि ब्राह्मण क्षत्रिय की निंदा आदि करै तो पचास रुपये और वैश्य की

त्क्षत्रियवैश्यौ अष्टापाद्यं स्तेयकिल्बिषं शूद्रस्य द्विगुणोत्तरा णीतरेषां प्रतिवर्णं विदुषोतिक्रमे दंडभूयस्त्वं फलहरितधा न्यशाकादाने पंचकृष्णलमल्पे पशुपीडिते स्वामिदोषः पाल संयुक्ते तु तस्मिन् पथिक्षेत्रेऽनावृते पालक्षेत्रिकयोः पंचमाषा गवि षडुष्ट्रखरे अश्वमहिष्योर्दश अजाविषु द्वौ द्वौ सर्वविना शे शतं शिष्टाकरणे प्रतिषिद्धसेवायां च नित्यं चैलपिंडादूर्ध्वं स्वहरणं गोऽग्न्यर्थं तृणमेधा वीरुद्वनस्पतीनां च पुष्पाणि स्ववदाददीत फलानि चापरिवृतानां कुसीदवृद्धिर्द्धर्म्या विं-

---

करे तो पच्चीस रुपये दंड दे और शूद्र की करे तो कुछ दंड न दे और क्षत्रिय वैश्य शूद्र के निंदा आदि करने में ब्राह्मण और राजाके समान हैं – प्रति वर्ण को विद्वान् के अवलंघन में शूद्र को मणिकी चोरी का पाप होता है और इतर वर्णों का दूना दंड अधिक होता है और मांस हरा अन्न – शाक इनकी चोरी में पांच कृष्णल (रत्ती) सोना – और अल्प (किंचित्) पशु को पीडा में खेत के स्वामी को दोष है और पाल (ग्वालिया) पशु के संग हो और वह खेत को बिगाडे तो पाल को दोष है यदि खेत मार्ग में हो अथवा खेत का आवरण (बाडा) न होय तो खेत के स्वामी और पाल दोनों को दोष है और गौको पीडा में पांच मासे सोना – उंट और खर (गधा) की पीडा में छः मासे – अश्व (घोडा) और भैंस की पीडा में दश मासे – बकरी – भेड की पीडा में दो२ मासे सोना दंड है और यदि खेत सब नष्ट करदे तो सौ १०० मासे सोना दंड है – शिष्ट शास्त्रोक्त के न करण और कपडे धोने से अन्य निषिद्ध की सेवा में धन का हरना लिखा है – गौ और अग्निके लिये तृण और राखाहुई मेंर

शृतिःपंचमासिकीमासांनातिसंवत्सरीमकेचिरस्थानेद्वैगु
ण्य प्रयोगस्यमुक्ताभिर्नवर्द्धतेदित्सतोवरुद्धस्यचचक्रका
लवृद्धिःकारिताकायिकाशिकाऽधिभोगःश्वकुसीदंपशुप्र
जलोमक्षेत्रशदवाह्येषुनातिपंचगुणं जडापौगण्डधनंद
शवर्षभुक्तंपरैःसंनिधौभोक्तुःनश्रोत्रियप्रव्रजितराजपुरुषैः
पशुभूमिस्त्रीणामनतिभोगःरिक्थभाजऋणंप्रतिकुर्युःप्रा
तिभाव्यवणिक्शुल्कमद्यद्यूतदंडानपुत्रानध्यापयेयुः

प्रतिग्रहों के फल और जो गर्भिणी न हों उनके फल अपने समान कर लेवे—कुसीद (सूद या ब्याज) की वृद्धि (बढ़ाना) बीशवां भाग धर्मकी है और एक महीने के लिये ही रुपये लेयतो पांच मासे प्रत्येक रुपये पर है—और कोई यह कहतेहैं कि एक वर्ष तक पांच मासे हैं पीछे नहीं—और बहुत दिन रुपया रहे तो दूना कुसीद है और देने पर छोटी हुई वृद्धि नहीं बढती और जो वृद्धि को रोके रक्खे (सूद न देता जाय) उन पर चक्र काल वृद्धि [सूदपर सूद] होती है—और वृद्धि कारिता (जो नियत की हो) कायिका [जो देहसे दीजाय) अधिभोगा जो किसी वस्तु के वर्तने से दीजाय] तीन प्रकार की होती है और पशुओंके लोम ऊन आदि और सैकड़ों बार जोते खेत इनमें पांच गुणे से अधिक वृद्धि नहीं होती– जड़ (बुद्धिमान्) अपौगंड (दशवर्ष से अधिक) का धन उसके समीप न रहते यदि अन्य पुरुष दशवर्ष भोगें तो उसकी वृद्धि सुद और वेदपाठी संन्यासी और राजाके

निध्य वाधियः चितावक्रीताधयोनष्टाःसर्व्वानिनिदितानपुरुषापराधेनस्तेनः प्रकीर्णकेशोमुसलीराजानमियात्कर्म्मचक्षाणः पूतोवधमोक्ष भ्यांअघ्नन्नेनस्वीराजानशारीरोब्राम्हणादण्डःकर्म्मवियोगविख्यापनविवासनांककरणानिअप्रवृत्तौप्रायश्चित्तीसःचोरसमःसचिवोमतिपूर्वेप्रतिग्रहीताप्यधर्म्मस्य तत्पुरुषशक्त्यपराधानुबंधविज्ञानादंडनियोगःअनुज्ञानवावेदवित्समवायवचनात्

पुरुष भोग तो इनका नहीं होता निध्य कोषकाद्रव्यमांगाहुआ मोललिया और आधि सोपा हुआ वा धरोहर यदि ये नष्ट होजाय तो निंदित नहीं अर्थात जिसे मिले वह दंड योग्य नहीं है यदि इनके मिलने में किसी पुरुषका अपराध होजाय तो निंदित है और चोर अपने केशोंको खोलकर मुसल को हाथमें ले और अपनी चोरीको कहकर राजाके समीप जाय फिर चोर राजा के बांधने वा छोडने से शुद्ध होता है यदि उस मुसल से राजा उसे न मारे तो राजाही पापभागीहोता है परन्तु ब्राह्मण को राजा शरीर का दंड न दे किन्तु कामसे वियुक्त करे वा जगत में विदित करे वा देशसे निकाल दे वा अंकचिन्ह—दाग करदे और जो राजा ब्राह्मण के उक्त दंडमें प्रवृत्त न हो तो वह प्रायश्चित्ती [पापी और मंत्री चोरके समान है और राजा जानकर अधर्मी को पकड कर पुरुष की शक्ति अपराध हठके अनुसार दंड—अथवा वेदके जानने वालेकी आज्ञासे दंड दे ॥

इतिगौतमीयेद्वादशोऽध्यायः १२

विप्रतिपत्तौसाक्षिणीमिथ्यासत्यव्यवस्थाबहवःस्युरनिंदि
ताःस्वकर्म्मसुप्रात्ययिकाराज्ञांनिःप्रीत्यनभिताथाश्चान्यत
रस्मिन्नपिशूद्राः ब्राम्हणस्त्वब्राम्हणवचनादनवरोध्यो
निबद्धश्चेत् नासमवेताप्रष्टाः ब्रूयुः अवचनेन्यथावचनेच
दोषिणःस्युःस्वर्ग्गःसत्यवचनेविपर्ययेनरकः अनिबद्धैर
पिवक्तव्यं पीडाकृतेर्निबंधःप्रमत्तोक्ते चसाक्षिसभ्यराजक
र्त्तृषुदोषोधर्म्मतंत्रपीडायां शपथेनैकेसत्यकर्म्मणातद्देव
राजब्राम्हणसंसदिस्यातूअब्राम्हणानांक्षुद्रपश्वनृतेसा

इति गौतमस्मृतौ १२ अध्यायः

और विवाद में झूट और सत्यकी व्यवस्था साक्षिके आ
धीन है और वे साक्षी निंदित न हों अपने कर्ममें श्रद्धा वाले हों
और राजाकी प्रीति वा भय जिनको नहो ऐसे हों और किसी
पक्षमें शूद्रभी हों और ब्राह्मण से अन्य साक्षीके कहने से
ब्राह्मण को राजा न रोके और न बांधे और न साक्षी पूछकर
और बिना पूछे कुछ कहैं क्योंकि न कहने और अन्यथा
कहने में दोषके भागी होतेहैं और सत्य कहने में स्वर्ग और
झूटमें नरक होता है और अनिबद्ध (जो न रुकहो) भी साक्षी
कहैं क्योंकि किसी की पीड़ा (दवाव) से वा रोकसे वा प्रमत्त
होकर कहने से साक्षी सभासद राजाके कर्मचारी इनको दोष
है और कोई यह कहते हैं कि धर्म के आधीन दुःखमें सच्चेकर्म

क्षीदशांति गोश्वपुरुषभूमिषुदशगुणोत्तरानू सर्वंवाभूमौहरणेनरकःभूमिवदप्सुमैथुनसंयोगेषुचपशुवन्मधुसर्पिषोः गोवद्वस्त्रहिरण्यधान्यब्रह्मसुयानेष्वश्ववत्मिथ्यावचनेयाप्योदंडयश्चसाक्षीनानृतवचनेदोषोजीवनंचेत्तदधीनं नतुपापीयसोजीवनंराजाप्राड्विवाकोब्राह्मणोवाशास्त्रवित् प्राड्विवाकोमध्योभवेत्संवत्सरंप्रतीक्षेतप्रतिभार्यांधेन्व

से शपथ (सौगंध) से निर्णय होता है– और वह सौगध देवता राजा और ब्राह्मण इनकी सभामें लोजाय–और जो साक्षी ब्राह्मण से अन्यके छोटे२ पशुओं के मध्ये झूट कहै वह दशपशुओंको मारता है और गौ घोडा- पुरुष भूमि–इनमें झूट कहैतो दशगुनी क्रमसे नासपूर्ण हत्या करता है और पृथवी की चोरीमें नरक होता है और जलकी चोरी वा मैथुन इनमें भी नरक होता है और मीठा और घीकी चोरीमें पशुकी चोरीके समान दोषहै–और वस्त्र सोना अन्न-वेदमें गौके समान और यान सवारीकी चोरीमें घोडेकी चोरीके समान दोषहै और झूट बोलनेमें साक्षी निकासने और दंड देने योग्य हैं यदि साक्षीकी जीविका इसीके आधीन होय तो झूट बोलने में भी दोष नहीं है परन्तु अत्यत पापीसे जीविका होय तो और राजा प्राड्विवाक (वकील) अथवा शास्त्रोंका ज्ञाता ब्राह्मण ये झूट न बोलें–और प्राडविवाक मध्य (बिचोलिया)में रहैं– और प्रति भार्या (स्त्रीका लौटना) का एक वर्ष प्रतिक्षा करै गौ बेल स्त्रीके संतान होने

नडुतूक्तीप्रजनसंयुक्तेषुशीघ्रं आत्ययिकेचसर्वधर्म्मेभ्योग
रीयः प्राड्विवाकेसत्यवचनेसत्यवचनं

इतिगौतमीयेत्रयोदशोध्यायः १३

शावमाशौचंदशरात्रमनृत्विक्दीक्षितब्रह्मचारिणांसपिं
डानांएकादशरात्रंक्षत्रियस्यद्वादशरात्रंवैश्यस्यार्द्धमासमे
कमासंशूद्रस्यतच्चेदंतःपुनरापतेच्छेषेणशुद्ध्येरन्रात्रिशे
षेद्वाभ्यांप्रभातेतिसृभिःगोब्राह्मणहतानामन्वक्षंराजक्रो
धाच्च युद्धप्रायोनाशकशस्त्राग्निविषोदकोद्बंधनप्रपतनैश्चे

और मैथुन इनमें शीघ्र न्याय करै – और आवश्यक कार्यमें प्रा
ड्विवाक का सत्य वचन प्रमाण है२ ॥

इति गौतमस्मृतौ १३ अध्याय

शव (मुर्दा) का सूतक ऋत्विक् दीक्षित ब्रह्मचारी इन
को छोडकर दश दिन और सपिंडोको ग्यारह दिन क्षत्रीको बा
रह वैश्यको पंद्रह है और शूद्रको एक महीना होताहै– यदि
पहिले सूतकमें दशदिनके भीतर दूसरा सूतक होजाय तो पहि
लेके संग शुद्धि होती है–जो पहले की एक रात्रि बाकी होय
तो दो दिनमें और पहिले के अंतके दिन प्रातकाल ही दूसरा
सूतक होजाय तो तीनदिन में शुद्धि होतीहै और गौ ब्राह्मणसे
राजाके सामने क्रोधसे युद्धमें प्रायः (मरने के लिये एक जगे
बैठना) अनशन (खानेका त्यागना) शस्त्रसे शस्त्रसे अग्नि बर्षा
जल उद्बंधन (फांसी) ऊंचसे गिरकर जो मरे उनको सातवी बा

च्छतांपिंडनिवृत्तिःसप्तमेपंचमेवाजननेप्येवंमातापित्रो
स्तन्मातुर्वागर्भमाससमारात्रीः स्रंसनेगर्भस्यत्र्यहंवाश्रु
त्वाचोर्ध्वं दशम्याःपक्षिणीअसपिंडेयोनिसंबंधेसहाध्यायि
निचसब्रह्मचारिण्येकाहंश्रोत्रियेचोपसंपन्नेप्रेतोपस्पर्शने
दशरात्रमशौचमभिसंधायचेत् उक्तवैश्यशूद्रयोःआर्तवीर्वा
पूर्वयोश्चत्र्यहंवाआचार्यस्तत्पुत्रस्त्रीयाज्यशिष्येषुचैवम
वरश्चेद्वर्णः पूर्वंवर्णमुपस्पृशेत्पूर्वोवावरंतत्र शावोक्तमाशौ
चं पतितचांडालसूतिकोदक्यशवस्पृष्टितत्स्पृष्ट्युपस्पर्श

पांचवी पीढीमें पिंडका अधिकार नहीं रहता—और जन्म सूतक में भी इसी प्रकार शुद्ध होती है और माता पिताको—अथवा माता हीको गर्भ गिरनेमें जै महीना का गर्भ होय उतनी रात सूतक होता है और गर्भके पडने में तीन दिनका सूतक होता है—और दश दिनसे पीछे सूतक जानपडै तो पक्षिणी [एक रात दो दिन) होता है जो अपना सपिंडन' होय जिसके संग योनिका संबंध होय या संग पढने वाला होय वा सब्रह्मचारी (ब्रह्मचर्य में साथी)होय वेदपाठी होय ये मरजाय तो एकदिन का सूतक होय—और जो प्रेतका स्पर्श जानकर करे तो दश दिन सूतक होताहै वैश्य और शूद्रका सूतक पहिले कहा है रजस्वला के स्पर्शमे और सूतकी ब्राह्मण—क्षत्रिके स्पर्शमें तीन दिनका सूतकहै पूर्वोक्तो और आचार्य आचार्यकापुत्रस्त्रीयजमान शिष्य इनके स्पर्शमें भी पूर्वोक्तो को तीन दिनका अशौच होता

नेसचैलोदकोपस्पर्शनाच्छुध्येत् शवानुगं शुनश्चयदुप हन्यादित्येकेउदकदानंसपिंडैः कृतचूडस्यततूस्त्रीणांचान तिभागएकेणत्तानां अधःशय्यासनिनाब्रह्मचारिणःसर्व्वेन मार्ज्जयेरन् नमांसंभक्षयेयुराप्रदानात् प्रथमतृतीयसप्त मनवमेषूदकक्रियावाससांचत्यागअन्त्येत्वंत्यानांदंतजन्मा दिमातापितृभ्यांतूष्णीमातावालदेशांतरितप्रव्रजितास

हैं यदि नीचा वर्ण उत्तम वर्णका स्पर्श करे अथवा पूर्ववर्ण छोटे वर्णका स्पर्श करे तो मरण का अशौच होता है—और पतित चांडाल—सूतिका उदक्या (रजस्वला) जिनोंने मुर्दे का स्पर्श किया होय अथवा मुर्दे के संगियों का स्पर्श किया होय ये सब सचेल स्नान से शुद्ध होतेहैं—और कोई यह कहतेहैं कि मुर्दा के संग जाने और कुत्तके स्पर्श में सचैल स्नान करै—और मुन्डन भये पीछे जो बालक मरै उसको सपिंड (कुलके मनुष्य जलदान करै—कोई यह कहते हैं कि बिना बिवाही कन्याओं को जल देनेका अधिकार नहीं अर्थात जो मरै तो जलदान न करै और जल दानसे पहिले भूमिपर सोवें ब्रह्मचारी रहैं मांसको भक्षण न करै पहिले तीसरे सातवें नवमे दिन जलदान वस्त्रों का त्याग करै (धुलावे) और अन्त्यजोंका जलदान और वस्त्रोंका त्याग दशमे दिन होता है और दांतोंके जन्म के पीछे बालक मरै तो माता पिताको अथवा माताही को सूतक लगता है और बालक [illegible] नयी संन्यासी असपिंड इनको और जिन

पिंडानांसद्यःशौचंराज्ञांचकार्यविरोधात् ब्राह्मणस्यच स्वाध्यायानिवृत्यर्थंस्वध्यायानिवृत्यर्थम्

इतिगौतमीयेचतुर्दशोध्यायः १४

अथश्राद्धममावास्यायांपितृभ्योदद्यात् पंचमीप्रभृतिवापरपक्षस्ययथाश्राद्धं सर्वा मन्वाद्धव्यदेशब्राह्मणसन्निधानेवाकालनियमःशक्तितःप्रकर्षेत्गुणसंस्कारविधिरन्नस्यनवावरान्भोजयेदयुजोयथोत्साहवाब्राह्मणान्श्रो

कार्यमें विघ्न न पड़े इससे राजाओं को और वेद पाठमें विघ्न न पड़े इससे ब्राह्मण की उसी समय शुद्ध होजाती है ॥

इति गौतमस्मृतौ १४ अध्याय

मावस को पितरों के लिये श्राद्ध करै और पंचमी से लेकर कृष्ण पक्षमें अथवा श्रद्धा के अनुसार सब तिथियों में श्राद्ध करै श्राद्धके द्रव्यदेश ब्राह्मण इनकी सन्निधि होय तो काल का नियम नहीं ये जब मिलें तबही श्राद्ध करै - और शक्तिके अनुसार अन्नके गुणोंका संस्कार बढावे और कमसेकम नव ब्राह्मण जिमावे - अथवा उत्साह (शक्ति)के अनुसार अयुग्म (१-३-५-७ एक तीन पांच सात] आदि वेदपाठी वाणी रूप अवस्था शील इन से जो युक्त होय एसे ब्राह्मणों को जिमावे पहिले युवा [जवान] पितरों के ब्राह्मणों को अन्न दे कोई यह कहते हैं कि पिता के समान सबको समझ कर श्राद्ध करै और श्राद्धके दिन संध्योपासन न करै और पुत्रके अभावमें सपिंड वा शिष्य पिंड दे और

त्रियानूचः रूपवयःशीलसंपन्नान्युवभ्योदानंप्रथमएके पितृवत्नचतेनमित्रकर्म्मकुर्यात्पुत्राभावेसपिंडामातृसपिंडाःशिष्याश्चदद्युःतदभावेऋत्विगाचार्य्यौतिलमाषव्रीहियवोदकदानैर्मासंपितरःप्रीणातिमत्स्यहरिणरुरुशशकूर्म्मवराहमेषमांसैःसंवत्सराणिगव्यपयःपायसैर्द्वादशवर्षाणिवार्ध्रीणसेनमांसेनकालशाकच्छागलोहखड्गमांसैर्मधुमिश्रैश्चानन्त्यं नभोजयेत्स्तेनक्लीवपतितनास्तिकवृत्तिनास्तिकवीरहाग्रेदिधिषूदिधिषूपतिस्त्रीग्रामयाजकाजपालोत्सृष्टा

इनके अभाव में ऋत्विज और आचार्य दें तिल उड़द चावल जौ जलके देनेसे एक महीने तक पितर तृप्त होतेहैं और मत्स्य हरिण रुरु [मृगभेद] शशा कछ वा सूकर इनके मांससे एक वर्ष तक और गौका दूध और खीरसे बारह वर्षतक वार्ध्रीणस (जल पीतेमें जिसके जीभ कान जलमें डूबें) के मांससे और समय के शाक बकरी गैंडा मीठेसे मिले हुए इनके मांससे अनंत तृप्ति होती है और चोर नपुन्सक पतित और पतितसे जिसकी जीविका हो उसे नास्तिक वीरका हत्यारा जो दूसरी विवाही स्त्रीको मुख्य समझे वा दूसरी स्त्री जिसने विवाही हो स्त्री और ग्रामको जो यज्ञ करावे जो बकरियों की रक्षाकरे जिसने लेकर अग्निहोत्र छोड़दिया हो जो मदिरा पीवे पृथिवीमें जो विचरै झूठी साक्षी जो दे दूत जिसकी खबर न हो कि कौनहै कुंडासो जो सोमको बचै घरमें जो अग्नि लगावे विष

ग्निमद्यपकुचरकूटसाक्षिप्रातिहारिकानुपपतिर्यस्यच कुं डाशीसोमविक्रय्यगारदःहीगरदावकीर्णिगणप्रेष्यागम्या गामिहिंस्रपरिवित्तिपरिवेत्तृपर्याहितपर्याधातृत्यक्तात्मदु र्वलाः कुनखिश्यावदतश्वित्रिपौनर्भवकितवाजपराजप्रे ष्यप्रातिरूपिकशूद्रापतिनिराकृतिकीलासीकुसीदीवणि क्शिल्पोपज विज्यावादित्रतालनृत्यगीतशीलानूपित्रा चाकामैनविभक्तातूशिष्य,श्चैकेसगोत्रांश्चभोजयेदूर्ध्वंत्रि भ्योगुणवंतंसद्यःश्राद्धीशूद्रातल्पगस्तत्पुत्रोषेमांसंनयति

देने वाला अवकीर्णी (जिसनेव्रत लेकर छोडदिया हो] अनेकों का दूत गमन करने क अयोग्य स्त्रीके संगजो गमन करै हिंसक परिवित्ति परिवेत्ता पर्याहित [सब जगेसे इकट्ठा जो करे] पर्या धाता [जो सब जगे फिरे] त्यक्तात्मा जिस के मनवशमेंनहोदुर्नख जिसके नख बुरेहों जिसके दांत कालेहों जिसके दादहों दूसरे विवाही स्त्रीका लडका कपटी वकरों को जो पाले राजाका दूत विरूपिया शूद्राका पति--तिरस्कारसे जो जीवे लोहेकोजो ढावे जो व्याजले लेनदेन जो करै कारीगरीसे जो जीवे मृदंगादि वाजा ताल नृत्य गीत इनमें जिनका मनहो जो विना इच्छा पिताने विभक्त [जुदे] कियेहों और शिष्य इतने चोर आदिकोंको श्राद्ध में न जिमावे और तीनसे अधिक सगे'त्रियों को भी जिमावे और गुणवान् को शीघ्रही जिमावे यदि श्राद्ध करने वालाशूद्रा की शय्या पर गमनकरै तो शूद्रापुत्रके क्रोध(नरक)में एक महो

पितॄन्तस्मात्तदहर्ब्रह्मचारी स्यात् श्वचंडालपतितावेक्षणेदुष्टंतस्मात्परिश्रुतेदद्यात्तिलैर्वाविकिरेत्पंक्तिपावनोवाशमयेत्पंक्तिपावनाःषडंगविज्ज्येष्ठसामकस्त्रिणाचिकेतस्त्रिमधुस्त्रिसुपर्णःपंचाग्निःस्नातकोमंत्रब्राह्मणविद्धर्मज्ञोब्रह्मदेयानुसंतानइतिहविःषुचैवंदुर्बलादीन्श्राद्धएवैकेश्राद्धएवैके

इतिगौतमीयेपंचदशोऽध्यायः १५

श्रवण्यादिवार्षिकींप्रोष्ठपदींवोपाकृत्याधीयीतछंदांसिअर्ध

ने तक पितरों को पहुंचाता है तिसते श्राद्धके दिन ब्रह्मचारी रहे कुत्ता चांडाल पतित इनके देखने से श्राद्ध दूषित होता है तिससे परिश्रुत (एकांत) में दे श्रौर तिलोंको बखेर दे अथवा पंक्ति पावन ब्रह्मण शांति करदेताहै श्रौर षडंगका ज्ञाता वेदप्रवचन सामको जो गावे त्रिणाचिकेत जिसने तीन बार अग्नि चिनी हो ऐसा अध्वर्यु त्रिमधु जो ऋग्वेदके मधुवाता इत्यादि तीन मंत्रोंको जाने त्रिसुपर्ण तीन मंत्रों के वेदका ज्ञाता पंचाग्नि मंत्र श्रौर ब्राह्मण का ज्ञाता स्नातक गृहस्थी धर्मज्ञ ब्रह्मदेयानु संतान वेदमें जो भली प्रकार द्रव्य आदि दे इतने षडंग ज्ञाता आदि पंक्ति पावन [पंक्तिको पवित्र करने वाले]कहेहैंइसीप्रकार हविः (शाकल्यमं ब्राह्मणों का परीक्षाहै कोई यह कहते हैं कि श्राद्धमें ही दुर्बल आदि ब्राह्मणोंको न जिमावै २

इति गौतमस्मृतौ १५ अध्याय

श्रावणी (सलूना) प्रोष्ठ पदी (भादों की पूर्णिमा) को वर्ष

मांसंभुंजीतश्मौमास्योवानियमः नाधीयीतवायौदिवापांसुहरेकर्णश्रावियानक्कंबाणभेरीमृदंगगर्द्दार्तशब्देषुश्वश्वरटगालगर्द्दभसंह्लादेलोहितेंद्रधनुर्नीहारेषुअभ्रदर्शनेचापत्तौमूत्रितउच्चारितेनिशासंध्योदकेषुवर्षतिचैकेवल्मीकसंतानंआचार्यपरिवेषणेज्योतिषोश्चभीतोयानस्थःशयानःप्रौढपादःश्मशानग्रामांतमहापथाशौचेषुपूतिगंधांतशवदिवाकीर्तिशूद्रसन्निधानेशुल्ककेचोद्गारेऋग्यजुषंचसामशब्दोयावत् आकालिकाःनिर्घातभूमिकंपराहुदर्शनोल्काः

दिनके पढे हुये वेदोंका उपाकर्म (देवताओं को समर्पण) करके साढेपांच महीने तक वा पांच महीने दक्षिणायण भरवेद पढे और ब्रह्मचारी सबके ओकामुन्डन करावे मांस न खाय अथवा २ महीने में मुन्डन करावे—और यदि दिनमें धूल उडाने वाली वायु चले और रात्रिको कानोंमें फुन्कारती चले तो वेदन पढे और वाण भेरी,नक्कारा,मृदंग—रोगीका भयानक शब्द होय और कुत्ता—गीदड—और गधा—इनका शब्द होय इन्द्र धनुष और नोहार (कोल वाधंद) और कुसुमय मेघदीखे मूत्र और मल त्याग किये पर रात्रि और संध्या इन समयों में वेद न पढे और कोई यह कहते हैं कि मेघ वर्षते में न पढे वलीक संतान (जुटहाया) के समीप और आचार्य परिवेषण (जहां आचार्य के पास चारों ओर मनुष्य बैठे होंय) ज्योतिकापरि वेषण (चंद्रमा सूर्यके पास जो मंडल बनताहै) इनमें भी वेद न पढे भय भीत

स्तनयीत्नुवर्षविद्य तश्चाप्रादुष्कृताग्निषुअन्ततौविद्यु ति
नक्तंचापररात्रात्त्रिभागादिप्रवृत्तौसर्वंउल्काविद्यु त्सम
त्येकेषांस्तनयित्नुरपराह्णेपिप्रदोषेसर्वंनक्तमार्ध रात्रात्
अहश्चेत्सज्योतिःविषयस्थेचराज्ञिप्रेतेविप्रोष्यचान्योन्येन
सहसंकुलोपाहितवेदसमाप्तिछर्दिश्राद्धमनुष्ययज्ञभोजने
ष्वहोरात्रंअमावास्यायांचद्व्यहंवाकार्तिकीफाल्गुन्याषा
ढ़ीपौर्णिमासीति स्त्रोष्टकास्त्रिरात्रमन्त्यामेकेअभितोवा

ष्ठानमें बैठा लिटा हुआ गोड़ोंको खड़े करिके श्मशान और ग्राम
के समीप बडामार्ग अशौच दुर्गके समीप शव (मुर्दा)नाई और
शूद्र इनके समीप शुक्र मशुकोजगे भाजता हुआ वेद न पढे
यदि जहांतक ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेदका शब्द जाए उतनीजगहं
कुसमयमें विजली भूमिकंपराहुदर्शन—तारोंका टूटना औरगर्ज
ले हुए मेघमें से विजली का गिरना—अग्निका लगना इनमें
उक्त वेदोंको न पढे विनाऋत विजली चमके और रात्रिके पहि
ले पहर में और टूटे तारे और विजली चमके तो वेद न पढे
और मध्यान्ह के पीछे गरजे अथवा प्रदोषमें गरजे तो आधीरात
तक न पढे और दिनमें तारागण दीखें और अपने देशका राजा
मरजाय तो वेद न पढे और परदेशमें रहकर दूसरे के संगम
वेदको समाप्तिकरै वमन श्राद्ध मनुष्य यज्ञ भोजन इनमेंएक
दिनका मावस से दो दिनका कार्तिक और फाल्गुणऔर आषा
ढ की पर्णिमा और तीनों अष्टका इनमें तीन रात्रिका नेहका

र्षिकंमन्वैर्वर्षविद्यु त्स्तनयित्नुसंन्निपातेप्रस्पंदिन्यूर्ध्वं भो
जनादुत्सवेप्राधीतस्यचनिशायांचतुर्मुहूर्तंनित्यमेकेनगरे
मानसमप्यशुचिःश्राद्धिनामाकालिकंमकृतान्नश्राद्धिकसं
योगेपिप्रतिविद्यं चयावत्स्मरंतियावत्स्मरंति

इतिगौतमीयेषोडशोऽध्यायः १६

प्रशस्तानांस्वकर्म्मसुद्विजातीनांब्राह्मणोभुंजीतप्रतिगृ
ह्णीयात् एधोदकयवसमूलफलमध्वभयाभ्युद्यतशय्यास

नध्याय होता है और कोई यह कहतेहैं कि वर्षाऋतुके आदि अंत में भी अनध्याय होताहै और वर्षा बिजली और गर्जना हो और बूंद पडती हों तो वेद न पढे भोजन के पीछे उत्सव में न पढे और पढे हुए वेदको रात्रिमें चार मुहूर्त पढे और कोई यह कहते हैं कि नगर में नित्य मनभी अशुद्ध रहताहै इससे नगर में वेद न पढे और श्राद्ध करने वालेको भी विना अनध्याय के समय भी अनध्याय होताहै और अकृतान्न[आमान्न]श्राद्धमें भी सब विद्याओं का अनाध्याय होताहै यह ऋषि कहते हैं २

इति गौतमस्मृतौ १६ अध्यायः

अपने कर्मोंमें तत्पर द्विजातियों के यहां ब्राह्मण भोजन करे और उनसे प्रतिग्रहले और इंधन—जल—भुसा—मूल मीठा—और भयके विना स्वयं दीयेशय्या—आसन घर सवारी दूध दही अन्न मत्स्य कांगुनो माला और मार्गका शाक ये किसी के भीत्यागने के योग्य नहीं अर्थात् शूद्रसे भी लेले और पिता

नावसथयानपयोदधिधानाशफरिप्रियंगुस्त्रक्मार्गशाका न्यप्रणोद्यानिसर्वेषांपितृदेवगुरुभृत्यभरणेचान्यतृवृत्ति श्चेत्तुनांतरेणशूद्रान्नपशुपालक्षेत्रकर्षककुलसंगतकारपि तृपरिचारकाभोज्यान्नावणिक्चाशिल्पीनित्यमभोज्यंके शकीटावपन्नं रजस्वलाकृष्णशकुनिपदोपहतंभ्रूणघ्नावे क्षितंगवोपघ्रातंभावदुष्टंशुक्तकेवलमदधिपुनःसिद्धं पर्युषि तमशाकभक्ष्यस्नेहमांसमधूनि उत्सृष्टपुंश्चल्यभिशस्ता नपदेश्यदंडिकतक्षककदर्यबंधुनिर्कीचकित्सकमृगयुवाणु

गुरु देवता—भृत्य—इनकी पालना के लिये सबसे लेल और यदि अन्य आजीविका होय तो शूद्रको छोड़कर अन्यों (अंत्यज आदि)से न ले और शूद्रोंमें भी पशुओंका पालक किसान कुल का संगी पिताका सेवक इनका अन्न खाने योग्य है और जो व्यापारी शिल्पी न हो उसका भी अन्न खाने योग्यहै केशकीडा जिसमेंहोयऔर रजस्वला पक्षीके पेरसेजो छुवा होय बालक के हत्यारे ने जो देखा होय गौने जो सूंघा होय भावदुष्ट (किसी प्रकार मनको बुरालगे) और दहीको छोडकर शुक्त (जो बहुत दिनमें मीठेसे खट्टा होय) दुबारा पकाया शाकसे भिन्न बासी [illegible] योग्य स्नेह (तेलआदि) मांस और सहत ये अभक्ष्य हैं [illegible] पुंश्चली (जोव्य भिचारसे त्यागदी होय) और अभि [illegible] व्यभिचार का दोष लगा होय) अनपदेश्य(जिसे [illegible] ने आज्ञा न दी हो) दंडिक [जिसको कुछ दंड [illegible]

च्छिष्टभोजिगणविद्विषाणामपांक्त्यानांप्राक्दुर्बलानुवृथ
ान्नाचमनोत्थानव्यपेतानिसमासमाभ्यांविषमसमेपूजाता
रानर्चितंचगोश्चक्षीरमनिर्दशायाःसूतकेजामहिष्योश्चनि
त्यमाविकमपेयमौष्ट्रमैकशफंचस्यंदिनीयमसूसंधिनीनांच
याश्चव्यपेतवत्साःपंचनखाश्चाशल्यकशशकश्वाविद्
गोधाखड्गकच्छपाःउभयतोदत्केश्यलोम्यैकशफलविक ल
वचक्रवाकहंसाःकाककंकगृध्रश्येनाजलजारक्तपादतुंडाः
ग्राम्यकुक्कुटसूकरौधेन्वनडुहौचअापन्नदावसन्नवृथामांसा

हुआ हो—वढई—कदर्य (जो उपकार को न माने) वंधनिक (नीचजाति भेद) वैद्य व्याध उच्छिष्ट जलका पीने वाला अनेकों का वैरी—पंक्तिसे वाह्य -इनके अन्नको भी न खाय और दुर्वल से पहले भोजन न करै और भोजन आचमन और उत्थान इनको वृथा न करै समको विषम पूजा और विषमकी समपूजा और सूर्यादिक तारोंकी पूजाका त्याग न करै और दशदिन से पहिले गौ—वकरी—भैंस—इनका दूध न पीवे भेड उटनी—घोडी—स्यंदनी (रजस्वला) और जिसके दो वच्चे हो और संधिनी (गाभन हो) और दूधदेती हो और जिसका वछ डा मरगया होय इनका दूध न पीवे और सेह खरगोस गोह गेंडा और कछवा ये सेहको छोड़कर अभक्ष्यहै—और जिन के दोनों तरफ दांतहो और जिनके वडीवडी रोम केशोके समान हों और जिनके एक खुर हो और कलविंक चिडिया और

निकिसलुपवकयाकुतसूननिर्थस्सलोहिताश्च्वनाश्वनि चिदारुचकवलाकाःशुकद्दुटिटिम्भमांधातनक्तंचराअभक्ष्याःभक्ष्यापनुदाविकिराजालपादाःमत्स्याश्चविकृतावध्याश्च्चधर्मार्थेव्यालहताद्दष्टदोषवाक्प्रशस्तान्यभ्युक्ष्योपयुञ्जीतोपयुंजीत

इतिगौतमीयेसप्तदशोऽध्यायः १७

अस्वतंत्राधर्मेस्त्रीनातिचरेत्भर्तारंवाक्चक्षुःकर्म्मसंयता

प्लव (जल मुरगो) चकवा हंस—काक—कंक—[जिसके पंखोंको वानमें लगाते हैं) गीध बाज और जिनके पैर और चौंच लाल हों ऐसे जलके जीव गामका मुरगा और शूकर गौ और बैल और स्वयं मरे और वनमें अग्निसे मरे जीवोंका मांस और वृथा मांस (जो श्राद्धके विना बनाया जाय) पत्ते का रस आदि स्वयं हतका मांस, जिनमें लाला हो ऐसे निकसलेहुये और कुत्तसे मारा दारुचक बगला तोता और दुद्रु[जीवभेद]और टिट्टिभ(टटोरी, और मांधात [जीवभेद, और चिमगिद्दर ये सब अभक्ष्य हैं—और जो चोंचसे खोदे अथवा जिनके जालसगी के पैर हों और विकार को प्राप्त हुये मत्स्य ये भक्ष्य हैं और मारने योग्य हैं और धर्मके लिए सांपसे मरे हुए और निर्दोष और जिनको कोई बुरा न कहे उनको भी जलसे छिड़ककर काममें लावे

इतिगौतमस्मृतौ १७ अध्यायः

पतिरपत्यलिप्सुर्देवरात् गुरुप्रसूतान्नर्तुमतीयात पिंडगोत्रऋषिसंबंधेभ्यः योनिमात्राद्वा। देवरादित्येके नातिद्वितीयं जनयितुरपत्यं समयादन्यत्र जीवतश्च क्षेत्रे परस्मात्तस्य द्वयोर्वा रक्षणात् भर्तुरेव नष्टे भर्तरि षाड्वार्षिकं क्षपणं श्रूयमाणेऽभिगमनं प्रव्रजिते तु निवृत्तिः प्रसंगात् तस्य द्वादशवर्षाणि ब्राह्मणस्य विद्यासंबंधे भ्रातरि चैवं ज्यायसि यवीयान् कन्याग्न्युपयमने षु षडित्येके त्रीन् कुमार्य्यृतून् नतीत्य स्वयं युज्ये

स्त्री धर्म करने में पराधीन है इससे पतिका अवलंघन न करै वाणी नेत्र इनके कर्ममें संयत [रोकनेवाली] रहै यदि पति के अभाव में संतान चाहैं तो देवर गुरुका पुत्र पिंड गोत्र ऋषि इन तीनोंके संबंधी अथवा योनिमात्र [पतिकुलके संबंधी] इनके संग ऋतुकाल में गमन करै और कोई यह कहते हैं कि देवर को छोडकर और किसीसे गमन करै अर्थात् देवर से संतान उत्पन्न करले और समय के विना अर्थात् ऋतुकालके विना दूसरे की संतान पतिकी नहीं होतीहै और जीते हुये पतिकी स्त्रीमें जिससे संतान पैदाहो उसकी अथवा दोनोंकी संतान होती है यदि पति रक्षा करै तो उसकी ही होती है यदि पति नष्ट होजाय (परदेश में चलाजाय] तो छः वर्षतक स्त्री समय को वितावैं और उसको कहीं सुनेतो उसके पास चलीजाय यदि वह संन्यासी होगया होय तो उसके संगकी स्त्री निवृत्ति करै और उस संन्यासी के बारह वर्षतक दूसरा छोटा भाई विद्या

तानिंदितेनोत्सृष्टव्यपिस्यानलंऽकारान्गदानप्राक्तौरप्रय च्छन्दोषीप्रागवाससः प्रतिपत्तेरित्येकेद्रव्यादानंविवाह सिध्यर्थंधर्म्मतंत्रप्रसंगेचशूद्रात् अन्यत्रापिशूद्रान्बहुपशो हीनकर्म्मणाःशतगोरनाहिताग्नेःसहस्रगोवासोमपात् सप्तमींचाभुक्त्वानिचयायअथहीनकर्मभ्यः आचक्षीतराज्ञा प्रष्टस्तेनाहिभर्तव्यः श्रुतशीलसंपन्नश्चेद्धर्म्मतंत्रपीडायां तस्याकरणेदोषोदोपःइतिगौतमीयेअष्टादशोऽध्यायः१८

के पढने में विवाह और अग्निहोत्र के और यज्ञोपवीत के लने में वाट देखे और कोई यह कहतेहैं कि छः वर्ष वाट देखे और कन्या तीन रजोदर्शन पीछे पिताके दिये हुए भूषणों को देके स्वयं सत्पात्र पतिके संग विवाह करले और ऋतु होनेसे पहले जो पिता कन्याका विवाह नहीं करता वह दोषका भाग होता है और कोई यह कहतेहैं कि वस्त्रोंके धारण का जब तक ज्ञानहो उससे पहले जो कन्यादान न करै वह दोष भागी होता है और विवाह के लिये प्रतिग्रह ग्रहण करै और धर्म कार्यके प्रसंगमें शूद्रसे भी ले और अन्यकार्यमें भी वहुत पशुवाले शूद्र से और सौ गौ वाले नीच से और हजार गौ वाले अनाहिताग्नि (जो अग्निहोत्र न करता हो) से और जिसके सात पीढीसे सो मलताका पीना चला आया हो इनसे संग्रहके लिये भी प्रति ग्रह लेले और जो नीच से ग्रहले तो राजासे कहिदे और यदि राजा पूछे और ब्राह्मण विद्या शीलसे संपन्न होय तो राजा उस की पालनाकरै क्योंकि धर्मसे ब्राह्मणको दुखहोय और राजउस दुखको निवृत्ति न करै तो दोषहै ॥इतिगौतमस्मृतौ१८अध्यायः

द्वितीयःप्रपाठकःउक्तोवर्णधर्म्मश्चाश्रमधर्म्मश्चअथखल्व यंपुरुषोयेनकर्म्मणालिप्यतेयथैतदयाज्ययाजनमभक्ष्य भक्षणमवद्यवदनंशिष्टस्याक्रियाप्रतिषिद्धसेवनमितितत्र प्रायश्चित्तंकुर्यान्नकुर्यादितिमीमांसंतेनकुर्यादित्याहुर्नहि कर्म्मक्षीयतइतिकुर्यादित्यपरेपुनस्तोमेनेष्ट्वापुनःसवनमा यांतीतिविज्ञायते व्रात्यस्तोमैश्चेष्ट्वातरतिसर्व्वपाप्मानं तरतिब्रह्महत्यांयोऽश्वमेधेनयजते अग्निष्टुताभिशस्यमानं

दूसरा प्रपाठक समाप्त हुआ

वर्ण और आश्रमका धर्म कहाअब जिस कर्मसेयह पुरुष लिप्यायमान होता है जैसे ये हैं कियज्ञ कराने के योग्य को यज्ञ कराना—और भक्षण के अयोग्य को भक्षण करना और नमस्कार करने के अयोग्य को नमस्कार करना शास्त्रोक्त कोन करना—नीच की सेवा——ऐसे निषिद्ध कर्मों के करने पर प्रायश्चित्त करे अथवा न करे—यह बिचारते हैं—कोई ऋषि यह कहते हैं कि न करै क्योंकि किया हुआ कर्म नष्ट नहीं होता—और कोई यह कहते हैं कि प्रायश्चित्त करै क्योंकि शास्त्र से यह जानते हैं कि दुवारा स्तोम यज्ञ करके पवित्र होते हैं और व्रात्य स्तोम यज्ञ करके सब पाप से तिरता है—और जो अश्वमेध यज्ञ करता है वह ब्रह्म हत्या से तरता है और जिस को शाप वा निंदा लगी हो उस से अभिष्टुत यज्ञ कराना— और उक्त पापों के प्रायश्चित्त ये हैं कि—जप—तप—होम —

याजयेदितिच तस्यनिष्क्रयणानिजपस्तपोहोमउपवासो दानंउपनिषदोवेदांताःसर्व्वच्छंदःसुसंहितामधून्यघमर्षण मथर्वशिरोरुद्राःपुरुषसूक्तंराजनरोहिणोसामनीबृहद्रथंतरे पुरुषगतिर्महानाम्न्योमहावैराजमहादिवाकीर्त्यंज्येष्ठसा म्नामन्यतमम् बहिष्पवमानंकूष्मांडानिपावमान्यःसावि त्रीचेतिपावनानिपयोव्रतताशाकभक्षताफलभक्षताप्रसृ तपावकोहिरण्यप्राशनंघृतप्राशनंसोमपानमितिमेध्यानि सर्व्वेशिलोच्चयाःसर्वाःस्रवंत्यःपुण्याहृदास्तीर्थानिऋषि निवासागोष्टपरिस्कंदाइतिदेशाःब्रह्मचर्यंसत्यवचनंसवने षूदकोपस्पर्शनंआर्द्रवस्त्रेनाधःशायीताऽनाशकइतितपां

उपवास- दान - उपनिषद्—वेदान्त—चारों वेदों की संहिता मधु—(मधुवाता इत्यादि ३ ऋचा) अघमर्षण अथर्वण वेदके शिरोरुह मंत्र - पुरुष सूक्त—राजन् और रोहिणि मंत्र— वृहत् और रथन्तर साम—पुरुष गति—महानाम्नी ऋचा महावैराज महा दिवा कीर्त्य—और ज्येष्ठ सामों का कोई भाग—वहिष्प वमान कूष्मांड—पावमानी ऋचा—और गायत्री —ये सब पुरुष को पवित्र करने वाले हैं और पयोव्रत (दूध पीना) शाक भक्षण करना—फल—प्रसृत पावक(पवित्र करने वाला) हिरण्य—घी सोमलता, इनको पीना ये पवित्र हैं, और संपूर्ण पर्वत, झरने पवित्र कुन्ड, तीर्थ, ऋषियों और गौओं के निवास, इतने देश पवित्र है, ब्रह्मचर्य, सत्य वचन, समय पर आचमन, आर्द्र (धु

सिहिरण्यंगौर्वासोश्वोभूमिस्तिलघृतमन्नमितिदेयानिसंव
त्सरःषण्मासाश्चत्वारस्त्रयोद्वावेकश्चतुर्विंशत्यहोद्वादशा
हःषडहस्त्र्यहोहोरात्रइतिकालाःएतान्येवानादेशेविकल्पे
नक्रियेरन्नेनःसिगुरुणिगुरूणिलघुलघूनिनिकृच्छ्रातिकृ
च्छ्रौचांद्रायणमितिसर्वंप्रायश्चित्तं

इतिगौतमीयेएकोनविंशोऽध्यायः १९

अथचतुःषष्टिषुयातनास्थानेषुदुःखान्यनुभूयतत्रेमानिलक्ष
णानिभवंतिब्रह्महाद्र कुष्ठीसुरापःश्यावदंतःगुरुतल्पगः

ला) वस्त्र, पृथ्वी पर सोना, अनशन, (भोजन का त्याग) ये तप हैं सोना—गौ—वस्त्र,—घोड़ा—पृथ्वी—तिल, घी अन्न ये देने योग्य. हैं. वर्ष. छः. चार. तीन. दो. एक. महीने. २४चोवीस बारह. छः. तीन. दिन. अहोरात्र ये काल हैं. पूर्वोक्त ये संम्पूर्ण प्रायश्चित्त अना देश (जिस का प्रायश्चित्त शास्त्र में न कहा हो) पाप में भी किये जाते हैं परंतु बड़े पाप में बड़े और छोटे में छोटे प्रायश्चित्त करने और कृच्छ्र अति कृच्छ्र चांद्रायण ये सब पापों के प्रायश्चित्त हैं ॥

इति गौतम स्मृतौ १९ अध्यायः

अब चौसठ ६४नरक के स्थानों में दुःखों को भोग करि मनुष्यलोक में पूर्वोक्त पापों से ये चिन्ह होते हैं कि ब्रह्म हत्यारे के गीला कुष्ठ मदिरा पीने वाले के काले दांत गुरु

[illegible]

[illegible]

कर्मपत्नीषुस्यात्मैथुनप्रवर्त्तकःखल्वाटःसगोत्रासमयस्त्र्य भिगामीश्लीपदीपितृमातृभगिनीस्त्र्यभिसस्याविजित स्तेषांकुब्जकुंडमंडव्याधितव्यंगदरिद्रात्मायुषोल्पबुद्धिः चंडपंडशैलूपतस्करपरपुरुषप्रव्यपरकल्पकराःखल्वाटव र्णसंकीर्णाक्रूरकर्म्माणःक्रमशश्चांत्याश्चोपपद्यंतेतस्मा त्कर्तव्यमेवेहप्रायश्चित्तं विशुद्धैर्लक्षणैर्जायंतेधर्म्मस्यधा रणादितिधर्म्मस्यधारणादिति

इतिगौतमीयेविंशतितमोऽध्यायः २०

पुष्कसी (भंगन) और गौ इनमें जो वीर्य्य को गेरे वह प्रमेह रोग वाला और किसी की पतिव्रता स्त्री में मैथुन के लिये जो प्रवृत्ति करै वह गंजा और जो अपने गोत्र की स्त्री के संग कुसमय अपनी स्त्री के संग जो गमन करै वह श्लीपदी (जिस के पैर फूल जाय) पिता और माता की भगिनी अथवा स्त्री में वीर्य गेरै कुबड़ा और मूत्रकृच्छ्र व्यंग (जिसका कोई अंगनष्ट होजाय] दरिद्री अल्पायु अल्प बुद्धि होते हैं और क्रोधी नपुं सक नट चोर पराये सूत और टहलवे खल्वाट गंजे कुबड़े वर्णसंकर क्रूर कर्मी होते हैं और क्रम से अन्त्यज भी होते हैं तिससे मनुष्य योनि में पाप का प्रायश्चित्त अवश्य करना क्योंकि धर्म के धारने २ से निर्मल चिन्ह वाले मनुष्य पैदा होते हैं ॥

इति गौतम स्मृतौ २० अध्यायः

त्यजेत्पतरं राजघातकं शूद्रयाजकं शूद्रार्थयाजकं वेदविद पावकं भ्रूणहनं यश्चान्त्यावसायिभिः सह संवसेदन्त्यावसायिन्यां वा तस्य विद्यागुरून्योनिसंबंधांश्च संनिपात्य सर्वाण्युदकादीनि प्रेतकर्माणि कुर्युः पात्रं चास्य विपर्यस्येयुः दासः कर्मकरो वाऽवकरादमेध्यपात्रमानीय दासीघटात्पूरयित्वा दक्षिणाभिमुखः पदा विपर्यस्येदनुदकं करोमीति नामग्राहं तं सर्वेऽन्वालभेरन् प्राचीनावीतिनो मुक्तशिखा विद्यागुरवो योनिसंबंधश्च वीक्षेरन् अप उपस्पृश्य ग्रामं प्रविशन्ति अत ऊर्ध्वं तेन संभाष्य तिष्ठेदेकरात्रं जपन्सावित्रीमज्ञानपूर्वं

राजा के हत्यारे और शूद्र को और शूद्र के द्रव्य से यज्ञ कराने वाले वेद को डुवाने वाले भ्रूण हत्यारे अंत्यावसायी अंत्याव सायियों [भील आदि] की स्त्री के संगी पिता को पुत्र त्यागदे और उस के विद्यागुरु और योनि संबंधी को इकट्ठा करके उदक [जल] आदि सब प्रेत के कर्मों को करें और इसके लिये पात्र को त्यागें दास अथवा भृत्य अवकर [पात्र बनने का स्थान] से अशुद्ध पात्र लाकर दासी घड़ों को भर कर और दक्षिण को मुख करके और इसको अनुदक [उदक देने के अयोग्य) करती हूं यह कह कर पैर से उलटा करदे और वे सब उन प्रेत के नाम को लें और अपसव्य हो और शिखा को खोल कर विद्या गुरु और बंधु भी देखें फिर जल का स्पर्श करके ग्राम में प्रवेश करें और उसके संग

ज्ञानपूर्वंचेत्रिरात्रंयस्तुप्रायश्चित्तेनशुद्ध्येत्तस्मिन्शुद्धे श्यातकुंभमयंपात्रंपुण्यतमात्ह्रदात्पूरयित्वास्रवंतीभ्यो वाततएनमुपस्पर्शयेशुःअथास्मैतत्पात्रंदद्युःतत्संप्रतिगृह्य जपेत्शांताद्यौःशांतापृथिवीशांतंशिवमंतरिक्षयोरोचनस्तमिहगृह्णामीत्येतैःयजुर्भिस्तरत्समंदीभिःपावमानीभिःकूष्मांडैश्चाज्यंजुहुयात्हिरण्यंब्राह्मणायवादद्यात् गांचाचार्यायचयस्यचप्राणांतिकंप्रायश्चित्तंसमृतःशुद्ध्येत्सर्वाण्येवतस्मिन्नुदकादीनिप्रेतकर्माणिकुर्युःएतदेवशांत्युदकंसर्वेषूपपातकेषुसर्वेषूपपातकेषु

जिसने बिना जाने संभाषण किया हो वह एक दिन गायत्री का जप करता हुआ टिकै और जिसने जान बूझ कर संभाषण किया हो वह तीन रात्र गायत्री का जप करै और राजा की हत्या आदि करके प्रायश्चित्त से शुद्ध होगया हो उसको सोने के घड़े को पवित्र कुंड में से वा झरनों में भर कर स्पर्श करै और सोने के घड़े को उस को देदें फिर वह उस घडे को ग्रहण कर के शांता द्यौः शांता पृथिवी शांतं शिव मंतरिक्षं योरोचनस्त मिहगृह्णामि इन मंत्रों को जपै और यजुर्वेद की ऋचा पावमानी और कूष्मांड (ऋचा) से घी का होम करै और ब्राह्मण को सोने का दान दे और आचार्य को गौ दे जिस पापी का प्रायश्चित्त प्राणांतिक है वह मर कर शुद्ध होता है उसके उदक दान आदि संपूर्ण प्रेत कर्म करने संपूर्ण उपपातकों में यही शांति का उदक कहा है ॥

इतिगौतमीयेएकविंशोध्यायः २१

ब्रह्महासुरापगुरुतल्पगमातृपितृयोनिसंबंधगस्तेननास्तिकनिंदितकर्माभ्यासिपतितात्यागिपतितत्यागिनःपतिताः पातकसंयोजकाश्चतैश्चाब्दंसमाचरन्द्विजातिकर्मभ्योहानिःपतनपरत्रचासिद्धिःतमेकेनरकंत्रीणिप्रथमान्यनिर्देश्यानिमनुर्नस्त्रीष्वगुरुतल्पपतनीयेकभ्रूणहनिहीनवर्णसेवायांचस्त्रीपतितिकौटसाक्ष्यंराजगामिपैशुनंगुरोरनृताभिशंसनंमहापातकसमानि अपांक्त्यानांप्राग्दुर्व

इति गौतमस्मृतौ २१ अध्याय

ब्रह्म हत्यारा मदिरा पीने वाला गुरु की स्त्री के संग और माता और पिता के कुल की स्त्रियों के संग गमन करने वाला और नास्तिक निंदित कर्मों को जो बारंबार करै जो पतित को न त्यागे और जो अपतित को त्यागे और जो पातकी का संग करै ये पतित हैं इनके संग एक वर्ष वर्ताव करता हुआ द्विजातियों के कर्म से हीन होने से पतित होता है और पर लोक की सिद्धि को प्राप्त नहीं होता कोई यह कहते हैं कि उसको नरक होता है मनु का यह मत है कि पहिले तीन (ब्रह्महा सुराप गुरुतल्पग) का प्रायश्चित्त नहीं है और कोई यह कहते हैं कि गुरु की शय्या पर गमन का कर्त्ता पतित होता है और स्त्री नहीं होती भ्रूण हत्यारा और नीच वर्ण की सेवा में स्त्री पतित होती है झूठी साक्षी राजा की चुगली गुरु

लात् गोहंत्‌ब्रह्मोज्झतन्मंत्रकृदवकीर्णिपतितसावित्रीकेषु पपातकंयाजनाध्यापनादृत्विगाचार्यौपतनीयसेवायांचहे यौ अन्यत्रहानात्पततितस्यचप्रतिगृहीत्येकेनकर्हिचिन्मा तापित्रोरवृत्तिःदायंतुनभजेरन्ब्राह्मणाभिशंसनेदोषस्ता वान्द्विरनेनसिदुर्बलहिंसायांचापिमोचनेशक्तश्चेत्‌अभि क्रुद्धावगुरुणांब्राह्मणस्यवर्षशतमस्वर्ग्यंनिपातनेसहस्रं

को झूठी निन्दा के भी महा पातक के तुल्य हैं पंक्ति से बाह्यों में दुर्बलता से पहिले गो हत्यारा वेद का त्यागी और उसके मंत्र (मलाह] को जो करै ब्रह्मचर्य का त्यागी और गायत्री से पतित इनको यज्ञ कराने और पढाने से उप पातक लगता है और पतित की सेवा में ऋत्विक और आचार्य भी त्यागने योग्य हैं और पतित की सेवा को छोडकर जो इनको त्यागे वह पतित होता है और कोई यह कहते हैं कि पतित के प्रतिग्रह से ये पतित होते हैं और माता पिता का अवृत्ति [आज्ञा को जो न मानना] कभी भी पुत्र न रहै और उनकी आज्ञा के बिना भाग को भी न बांटें —और ब्राह्मण की निन्दा में भी पूर्वोक्त और निर पराधी और दुर्बल की हिंसा में दूना, दोष है—यदि छुटाने में समर्थ होकर ब्राह्मण की हिंसा करवावे और गुरू पर क्रोध करे तो ब्राह्मण को सौ वर्ष तक नरक और मारने में सहस्र वर्ष तक और रुधिर के निकलने पर जितनी रुधिर से

लोहितदर्शने यावतस्तत्प्रसकंघपांसून्संग्रहीयात्संग्र
हीयात्

इतिगौतमीयेद्वाविंशोध्यायः २२

प्रायश्चित्तमग्नौसक्तिर्ब्रह्मघ्नस्त्रिरवच्छातस्यलक्ष्येवावा
स्याज्जन्येशस्त्रभृतांखट्वांगकपालपाणिर्वाद्वादशसंवत्स
रान्ब्रह्मचारीभैक्ष्यायग्रामंप्रविशेत्स्वकर्म्माचक्षाणःप
रोपक्रामेत्संदर्शनादार्य्यस्यस्नानासनाभ्यांविहरन्सवनेषू
दकोपस्पर्शनाच्छुद्ध्येत् प्राणलाभेवातन्निमित्तेब्राह्मण
स्यद्रव्यापचयेवात्र्यवरंप्रतिराज्ञः अश्वमेधावभृथेवान्यय

पृथ्वी के परमाणु भीजें उतने वर्ष तक नरक होता है ॥

इति गौतमस्मृतौ २२ अध्यायः

ब्रह्महत्याका प्रायश्चित्त यह है कि वह अग्नि में प्रवेशकरै अथवा तीनवार शस्त्र धारियोंके शस्त्र सेकाटा जाय और खट्वांग और कपाल को हाथ में लेकर बारह वर्ष तक ब्रह्मचर्य को धारण किये भिक्षा के लिये अपने कर्म [हत्या] को कहता हुआ ग्राम में जाय और आर्य (सज्जन) को देख कर मार्ग को छोड दे और तीर्थों में स्नान आसन (टिकना) जल के आचमन से शुद्ध होता है यदि ब्रह्म. हत्यारे के निमित्त (यत्न) से किसी ब्राह्मण के प्राणवचें अथवा नष्ट हुआ द्रव्य मिल जाय तो तीसरा भाग कम (८वर्ष)प्रायश्चित्त करै और राजा की अश्वमेध

ऽप्यग्निष्टुदंतश्चेत् स्पृष्टश्चेद्ब्राह्मणवधेहत्वापिआत्रे
य्यांचैवंगर्भेचाविज्ञातेब्राह्मणस्य राजन्यवधेषड्वार्षिकं
प्राकृतंब्रह्मचर्य्यंऋषभैकसहस्राश्चगादद्यात् वैश्येत्रैवा
र्षिकंऋषभैकशताश्चगादद्यात् शूद्रेसंवत्सरंऋषभैकाद
शाश्चगादद्यात् अनात्रेय्यांदैवंगांदवैश्यवत्मंडूकनकुल
काकविंवदहरमूषिकाश्वहिंसासुच अस्थिमतांसहस्रं ह
त्वाअनस्थिमतामनडुद्भारेच अपिवाऽस्थिमतामेकैक

अथवा अन्य यज्ञ में अग्नि की स्तुति करै और अंतःकरण में जो ब्राह्मण के वध को न चाहै और ब्राह्मण मर जाय और ऋतु वाली स्त्री के मरने में और बिना जाने गर्भ के नष्ट करने में भी ६ वर्षका प्रायश्चित्त है—ब्राह्मण क्षत्रिय के मरने में छः वर्ष का स्वभाव से ब्रह्म चर्य करै एक बैल और सहस्र गौ दे और वैश्य के मरने में तीन वर्ष का ब्रह्मचर्य और एक बैल और सौ गौ दे और शूद्र के मरने में एक वर्ष का ब्रह्मचर्य एक बैल और ग्यारह गौ दे और रजस्वला से भिन्न स्त्री के मरने में एक वर्ष का ब्रह्मचर्य और एक बैल और सौ गौ का दान दे मेंडक—नौला काक विंव और चम्वदहर मूसा इनकी हिंसा में भी पूर्वोक्त प्रायश्चित्त करै सहस्र अस्थिवाले और अस्थिवालो से भिन्नों की हत्या में और भार से बैल की हत्या में यही प्रायश्चित्त है अथवा अस्थि वाले छोटे२ जीवों की एक २ हत्या में किंचित्२ दान दे षंड की जीव की हत्या में पलाल का एक

स्मिन्नुकिंचिद्दद्यात्षंडेपलालभारः सीसमासकश्चवराहे घृतघटःसर्पेलोहदंडःब्रह्मबंध्वांचललनायांजीवो:वैशि क्रेनकिंचित्तल्पान्नधनलाभवधेषुपृथग्वर्षाणिद्वे परदारे त्रीणिश्रोत्रियस्यद्रव्यलाभे चोत्सर्गः यथास्थानंवागमये तुप्रतिषिद्धमंत्रयोगेसहस्रवाक्चेत् अग्न्युत्सादिनिराकृत्युपपातकेषुचैवंस्त्रीचातिचारिणीगुप्तापिंडंतुलभेत् अमानुषीषुगोवर्ज्जंस्त्रीकृतेकूष्मांडैर्घृतहोमोघृतहोमः

इतिगौतमीयेत्रयोविंशोध्यायः २३

भार और एक मासा सीसा और शूकर की हत्या में घीका घड़ा सर्प की हत्या में लोहे का दंड—ब्राह्मण की स्त्री की हत्या—अन्न—धन का लोभ इनसे—हत्या किसी से बिना जाने होजाय तो भिन्न२ वर्ष का प्रायश्चित्त है अर्थात पराई स्त्री की हत्या में दो और वेद पाठी की स्त्रीकोहत्या मे तीन यदि द्रव्यमिलजाय तो अपराधी को छोड दे अथवा उसके घर पहुंचा दे यदि इस अपराध में सहस्र वार सच्चा हो और अग्नि का त्यागी और निर स्कारी और उप पातक इनमें भी यही प्रायश्चित्त है और व्यभि चारिणी स्त्री की रक्षा करे और पिंड दे और गौ को छोड़ कर स्त्री से भिन्न स्त्री की कीहुई हत्या में कूष्मांड मंत्रों से घीका होम करे२ ॥

इति गौत्तम स्मृतौ २३ अध्यायः

सुरापस्यब्राह्मणस्योष्णामासिंचेयुःसुरामास्येमृतः शुद्धयेत् अमत्यापानेपयोघृतमुदकंवायुंप्रतिव्यहतप्तानिसकृच्छ्रतोस्यसंस्कारःमूत्रपुरीषरेतसांचप्राशनेश्वापदोष्ट्रखराणांचांगस्य ग्रामकुक्कुटशूकरयोश्चगंधाघ्राणेसुरापस्यप्राणायामोघृतप्राशनंचपूर्वैश्चदष्टस्यतल्पेलोहशयनेगुरुतल्पगः शर्मीसूर्मीं ज्वलंतींवाश्लिष्येत् लिंगंवासवृषणमुत्कृत्यांजलावाधायदक्षिणांप्रतीचींवादिशंव्रजेत् अजिह्ममाशरीरनिपातात्मृतःशुद्धयेत् सखीसयोनिसगोत्राशि

जो ब्राह्मण मदिरा पीवे उसके मुख में उष्ण मदिरा को सींचे उससे मर कर वह शुद्ध होता है और यदि अज्ञान से पीवे तो दूध घी जल इन को तपाकर तीन दिन तक पीवे और कृच्छ्र व्रत करा करै ब्राह्मण का संस्कार करें और मूत्र विष्ठा वीर्य के और भेड़िहा ऊट गधा ग्राम का मुरगा इनके अंग के भक्षण में पूर्वोक्त संस्कार करे मदिरा पीने वाले की दुर्गंध के सूंघने और पूर्वोक्त भेडिहा आदि के काटखाने में प्राणायाम और घृत का भक्षण करे और गुरु की स्त्री के संग जो गमन करै वह तपायीहुयी लोहे की शय्यापरसोवे और जलती हुई लोहे की स्त्री का स्पर्श करे अथवा अंडकोश सहित इंद्रिय को काट और हात में रख कर दक्षिण वा पश्चिम दिशा को चला जाय और शरीर के मरने तक निष्कपट रहै फिर मरकर शुद्धहोता है जो स्त्री मित्रकीहो अथवा कुलगोत्रकी

ष्यभार्यासुस्नुषायांगविचगुरुतल्पसमः अवकरइत्येकेश्व भिरादयेद्राजानिहीनवर्णागमनेस्त्रियंप्रकाशंपुमांसंघातये त् यथोक्तवागर्द्दभेनावकीर्णीनिर्ऋतिंचतुष्पथेजपेत् तस्याजिनमूर्द्ध्वबालंपरिधायलोहितपात्रःसप्तगृहान्भैक्षं चरेत्कर्माचक्षाणःसंवत्सरेणशुद्धयेत् रेतस्कंदनेभयेरोगेस्वप्नेग्नींधनभैक्षचरणानिसप्तरात्रंसकृत्वाज्यहोमःसा मिधोवारेतस्याभ्यांसूर्याभ्युदितेब्रह्मचारीतिष्ठेदहरभुंजानोभ्यस्तमितेचरात्रिंजपन्सावित्रींअशुचिंदृष्टादित्य

हो और शिष्य और लड़के की स्त्री हो इनके संग और गौ के संग मैथुन करके गुरु की शय्या पर गमन करने का दोष है और कोई यह कहते हैं अवकर (व्रतत्याग) का प्रायश्चित्त यह है जो प्रत्यक्ष हीन (नीच) वर्ण की स्त्री के संग गमन करै उन दोनों स्त्री पुरुषों को राजा मरवा दे और जो गधे की योनि में वीर्य को गेरे वह चौराहे में निर्ऋति देवता का पूजन करै और उस गधे की बालों सहित चाम को ओढ़कर लोहे के पात्र में अपने कर्म को कहता हुआ सात घरों से भिक्षा मांगे इस प्रकार वर्ष दिन में शुद्ध होता है और भय वा रोग से स्वप्न में यदि वीर्य निकल जाय तो ७ दिन तक अग्निहोत्र के लिये इंधन और भिक्षा मांग कर घी से होम करै ॥

सूर्य के उदय होने पर ब्रह्मचारी रहै और दिन में भोजन करै और सूर्य के छिपने पर गायत्री का जप करता

मीक्षेतप्राणायामंकृत्वाअमेध्यप्राशनेवाअभोज्यभोजनेनि
ष्पुरीषीभावः त्रिरात्रावरमभोजनम्सप्तरात्रंवास्वयंशी
र्णान्युपयुंजानःफलान्यनतिक्रामन् प्राक्पंचनखेभ्यःछर्द
नंघृतप्राशनंचआक्रोशानृतहिंसासुत्रिरात्रंपरमंतपः सत्य
वाक्येवारुणीभिःपावमानीभिर्होमः विवाहमैथुननिर्मातृ
संयोगेष्वदोषमेके अनृतंतुखलुगुर्वर्थेषुयतःसप्तपुरुषानि
तश्चपरतश्चहंतिमनसापिगुरोरनृतंवदन्नल्पेष्वप्यर्थेषु अं

हुआ रात्रि को बितावे और अशुद्ध वस्तु को देख कर सूर्य का दर्शन करै और अपवित्रस्थल को भक्षण करके प्राणायाम सूर्य का दर्शन करै और अभोज्य (म्लेच्छ आदि) का यदि भोजन करले तो इतने उस अन्न का मल शरीर में से न निकले तब तक कमसे कम तीन रात्र भोजन न करे अथवा सात दिन तक आप से पड़े हुए फलों को भक्षण करै और पांचों पंचनख पशुओं को छोड कर अन्य के भक्षण में वमन करके घृत का भक्षण करै और निन्दा झूठ हिंसा इनमें सत्य वाक्य के विषै अर्थात् जो सच्चेनिन्दादि होंय तो वारुणी पावमानी ऋचाओं से होम करै और कोई यह कहते हैं कि विवाह मैथुन और माता को छोड़ कर अन्य स्त्रीयों के संग में झूठ बोलने का दोष नही है और गुरु के लिये जो झूठ बोले वह सात पिछली और सात अगली पीढ़ियों को नष्ट कर देता है और मन से भी गुरु के लिये अल्प कामों में भी जानकर झूठ

स्यावसायिनीगमनेकृच्छ्राब्दः अमत्याद्द्वादशरात्रंउदक्या
गमने त्रिरात्रंत्रिरात्रं

इतिगौतमीयेचतुर्विंशतितमोऽध्यायः

रहस्यंप्रायश्चित्तमविख्यातदोषस्यचतुर्ऋचंतरत्समं
दीत्यप्सुजपेदप्रतिग्राह्यं प्रतिजिघृक्षन्प्रतिगृह्यवाऽभो
ज्यंबुभुक्षमाणःपृथिवीमावपेत्ऋत्वन्तरेरममाणउदको
पस्पर्शनाच्छुद्धिमेकेस्त्रीषुपयोव्रतोवादशरात्रंघृतेनद्विती
यमद्भिस्तृतीयंदिवादिष्वेकभक्तोजलक्लिन्नवासाः

बोले अथवा व्यवसायी (भीलादि) की के संग गमन करे और यदि अज्ञान से पूर्वोक्त कर्म करै तो बारह रात्र तक कृच्छ्र करै और रजस्वला स्त्री के संग जो गमन करै वह तीन रात्र कृच्छ्र करै ॥

इति गौतम स्मृतौ २४ अध्यायः

बिना जाने दोष का प्रायश्चित्त यह है कि जल में बैठकर तरत्समंदी इस ऋचा को चार बार जपै और प्रतिग्रह के अयोग्य को जो लेने की इच्छा करै वा ले तो भी पूर्वोक्त ऋचा को जल में जपे और अभोज्य के भोजन की इच्छा करे तो पृथिवी में आव पन (रटना) करै और ऋतु के बिना स्त्री का संग गमन करै तो जल के स्नान वा आचमन से शुद्धि होती है और कोई यह कहते हैं कि स्त्रियों के संग में यह प्रायश्चित्त है कि और जो भ्रूणहत्या करै वह दश रात तक

लोमानिनखानित्वचंमांसंशोणितंस्नाय्वस्थिमज्जानमितिहोमः आत्मनोमुखेमृत्योरास्येजुहोमीत्यंततःसर्वपातकप्रायश्चित्त भ्रूणहत्यायाःअथान्यदुक्तोनियमः अग्नेत्वंपारयेतिमहाव्याहृतिभिर्जुहुयात् कुष्मांडैश्चाज्यंवद्धतएववाब्रह्महत्यासुरापानस्तेयगुरुतल्पेषुप्राणायामेः स्नातोघमर्षणंजपेत्सममश्वमेधावभृथेनसावित्रींवासहस्रकृत्वआवर्तयन्पुनीते हैवात्मानं अंतर्जलेवाघमर्षणंत्रिरावर्त्तयन्पापेभ्योमुच्यतेमुच्यते

दूध पीने का व्रत करै अगले १० रात घी और अगले १० रात जल से वितावे और दिन में एक वार भोजन करै और आर्द्र (भीजे) वस्त्रों को पहिन कर लोम नख—मांस—रुधिर—स्नायु मज्जा शरीरके ये सब आत्मनोमुखेमृत्योरास्ये जुहोमि, इस मंत्र से होम करदे संपूर्ण भ्रूण हत्यारे का यही प्रायश्चित्त है अथवा उक्त नियम से रहकर अग्नेत्वं पारय यह कह कर ७सात महा व्याहृतियोंसे होम करै और कुष्मांड मन्त्रों से घीका होम करै और ब्रह्म हत्या—मदिरा का पान—चोरी—गुरु की शय्या पर गमन इन दोषों में भी पूर्वोक्त व्रत करके प्राणायाम और स्नान करके अघमर्षण को जपै और सहस्र वार गायत्री को जपै वह अश्वमेध के अवभृथ (अंत में स्नान) के समान आत्मा को पवित्र करता है—और जो जल के बीच तीनवार अघमर्षण को जपै वह पापों से छूटता है२ ॥

इतिगौतमीयेपंचविंशोऽध्यायः २५

तदाहुःकतिधावकीर्णीप्रविशतीतिमरुतःप्राणेनेंद्रंबलेनबृहस्पतिंब्रह्मवर्चसेनाग्निमेवेतरेणसर्वेणेति सोमावास्यायांनिश्यग्निमुपसमाधायप्रायश्चित्ताज्याहुतीर्जुहोतिकामावकीर्णोस्म्यवकीर्णोस्मिकामकामायस्वाहा कामाभिद्रुग्धोस्म्यभिद्रुग्धोस्मिकामकामायस्वाहेति समिधमाधायानुपर्युक्ष्ययज्ञवास्तुकृत्वोपस्थायसमासिंचंत्वित्येतयात्रिरुपतिष्ठे तत्रयइमंलोकाएषांलोकानामभिजित्याभिक्रांत्या इतिएतदेवैकेशांकर्माधिकृत्ययोःपूतइवस्यात्सइत्थंजुहु

इति गौतमस्मृतौ २५ अध्याय

कितने प्रकार से अवकीर्णी (जिसका व्रत भंग हुआ हो) प्रवेश करता है यह विद्वानों ने कहा हैं पवन में प्राण इन्द्र में बल बृहस्पति में ब्रह्मतेज और अन्य सब देह की वस्तु अग्नि में प्रवेश करते हैं और वह अवकीर्णी मावस की रात्रिको अग्नि का स्थापन करै प्रायश्चित्त की कामावकीर्णोस्मि२ काम का मायस्वाहा—और कामाभि ग्धोस्मि२ काम का मायस्वाहा—इन मन्त्रों से आहुति दे समिध की लकड़ी रख कर छिड़के और यज्ञ वास्तु (घर) का चक्कबनावे और समासिंचंतु—इस मंत्र से तीन वार स्तुति करै और उसी वास्तु में त्रय इमे लोका एषां लोकानाम भिजित्याभि क्रांत्या—यह मंत्र पढे यह भी कितने ऋषियों ने कहा है—कर्म का प्रारंभ करके जो पवित्र के समान

यादित्थमनुमंत्रयेतवरोदक्षणेतिप्रायश्चित्तमविशेषात्आ
आर्जवपैशुनप्रतिषिद्धाचारानाद्यप्राशनेषुशूद्रायांचरेतः
सिक्त्वायोनौचदोषवतिकर्म्मण्यभिसंधिपूर्वेण्यलिंगाभिर
पउपस्पृशेद्वारुणीभिरन्यैर्वापवित्रैःप्रतिषिद्धवाङ्मनसाप
चारेव्याहृतयः संख्याताः पंचसर्वास्वथोवाचामेदहश्चमा
दित्यश्चपुनातुस्वाहेतिप्रातः रात्रिश्चमावरुणश्चपु नात्वि
तिसायंअष्टौवासमिध आदध्याद् वकृतस्येतिहुत्वैवंसर्व
स्मादेनसोमुच्यतेमुच्यते

इतिगौतमीयेषड्विंशतितमोऽध्यायः २६

होना चाहे वह भी इसी प्रकार होम करै और बरोदक्षिणा इससे स्तुति करै इसी प्रकार सामान्य से प्रायश्चित्त है—और कठोरता चुगली निषिद्ध आचरण अभक्ष्यभक्षण इनमें और शूद्रा में वीर्य को सींच कर और आग्रह से दूषित कर्म में भी बरुण है देवता जिनका ऐसी जल के चिन्ह वाली ऋचाओं से अथवा अन्य पवित्र मंत्रों से आचमन करै और बाणी और मन के निषिद्ध आचरण में पांच व्याहृतियों से अथवा सब व्याहृतियों से आचमन करै और प्रातःकाल अहश्चमादित्यश्च पुनातुस्वाहा इस मंत्र से और सायंकाल रात्रिश्च मा वरुणश्च पुनातु—इस मंत्र से आठ समिध रक्खै और देवकृतस्य—इस मंत्र से होम करके संपूर्ण पापों से छूटता है २ ॥

इति गौतमस्मृतौ २६ अध्यायः

अथातःकृच्छ्रान्व्याख्यास्यामः हविष्यान्प्रातराशान्भु क्त्वातिस्रोरात्रोर्नाश्नीयात् अथापरंत्र्यहंनक्तंभुंजीत अथा परंत्र्यहनकंचनयाचेत् अथ.परंत्र्यहमुपवसेत् संतिष्ठेद हनिरात्रावासीतक्षिप्रकामःसत्यंवदेत अनार्यैर्नसंभ.षेत रौरवयौधाजिनेनित्यंप्रयुंजीत अनुसवनमुदकोपस्पर्शनं आपोहिष्ठेतितिसृभिः पवित्रवतीभिर्मार्जयेत् हिरण्यवर्णाः शुचयःपावका इत्यष्टाभिःअथोदकतर्पणं ॐ॰नमोहमाय मोहमायसंहमायधुन्वतेतापसायपुनर्वसवेनमोनमोमौं। ज्यायोर्म्यायवसुविंदायसर्वविंदायनमोनमः पाराय सुपा रायमहापारायपारयिष्णवेनमोनमोरुद्रायपशुपतयेमहते

इसके अनंतर कृच्छ्रों को कहते हैं प्रातःकाल हविष्य (ऋषियों के नीवारादि अन्न) अन्नों को खाकर तीन रात तक भोजन न करै फिर तीन दिन रात्रि को ही भोजन करै फिर तीन दिन किसी से न मांगे फिर तीन दिन उपवास करै और दिनमें खड़ा रहै और रात्रि को बैठै और शीघ्र फल चाहे तो सच बोले दुष्टों के संग न बोले और रुरु, यौध, (एक प्रकार के मृग) की मृगछाला ओढे और त्रिकाल आचमन और आपो हिष्ठा आदि तीन ऋचाओं से और हिरण्य वर्णाः शुचयः पाव का. इत्यादि आठ पवित्र ऋचाओं से मार्जन करै फिर जल से तर्पण इस प्रकार करै कि, हम, मोहम, संहम, धुन्वत्, तापस, पुनर्वसु, मौज्य. ऊर्म्य, वसुविन्द, सर्वविन्द, पार, सुपार, महा पा-

देवायत्र्यंबकायैकचरायाधिपतयेहरायशिवायशांतायोग्रायवज्रिणेघृणिनेकपर्द्दिनेनमोनमः सूर्य्यायादित्यायनमः नमोनीलग्रीवायशितिकंठायनमः नमःकृष्णायपिंगलाय नमः नमोज्येष्ठायश्रेष्ठायवृद्धायेंद्रायहरिकेशायोर्द्ध्वरेतसे नमः सत्याय पावकाय पावकवर्णाय नमः नमः कामाय कामरूपिणे नमः नमोदीप्तायदीप्तरूपिणेनमःनमस्तीक्ष्णायतीक्ष्णरूपिणेनमोनमःसौम्यायसुपुरुषायमहापुरुषायमध्यमपुरुषायोत्तमपुरुषायनमः नमोब्रह्मचारिणे नमः नमश्चन्द्रललाटायनमोनमः कृत्तिवाससेपिनाकहस्तायनमोनमइति एतदेवादित्योपस्थानम् एताएवाज्या

पार . पारयिष्णु, रुद्र –पशुपति - महादेव– त्र्यंबक–एकचर अधिपति - हर–शिव - शांत –उग्र - बज्रि घृणि –कपर्द्दी– सूर्य्य–आदित्य - नील ग्रीव – शितिकंठ – कृष्ण - पिंगल–ज्येष्ठ - श्रेष्ठ - वृद्ध –हरिकेश –उर्द्ध्व रेताः – सत्य पावक - पावक वर्ण –काम –काम रूपी –दीप्त दीप्त रूपी - तीक्ष्ण तीक्ष्ण रूपी –सौम्य –सुपुरुष - महा– पुरुष -मध्यम पुरुष–उत्तम पुरुष –ब्रह्मचारी, चन्द्रललाट, कृत्तिवासा, पिनाक हस्त इन सब (इन आदि को नमस्कार है २ यह तर्पण है और यही सूर्य्य की स्तुति है और यही घी की आहुति हैं इस प्रकार होते हुए बारह दिन के पीछे चरु (साकल्य) को पका कर इन देवताओं के निमित्त होम करै कि अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा अग्नीषो

हुतयः द्वादशरात्रस्यांतेचरुं श्रपयित्वैताभ्योदेवताभ्योजु
हुयात् अग्नयेस्वाहासोमायस्वाहा अग्नीषोमाभ्यांस्वाहा
इंद्राग्निभ्यामिंद्रायविश्वेभ्योदेवेभ्योब्रह्मणेप्रजापतये
ग्नयेस्विष्टकृतइति अथब्राह्मणतर्पणं एतेनैवातिकृच्छ्रो
व्याख्यातः यावत्सकृदाददीततावदश्नीयात् अब्भक्षस्तृ
तीयः सकृच्छ्रातिकृच्छ्रः प्रथमंचरित्वा शुचिःपूतःकर्मण्यो
भवतिद्वितीयंचरित्वायदन्यत्महापातकेभ्यःपापंकुरुतेत
स्मान्मुच्यते तृतीयंचरित्वासर्वस्मादेनसोमुच्यते अथैतां
स्त्रीन्कृच्छ्रान्चरित्वासर्वेषुस्नातोभवतिसर्वैर्देवैर्ज्ञातोभव
ति यश्चैवंवेदयश्चैवंवेद

माभ्यांस्वाहा इंद्राग्निभ्यां स्वाहा इन्द्राय स्वाहा विश्वेभ्योदेवेभ्यः
स्वाहा ब्रह्मणे स्वाहा प्रजापतये स्वाहा अग्नयेस्विष्टकृते स्वाहा
इस होम के पीछे वेद के मंत्रों से तर्पण करे इसीसे अतिकृच्छ्र
भी कहा गया कि जितना एक बार मुख में आवे उतना ही
भोजन करै और जल को ही भक्षण करै यह कृच्छ्राति कृच्छ्र
है पहिले (कृच्छ्र) को शुद्धता से करके पवित्र और कर्म का
अधिकारी होता है दूसरे (अति कृच्छ्र) को करके महापातक
से अन्य जो पाप करता है उससे छूटता है और तीसरे(कृच्छ्रा
ति कृच्छ्र) को करके संपूर्ण पापों से छूटता है और इन तीनों
कृच्छ्रों को करके सब कर्मों में स्नात होता है और सब देवता
उसको जानते हैं जो इस प्रकार जाने२ ॥

इतिगौतमीयेसप्तविंशोध्यायः २७

अथातश्चांद्रायणांतस्योक्तोविधिःकृच्छ्वेवपनंव्रतंचरेत् श्वोभूतांपौर्णमासीमुपवसेत् आप्यायस्वसतेपयांसिनवोनव इतिचैताभिस्तर्पणमाज्यहोमोहविषश्चानुमंत्रणं उपस्थानंचंद्रमसः यद्देवादेवहेलनमितिचतसृभिराज्यंजुहुयात् देवकृतस्येतिचांतेसमिदभिः ओंभूर्भुवःस्वस्तपः सत्यंयशःश्रीरूपंगिरौजस्तेजःपुरुषोधर्म्मःशिवइत्येतैर्ग्रासानुमंत्रणंप्रतिमंत्रंमनसानमःस्वाहेतिवासर्वैर्ग्रासप्रमाणमा

इति गौतम स्मृतौ २७ अध्यायः

इसके अनंतर चांद्रायण की यह विधि कही है कि चतुर्दशी १४ कृच्छ्र में वपन (मुंडन) करै और प्रातःकाल पूर्णमासी १५ को उपवास करै और आप्यायस्व सतेपयांसिनवोनव इत्यादि मंत्रों से तर्पण घी का होम हविः[अन्न] का अनुमंत्रण (मंत्र पढ कर जल छिड़कना) और चन्द्रमा की स्तुति इन सब को करै और यद्देवादेवहेलन इत्यादि चार ऋचाओं से घी का होम करै और फिर देव कृतस्य इत्यादि मंत्रों से समिधों का होम करै और भूः—भवः—स्वः—तपः—सत्यं—यशः—श्री रूपं गीः ओजः तेजः पुरुषः धर्मः शिवः इन चौदह मंत्रों से ग्रासों का अनुमंत्रण क्रमसे करै और प्रत्येक मंत्र में मनसा नमः स्वहा [ॐ भूः मनसानमः स्वाहा] यह पढै और संपूर्ण ग्रासों का प्रमाण यह है कि जितने से मुखमें विकार (अधिक

स्याविकारेणाचरुभैक्षसक्तुकणयावकपयोदधिघृतमूलफलोदकानिहवींष्युत्तरोत्तरंप्रशस्तानिपौर्णमास्यांपंचदशग्रासान्भुक्त्वैकापचयेनापरपक्षमश्नीयात् अमावास्यायामुपोष्यैकोपचयेनपूर्वपक्षं विपरीतमेकेषांएपचांद्रायणोमासः मासंएषमाप्त्वाविपापोविपाप्मासर्वं मेनोहतिद्वितीयमाप्त्वादशपूर्वान्दशापरानात्मानंचैकविंशंपंक्तींश्चपुनातिसंवत्सरमाप्त्वाचंद्रमसः सलोकतामाप्नोत्याप्नोति

इतिगौतमीयेअष्टाविंशोध्यायः २८

फटना) न हो और चरु भिक्षा का अन्न सत्तू कण जौं दूध दही घी मूल फल उदक हवि (साकल्य) ये क्रम से एक२ अच्छे हैं पूर्णिमासी को पंद्रह १५ ग्रासों को खाकर प्रतिदिन एक२ग्रास कम करके कृष्ण पक्ष में भक्षण करै और मावस को उपवास करके प्रति दिन एक २ ग्रास बढ़ाकर शुक्ल पक्ष में भक्षण करै और किसी एक ऋषियों के मत में इससे विपरीत (कृष्णपक्ष में एक२ ग्रास बढ़ाकर और शुक्ल पक्षमें घटाना) चांद्रायण की विधि है और यह चांद्रायण मास है इसको शुद्धता से प्रथम हों एक महीने तक करके पाप से हीन होकर सब पापों को नष्ट करता है और दूसरी बार करके दश पीछे पिछले और दश अगली और इक्कीसवें आत्मा को और जिन पंक्तियों में बैठे उन पंक्तियों को पवित्र करता है और एक वर्ष तक चांद्रायण को करके चन्द्रमा के लोक को प्राप्त होता है २ ॥

इति गौतमस्मृतौ २८ अध्यायः

ऊर्ध्वंपितुःपुत्राऋक्थंभजेरन्निवृत्तेरजसिमातुर्जीवतिचे च्छति सर्व्वंवापूर्व्वजस्येतरान्बिभृयात्पितृवत् विभागे तुधर्मवृद्धिः विंशतिभागोज्येष्ठस्यमिथुनमुभयतोदद्युक्तो वृषोगोवृषः काणखोरकूटखंजामध्यमस्थानकाश्चेत् अवि र्धान्यायसीग्रहमनोयुक्तंचतुःपदं चैकैकंजवीयसः समंचेत रत्सर्व्वंद्व्यंशोवापूर्व्वजःस्यात् एकैकमितरेषांएकैकंवाका म्यंपूर्व्वः पूर्व्वोलभेतदशतःपशूनांमेकशफद्विपदानांवृषभो

पिता के मरे पीछे पुत्रधन को बांटे और पिता के जीवते हुए जब माता का रजो दर्शन निवृत्ति होजाय और पिता की इच्छा हो तब बांटे अथवा सब धन जेठे भाई के आधीन रहै वह छोटे भाइयों को पिता के समान पाले—और विभाग करैं तो धर्म से बीसवां भाग अधिक धन और दोनों ओर के दांत वाला बैल जेठे भाई को दें—काणा—लगड़ा—गंजा ये बैल मध्यम पुत्र को दें—और यदि अनेक बैल आदि होंय तो गौ कवच—गाड़ी—और एक २ पशु छोटे भाई को दें और शेष सब धन को बराबर बांटलें—अथवा जेठे भाई को दो भाग और छोटे भाईयों को एक२ भाग दें—अथवा अपनी इच्छा से सब भाई एक२ भाग लेलें—दश घोड़ा वा बैल आदि पशुओं में से क्रम से सब भाई एक२ लें परन्तु जेठे को एक बैल अधिक दें और सबमें बड़ी स्त्री के पुत्र को सोलह बैल दें अथवा छोटे भाई यों को भी उसके समान ही माता ओं के क्रम से कुछ

धिकोज्येष्ठस्यऋषभषोडशाज्यैष्ठिनेयस्यसमंवाज्यैष्ठिने ये
नयवीयसांप्रतिमातृवास्ववर्गे भागविशेषंपितोत्सृजेत् पु
त्रिकामनपत्योऽग्निंप्रजापतिंचेष्ट्वामदर्थमत्यमितिसंवाद्य
अभिसंधिमात्रात्पुत्रिकेत्येकेषांतत्संशयान्नोपयच्छेदभ्रातृ
कांपिंडगोत्रऋषिसंबंधाऋक्थंभजेरन् स्त्रीचानपत्यस्यबीज
वालिप्सेतदेवरत्वान्यजातमभागंस्त्रीधनंदुहितॄणाम
प्रत्तानामप्रतिष्ठितानांचभगिनीशुल्कसोदराणामूर्ध्वं मातु

भाग पिता देदे जिसके पुत्र नहो वह पुरुष यह प्रतिज्ञा कि
मेरे लिये अपत्य (पुत्र) इसमें हो और अग्नि और प्रजापति
का पूजन करके पुत्रिका को पिता दे और कोई यह कहते हैं
कि अभिसंधि (मन से इच्छा) सेही पुत्रिका होजाती है इससे
पुत्रिका होजाने के संदेह से जिसके भाई न हो उस स्त्री को
न विवाहै पिंड गोत्र ऋषि इनके संबंधी धन को बांटलें और
जिसके पुत्र न हो उसकी स्त्री भी धन को ले अथवा देवर से
पुत्र को पैदा करे और यदि देवर वाली के अन्य से पुत्र होजाय
तो उसका धन विना विवाही और अप्रतिष्ठित (निर्धन) लड़की
यों का होता है और भगिनी (बहिन) यों का शुल्क (जिस धन
को लेकर व्याही हों वह धन) मा के मरे पीछे भाईयों का हो
ता है और कोई यह कहते हैं कि मा के जीवते भी भाईयों का
ही होता है मरे हुए संसृष्टि (जो पृथक होकर फिर इकट्ठा
व्यापार करैं) यों का धन जेठे भाई का है और उस संसृष्टि के

पूर्व्वं चैके संसृष्टिविभागः प्रेतानां ज्येष्ठस्य संसृष्टिनि प्रेते ऽसंसृष्टिऋक्थभाक् विभक्तजः पित्र्यमेव स्वयमर्जितमवैद्येभ्यो वैद्यः कामं न दद्यात् अवैद्याः समं विभजेरन् पुत्राः औरसक्षेत्रजदत्तकृत्तिमगूढोत्पन्नापविद्धा ऋक्थभाजः कानीनसहोढपौनर्भवपुत्रिकापुत्रस्वयंदत्तक्रीता गोत्रभाजः चतुर्थांशिनः औरसाद्यभावे ब्राह्मणस्य राजन्यापुत्रो ज्येष्ठो गुणसंपन्नस्तुल्यभाक् ज्येष्ठांशहीनमन्यत् राजन्यावैश्यापुत्र समवाये

मरे पीछे जो संसृष्टि न हो वही भाई धन का भागी है और जो पुत्र विभाग के पीछे पैदा हो वह पिता के ही भाग का भोगी है विद्या वान् मनुष्य ने स्वयं इकट्ठा किया जो धन उसको विद्या हीन भाईयों को यथेच्छ (चाहे तो) न दे और विद्या से हीन पुत्र तो सम विभाग करलें और स (धर्म से विवाही का पुत्र) क्षेत्रज (देवर से उत्पन्न) दत्तक (गोद लिया) कृत्रिम [स्वय आया हुआ] गूढोत्पन्न [जिसकी यह प्रतीत न हो किसके वीर्य से है] अपविद्ध (जोबन आदि में पड़ा मिला हो) ये छः पुत्र धन के भागी हैं और कुवारी कन्या का पुत्र सहोढ (जो विवाह के समय गर्भ में हो) पौनर्भव (एक जगे संबंध करके दूसरी जगे जिस कन्या का संबंध वा विवाह हो उसका पुत्र) पुत्रिका पुत्र स्वय दत्त [जिस को पिता वा माता प्रसन्नता से दे जांय) क्रीत (मोल लिया) ये छः पुत्र गोत्र के भागी हैं चौथे भाग के धन में भागी हैं और क्षत्रिया में पैदा हुआ जेठ और गुणी

सयथास्त्राह्मणीपुत्रेणक्षत्रीयाश्च तुश्शूद्रापुत्रोथनपत्यस्य
शुश्रुषुश्चेतुलभेतुवृत्तिमूलम्तेवासिविधिनासवर्णापुत्रो
प्यन्यायवृत्तोनलभेतैकेषांब्राह्मणस्यश्रोत्रियाअनपत्यस्य
ऋक्थंभजेरन्राजेतरेषांजडक्लीवौभर्तव्यौअपत्यंजडस्य
भागार्हंशूद्रापुत्रवतुप्रतिलोमास्तुउदकयोगक्षेमकृतान्न
स्वविभागः स्त्रीषुचसंयुक्तासुअनाज्ञातेदशावरैःशिष्टैरूहव
द्भिः अलुब्धैःप्रशस्तकार्यंचत्वारश्चतुर्णांपारगावेदानां

ब्राह्मण का पुत्र और स आदि पुत्रों के अभाव मे तुल्य अंश का भागी है परन्तु जेठ के भाग [बीसवां भाग आदि] क्षत्रिया और वैश्या के पुत्र दोनों का समागम होय तो भागी नही होता किंतु सम भाग का अंशी होता है और क्षत्रिय से वैश्या में जो पैदा हो वह ब्राह्मणी के पुत्र की समान है और पुत्र हीन मनुष्य का शूद्रा का पुत्र भी यदि शिष्य भाव से सेवा करै वृत्ति (भोजन वस्त्र) का अधिकारी है और अन्याय करने वाला अपने वर्ण की स्त्री का पुत्रभी वृत्ति का भागी नहीं है यह किनी ऋषियों का मत है कि पुत्रहीन ब्राह्मण के धन को वेद पाठी और क्षत्रिय आदि के धन को राजा लेले जड़ (अज्ञानी) और नपुंसक भी पालने योग्य हैं और जड़का पुत्रभी भाग के योग्य हैं और शूद्रा क पुत्रके समान प्रतिलोम भी अंशके भागी हैं और जल योगक्षेम (वर्तने की वस्तु) और सिद्ध अन्न इनका और इकट्ठी रहती हुई स्त्रियों का विभाग नही हैं

प्रागुत्तरमःत्रयआश्रमिणःपृथक्धर्मविदस्त्रयएतान्दशावरान्परिषदितिआचक्षते असंभवेचैतेषामश्रोत्रियोवेदवित्शिष्टौविप्रतिपत्तौयदाहयोते।यमप्रभवोभूतानांहिंसानुग्रहयोगेषुधर्म्मिणांविशेषेणस्वर्ग्गलोकंधर्मविदाप्नोतिज्ञानाभिनिवेशाभ्यामितिधर्म्मोधर्म्मः

इतिगौतमीयेधर्म्मशास्त्रेएकोनत्रिंशोध्यायः २९

समाप्तोयम्

जिसपापका प्रायश्चित्त शास्त्रमें ज्ञात न हो वहां कमसे कम दश तर्कना वाले और लोभ से हीन श्रेष्ठ निर्णय करैं और चारों वेदों के चार पारक गामी [ज्ञाता] तो अग्रणी (मुख्य) हो और तीन आश्रम वाले और तीन पृथक् २ धर्म के ज्ञाता हों कम से कम इन दश मनुष्यों को परिषत् (सभा) कहते हैं और इन दश का असंभव होय तो जो वेदों का ज्ञाता हो वह और परस्पर विवाद में वेद का ज्ञाता और शिष्ट दो निर्णय करदें क्यों कि शास्त्र में यह कहा है कि वेद का ज्ञाता संपूर्ण भूतों की हिंसा [दुःख] और अनुग्रह [दया] करने में यमराज से पैदा हुई नाव के समान हैं और धर्म का ज्ञाता विशेष कर स्वर्ग लोक में ज्ञान और निर्णय करने से प्राप्त होता है यही धर्म हैं २ ॥

इति गौतम स्मृतौ २९ अध्यायः

तीसरा प्रपाठक समाप्त हुआ

समाप्ता इयंस्मृति



श्रीगणेशायनमः अथशातातपस्मृतिप्रारंभः
प्रायश्चित्तविहीनानांमहापातकिनांनृणां
नरकान्तेभवेज्जन्मचिन्हांकितशरीरिणां १
प्रतिजन्मभवेत्तेषांचिन्हंतत्पापसूचितं
प्रायश्चित्ते कृतेयातिपश्चात्तापवतांपुनः २
महापातकजंचिन्हंसप्तजन्मनिजायते
उपपापोद्भवंपञ्चत्रीणिपापसमुद्भवं ३
दुष्कर्मजानृणांरोगायान्तिचोपक्रमैःशमं
जपैःसुरार्चनैर्होमैर्दानैस्तेषांशमोभवेत् ४
पूर्वजन्मकृतंपापंनरकस्यपरिक्षये

शातातप स्मृति १७

श्रीगणेशायनमः प्रायश्चित्त हीन (रहित) और चिन्ह है शरीर में जिनके ऐसा जन्म महापातकीयों का नरक के अंत में होता है १

उस पाप से जनाया हुआ वह चिन्ह जन्म२ में होता है और फिर प्रायश्चित और पश्चाताप करनेसे वह चिन्ह जाताहै २

महा पातक का चिन्ह सात जन्म उप पातक का पांच जन्म और पाप का चिन्ह तीन जन्म तक होता है ३

निंदित कर्म से पैदा हुये रोग उपक्रमों [उपायों] से शांत होते हैं और उन रोगों की शांति जप देवताओं का पूजन होम और दान इनसे होती है ४

पूर्व जन्म में किया पाप नरक भोगने के अंत में व्याधि

बाधतेऽर्थाधिरूपेणतस्यजप्यादिभिःशमः ५
कुष्ठंचराजयक्ष्माचप्रमेहोग्रहिणीतथा
मूत्रकृच्छ्राश्मरीकासाअतिसारभगन्दरौ ६
दुष्टव्रणंगंडमालापक्षाघातोऽक्षिनाशनं
इत्येवमादयोरोगामहापापोद्भवाःस्मृताः ७
जलोदरंयकृत्प्लीहाशूलरोगव्रणानिच
श्वासाजीर्णज्वरच्छर्दिभ्रममोहगलग्रहाः ८
रक्तार्बुदविसर्पाद्याउपपापोद्भवागदाः
दंडापतानकश्चित्रवपुःकम्पविचर्चिकाः ९

(रोग) होकर दुःख देता है उसकी शांति जप आदि से होती है ५

कुष्ठ राजक्षय प्रमेह ग्रहणी मूत्र कृच्छ्र (पथरी) खांसी अतीसार और भंगदर ॥ ६

दुष्ट घाव गंडमाला पक्षाघात (अर्धांग) और नेत्रों का नाश इत्यादि रोग महापापों से पैदा हुए कहे है ७

जलोदर यकृत (मांस का पींड) दक्षिण कुक्षि में प्लीहा (तिल्ली) शूल घाव सास अजीर्ण ज्वर छर्दी भ्रम-- मोह गल ग्रह (गले का एक रोग) ८

रक्तार्बुद (मांस का पींड) विसर्प [रोग भेद] इत्यादि रोग उप पातकों से पैदा होते हैं दंडापतानक (दंड के समान शरीर तन जाय) चित्र वपु (शरीर में सपेद२ चिन्ह) कंपना विचर्चिक (खुजली) ९

वल्मीकपुंडरीकाद्यारोगाःपापसमुद्भवाः
अर्शआद्यान्नृणांरोगाअतिपापाद्भवन्तिहि १०
अन्येचबहवोरोगाजायन्तेवर्णसंकरात्
उच्यन्तेचनिदानानिप्रायश्चित्तानिवैक्रमात् ११
महापापेषुसर्व्वंस्यात्तदर्धमुपपातके
दद्यात्पापेषुषष्ठांशंकल्प्यंव्याधिबलाबलं १२
अथसाधारणंतेषुगोदानादिषुकथ्यते
गोदानेवत्सयुक्तागौःसुशीलाचपयस्विनी १३
वृषदानेशुभोऽनुड्वान्शुल्कांबरसकांचनः

वल्मीक (चकदे) पुंडरीक [दादका भेद) आदिरोग पापों से होते हैं और अर्श (बवा सीर] आदि रोग मनुष्य को अति पाप से होते हैं १०

और अन्य भी बहुतसे वर्ण संकर (एक में एक का मेल) रोग होते हैं उनके कारण और प्रायश्चित्त क्रम से कहते हैं ११

महा पातक में संपूर्ण उप पातक में आधा और पापों में छटा भाग प्रायश्चित्त व्याधि की न्यूना धिकता देख कर कल्पना करना १२

अब गोदान आदिमें साधारण बिधि कहतेहैं गौ के दानमें सीधी बछड़े सहित और दुध देती गौ देनी १३

बैल के दान मे शुभ अच्छा और शुक्ल बस्त्र और

निवर्तनानिभूदानेदशदद्याद्द्विजातये १४
दशहस्तेनदंडेनत्रिंशद्दंडंनिवर्त्तनं
दशतान्येवगोचर्म्मदत्वास्वर्गेमहीयते १५
सुवर्णशतनिष्कंन्तुतद्र्द्धार्द्धप्रमाणतः
अश्वदानेमृदुश्लक्ष्णमश्वंसोपस्करंदिशेत् १६
महिषींमाहिषेदानेदद्यात्स्वर्णायुधान्वितां
दद्याद्गजंमहादानेसुवर्णफलसंयुतम् १७
लक्षसंख्यार्हणांपुष्पंप्रदद्याद्देवतार्चने
दद्याद्द्विजसहस्रायमिष्टान्नंद्विजभोजने १८

सोना सहित बैल देना और पृथ्वी के दान में ब्राह्मण को दश निवर्तन भूमि दे १४

दश हाथ के दंड से तीस दंड का निवर्तन होता है और दश निवर्तन को गोचर्म होता है इसको देकर स्वर्ग में पूजता है ॥ १५

सौ निष्क (तोला) के चौथाई २५ निष्कको सुवर्ण कहते हैं और घोड़ा के दान में कोमल श्लक्ष्ण चिकना वा सुंदर और सामग्री सहित घोड़ा दे १६

भैंस के दान में सुवर्ण और आयुध (शस्त्र) सहित भैंस और हाथी के दान में सुवर्ण और फल सहित हाथी को दे १७

और देवता के पूजन में पूजाके निमित्त लक्ष (लाख) फूल और ब्राह्मणोंके भोजनमें सहस्र ब्राह्मणोंको मिष्टान्न दे १८

रुद्रंजपेल्लक्षपुष्पे·पूजयित्वाचत्र्यंबकम्
एकादशजपेद्रुद्रान्दशांशंगुग्गुलैघृतैः १९
हुत्वाभिषेचनकुर्यान्मंन्त्रैर्वरुणदैवतैः
शान्तिकेगणशान्तिश्चग्रहशान्तिकपूर्वकं २०
धान्यदानेशुभंधान्यरवारीषष्टिमितंस्मृतं
वस्त्रदानेपट्टवस्त्रद्वयंकर्पूरसंयुतं २१
दशपंचाष्टचतुरउपवेश्यद्विजान्शुभान्
विधायवैष्णवींपूजांसंकल्प्यनिजकाम्यया २२
धेनुंदद्याद्विजातिभ्योदक्षिणांचापिशक्तितः

रुद्र के जप में लक्ष फूलों से महादेव का पूजन करके ग्यारह रुद्रों का जप करे और गुग्गुल और घी से दशांश १९

होम करके वरुण देवता जिनका ऐसे मंत्रों से अभिषेक (देह का सींचना) करे और शांति के कर्म में ग्रहों की शांति करके गण शांति करे २०

अन्न के दान में साठ खारी अन्न देना कहा है वस्त्र के दान में कपूर सहित रेशम के दो वस्त्र देने कहे हैं २१

दश—पांच—आठ—अथवा चार श्रेष्ठ ब्राह्मणों को बैठा कर और विष्णु की पूजा और अपनी कामना से संकल्प करके २२

ब्राह्मणों को गौ और शक्ति के अनुसार दक्षिणा दे और

अलंकृत्ययथाशक्तिवस्त्रालंकरणैर्द्विजान् २३
याचेद्दंडप्रमाणेनप्रायश्चित्तंयथोदितं
तेषामनुज्ञयाकृत्वाप्रायश्चित्तंयथाविधि २४
पुनस्तान्परिपूर्णार्थानर्चयेद्विधिवद्द्विजान्
संतुष्टाब्राह्मणादद्यु रनुज्ञांव्रतकारिणे २५
जपच्छिद्रंतपच्छिद्रंयच्छिद्रंयज्ञकर्मणि
सर्वंभवतिनिश्छिद्रंयस्यचेच्छन्तिब्राह्मणाः २६
ब्राह्मणायानिभाषन्तेमन्यन्तेतानिदेवताः
सर्वदेवमयाविप्रानतद्वचनमन्यथा २७

वस्त्र और भूषण से ब्राह्मणों को शोभाय मान करके २३

उनसे शास्त्रोक्त और दंड (पाप) के अनुसार प्रायश्चित्त को मांगे और उनकी आज्ञा से बिधि पूर्वक प्रायश्चित्त करके२४ पूर्ण किया है मनोरथ जिनका ऐसे उन ब्राह्मणों को फिर बिधि से पूजे और संतुष्ट हुए२ ब्राह्मण ब्रत के करने वाले पुरुष को आज्ञा दें २५

जप - तप - यज्ञ का कर्म--इनमें जो छिद्र (न्यूनता) होती है वह सब छिद्र ब्राह्मणों की आज्ञा से नही रहता २६

जो ब्राह्मण कहते हैं उसे देवता मानते हैं क्योंकि ब्राह्मण सब देवताओं का रूप है इससे उनका बचन अन्यथा [झूठा] नहीं २७

उपवासोव्रतंचैवस्नानंतीर्थफलंतपः
विप्रैस्सम्पादितंसर्वंसम्पन्नंतस्यतत्फलम् २८
सम्पन्नमितियद्वाक्यंवदन्तिक्षितिदेवताः
प्रणम्यशिरसाधार्य्यमग्निष्टोमफलंलभेत् २९
ब्राह्मणाजंगमंतीर्थंनिर्जलंसार्वकामिकं
तेषांवाक्योदकेनैवशुद्ध्यन्तिमलिनाजनाः ३०
तेभ्योऽनुज्ञामभिप्राप्यप्रगृह्यचतथाशिषः
भोजयित्वाद्विजान्शक्त्याभुंजीतसहबन्धुभि ३१
इतिशातातपीयेकर्म्मविपाकेसाधारणविधिः प्रथमोध्याय

उपवास—व्रत—स्नान—तीर्थ का फल ये सब जिसके ब्राह्मणों ने कर दिये हैं उसको इनका संपूर्ण फल होता है २८

जिस कर्म में ब्राह्मण सिद्ध हुआ वह वाक्य कहदें उस वाक्य को नमस्कार करके सिर पर जो धारण करता है वह अग्निष्टोम यज्ञ के फल को प्राप्त होता है २९

संपूर्ण कामनाओं का देने वाला और जल से रहित जंगम तीर्थ ब्राह्मण हैं उनके वाक्य रूपी जल से मलीन जन शुद्ध होते रहैं ३०

उन ब्राह्मणों से आज्ञा ले और उनके आशीर्वाद को ग्रहण करके और शक्ति के अनुसार ब्राह्मणों को भोजन कराकर अपने बन्धुओं सहित भोजन करै ३१

इति शातातप स्मृतौ १ अध्यायः

ब्रह्महानरकस्यान्तेपांडुकुष्ठीप्रजायते
प्रायश्चित्तं प्रकुर्वीतसतत्पातकशान्तये १
चत्वारःकलशाःकार्य्याःपंचरत्नसमन्विताः
पंचपल्लवसंयुक्ताःसितवस्त्रेणसंयुता २
अश्वस्थानादिमृद्युक्तास्तीर्थोदकसुपूरिताः
कषायपंचकोपेतानानाविधफलान्विता ३
सर्व्वौषधिसमायुक्ताःस्थाप्याःप्रतिदिशंद्विजैः
रौप्यमष्टदलंपद्मंमध्यकुम्भोपरिन्यसेत् ४
तस्योपरिन्यसेद्देवंब्रह्माणंचचतुर्मुखं
पलार्द्धार्द्धंप्रमाणेनसुवर्णेनविनिर्मितं ५

शातातप के कर्म बिपाक में साधारण बिधि समाप्त हुई

ब्रह्म हत्यारा नरक को भोग कर स्वेत कुष्ठी होता है वह उस पाप की शांति के लिये प्रायश्चित्त करै १

चार कलशों पांचों रत्न और पचपल्लव और सपेद रक्खै २

घोडे के स्थान की मिट्टी आदि सात मट्टी गेरे औ तीर्थ के जल से भरैं और पांच कषय (कसैली वस्तु) और नाना फल से संयुक्त करै ३

सर्वौषधी संयुक्त करै और चारों दिशाओं में उनको रक्खै और बीच के घट पर चांदी का आठ दलका कमल रक्खै ४

इस कमल पर चतुर्मुखी और छः मांसे सोने से बनाये

अर्च्चयेत्पुरुषसूक्तेनत्रिकालंप्रतिवासरं
यजमानःशुभैर्गन्धैःपुष्पैर्धूपैर्यथाविधि ६
पूर्वादिकुंभेषुततोब्राह्मणाब्रह्मचारिणः
पठेयुःस्वस्ववेदांस्तेऋग्वेदप्रभृतीन्शनैः ७
दशांशेनततोहोमोग्रहशान्तिपुरःसरं
मध्यकुंभेविधातव्योघृताक्तैस्तिलहेमभिः ८
द्वादशाहमिदंकर्म्मसमाप्यद्विजपुंगव
तत्रपीठेयजमानमभिषिंचेद्यथाविधि ९
ततोदद्याद्यथाशक्तिगोभूहेमतिलादिकं

हुये ब्रह्मा का स्थापन करै ५

प्रति दिन तीनों काल में पुरुष सूक्त [सहस्रशीर्षा आदि से सुंदर गंध–पुष्प–धूपों से यजमान ब्रह्मा का विधि से पूजन करै ६

पूर्व दिशा आदि के चारों घटों पर ब्रह्मचारी ब्राह्मण ऋग्वेद आदि अपने२ वेदों को शनैः२ पढ़े ७

फिर ग्रह शांति को करके दशांश होम बीच के घट पर घी मिले तिल और सोने से करै ८

द्विजों में श्रेष्ठ बारह दिन तक इस कर्म को समाप्त कर के आसन पर बैठे हुये यजमान का विधि से अभिषेक करै ९

फिर शक्ति के अनुसार गौ–सोना –तिल ब्राह्मणों को दे और आचार्य को देने योग्य वस्तु दे १०

ब्राह्मणेभ्यस्तथादेयमाचार्य्यायनिवेदयेत् १०
आदित्यावसवोरुद्राविश्वेदेवामरुद्गणाः
प्रीताःसर्व्वेंऽयपोहन्तुममपापसुदारुणं ११
इत्युदीर्यमुहुर्भक्त्यातमाचार्यंक्षमापयेत्
एवंविधानेविहितेश्वेतकुष्ठीविशुद्ध्यति १२
कुष्ठीगोवधकारीस्यान्नरकान्तेऽस्यनिष्कृतिः
स्थापयेद्वटमेकन्तुपूर्वोक्तद्रव्यसंयुतम् १३
रक्तचंदनलिप्तांगंरक्तपुष्पांबरान्वितं
रक्तकुंभन्तुतंकृत्वास्थापयेद्दक्षिणांदिशं १४

सूर्य वसु—रुद्र-विश्वेदेवा—मरुद्गण ये सब प्रसन्नहो कर मेरे दारुण पाप को दूर करो ११

इस प्रकार वारंवार भक्ति से कह कर आचार्य से क्षमा मांगे इस प्रकार बिधान करने से श्वेत कुष्ठी शुद्ध होता है १२

गौ का हत्यारा कुष्ठी होता है नरक के अंत में उसका प्रायश्चित्त यह है कि पूर्वोक्त द्रव्यों से संयुक्त एक घट को स्थापन करै १३

और लाल चन्दन से उस घट को लीपे और लाल फूल और लाल वस्त्र ऊपर रक्खें इस प्रकार उस घट को लाल कर दक्षिण दिशा रक्खै १४

ताम्रपात्रंन्यसेत्तत्रतिलचूर्णेनपूरितं
तस्योपरिन्यसेद्देवंहेमनिष्कमयंयमं
यजेत्पुरुषसूक्तेनपापंमेशाम्यतामिति
सामपारायणंकुर्यात्कलशेतत्रसामवित् १६
दशांशंसर्षपैर्हुत्वापावमान्यभिषेचने
विहितेधर्म्मराजानमाचार्य्यायनिवेदयेत् १७
यमोऽपिमहिषारूढोदंडपाणिभयावहः
दक्षिणाशापतिर्द्देवोममपापंव्यपोहतु १८
इत्युच्चार्य्यविसृज्यैनंमासंसद्भक्तिमाचरेत्

ओर तिल के चून से भरे हुए तामे के पात्र को उसके ऊपर रक्खै ओर उस पात्र पर सोने के निष्कल तोले काभेद यमराज स्थापन करै १५

मेरा पाप शान्त होय यह कर पुरुष से पूजन करै और सामवेद का ज्ञाता उस कलश के ऊपर सामवेद का पारायण करै १६

ओर सरसों से दशांस होम करके पावमानी ऋचाओं मे अभिषेक किये हुए पीछे धर्म राज की मूर्ति को आचार्य को दे १७

भैसेपें चढ़ा दंड जिसके हाथमें भयानक दक्षिण दिशाका स्वामी यमराज देवता मेरे पापों को दूर करो १८

यह कहकर आचार्य को विदा करके एक महीने तक

ब्रह्मगोवधयोरेषाप्रायश्चित्तेननिष्कृतिः १६
पितृहाचेतनाहीनोमातृहान्धःप्रजायते
नरकांतेप्रकुर्वीतप्रायश्चित्तंयथाविधि २०
प्राजापत्यानिकुर्वीतत्रिंशच्चैवविधानतः
व्रतान्तेकारयेन्नावंसौवर्णपलसंमितां २१
कुंभंरौप्यमयंचैवताम्रपात्राणिपूर्ववत्
निष्कहेम्नातुकर्तव्योदेवःश्रीवत्सलांछनः २२
पट्टवस्त्रेणसंवेष्ट्यपूजयेत्तंविधानतः
नावंद्विजायतांदद्यात्सर्वोपस्करसंयुताम् २३

उत्तम भक्ति करै ब्राह्मण और गौ के मारने वालों की यह शुद्धि कही १९

पिता के मारने वाला बुद्धिहीन महामूर्ख, और माता के मारने वाला अंधा होता है और नरक को भोग कर वह विधि से यह प्रायश्चित्त करैं २०

विधि से तीस प्राजापत्य करै और व्रत के अंत में पल (१ टका) भर सोने की नाव बनवावै २१

चांदी का घड़ा पूर्वोक्त प्रकार से तामे के पात्र बनवाव और निष्क (तोला) भर सोने की विष्णु की मूर्ति बनवावै २२

रेसम के वस्त्र से लपेट कर विधि से विष्णु का पूजन करै और सामग्री सहित नवका को ब्राह्मण को देदे २३

वासुदेवजगन्नाथसर्वभूताशयस्थित
पातकार्णवमग्नंमांतारयप्रणतार्तिहृत् २४
इत्युदीर्य्यप्रणम्याथब्राह्मणायविसर्जयेत्
अन्येभ्योऽपियथाशक्तिविप्रेभ्योदक्षिणांददेत् २५
स्वसृघातीतुबधिरोनरकान्तेप्रजायते
मूकोभ्रातृवधेचैवतस्येयंनिष्कृतिःस्मृता २६
सोऽपिपापविशुद्ध्यर्थंचरेच्चांद्रायणव्रतम्
व्रतान्तेपुस्तकंदद्यात्सुवर्णपलसंयुतम् २७
इमंमंत्रंसमुच्चार्य्यब्रह्माणींतांविसर्जयेत्
सरस्वतिजगन्मातःशब्दब्रह्माधिदेवते २८

हे वासुदेव जगत्के नाथ हे संपूर्ण भूतों के हृदय में स्थित हे नमस्कार करने वालों के दुःख हरने वाले पाप के समुद्र में डूबे हुये मुझे तारो २४

यह कहकर नमस्कार करके ब्राह्मण को विसर्जन (विदा) करै और अन्य ब्राह्मणों को भी शक्ति के अनुसार दक्षिणा दे २५

बहन के मारने वाला बहरा और भाई के मारने वाला गूंगा होताहै औरनरकके अंतमें इसका यह प्रायश्चित्त कहाहैं२६

वह भी पाप से शुद्धि के लिये चांद्रायण व्रत करै औरव्रत के अंत में सोने के पल सहित पुस्तक का दान करै २७

इस मंत्र को कह कर सरस्वती का विसर्जन करै कि हे सरस्वति हे जगत्मात हे शब्द ब्रह्म (वेद) की देवता २८

दुष्कर्म्मकरणात्पापात्पाहिमांपरमेश्वरि
बालघातीचपुरुषोमृतवत्सःप्रजायते २९
ब्राह्मणोद्वाहनंचैवकर्तव्यंतेनशुद्धये
श्रवणंहरिवंशस्यकर्तव्यंचयथाविधि ३०
महारुद्रजपंचैवकारयेच्चयथाविधि
षडंगैकादशैरुद्रैरुद्रःसमभिधीयते ३१
रुद्रैस्तथैकादशभिर्महारुद्रःप्रकीर्तितः
एकादशभिरेतैस्तुअतिरुद्रश्चकथ्यते ३२
जुहुयाच्चदशांशेनदूर्व्वयायुतसंख्यया
एकादशस्वर्णनिष्काःप्रदातव्याःसदक्षिणा ३३

हे परमेश्वरि निंदित कर्म करने से हुआ जो पाप तिस से मेरी रक्षा करो बालक के मारने वाला पुरुष मृतवत्स (जिसकी संतान मर जाय) होता है २९

वह शुद्धि के अर्थ ब्राह्मणों को कंधे पर ले चले और बिधि से हरिवंश का श्रवण करै ३०

और महा रुद्र का जप बिधिसे करावे षडंग की ग्यारह रुद्री को रुद्र कहते हैं ३१

और ग्यारह रुद्रों को महारुद्र कहते हैं और ग्यारह महा रुद्रों को एक अति रुद्र कहते हैं ३२

और दश हजार दूर्वाओं से दशांश होम करै और ग्यारह सोने के निष्क (तोला) और दक्षिणा दे ३३

पलान्येकादशतथादद्याद्वित्तानुसारतः
अन्येभ्योऽपियथाशक्तिद्विजेभ्योदक्षिणांदिशेत् ३४
स्नापयेद्दम्पतीःपश्चान्मंत्रैर्वरुणदैवतैः
आचार्यायप्रदेयानिवस्त्रालंकरणानिच २५
गोत्रहापुरुषःकुष्ठीनिर्वंशश्चोपजायते
सचपापविशुद्ध्यर्थंप्राजापत्यशतंचरेत् ३६
व्रतान्तेमेदिनींदत्वाशृणुयादथभारतम्
स्त्रीहन्ताचातिसारीस्यादश्वत्थान्रोपयेद्दश ३७
दद्याच्चशर्करांधेनुंभोजयेच्चशतंद्विजान्

और धन के अनुसार ग्यारह पल सोना दे और अन्य ब्राह्मणों को भी यथा शक्ति दक्षिणा दे ३४

पीछे से वरुण है देवता जिनका ऐसे मंत्रों से पत्नी सहित यजमान को स्नान करावे और आचार्य को वस्त्र भूषण दे ३५

गोत्र का हत्यारा पुरुष कुष्ठी और वंश से हीन होता है वह पाप से शुद्धि के लिये सौ प्रजापत्य व्रत करै ३६

व्रत के अंत में पृथिवी का दान करके भारत को सुने स्त्री का हत्यारा अतिसार रोगवाला होता है वह दश पीपल के वृक्ष लगावे ३७

और सक्कर की गौका दान करै और सौ ब्राह्मण जिमावे

राजहाक्षयरोगीस्यादेषातस्यचनिष्कृतिः ३८
गोभूहिरण्यमिष्टान्नजलवस्त्रप्रदानतः
घृतधेनुप्रदानेनतिलधेनुप्रदानतः ३६
इत्यादिनाक्रमेणौवक्षयरोगःप्रशाम्यति
रक्तार्बुदीवैश्यहन्ताजायतेसचमानवः ४०
प्राजापत्यानिचत्वारिसप्तधान्यानिचोत्सृजेत्
दंडापतानकयुतःशूद्रहन्ताभवेन्नरः ४१
प्राजापत्यंसकृच्चैवदद्याद्धेनुंसदक्षिणां
कारूणांचवधेचैवरुक्षभावःप्रजायते ४२

राजा का हत्यारा क्षय रोग वाला होता है और उसका प्रायश्चित्त यह है ३८

गौ - मिष्टान्न - जल - वस्त्र घृत की - और तिलकी गौ इनके दान को ३६

क्रम से करै तो क्षयी का रोग शांत होता है वैश्य का हत्यारा मनुष्य रक्त अर्बुद (लदड़) रोगी होता है ४०

वह चार प्रजापत्य व्रत और सप्तधान्य (सतनजा) का दान करै - और शूद्रका हत्यारा मनुष्य दंडापतानक (दंड के समान तनाव जिस में हो ऐसा मिरगी का भेद) रोग वाला होता है ४१

वह एक प्राजापत्य व्रत और दक्षिणा सहित गौ का दान करै - कारू (शिल्पी) का हत्यारा रूखा (सूखा) होता है ४२

तेनतत्पापशुद्ध्यर्थंदातव्योषन्नभःसितः
सर्वकार्य्येष्वसिद्धार्थोगजघातीभवेन्नरः ४३
प्रासादंकारयित्वातुगणेशप्रतिमांन्यसेत्
गणनाथस्यमन्त्रंतुमन्त्रीलक्षमितंजपेत् ४४
कुलित्थशाकैःपुष्पैश्चगणशान्तिपुरःस्सरं
उष्ट्रेविनिहतेचैवजायतेविकृतस्वरः ४५
सतत्पापविशुद्ध्यर्थंदद्यात्कर्पूरकंफलं
अश्वेविनिहतेचैववक्रतुंडःप्रजायते ४६
शतंफलानिदद्याच्चचन्दनान्यघनुत्तये
महिषीघातनेचैवकृष्णगुल्मःप्रजायते ४७

वह उस पाप की शुद्धि के लिये शुक्ल बैलका दान करै हाथी का हत्यारा मनुष्य सब कामों में असिद्धार्थ (अधूरा) होता है ४३

वह मन्दिर बनवा कर गणेश जी की प्रतिमा पधरावे और मंत्रों का ज्ञाता उस मंदिर में गणेशजी का लक्ष मंत्र जपे ४४

कुलथीका शाक और फूलों से गणेश शांति (होम) करै— ऊंट का हत्यारा तोतला होता है ४५

वह उस पाप की शुद्धि के लिये कपूरका फल दे अश्व का हत्यारा वक्रतुंड [टेढा मुख] होता है ४६

वह सौ फल चंदन का दान पाप दूर करने के लिये करै भैस के हत्यारे के काला गुल्म रोग होता है ४७

खरेविनिहतेचैवखररोमाप्रजायते
निष्कत्रयस्यप्रकृतिंसंप्रदद्याद्धिरण्मयीम् ४८
तरक्षौनिहतेचैवजायतेकेकरेक्षणः
दद्याद्रत्नमयांधेनुंसततूपातकशान्तये ४९
शूकरेनिहतेचैवदन्तुरोजायतेनरः
सदद्यात्तु विशुद्ध्यर्थंघृतकुंभंसदक्षिणां ५०
हरिणोनिहतेखंजःशृगालेतुविपादकः
अश्वस्तेनप्रदातव्यःसौवर्णपलनिर्म्मितः ५१
अजाभिघातनेचैवअधिकांगःप्रजायते
अजातेनप्रदातव्याविचित्रवस्त्रसंयुता ५२

खर का हत्यारा खर [कर्री] रोम वाला होता है वह तीन निष्क सोने की प्रतिमा का दान करै ४८

तरक्षु (जीव भेद) के हत्यारे के कायरे नेत्र होने हैं वह उन पाप की शांति के लिये रत्नों की गौ का दान करै ४९

सूकर की जो हत्या करै वह दंतुर (ऊंचे दांत वाला) होता है वह शुद्धि के लिये दक्षिणा सहित घी के घड़े का दान करै ५०

मृग की जो हत्या करै वह लंगड़ा और गीदड़ का हत्यारा एक पैरवाला होता है वह सोने का पल सेवने घोडे का दान करै ५१

बकरी का हत्यारा अधिक अंग वाला होता है वह विचित्र वस्त्रों सहित बकरी का दान करै ५१

उरभ्रेनिहतेचैवपांडुरोगःप्रजायते
कस्तूरीकापलंदद्याद्ब्राह्मणायविशुद्धये ५३
मार्जारेनिहतेचैवपीतपाणिःप्रजायते
पारावतंससौवर्णंप्रदद्यान्निष्कमात्रकं ५४
शुकसारिकयोर्घातीनरःस्खलितवाग्भवेत्
सच्छास्त्रपुस्तकंदद्यात्सविप्रायसदक्षिणां ५५
बकघातीदीर्घनासोदद्याद्गांधवलप्रभां
काकघातीकर्णहीनोदद्याद्गामसितप्रभां ५६
हिंसायांनिष्कृतिरियंब्राह्मणेसमुदाहृता

उरभ्र (बकरा) के हत्यारे के पांडुरोग होता है वह शुद्धि के लिये पल भर कस्तूरी ब्राह्मण को दे ५३

विलाव के हत्यारे के पीले हाथ होते हैं वह एक निष्क सोने का पारावत (कबूतर) दे ५४

तोता और शारिका (मैना) इनका हत्यारा तोतला होता है वह दक्षिणा सहित उत्तम शास्त्र की पुस्तक ब्राह्मण कोदे ५५

बगले का हत्यारा दीर्घ (बड़ी) नाक वाला होता है वह श्वेत गौ का दान करै और काक का हत्यारा कानों से हीन होता है वह काली गौ का दान करै ५६

यह हिंसाओं में पूर्वोक्त प्रायश्चित्त ब्राह्मण का कहा इससे आधा क्षत्रिय और चौथाई वैश्य और आठमां भागशूद्र क्रम

तदर्धार्द्धप्रमाणेनक्षत्रियादिष्वनुक्रमात् ५७
इतिशातातपीयेकर्म्मविपाकेहिंसाप्रायश्चित्त
विधिर्नामद्वितीयोऽध्यायः २
सुरापःश्यावदन्तःस्यात्प्राजापत्यादनन्तरं
शर्करायास्तुलाःसप्तदद्यात्पापविशुद्धये १
जपित्वातुमहारुद्रं दशांशंजुहुयात्तिलैः
ततोऽभिषेकःकर्तव्योमंत्रैर्वरुणदैवतैः २
मद्यपोरक्तपित्तीस्यात्सदद्यात्सर्पिषोघटं
मधुनोऽर्धघटंचैवसहिरण्यविशुद्धये ३
अभक्ष्यभक्षणेचैवजायतेकृमिकोदरः

से करै ५७

इति शातातप स्मृति के कर्म बिपाक में प्रायश्चित्त की बिधि २ अध्याय समाप्त हुआ

जो मदिरा पीवे उसके काले दांत होते हैं वह पाप की शुद्धि के लिये प्राजापत्य ब्रतके अनंतर सक्कर को सात तुलाओं का दान करै १

और महारुद्र का जप करके तिलों से दशांश होम करै फिर बरुण है देवता जिनका ऐसे मंत्रों से अभिषेक करै २

मद्य के पीने वाले के रक्त पित्तरोग होता है वह शुद्धि के लिये घीसे भरा घडा और आधा घड़ा मीठे वा सहत का दे ३

अभक्ष्य का जो भक्षण करै उसके उदर में कीड़े होते हैं

यथावत्तेनशुद्ध्यर्थमुपोष्यंभीष्मपंचकं ४
उदक्यावीक्षितंभुक्त्वाजायतेकृमिलोदरः
गोमूत्रयावकाहारस्त्रिरात्रेणैवशुद्ध्यति ५
भुक्त्वाचास्पृश्यसंस्पृष्टंजायतेकृमिलोदरः
त्रिरात्रंसमुपोष्याथसतत्पापात्प्रमुच्यते ६
परान्नविघ्नकरणादजीर्णमभिजायते
लक्षहोमंसकुर्वीतप्रायश्चित्तंयथाविधि ७
मन्दोदराग्निर्भवतिसतिद्रव्येकदन्नदः
प्राजापत्यत्रयंकुर्याद्भोजयेच्चशतंद्विजान् ८

वह भीष्म पंचक (कार्तिक शुदि ११ से १५ तक) शास्त्र की रीति से उपवास करे ४

रजस्वला के देखे हुये पदार्थ को खाकर कृमिलोदर (जिस के पेट में जीव हों) होता है वह गोमूत्र और जौ खाकर तीन रात में शुद्ध होता है ५

स्पर्श के अयोग्य मनुष्य के छूये पदार्थ को खाकर कृमिलोदर होता है वह तीन रात उपवास करके उस पाप से छुटता है ६

पराये अन्न में विघ्न करने से अजीर्ण होता है वह विधि से लक्ष गायत्री के होम प्रायश्चित्त को करे ७

द्रव्य होनेपर भीजो कुत्सित (बुरा) अन्न कोदे वहमंदाग्नि होताहै वह तीन प्राजापत्य व्रत करै और सौ ब्राह्मण जिमावे ८

विषदःस्याच्छर्दिरोगीदद्याद्दशपयस्विनीः
मार्गहा पादरोगीस्यात्सोश्वं दीनंसमाचरेत् ६
पिशुनोनरकस्यांतेजायतेश्वासकासवान्
घृतेनप्रदातव्यंसहस्रपलसम्मितं १०
धूर्तोऽपस्माररोगीस्यात्सतत्पापविशुद्धये
ब्रह्मकूर्चमयींधेनुंदद्याद्गाश्चसदक्षिणाः ११
शूलीपरोपतापेनजायतेतत्प्रमोचने
सोऽन्नदानंप्रकुर्वीततथारुद्रं जपेन्नरः १२
दावाग्निदायकश्चैवरक्तातिसारवान्भवेत्

जो विष को दे उसके छर्दी का रोग होता है वह दूधवाली दश गौ दे—मार्ग को जो नष्ट करै वह पैरो में रोगी होता है और वह घोड़े का दान करै ६

पिशुन (चुगल) नरक के अंत में स्वांस और खांसी रोग वाला होता है वह सहस्र पल (टका) भर घी को दे १०

धर्त के अपस्मार (मिरगी) रोग होता है वह उस पाप की शुद्धि के लिये ब्रह्मकूर्च (पंचगव्य) की गौ और दक्षिणा दें ११

दूसरे को दुःख देने से शूल रोगी होता है वह उसपाप से छूटने के लिये अन्न दान दे और रुद्र का जप करै १२

बन में जो अग्नि लगावे वह रक्तातीसार रोग वाला ह

तेनोदपानंकर्तव्यंरोपणीयस्तथावटः १३
सुरालयेजलेवापिशकृन्मूत्रंकरोतियः
गुदरोगंभवेत्तस्यपापरूपःसुदारुणः १४
मासंसुरार्चनेनैवगोदानद्वितयेनतु
प्राजापत्येनचैकेनशाम्यन्तिगुदजारुजः १५
गर्भपातनजारोगायकृत्प्लीहजलोदराः
तेषांप्रशमनार्थायप्रायश्चित्तमिदंस्मृतं १६
एतेषुदद्याद्विप्रायजलधेनुंविधानतः
सुवर्णरूप्यताम्राणांपलत्रयसमन्वितां १७
प्रतिमाभंगकारीचअप्रतिष्ठःप्रजायते
संवत्सरत्रयंसिंचेदश्वत्थंप्रतिवासरं १८

ता है वह जल को पिलावे और बड़के वृक्ष को लगावे १३

देवता के मंदिर वा जल में जो मलमूत्र करै उसके पाप का रूप दारुण रोग गुदा में होता है १४

गुदा के रोग एक मास तक देवता का पूजन—दोगोदान एक प्राजापत्य व्रत—से शांत होते हैं १५

गर्भ के गिराने से यकृत (रोग भेद) तिल्ली—जलोदर—रोग होतेहैं उनकी शांतिके लिये यह प्रायश्चित्त कहा है कि १६

और इनमें बिधि से सोना—चांदी—तांबा—इनके तीन पल [टका] सहित जल धेनु को दे १७

प्रतिमा का भंग करने वाला प्रतिष्ठा से हीन होता है वह

उद्वाहयेत्तमश्वत्थंस्वगृह्योक्तविधानतः
तत्रसंस्थापयेद्देवविघ्नराजसुपूजितं १९
दुष्टवादीखंडितःस्यात्सवैदद्याद्द्विजातये
रूप्यंपलद्वयंदुग्धंघटद्वयसमन्वितं २०
खल्वाटःपरनिन्दावान्धेनुंदद्यात्सकांचनां
परोपहासकृत्काणःसगांदद्यात्समौक्तिकाम् २१
सभायांपक्षपातीचजायतेपक्षघातवान्
निष्कत्रयमिदंहेमसदद्यात्सत्यवर्त्तिनां २२
इतिशातातपोयेकर्मविपाकेप्रकीर्णप्रायश्चित्तं

तीन वर्ष तक प्रति दिन पीपल को सींचे १८

और अपने गृह्योक्त विधि से पीपल का बिवाह करै और वहां भली प्रकार पूजा करके गणेश जी की स्थापना करै १९

दुष्ट बचन जो कहै वह खंडित [अंगहीन] होता है वह दोपल चांदी और दुग्ध के दो घट का दान करै २०

अन्य की निंदा जो करै वह खल्वाट (गंजा) होता है वह सोना सहित गौका दान करै अन्य की जो हंसी करै वह काणा होता है वह मोती और गौ का दान करै २१

सभा में जो पक्षपात करै उसके पक्षा घात होता है वह तीन निष्क सोना सत्य वादियों को दे २२

इति शातात स्मृतिस्मृति के कर्म बिपाक में प्रकीर्ण का

नामतृतीयोध्यायः

कुलघ्नोनरकस्यान्तेजायतेविप्रहेमहृत्
सतुस्वर्णशतंदद्यात्कृत्वाचांद्रायणत्रयं १
औदुंबरीताम्रचौरोनरकान्तेप्रजायते
प्राजापत्यं सकृत्वात्रताम्रपलशतंदिशेत् २
कांस्यहारीचभवतिपुन्डरीकसमंकितः
कांस्यंपलशतंदद्यादलंकृत्यद्विजातये ३
रीतिहृत्पिंगलाक्षःस्यादुपोष्यहरिवासरम्
रीतिंपलशतंदद्यादलंकृत्यद्विजंशुभं ४

प्रायश्चित्त में ३ अध्यायः पूर्ण हुआ

ब्राह्मण के सोने का चौर नरकके अंत में कुलघ्न [वंश हीन] होता है वह तीन चान्द्रायण व्रत करके सौ सुवर्ण का दान करे १

तांबे को जो चुरावे उसके नरक के अंतमें उदुंबर (देहमें गांठ) रोग होताहै वह प्राजापत्य व्रत करके सौ पल तांबादे २

कांसी का चौर पुंडरीक (देह में चकदे) रोगी होता है वह ब्राह्मण को भूषणों से सजा कर सौ पल कांसी दे ३

पीतल की जो चोरी करै उसके पीले नेत्र होते हैं वह एकादशी को उपवास करके और अलंकार करके ब्राह्मणको सौ पल पीतल दे ४

मुक्ताहारीचपुरुषोजायतेपिंगमूर्द्धजः
मुक्ताफलशतंदद्यादुपोष्यसविधानतः ५
त्रपुहारीचपुरुषोजायतेनेत्ररोगवान्
उपोष्यदिवसंसोपिदद्यात्पलशतंत्रपु ६
सीसहारीचपुरुषोजायतेशीर्षरोगवान्
उपोष्यदिवसंदद्यात्घृतधेनुंविधानतः ७
दुग्धहारीचपुरुषोजायतेबहुमूत्रकः
सदद्याद्दुग्धधेनुंचब्राह्मणाययथाविधि ८
दधिचौर्य्येणपुरुषोजायतेमदवान्यतः
दधिधेनुःप्रदातव्यातेनविप्रायशुद्धये ९

मोतियों की जो चोरी करै उसके पीले केश होते हैं वह विधि से उपवास करके सौ मोतियों का दान करै ५

त्रपु की जो चोरी करै उसके नेत्रों में रोग होता है वह एक दिन उपवास करके सौ पल त्रपु (सीसा) दे ६

सीसे की जो चोरी करै उसके शिर में रोग होता है वह एक दिन उपवास करके घी की गौ का दान बिधि से करै ७

दूध की जो चोरी करै उसके बहु मूत्र रोग होता है वह ब्राह्मण को बिधि से दुग्ध की गौ का दान दे ८

दही की जो चोरी करै वह मद वाला होता है वह शुद्धि के लिये ब्राह्मण को दही की गौ का दान करै ९

मधुचोरस्तुपुरुषोजायतेनेत्ररोगवान्
सदद्यान्मधुधेनुंचसमुपोष्यद्विजातये १०
इक्षोर्विकारहारीचभवेदुदरगुल्मवान्
गुडधेनुःप्रदातव्यातेनतद्दोषशांतये ११
लोहहारीचपुरुषःकर्बूरांगःप्रजायते
लोहंपलशतंदद्यादुपोष्यसतुवासरं १२
तैलचोरस्तुपुरुषोभवेत्कंड्वादिपीडितः
उपोष्यसतुविप्रायदद्यात्तैलघटद्वयम् १३
आमान्नहरणाच्चैवदन्तहीनःप्रजायते
सदद्यादश्विनौहैमौनिष्कद्वयविनिर्म्मितौ १४

सहत के चराने वाला पुरुष नेत्र रोगी होता है वह उपवास कर करिके ब्राह्मण को मधु (सहत वा मीठे की) गौ दे १०

ईख के रस आदि के चराने वाला गुल्म रोगी होता है वह उस दोष की शांति के लिये गुड़ की गौ दे ११

लोहे का चराने वाला पुरुष कबरा होता है वह एक दिन उपवास करके सौ टके भर लोहा दे १२

तेल का चराने वाला पुरुष कंडू (खुजली) आदि रोग वाला होता है वह एक दिन उपवास करके दो घड़ा तेल ब्राह्मण को दे १३

कच्चे अन्न का चराने वाला दरिद्री होता है वह दो निष्क (तोला) सोने की बनवा कर अश्विनी कुमार की मूर्ति दे १४

पक्वान्नहरणाच्चैवजिह्वारोगःप्रजायते
गायत्र्याःसजपेल्लक्षंदशांशंजुहुयात्तिलैः १५
फलहारीचपुरुषोजायतेव्रणितांगुलिः
नानाफलानामयुतंसदद्याच्चद्विजन्मने १६
तांबूलहरणाच्चैवश्वेतोष्ठःसंप्रजायते
सदक्षिणांप्रदद्याच्चविद्रुमस्यद्वयंवरं १७
शाकहारीचपुरुषोजायतेनीललोचनः
ब्राह्मणायप्रदद्याद्वैमहानीलमणिद्वयं १८
कन्दमूलस्यहरणाद्ध्रस्वपाणिःप्रजायते
देवतायतनंकार्य्यमुद्यानंतेनशक्तितः १९

पक्वान्न के चुराने से जिह्वा रोगी होता है वह लक्ष गायत्री का जप करै और तिलों से दशांश होम करै १५

फल के चोर की अंगुलियों में घाव होता है वह अनेक प्रकार के फल ब्राह्मण को दे १६

पानों की जो चोरी करै उसके सफेद होट होते हैं वह अच्छे दो मूंगों की दक्षिणा दे १७

शाक की जो चोरी करै उसके नीले नेत्र होते हैं वह दो महानीलमणि ब्राह्मण को दे १८

कन्द मूल की जो चोरी करै उसके छोटे२ हाथ होते हैं वह शक्ति के अनुसार देवता का मंदिर और बगीचा बनावे १९

सौगन्धिकस्यहरणाद् गन्धाङ्गःप्रजायते
सलक्षमेकंपद्मानांजुहुयाज्जातवेदसि २०
दारुहारीचपुरुषःखिन्नपाणिःप्रजायते
सदद्याद्विदुषेशुद्धौकाश्मीरजपलद्वयम् २१
विद्यापुस्तकहारीचकिलमूकःप्रजायते
न्यायेतिहासंदद्यात्सब्राह्मणायसदक्षिणं २२
वस्त्रहारीभवेत्कुष्ठीसंप्रदद्यात्प्रजापतिं
हेमनिष्कमितंचैववस्त्रयुग्मंद्विजातये २३
ऊर्णाहारीलोमशःस्यात्सदद्यात्कंबलान्वितं
स्वर्णनिष्कमितंहेमवन्हिदद्याद्द्विजातये २४

सुगंधि की जो चोरी करै उसके अंग में दुर्गंध आती है वह अग्नि में एक लक्ष कमलों का होम करै २०

काच की जो चोरी करै उसके हात टेढे होते हैं वह विद्वान् को शुद्धि के लिये दो पल हीरे का दान करै २१

शास्त्र की पुस्तक का चोर गूंगा होता है वह ब्राह्मण को दक्षिणा सहित न्याय और इतिहास का दान करै २२

वस्त्रों की जो चोरी करै उसके कुष्ठ रोग होता है वह एक निष्क(तोला) सोने का ब्रह्मा और दो वस्त्र ब्राह्मण को दे २३

ऊन की जो चोरी करै उसके शरीर पर सब जगह रोम होते हैं वह कंबल और निष्क भर सोने की अग्नि की मूर्ति ब्राह्मण को दे २४

पट्टसूत्रस्यहरणान्निर्लोमाजायतेनरः
तेनधेनुःप्रदातव्याविशुद्ध्यर्थंद्विजन्मने २५
औषधस्यापहरणेशूर्पावर्तःप्रजायते
सूर्यायाघ्यर्घाःप्रदातव्योमासंदेयंचकांचनं २६
रक्तवस्त्रप्रवालादिहारीस्याद्रक्तवातवान्
सवस्त्रांमहिषींदद्यान्मणिरागसमन्वितां २७
विप्ररत्नापहारीचाप्यनपत्यःप्रजायते
तेनकार्य्यंविशुद्ध्यर्थंमहारुद्रजपादिकं २८
मृतवत्सोदितःसर्वोविधिरत्रविधीयते
दशांशहोमःकर्तव्योःपलाशेनयथाविधि २९

रेशम के सूत को जो चुरावे उसके मुख आदि पर रोम नहीं होतेहैं वह उस दोष की शुद्धि के लिये ब्राह्मण को गौदे २५

औषध की चोरी से आधा सीसी रोग होता है वह सूर्य को अर्घ और ब्राह्मण को मासे भर सोना दे २६

लाल वस्त्र और मूंगे की चोरी से रक्त वात रोग होता है वह वस्त्र–मणि सहित भैंस का दान करे २७

ब्राह्मण के रत्नों की जो चोरी करे वह संतान से हीन होता है वह शुद्धि के लिये महारुद्र जप करे २८

और जिसके पुत्रमर२ जांय उसको जो प्रायश्चित्त करना कहा है उस संपूर्ण को भी करै और ढाक की लकड़ियों में दशांश होम करै २९

देवस्यहरणाच्चैवजायतेविविधोज्वरः
ज्वरोमहाज्वरश्चैवरौद्रोवैष्णवएवच ३०
ज्वरेरौद्रं जपेत्कर्णेमहारुद्रं महाज्वरे
अतिरौद्रं जपेद्रौद्रेवैष्णवेतद्द्वयंजपेत् ३१
नानाविधद्रव्यचोरोजायतेग्रहिणीयुतः
तेनान्नोदकवस्त्राणिहेमदेयंचशक्तितः ३२
इतिशातातपीयेकर्म्मविपाकेस्तेयप्रायश्चित्तं नाम
चतुर्थोऽध्यायः ४
मातृगामीभवेद्यस्तुलिंगंतस्यविनश्यति

देवता की मूर्ति की चोरी से यह नाना प्रकार का ज्वर होता है कि ज्वर—महाज्वर—रौद्रज्वर वैष्णव ज्वर ३०

ज्वर होय तो रोगी के कान में रौद्रजप महाज्वर होय तो महारुद्र जप रौद्र ज्वर होय तो अतिरुद्र जप वैष्णव ज्वर होय तो दो अतिरुद्र का जप करै ३१

अनेक प्रकार के द्रव्यों को जो चोरी करै उसके ग्रहणी रोग होता है वह शक्ति के अनुसार अन्न जल वस्त्र सोना इन का दान करै ३१

इति शातातप स्मृतौ ४ अध्यायः

शातातप रूपके कर्म विपाक में चौथा अध्याय समाप्त हुआ ॥ ४ ॥ इति

माता के संग जो गमन करै उसका लिंग नष्ट होता है

चांडालीगमनेचैवहीनकोशःप्रजायते १
तस्यप्रतिक्रियांकर्तुंकुंभमुत्तरतोन्यसेत्
कृष्णवस्त्रसमाच्छन्नं कृष्णमाल्यविभूषितं २
तस्योपरिन्यसेद्देवंकांस्यपात्रेधनेश्वरं
सुवर्णनिष्कषट्केनर्निर्मितंनरवाहनं ३
यजेत्पुरुषसूक्तेनधनदंविश्वरूपिणां
अथर्ववेदविद्विप्रोह्याथर्वणंसमाचरेत् ४
सुवर्णपुत्तिकांकृत्वानिष्कविंशतिसंख्यया
दद्याद्विप्रायसंपूज्यनिष्पापोऽहमितिब्रुवन् ५

और चांडालो के संग जो गमन करै उसके कोश (खजाना) नहीं होता १

उसको प्रायश्चित्त के लिये उत्तर दिशा में काले वस्त्र से ढका और काले फूलों से शोभित घट को स्थापन करै २

इस घट पर कांसी के पात्र में छः सोने के निष्क (तोला) से बनाई और मनुष्य जिनका वाहन है ऐसी कुबेर की मूर्ति स्थापन करै ३

पुरुषसूक्त से सब विश्व के रूपी धनद (कुबेर) का पूजन करै और अथर्वण वेद का जानने वाला ब्राह्मण अथर्वण वेद का पाठ करै ४

और मैं पापरहित हुं ऐसे कहता हुआ बीस निष्क सोने की पुत्तिका (प्रतिमा) का पूजन करके ब्राह्मण को दे ५

निधीनामधिपोदेवःशंकरस्यप्रियस्सखा
सौम्याशाधिपतिःश्रीमान्ममपापंव्यपोहतु ६
इमंमन्त्रंसमुच्चार्य्यआचार्य्यायथाविधि
दद्याद्देवंहीनकोशंलिंगनाशेविशुद्धये ७
गुरुजायाभिगमनान्मूत्रकृच्छ्रःप्रजायते
तेनापिनिष्कृतिःकार्य्याशास्त्रदृष्टेनकर्म्मणा ८
स्थापयेत्कुंभमेकंतुपश्चिमायांशुभेदिने
नीलवस्त्रसमाच्छन्नं नीलमाल्यविभूषितं ९
तस्योपरिन्यसेद्देवंताम्रपात्रेप्रचेतसं

निधि (कोश) यों का स्वामी और महादेव का प्यारा मित्र और उत्तर दिशा का स्वामी और लक्ष्मी वाला कुवेर देव मेरे पाप को दूर करो ६

इस मंत्र का उच्चारण करके विधि से कुवेर की मूर्ति आचार्य को शुद्धि के लिये वह पुरुष दे जिसके कोश न हो और वा जिसका लिंग नष्ट होगया हो ७

गुरु की स्त्री के संग गमन करने से मूत्र कृच्छ्र होता है वह भी शास्त्रोक्त कर्म से प्रायश्चित्त करै ८

वह पुरुष पश्चिम दिशा में नीले वस्त्रों से ढके और नीले फूलों से शोभित एक घड़े को शुभ मुहूर्त में स्थापन करै ९

उस घट के ऊपर तांबे के पात्र में छः निष्क(तोला)सोने

सुवर्णनिष्कप टकेननिर्म्मितंयादसाम्पतिं १०
यजेत्पुरुषसूक्तेनवरुणंविश्वरूपिणं
सामविद्वाह्मणरतत्रसामवेदंसमाचरेत् ११
सुवर्णपुत्तिकांकृत्वानिष्कविंशतिसंख्यया
दद्याद्विप्रायसंपूज्यनिष्पापोहमितिब्रुवन् १२
यादसामधिपोदेवोविश्वेषामपिपावनः
संसाराब्धौकर्णधारोवरुणःपावनोस्तुमे १३
इममंन्त्रसमुच्चार्यआचार्याययथाविधि
दद्याद्देवमलंकृत्यमूत्रकृच्छ्रप्रशान्तये १४

सोनेऔर जलके जीवोंके स्वामी कुबेर देवताकोस्थापनकरै १०

और बिश्व के रूपो बरुण का पुरुष सूक्त से पूजन करै और उस घडे के समीप साम वेद का ज्ञाता ब्राह्मण सामवेद को पढे ११

और बीस निष्क भर सोने की मूर्ति वनवाय कर ब्राह्मण का पूजन करके मैं पाप से रहित हुं ऐसे कहता हुआ दे १२

और जलके जीवों का स्वामी और सब को पवित्र करने वाला और संसार रूपो समुद्र में कर्णधार (मलाह) जो बरुण मेरे को पवित्र करो १३

इस मंत्र को पढ कर और विधि से कुबेर देवता की मूर्ति को शोभित करके मूत्र कृच्छ्र की शांति (नाश) के लिये ब्राह्मण को दे १४

स्वसुतागमनेचैवरक्तकुष्ठंप्रजायते
भगिनीगमनेचैवपीतकुष्ठंप्रजायते १५
तस्यप्रतिक्रियांकुर्यात्पूर्वतःकलशंन्यसेत्
पीतवस्त्रसमाच्छन्नं पीतमाल्यविभूषितं १६
तस्योपरिन्यसेत्स्वर्णपात्रेदेवंसुरेश्वरं
सुवर्णनिष्कषट्केननिर्मितंवज्रधारिणं १७
पूजयेत्पुरुषसूक्तेनवासवंविश्वरूपिणं
यजुर्वेदंतत्रसामऋग्वेदंचसमाचरेत् १८
सुवर्णपुत्तिकांकृत्वासुवर्णदशकेनतु

अपनी पुत्री के संग गमन कर के रक्त कुष्ठ और बहिन के संग गमन करने से पीत कुष्ठ होता है १५

इसके प्रायश्चित्त के निमित्त पीले वस्त्र से ढका और पीले फूलों से शोभित घट को पूर्व दिशा में स्थापन करै १६

उसके ऊपर सोने के पात्र में छः निष्क सोने से बनी और वज्र जिसके हाथ में ऐसो देवताओं के ईश्वर (स्वामी) इन्द्र देवता की मूर्ति को स्थापन करै १७

और विश्व के रूपी इन्द्र का पुरुष सूक्त से पूजन करै और उस घट के समीप यजुर्वेद—साम वेद - और ऋग्वेद का पाठ करै १८

दश सुवर्ण की सोने की प्रतिमा बनवाय कर ब्राह्मण

दद्याद्विप्रायसंपूज्यनिष्पापोऽहमितिब्रुवन् १९
देवानामधिपोदेवोवज्रीविष्णुनिकेतनः
शतयज्ञःसहस्राक्षःपापंममनिकृन्ततु २०
इमंमन्त्रंसमुच्चार्य्यआचार्य्याययथाविधि
दद्याद्देवंसहस्राक्षंसपापस्यापनुत्तये २१
भ्रातृभार्य्याभिगमने द्गलत्कुष्ठं प्रजायते
स्ववधूगमनेचैवकृष्णकुष्ठं प्रजायते २२
तेनकार्यंविशुद्ध्यर्थंप्रागुक्तस्याद्धमेवहि
दशांशहोमःसर्वत्रघृताक्तैःक्रियतेतिलैः २३

पूजन करके मैं पाप से हीन हुं ऐसे कहता हुआ दे १९

देवताओं का स्वामी—वज्र वाला—बिष्णु जिसका स्थान है—सौ अश्वमेध जिसने कीहैं—सहस्र जिसके नेत्र हैं ऐसा इन्द्र देव मेरे पापों को दूर करो २०

इस मंत्र को पढ़ कर आचार्य को बिधि पूर्वक इन्द्र की मूर्ति को सब पाप की निवृत्ति के लिये दे २१

भाई की स्त्री के संग गमन करने से गला कुष्ठ होजाता है और अपने लड़के की बहू के संग गमन करने से काला कुष्ठ होता है २२

वह शुद्धि के लिये पूर्वोक्त से आधा प्रायश्चित्त करे और पूर्वोक्त सब प्रायश्चित्तों में घीसे भीगे तिलों से दशांश होम करे २३

यद्गम्याभिगमनाज्जायतेध्रुवमंडले
कृत्वालोहमयींधेनुंतिलषष्टिप्रमाणतः २४
कार्पासभांडसंयुक्तांकांस्यदोहांसवत्सिकां
दद्याद्विप्रायविधिवदिमंमंत्रमुदीरयेत् २५
सुरभीवैष्णवीमाताममपापंव्यपोहतु
तपस्विनींसंगमनेजायतेचाश्मरीगदः २६
सतुपापविशुद्ध्यर्थंप्रायश्चित्तंसमाचरेत्
दद्याद्विप्रायविदुषेमधुधेनुंयथोदितम् २७
तिलद्रोणशतंचैवहिरण्येनसमन्वितं

गमन करने के अयोग्य (चांडाली) स्त्री के संग गमन करने से ध्रुव मंडल (चकदे) होते है वह साठ तिल के प्रमाण से लोहे की गौ बनवाकर २४

और कपास-पात्र कांसी की दोहनी और बछड़े वाली उस गौ को विधि से ब्राह्मण को दे और यह मंत्र पढै २५

कि गौ विष्णु की मूर्ति—माता—रूप है वह गौ मेरे पाप को नष्ट करो—तपस्विनी के संग गमन करने से अश्मरी(पथरी) रोग होता है २६

वह पुरुष इस पाप की शुद्धि के लिये यह प्रायश्चित्त करै कि विद्वान ब्राह्मण को शास्त्रोक्त विधि से गौ दान करै २७

और सोने सहित सौ द्रोण तिलदे—पिता की बहिन के

पितृष्वस्राभिगमनाद्दक्षिणांशव्रणोभवेत् २८
तेनापिनिष्कृतिःकार्याअजादानेनशक्तितः
मातुलान्यांतुगमनेपृष्ठकुब्जःप्रजायते २९
कृष्णाजिनप्रदानेनप्रायश्चित्तंसमाचरेत्
मातृष्वस्राभिगमनेवामांगेव्रणवान्भवेत् ३०
तेनापिनिष्कृतिःकार्यासम्यग्दासप्रदानतः
मृतभार्याभिगमनेमृतभार्यःप्रजायते ३१
तत्पातकविशुद्ध्यर्थंद्विजमेकंविवाहयेत्
सगोत्रस्त्रीप्रसंगेनजायतेचभगन्दरः ३२

संग गमन करने से दाहिने कंधे पर घाव होता है २८

अजा (बकरी) के दान को करके वह भी प्रायश्चित्त करै मामी के संग गमन करने सै कुबड़ा मनुष्य होजाता है २९

वह काली मृग छाला को देकर प्रायश्चित्त करै—माताकी बहिन के संग गमन करने से वाम अंग में घाव होता है ३०

वह भी भली प्रकार दास (टहलवा) के दान से प्रायश्चित्त करै—मरै की स्त्री (बिधवा) के संग गमन करने से स्त्री मर जाती है ३१

उस पाप की शुद्धि के लिये एक ब्राह्मण का विवाह करदे अपने गोत्र की स्त्री के संग गमन करने से भगंदर रोग होता है ३२

तेनापिनिष्कृतिःकार्यामहिषीदानयत्नतः
तपस्विनीप्रसंगेनप्रमेहीजायतेनरः ३३
मासंरुद्रजपःकार्योदद्याच्छक्त्याचकांचनम्
दीक्षितस्त्रीप्रसंगेनजायतेदुष्टरक्तदृक् ३४
सपातकविशुद्ध्यर्थंप्राजापत्यद्वयंचरेत्
स्वजातिजायागमनेजायतेहृदयव्रणी ३५
तत्पापस्यविशुद्ध्यर्थंप्राजापत्यद्वयंचरेत्
पशुयोनौचगमनेमूत्राघातःप्रजायते ३६
तिलपात्रद्वयंदेवदद्यादात्मविशुद्धये

उसमें भी भैंस के दान के यत्न से प्रायश्चित्त करै—तपस्विनी के संग से प्रमेह रोग होता है ३३

वह महीने तक रुद्र का जप करै और शक्ति के अनुसार सोने का दान करै—दीक्षा वाले की स्त्री के संग से दुष्ट और लाल नेत्र होते हैं ३४

वह पातक की शुद्धि के लिये दो प्राजापत्य व्रत करै—अपनी जाति की स्त्री के संग गमन करने से हृदय में घाव होता है ३५

वह भी पाप की शुद्धि के लिये दो प्रजापत्य व्रत करै—पशु की योनि में गमन करने से मूत्रा घात रोग होता है ३६

वह अपनी शुद्धि के लिये दो तिल पात्रों को दे—घोड़ी

अश्वयोनौचगमनाद्गुदस्तंभःप्रजायते ३७
सहस्रकमलस्नानंमासंकुर्याच्छिवस्यच
एतेदोषानराणांस्युर्नरकांतेनसंशयः ३८
स्त्रीणामपिभवंत्येतेतत्तत्पुरुषसंगमात्
इतिशातातपीयेकर्मविपाके अगम्यागमन
प्रायश्चित्तंनामपंचमोऽध्यायः ५
अश्वशूकरशृंग्यद्रिद्रुमादिशकटेनच
भृग्वग्निदारुशस्त्राश्मविषोद्बंधनजैर्मृताः १
व्यघ्रादिगजभूपालचोरवैरिवृकाहताः

की योनि में गमन करने से गुदा का स्तम्भ (रुकना) होता है ३७

और महीने तक सहस्र कमलों से शिवजी को स्नान करावे - ये पूर्वोक्त दोष नरक के अंत में मनुष्यों को होते हैं इसमें संदेह नहीं है ३८

और तिस२ पुरुष के संग से स्त्रियों को भी ये रोग होते हैं

इति शातातप स्मृतौ ५ अध्यायः

शातातप के कहे कर्म विपाक में अगम्य स्त्री के गमन का प्रायश्चित्त समाप्त भया ५

घोड़ा — शूकर — सींग वाले पशु - पर्वत - वृक्षादि — गाड़ी पर्वत की शिला — अग्नि — काठ शस्त्र पत्थर — बिष उद्बंधन (फांसी) इन से जो मरें १

काष्ठशल्यमृतायेचशौचसंस्कारवर्जिताः २
विसूचिकान्नकवलदवातीसारतोमृताः
डाकिन्यादिग्रहैर्ग्रस्ताविद्युत्पातहताश्चये ३
अस्पृश्याअपवित्राश्चपतिताःपुत्रवर्जिताः
पंचत्रिंशत्प्रकारैश्चनाप्नुवंतिगतिंस्मृताः ४
पित्राद्याःपिंडभाजस्युस्त्रयोलेपभुजस्तथा
ततोनांदीमुखाःप्रोक्तास्त्रयोप्यश्रुमुखास्त्रयः ५
द्वादशैतेपितृगणाःस्तर्पिताःसन्ततिप्रदाः

सिंह आदि—हाथी—राजा—चोर—बैरी—भिड़ा—काठ से घाव—इनसे जो मरें और शौच और संस्कार से जो हीन हों २

विशूचिका (हैजा) अन्न का और अन्न का ग्रास वन की अग्नि, अतीसार—शाकिनी आदि—ग्रह, विजली का गिरना—उत्पात इनसे जो मरें ३

स्पर्श करने के अयोग्य अपवित्र—पतित—पुत्रहीन—इन पूर्वोक्त पैंतीस ३५ प्रकार से मरे हुए मनुष्य गति को प्राप्त नहीं होते ४

पिता से आदि तीन पिंड के भागी और उन से पहले तीन लेप के भागी और उनसे पहले तीन नान्दी मुख और उनसे पहले तीन अश्रु मुख होते हैं ५

तृप्त किये हुए ये बारह पितरों के गण संतान को देते हैं

गतिहीनाःसुतादीनांसन्ततिंनाशयंतिते ६
दशव्याघ्रादिनिहतागर्भंनिघ्नन्त्यमीक्रमात्
द्वादशास्त्रादिनिहताआकर्षन्तिचबालकः ७
विषादिनिहताघ्नन्तिदशसुद्वादशस्वपि
वर्षैकबालकंकुर्यादनपत्योऽनपत्यतां ८
व्याघ्रेणाहन्यतेजन्तुःकुमारीगमनेनच
विषदश्चैवसर्पेणगजेननृपदुष्टकृत् ९
राज्ञाराजकुमारघ्नश्चोरेणपशुहिंसकः

और गति से हीन ये अपने पुत्रादिक की संतति को नष्ट करते हैं ६

सिंहादि दश से मरे हुए पितर गर्भ को और अस्त्रादि बारह से मरे पितर बालक को क्रमसे नष्ट करते हैं ७

और बिष आदि दश वा बारह से मरे हुए पितर दश वर्ष के बालक को नष्ट करते हैं और संतान हीन पितर एक वर्ष के बालक को नष्ट करता है वा संतान हीन करता है ८

जो विवाह से पहले कन्या के संग गमन करै वह सिंह से और जो बिष दे वह सर्प से और जो राजा के संग दुष्टता करै वह हाथी से मरता है ९

जो राजा के लड़के की हत्या करै वह राजा से और जो पशु की हिंसा करै वह चोर से और जो मित्रों का भेद करै, वह शत्रु

वैरिणामित्रभेदीचवक्रवृत्तिश्चकेणतु १०
गुरुघातीचशय्यायांमत्सरीशौचवर्जितः
द्रोहीसंस्काररहितःशुनानिक्षेपहारकः ११
नरोविहन्यतेऽरण्येशूकरेणचपाशिकः
कृमिभिःकृतवासाश्चकृमिणाचनिकृन्तनः १२
शृंगेणशंकरद्रोहीशकटेनचसूचकः
भूम्याभेदिनीचौरोवन्हिनायज्ञहानिकृत् १३
दवेनदक्षिणाचोरः शस्त्रेणश्रुतिनिन्दकः
अश्मनाद्विजनिन्दाकृद्विषेणकुमतिप्रदः १४

से जो वक्र वृत्ति (मनका मैला और ऊपर से सीधा) ... बड़ाई
से मरता है १०

गुरु का हत्यारा शैया पर चोर मत्सरी (जो पराई व...
को न सहे) शौच से हीन और द्रोही सन्स्कार से हीन और
और निःक्षेप (धरोहि) का चोर कुत्ते से मरता है ११

पाशिक (फांसी वाला) वनमें शूकर से और वस्त्रों का
चोर कीड़ों से और छेदन करने वाला भी कीड़ोंसे मरताहै१२

शिवजी का द्रोही सींग वाले पशुओं से चुगल गाढी से
पृथ्वी का चोर बड़ी शिला से यज्ञ में जो हानि करै वह अग्नि
से मरता है १३

दक्षिणा का चोर वनकी अग्नि से श्रुतियों (वेदों) की जो
निंदा करै वह शस्त्र से ब्राह्मणों का निंदक पत्थर से कुबुद्धि
का देने वाला विष से १४

उद्बंधनेनहिंस्त्रःस्यात्सेतुभेदीजलेनतु
द्रुमेणाराजदन्तहृदतिसारेणलोहहृत् १५
डाकिन्याद्यैश्चम्रियतेसदर्प्पैकार्य्यकारकः
अनध्यायेऽप्यधीयानोम्रियतेविद्युतातथा १६
अस्पृस्यस्पर्शसंगीचवान्तमाश्रित्यशास्त्रहृत्
पतितोमदविक्रेतानपत्योद्विजवस्त्रहृत् १७
अथतेषांक्रमेणैवप्रायश्चित्तंविधीयते
कारयेन्निष्कमात्रंतुपुरुषंप्रेतरूपिणं १८
चतुर्भुजंदंडहस्तंमहिषासनसंस्थितं

हिंसा करने वाला उद्बंधन (फांसी) से—पुल को जो तोड़े वह जल से राजा के हाथी का चोर वृक्ष से—लोहे का चोर अतीसार से मरता है १५

अभिमान से जो कार्य करै वह डाकिनी आदि से जो अनध्याय में भी पढै वह बिजली से १६

स्पर्श के अयोग्य का जो स्पर्श करै और शास्त्र का चोर वमन से मरता है मदकी वस्तु जो वेचे वह पतित होता—है और ब्राह्मणके वस्त्रों कोजो चुरावे वह सन्तान हीनहोताहै १७

अब उनका क्रम से प्रायश्चित्त कहते हैं कि एक निष्क भर सोने की प्रेत की मूर्ति बनावे १८

और उस मूर्ति के चार भुजा—हाथ में दंड भैंसे पर

पिष्टैःकृष्णतिलैःकुर्य्यात्पिंडंप्रस्थप्रमाणतः १६
मध्वाज्यशर्करायुक्तंस्वर्णकुंडलसंयुतम्
अकालमूलंकलशंपंचपल्लवसंयुतं २०
कृष्णवस्त्रसमाच्छन्नं सर्वौषधिसमन्वितं
तस्योपरिन्यसेद्देवंपात्रंधान्यफलैर्युतम् २१
सप्तधान्यन्तुसफलंतत्रवत्सफलंन्यसेत्
कुंभोपरिचविन्यस्यपूजयेत्प्रेतरूपिणं २२
कुर्यात्पुरुषसूक्तेनप्रत्यहंदुग्धतर्पणं
षडंगंचजपेद्रुद्रंकलशेतत्रवेदवित् २३

स्थिति—हो—काले तिलों को पीस कर प्रस्थभर का एक पिंड बनावे १६

सहत—घी—उस पिंड में मिलावे और सोने के कुंडल उस पिंड पर रक्खे—नीचे से गोल एक कलश हो और उस पर पंच पल्लव रक्खे २०

काले वस्त्र से उसको ढके और उसमें सर्वौषधि गेरे—उस पर अन्न और फल सहित पात्र रक्खे और पात्र पर देवता की मूर्ति को रक्खे २१

और फल सहित सप्तधान्य (सतनजा) वहां रक्खे—उस घट पर प्रेत की मूर्ति को रख कर २२

पुरुष सूक्त को पढकर प्रति दिन दूध से तर्पण करै और वेद का ज्ञाता उस कलश पर षडंग रुद्र का जप करै २३

यमसूक्तेनकुर्वीतयमपूजादिकंतथा
गायत्र्याश्चैवकर्तव्योजपःस्वात्मविशुद्धये २४
ग्रहशांतिकपूर्वंचदशांशंजुहुयात्तिलैः
अज्ञातनामगोत्रायप्रेतायसतिलोदकं २५
प्रदद्यात्पितृतीर्थेनपिंडंमंत्रमुदीरयेत्
इमंतिलमयंपिंडंमधुसर्पिःसमन्वितम् २६
ददामितस्मैप्रेताययःपीडांकुरुतेमम
सजलान्कृष्णकलशांस्तिलपात्रसमन्वितान् २७
द्वादशप्रेतमुद्दिश्यदद्यादेकंचविष्णवे
ततोऽभिषिंचेदाचार्य्योदम्पतीकलशोदकैः २८

और यम सूक्त से यमराज की भी पूजा आदि करे—और अपने आत्मा की शुद्धि के लिये गायत्री का भी जप करे २४

ग्रहोंकी शांति करके तिलों से दशांश होम करे नहींजाना है नाम और गोत्र जिसका ऐसे प्रेत को तिलांजलि दे २५

और पितृ तीर्थ से पिंड दे और इस मंत्र को कहै । कि सहत घी मिला यह तिल का पिंड २६

उस प्रेत को देता हुं जो मुझे पीड़ा करता है और जल काले तिल जिनमें हों ऐसे काले घट २७

बारह प्रेत को और एकघट बिष्णु को दे—फिर आचार्य कलशों के जलसे स्त्री पुरुषदोनों का अभिषेक करे २८

शुचिर्वरायुधधरोमंत्रैर्वरुणदैवतैः
यजमानस्ततोदद्यादाचार्य्यायसदक्षिणां २९
ततोनारायणबलिःकर्तव्यःशास्त्रनिश्चयात्
एषसाधारणविधिरगतीनामुदाहृतः ३०
विशेषस्तुपुनर्ज्ञेयोव्याघ्रादिनिहतेष्वपि
व्याघ्रेणनिहतेपुत्रेपरकन्यांविवाहयेत् ३१
सर्पदंशेनागबलिर्देयःसर्वेषुकांचनम्
चतुर्निष्कमितंहेमगजंदद्याद्गजैर्हते ३२
राज्ञाविनिहतेदद्यात्पुरुषन्तुहिरण्मयं
चोरेणनिहतेधेनुंवैरिणानिहतेवृषं ३३

और आचार्य शुद्ध रहै और उत्तम शस्त्र को धारे और वरुण है देवता जिनका ऐसे मंत्रों से अभिषेक करै फिर यजमान आचार्य को श्रेष्ठ दक्षिणा दे २९

फिर शास्त्रके निश्चय (विधि) से नारायण बलि करै—यह साधारण विधि अगतियों (जिनकी गति न हो) कोकही है ३०

और सिंह आदि से जो मरे हैं उनको विशेष विधि यह जाननी—व्याघ्र (सिंह) से जो मरे उसकी गति के लिये दूसरे की कन्या का बिवाह करदे ३१

सांपके काटने में नागों को बलि दे और सोना सब में दे हाथियों से जो मरे तो चार निष्क सोना दे ३२

राजा से मरे तो सोने का पुरुष दे चोर से मरे तो गौ और शत्रु से मरे तो बैल दे ३३

वृकेणनिहतेदद्याद्यथाशक्तिचकांचनं
शय्यामृतेप्रदातव्याशय्यातूलीसमन्विता ३४
निष्कमात्रंसुवर्णस्यविष्णुनासमधिष्ठिता
शौचहीनेमृतेचैवद्विनिष्कस्वर्णजंहरिं ३५
संस्कारहीनेचमृतेकुमारंचविवाहयेत्
शुनाहतेचनिक्षेपंस्थापयेन्निजशक्तितः ३६
शूकरेणहतेदद्यान्महिषंदक्षिणान्वितं
कृमिभिश्चमृतेदद्याद्गोधूमान्नं द्विजातये ३७
शृंगिणाचहतेदद्याद्वृषभंवस्त्रसंयुतं
शकटेनमृतेदद्यादश्वं सोपस्करान्वितं ३८

भिड़ा से मरै तो शक्ति के अनुसार सोना दे शय्या पर मरे तो रुई सहित शय्या दे ३४

और उस शय्या पर निष्क भर सोने की बिष्णु मूर्ति हो शुद्धि से हीन मरे तो दो निष्क भर सोने की बिष्णु की मूर्ति दे ३५

संस्कार से हीन मरे तो अन्य के लड़के का बिवाह करदे कुत्ते से मरै तो अपनी शक्ति से निक्षेप (पुण्य के लिये कहीं द्रव्य रखना) को रखदे ३६

शूकर से मरे तो दक्षिणा सहित भैंसे को दे कृमि (कीड़े) यों से मरे तो ब्राह्मण को गेहूं दे ३७

सींग वाले पशु से मरे तो बस्त्र सहित बैल को दे गाड़ी से मरे तो सामग्री सहित घोडा दे ३८

भृगुपातमृतेचैवप्रदद्याद्वान्यपर्वतं
अग्निनानिहतेदद्यादुपानहंस्वशक्तितः ३९
दवेनानिहतेचैवकर्तव्यासदनेसभा
शस्त्रेणानिहतेदद्यान्महिषींदक्षिणान्वितां ४०
अश्मनानिहतेदद्यात्सवत्सांगांपयस्विनीं
विषेणचमृतेदद्यान्मेदिनींक्षेत्रसंयुतां ४१
उद्बन्धनमृतेचापिप्रदद्याद्गांपयस्विनीं
मृतेजलेनवरुणंहैमंदद्यात्त्रिनिष्ककं ४२
वृक्षंवृक्षहतेदद्यात्सौवर्णंस्वर्णसंयुते
अतिसारमृतेलक्षं सावित्र्याःसंयतोजपेत् ४३

पर्वत की शिला से पड़कर मरे तो अन्न का पर्वत दे अग्नि से मरे तो शक्ति के अनुसार जूते का दान करै ३९

वनकी अग्नि से मरे तो किसी स्थान में सभा बना शस्त्र से मरे तो दक्षिणा सहित भैंस दे ४०

पत्थर से मरे तो वछड़े सहित दूध देती गौ दे विष से मरे तो खेती सहित भूमि दे ४१

फांसी से मरे तो दूध देती गौ दे जलसे मरे तो तीन निष्क भर सोने का वरुण दे ४२

वृक्ष से मरे तो सोने का वृक्ष और सोना दे अतीसार रोग से मरे तो सावधानी से लक्ष गायत्री जपावे ४३

डाकिन्यादिमृतेचैवंजपेद्रुद्रं यथोचितं
विद्युत्पातेननिहतेविद्यादानंसमाचरेत् ४४
अस्पर्शंचमृतेकार्यं वेदपारायणंतथा
सच्छास्त्रपुस्तकंदद्याद्वान्तमाश्रित्यसंस्थिते ४५
पातित्येनमृतेकुर्यात्प्रजापत्यानिषोडश
मृतेचापत्यरहितेकृच्छ्राणांनवतिंचरेत् ४६
निष्कत्रयमितंस्वर्णंदद्यादश्वं हयाहते
कपिनानिहतेदद्यात्कपिंकनकनिर्मितं ४७
विसूचिकामृतेस्वादुभोजयेच्चशतंद्विजान्
तिलधेनुःप्रदातव्याकंठेऽन्नकवलेमृते ४८

शाकिनी आदि से मरे तो रीति से रुद्र को जपावे—विजली के पड़ने से मरे तो विद्या का दान करै ४४

स्पर्श करने के अयोग्य का स्पर्श करने से मरे तो वेद का पारायण करावे वमन करके मरै तो अच्छे शास्त्र की पुस्तक दे ४५

पतित होकर मरे तो १६ प्राजापत्य करै सन्तान हीन मरै तो नब्बे ९० कृच्छ्र करै ४६

और तीन निष्क सोना दे और घोड़े से मरे तो घोड़ा दे बन्दर से मरै तो सोने का बन्दर दे ४७

विशूचिका से मरे तो उत्तम भोजन से सौ १०० ब्राह्मण जिमावे और कंठ में ग्रास अटक कर मरे तो तिल की गौ दे ४८

केशरोगमृतेचापिअष्टौकृच्छ्रान्समाचरेत्
एवंकृतेविधानेनविदध्यादौर्द्ध्वदैहिकं ४६
ततःप्रेतत्वनिर्मुक्ताःपितरस्तर्पितास्तथा
ददयुःपुत्रांश्चपौत्रांश्चआयुरारोग्यसंपदः ५०
इतिशातातपः प्रोक्तोविपाकःकर्मणामयं
शिष्यायशरभंगायविनयात्परिपृच्छते ५१
इतिशातातपीये कर्मविपाकेऽगतिप्रायश्चित्तं
नामषष्ठोध्यायः ६ इतिशातातपस्मृतिसमाप्ता
श्रीरस्तु

केश और रोम से मरे तो आठ कृच्छ्र करै इस प्रकार विधान किये पीछे अन्त्येष्टि आदि कर्म करै ४६

फिर प्रेत भाव से छूटे और तृप्त हुए पितर, पुत्र, पोते, अवस्था, आरोग्य, और सम्पदाओं को देते हैं ५०

यह कर्मोंका विपाक (फल) शातातप ऋषिने विनय से पूछते हुए शरभंग शिष्य को कहा है ५१

इति शातातप स्मृतौ ६ अध्यायः

शातातप ऋषि के कहे हुए कर्म विपाक में जिनकी
गति न हो उनके प्रायश्चित्त का
छटा ६ अध्या पूरा हुआ

इति

श्रीगणेशायनमः

अथवासिष्ठस्मृतिप्रारंभः

अथातःपुरुषनिःश्रेयसार्थंधर्मजिज्ञासाज्ञात्वाचानुतिष्ठन्धार्मिकःप्रशस्यतेलोकेप्रेत्यचविहितोधर्मः तदलाभेशिष्टाचारःप्रमाणं दक्षिणेनहिमवतउत्तरेणविंध्यस्ययेधर्मायेचाचारास्तेसर्वेप्रत्येतव्याःनह्यन्येप्रतिलोमकल्पधर्माणःएतदार्यावर्तमित्याचक्षते गंगायमुनयोरंतराप्येके यावद्वाकृष्णमृगोविचरतितावद्ब्रह्मवर्चसमिति अथापिभाल्लविनो

श्रीगणेशायनमः इसके अनन्तर पुरुषों के कल्याण के लिये धर्म जानने की इच्छा करनी -धर्म को जान कर जो धर्म का कर्ता धर्म करता है वह इस लोक और परलोक मे अत्यन्त प्रशंसा के योग्य होता है—शास्त्र में जो कहा है वहधर्म है और शास्त्र में न मिले तो शिष्टों (सज्जनों) का आचरण प्रमाण है- हिमाचल के दक्षिण और बिंध्याचल पर्वत के उतर में जो धर्म वा आचार हैं वे जानने योग्य हैं - और प्रति लोमों के तुल्य जो अन्य धर्म हैं वे नहीं—इसको ही आर्यावर्त कहते हैं—और कोई गंगा यमुना के मध्य को ही आर्यावर्त कहते हैं अथवा जिस देश में काला मृग स्वभाव से बिचरे उसी देश में ब्रह्मतेज है -और इसमें भो भाल्लवि ऋषि को धर्मके निदानमें (कारण) गाथा (इतिहास कहते हैं) कि पश्चिम में सिंधु नदी के बिहार तक और सूर्य के उदय से लेकर अर्थात् सूर्योदय

निदानेगाथामुदाहरंति पश्चात्सिंधुर्विहरिणीसूर्यस्योदय नेपुनःयावत्कृष्णोभिधावतितावद्वैब्रह्मवर्चसंत्रैविद्यवृद्धा द्वब्रुयुर्धर्मंधर्मविदोजनाः पवनेपावनेचैवसर्वतोनात्रसंशय इति देशधर्मजातिधर्मकुलधर्मान्श्रुत्यभावादब्रवीन्मनुः सूर्याभ्युदितःसूर्याभिनिर्मुक्तः कुनखीश्यावदंतःपरिवित्तिः परिवेत्ताअग्रेदिधिषूर्दिधिषूपतिर्वीरहाब्रह्मघ्नइत्येतएन स्विनःपंचमहापातकान्याचक्षते गुरुतल्पंसुरापानंभ्रूण हत्यांब्राह्मणसुवर्णहरणंपतितसम्प्रयोगंचब्राह्मेणवायौ नेनवा अथाप्युदाहरंतिसंवत्सरेणपततिपतितेनसहाचर

से हटा हुआ है तब तक जितने देश में कृष्णमृग विचरे उतने देश में ब्रह्म तेज है—तीनों वेद में बड़े और धर्म के ज्ञाता जन जिस धर्म को कहें सब के पवित्र करने और कराने में वही धर्म समर्थ हैं इसमें संशय नहीं है—और मनु ने श्रुति के अभाव में देशधर्म—जाति धर्म—कुल धर्म कहेहैं जिसमें सूर्य उदय हो और सूर्य जिसको अस्त होने पर त्यागे वही देश है—और जिसके बुरे नख हों कालेदांत हों—परिवित्ति—परिवेत्ता—अग्रे दिधिषू और दिधिषू का पति—वीर का हत्यारा ब्रह्महत्यारा ये पापी हैं इन पांचों को महापातकी कहते हैं कि—गुरु की शय्या मदिरा का पान—गर्भ की हत्या—ब्राह्मण का सोना हरना—पतित के संग ब्राह्म (पड़ना पढाना) और यौन (संबन्ध) से मेल इसमें भी यह बचन कहते हैं कि पतित के संग एक वर्ष तक

न याजनाध्यापनायौनादन्नपानासनादपि अथाप्युदाह रंतिविद्याप्रणष्टापुनरभ्युपैतिजातिप्रणाशेत्विहसर्वनाशः कुलापदेशेनहयोगिपूज्यस्तस्मात्कुलीनांस्त्रियमुद्वहंतीति त्रयोवर्णाब्राह्मणस्यवशेवर्तेरन्तेषांब्राह्मणोधर्मान्यद्ब्रूया त्तंराजाचानुतिष्ठेत्तुराजालुधर्मेणानुशासन्षष्ठंधनस्यहरे त् अन्यत्रब्राह्मणात् इष्टापूर्तस्यतुषष्ठमंशंभजति इतिह ब्राह्मणोवेदमाद्यंकरोति ब्राह्मणआपदुद्धरति तस्माद्ब्रा ह्मणोनाद्यः सोमोस्यराजाभवतीतिहाप्रेत्यचाभ्युदयिक मितिहविज्ञायते

यज्ञ कराना—पढाना—संबन्ध करना—भोजन जलपान बैठना इनके करने से पतित होता है—इस में भी यह बचन कहते हैं नष्ट हुई विद्या फिर आजाती है और जाति के नाश में सबका नाश होता है कुलके मिलने थोड़ा भी पूज्य है इससे अच्छे कुल की स्त्री को बिवाहे तीनों बर्ण ब्राह्मण के वश में बर्तें उन को जो धर्म ब्राह्मण कहै उनको ही राजा स्वीकार करै क्योंकि धर्म से शिक्षा करता हुआ राजा ब्राह्मण को छोड़कर छटा भाग धन का लेले और इष्ट (यज्ञ आदि) पूर्त (कूप आदि के) भी छटे भाग को लेता है—ब्राह्मण ही वेद को आद्य (पहिले) करता है और आपत् (दुःख) से छुटता है तिससे ब्राह्मण अनादि है और सोम (चन्द्र) ब्राह्मणों का राजा है यही इस लोक और परलोक का कल्याण करने वाला है यही प्रतीत होती है ॥

इतिश्रीवासिष्ठे धर्मशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः १

चत्वारोवर्णाब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्राः त्रयोवर्णाद्विजात योब्राह्मणक्षत्रियवैश्याः तेषांमातुरग्रेधिजननंद्वितीयंमौं जीबंधनेतत्रास्य मातासावित्रीपितात्वाचार्यउच्यते वेद प्रदानात्पितेत्याचार्यमाचक्षते अथाप्युदाहरंतिद्वयमिहवै पुरुषस्ययतोब्राह्मणस्योर्ध्वन्नाभेरर्वाचीनंमन्येततद्यदूर्ध्वं नाभेस्तेनास्यानौरसीप्रजाजायते यदुपनयतिजनन्यांज नयतियत्साधुकरोति अथयदर्वाचीनंनाभेस्तेनास्यौरसी

इति वशिष्ठ स्मृतौ १ अध्यायः

ब्राह्मण, क्षत्रिय—वैश्य—शूद्र—ये चार वर्ण हैं और ब्राह्मण क्षत्रिय—वैश्य ये चार द्विजाति हैं—इन तीनों की उत्पत्ति पहिले माता से और दूसरी उत्पत्ति यज्ञोपवीत में होती है—और जनेऊ में इसकी गायत्री माता और आचार्य पिता कहा है वेद के देने से आचार्य को पिता कहते हैं इसमें भी यह वचन कहते हैं कि पुरुष (देह) के दो भाग हैं जिससे ब्राह्मण के देह का नाभि से ऊपर का एक भाग और एक नाभि से नीचे का माने जो भाग नाभि से ऊपर का है उससे इस मनुष्य के अनौरसी (जो छाती से न हो) प्रजा होती है कि जो यज्ञो पवीत होता है और जननी [गायत्री] में पैदा करता है वही अच्छा करता है—और जो नाभि से नीचे का भाग है तिससे मनुष्य के और स(छाती)से प्रजा होती है तिससे वेदपाठी और

प्रजाजायतेतस्माच्छ्रोत्रियमनूचानमपूज्योसीतिनवदंतीतिहारीताः अथाप्युदाहरंतिनह्यस्यविद्यतेकर्मकिंचिदामौंजीबंधनात् वृत्त्याशूद्रसमोज्ञेयोयावद्वेदेनजायते अन्यत्रोदककर्मस्वधापितृसंयुक्तेभ्यः विद्याहवैब्राह्मणमाजगामगोपायमाशेवधिस्तेहमस्मिअसूयकायानृजवेऽव्रतायमाब्रूयावीर्यवतीतथास्यां यआवृणोत्यवितथेनकर्मणाबहुदुःखंकुर्वन्नमृतंसंप्रयच्छन् तन्मन्येतपितरंमातरंचतस्मैनद्रुह्येत्कतमच्चनाहं अध्यापितायेगुरुंनाद्रियंतेविप्रावा

विद्या में बड़े को तू अपूज्य है ऐसे नही कहते—इनमें भी हारीत ऋषि यह बचन कहते हैं कि यज्ञोपवीत से पहिले इस को कोई कर्म नही है इतने यह वेद (गायत्री) में पैदा नहीं होता तब तक जलदान स्वधा पितरों का संयोग (सपिंडी) इनको छोड़ कर आचरण से शूद्र के समान जानना—विद्या ब्राह्मण के समीप आई और उस विद्या ने यह कहा है कि तू मेरी रक्षा कर मैं तेरी शेवधि (कोश) हुं और निंदक कठोर व्रतहीन को मुझे मत दे क्योंकि तिसीसे मैं वीर्य वाली हुं जो गुरु सत्य कर्म से अपने को ढकता है और जो बडे दुःख को सहकर अमृत को देता है तिससे गुरु को ही माता और पिता माने और तिसका द्रोह न करे क्योंकि यह समझे कि मैं कोई नहीं हुं जो पढाये हुये ब्राह्मण वाणी मन कर्म गुरु का आदर नही करते हैं वे जिस प्रकार गुरु के पालने योग्य नहीं है इसी

चामनसाकर्मणावा यथैवतेनगुरोर्भोजनीयास्तथैवताह्र
भूनक्तिश्रुतंतत् यमेवविद्याःशुचिमप्रमत्तं मेधाविनंब्रह्म
चर्योपपन्नं यस्तेनद्रुह्येत्कतमच्चनाहंतस्मैमांब्रूयानि
धिपायब्रह्मन्निति दहत्यग्निर्यथाकक्षंब्रह्मस्वन्दमना
दृतंनब्रह्मतस्मैप्रब्रूयाच्छक्यमानमकृततइतिषट्कर्माणि
ब्राह्मणस्य अध्ययनमध्यापनंयजनंयाजनंदानंप्रतिग्रह
श्चेतित्रीणिराजन्यस्ययजनंदानशस्त्रेणचप्रजापालनंस्व
धर्मस्तेनजीवेत्एतान्येवत्रीणिवैश्यस्यकृषिवाणिज्यपाशु
पाल्यकुसीदानिच्छएतेषांपरिचर्याशूद्रस्यअनियतावृत्तिः

प्रकार वह विद्या भी उनकी पालना नहीं करती—और हे ब्राह्मण जिसको तू शुद्ध अप्रमत्त बुद्धिमान् और ब्रह्मचारी समझे और जो तेरे संग द्रोह इस बुद्धि से न करे कि मैं कुछ हुं—उस निधिप [विद्या की रक्षा करने वाला] को मुझे (विद्या) कहिये जैसे अग्नितृण को दग्ध करता है इसी प्रकार अनादर किया ब्राह्मण भी दग्ध करता है इससे उस अनादर के कर्ता को शक्ति भर ब्रह्म (वेद) का उपदेश न करै यह हारीत ने कहाहै ब्राह्मण के ये छः कर्म हैं कि पढना पढाना यज्ञकरना कराना और दान और प्रतिग्रह क्षत्रिय के तीन कर्म हैं यज्ञ करनाकराना पढना और दान और प्रजा का पालन भी क्षत्रिय का धर्म है उसीसे क्षत्रिय जीवे येही तीन कर्म वैश्यके हैं और खेती लेन देन पशुओं की पालना और कुसीद [सूद लेना] और इन तीनों

अनियतकेशवेशाःसर्वेषांमुक्तशिखावर्जं अजीवंतःस्वधर्मे णान्यंतरांपापीयसींवृत्तिमातिष्ठेरन्नतुकदाचिज्ज्यायसीं वश्यजीविकामास्थायपण्येनजीवतोऽश्मलवणमपण्यपाषाणकौपक्षौमाजिनानिचतांतवस्यरक्तंसर्वंचकृतान्नंपुष्पमूलफलानिचगंधरसउदकंचओषधीनांरसः सोमश्चशस्त्रंविषंमांसंचक्षीरंसविकारंअपस्त्रपुजतुसीसंच अथाप्युदाहरंतिसद्यःपततिमांसेनलाक्षयालवणेनच त्र्यहेणशूद्रोभवतिब्राह्मणःक्षीरविक्रयात् ग्राम्यपशूनामेकशफाःकेशि

वर्णों की सेवा शूद्र का धर्म है और शूद्र की जीविका का नियम नहीं है और सब केशों के वेश छोड़े हुई शिखा के बिना अनियत (जिनका नियम न हो) है और अपने धर्म से नहीं जीवते हुए ये पापीयसी (छोटे वर्णों की) वृत्त में टिकें और उत्तम वर्णों की वृत्त में कभी भी न टिकें जो वैश्य की वृत्ति में टिक कर पण्य (बेचना वा लेना) से जीवे वह इनको न वेचे कि पत्थर लवण पाषाण [पत्थर) को वस्तु उप क्षौम [रेशम का भेद) मृगचर्म और लाल सूत्र का वस्त्र और बनाया हुआ सब प्रकार का अन्न—पुष्प—मूल—फल गंध रस जल औषधियों का रस अमृत की लता-शस्त्र-विष मांस दूध और दूध के बिकार [घोड़ा आदि] त्रपु (सीसे का भेद) लाख और सीसा ये न वेचे इसमें भी ये बचन कहते हैं कि मांस लाख लवण इनके वेचने से ब्राह्मण शीघ्र पतित होता है और दूध के बेचने से

न्श्चसर्वेचारण्याःपशवोवयांसिदंष्ट्रिणश्च धान्यानांतिला नाहुःअथाप्युदाहरंति भोजनाभ्यंजनाद्दानाद्यदन्यत्कुरु तेतिलैः कृमीभूतःसविष्ठायांपितृभिःसहमज्जति कामंवा स्वयंकृष्योत्पाद्यतिलान्विक्रीणीरन्तस्मात्सांडाभ्यामन स्योताभ्यांप्राक्प्रातराशात्कर्षीस्यात्निदाघेपःप्रयच्छेत्ना तिपीडनलांगलंप्रकीरवत्सुशेवंसोमपित्सरुतदुद्वपतिगाम विप्रफर्व्यंचपीवरींप्रस्थ.वद्रथवाहनंलांगलप्रवीरवद्वीरवत्सु

तीन दिन में शुद्ध होता है ग्राम के पशुओं में एक खुर के पशु और केशों वाले पशु और वन के सब पशु और पक्षी और दाड वाले पशु अन्नों में तिल ये बेंचने अयोग्य कहे हैं इसमें भी यह बचन कहा है भोजन उबटना दान इनसे अन्य जो तिलों से करता है वह विष्ठा में कीड़ा होकर पितरों सहित नरक में डूबता है और आप जोतने से तिलों को पैदा करके तो इच्छा के अनुसार बेचै ॥

तिससे जो बधिया न किये हों और जिनकी नाकमें नाथ न डाली हो ऐसे बैलोंसे भूमि को जोते और गर्मी की ऋतु में जल का दान करै और ऐसा हल हो जिससे अत्यन्त पीड़ा न हो और जिसमें पैनी धारा वाली कुश हो और जोहल सोम लता के पीने वाले यजमान के लिये भूमि को खोद सके ऐसा, हल धेनु रूप पृथ्वी को खोद सकता है और रथ के लेजाने वाले मेष (मीठा) और अश्वभी पृथ्वी को खोद सकते हैं जो पृथ्वी और अश्वादि बड़े वेग से दौड़ते हैं और पुष्ट हैं और

मनुष्यवदनडुद्दत्सुशेवंकल्याणीह्यस्यनासिकोद्दपति दूरेपविद्धयतिसोमपित्सरुसोमोह्यस्यप्राप्नोतितःसरुत दुद्दपतिगाःच्चाविंचाजानश्चानश्वतरोष्ट्रांश्चशफवांश्चदर्श नीधांपीवरींकल्याणींप्रथमयुवंतींकथंहिलांगूलमुद्दपेदन्य त्रधान्यविक्रयात् रसारसैःसमतोहानतोवानिमातव्यान त्वेवलवणांरसैःतिलतडुलपक्कान्नंविद्यान्मनुष्याश्चविहि ताःपरिवर्तकेनब्राह्मणाराजन्यौवाह्नुषान्नंनाददयातां अ थाप्युदाहरंतिसमर्घंधान्यमुद्धृत्यमहर्घंयःप्रयच्छति सवै

जो रथ और हलके लेजाने वाले बैल और घोड़े वल सें लेजा ना में समर्थ हैं और जिसमें वलवाले और अच्छे बैल हों और सुख देने वाली कुश हों क्योंकि जिस हल की कुश अच्छी हे ती है वही जमीन में दूर तक प्रवेश करता है और उसी से यजमान को सोम प्राप्त होता है क्योंकि वोहल यजमान के लिये ही जमीन में प्रवेश करता है और उस हल में बैल— भींढे—बकरी जोतने और रथ में—घोड़े—खिच्चर—ऊंट— जोड़ने और जो बैल पुष्ट हों नवे हों यदि ऐसी हलकी साम ग्री हो तो उससे तिलों को पैदा करके बेंचने में कुछ दोष नहीं इससे ब्राह्मण को कृषि का करना अत्यन्त बिरुद्ध है॥

रसों को रसों से बराबर वा न्यूनता से बेचे परंतु रसों से लवण को न बेचे और तिल—चावल पक्कान्न को भी रसों

वार्धुषिकोनामब्रह्मवादिषुगर्हितः वार्धुषिं ब्रह्महंतारंतु लयासमतोलयत् अतिष्ठद्भ्रूणहाकोट्यांवार्धुषिर्न्यव कंपतकामंवापरिलुप्तकृत्यायपापीयसे दद्याद्विगुणंहि रण्यंत्रिगुणंधान्यंधान्येनैवरसाव्याख्याताः पुष्पमूलफ लानिचतुलाघृतमष्टगुणं अथाप्युदाहरंतिराजाऽनुमतभा वेनद्रव्यवृद्धिं विनाशयेत् पुराराजाभिषेकेणद्रव्यवृद्धिं च वर्जयेत्द्विकंत्रिकंचतुर्थंचपंचकंचशतंस्मृतं मासस्यवृद्धिं

से न ले—और मनुष्य भी मनुष्य के बदले लेने कहे हैं और ब्राह्मण और क्षत्रिय वार्द्धुषिक के अन्न का भक्षण न करें इस में भी यह वचन कहते हैं समर्व (सस्ता) अन्न को निकाल कर महर्घ (महंगा) ब्रह्मवादियों में निंदित वह वार्द्धुषिक कहाता है वार्द्धुषिक और ब्रह्महत्यारे को तुला (तराजू) में तोला ब्रह्म हत्यारा ऊंचा रहा और वार्द्धुषिक कंपा भी नहीं—और जो कर्म से हीन और पापी हो उसको तो यथेच्छ दूने के लिये सोना—तिगुने के लिये अन्न देदे—और अन्न से ही रस भी कहे गये अर्थात् रसों को भी देदे—फूल—मूल—फल—येतुला पे रक्खे से आठगुने लेने इसमें भी ये वचन कहे हैं—कि राजा अपनी संमति से द्रव्य की वृद्धि को नष्ट करदे और फिर राजा के अभिषेक से द्रव्य की वृद्धि को वर्ज दे—और सौ रुपये पर क्रम से दो तीन—चार पांच रुपये महीने में वृद्धि (ब्याज) क्रम से ग्रहण करै—और वशिष्ट के वचन में कहीं

गृह्णीयाद्वर्णानामनुपूर्वशः वसिष्ठवचनेप्रोक्तावृद्धिंवार्धु षिकेशृणु पंचमांशांस्तुविंशत्याएवंधर्मोनहीयते

इतिवासिष्ठेधर्मशास्त्रेद्वितीयोऽध्यायः २

अश्रोत्रियाननुवाक्याअनग्नयःशूद्रधर्माणोभवंति नान्‍ग्ब्राह्मणोभवतिमानंचात्रश्लोकमुदाहरंति योनधीत्यद्विजोवेदमन्यत्रकुरुतेश्रमम् सजीवन्नेवशूद्रत्वमाशुगच्छति सान्वयः १ नवणिक्कुसीदलवाःयेचशूद्रप्रेषणांकुर्वंतिनस्तेनोनचिकित्सकः अव्रताह्यनधीयानायत्रभैक्ष्यचराद्विजाः

वार्द्धषिक की वृद्धि को सुनों कि बीस सेर पर पांचवां भाग अधिक अन्न ले अर्थात चौबीस सेर अन्न ले इसप्रकार करने से धर्म की हानि नहीं होती॥

इति वसिष्ठ स्मृतौ २ अध्याय

जो वेद को न पढे अनुवाक (वेद के स्तुति आदि भाग) को न जाने और जो अग्नि होत्र न करैं ऐसे तीनों वर्ण शूद्र के धर्म वाले होते हैं ऋक् वेद के विना ब्राह्मण नही होता इनमे श्लोक का प्रमाण कहते हैं कि जो द्विज वेद को न पठ कर अन्य में परिश्रम करता है वह जीवताही वंश सहित शूद्रत्व को प्राप्त होता है १

व्यापारी कुसीलव (सूद लेनेवाला) और जो शूद्र की आज्ञा करै और चोर और वैद्य ये शूद्रत्व को प्राप्त नहीं होते व्रत से हीन और विना पढे ब्राह्मण जिस देश में भिक्षा मांगे उस

तंग्रामंदंडयेद्राजाचोरभक्तप्रदोहिसः चत्वारोपित्रयोवा
पियद्ब्रूयुर्वेदपारगाः सधर्मइतिविज्ञेयोनेतरेषांसहस्रशः
अव्रतानाममंत्राणांजातिमात्रोपजीविनांसहस्रशःसमेता
नांपर्षत्वंनैवविद्यते यद्वदंत्यन्यथाभूत्वामूर्खाधर्ममतद्विदः
तत्पापंशतधाभूत्वातद्वक्तॄननुगच्छति श्रोत्रियायैवदेयानि
हव्यकव्यानिनित्यशः अश्रोत्रियायदत्तानितृप्तिंनायांति
देवताः यस्यचैवगृहेमूर्खःदूरेचैववहुश्रुतः वहुश्रुतायदात
व्यंनास्तिमूर्खेव्यतिक्रमः ब्राह्मणातिक्रमोनास्तिमूर्खे

देश को राजा दंड दे क्योंकि वह देश चोरों को भाग देने वाला है—चार वा तीन वेद के पार जानने वाले जिसको कहैं वही धर्म जानना और हजार भी अन्य जिसे कहैं वह नहीं जानना जो व्रत हीन और मंत्र (वेद) को न जाने और केवल जाति से ही जीवे वे चाहैं हजार भी जिसमें इकट्ठे हो उनकी पर्षत् (सभा) नहीं है और धर्म के न जानने वाले मूर्ख जो अन्यथा (कुछ का कुछ) कहते हैं वह पाप सौ प्रकार होकर उन्हीं वक्ताओं में जाता है और हव्य [देवान्न] और कव्य (पितरों का अन्न) प्रति दिन वेद पाठी को दे क्योंकि वेद पाठी से अन्य के देने से देवता तृप्त नही होते और जिसके मूर्ख तो घर में हो और बहुश्रुत [विद्या वान] दूर होय तो बहुश्रुत को ही दे क्योंकि मूर्ख के अवलंघन में दोष नही है और वेद से हीन मूर्ख ब्राह्मण के अवलंघन में दोष नही क्योंकि जलती हुई

चेदविवर्जिते ज्वलंतमग्निमुत्सृज्यनहिभस्मनिहूयतेयश्च काष्ठमयोहस्तीयश्चचर्ममयोमृगः यश्चविप्रोनधीयानस्त्र यस्तेनामधारकाः विद्वद्भोज्यानिचान्यानिमूर्खाराष्ट्रेषु भुंजते ? तदन्नंनाशमायातिमहच्चापिभयंभवेत् अप्रज्ञाय मानवित्तंयोधिगच्छेद्राजातद्धरेत् अधिगंत्रेषष्ठमंशंप्रदा यद्ब्राह्मणश्चेदधिगच्छेत्षट्कर्मसुवर्तमानोनराजाहरेत् आततायिनंहत्वानात्रप्राणाच्छेत्तुःकिंचित्किंल्बिषमाहुःष ट्विधास्त्वाततायिनःअथाप्युदाहरंतिअग्निदोगरदश्चैव

अग्नि को छोड़ कर भस्म (राख) मे नहीं होम किया जाता और काठ का हाथी और चाम का मृग और बिना पढ़ा ब्राह्मण ये तीनों नाम को ही धारण वाले हैं–और अन्न विद्वानों के भोजन के योग्य है जिस देश में मूर्ख धन्नों को खाते हैं वह अन्न भी नष्ट होता है और भय भी अधिक होता है बिना जानी द्रव्य जिस किसी को मिलजाय उसे राजा लेले और छटा भाग जिसे मिले उसको देदे यदि अपने छः ओं कर्मों में तत्पर ब्राह्मण को पूर्वोक्त धन मिले तो राजा न ले आत तायि केर मारने वाले को कुछ भी पाप नही होता यह कहा है छः प्रकार के आततायी हें इसमें ये बचन कहे हैं अग्नि लगाने वाला बिष देने वाला जिसके शस्त्र हाथ में हो धन का चोर खेत का चोर स्त्री का चोर ये छः अततायी हैं वे दांत के पार जानने वाले भी और हिंसा करने वाले आतता

शस्त्रपाणिर्धनापहः क्षेत्रदारहरश्चैव षडेते आततायिनः आ॰
ततायिनमायांतमपि वेदांतपारगं जिघांसंतं जिघांसीया
न्न तेन ब्रह्महा भवेत् स्वाध्यायिनं कुले जातं यो हन्यादातता
यिनं न तेन भ्रूणहा स स्यान्मन्युस्तं मन्युमृच्छति त्रिणाचि
केतः पंचाग्निस्त्रिसुपर्णवान् चतुर्मेधा वाजसनेयी षडंगवि
द्ब्रह्मदेयानुसंतानः छंदोगो ज्येष्ठसामगो मंत्रब्राह्मणवि
त् यस्य धर्मानधीते यस्य च पुरुष मातृ पितृ वंशः श्रोत्रियो
विज्ञायते विद्वांसः स्नातकाश्चेति पंक्तिपावनाः चातुर्विद्यवि

तायी को मारने की इच्छा करे उससे ब्रह्म हत्यारा नहीं होता
और अच्छे कुल में उत्पन्न वेदपाठी आतता तायी को जो मारे उस
हत्या से वह ब्रह्म हत्यारा (नहीं होता क्यों कि उसका क्रोध
हो उसको मारता है ये पंक्ति को पवित्र करने वाले हैं कि
त्रिणाचिकेत पंचाग्नि तीन सुपर्ण (वेद का भाग) कोजो जाने
चार प्रकार की जिसकी बुद्धि हो वा जसनी सहिंता कोजोजाने
षडग कोजाने ब्रह्म (वेद का भागी जिसकी संतान हो छन्द और
ज्येष्ठ साम वेद को जो जाने मंत्र ब्राह्मण का ज्ञाता जो धर्मों
को पढे जिसके माता पिता का वंश वेद पाठी हो और जो
विद्यावान् और ब्रह्मचारी हो और चारों विद्याओं मे जो एक
भी विद्या को जाने छः अंग जो जाने धर्मशास्त्र जो पढावे
और आश्रमों में टिके तीन मुख्य पुरुष ऐसों को कमसे कम
दश की परिषत् [सभा] होती है जो शिष्य को यज्ञोपवीत दे

कल्पीचअंगविद्धर्मपाठकः आश्रमस्थास्त्रयोमुख्यापरिष त्स्य दशावराउपनीययः शिष्यवेदमध्यापयेत्सआचार्यः यस्त्वेकदेशंसउपाध्यायोयश्चवेदांगानिआत्मत्राणेवर्ण संकरेवाब्राह्मणवैश्यौशस्त्रमाददीयातां क्षत्रियस्यतुतन्नि त्यमेवरक्षणाधिकारात् प्राग्वोदग्वासीनःप्रक्षाल्यपादौ पाणीचामणिबंधनात् अंगुष्ठमूलस्योत्तरतोरेखाब्राह्मंती र्थंतेनत्रिराचामेदशब्दवत्द्विःप्रमृज्यात्खान्यद्भिःसंस्पृशे त् मूर्द्धन्यपोनिनयेत् सव्येचपाणौव्रजस्तिष्ठन् शयानः

करचारि। वेद पढावै वह आचार्य और जो वेद का कोई भाग वा अंग पढावै वह उपाध्याय कहाता है अपनी रक्षा में और वर्णों का संकर प्रवृत्त होय तो ब्राह्मण और वैश्य भी शस्त्रों को धारैं और क्षत्रिय को तो शस्त्र का लेना नित्य है क्योंकि क्षत्रिय को रक्षा करने का अधिकार है और पूर्व वा उत्तराभि मुख बैठ कर पैर और पहुंचतक हाथों को धोकर अंगूठे क जड़ से उत्तर दिशा में जो रेखा है वह ब्रह्मतीर्थ है उससे इस प्रकार आचमन करै जिस जिसप्रकार शब्द न हो फिर दो बार मुख पूंछ और कान आदि छिद्रों में जल का स्पर्श करै और मस्तक पर जल गेरै और बांये हाथ से चलता खड़ा सोता प्रणोता (किसी को पहुंचाता) हुआ आचमन न करै और बिना झाग के और जो हृदय तक पहुंचे ऐसे जलों से ब्राह्मण और जो जल कंठ तक पहुंचें उनसे क्षत्रिय—और मुख में जो

प्रशोतावानाचामेत् हृदयंगमाभिरद्भिरबुद्बुदाभिर्ब्राह्मणः कंठगाभिःक्षत्रियःशुचिःवैश्योद्भिःप्राशिताभिस्तुस्त्रीशूद्रौस्पृष्टाभिरेवचपुत्रद्वाराऽपियःगास्तर्पणानिस्युनवर्णगंधरसदुष्टाभिर्याश्चस्युरशुभागमाः नमुख्याविप्रुषउच्छिष्टंकुर्वंति अनंगश्लिष्टाःसुप्त्वाभुक्त्वापीत्वास्नात्वाचाचांतपुनराचामेत्वासश्चपरिधायओष्ठौसंस्पृश्ययत्रालोमकौनभ्रमश्रु गतेलेपोदंतवद् दंतसक्तेषुयच्चांतर्मुखेभवेदाचांतस्यावशिष्टं स्यान्निगिरन्नेवतच्छुचिः परानथाचामयतःपादौयाविप्रुषोगताःभूम्यातास्तुसमाः प्रोक्तास्ताभि

पहुंचे उनसे वैश्य और जिन का स्पर्श हो ओठों पर हो उनसे स्त्री और शूद्र पवित्र होते हैं- पुत्र के द्वारा किये यज्ञों से तृप्ति होती है—और जो जल वर्ण- गंध—रस—से दुष्ट हों और अशुद्ध मार्ग से आये हों उनसे आचमन न करे और मुख की बूंद यदि अंग पर न स्पर्श करें तो उच्छिष्ट नहीं करती—आचमन के अनन्तर शोयन—भोजन जलपान करके फिर आचमन करै और वस्त्रों को पहिन कर भी आचमन करै और ओष्ठी (होठ) का स्पर्श करके रोमों के बिना श्मश्रु का लेप शुद्ध नहीं है—औरजोदांतों में लगा हो वह दांतों के तुल्य है जो मुख के भीतर आचमन का शेष जल होय तो इसके निगलने से ही शुद्ध है—और दूसरों को आचमन कराते हुए अपने पैरों पर जो बूंद गिरे वे पृथिवी के समान हैं इनसे उच्छिष्ट नहीं होता

नोच्छिष्टभाग्भवेत्प्रचरन्नभ्यवहार्येषु उच्छिष्टं यदि संस्पृशेत्भूमौ निक्षिप्य तदद्रव्यमाचांतःप्रचरेत्पुनः यद्यन्मीमांस्यं स्यात्तत्तदद्भिः संस्पृशेत् श्वहताश्च मृगा वन्याः पातितं च खगैः फलं बालैरनुपविद्धान्तः स्त्रीभिराचरितं च यत् परिसंख्याय तान्सर्वाञ्शुचीनाह प्रजापतिः प्रसारितं च यत्पुण्यं ये दोषाः स्त्रीमुखेषु च मशकैर्मक्षिकाभिश्च नीलीयेनोपहन्यते क्षितिस्थाश्चैव या आपो गवां प्रीतिकराश्च याः परिसंख्याय तान्सर्वाञ्शुचीनाह प्रजापतिरिति लेपगंधापकर्ष

भोजन करते हुए मनुष्यों के बीच परसने के लिये फिरता हुआ यदि उच्छिष्ट का स्पर्श करले तो उस द्रव्य को भूमि में रख और आचमन करके फिर परसे—और जो २ बिचारने योग्य हो उस२ को जल से स्पर्श करै—कुत्ते के मारे मृग, पक्षियों ने गिराया फल—बालकों ने जो छूआ हो और रजवान की स्त्रियों ने जो आचरण किया हो—इन सब को गिनती करके प्रजापति ने शुद्ध कहा है—दुकान में फैलाई बेचने की वस्तु—और स्त्री के मुख के दोष और मच्छर और मक्खी जो नील पर बैठी हों और जिनसे गौ तृप्त हों ऐसे भूमि पर टिके जल—ये सब गिनकर प्रजापति ने शुद्ध कहे हैं अशुद्ध वस्तु जिसमें लगी हो उसकी शुद्धि दुर्गंध जिससे दूर हो ऐसे लेप वा जल और मट्टी से होती है तैजस (सोने आदि के) के-मट्टी

णां शौचममेध्यलिप्तस्य अद्भिर्मृदाचतैजसमृण्मयदारु वतांतवानांभस्मपरिमार्जनंप्रदाहतक्षणनिर्णेजनानितैज सवदुपलमणीनांमणिवच्छंखशुक्तीनांदारुवदस्थ्नां रज्जु विदलचर्मणांचैलवच्छौचंगोवालैः फलचमसानांगौरसर्ष पकल्केनक्षौमजानांभूम्यास्तुसंमार्जनप्रोक्षणोपलेपनोल्ले खनैर्यथास्थानेदोषविशेषात्प्राजापत्यमुपैति अथाप्युदा हरंतिखननाद्दहनादवर्षाद्गोभिराक्रमणादपिचतुर्भिः शु द्ध्यतेभूमिःपंचमाच्चोपलेखनात्रजसाशुद्ध्यतेनारीनदी

काठके और तंतु (सूत) के पात्रों को शुद्धि क्रमसे भस्म से मांजना—पकाना—छीलना—और धोने से होती है पत्थर और मणियों की शुद्धि सोने आदि के पात्रों के समान है शंख और शुक्ति (सीप) के पात्रों की शुद्धि मणि के समान है—और हाड़ की शुद्धि काष्ठ के समान है रस्सी—बिदल—और चाम इन की शुद्धि वस्त्रों के समान है फल और चमस (यज्ञका पात्र) इनको शुद्धि गौ के बालों (चवर) से होती है—रेशम के वस्त्रों की शुद्धि सपेद सिरसों को खल से होती है और भूमि की शुद्धि मार्जन (बुहारना) छिड़कना—लीपना और खोदने से होती है और किसी स्थान में दोष अधिक होय तो प्राजापत्य व्रत को करै इसमें भी ये वचन कहते हैं कि खोदने जलाने वर्षा गौओं के फिरने इन चार प्रकार से और पांचवे लीपने

वेगेनशुद्ध्यतिभस्मनाशुद्ध्यतेकांस्यंताम्रमम्लेनशुद्ध्यति मद्यमूत्रैःपुरीषैर्वाश्लेष्मपूयाश्रुशोणितैः संस्पृष्टंनैवशुद्ध्येतपुनःपाकान्महीमयंअद्भिर्गात्राणिशुद्ध्यंतिमनःसत्येनशुद्ध्यतिविद्यातपोभ्यांभूतात्माबुद्धिर्ज्ञानेनशुद्ध्यतिअद्भिरेवकांचनंपूयेतेतथाराजतंअंगुलिकनिष्ठकामूलेदैवंतीर्थंअंगुल्यग्रेमानुषंपाणिमध्यआग्नेयम् प्रदेशिन्यंगुष्ठयोरंतरापित्र्यंरोचंतइति सायंप्रातरशनान्यभिपूजयेत् स्वदितमितिपित्रेषुसंपन्नमित्याभ्युदयिकेषु

से भी शुद्धि होती है और रज से स्त्री वेगसे नदी भस्म से कांसी का पात्र और खटाई से तांवे का पात्र शुद्ध होता है और मदिरा मूत्र विष्ठा कफ राध आंसु रुधिर इन का जिस में स्पर्श हो ऐसा मट्टी का पात्र फिर पकाने से शुद्ध नहीं होता और जल से गात्र सत्य से मन विद्या और तपसे जीवात्मा ज्ञान से बुद्धि सोने और चांदी का पात्र जलों से शुद्ध होते हैं और कनिष्ठि का अंगुली की जड़ में दैव तीर्थ अंगुलियों के अग्र भाग में मनुष्य तीर्थ और अंगूठे और प्रदेशिनी के बीच पित्र्य तीर्थ कहा है—सायंकाल और प्रातःकाल भोजनों को पूजे पितरों के भोजन में स्वदित (अच्छा भोजन खाया) और अभ्युदयिक (विवाह आदि) के भोजन में संपन्न (अच्छा भया) ऐसे कहै ॥

इतिवासिष्ठेधर्मशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः ३

प्रकृतिविशिष्टं चातुर्वर्ण्यंसंस्कारविशेषाच्च ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्बाहूराजन्यःकृतःऊरूतदस्ययद्वैश्यःपद्भ्यांशूद्रोऽजायतेतिनिगमोभवति गायत्र्याछंदसाब्राह्मणमसृजत् त्रिष्टुभाराजन्यंजगत्यावैश्यंनकेनचिछंदसाशूद्रमित्यसंस्कार्योविज्ञायतेत्रिष्वेवनिवासःस्यात्सर्वेषांसत्यमक्रोधोदानमहिंसाप्रजननंच पितृदेवतातिथिपूजायांपशुंहिंस्यात् मधुपर्केचयज्ञेचपितृदैवतकर्म्मणि अत्रैवचपशुंहिंस्या

इति वशिष्ठ स्मृतौ ३ अध्याय

स्वभाव और संस्कार की विशेषता से चारों वर्णों की विशेषता है और यह वेद भी है कि इस ईश्वर के मुख से ब्राह्मण और भुजाओं से क्षत्रिय और जंघाओं से वैश्य और पैरों से शूद्र पैदा हुआ है और गायत्री छंद (वेद) से ब्राह्मण और त्रिष्टुभ छन्द से क्षत्री और जगती छंद से वैश्य को ईश्वर ने रचा अर्थात् उक्त वेद के मंत्रों से इनका संस्कार होता है— और शूद्र को ईश्वर ने किसी भी छंद से नहीं रचा इससे शूद्र संस्कार के अयोग्य जाना जाता है तीन वर्णों से ही संस्कार की स्थिति है—और सब वर्णों का सत्य क्रोध का अभाव दान हिंसा का त्याग और प्रजनन (जात कर्म) धर्म है और पितर देवता और अतिथि इनकी पूजा में पशु की हिंसा करे क्यों कि मनुने यह कहा कि मधुपर्क यज्ञ पितर और देवताओं के

नान्यथेत्यब्रवीन्मनुः नाकृत्वाप्राणिनांहिंसांमांसमुत्पद्यते क्वचित् नचप्राणिवधःस्वर्ग्यस्तस्माद्यागेवधोऽवधः अथापिब्राह्मणायवाराजन्यायवा अभ्यागतायवामहोक्षंवामहोजंवापचेत् एवमस्यातिथ्यंकुर्वंतीतिउदकक्रियामशौचं द्विवर्षात्प्रभृतिमृतउभयंकुर्यात् दंतजननादित्येकेशरीरमग्निनासंयोज्य अनवेक्षमाणाअपोभ्यवयंतिततस्तत्र स्थाएवसव्योत्तराभ्यांपाणिभ्यामुदकक्रियांकुर्वंतिअयुग्मादक्षिणामुखाःपितृणांवाएषादिक्यादक्षिणागृहात्प्रजित्वा

निमित्त कर्म इनमें ही पशु की हिंसा करै अन्यथा न करै और प्राणियों की हिंसा किये बिना कहींभी मांस पैदा नही होता और प्राणियों का मारना स्वर्ग देनेवाला नही हैं तिससे यज्ञ में हिंसा हिंसा नही हैं और ब्राह्मण क्षत्रिय और अभ्यागत इनके लिये बड़ा बैल वा बड़ा अज (बकरा) पकावे इसी प्रकार इसका आतिथ्य(सत्कार) करते हैं दोवर्ष से आदि अवस्था में मरे तो जल दान और अशौच दोनों करै और कोई यह कहते हैं कि दांतों के जन्म से दोनों करै मरे के देह को अग्नि का संयोग करके चिता को नही देखते हुये जल के समीप जा और जल में टिककर दोनों हाथों से जलदान करै और अयुग्म (तीन पांच सात आदि) और दक्षिण दिशा को मुखकरै क्योंकि जो यह दक्षिण दिशा है सो पितरों की है फिर घरों में जाकर तीन दिन उपवास करके अच्छे आसन

स्वस्त्ररेभ्यहमश्नंतआसीरन् अशक्तौक्रीतोत्पन्नं नवर्तेरन् दशाहंशावमाशौचंसपिंडेषुविधीयते मरणात्प्रभृतिदिवस गणानासपिंडतासप्तपुरुषंविज्ञायते अप्रत्तानांस्त्रीणांत्रिपुरुषंत्रिदिनंविज्ञायते प्रत्तानामितरेकुर्वीरन्तांश्चतेषांजननेप्येवमेवनिपुणांशुद्धिमिच्छतांमातापित्रोर्बीजनिमित्तत्वात् ॥ अथाप्युदाहरंतिनाशौचंसूतकेपुंसःसंसर्गंचेन्नगच्छति रजस्तत्राशुचिज्ञेयंतच्चपुंसिनविद्यते ब्राह्मणोदशरात्रेणपक्षमात्रेणभूमिपः विंशतिरात्रेणवैश्यः शूद्रोमासे

पर बैठें और शक्ति न होय तो मोल लेकर खावें सपिंडों में दश दिन को मरण का अशौच है और दिनों को गिनती मरने के दिन से है सात पीढी तक सपिंड जाने जाते हैं और बिना विवाही कन्या ओं के मरण का अशौच तीन पीढीयों में तीन दिन का जाना है और विवाही हुई कन्याओं का अशौच इतर[जहां विवाही होंं] करैं इसी प्रकार उनकन्याओं के जन्मसूतकमें भी भली प्रकार शुद्धि की इच्छा करने वालों को अशौच है क्योंकि माता और पिता बीज के निमित्त हैं इस विषय में ये वचन कहेहैं कि सूतक में यदि स्पर्श न करे तो पुरुष को अशौचनहीं है क्योंकि जन्म सूतक में रज अशुद्ध है और वह रज पुरुष में नहीं है ब्राह्मण दश दिन मैं क्षत्री पक्ष भर में वैश्य बीस रात्रि मैं शूद्र एक मास मैं शुद्ध होता है

नशुद्ध्यति अशौचे शौद्रके यस्तु सूतके वापि भुक्तवान् सगच्छे न्नरकं घोरं तिर्यग्योनिषु जायते अनिर्दशाहे पक्कान्नं नियोगा द्यस्तु भुक्तवान् कृमिर्भूत्वा स देहांते तद्विष्ठामुपजीवति द्वाद शमासान्द्वादशार्द्ध मासान्वाऽनश्नन्संहितामधीयानः पूतो भवतीति विज्ञायते ऊनद्विवर्षे प्रेते गर्भपतने वा सपिंडानां त्रि रात्रमाशौचं सद्यः शौचमिति गौतमः देशांतरस्थे प्रेते ऊर्ध्वं द शाहाच्चैकरात्रमाशौचं आहिताग्निश्चेत्प्रवसन्म्रियते पु नःसंस्कारं कृत्वा शववच्छौचमिति गौतमः यूपं यतिश्मशान रजस्वलासूतिकाशुचीनुपस्पृश्य सशिरा अभ्युपेयादपः

इति वासिष्ठे चतुर्थोऽध्यायः ४

जिसने शूद्र के अशौच वा सूतक में भोजन किया हो वह पुरुष नरकों में जाता हुआ तिरछी योनि (सर्पादि) में पैदा होता है दश दिन के भीतर जो नौतने पर भोजन करे वह कीड़ा होकर उसी वृत्ति से जीवता है—और वह मनुष्य बारह वा छः महीने तक भोजन को त्यागकर संहिता का पाठ करके पवित्र होता है यह शास्त्र से जाना है दो वर्ष से न्यून बालक मरे वा गर्भपात होजाय तो सपिंडों को तीन रात्रि का अशौच होता है और गौतम ऋषि कहते हैं कि उसी समय शुद्धि होती है श्मशान रजस्वला, सूतिका और अशुद्ध इनका स्पर्श करके शिर सहित जल में स्नान करने से पवित्र होते हैं

इति वशिष्ठ स्मृतौ ४ अध्याय

अस्वतंत्रास्त्रीपुरुषप्रधानाअनग्निरनुदक्याच अनृतमिति विज्ञायते अथाप्युदाहरंति पितारक्षतिकौमारेभर्तारक्षति यौवनेपुत्राश्चस्थाविरेभावेनस्त्रीस्वातंत्र्यमर्हति तस्याभर्तुरभिचारउक्तः प्रायश्चित्तरहस्येषुमासिमासिरजोह्यासां दुष्कृतान्यपकर्षतित्रिरात्रंरजस्वलाशुचिर्भवति सानाञ्ज्यान्नाभ्यंज्यान्नाप्सुस्नायात् अधःशयीतदिवानस्वप्यात्नाग्निंस्पृशेत्नरज्जुंप्रसृजेन्नदंतान्धावयेन्नमांसमश्नी

स्त्री पराधीन है और पुरुष उसका प्रधान है और अग्नि होत्र से हीन और जलदान के अयोग्य है झूठ रूप है यह शास्त्र से जाना है इस विषय में ये वचन कहे हैं कि बाल्य अवस्था में पिता और यौवन में पति और वृद्ध अवस्था में पुत्र स्त्री की रक्षा करते हैं इससे स्त्री स्वतंत्रता के योग्य नहीं है और प्रायश्चित्त और क्रीड़ा के वार्तालापों में स्त्री को पति का अभिचार (अवलंबन) कहा है और प्रतिमास में इनके पापों को रज नष्ट करता है और रजस्वला तीन रात्रि तक शुद्ध होती है वह स्त्री अन्जन न लगावे और न उबटना करे और जलों में स्नान न करे पृथिवी पर सोवे और दिन में न सोवे और अग्नि का स्पर्श न करे और रस्सी को न धोवे और दांतों को भी न धोवे और मांस को न खावे और ग्रह को न देखे नह से और न कुछ कर्म करे छोटे पात्र से अंजलि से जल न

यात् नग्रहंनिरीक्षयेत् नहसेन्नकिंचिदाचरेत् नखर्वेण पिवेन्नांजलिनावा नलोहितायसेनवाविज्ञायतेहींद्रस्त्रि शीर्षमूत्वाष्ट्रं हत्वापाप्मनागृहीतोमन्यतइति तंसर्वाणि भूतान्यभ्याक्रोशन्भ्रूणहन्निति सस्त्रियउपःधावत् अस्यैमे ब्रह्महत्यायैतृतीयंभागगृह्णीतेतिग‍त्वैवमुवाचताअब्रुवन् किन्नोभूदितिसोब्रवीद्वरंवृणीध्वमितिताअब्रुवन्नृतौप्रजा विंदामहइति काममाविजानीमोऽलंभवामइतियथेच्छया आप्रसवकालात्पुरुषेणसहमैथुनभावेनसंभवामइति एको ऽस्माकंवरस्तथेंद्रेणोक्तास्ताःप्रतिजगृहुःतृतीयंभ्रूणहत्या

पीवे किंतु लोहे के पात्र से भी न पीवे यह शास्त्र से जाना है कि इन्द्र तीन शिर वाले त्वष्टा के पुत्र विश्वरूप को मार कर अपने को पापसेगृहीत मानता भया- उस इन्द्र को सब प्राणी इसप्रकार कोसते भये कि हे ब्रह्म हत्यारे २ वह इन्द्र स्त्रियों के समीप जा कर यह कहता भया कि इस मेरी ब्रह्म हत्या का तीसरा भाग तुम ग्रहण करो वे स्त्री बोली कि हम को क्या होगा इन्द्र बोला कि वर मांगो वेबोली कि ऋतु काल में हमें संतान मिले इन्द्र ने कहा कि हम आज्ञा देते हैं और प्रसन्न होते हैं कि यथेच्छ संतान को प्राप्त हो—फिर स्त्री बोली कि गर्भ रहने पर भी संतान के होने तक पुरुष के संग मैथुन को हम प्राप्त हो यह एक और वर हमको दो—इन्द्र ने कहाकि

यांस्यैषाभ्रूणहत्यामासिमास्याविर्भवति तस्माद्रजस्व लान्नंनाश्नीयात्भ्रतश्चभ्रूणहत्यायाएवैतद्रूपंप्रतिमुंच्या स्तेकंचुकमिव तदाहुर्ब्रह्मवादिनः अंजनाभ्यंजनमेवास्या नप्रतिग्राह्यं तद्धिस्त्रियोऽन्नमितितस्मात्तस्यास्तत्रनचप्रन्यं ते आचारायाश्चयोषितइतिसेयमुपयाति उदक्यास्त्वास तेत्तेषांयेचकेचिदनग्नयःगृहस्थाःश्रोत्रियाएषांसर्वेतेसर्वे शूद्राः

इतिवासिष्ठेपंचमोऽध्यायः ५

आचारःपरमोधर्मःसर्वेषामितिनिश्चयः हीनाचारपरीता

अच्छा फिर वे स्त्री हत्या का तीसरा भाग ग्रहण करती भई— सो यह ब्रह्म हत्या महीने २ में प्रकट होती है तिससे रजस्वला का अन्न न खाय इससे ब्रह्म हत्या का हो रूप यह धन्न स्त्री से पृथक सांप की कांचली के समान रहता है—सोई ब्रह्म वादियों ने कहा है कि अंजन और उवटना इस स्त्री को नहीं है इससे इक स्त्री का अन्न नहीं लेना तिसते तिस स्त्री को आचार वाली स्त्री नहीं मानते सो यह स्त्री होती है—जो अग्नि होत्र से हीन है और जो रजस्वला के अन्न को खाते हैं गृहस्थी और वेद पाठी वे सब शूद्र के समान हैं ॥

इति वशिष्ठ स्मृतौ ५ अध्याय

यह निश्चय है कि सबका परम धर्म आचार है हीन आ चार से युक्त है आत्मा जिसका ऐसा मनुष्य इस लोक और

ष्म.प्रेत्यचेहचनश्यति नैनंप्रयातिनब्रह्मनाग्निहोत्रंच दक्षिणा हीनाचारसितंभ्रष्टंतारयंतिकथंचन आचारहीनं नपुनंतिवेदायद्यप्यधीताःसहषड्भिरंगैः छंदांस्येनंमृत्यु कालेत्यजंतिनीडंशकुंताइवतापतप्ताः आचारहीनस्यतु ब्राह्मणस्यवेदाःषडंगाअखिलाःसपक्षाकांप्रीतिमुत्थापयि तुंसमर्थाअंधस्यदाराइवदर्शनीयाः नैनंछंदांसिवृजिनात्ता रयंतिमायाविनंमाययावर्त्तमानम्तत्राक्षरेसम्यगधीयमा नेपुनातितद्ब्रह्मयथावदिष्टम्दुराचारोहिपुरुषोलोकेभवति निंदितःदुःखभागोचसततंव्याधितोल्पायुरेवच आचारः

परलोक में नष्ट होता है और हीन आचार वाले मनुष्य के लज्जा वेद—अग्निहोत्र—दक्षिणा ये सब नहीं होते हैं और हीन आचार से बंधे और भ्रष्ट को पूर्वोक्त लज्जा आदि नहीं तार सकते—आचार से हीन को षगों सहित पढे वेद भी पवित्र नहीं कर सकते—और मरण के समय में इस को वेद इस प्रकार त्याग देते हैं जैसे ताप [अग्नि] से तपाये पक्षी घूंसले को—आचार से हीन ब्राह्मण को सांगो पांग वेद और छओं अंग किस प्रीति के पैदा करने को समर्थ हैं जैसे अंधेको सुंदर स्त्री और माया से वर्तमान और मायावी इसको दुःख से वेद नही तार सकते और भली प्रकार पढावेद का एक अक्षर भी पवित्र करता है—दुराचारी पुरुष लोक में निंदित और दुःख का भागी—रोग और अल्पायुः होता है - आचार से धर्म

फलतेधर्ममाचारःफलतेधनं आचाराच्छ्रियमाप्नोति आचा
रोहंत्यलक्षणंसर्वलक्षणहीनोपियः सदाचारवान्नरः श्रद्द
धानोनसूयश्चशतंवर्षाणिजीवति आहारनिर्हारविहार
योगाःसुसंवृताधर्मविदातुकार्याः वाग्बुद्धिवीर्याणितपस्त
थैवधनायुषीगुप्ततमेतुकामे उभे मूत्रपुरीषेतुदिवाकुर्यादु
दङ्मुखःरात्रौकुर्याद्दक्षिणास्यएवंह्यायुर्नहीयते प्रत्यग्निं
प्रतिसूर्यंचप्रतिगांप्रतिचद्विजम् प्रतिसोमोदकंसंध्यांप्र
ज्ञानश्यतिमेहतःननद्यांमेहनंकार्यंनभस्मनिनगोमये न
वाकृष्टेनमार्गेचनोप्तेक्षेत्रेनशाद्वले छायायामंधकारेवा

फलता है और आचार से धन फलता है आचार से लक्ष्मी प्राप्त होती है आचार कुलक्षण को नष्ट करता है संपूर्ण लक्षणों से हीन भी जो मनुष्य आचार वाला है और श्रद्धावान् और निंदा न करै वह सौ वर्ष जीवता है—भोजन—गमन—क्रीड़ा और वाणी और बुद्धि का वीर्य और तप और काम (इच्छा वा मैथुन) इन सबको धर्म का जानने वाला छिपाकर करै—मूत्र और मल का त्याग दिन में उत्तराभिमुख और रात्रि में दक्षिणाभिमुख होकर करै क्योंकि ऐसे करने से अवस्था नष्ट नहीं होती—अग्नि—सूर्य—गौ—ब्राह्मण—चंद्रमा—जल—संध्या— इनके सन्मुख जो मल का त्याग करै उसकी बुद्धि नष्ट होती है और नदी भस्म गोबर जुता खेत मार्ग और बोया खेत घास इनमें मल का त्याग न करै—छाया वा—अंधकार के समय रात्रि

रात्रावहनिवाद्विजःयथासुखंमुखःकुर्यात्प्राणबाधाभयेषुच
उद्धृताभिरद्भिःकार्यंकुर्यात्स्नानमनुद्धृताभिरपिआहरे
न्मृतिकांविप्रकूलात्ससिकत.तथा अतर्जलेदेवगृहेवल्मी
केमूषिकस्थले कृतशौचावसिष्टाचनग्राह्याःपंचमृतिकाः
एकालिंगेकरेतिस्त्रउभाभ्यांद्वेतुमृत्तिकेपंचापानेदशैकस्मि
न्नुभयोःसप्तमृत्तिकाः एतच्छौचंगृहस्थस्यद्विगुणंब्रह्म
चारिणः वानप्रस्थस्यत्रिगुणंयतीनांतुचतुर्गुणं अष्टौग्रासा
मुनेर्भक्षंवानप्रस्थस्यषोडश द्वात्रिंशच्चगृहस्थस्यअमितं

अथवा दिन में और प्राणों की हिंसा में अपनी इच्छा के अनु
सार मुख करके मल का त्याग करे—जलों को आप निकास
कर स्नान करे और बिना निकासे जलों से भी तट पर से
मट्टी अथवा रेत बाहर निकास कर स्नान करे जल के भीतर
की देवता के स्थान की वामीकी—मूषों की खोदी और शौच
से बची ये पांच मट्टी नही लेनी लिंग में एक वार बांये हाथ
में तीन वार और फिर दोनों हाथों में दो बार मट्टी लगावे
और गुदा पांचवार बांये हाथमें दशवार और फिर दोनोंमें सात
बार मिट्टी लगावे यह शौच गृहस्थी को है और इससे दूना ब्रह्म
चारी का तिगुना वानप्रस्थ का चोगुना संन्यासियों का है—
मुनि का भोजन आटग्रास वानप्रस्थ का सोलह ग्रास ग्रहस्थ
का बत्तीस ग्रास और ब्रह्मचारी का अमित (प्रमाण हीन) है
बैल ब्रह्मचारी—और वानप्रस्थ यें तीनों भोजन से ही सिद्धि

ब्रह्मचारिणः अनड्वान्ब्रह्मचारी चआहिताग्निश्चतेत्रयः भुंजानाएवसिद्ध्यंतिनैषांसिद्धिरनश्नतांतपोदानोपहारेषुव्रतेषुनियमेषुचइज्याध्ययनधर्मेषुयोनोक्तःसविनिष्क्रियः योगस्तपोदमोदानंसत्यंशौचंदयाश्रुतंविद्याविज्ञानमास्तिक्यमेतद्ब्राह्मणलक्षणंसर्वत्रदांताःश्रुतिपूर्णकर्णाजितेंद्रियाःप्राणिवधेनिवृत्ताः प्रतिग्रहेसंकुचिताग्रहस्थास्तेब्राह्मणास्तारयितुंसमर्थाः असूयुंपिशुनश्चैवकृतघ्नोदीर्घरोषकःचत्वारःकर्मचांडालाजन्मतश्चापिपंचमः दीर्घवैरमसूयांचअसत्यंब्रह्मदूषणं पैशून्यंनिर्दयत्वंचजानीया

को प्राप्त होते हैं और भोजन न करने वाले इनकी सिद्धि नहो हे तप दान उपहार (भेट) व्रत - नियम - यज्ञ - पढाना - धर्म इनमें जो न कहा हो वह बेचना है योग—तप—दम [इन्द्रियों का रोकना] दान—सत्य—शौच—दया—वेद बिद्या बिज्ञान आस्तिक्य - ये ब्राह्मण के लक्षण हैं जो ब्राह्मण सब जगे इन्द्रियों का दमन करने वाले हैं और वेद से जिनके कान पूर्ण हैं और जो जितेन्द्रिय हैं प्राणियों की हिंसा से जो निवृत्त हैं और प्रतिग्रह लेने में जिन्हें संकोच हे वे ब्राह्मण तारने को समर्थ हैं निंदक चुगल कृतघ्न बड़ा क्रोधी ये चारों कर्म से चंडाल हैं और पांचवा चांडाल जन्म से है और बहुत वैर निन्दा झूट ब्राह्मण को दूषण लगाना, चुगल पन. निर्दयीपन येशूद्र के लक्षण जानने, और कोई पात्र वेद से हैं और

च्छूद्रलक्षणं किंचिद्वेदमयंपात्रंकिंचित्पात्रंतपोमयं पात्रा णामपितत्पात्रंशूद्रान्नंयस्यनोदरे शूद्रान्नरसपुष्टांग अधी यानोपिनित्यशः जुह्वन्वापियजन्वापिगतिमूर्द्धांनविंद ति शूद्रान्नेनोदरस्थेनयःकश्चिन्म्रियतेद्विजः सभवेच्छूक रोग्राम्यस्तस्यवाजायतेकुले शूद्रान्नेनतुभुक्तेनमैथुनंयो धिगच्छतियस्यान्नंतस्ययेपुत्रानचस्वर्गार्हकोभवेत्स्वा ध्यायाढ्यंयोनिमित्रंप्रशांतंचैतन्यस्थपापभीरुंबहुज्ञं स्त्री षुक्षान्तं धार्मिकंगोशरण्यंव्रतैःक्षांतंतादृशंपात्रमाहुः आ मपात्रेयथान्यस्तंक्षीरंदधिघृतंमधुविनश्येत्पात्रदौर्बल्या

कोई पात्र तप से हैं और शास्त्रों का भी पात्र वह है जिसके उदर में शूद्र का अन्न नही है शूद्रके अन्न के रससे पुष्ट है अंग जिसका ऐसा नित्य पढने वाला होम और यज्ञ को भी करके उर्द्ध्वगति (वैकुंठ) को प्राप्त नही होता। उदर में टिके शूद्र के अन्न से जो द्विज मरे वह सूकर होता है अथवा शूद्र के कुल में जन्मता है शूद्र के अन्न को खाकर जो मैथुन करता है जिसकावहअन्न है उसी के वे पुत्र हैं और वह स्वर्ग में जाने योग्य नहीं है और जो वेद के पढने में युक्त योनि (जाति) का मित्र शांत स्वभाव चैतन्य (ब्रह्म) में स्थिति, पाप से डरे बहुत जाने स्त्री का पोषण करे धार्मिक हो और गौओं की रक्षा करे व्रतों से थका हो उसको पात्र कहते हैं कच्चे पात्र में रक्खे हुये जो दूध दही घी सहत हैं जैसे पात्र की दुर्बलता

न्त्यचपात्रेरसाश्चते एवंगांचहिरण्यंचवस्त्रमश्वं महींतिलां नू अविद्वान्प्रतिगृह्णहानोभस्मीभवतिदारुवत् नांगेननखैर्नवादित्रंकुर्यान्नचापांजलिनापिबेत् नपादेनपाणिना वाराजानमभिहन्यात् नजलेनजलं नेष्टकाभिःफलानि पातयेत् नफलेनफलं नकल्कपुटकोभवेत् नम्लेच्छभाषांशिक्षेत् अथाप्युदाहरंति नपाणिपादचपलोननेत्रच पलोभवेत् नचांगचपलोविप्रइतिशिष्टस्यगोचरःपारंप र्यागतोयेषांवेदःसपरिबृंहणाःतेशिष्टाब्राह्मणाःज्ञेयाश्रुति

से वे पर्वोक्त रस और वह पात्र नष्ट होजाते हैं इसी प्रकार जो मूर्ख गौ, सुवर्ण—वस्त्र, घोड़ा, पृथिवी, तिल इनको ग्रहण कर ता हैं वह काठके समान भस्म होजाता हैअंग और नखों से न वाजाबजावें और हाथ की अंजलिसे जल न पीवे औरपैर हाथों से राजा को न मारे और जल से जलको न मारै और ईंटों से फलों को न गिरावे कल्क (खलवा तेल) को दोनों में न धरै म्लेच्छों की भाषा को न सीखे इस विषय में ये वचन कहेहैं कि हाथ और पैर नेत्र और अंग इन को चपल न रक्खै यह शिष्टों का विषय है जिन ब्राह्मणों के यहां वृद्द समेत वेदपरंपरा से चला आया है वेद के प्रत्यक्ष करने वाले वे ब्राह्मण शिष्ट जानने और जो सत् (सज्जन) असत् को और वेद के पाठक और अपाठक को और सदाचारी और

प्रत्यक्षहेतवःयन्नसंतंनचासंतंनाश्रुतंनबहुश्रुतं नसुवृत्तं नदुर्वृत्तं वेदकश्चित्सब्राह्मणः सब्राह्मण इति

इतिवासिष्ठेषष्ठोऽध्यायः ६

चत्वारआश्रमाब्रह्मचारीगृहस्थवानप्रस्थपरिव्राजकास्तेषांवेदमधीत्यवेदौवावेदान्वाविशीर्णब्रह्मचर्योपनिक्षेप्तुमावसेत्ब्रह्मचार्याचार्यंपरिचरेत्आशरीरविमोक्षणात् आचार्येप्रस्तेऽग्निंपरिचरेत् विज्ञायतेहितवाग्निराचार्य इतिसंयतवाक्चतुर्थषष्ठाष्टमकालभोजीभैक्षमाचरेत् गुर्वधीनोजटिलःशिखाजटोवागुरुंगच्छंतमनुगच्छेत् आसी

सन्त को जो न जाने अर्थात् जो ब्रह्मज्ञानीहो वह ब्राह्मण है ब्राह्मण है ॥

इति वसिष्ठ स्मृतौ ६ अध्याय

ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ - संन्यास—ये चार आश्रम हैं तिन चारों में ब्रह्मचारी एक वेद वा दो वेदों को पढ़कर और नहीं नष्ट हुआ है ब्रह्मचर्य जिसका अपने देह को गुरु के निवेदन करने के लिये गुरु के यहां वसे और गुरु की सेवा शरीर छूटने तक करै और आचार्य के मरने पर अग्नि की सेवा करै क्योंकि शास्त्र से जाना है कि तेरा अग्नि आचार्य है वाणी को रोके और चौथे छटे आठवें काल में भोजन करै और भिक्षा मांगे—गुरु के आधीन रहे—जटा धारै वा शिखा को ही जटा समझ, गमन करते हुये गुरु के पीछे गमन करै और

नंचानुतिष्ठेत्शयानंचाशीनोपविशेत्आहूताध्यायीसर्वं भैक्ष्यंनिवेद्यतदनुज्ञयाभुंजीतखट्वाशयनदंतप्रक्षालनाभ्यंजनवर्जस्तिष्ठेत्अहनिरात्रावासीतत्रिःकृत्वाह्यु पेयादपः२

इतिवासिष्ठेसप्तमोध्यायः ७

गृहस्थोनिवीतक्रोधहर्षोगुरुणानुज्ञातःस्नात्वासमानार्षामस्पृष्टमैथुनांयवीयसींसदृशींभार्याविंदेत्पंचमींमातृवंधुभ्यःसप्तमींपितृवंधुभ्यःवैवाह्यामग्निमिंध्यात्सायमागतमतिथिंनावरुंध्यात्नास्यानश्नन्गृहेवसेत्यस्यनाश्नाति

बैठे पीछे बैठे सोने के पीछे सोवे—बुलाने पर पढ़े संपूर्ण भिक्षा को गुरु को देकर गुरु की आज्ञा से भोजन करै खाट पर सौना दांतों को धोना उबटना—इनको छोड़कर टिके दिन रात गुरु के यहां रहै और तीन बार जलों के पास जाय जलों के पास जाय ॥

इति वशिष्ठ स्मृतौ ७ अध्यायः

क्रोध और आनन्द से रहित गृहस्थी गुरु की आज्ञा से स्नान (जो ब्रह्मचर्य से गृहस्थ में आने के लिये विधि पूर्वक होता है) करके अन्य गोत्र की, जिसको मैथुन का स्पर्शन हुआ हो जो युवति हो और अपनी तुल्य हो माता के बंधुओं से पांचवी और पिता के बंधुओं से जो सांतवी हो ऐसी स्त्री को बिवाहे और बिवाह की अग्नि को प्रज्वलित करै—सायंकाल के समय आये अतिथि का अवरोध (निरादर) न करै—

वासार्थी ब्राह्मणो गृहमागतः सुकृतं तस्य यत्किंचित्सर्वमादा यग च्छति एकरात्रं तु निवसन्नतिथिर्ब्राह्मणः स्मृतः अनित्यं हि तिथिर्यस्मात्तस्मादतिथिरुच्यते नैकग्रामीणमतिथिविप्रं सांगतिकं तथा काले प्राप्ते अकाले वा नास्यानश्नन्गृहे वसेत् श्रद्धाशीलं स्पृहालुरलमग्न्याधेयायनाहिताग्निः स्यात् अलं च सोमपानायनासोमयाजी स्यात् युक्तः स्वाध्याये प्रज ननेयज्ञे च गृहेष्वभ्यागतप्रत्युत्थानासनशयनवाग्भिः सूनृ ताभिर्मानयेत् यथाशक्ति चान्नेन सर्वभूतानि गृहस्थ एव यज ते गृहस्थस्तप्यते तपश्च चतुर्णामाश्रमाणां तु गृहस्थस्तु वि

और गृहस्थी के घर में भोजन के बिना अतिथि न वसै - जिस गृहस्थी के घर में आया प्रयोजन वाला ब्राह्मण भोजन नहीं करता उसका जो कुछ पुण्य है उन सब को लेकर चला जाता है एक रात्र वसता हुआ ब्राह्मण अतिथि कहा है जिससे उस की तिथि अनित्य है तिससे उसे अतिथि कहा है एक ग्राम का और संग आया अतिथि नहीं होता समय पर वा असमय पर आवे परंतु गृहस्थी के घर में भोजन के बिना अतिथि न वसै— श्रद्धा में शील रक्खै स्पृहा (इच्छा) करै अग्नि होत्र के लिये समर्थ है इससे गृहस्थी अग्निहोत्र से हीन न हो सोम पीने को समर्थ है इससे सोम यज्ञ से हीन न हो—वेद पाठ प्रजनन (स्त्री का संग) यज्ञ इनमें युक्त रहै घर में आये हुये को उठना आसन शय्या- कोमल वाणी इनसे माने शक्ति के नु आसार

शिष्यते यथानदीनदाःसर्वेसमुद्रे यांतिसंस्थिति एवमा
श्रमिणःसर्वेगृहस्थेयांतिसंस्थिति यथामातरमाश्रित्यस
र्वेजीवंतिजंतवःएवंगृहस्थमाश्रित्यसर्वेजीवंतिभिक्षवःनि
त्योदकीनित्ययज्ञोपवीतीनित्यस्वाध्यायीपतितान्नवर्जी
ऋतौगच्छन्विधिवच्चजुह्वन्ब्राह्मणश्च्यवतेब्रह्मलोकात्
ब्रह्मलोक इति

इतिवासिष्ठे ष्टमोध्यायः ८

वानप्रस्थोजटिलश्चीराजिनवासाग्रामंच नविशेत्नफाल
कृष्टमधितिष्ठेत् अकृष्टंमूलफलंसञ्चिन्वीत ऊर्ध्वरेताक्ष

अन्न से गृहस्थी ही सब भूतों को यज्ञ करता है गृहस्थी ही तप
करता है चारों आश्रमों में गृहस्थी ही श्रेष्ठ है—जैसे संपूर्ण
नद और नदी समुद्र में टिकते हैं इसी प्रकार सब आश्रम
वाले गृहस्थ में टिकते हैं जैसे सब जीवमाता के आश्रय से
जीवते हैं इसी प्रकार सब भिक्षुक गृहस्थी के आश्रय से जीवते
हैं जो नित्य तर्पण करै नित्य यज्ञोपवीत को धारै नित्य पढ़ै
और पतित के अन्न को त्यागे ऋतु के समय स्त्री का संग करै
विधि से होम करै ऐसा ब्राह्मण ब्रह्मलोक से नहीं गिरता २॥

इति वशिष्ठ स्मृतौ ८ अध्यायः

वानप्रस्थ,जटाकोधारैचीर और मृगछाला वस्त्ररक्खे ग्राम
में प्रवेश न करै हल से जोत कर जो अन्न पैदा हो उसे नखाय
बिना जता अन्न अथवा मूल फल इनको इकट्ठा करै उर्द्ध्वरेता

माशयोमूलफलभैक्षेणाश्रमागतमतिथिमर्चयेत् दद्यादेव नप्रतिगृह्णीयात् त्रिषवणमुदकमुपस्पृशेत श्रावणकेनाग्निमाधायाहिताग्निः स्याद्वृक्षमूलिकः ऊर्ध्वंषड्भ्योमासेभ्यानग्निरनिकेतः दद्याद्देवपितृमनुष्येभ्यःसगच्छेत्स्वर्गमानंत्यमानंत्यम् इतिवासिष्ठेनवमोध्यायः ९

परिव्राजकःसर्वभूताभयदक्षिणांदत्वाप्रतिष्ठेत् अथाप्युदाहरंति अभयंसर्वभूतेभ्योदत्वाचरतियोद्विजः तस्यापि सर्वभूतेभ्योनभयंजातुविद्यते अभयसर्वभूतेभ्योदत्वायस्तु

(जिसका वीर्य न गिरे) रहै पृथ्वी पर सोवे मूल और फल की भिक्षा से आश्रम में आये अतिथि को पूजे दानदे—दानन ले त्रिकाल स्नान करै श्रावणी अग्न्याधानकर के अग्निहोत्री रहे वृक्षके मूलमेंवसै और छः महीने पीछे अग्नि और स्थान का त्याग दे और देवता पितर मनुष्य इनको अवश्य दे वह अनन्त स्वर्गको जाता है ॥ इति वशिष्ठ स्मृतौ ९ अध्यायः

संन्यासी सब प्राणियों को अभय देकर प्रस्थान करै इस विषयमें ये वचन कहेहैं कि सब भूतोंको अभय देकर जो द्विज गमन करता है उसको सब भूतों से कभी भी भय नहीं होता सब भूतों को अभय देकर जो निवृत्ति मार्ग में टिकता है वह अपने और जिससे प्रतिग्रह ले उसके पिछले और अगले सब पापों को नष्ट करता है एक अक्षर (ॐ) परब्रह्म और प्राणायाम परम तप है उपवास से भिक्षा का अन्न श्रेष्ठ है

निवर्तंते हंतिजातानजातांश्चप्रतिगृह्णातियस्यच एका क्षरंपरंब्रह्मप्राणायामःपरंतपः उपवासात्परंभैक्ष्यंदयादा नाद्विशिष्यतेमुंडाममस्वपरिग्रहःसप्तागाराण्यसंकल्पि तानिचरेत्भैक्ष्यंविधूमेसन्नमुसलेएकशाटीपरिवृतोजिनेन वागोप्रलूनैस्तृणौर्वैष्टितशरीरः स्थंडिलशाय्यनित्यं व सतिंवसेत्तथाग्रामांतेदेवगृहेशून्यागारेवृक्षमूलेवामनसा ज्ञानमधीयमानःनग्राम्यपशूनांसंदर्शनेविहरेत् अथाप्युदा हरंति अरंण्यनित्यस्यजितेंद्रियस्यसर्वेंद्रियप्रीतिनिवर्त

और दान से दया उत्तम है मुंड और ममता और परिग्रह रहित संन्यासी जिस समय धूम न रहै और मुशल का शब्द न हो उस समय अनियत सात घरों में से भिक्षा मांगे एक धोती से ढका हुआ अथवा मृगछाला गौ के बालोंसे जिसका शरीर छिपा हो ऐसा संन्यासी थल पर सोवे और अनित्य बसित (निवास) में बसे और तिसी प्रकार ग्राम के समीप देव मन्दिर शून्यघर वृक्ष के नीचे वसे और मनसे ज्ञान को पढ़ै और जहां ग्राम के पशु देखें वहां बिहार न करे इसमें यह वचन कहे हैं कि जो नित्य वन में रहै और जितेंद्रिय हो सब इन्द्रियों की प्रीति से रहित जो हो और आत्मा की चिंता में जिसका मन हो ऐसे उपेक्षक संन्यासी को अनावृत्ति (जन्म मरण का अभाव)ध्रुव है जिसके चिन्ह प्रकट न हो और आचरण प्रकट

कस्य अध्यात्मचिंतागतमानसस्यध्रुवाह्यनावृत्तिरुपेक्ष कस्य अव्यक्तलिंगोऽव्यक्ताचारः अनुन्मतउन्मत्तवेषः अथाप्युदाहरंति नशब्दशास्त्राभिरतस्यमोक्षोनचापिलोक ग्रहणेरतस्यनभोजनाच्छादनतत्परस्यनचापिरम्य वस थप्रियस्य नचोत्पातनिमित्ताभ्यांननक्षत्रांगविद्यया अनुशासनवादाभ्यांभिक्षांलिप्सेतकर्हिचित् अलाभेनविषादीस्याल्लाभंचैवनहर्षयेत् प्राणयात्रिकमात्रस्यान्मात्रासंग द्विनिर्गतःनकुट्यांनोदकेसंगेनचैलेनत्रिपुष्करे नागरेनासनेशेतेयःसवैमोक्षवित्तमः ब्राह्मणकुलेवा ऽलभे

हैं और जो उन्मत्त न हो और जिनका वेष उन्मन के समान हो इसमें भी बचन कहे हैं कि जो शब्द शास्त्र (व्याकरण) में रमे अथवा जगत् के संग्रह (उपदेश करना) में जो रमे और जो भोजन बस्त्र में हो और जिसको अच्छा घर प्यारा हो ऐसे सन्नयासी का मोक्ष नहीं होतो और किसी उत्पात वा निमित्त से और ज्योतिष की विद्या से और शिक्षा और बाद से कदाचित भी भिक्षा की इच्छा न करै और नमिलने पर क्रोध न करै और मिलने पर आनन्द न माने और जितने में प्राणों की यात्रा (तृप्ति) हो उतनी भिक्षा मांगे और बिषयों के संग से दूर रहे जो सन्यासी न कुटी में न जल में न संग में न बस्त्रों में न त्रिपुष्कर में न घर में न आसन में आसक्त है वह मोक्ष के ज्ञाताओं में उत्तम है अथवा जो

दभंजीतसायंमधुमांससर्पिःपरिवर्ज्यंयतीन्साधून्वागृहस्थः प्रीतेनचतर्प्येतग्रामेवावसेत अजिह्मःअशरणःनचेंद्रिय संयोगंकुर्वीत केनचित उपेक्षकः सर्वभूतानांहिंसानुग्रहप रिहारेणपैशून्यमत्सराभिमानाहंकाराश्रद्धानार्जवात्मस्तव परगर्हादम्भलोभमोहक्रोधविवर्जनंसर्वाश्रमिणांधर्मइष्टोय ज्ञोपवीत्युदककमंडलुहस्तः शुचिर्ब्राह्मणोवृषलान्नवर्जी नहीयतेब्रह्मलोकाद्ब्रह्मलोकात

इतिवासिष्ठे धर्मशास्त्रे दशमोऽध्यायः १०

ब्राह्मण के कुल में मिलें उसका सायंकाल भोजन करै और मीठा मांस घी इनका वर्ज दे गृहस्थी सन्यासी और साधुओं को प्रसन्न मनसे तृप्त करै अथवा ग्राम में वसें कपटी न हो शरण (घर) न रक्खै दुर्जन न हो इन्द्रियों का संयोग न करै हिंसा और अनुग्रह के परित्याग से सब भूतों की उपेक्षा कर और चुगल पन मत्सर (पराई बढाई को न सहना) अभिमान अहंकार अश्रद्धा कठोरपन मन का शोक निन्दा दंभ लोभ मोह क्रोध इनको वर्ज दे यह सब आश्रम वालों का इष्ट धर्म है कि यज्ञोपवीत रक्खै और जलका कमन्डलु हाथ में रक्खै शुद्ध रहै और ब्राह्मण शूद्र के अन्न को त्यागदे ऐसा ब्राह्मण ब्रह्मलोक से नहीं गिरता २

इति वसिष्ठस्मृतौ १० अध्याय

षट्कर्म्मा गृहदेवताभ्योबलिंहरेत् श्रोत्रियायान्नंदत्वाब्रह्म चारिणे चानंतरं पितृभ्योदद्यात्ततोऽतिथिंभोजयेत् स्वेष्टा यासमानुपूर्व्येणस्वगृह्याणांकुमारबालवृद्धतरुणप्रभृतीं स्ततोपरान्गृह्यान् श्वचांडालपतितवायसेभ्योभूमौनिर्वं पेच्छूद्रेभ्यउच्छिष्टंवादद्याच्छेषंयत्तोभुंजीत सर्वोपयोगेन पुनःपाकोयदिनिरुक्तेवैश्वदेवेऽतिथिरागच्छेद्विशषेणास्मा अन्नंकारयेद्द्विजातयेन्हिवैश्वानरप्रविशत्यतिथिर्ब्राह्मणो गृहं तस्मादपध्यानमन्यत्रवर्षाभ्यस्तांहिशान्तिजनाविदि

छः कर्मों को करता हुआ ब्राह्मण घर के देवताओं को बलि दे (बलिवैश्वदेव करे) और वेद पाठी वा ब्रह्मचारी को अन्न देकर पितरों को अन्न दे और फिर अतिथि को जिमावे अपने इष्ट और गृह के मनुष्यो को क्रम से कुवारे लड़के वृद्ध युवा -आदि को और फिर इतर घर के भृत्य आदि को जिमावे और फिर कुत्ते चांडाल पतित वायसों (कौआ) को भूमि पर बलि दे और शूद्रों को उच्छिष्ट दे और शेष अन्न को सावधानी भोजन करे—सब अन्नके उपभोग होनेपर फिर पाक कर—यदि वैश्वदेव की निवृत्ति पर अतिथि आजाय तो विशेष कर इसके लिये भोजन बनवावे क्योंकि जो ब्राह्मण अतिथि घर में आवेतो दुवारा अग्नि उत्पन्न होती है—और वर्षा के समय को छोड़कर अतिथि भोजन के पीछे उस घर में से चला जाय उसको शांति वाले जन जानते हैं—अतिथि को भोजन

भिरितिलंभोजयित्वोपासीततसीमान्तादनुव्रजेदनुजाता
द्वापरपक्षाऊर्ध्वंचतुर्थ्यापितृभ्योदद्यात् पूर्वेद्यु ब्राह्मणान्स
न्निपात्ययतीन्गृहस्थान्साधून्वापरिणतवयसोविकर्म
स्थान् श्रोत्रियान्शिष्यानन्तेवासिनःशिष्यानपिगुणवतो
भोजयेद्विवर्जयेन्नग्नशुक्लविधिश्यावदंतकुष्ठिकुनखिनर्जम् अ
थाप्युदाहरंति अथचेन्मंत्रविद्युक्तःशरीरैःपङ्क्तिदूषणैः
अदूष्यंतंयमः प्राहपङ्क्तिपावनएवसः श्राद्धेनोद्वासनीया
निउच्छिष्टान्यादिनक्षयात् च्योतन्तिहियाधारास्ताःपिवं
त्यकृतोदकाःउच्छिष्टेनप्रपुष्टास्तेयावन्नास्तमितोरविः क्षी

क्षरा कर सेवा करे और ग्रामकी सीमातक उसके पीछे चले अथवा उसकी आज्ञा पर्यंत चले—कृष्ण पक्ष में चौथ १ के पीछे पितरों को द—पहिले दिन ब्राह्मणों को बोलकर संन्यासी गृहस्थी—साधु वृद्ध—शुद्ध कर्म करने वाले वेद पाठी शिष्य और पासके शिष्य और गुणी इनको जिमावे—और जिसके सफेद दांत हों—कोढ़ी—जिसके काले दांत हों—जो कुष्ठी हो जिसके नख बुरे हों इनको त्यागदे—इसमें ये वचन कहे हैं कि जो मंत्रों का ज्ञाता ब्राह्मण शरीर के वा पंक्ति के दूषणों से युक्त भी हो तो यम ऋषि ने उसे दूषण के अयोग्य कहाहै क्योंकि वह पंक्ति को पवित्र करने वाला है—श्राद्ध में दिन छिप ने तक उच्छिष्ट पदार्थों को फेंके आकाश से जो जलकी धारा पड़ती हैं उनको वे पीते हैं जिनको उदक दान दिया हो

स्थाररततेषामत्यक्षयः संचरभागिनः प्राक्संस्कारप्रमी तानांप्रवेशनमितिश्रुतिः भागधेयंमनुःप्राहउच्छिष्टोच्छे षणोउभे उच्छेषणंभूमिगतंविकिरेल्लेपसोदकं असुप्रेतेषुवि सृजेदप्रजानामनायुषां॥ उभयोःशाखयोर्मुक्तंपितृभ्योन्न निवेदनम् तदन्तरंप्रतीक्षन्तेह्यसुरादुष्टचेतसः तस्मादशून्य हस्तेनकुर्यादन्नमुपागतं भाजनंवासमालभ्यतिष्ठतीच्छेष णोउभे॥ द्वौदैवेपितृकृत्येत्रीनेकैकमुभयत्रवा॥ भोजयेत् सुसमृद्धोपिनप्रसज्येतविस्तरे सत्क्रियांदेशकालौचशौचं

और जब तक सूर्य नहीं छिपता तब तक वे उच्छिष्ट से, पुष्ट रहते हैं, फिर वे संचर (उच्छिष्ट) भागियों को दे दूध की अक्षय भाग होजाती है संस्कार से पहिले जो मर गये हैं उनका प्रवेश भू में होता है यह वेद में कहा है—और उनके भाग मनुने उच्छिष्ट और उच्छेषण दोनों कहे हैं जो भूमि पर जल सहित विकिर का लेप उसे उच्छेषण कहते हैं—संतान के वा अवस्था के बिना जो मरे हों उनको विकिर दे—दोनों शाखा को छोड़ कर जुदे हाथों से जो पितरों को अन्न देता है उस अन्न को दुष्ट चित्त असुर बाट देखते हैं तिससे, शून्य हाथ से अन्न का न परसे अथवा भोजन के पास बैठ कर दोनों उच्छेषण के समय जो टिक कर जो अन्न दे वह भी असुरों का है विश्वे देवाओं के काम में दो और पितरों के काम में तीन अथवा दोनों जगे एकर ब्राह्मण को बड़ा धनी भी जिमावे और विस्त

ब्राह्मणसम्पदः पंचैतान्विस्तरोहंतितस्मात्तं परिवर्जयेत्
अपिवाभोजयेदेकंब्राह्मणंवेदपारगम् शुभशीलोपसंपन्नं
सर्वलक्षणवर्जितं यद्येकंभोजयेच्छ्राद्धं दैवंतत्रकथंभवेत्
अन्नं पात्रेसमुद्धृत्यसर्वस्यप्रकृतस्यतुदेवतायतनेकृत्वाततः
श्राद्धं प्रवर्त्तते प्रास्येदग्नौतदन्नंतुदद्याद्वाब्रह्मचारिणे या
वदुष्णंभवत्यन्नंयावदश्नंतिवाग्यताः तावद्धिपितरोश्नं
तियावन्नोक्ताहविर्गुणाः हविर्गुणानवक्तव्याःपितरोभ्य
वतर्पिताः पितृभिस्तर्पितैःपश्चात्वक्तव्यंशोभनंहविः नि
युक्तस्तुयदाश्राद्धं दैवेतंतुसमुत्सृजेत् यावंतिपशुरोमाणि

में न फंसे और सत्कर्म—देश—समय—शौच—और ब्राह्मण की संपत्ति इन पांचों को बिस्तार नष्ट करता है जिससे बिस्तार को वर्ज दे अथवा एक वेद के पार गामी ब्राह्मण को जिमावे जो शुभ शीलवान् हो और सब कुलक्षणों से हीन हो और यदि श्राद्ध में एक ब्राह्मण को जिमावे तो वहां देव कैसे हो सब प्रकृत (बना हुआ) अन्न एक पात्र में करके और देवता (विश्वा देवाओं) के स्थान में रख कर फिर श्राद्ध का आरंभ होता है और उस अन्न को अग्नि में गेर दे वा ब्रह्मचारी को देदे—इतने अन्न उष्ण रहता है तब तक पितर मौन धारे खाते हैं और जब तक अन्न के गुण न कहे हों तब तक ही पितर खाते हैं—अन्न के गुण नहीं कहने और पितरों को तृप्त करने पितरों के तृप्त होने पर अन्न की प्रशंसा करनी श्राद्धमें नियुक्त होकर यदि देव

तावन्नरकमृच्छति त्रीणिश्राद्धे पवित्राणिदौहित्रःकुतुप स्तिलाः त्रीणिचान्नंप्रशंसंतिशौचमक्रोधमत्वरां दिवस स्याष्टमेभागेमंदीभवतिभास्करः सकालःकुतुपोनामपितॄ णांदत्तमक्षयंश्राद्धं दत्वाचभुक्त्वाचमैथुनंयोधिगच्छति भ वंतिपितरस्तस्यतन्मासंरेतसोभुजः यतस्ततोजायतेदद त्वाभुक्त्वाचपैतृकंनसविद्यामवाप्नोतिक्षीणायुश्चैवजाय ते पितापितामहश्चैवतथैवप्रपितामहः उपासतेसुतंजातं शकुन्ताइवपिप्पलं मधुमांसैश्चशाकैश्चपयसापायसेन

तार्थों के श्राद्ध को छोड़देतो जितने पशुके रोम हों उतने काल नरक को भोगे श्राद्ध में तीन वस्तु पवित्र हैं कि दौहित्र (न वासा) कुतपकाल— और तिल और इन तीन से अन्न की प्रशं सा है कि शौच क्रोध का अभाव और शीघ्रता का त्याग— दिन के आठवें भाग में जब सूर्य मन्द होता है वह काल कुतुप है उसमें पितरों को दिया अक्षय होता है श्राद्ध को वा भोजन को करके जो मैथुन करता है उसके पितर उसमास भर वीर्य .ो खाते हैं और वह मनुष्य श्राद्ध को देकर वा खाकर जहांतहां पैदा होता है और विद्या को प्राप्त नहीं होता और क्षीण आयु वाला होता है—पिता बाबा पड़बाबा ये तीनों पैदा हुये पुत्र की उपासना इस प्रकार करते हैं जैसे पक्षी पिपल (पंडे) को मीठा—मास— शाक—दूध खीर इनमें जब यह पुत्र हमको

वा अधुनादारथातिश्राद्धं वर्षासु मघासु च संतानवर्द्धनं पुत्रं तृप्यन्तं पितृकर्मणि देवब्राह्मणसम्पन्नमभिनन्दंति पूर्वजाः नंदंति पितरस्तस्य सुवृष्टैरिव कर्षकाः यद्गयास्थो ददात्यन्नं पितरस्तेन पुत्रिणः श्रावण्याग्रहायण्योश्चाष्टकायां च पितृभ्यो दद्याद्द्रव्यदेशब्राह्मणसन्निधाने वा कालनियमोवश्यं ब्राह्मणोऽग्नीनादधीत दर्शपूर्णमासाग्रायणेष्टिचातुर्मास्यपशुसोमैश्च यजेत नैयमिकं ह्येतदृणं संस्तुतं च विज्ञायते हि त्रिभिरृणैः ऋणवान् ब्राह्मणो जायते यज्ञे

वर्षा और मघाओं में श्राद्ध देना संतान के बढाने वाले और पितरों के कर्म में तृप्त और देवता और ब्राह्मणों से संपन्न (श्रद्धालु) पुत्र को पितर प्रसन्न करते हैं—और जो गया में जाकर अन्न देता है उसके पितर इस प्रकार आनन्द होते हैं जैसे अच्छी वर्षा से किसान और उसीसे पितर पुत्रवाले होते हैं श्रावणी आग्रहायणी (अगहन सुदि १५)—अष्टका इनमें पितरों को दे अथवा जब द्रव्य देश ब्राह्मण इनका समागम हो काल का नियम है कि ब्राह्मण अग्नि का आधान अवश्य करे दर्श पूर्णिमास—आग्रहायण यज्ञ—चातुर्मास्य—पशु—सोम इन यज्ञों को करे क्योंकि यह ऋण नियम से है और शास्त्र से जाना है कि तीन ऋणों से ऋणवाला ब्राह्मण पैदा होता है कि यज्ञ से देवताओं से प्रजा से पितरों से ब्रह्मचर्य से ऋषियों से

नदेवेभ्यःप्रजयापितृभ्योब्रह्मचर्येणऋषिभ्यःइत्येषवा अनृणोयज्वायः पुत्रीब्रह्मचर्यवानितिगर्भाष्टमेषुब्राह्मणमुपनयीतगर्भैकादशेषुराजन्यंगर्भ द्वादशेषुवैश्यंपालाशोदंडोवैल्वोवाब्राह्मणस्यनैयग्रोधः क्षत्रियस्यवाऔदुंबरोवावैश्यस्यकृष्णाजिनमुत्तरीयंब्राह्मणस्यरौरवंक्षत्रियस्यगव्यंवस्ताजिनंवैश्यस्यशुक्लमाहतंवासोब्राह्मणस्य माञ्जिष्ठं क्षत्रियस्यहारिद्रं कौशेयंवैश्यस्यसर्वेषांवातातन्तवमरक्तंभवत्पूर्वाब्राह्मणोभिक्षांयाचेत भवन्मध्यंरा

और यह ब्राह्मण अनृण [ऋण हीन] होता है कि जो यज्ञ करे पुत्रवान् हो और ब्रह्मचारी हो गर्भ से आठवें वर्ष ब्राह्मण का गर्भ से ग्यारवे गर्भ क्षत्री का और बारवें गर्भ वैश्य का यज्ञोपवीत करै ढाक वा बेल का दंड ब्राह्मण का—वड़ का क्षत्रिय का और गूलर का वैश्य का होता है काली मृगछाला का दुपट्टा ब्राह्मणका रुरुमृग की चर्म का क्षत्रिय का गौ की चर्म का वैश्य का होता है सफेद नवीन वस्त्र ब्राह्मण का मजीठ से रंगा क्षत्री का हल्दी से रंगा रेशम का वैश्य का होता है अथवा तीनों का बिना रंगा सूत का होता है भवत् शब्द पहिले कहकर (भवति भिक्षां देहि) ब्राह्मण भिक्षा मांगे भवत् शब्द को मध्य में कहकर (भिक्षां भवति देहि) क्षत्री और भवत् शब्द को अंत में कह कर [भिक्षां देहि भवति] वैश्य, सोलह वर्ष तक

जन्धोभवदत्यावैश्यस्यश्चाषोडशाःद्ब्राह्मणस्यानतीतः कालश्चाद्वाविंशःक्षत्रियस्याचतुर्विंशःवैश्यस्यातऊर्ध्वंप तितसावित्रीकाभवंतिनैनानुपनयेन्नाध्यापयेन्नयाजये न्नैभिर्विवाहयेयुःपतितसावित्रीकउद्दालकव्रतंचरेत्द्वौमा सौकेनवर्तयेन्मासंमाक्षिकेनाष्टरात्रं घृतेनषडरात्रमयाचि तंत्रिरात्रमब्भक्षोहोरात्रमेवोपवासम् अश्वमेधावभृथंग च्छेद्व्रात्यस्तोमेनवायजेत

इतिवाशिष्ठे धर्मशास्त्रएकादशोध्यायः ११

अथातःस्नातकव्रतानिसनकिंचिदयाचेतान्यत्रतंराजांतेवा

गायत्री का समय ब्राह्मण का नहीं जाता—बाईस तक क्षत्री का और चौबीस तक वैश्य का इसके पीछे ये तीनों गायत्री से पतित होजाते हैं—इनको यज्ञोपवीत न दे, न पढावे न यज्ञ करावे और न इनके संग विवाह संबंध करै जो गायत्री से पतित हो वह उद्दालक व्रत करै कि दो महीने जौ के आटे से निर्वाह करै एक महीना सहत से आठ रात घीसे—छः रात अयाचित (जो विना मांगे मिले) से वर्ते और तीनरात जल पीवे और अहोरात्र उपवास करै अथवा अश्वमेध के अवभृथ में जाय अथवा व्रात्यस्तोम यज्ञ करै ॥

इति वसिष्ठ स्मृतौ ११ अध्याय

इसके अनन्तर स्नातक (गृहस्थी) के व्रत कहते हैं वह विना दिये राजा वा शिष्यों से कुछ न मांगे क्षुधा से यक्त

स्त्रिभ्यः क्षुधापरीतस्तुकिंचिदेवयाचेतकृतमकृतंवाक्षेत्रंगा मजाविकसन्ततंहिरण्यंधान्यमन्नंवानतुस्नातकःक्षुधावसी देदित्युपदेशोननद्यांसहसासंविशेन्नरजस्वलायामयोग्या यांनकुलंकुलंस्याद्वत्सतंतीं विततान्नातिक्रामेन्नोद्य न्तमादित्यं पश्येन्नादित्यन्तपन्तंनारतंमूत्रपुरीषेकुर्यान्ननिष्ठीवेतपरिवे ष्टितशिराभूमिमयज्ञियैस्तृणैरन्तर्धायमूत्रपुरीषेकुर्याद्उद ङ्मुखश्चाहनिनक्तंदक्षिणामुखःसंध्यामासीतोत्तरामुदाहरं तिस्नातकानांतुनित्यंस्यादन्तर्वासस्तथोत्तरंयज्ञोपवीतेद्वे

तो कुछ कि्या वा न किया अन्न वा खेत गौ—बकरी भेंटु सोना—धान—अन्न—मांगले यह उपदेश है कि स्नातक क्षुधा मे दुःखो न रहे और नदी में शीघ्र प्रवेश न करे—रज स्वला और अयोग्य स्त्री का संग न करे—फैली बछड़े की रज्जु को न लंघे उदय होते और मध्यान्ह में तपते और अस्त होते सूर्य को न देखै और न उक्त समय मैं मल मूत्र करे और थूके—और शिर को लपेट कर और जो तृण यज्ञ के न हों उन से पृथिवी को ढक कर दिन में और संध्या के समय उत्तर को और रात्रि में दक्षिण को मुख करके मल मूत्र करे इसमें ये वचन कहे हैं कि स्नातकों का नित्य अंतर्वास (धोती) और उत्तर (दुपट्टा) है दो यज्ञोपवीत—लाठी और जल सहित कमंडलु होता है—जल—हाथ और काष्ठ में कमंडलु को शुद्ध

यष्टिःसोदकश्चकमंडलुः अप्सुपाणौचकाष्ठेचकथितंपावकं शुचितस्मादुदकपाणिभ्यांपरिमृज्यात्कमंडलुं पर्यग्निक रणंह्ये तन्मनुराहप्रजापतिः कृत्वाचावश्यकार्याणि आ चामेच्छौचवित्ततइतिप्राङ्मुखोऽन्नानिभुंजीत तूष्णींसांगु ष्ठं कृत्स्नग्रासंग्रसेतनचमुखशब्दंकुर्यादृतुकालाभिगामीस्या त् पर्ववर्जंस्वदारेवातीर्थमुपेयादथाप्युदाहरंति यस्तुपा णिगृहीतायाआस्येकुर्वीतमैथुनं भवंतिपितरस्तस्यतन्मा संरेतसोभुजयास्यादनतिचारेणरतिसाधर्म्यसंश्रिताअपि चपावकोऽपिज्ञायतेअद्यश्वोवाविजनिष्यमाणाःपतिभिः

कहा है तिससे जल और हाथों से कमंडलु को मांजे यह मनु ने पर्यग्नि करण कहा है फिर आवश्यक कार्यों को करके शौच का ज्ञाता आचमन करै—पूर्वको मुख करके अन्नों को खाय और मौन धार अंगूठ सहित अंगुलियों से छोटा ग्रास खावे और मुख का शब्द न करै—और ऋतुकाल में स्त्री का संग करै और पर्व को वर्ज दे और अपनी स्त्री का ही संग करै—और तीर्थ यात्रा करै इसमें ये वचन कहे हैं कि जो मनुष्य अपनी स्त्री के मुख में मैथुन करै उसके पितर उस मास भर वीर्य को खाते हैं और जो व्यभिचार को छोड़ कर रति के धर्म में टिकता है वह पवित्र जाना है जो स्त्री आज वाकल प्रसूति होने वाली हों वे भी पतियों के संग क्रीड़ा करैं यह वर स्त्रियों को इन्द्र का दिया है तिससे वृक्ष पर न चढे कूप पर न बैठे

सहदशेधंतङ्कतिस्रीणामिंद्रदत्तोवरः तन्नवृक्षमारोहेन्नकू पमवरोहेन्नाग्निंमुखेनोपधमेन्नाग्निं ब्राह्मणंचान्तरेण व्यापेयान्नाग्निब्राह्मणयोरनुज्ञाप्यवाभार्य्ययासहनाश्नी यादवीर्य्यवदपत्यंभवतीतिवाजसनेयकेविज्ञायतेनेन्द्रधनु र्नाम्नानिर्दिशेन्मणिधनुरितिब्रूयात् पालाशमासनंपादु केदंतधावनमितिवर्जयेत् नोत्संगेभक्षयेदधोनभुंजीतवै णवं,दंडंधारयेद्रुक्मकुंडलेचनवहिर्मालांधारयेदन्यत्ररु क्ममय्याःसभासमवायांश्चवर्जयेत् अथाप्युदाहरन्ति अ प्रामाण्यंचवेदानामार्षाणांचैवदर्शनंअव्यवस्थाचसर्वत्रए तन्नाशनमात्मनइति नाहूतोयज्ञंगच्छेद्यदिव्रजेदधि

मुख से अग्नि को न जलावे अग्नि और ब्राह्मण के बीच को न निकसे ब्राह्मण और अग्नि की आज्ञा के बिना लिये स्त्री के संग भोजन न करै क्योंकि बलहीन संतान होती है वाजसने यीग्रन्थ में कहाहै कि इन्द्र धनुष को नाम से न कहै किन्तु मणि धनु नाम से बोले और ढाक का आसन खडाऊं दंतोन इनको वर्जे दे गोदी में रख कर अन्न को न खाय वांस का दंड और सोने के कुंडल धारै और सोने की माला को छोड़ कर माला बहिः (प्रत्यक्ष) न धारै और सभा के समूहों को वर्जे दे इस में ये बचन कहे है कि वेदों का प्रमाण न मानना और संपूर्ण ऋषियों के शास्त्रोंमें अव्यवस्था (अमर्याद) समझनी यही आत्मा का नष्ट करना है विना बुलाये यज्ञ में न जाय

वृक्षसूर्यमध्वानंनप्रतिपद्यते नावंचसांशयिकींबाहुभ्यांन नदींतरेदुत्थायापररात्रमधीत्यनपुनःप्रतिसंविशेत्प्राजापत्येमुहूर्त्तेब्राह्मणःस्वनियमाननुत्तिष्ठेदनुतिष्ठेदिति

इतिवाशिष्ठेधर्मशास्त्रेद्वादशोध्यायः १२

अथातः स्वाध्यायश्चोपाकर्म्मश्रावण्यांपौर्णमास्यांप्रौष्ठपद्यांवाग्निमुपसमाधायकृताधानोजुहोतिदेवेभ्यश्छन्दोभ्यश्चेतिऽब्राह्मणान्स्वस्तिवाच्यदधिप्राश्यततउपांशुकुर्वीतअर्धपंचमासानर्द्धषष्ठानतऊर्ध्वंशुक्लपक्षेष्वधीयीत

यदि जाय तो वृक्षों के ऊपर सूर्य मार्ग को नहीं जाता जिस में डूबने का संदेह हो ऐसी नाव में न बैठे और भुजाओं से नदी कोन तरे और पिछली रात्रि में उठकर और पढ़ कर फिर न सोवे और ब्राह्म मुहूर्त में उठ कर अपने नियमों (संध्या आदि) को करै ॥

इति वशिष्ठ स्मृतौ १२ अध्यायः

इसके अनन्तर स्वाधयाय (वेद पढ़ना) वर्णन करते हैं श्रावण वा भादवे की पूर्णिमा को उपा कर्म करै कि अग्नि को समीप रखकर किया है अग्नि का आधान जिसने ऐसा द्विज देवता और छंदों (वेदों) के निमित्त होम करै ब्राह्मणों से स्वस्ति वाचन पढ़वाकर और दधि खाकर साढ़ पांच वा साढ़े छः महीने तक जप करै इसके पीछे शुक्ल पक्ष में पढ़े और वेदों के अंगों को तो इच्छा के अनुसार (कृष्ण पक्ष में) पढ़े और

कामंतुवेदांगानितस्यानध्यायाःसंध्यास्तमितेस्युस्तत्रशवे दिवाकीर्यैंनगरेषुकामंगोमयपर्युपितेपरिलिखितेवाश्मशानांतेश यानस्यश्राद्धिकस्यमानवंचात्रश्लोकमुदाहरन्ति, फलान्यापस्तिलान्भक्ष्यमथान्यच्छ्राद्धिकंभवेत्प्रतिगृह्याप्यनध्यायःपाण्यास्याब्राह्मणाःस्मृताइतिधावतःपूतिगंधिप्रसृतेरितवृक्षमारूढस्यनाविसेनायांचभुक्त्वाचार्धघ्राणेबाणशब्देचतुर्दश्याममावास्यायामष्टम्यामष्ठकासु प्रसारितपादोपस्थस्योपाश्रितस्यगुरुसमीपेमिथुनव्यपे

संध्या और सूर्य के अस्त समय पर उनको अनध्याय होतो है और मुर्दोंवाद्दिवाकीर्ति (क्षौर] में अनध्याय है और नगरों (सहर) में पथचढ़ पढ़े गोबरस लिपावा लिखा हो और जो श्मशान के समीप सोवे और जिसने श्राद्ध किया हो उसको भी अनध्याय है इसमें मनु के श्लोक कहते हैं कि फल जल तिल और जो श्राद्ध को इतर वस्त हों उनका प्रतिग्रह ले करभी अनध्याय होतीहै क्योंकिब्राह्मणोंका हाथ ही मुख कहाहै दोड़ने के समय दुर्गंधि फैली हो अन्य के वृक्ष पर चढा हो नवका में सेना में भोजन करके अर्ध के सूंघने पर बाण का शब्द होने पर चौदस मावस अष्टमी अष्टका पैर फैला कर लिंग इन्द्रियका स्पर्श किये मैथुन कियेपीछे और मैथुनके वस्त्रों को बिना त्यागे ग्राम के समीप—वमन किये (पीछे मलमूत्र

तायांवाससामिथुनव्यपेतेन। निर्मुक्तेनग्रामांतेछर्दितस्यमू त्रितस्योच्चरितस्ययजुषांचसाम्नःशब्देव। जीर्णेनिर्घातभू मौचनचंद्रसूर्योपरागेषु दिङ्नादपर्वतनादकंपप्रपातेषूप लरुधिरपांशुवर्षेरकालिकंउल्काविद्युत्राज्योतिषमपत्वां कालिकंवा आचार्येचप्रेतेत्रिरात्रमाचार्यपुत्रशिष्यभार्या स्वहोरात्रंऋत्विग्योनिसंबंधेषुचगुरोःपादोपसंग्रहणंकार्यं ऋत्विक्श्वशुरपितृव्यमातुलानूवरवयसःप्रत्युत्थायाभि वदेयचैवपादग्राह्यास्तेषांभार्यागुरोश्चमातापितरौयोवि

त्याग कर जब सायंकाल के समय यजुर्वेद का शब्द मंत्र प्रतीत हो जहां बिजली पड़ी हो उस भूमि पर और चन्द्रमा और सूर्य के ग्रहणमें दिशाओं के शब्दमें पर्वतके शब्द में भूकंप में ओले रुधिर—धूल इनको वर्षामें अकालका अनध्यायहोता है अथवा बिना समय वज्र बिजली तारोंका टूटना इनमें भी कालिकअनध्याय होताहै आचार्य केमरे पर तीनरातआचार्य का पुत्र शिष्य वा स्त्री इनके और ऋत्विज योनि सम्बन्ध [नर तेदार] इनके मरे पर अहोरात्र का अनध्याय होता है गुरु के पैरों को पकड़े और ऋत्विज श्वशुर वा चाचा मांमा और अवस्था में बड़े और जिनका पैर पकड़ने योग्य हैं उनकी स्त्री और गुरु के माता पिता इनको उठ कर नमस्कार करे जो नमस्कार करना जाने वह अयमहंभो (भो गुरु यह मैं) ऐसे

ध्यादभिवन्दितुमहमयंभोरितिब्रूयाद्यश्चनविद्यात् प्रत्य
भिवादेनाभिवदेत् पतितःपितापरित्याज्योमातातुपुत्रेन
पतति अथाप्युदाहरन्ति उपाध्यायाद्दशाचार्य आचार्या
णांशतंपितापितुर्द्दशशतंमातागौरवेणातिरिच्यते भार्याः
पुत्राश्चशिष्याश्चसंसृष्टाःपापकर्मभिःपरिभाष्यपरित्या
ज्याःपतितोयोऽन्यथाभवेत् ऋत्विगाचार्यावयाजकानध्या
पकौहेयावनूयत्रहानातुपतितोनान्यत्रपतितोभवतीत्याहु
रनूयत्रस्त्रियाःसाहिपरगामितातदिभनूनामक्षुणामुपेया
त्गुरोगुरौसन्निसितेगुरुवत्वृत्तिरिष्यतेगुरुवद्गुरुपुत्र

कहे और जो ऐसे कहना न जाने उसे आशीर्वाद न दे पतित पिता को तो त्यागदे और पुत्र के लिये माता पतित नहीं होती इसमें यह बचन कहे हैं कि उपाध्याय (पढाने वाला) से दश गुणा आचार्य [जो पढाकर यज्ञोपवीत दें] है और आचार्य से दश गुना पिता है और पिता से सहस्र गुनी माता गौरव में अधिक है स्त्री पुत्र और शिष्य इनको यदि पाप कर्मियों का संग होजाय तो निंदित वचन (हे दुष्ट !) कह कर त्याग देने जो न त्यागे तो पतित होता है यदि ऋत्विक् यज्ञ न करावे और आचार्य न पढावे तो दोनों को त्याग दे न त्यागे तो पतित होता है और कोई कहते हैं कि पतित नहीं होता अर्थात स्त्री को छोड़ कर स्त्री पतित होतीहै जो स्त्री पर पुरुष के संग गमन करे तो उससे दूसरी नवीन स्त्री के संग बिवाह करे गुरु का गुरु सम

सयवर्तितव्यमितिश्रुतिःशास्त्रंवस्त्रंतथान्नानिप्रतिग्राह्याण्
णिब्राह्मणस्यविद्याविजयजःसंबंधः कर्मचमान्यंपूर्वःपू
र्वोगरीयान्स्थविरबालातुरभारिकचक्रवतांपंथासमागमे
परंस्मैदेयोराजस्नातकयोःसमागमेराज्ञास्नातकायदेयःस
र्वैरेववाउच्चतमायत्तणभूम्यग्न्युदकवाक्सूनृतानसूयाः
सप्तगृहेनोच्छिद्यन्तेकदाचनकदाचनेति

इतिवाशिष्ठेधर्मशास्त्रे त्रयोदशोध्यायः १३

अथातोभोज्याभोज्यंचवर्णयिष्यामः चिकित्सकमृगयुपुं

प में होय तो उसके संग भी गुरु के समान आचरण करै और गुरु के पत्र के संग भी गुरु के समान बर्ताव करै यह वेद में कहा है शास्त्र वस्त्र और अन्न ये ब्राह्मण के ग्रहण करने विद्या विनय सम्बन्ध कर्म ये चारों मानने के योग्य हैं इनमें पहिला२ श्रेष्ठ है वृद्ध बालक रोगी भारवाला रथ वाला इनके समागममें एक दूसरे को मार्ग छोड़दे राजा और ब्रह्मचारीके समागम मेंराजा ब्रह्मचारी को मार्ग छोड़दे अथवा सब अपने से बड़े को मार्गछोड़ दे और तृण भूमि अग्नि जल मीठी वाणी—सत्य निन्दा का त्याग ये सात सज्जनों के घर में से कभी भी नष्टनहीं होते ॥

इति वशिष्ठ स्मृतौ १३ अध्याय

इसके अनंतर भक्षणके योग्य और अयोग्य वर्णन करतेहैं वैद्य—व्याध व्यभिचारिणी स्त्री —जो दंडसे पशुओंको मारे

श्चलीदंडिकस्तेनाभिशस्तषंडपतितानामभोज्यंकदर्य्यै क्षितवद्धातुरसोमविक्रयीतक्षकरजकशौंडिकसूचकवार्द्धुषि कचर्मविकृतानांशूद्रस्यचायज्ञस्योपयज्ञेयश्चोपपतिंमन्य तेयश्चगृहोतवद्धं तुर्यश्चवधार्हंनोपहन्यात् कौबंधमोक्षौ इतिचाभिक्रुश्येतुगणान्नं गणिकान्नमथाप्युहरंन्तिनाश्नं तिश्वपतेर्देवानाश्नं तिवृषलीपतेः भार्याजितस्यनाश्नं ति यस्यचोपपतिर्गृहेइति एधोदकसवत्सकुशलाभ्युद्यतपा नांवसथसफरिप्रियंगुस्तरजमधुमांसानिनैतेषांप्रतिगृणा

चोर जिसको शापलगे—नपुंसक—पतित इनका अन्न खाने के अयोग्य है—कदर्य का देखा—बद्ध (कैदी) रोगी सोमका वेचने हारा—वढई—धोवी—शौंडिक—(कराल)—चुगल—व्याज लेने वाला—चमार—यज्ञके अनधिकारी शूद्रका यज्ञमें और जो दूस ए स्वामीको माने और जो पकडने में हेतहो और जो मरने के योग्यको न मारे और जो यह कहे कि वंधमोक्ष क्या है—गण (समुदाय) का अन्न—और वेश्याका अन्न—अभोज्य हैं इसमें ये वचन कहे हैं—कुत्तों के स्वामी और शूद्री का पति और स्त्री के जो वसमें हो—और जिसके घरमें जारहता हो इनके यहां देवता नहीं खाते और इनके कि काष्ठ जल वछडा—गौ कुशल में दिया पान घर मत्स्य—कांगनी—अभ्र—सहत—और मांस ये ग्रहण नहीं करने—इसमें ये वचनहैं कि गुरुके लिये स्त्रीको विवाहै और देवता और अतिथियों का पूजन जो करै वह सव

हीयादथाप्युदाहरन्तिगुर्वर्थंदारमुज्जिहीषन्नर्चिष्यन्देवतातिथीन् सर्वतःप्रतिगृह्णीयान्नतृप्येत्स्वयंततइति नमृगयोरिषुचारिणःपरिवर्ज्यमन्नं विज्ञायतेह्यगस्त्योवर्षसाहस्त्रिकेसत्रेमृगयांचचारतस्यासंस्तुरसमयाःपुरोडाशाः मृगपक्षिणांप्रशस्तानामपिह्यन्नंप्राजापत्यश्लोकानुदाहरन्तिउद्यतामाहृतांभिक्षांपुरस्तादप्रचोदितांभोज्यांप्रजापतिर्मेनेअपिदुष्कृतकारिणः श्रद्दधानैर्नभोक्तव्यंचारस्यापिविशेषतः नत्वेववहुधातस्ययावानतहताभवेत् नतस्यपितरोऽश्नन्तिदशवर्षाणिपंचच नचहव्यंवहत्यग्निर्यस्ता

में प्रतिग्रह लेले और आप प्रतिग्रह से तृप्त न माने--वाण लेकर विचरने वाले व्याधका अन्न वर्जित शास्त्रसे नहीं जाना जाता क्योंकि अगस्त्यऋषि सहस्त्र वर्षके यज्ञमें मृगया करते भये उसके पुरोडाश रसवाले हुये मृग और पक्षी और जो प्रशस्त (श्रेष्ठ) हैं उनका भी अन्न भोज्य है इसमें प्रजापतिके श्लोक कहते हैं कि उद्यत (स्वयं दई) और लौ और पहिले जिसकी सूचना न की हो ऐसी दुष्कृत कर्म करने वालेकी भी भिक्षा प्रजापतिने भोज्य मानी है—श्रद्धा वाला मनुष्य विशेषकर चोरका अन्न न खाय और जो भिक्षा चोरीकी नहीं हो उसको बहुधा न खाय अर्थात् एक वार खानेमें दोष नहीं—और जो पूर्वोक्त चोरीकी भिक्षाका अपमान करता है उसके यहां पंद्रह वर्ष तक पितर नहीं खाते और अग्नि हविः (साकल्य) को नहीं लेती—और

गस्यचमन्यते चिकित्सकस्यमृगयोःशिल्पहस्तस्यपाशिनः षंढस्यकुलटायाश्चउद्यतापिनगृह्यतइति उच्छिष्टमगुरोरभोज्यंस्वमुच्छिष्ट मुच्छिष्टोपहतंचयदशनंकेशकीटोपहतंच कामंतुकेशकीटानुद्धत्याद्भिःप्रोक्ष्यभस्मनावकीर्यवा चावप्रशस्तमुपभुंजीताऽपिह्यत्र प्राजापत्यान्श्लोकानुदाहरन्ति त्रीणिदेवाःपवित्राणिब्राह्मणानामकल्पयन् अदृष्टमद्भिर्निर्णिक्तंयच्चवाचाप्रशस्यते देवद्रोण्यांविवाहेषुयज्ञेषुप्रकृतेषुचकाकैःश्वभिश्चसंस्पृष्टमन्नंतन्नविसर्जये

वैद्य—व्याध—शस्त्र जिसके हाथमें हो जो फांसी देता हो नपुंसक—व्यभिचारिणी—इनकी स्वयं दई हुई भिक्षाभी ग्रहण नहीं करनी—और गुरूसे अन्यका झूठा और अपना उच्छिष्ट और उच्छिष्टका जिसमें स्पर्श हो और जिसमें केशवा कीट पडा हो ऐसा अन्न अभोज्य है और केश और कीटों को निकासकर जलसे छिडक कर और भस्म गेरकर और जो वाणीसे किसीने अच्छा बताया हो ऐसे अन्नको यथेच्छ खाले—ये प्रजापति के श्लोक कहेहैं कि देवताओं ने ये तीन ब्राह्मणों के लिये पवित्र कहे हैं जिसकी अशुद्धि न देखीहो—जो जलसे छिडका हो—और जो वाणीसे श्रेष्ठ कहा हो—देवद्रोणी [पूजा] विवाह—यज्ञका प्रस्तत इनमें काक वा कुत्तों ने जो अन्न छूआहो उसको न त्यागे तिससे उतने ही अन्नको निकास कर शेष अन्न संस्कार के योग्य

तूतस्मादन्नमुद्धृत्यशेषंसंस्कारमर्हति द्रवाणांप्लावनेनैव घनानांक्षरणेनतु पाकेनमुखसंस्पृष्टंशुचिरेवहितद्भवेत् अन्नंपर्युषितंभावदुष्टं हल्लेखनंपुनः सिद्धमामसृजोसप क्वं चकामंतुदध्यादघृतेनचाभिघारितमुपभुंजीतापिह्यन्नं प्राजापत्यान्श्लोकानुदाहरन्ति हस्तदत्तास्तुयेस्नेहाल वणव्यजनानिच दातारंनोपतिष्ठंतिभोक्ताभुंक्तेचकिल्व षमिति १ लशुनपलांडुकेमुकगृंजनश्लेष्मांतवृक्षनिर्या सलोहितान्नश्वनाश्वकाकावलीढ शूद्रोच्छिष्टभोजनेषुकृ च्छ्रातिकृच्छ्रइतरेऽप्यन्यत्रमधुमांसफलवर्केष्वग्राम्यप

यहै उस अन्नमें जो द्रव (दालआदि) हैं इनकी शुद्धि छिडकने और जो घन [करडे) है इनकी शुद्ध धोनेसे और जिसमें मुख काल्पर्श हुआहो उसको पकाने से शुद्धि होतीहैजो अन्न बासी हो भावसे दुष्टहो हृदको अच्छा न लगे—सिद्ध (पका) कच्चा जो अन्न के पात्रमें पकाहो उस अन्नको घीमें बोरकर यथेच्छ दे और स्वयंभी खाले प्रजापतिके श्लोक कहते हैं कि हाथ के दिये जो स्नेह (घी आदि) लवण शाक हैं उनका फल दाता को नहीं मिलता और खाने वाला पापका भागी होताहै और लहसन पलांडु (सलजम) के मुक (केंदु) गाजर बहेडा वृक्षका गोंद लाल गोंद जो वृक्षके काटने से पैदा हो—घोडा—कुत्ता काक इन्होंने जो चाटा हो—और शूद्रका उच्छिष्ट इनके भो जनमें कृच्छ्रअति कृच्छ्र करै—और सहत मांस फलकाकुकडा इनको छोडकर अन्यमेंप्रायश्चित भी करै और वनके पशुओं से

श्वविषयःसंधिनीक्षीरमवत्सक्षीरंगोमहिष्यजातरोमा निर्दिशाहालामनामंत्र्यंनाव्युदकमपूपधानाकरंभसक्तुचरकतैलपायसशाकानिलशुक्तानिवर्जयेदन्यांश्चक्षीरयवपिष्टवीरान् श्वाविच्छल्लकशशकच्छपगोधाःपंचनखानाभक्ष्याःअनुष्ट्राःपशूनामन्यतोदतश्चमत्स्यानांवावेहगवय शिशुमारनककुलीराविकृतरूपाःसर्पशीर्षाश्चगौरवयश लभाश्चानुद्दिष्टास्तथा धेन्वनड्वाहौमेध्यौवाजसनेयनेख ड्गेतुविवदंत्यग्राम्यशूकरेच शकुनानांचविशुविविष्किरजा

भिन्न संधिनी (जो व्यानेको हो और दूधभी दे) और जिनके बछडा न हो इनका दूध गौ भैंस ऐसी जिनके रोयन फूटे हों इनका दूध और ब्यानेसे दशदिनके भीतरका दूध ये नहीखाने नावका जल मालपूवे धान करभ (धाढभ) सत्तू चरक तेल पायस शाक शुक्त इनको वर्जदे और अन्यभी क्षीर जौ कांचन की मदिरा इनको भी वर्जदे गैंडा सेह शशा कछवा गोह ये पांच२ नखवाले पशु अभक्ष्य नहीहैं और उंटसे अन्य पशुओं में जो एक तरफ दंतवालेहैं वेभी अभक्ष्य नहीहैं और मत्स्यो में येह नीलगांय शिशुमार नाका कुलीर जिनका आकार बुरा न हो जिनका शिर सर्पके समानहो गौरे पक्षी शलभ(टीडी)और जो नहो कहे वे अभक्ष्य नहीहैं वाजसनेय मतमें गौ और बैल भी पवित्रहैं और गैंडा और ग्रामका सूकर इनमें विवादऋषि

लपादाः कलविङ्कप्लवहंसचक्रवाकभासमद्गुटिट्टिभाटै बांधनक्तंचरादार्वाघाटाश्चटकवैलातकहारीतखंजरीटग्रा म्यकुक्कुटशुकसारिका कोकिलक्रव्यादाग्रामाचारिणश्च ग्रामाचारिणश्चेति

इतिवाशिष्ठेधर्मशास्त्रे चतुर्द्दशोऽध्यायः ४१

शोणितशुक्रसंभवः पुरुषोमातापितृनिमित्तकः तस्यप्र दानविक्रयत्यागेषुमातापितरौप्रभवतः नत्वेकंपुत्रंदद्यात् प्रतिगृण्हीयाद्वासहिसंतानायपूर्वेषां नस्त्रीदद्यात् प्रतिगृ ण्हीयाद्वान्यत्रानुज्ञानाद्भर्तुःपुत्रंप्रतिगृहीष्यन्बंधूनाहूय

लोग करतेहैं (कोई भक्ष्य और कोई अभक्ष्य कहतेहैं) और पक्षियों में विष्किर विष्किर (खोदने वाला पक्षी)जालपाद (हंस कलविंक प्लव मुरगा हंस चकवा भास मद्गु टिट्टिभ बांध जो रात को उडें दार्वाघाट जो काटको चोंचसे खोदें चिडिया वैला तक हारीत (मृगभेद) खंजरीट गांवकामुरगातोता मैना कोकिल हैमांस क भक्षक गांवमें जो विचरें२ ये अभक्ष्य

यइति वशिष्ठस्मृत्तौ १४ अध्या

रुधिर और वीर्य से है उत्पति जिसकी ऐसे पुरुषके माता और पिताके निमित्त कारण हैं उनके देने वेचने त्यागनेमें माता और पिता समर्थहैं एकही पुत्र होय तो उसे नदे और न ले क्योंकि वह पूर्व पुरुषों को संतान के लिये है स्त्री पुत्रको न दे और पतिकी आज्ञाके विना न ले जो पुत्रको लिया चाहै वह अपने बंधुओं को बुलाकर और राजासे निवेदन करके घरके मध्यमें।

र्रेजनिचावेद्यनिवेशनस्य मध्येव्याहतीर्हुत्वादूरेबांधवम
सन्निकृष्टमेव संदेहेचोत्पन्नेदूरेबांधवंशूद्रमिवस्थापयेत्
विज्ञायतेह्यकेनवहुजायतइतितस्मिंश्चत्प्रतिगृहीतेऔर
सःपुत्रउत्पद्यतेचतुर्थभागभागीस्यात्यदिनाभ्युदयिकेयु
क्तःस्यादवेदविप्लविनःसव्येनपादेनप्रवृत्त ग्रानदर्भान्
लोहितान वोपस्तीर्यपूर्णपात्रमस्मै निनयेन्निनेतारंचा
स्यप्रकीर्यकेशान्ज्ञातयोऽन्वारभेरन्नपसव्यंकृत्वागृहेषु
स्वैरमापाद्येरन्नतऊर्द्धं तेनसहधर्ममीयुस्तद्धर्माणस्तद्ध
र्मापन्नाः पतितानांतुचरितव्रतानांप्रत्युद्धारोऽथाप्युदाहर

व्याहृतियों से होम करके दूर जिसके वंधुहो वह समीप नहीहै
और जो संदेह आनपडे तो जिसके दूर वंधुहों उसे शूद्रके स
मान टिकावे और शास्त्रसे यह जाना है कि एकसे वहुत होते
हैं और दत्तक पुत्रके लिये पीछे जो औरस पुत्र पेदा होजाय
तो चौथे भागका भागी हो। यदि दत्तक पुत्र आभ्युदयिक कर्म
(नांदीमुखादि] में युक्त नहो अथवा वेदको नष्टकरेतोवामपादसे
कुशाओं के अग्रभागको रखकर अथवा रक्त कुशाओं को रख
कर इस दत्तक को लिये पूर्ण पात्र (घट]दे और इसके घटदेने
वाले को मुण्डन कराकर ज्ञाति के मनुष्य इस कर्मका आरंभ
करें कि अपसव्य कराकर घरोंमें स्वैर यथेच्छ विचरते हैं इसके
पीछे उसके संग धर्मको प्राप्त होते हैं उसके धर्म वाले भी
उसके धर्मको प्राप्त होतेहैं और पतित जो व्रतको करले उन

न्ति अनभ्युद्धरतां गच्छेत् क्रीडंति चहसंति च यश्चोत्पा तयतां गच्छेच्छोचनित्याचार्यमातृपितृहंतारस्तत्प्रसदा द्भयाद्वाएवाप्रात्यपत्तिः पूर्णादात् प्रवृत्ताद्वाकांचनममत्रंमा हेयंवापूरयित्वापोहिष्ठाभिरेवपड्भिःऋग्भिःसर्वत्रवाभि रिक्तस्यप्रत्युद्धारपुत्रजन्मनाव्याख्यातः

इतिश्रीवाशिष्ठे धर्मशास्त्रे पंचदशोध्यायः १५

अथव्यवहाराःराजमंत्रीसदः कार्याणिकुर्याद्द्वयोर्विव दमानयोरत्रपक्षांतरंगच्छेद्यथासनमपराधोन्यत्रतेनापरा

क्योंकी उद्धार होताहै इससे ये वचनहैं कि अग्निका जो उद्धार करैं उनके संग जो गमन करैं वे और क्रीडा करै और हंसैं और पतित करने वालोंके संग जो गमन करैं उनके माता पिताके मारने वालोंकी शुद्धि माता पिता की प्रसन्नता वा भय से होतीहै यही प्रायश्चित्तहै पूर्णघट के दानमें जो प्रवृत्तहैसोना वा लोनेसे पृथिवीका गढा भरकर आपोहिष्ठा इन छः ऋचाओं से वा सर्वत्र इन ऋचाओंसेमार्जन करै यह अतिरिक्त पतितका उद्धार पुत्र जन्मके समान हैं ॥

इतिवशिष्ठस्मृतौ १५ अध्यायः

इसके अनंतर व्यवहार कहते हैं—राजा का मंत्री सभाके कार्य करै जो विवाद करते हुये दोके बीचमें पक्षांतर (अन्यथा) में गमन करै तो पक्षांतर में जानेके अनुसार अपराध है और

यः समःसर्वेषुभूतेषुयथासनमपराधोह्याद्यवर्णयोर्विधान
तःसंपन्नतामाचरेत्राजाबालानामप्राप्तव्यवहाराणांप्रा
प्तकालेतुतद्वत् लिखितंसाक्षिणोभुक्तिः प्रमाणंत्रिविधं
स्मृतं धनस्वीकरणंपूर्वंधनीधनमवाप्नुयादितिमार्गक्षेत्र
योर्विसर्गेतथापरिवर्तनेन ऋणाग्रहेष्वर्थांतरेषुत्रिपादमा
त्रं गृहक्षेत्रविरोधेसामंतप्रत्ययःसामंतविरोधेऽपिलेख्य
प्रत्ययः प्रत्यभिलेख्यविरोधेग्रामनगरवृद्धश्रेणिप्रत्ययोऽ
थाप्युदाहरंति यएकक्रीतमाधेयमन्वाधेयंप्रतिग्रहं यज्ञा

जो पक्षांतर में न जाय उसे अपराध नहीं—राजा सब भूतों में सम रहै पक्षांतर में जानेके अनुसार दंडदे—पहिले दोनों वर्णों (ब्राह्मण क्षत्री)का विधि पूर्वक सत्कार करै—और जोबालक व्यव हार को नहीं जानते उनकाभी विधिसे सत्कार करै लेख साक्षी भोग यह तीन प्रकार का प्रमाण कहा है और धनके स्वीकार से धनी अपने धनको प्राप्त होताहै मार्ग और खेतके विवादमें त्याग वा परिवर्तन (वदलने)से निर्णय करै—ऋणके आग्रहवा अर्थांत र (अन्यविवाद)में त्रिपाद [तिहाई)दिलावे घर और खेतकेविरोध में सामंत (लंवरदार) की प्रतीति और सामंतोंके विरोध में लेख की प्रतीति—और लेखके विरोध में—गांम—नगर—वृद्ध श्रेणी (व्यवहारी) इनसे प्रतीति (निश्चय)करै—इसमें ये वचन कहे हैं कि एक क्रीत (मोललिया)आधेय (पैदाकिया धन)अन्वाधेय (जो विवाह क पाछे स्त्रीको मिले) प्रतिग्रह—यज्ञमें वा वाणोंसे युद्धमें

दुपगमेवाशैस्तथाधूमशिखाह्यसीइति तत्रभुक्तेदशवर्षमे वोदाहरंति आधिःसीमाधिकंचैवनिक्षेपोपनिधिःस्त्रियः राजस्वंश्रोत्रियद्रव्यंनराजादातुमर्हतीति तच्चसंभोगेन ग्रहीतव्यंगृहिणांद्रव्याणिराजगामीनिभवंति तथाराजा मंत्रिभिः सहनागरैश्चकार्याणिकुर्यादसौवाराजाश्रेया न् वसुपरिवारःस्यादगृधपरिवारंवाराजाश्रेयान् गृधू परिवारःस्यान्नगृधोगृधूपरिवारःस्यात् परिवाराद्दोषाःप्रा दुर्भवंतिस्तेयहारविनाशनंतस्मात् पूर्वमेवपरिवारंपृच्छेत् अथसाक्षिणःश्रोत्रियोरूपवान्शीलवान्पुण्यवान्सत्यवा

जो मिले—और धम शिखा (जो कील सीमपर गाड़तेहैं) ये नि र्णय के हेतु हैं—तिनमें भोग दशवर्षका कहा है—आधि (धरोर) सीमा अधिक—निक्षेप सौंपना उपनिधि[किसीके समीप धन को रखना] स्त्री राजाका और बेद पाठीका द्रव्य इनको राजान ले और उसका संभोग उस धनसे कुछपैदा करने सेलेले क्यों कि गृहस्थियों के द्रव्य राजाके यहांजाने वाले होतेहैं औरराजा मंत्री और नगर के निवासी इनसे मिलकर कार्योंकोकरे अथवा वह श्रेष्ठराजाहो धनको ग्रहणकरै और राजाका परिवार धनको इच्छा न करै तोभी राजा धनको इच्छा करै और परिवार और राजा दोनों धनको इच्छा न करैं परिवार से दोष पैदा होते हैं कि चोरी हरना और विनाश होता है तिससे पहिले ही परि वार को धन मिले—इसके अनंतर साक्षियों का वर्णन करते हैं

स्त्रसाक्षिणः सर्वएववास्त्रीणां साक्षिणस्त्रीःकुर्यात् द्विजा नांसदृशाद्विजाःशूद्राणांसतःशूद्राश्चअंत्यानामंत्याः अथा प्युदाहरंतिप्रातिभाव्यंवृथादानमाक्षिकंसौरिकंचयत् दंड शुल्कावशिष्टंचनपुत्रोदातुमर्हतीति ब्रूहिसाक्षिन्यथातत्त्वं लंबंतेपितरस्तव तववाक्यमुदीर्यंतमुत्पतंतिपतंतिच न ग्नोमुंडःकपालीचभिक्षार्थंक्षुत्पिपासितः अंधः शत्रुकुले गच्छेद्यस्तुसाक्ष्यनृतंवदेत् पंचकन्यानृतेहंतिदशहंतिग वानृते शतमश्वानृतेहंतिसहस्रंपुरुषानृते व्यवहारेमृले

वेदपाठी रूप वाला शील स्वभाव पुण्यात्मा सत्यवादी ये साक्षी हों वा सब प्रकारके हों स्त्रियोंकी साक्षी स्त्रीकरैं द्विजोंकी साक्षी समानकेद्विज औरशूद्रोंकीशूद्रऔर अंत्यजोंको अंत्यजकरैं इसमेंये वचन कहेहैं कि प्रातिभाव्य (जामिनो) वृथादान—और साक्षी स्वरवीरता—दंड—और शुल्क कन्या का मोल इनमें हुये ऋण को पुत्र देने योग्य नहाहैं, हे साक्षि देने वाले जेसी हो वेसी ही कहदे तेरे पितरस्वर्गसे लटकतेहैं तेरे सत्य कहने पर स्वर्गमें ज वगे और झूट कहने पर नरक में जो साक्षी झूटवोलता है वह नंगा मुन्डा कपाल हाथमें लिये भिक्षा मांगता और भूका प्या सा अंधा शत्रुओं के कुलमें फिरता है कन्याके निमित्त झूट वोलनेसे पांच पाठी गोके निमित्त झूट वोलनेसे दश पीठीघोडे के निमित्त झूटवोलनेसे सौ पीठी और पुरुषकेनिमित्त झूठ वो लने में सहस्र पीठियों को नष्ट करता है व्यवहार अमृत स्त्री

दारेप्रायश्चित्ते कुलेस्त्रियः तेषांपूर्वंपरिच्छेदाच्छेद्य तेवा
यवादिभिः उद्वाहकालेरतिसंप्रयोगेप्राणात्ययेसर्वधनाप
हारे विप्रस्यचार्थेअनृतंवदेयुःपंचानृतान्याहुरपातकानि
स्वजनस्यार्थेयदिवार्थहेतोःपक्षाश्रयेणैववदंतिकार्य्यं वैश
ब्दवादस्वकुलानुपूर्वान्स्वर्गस्थितानपिपातयंत्यपि

इतिवाशिष्टेधर्मशास्त्रेषोडशोऽध्यायः १६

ऋणमस्मिन्सन्नयति अमृतत्वंचगच्छतिपितापुत्रस्यजा
तस्यपश्येच्चजीवतोमुखंअनंताः पुत्रिणांलोकानापुत्रस्य
लोकोऽस्तीतिश्रूयतेप्रजाःसंत्वपुत्रिणाइत्यपिशापःप्रजाभि

प्रायश्चित्त कुलकी स्त्री इनके पहिले नाशमें वायस (कौवा) आ
दि से नष्ट किये जातेहैं विवाह के समय रति[भोगके]संयोग में
प्राणोंके नाशमें सब धनके हरनेमें ब्राह्मणके लिये झूटभी साक्षी
बोलें क्योंकि ये पांच झूट पातक नहीं कहेहैं और अपने जन
के लिये और धनके लोभसे किसीकेपक्षमें होकर जो झूटबोल
तेहैं वे स्वर्गमें टिकेभी अपने पुरुषा(बड़ेओं)को नरक में गिराते
हैं ॥

इति वशिष्ठस्मृतौ १६ अध्यायः

पिता अपना ऋण पुत्रको सौंपता है और मोक्षको प्राप्त
होता है यदि पैदा और जीवते हुये पुत्रके मुखको देखले पुत्र
वालोंके लोक स्वर्गआदि अनंत होतेहैं और जिसके पुत्र न हो
उसको लोक नही होता यह शास्त्रमें सुनाजाता है और तेरी

रग्नेस्त्वममृतस्त्वमस्यामित्यपिनियमोभवति पुत्रेणलोका
न्जयतिपौत्रेणानंत्यमश्नुते अथपुत्रस्यपौत्रेणब्रध्नस्या
प्नोतिविष्टपमितिक्षेत्रिणःपुत्रोजनयितुःपुत्रइतिविवदंते त
त्रोभयथाप्युदाहरन्ति यद्यन्यगोपुवृषभोवत्सानूजनयते
सुतानगोःमिनामेवतेवत्सामोघंस्यंदनमोक्षणमिति अप्रम
त्तारक्षंतुवेनंमाचक्षेत्रेपरेवीजानिवासौजनयितुःपुत्रोभवति
संपरायोमोघरेतो कुरुततंतुमतमिति वहूनामेकजाताना
मेकश्चेत् पुत्रवान्नरःसर्वेतेतेनपुत्रेणपुत्रवंतइतिश्रुतिःवह्वी

संतान पुत्रवाली न हों यह शाप और प्रजा [संतान) से तेरे आगेको मोक्ष हो यहभी नियम है पुत्रसे लोकोंको जीतता (प्राप्तहोता)है और पौत्रसे अनंत लोक को भोगता है और पुत्र के पोतेसे ब्रह्मलोक को प्राप्त होता है जिसकी स्त्री उसका पुत्र होताहै अथवा जिससे पैदाहो उसका पुत्रहोता है इसमें वहुत विवाद करते हैं और इन दोनोंमें वचन भी कहते हैं कि जैसे अन्यकी गोमें वैल वछडों को पैदा करता है वे वछडे गो वाले के हो होतेहैं और वीर्य का छोडना निष्फल है और अप्रमत्त हुये इस पुत्रकी रक्षा करो और पराये क्षेत्रमें वीजमत छोडो यह जनाने वालेका पुत्र होताहै परलोक में वीर्यको सफल करो क्योंकि वह तंतरूप है एकसे पैदा हुये वहुत मनुष्यों में यदि एक पुत्र वाला होय तो वे सव उससे पुत्र वालेहैं यह वेदमें लिखा है और वहुत स्त्रियोंके पुराणों में देखे वारह प्रकार के पुत्र होतेहैं सत्कारसे विवाही अपनी स्त्रीमें जो अपने से पैदा

नांद्वादशहृयेवपुत्राःपुराणदृष्टाःस्वयमुत्पादितः स्वक्षेत्रेसं
स्कृतायांप्रथमःतदलाभे नियुक्तायांक्षेत्रजोद्वितीयःतृतीय
पुत्रिकाविज्ञायतेअभ्रातृकापुंसपितृलभ्येतिप्रतीचीनंग
च्छतिपुत्रत्वंश्लोकः अभ्रातृकांप्रदास्यामितुभ्यंकन्यामलं
कृतांअस्यांयोजायतेपुत्रःसमेपुत्रोभवेदितिपौनर्भवश्चतुर्थ
पुनर्भूकौमारंभर्तारमुत्सृज्यान्यैःसहचरित्वात्तस्यैवकुटुंबमा
श्रयति सापुनर्भूर्भवतियाचक्लीबंपतितमुन्मत्तं वा भर्तार
मुत्सृज्यान्यंपतिंविन्दन्तेमृतेवासापुनर्भूर्भवति कानीनःपं
चमोयापितुर्गृहेऽसंस्कृताकामादुत्पादयेन्मातामहस्यपु
त्रोभवतीत्याहुः अथाप्युदाहरन्ति अप्रत्तादुहितायस्यपु

हो वह प्रथम, वह न होय नियुक्त जिस के लिये गुरु आदिने आ
ज्ञा दी हो अन्यकी स्त्रीमें जो हो वह दूसरा२ तीसरा३ पुत्रिका
पुत्र भाई जिसके न हो ऐसी कन्या जो कन्याके पिताने
पुरुष को मिले उनका लडका कन्याके पिताका होता है यह
श्लोक भी है कि बिना भाईकी और भूषण आदिसे शोभित
कन्या तुझे देताहुं इसमें जो पुत्रहो वह मेरा पुत्रहो इतिचौथा
पुनर्भू स्त्रीका पुत्र४ जो कुमार पतिको छोडकर अन्योंके संग
मैथुन आदि करके उसके ही कुटुंब में फिर आजाय वह पुन
र्भू होती है और जो नपुंसक पतित उन्मत्त पतिको छोडकर
अथवा पतिके मरे पीछे अन्यपतिको ग्रहण करे वह पुनर्भू स्त्री
होती है पांचमा पुत्र कानीन होताहै जो कन्यासंस्कार (विवाह)
से पहिले अपनी इच्छा से पुत्रकोपैदा करै वह नानाका पुत्रहो

त्रं विन्दतितुल्यतः पुत्रीमातामहस्तेनदद्यात्पिंडंहरद्धनमि ति गूढेचगूढोत्पन्नःषष्ठइत्येते दायादाबांधवास्त्रातारोमह तोभयादित्याहुः अथादायादास्तत्रसहोढएवप्रथमोयाग र्भिणीसंस्क्रियतेतस्यांजातःसहोढःपुत्रोभवतिदत्तकोद्विती योयंमातापितरौदद्यातां क्रीतस्तृतीयस्तच्छुनःशेपेनव्या ख्यातं हरिश्चंद्रोहवैराजासोजीगर्तस्यसोपवत्सैः पुत्रंवि क्रिय्यस्वयंक्रीतवान् स्वयमुपागतश्चतुर्थः तच्छुनःशेफेन व्याख्यातंशुनःशेपोहवैयूपेनियुक्तोदेवतास्तुष्टावतस्ये

ताहै यह शास्त्रमें कहाहै इस विषयमें येवचन कहतेहैं कि जिस को विना विवाही कन्या सजातीय पुरुष से पुत्र हो पैदा करै उस पुत्रसे नाना पुत्र वाला होताहै वह पुत्र नानाके धनको ले और नानाका पिन्ड दे छटा गुप्तस्थान में जो पैदा हो वह गूढोत्पन्न ये छः पुत्रदायाद (भागके अधिकारी) बांधव हैं और बडे भयसे रक्षाकरने वाले होतेहैं यह कहाहै अब अदायाद (भागके अनधिकारी) पुत्र कहतेहैं तिनमें पहिला सहोढ है जिस कन्याका गर्भवती का ही संस्कार (विवाह) हो उसमें पैदा हुआ पुत्र सहोढ होताहै दूसरा दत्तक जिसे माता पिता देदें तीसरा क्रीत यह शुनःशेफसे व्याख्यान कहागया है हरिश्चंद्र राजा हुआ वह अजीगर्तके पुत्रको विकवा कर आप मोललेता भया स्वयं जो आया हो वह चोथा यहभी शुनःशेफसे व्याख्यात जानागया है शुनःशेफयूप (यज्ञकास्तंभ) में नियुक्त होकर देव

हृदेवताः पाशं विमुमुचुस्तमृत्विज ऊचुर्ममैवायं पुत्रोस्त्विति तानाह न संपेदे ते संपादयामासुरेष एव यं कामयेत तस्य पुत्रोस्त्विति तस्य ह विश्वामित्रो होतासीत्तस्य पुत्रत्वमियाय अपविद्धः पंचमो यं मातापितृभ्यामपास्तं प्रतिगृह्णीयात् शूद्रापुत्र एव षष्ठो भवतीत्याहुरित्येते दायादा बांधवाः अथाप्युदाहरन्ति यस्य पूर्वेषां वर्णानां न कश्चिद्दायादः स्यादेते तस्यापहरंति अथ भ्रातॄणां दायविभागो द्व्यंशं ज्येष्ठो हरेद्गवाश्वस्य चानुसदृशमजावयो गृहं च कनिष्ठस्य काष्ठं

ताओं की स्तुति करता भया देवताओं ने उसकी पास (बंधन) को छुटाया उसको ऋत्विज बोले कि मेराही यह पुत्र हो उनको कहा कि यह संमति करो कि जिस ऋषिकी यह कामना इच्छा करै उसीका पुत्र हो उसका विश्वामित्र होताथा उसके ही पुत्रपने को प्राप्त होगया पांचवां अपविद्ध जो माता पिताने त्यागदिया हो और उसे ग्रहण करले और शूद्रा पुत्र छटा होताहै ये छः पुत्र भागके अधिकारी हिस्सेदार नही हैं इस विषय में ये वचन कहे हैं कि जिसके पिछले वर्णोंमें कोई दायाद नही है इसके धनको ये छः लेतेहैं अब भाईयोंके दाय (अंश) का विभाग कहते हैं—जेटाभाई गौ घोडा और इनके सदृश बकरी और घर इनके दो भागले और छोटा भाई काठ गौ घासले और विचलाभाई घरकी सामग्रीयों को ले और माताके विवाह के समय का जो धन उसे स्त्री [पुत्रोंकीवधु) वांटले जो ब्राह्मण स

गांयवसंगृहोपकरणानिचमध्यमस्यमातुःपारिणेयंस्त्रियो विभजेरन् यदिब्राह्मणस्यब्राह्मणीक्षत्रियावैश्यासुपुत्राः स्युस्त्र्यंशंब्राह्मण्याःपुत्रोहरेतु द्व्यंशंराजन्यायाः पुत्रःसममितरेविभजेरन्येनचैषां स्वयमुत्पादितस्यात्द्व्यंशमेवहरेदनशास्त्वाश्रमान्तरगताः क्लीबोन्मत्तपतिताश्चभरणंक्लीबोन्मत्तानांप्रेतपत्नीषण्मासंव्रतचारिणय क्षारलवणंभुंजानाः शयीतोर्द्ध्वंषड्भ्योमासेभ्यःस्नात्वाश्राद्धं चपत्ये दत्वाविद्याकर्मगुरुयोनिसबंधान्सन्निपात्य पिताभ्राता वानियोगकारयेन्नसोन्मात्तामवशांव्याधितांवानियुंज्यात्

ब्राह्मणी क्षत्रिया और वैश्या स्त्रियोंमें पत्र होंय तो ब्राह्मणी का पत्र तीनभाग और क्षत्रिया का पत्रदो भागले और इतर वैश्या के वा शूद्रा के पत्रसमभागसे वांटले इनमें जो धनको स्वय पैदा करै वह दो भागले और जो अन्य आश्रममें हों अथवा नपुंसक उन्मत्त पतित होयतो धनके भागी नहीं होते और नपुंसक उन्मत्त भरण पोषणके भागी होतेहैं मरे हुयेकी जो स्त्रीहै व छः महीने तकव्रत करैं क्षारोवस्तु और लवणका भोजन न करे भूमिपर सोवें फिरछः महीने पीछे स्नान कर और पति को श्राद्ध दकरविद्या कर्म गृहवालोनि संबधियोंको इकट्ठा करके स्त्रीकोपिता वा भ्राता नियोग को करावे अर्थात् दूसरे पुरुष से गर्भको धारण करावे और जो उन्मत्त वा वशहीन हो रोगिनी हो नातेमें बडीहो सोलह वर्ष तक अवस्थाकी नहो उसे नियोग न करावे और देवर आदिभी रोगी न हो,प्राजापत्य (वड़े प्रभात)

ज्यायसीमपिषोडशवर्षामृनचेदामयावीस्यात्प्राजापत्ये
मुहूर्तेपाणिग्राहवदुपचरेदन्यत्रसंग्रहात्स्यत्राक्पारुष्याद्दंड
पारुष्याच्चग्रासाच्छादनस्नानलेपनेषुप्राग्गामिनीस्या
दनियुक्तायामुत्पन्नउत्पादयितुः पुत्रोभवतीत्याहुःस्याच्चे
न्नियोगिनीऋक्थलोभान्नास्तिनियोगः प्रायश्चित्तंवाप्यु
पनियुंज्यादित्येकेकुमार्यृ तुमतीत्रिवर्षाण्युपासीतोर्ध्वंत्रि
भ्योवर्षेभ्यः पतिंविंदेत्तुल्यंअथाप्युदाहरंतिपितुःप्रमादा
त्तुयदाहिपूर्वंकन्यावयोयासमतीत्यदीयतेमाहंतिदातारम

मुहूर्तमें नियोग करे और पतिके समानउनकी सेवा करेहंसना कठोर वाणी वा कठोरदंड इनको न करे पर्वपतिके धनमें से भोजन, वस्त्र, और लेपन इनको करे और जिस स्त्रीका नियोग न हुआहो उसमें पैदा हुआ पुत्र पैदा करने वालेका होताहै यह शास्त्रकारोंने कहा है यदि नियोग करने वाली (स्त्री) के धनका लोभ होय तो नियोग नहीं है और कोई यह कहते हैं कि प्रायश्चित्त करें—ऋतु वाली कुमारी तीन वर्ष तक बैठी रहै फिर तीन वर्ष पीछे अपने तुल्यपति को वरले—इसमें ये वच न कहेहैं कि पिताके देनेसे पहिले जो कन्याकी अवस्था का अ तिक्रम (ऋतुकाल) होकर जो कन्या दीजाती है वह कन्या देनेवाले भी दाताकोहनती है और कालके अवलंघन से गर्भ औ र दक्षिणा इनको भी नष्ट करती है—ऋतुकाल के भयसे पिता नग्न कन्याको देदे क्योंकि ऋतु वाली कन्याके टिकने पर पिता

पौक्षमाणाकालातिरिक्तागुरुदक्षिणेव प्रयच्छेन्नग्निकांक न्यांऋतुकालभयात्पिता ऋतुमत्यांहितिष्ठंत्यांदोषःपितर मृच्छतियावच्चकन्यामृतवः स्पृशतितुल्यैःसकामामभिया च्यमानां भ्रूणानितावंतिहतानिताभ्यांमातापितृभ्या मितिधर्मब दःअद्भिर्वाचःचदत्तायांम्रियेताथोवरोयदिनच मंत्रोपनीतास्यात्कुमारीपितुरेवसायावच्चेदाहताकन्या मन्त्रैर्यदिनसंस्कृताअन्यस्मैविधिवद्देयायथाकन्यातथैव सा पाणिग्राहेमृतेबालाकेवलंमन्त्रसंस्कृता साचदक्षतयो

को दोष लगता है—पतिकी कामना करने वाली और जिसको अन्य पुरुष मागते हों ऐसी कन्याका जितने ऋतुकाल हों उस कन्याके माता पिताओं ने उतनीही भ्रूण (बाल) हत्याकी यह धर्मका कथन है—जल अथवा वाणीसे कन्यादान (सगाई) किये पर यदि वर मरजाय और मंत्रों से विवाह न हुआ होय तो वह कन्या पिताकी कुमारी ही है—इतने हरीहुई कन्या का मंत्रों से संस्कार न हुआ हो तो वह कन्या विधि पूर्वक अन्यको दे दे नी क्योंकि वह कन्याकेही समानहै जो पतिके मरने पर केवल मंत्रों से संस्कार की बालक कन्या अक्षत योनि [जिसे पुरुष सं बंधन हुआहो)तो पनः विवाहके योग्यहैप्रोषितपत्नी [जोपर देश में गयाहो उनकीस्त्री पांचवर्ष तक बैठारहै पांच वर्षपीछे पतिके समीप चलीजाययदि धर्म औरधनकेलोभसे परदेशकीइच्छा न करे

निःस्यात् पुनःसंस्कारमर्हतीति प्रोषितपत्नीपंचवर्षाण्युपा सीतोर्द्धं पंचभ्योवर्षेभ्योभर्त्तुः सकाशंगच्छेत् यदिधर्मार्था भ्यांप्रवासंप्रत्यनुकामानस्यात् यथ प्रेतएववर्तितव्यंस्या त् एवंपंचब्राह्मणीप्रजाताचत्वारिराजन्याप्रजातात्रीणिवै श्याप्रजाताद्वेशूद्राप्रजाताअतऊर्द्धं समानोदकपिंडजन्मर्षि गोत्राणांपूर्वःपूर्वोगरीयान् नखलुकुलीनेविद्यमानेपरगामि स्थानीस्यात् यस्यपूर्वेषांषण्णांनकश्चिद्दायादःसपिंडाःपुत्र नीयावातस्यधनंविभजेरंस्तेषामलाभेआचार्यान्तेवासि नौहरेयातांतयोरलाभेराजाहरेत् नतुब्राह्मणस्यराजाहरे ब्रह्मस्वंतुविषंघोरंनविषंविषमित्याहुर्ब्रह्मस्वंविषमुच्यतेवि

तो मरेकी स्त्रोके समानवर्ते इसी प्रकार संतानवाल्ली ब्राह्मणी पां चवर्षतक क्षत्रिया चार—और वैश्या तीन—और शूद्रा दो वर्ष तक बाटदेखें इसके आगे समानोदक—सपिंड—गोत्र इनमें पहिला२ श्रेष्ठहै और कुलीनकेविद्यमानहोते परपुरुषकासंग न करे—जिस पुरुष के पहिले दायके भागियोंमें से कोई भी अंशका भागी न होय तो सपिंड वा पुत्रके स्थानी (दत्तक आदि) उसके धनको बांटलें वेभी न होंय तो आचार्य और शिष्य उसकेधनको लेलें वभी न होयतो राजा लेले और ब्राह्मण के धनको राजा न ले क्योंकि ब्राह्मणका धन घोर विषहै—क्योंकि यह कहाहै कि विष विष नहीं है ब्राह्मण का धन विष कहाहै विष तो एकको ही मारता है और ब्राह्मण का धन पुत्र और पौत्रोंको मारता है

स्त्रैकाकिं हंतिब्रह्मस्वंपुत्रपौत्रकमिति विद्यसाधुभ्यः संप्रयच्छेदिति

इतिवाशिष्टेधर्मशास्त्रेसप्तदशोऽध्यायः १७

शूद्रेणब्राह्मण्यामुत्पन्नश्चांडालोभवतीत्याहुःराजन्यायांवैणःवैश्यायामन्त्यावसायी वैश्येनब्राह्मण्यामुत्पन्नोरोमको भवतीत्याहुःराजन्यायांपुल्कसः राजन्येनब्राह्मण्यामुत्पन्नःसूतोभवतीत्याहुःअथाप्युदाहरन्ति छिन्नोत्पन्नास्तुये केचित्प्रातिलोम्यगुणाश्रिताः गुणाचारपरिभ्रंशात्कर्म

ब्राह्मण के धनको तोनो वे ३ जिन्होंने पढहैं उनको देदे ॥

इति वशिष्ठस्मृतौ १७ अध्यायः

यह कहाहै कि शूद्रसेजो ब्राह्मणीमें पैदाहो वहचांडलहोताहै और शूद्रसे क्षत्रियाओर वैश्यामें पैदाहुआ वैणओरवैश्यमें पैदा हुआ अंत्यावसायो होताहै—वैश्यसे ब्राह्मणीमें पैदाहुआ रोमकहोताहै और वैश्यसे क्षत्त्रिया स्त्रीमें पैदा हुआ पल्कसपुत्र होताहै क्षत्रियसे ब्राह्मणीमें पैदा हुआ पुत्र सूत होता है—इसमें ये वचना कहहैं कि छिन्नभिन्न पैदा हुये जो कोई प्रातिलोम्य(छोटे वर्णसे बड वर्णकी स्त्रीमें पैदा होना) गुणवालेहैं उनको गुण औरआचारसेभ्रष्टताओ कर्मोंसेपहिचाने—एक वा दोवार्तानवर्णकेव्यवधानसे जो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंसे पैदाहों वे क्रमसेअम्बष्ठनिषाद उग्र (भील) होतेहैं और शूद्रोंमें जो पैदाहो वह पारशव होताहै वह जीवता हुआ शवव होताहै यह शास्त्रमें कहाहै—शव यह

भिस्तान्विजानीयुरिति एकांतराद्व्यंतराभ्यंतर:सुजाता ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यैरवच्छोद्गनिषादाभवंतिशूद्रायांपारश वःपारयन्नेवजीवन्नेवशवोभवतीत्याहु:शवइतिमृताख्या एकेएतत्श्मशानंयच्छूद्रः तस्माच्छूद्रसमीपेनाध्येतव्यमथ धापियमगीतान्श्लोकानुदाहरंतिश्मशानमेतत्प्रत्यक्षंयेशू द्राः पापचारिणः तस्माच्छूद्रसमीपेदन्नाध्येतव्यंकदाचन नशूद्रायमतिंदद्यान्नोच्छिष्टंनहविष्कृतं नचास्योपदिशे द्धर्मंनचास्यव्रतमादिशेत् यश्चास्योपदिशेद्धर्मंयश्चास्यव्र तमादिशेत् सोऽसंवृतंतमोघोरंसहतेनप्रपद्यतइतिव्रणद्वा रेकृमियंस्यसंभवेतकदाचन प्राजापत्येनशुद्ध्येतहिरण्यं

मरे का नाम है कोई यह कहते हैं कि जो शूद्र है यह श्मशान है तिससे शूद्र के समीप न पढ़ै इसमें भी यमकृत पके कहे श्लोकों को कहते हैं कि जो पापकरने वाले शूद्र हैं ये ही प्रत्यक्ष श्मशान है तिससे शूद्र के समीप कभी भी न पढ़ै—और शूद्र को मति (ज्ञान] उच्छिष्ट—और हवि [साकल्य) न दे और धर्मोपदेश और व्रत का उपदेश भी शूद्र को न दे जो शूद्र को धर्म और व्रत का उपदेश करता है वह पुरुष उस शूद्र सहित खुले हुये घोर नरक में जाता है—जिस पुरुष के घाव में कदाचित् कृमि (कीड़े) हों जांय तो प्राजापत्यव्रत और सोना गौ—वस्त्र इनकी दक्षिणा से शुद्ध होता है— अग्निहोत्री मनुष्य

गौर्वीसोदक्षिणेति नारिं च्चिन्वारामामुपेयात् कृष्णवर्णा या रमणारमणायैवनधर्मायनधर्मायेति

इतिवाशिष्ठेधर्मशास्त्रेऽष्टादशोध्यायः १८

स्वधर्मोराज्ञःपालनंभूतानांतस्यानुष्ठानात्सिद्धिःभयकारुण्यहानंजरामर्यंवैएतत्सत्रमाहुर्विद्वांसस्तस्माद्गार्हस्थ्यनैयमिकेपुरोहितेदध्याद्विज्ञायतेब्राह्मणपुरोहितेराष्ट्रंदधातीतितस्यभयमपालनादसामर्थ्याच्चदेशधर्मजातिकुलधर्मान्सर्वान्वैतानुप्रविश्यराजःचतुरोवर्णान्स्वरध

अन्य स्त्रीका संग नकरै क्योंकि काले वर्ण (शूद्र) कीस्त्री भोग के लिये ही है धर्मके लिये नहीं है२ ॥

इति वशिष्ठस्मृतौ १८ अध्याय

भूतोंका पालन राजाका धर्महै पालन करनेसे सिद्धि होतीहै क्योंकि पालन का जो करनाहै यही भय और दयाका नाशक है और जीवन पर्यंत करने योग्य है विद्वानों ने इसे सत्र यज्ञ कहा है तिससे गृहस्थके आवश्यक कामोंमें पुरोहितको पालन सौंपदे क्योंकि शास्त्रसे जानाहै कि राजाका पुरोहित ब्राह्मण देशकी पालना करता है अपालन और सामर्थ्य के अभावसे राजाको भय होताहै—देशजाति—कुल इनके सब धर्मोंको राजा जानकर चारोंवर्णोंको अपने२ धर्मों में टिकावे और जो चारों वर्ण धर्म में तत्पर होय तो—देश काल समय धर्म—अवस्था—विद्या—स्थान इनकी विशेषताके अनुसार दंडदे—वा शास्त्र और दृष्टांत (नजीर) से

र्मैस्थापयेत्स्वधर्मपरेषुदंडंधारयेत्दंडस्तुदेशकालधर्मवयो विद्यास्थानविशेषैर्दिशेःआगमात्दृष्टान्ताच्चपुष्पफलोप गान्पादपान्नहिंस्यात्कर्षणकारणार्थंचापहन्यात् गार्हस्थ्यो गानांचमानोन्मानेरक्षितेस्यातां अधिष्ठानान्नोनिहारः स्वार्थानांमानतूल्यमात्रंनैहारिकंस्यान्महासहयोः सूथाना नूपथः स्यात् सयानेदशवाहवाहिनीद्विगुणकारिणीस्या नूप्रत्येकप्राणस्युः पुंसःशतेवराहूर्थंचाहवपे द्रव्यार्थाः स्त्रियःस्यु करशुल्कोमोमोषः सरमध्यापःपादःकार्षापणाः स्युःनिरुदकस्तरामोध्यः अकरःश्रोत्रियोराजपुमाननाथ प्रव्रजितबालवृद्धतरुणप्रदातारःप्रागामिकाःकुमार्योमृत

ष्य फल वाले वृक्षोंको न काटे खेती करने के लिये तो काटले गृहस्थ की सामग्री और नियमों के मान और तोलकी रक्षा राजाको करनी और नगरमे से अपने करके मध्यमें अन्न आदि को न ले किंतु द्रव्य ले और देवस्थान—श्मशान और मार्ग इनका कर राजा न ले और युद्धकी यात्रामें दश वाह वाहिनी (१ हाथी—१ रथ ३ घोडे ५ सेवक जिसमें हो) सेना दूनी लेजा नी और सेनाएं में प्याउ हों—कमसे कम सोगज योधाओं से युद्ध करावे और मरे योधाओं की स्त्रियोंको राजा भक्षय भोज्य दे और अतसी का कर आठ और भूसका कर पांच और जल का कर चौथाई कार्षापण होता है यदि जल रुक गया होय तो करकोभी नलेवेदपाठी राजाका पुरुष संन्यासी—बालक—वृद्ध

पृथन्पथस्रबाहुभ्यामुत्तरन्शतगुणंदद्यान्नदीकक्षवनदाहशै लोपभोगानिष्कराः स्युस्तदुपजीविनोवादद्युःप्रतिमासमुद्वाहकरंवागमयेद्राजनिचक्षतेदद्यात्प्रासंगिकंएतेनमातृवृत्तिर्व्याख्याताराजमहिष्याःपितृव्यमातुलौराजाबिभृयात्तद्बंधूंश्चान्यांश्चराजपत्न्योग्रासाच्छादनंलभेरन्‌वानिच्छंत्योवाप्रव्रजेरन्‌क्लीवोन्मत्तान्राजाविभृयात्तद्गामि

विद्यार्थी दाता विधवा कुमारी और सेवकों की स्त्री इनसे कर न ले यदि कोई भुजाओं से नदी उतरे तो उसे सौगुना करदंड देना नदी कक्षजहां हो वनदाह पर्वत इनके पास के निवासीं को निष्कर होते हैं अथवा जो उन नदियां आदि से जीविका करें वे राजा को कर दें वा न दें और जो अपने शरीर से शिल्प विद्या का काम करते हैं उनसे प्रतिमास एक२ दिन काम करालें और संतान हीन राजा के मरजाने पर राजा के करको राजा के श्राद्ध आदि के समय दे इससे राजा में माता के समान वर्ताव कहा अर्थात् जैसे माता के श्राद्ध में पुत्र देता है ऐसे राजा के श्राद्ध में दे और जिस रानी को भी राज्य मिला हो उनके चाचा मामा और बन्धुओं को राजा पाले राजा की पत्नियों को भी भोजन वस्त्र मिलें जिस राजा की रानी भोजन वस्त्र न चाहैं वो चाहैं जहां चली जांय नपुंसक उन्मत्तों को राजा पालें क्योंकि उनका धन राजा को मिलता है शुल्क (महसूल) में यह मनु के श्लोक को कहते हैं व्यापा

त्वादंशस्यशुल्केचापिमानवंश्लोकमुदाहरन्तिनरिक्तकार्ष
पंणामस्तिशुल्कंनशिल्पवृत्तौनशिशौधर्मेनभैक्षवृत्तौनहुतां
वशेषेनश्रोत्रियेप्रव्रजितेनयज्ञइतिस्तेनोनुप्रवेशान्नदुष्यते
नशस्त्रधारिसहोढव्रणासंपन्नव्यपविष्टस्तुवेकेषांदंड्योत्स
र्गेराजैकरात्रमुपवशेत् त्रिरात्रंपुरोहितः कृच्छ्रमदंडयदंड
नेपुरोहितस्त्रिरात्रंराजाअथाप्युदाहरंति अन्नादेभ्रूणहा
मार्ष्टि पत्यौभार्यापचारिणी गुरौशिष्यश्चयाज्यश्चस्तेनो

रियों की दुकान पर एक कार्षापण (कर) को राजा ले और
शिल्प विद्या—वालक—दूत—भिक्षा से मिला—चोरी से बचा
संन्यासी—यज्ञ—इनमें राजा का कुछ कर नहीं यदि चो
चोरी का धन राजा को दे तो दूषित नहीं यदि शस्त्रधारी अप
राधी जिसके शरीर में घाव होय और राजा के पास चला
जाय तो वह भी अपराधी नहीं यदि राजा दंड देने के योग्य
को छोड़ दे तो एक रात्रि उपवास करे और पुरोहित तीनरात्र
उपवास करे—दंड के अयोग्य को दंड देने में पुरोहित कृच्छ्र
व्रत करै और राजा तीन रात्र उपवास करै—इसमें भी ये
वचन कहे हैं भ्रूण का हत्यारा अन्न के दाता को व्यभिचारिणी
स्त्री पति को शिष्य और याज्य (जिस पर यज्ञ कराई जाय)
गुरु को और चोर राजा को अपना पाप देते हैं किया है पाप
जिन्होंने ऐसे मनुष्य राजा के दन्ड देने से शुद्ध होते हैं और
निर्मल होकर इस प्रकार स्वर्ग में जाते हैं जैसे पुण्यात्मा संत
पापी के छोड़ने से पाप राजाको लगता है यदि राजा पापिको

राजनिकिल्बिषं राजभिधृतदंडास्तुकृत्वापापानिमान वाः निर्मलाः स्वर्गमायांतिसंतःसुकृतिनोयथा एनोराजा नमृच्छत्युत्सृजंतंसकिल्बिषं तंचेन्नघातयेद्राजाराजधर्मे णादुष्यतीति राज्ञामन्येषुकार्येषुसद्यःशौचंविधीयते तथा नात्ययिकेनित्य कालएवात्रकारणमिति यमगीतंचश्लो कमुदाहरन्ति नाघदोषोऽस्तिराज्ञांवैव्रतिनांनचसंत्रिणांऐ न्द्रस्थानमुपासीनाब्रह्मभूताहितेसदेति

इतिवाशिष्ठे धर्मशास्त्रे एकोनविंशोऽध्यायः १९

अनभिसंधिकृतेप्रायश्चित्तमपराधेह्यभिसंधिकृतेऽप्येकेगु रुरात्मवतांशास्ताराजाशास्तादुरात्मनां इहप्रच्छन्नपा पानांशास्तावैवस्वतोयमइति तत्रचसूर्याभ्युदयितःसन्नह्

न मरवावे तो राज धर्म में दुष्ट होता है राजा हिंसा के कर्मों में शीघ्र शुद्ध होता है तिसी प्रकार राजा अन्य कर्मों में भी शुद्ध है क्योंकि इसमें कारण समय ही है इसमें यमऋषि के कहे श्लोक को भी कहते हैं कि राजा व्रत वाले और मंत्र के ज्ञाता इनको इस जगत् में दोष नही है क्योंकि वे सब इन्द्र के स्थान (स्वर्ग) में बैठे हुये सदैव ब्रह्मरूप हैं ॥

इति वशिष्ठस्मृतौ १९ अध्याय

अज्ञान से किये अपराध में प्रायश्चित्त है और कोई यह कहते हैं कि जान कर किये में भी प्रायश्चित्त है ज्ञानियों का शिक्षक गुरु है और दुष्टात्माओं का शिक्षक राजा है और इस

स्तिष्ठेत्सावित्रींचजपेदेवंसूर्याभिनिर्मुक्तोरात्रावासीतकुन ख्रीश्यावदंतस्तुकृच्छ्रं द्वादशरात्रंचरेत्परिवित्तिःकृच्छ्रंद्वादशरात्रंचरित्वानिर्विशेत्तांचैवोपयच्छेत अथपरिविविदानःकृच्छ्रातिकृच्छ्रौचरित्वातस्मैदत्वापुनर्निविशत्तांचैवोपयच्छेतअग्रेदिधिषूपतिःकृच्छ्रं द्वादशरात्रंचरित्वानिर्विशेत् तांचैवोपयच्छेत्दिधिषूपतिः कृच्छ्रातिकृच्छ्रौचरित्वा

लोक में जो छिपकर पाप करते हैं उनका शिक्षक यमराज है तिस प्रायश्चित्त में सूर्योदय के समय सावधानी से बैठे और गायत्री को जपे—और रात्रि में सर्वोत्त पर बैठे—जिस के नख बिगड़ गये हों और जिसके काले दांत हों वह बारह रात्र तक कृच्छ्र करे और परिवित्ति बारह रात्र तक कृच्छ्र करें फिर दूसरी स्त्री के संग विवाह करले और अपने विवाह से पहिले को छोटे भाई ने विवाही है उसका स्वीकार न करे और परिविविदान छोटा भाई कृच्छ्र और अति कृच्छ्र करके और उन स्त्री को बड़े भाई के अर्पण करके फिर स्वीकार कर ले और अग्रे दिधिषू का पति बारह रात्र तक कृच्छ्र करके दूसरा विवाह करै और पहिली को स्वीकार न करे और दिधिषू का पति कृच्छ्र अतिकृच्छ्र करके अग्रे दिधिषू के पति को इस स्त्री को सौंप कर फिर उसे स्वीकार करे और शूरवीर के हत्यारे का प्रायश्चित्त आगे कहेंगे और वेद का त्यागी बारह रात्रतक कृच्छ्र करके फिर आचार्य से वेद पढे गुरु की शरण

निर्विशेत् तांचैवोपयच्छेतवीरहणांपरस्ताद्दक्ष्यामोब्रह्मो ज्झः कृच्छ्रं द्वादशरात्रंचरित्वा पुनरुपयुंजीतवेदमाचार्यो त्गुरुतल्पगःसवृषणं शिश्नमुत्कृत्यांजलावाधायदक्षिणामु खेगच्छेत्यत्रैवप्रतिहन्यात्तत्रातिष्ठेदाप्रलयान्निष्कालको वाघृताक्तस्तप्तांसूर्मिं परिष्वजेन्मरणान्मुक्तोभवतीतिवि ज्ञायते आचार्य्यपुत्रशिष्यभार्य्यासचैवंयोनिषुचगुर्वीसखीं गुरुसखीमपपात्रांपतितांचगत्वाकृच्छ्राब्दं चरेत्एतदेवच चांडालपतितान्नभोजनेषुततःपुनरुपनयनेवपनादीनांनि निवृत्तिः मानवंचात्रश्लोकमुदाहरन्तिवपनंमेखलादंडोभै

पर गमन का कर्त्ता अन्ड कोशों सहित लिंगइन्द्रिय को काट कर और अपनी अन्जलि पर उनको रख कर दक्षिण दिशा को ओर मुख करके चलाजाय और जहां न चलाजाय वहां मरण तक टिक जाय अथवा न मरे तो लोहे की तपी हुई स्त्री का स्पर्श करे फिर मरने से पवित्र होता है यह शास्त्र से जाना है और आचार्य—पुत्र—शिष्य इनकी स्त्रियों में और अपनी योनि (जाति) की स्त्रियों में भी गमन करने में यही प्रायश्चित्त है—गर्भवती—अपनी मित्राणी—वा गुरु की मित्रणी—और हीन जाति और पतित स्त्री इनके संग गमन करके ३ मास कृच्छ्र करै और चांडाल पतित इनके अन्न के भोजन में यही प्रायश्चित्त है और फिर यज्ञोपवीत करै परंतु मुंडन आदि को तो निवृत्ति है—इसमें मनु का श्लोक कहते हैं—कि मुंडन

क्षचर्याव्रतानिचनिवर्त्तंतेद्विजातीनांपुनःसंस्कारकर्मणीति
मत्यामद्यपानेत्वसुरायासुरायाश्चाज्ञानेकृच्छ्रातिकृच्छ्रौघृ
तंप्राश्यपुनसंस्कारश्चमूत्रशकृच्छुक्राभ्यवहरेषुचैवमद्यभां
पडेस्थिताआपोयदिकश्चिद्द्विजःपिवेत्पलपक्षोदु बुरविल्व
पलाशानामुदकंपीत्वात्रिरात्रेणैवशुद्धयतिअभ्यासेसुरा
याअग्निवर्णातांद्विजः पिबेत्मरणात्पूतोभवतीतिविज्ञाय
तेब्राह्मणांहत्वाभ्रूणहाभवत्यविज्ञातंचगर्भंअविज्ञाताहिग
र्भाःपुमांसोभवंतितस्मात्पुंस्कृत्याजुहवतीतिभ्रूणहाग्नि
मुपसमाधायजुहुयादेताःलोमानिमृत्योजु होमि लोमभि

मेखला—दंड भिक्षा का मांगना—व्रत—ये सब द्विजातियों के फिर संस्कार कर्म में निवृत होजाते हैं जान कर मदिरा के के पान में और आटे से बना हो वा गुड़ और मधु से बनी हो ऐसो मदिरा के अज्ञान से पीने में कृच्छ्र और अति कृच्छ्र करै फिर संस्कार करैं और मूत्र और विष्ठा और वीर्य इन के भोजन में भी यही प्रायश्चित्त है मदिरा के पात्र में रक्खे हुये जल को यदि कोई द्विज पीले तो पिलखन—गूलर—वेल ढाकओटाये इनके जल को पीकर तीन रात्र में शुद्ध होता है और मदिरा के अभ्यास (बारंबार पीना) में अग्नि के समान है वर्ण जिसका ऐसी तपाई हुई मदिरा को पीवे उससे मरने से शुद्ध होता है ब्राह्मण को और जिस गर्भ का ज्ञान न हो उस गर्भ को मार कर मनुष्य भ्रूणहत्यारा होताहैक्योंकिविनाजाने गर्भ पुरुष होते हैं तिससे पुरुष मान कर इन मंत्रों से होम

म्रृत्यु वासयइतिप्रथमांत्वचंमृत्योर्जुहोमित्वचामृत्यु वा सयइतिद्वितीयांलोहितंमृत्योर्जुहोमिलोहितेनमृत्युंवास यइतितृतीयां मांसानिमृत्योर्जुहोमिमांसैर्मृत्यु वासयइ तिचतुर्थीस्नास्नावानिमृत्योर्जुहोमिस्नावभिर्मृत्युंवासय इतिपंचमीमेदोभिर्मृत्योर्जुहोमिमेदसामृत्युंवाभिसयइति षष्ठींअस्थिभिर्मृत्योर्जुहोमिअस्थिभिर्मृत्युंवासयइतिस तिमींमज्जानंमृत्योर्जुहोमिमज्जाभिर्मृत्युंवासयइतिअष्ट मींराजार्थेब्राह्मणार्थेवासंग्रामेभिमुखमात्मानंघातयेत्त्रिर

करे लोमों को मृत्यु के लिये होमताहुं और लोमोंसे मृत्यु को तृप्त करता हुं पहिली त्वचा को मृत्यु के लिये होमता हुं और त्वचा से मृत्यु को तृप्त करता हुं दूसरी लोहित (रुधिर) को मृत्यु के लिये होमता हुं और लोहित मृत्यु को तृप्त करताहुं यह तीसरी मांसों के मृत्यु के लिये होमताहुं और मांसोंसे मृत्यु को तृप्त करताहुं यह चोथी स्नायु को मृत्यु के लियेहोमता हुं और स्नायु से मृत्यु को तृप्त करताहुं पांचवी मेदा को मृत्यु के लिये होमताहुं और मेदा से मृत्यु को तृप्त करता हुं छटी अस्थियों को मृत्यु के लिये होमता हुं और अस्थियों से मृत्यु को तृप्त करता हुं सातवी मज्जो को मृत्यु के लिये होमता हुं और मज्जाओं के से मृत्यु को तृप्त करता हुं आठवी इस प्रकार आहुति दे—राजा वा ब्राह्मण के लिये संग्राम में अपने देह को संमुख मरवाय दे पूर्वोक्त

जितपूतो भवतीति विज्ञायते निन्दकः हि नः कनीयो भवतीति तदप्युदाहरन्ति पतितं पतितेत्युक्त्वा चोरं चोरेति वा पुनः वचसा तुल्यदोषः स्यान्मिथ्या दोषतां व्रजेदिति एवं राजन्यं हत्वाष्टौ वर्षाणि चरेत् षड् वैश्यं त्रीणि शूद्रं ब्राह्मणीं चात्रेयीं हत्वा सवनगतौ च राजन्यवैश्यौ चात्रेयीं वक्ष्यामो रजस्वलामृतुस्नातामात्रेयीमाहुः अत्रैष्यत्यपत्यं भवतीति अनात्रेयीं राजन्यहिंसायां राजन्यां वैश्यहिंसायां वैश्यां शूद्रहिंसायां शूद्रां हत्वा संवत्सरं ब्राह्मणसुवर्णहरणात् प्र

प्रकार से तीनवार पराजय को प्राप्त हुआ पवित्र होता है यह शास्त्र से जाना है यदि दूसरे के पाप को कहै तो पापी का पाप कनिष्ट (पाड़ा) होता है इसमें ये वचन कहते हैं कि पतित को पतित और चोर को चोर कहकर वाणी सही तुल्यपाप का भागी होताहै और झूठके दोषको प्राप्त नहीं होताहै इसी प्रकार क्षत्री को मार कर आठ वर्ष कृच्छ्र करै और वैश्य और आत्रे यी और यज्ञ में स्थित क्षत्री और वैश्य को मार कर छः और शूद्र को मार कर तीन वर्ष तक कृच्छ्र करै—आत्रेयी को कहते हैं कि जिस रजस्वला स्त्री ने ऋतु -स्नान किया हो वह आत्रेयी ऋषियों ने कही है—आत्रेयी पद का अर्थ यह है कि जिसमें गमन करने से संतान हो, आत्रेयी से भिन्न ब्राह्मणी की हिंसा में क्षत्री की हिंसा की और क्षत्रिया की हिंसा में वैश्य की हिंसा की और वैश्य की हिंसा में शूद्र की हिंसा का प्रायश्चित

कीर्य्यकेशान्राजानमभिधावेत्स्तेनोऽस्मिभोः शास्तुभवा
निति तस्मै राजोदुम्बरं शस्त्रं दद्यात्तेनात्मानं प्रमापयेन्म
रणात्पूतो भवतीति विज्ञायते निष्कालको वा घृताक्तो गोम
याग्निना पादप्रभृत्यात्मानमभिदाहयेन्मरणात्पूतो भवती
ति विज्ञायतेऽथाप्युदाहरन्ति पुराकालात्प्रमीतानामना
कविधिकर्मणां पुनरापन्नदेहानामगं भवति तच्छृणु स्तेनः
कुनखी भवति श्वित्री भवति ब्रह्महा सुरापः श्यावदन्तः तल्पगुरु
श्चिचर्मा गुरुतल्पग इति पतितैः संप्रयोगे च ब्राह्मणेवा योनेन

कर चोर शद्र को मार १ एक वर्ष कृच्छ्र करै ब्राह्मण का
सोना हरने मे केशों को खोलके राजा के सन्मख दोड कर
जाय और यह कहै कि हे राजन् में चोर हुं तू मझे दंड दे—
राजा उसको गूलर का शस्त्र दे तिससे अपने देह को मारदे
और मरण से पवित्र होता है यह शास्त्र मे जाना है और जो
न मरे तो घी को मल कर गौ के गोबर की अग्नि से पेरों
तक अपने देह को दग्ध करादे मरण से पवित्र होता है यह
शास्त्र से जाना है—इसमें यह वचन कहते हैं कि जिनके कर्म
स्वर्ग की विधि के नहीं हैं और समय से पहिले ही जो मरगये
हैं और फिर उन को जो देह मिलते हैं उनमें जो चिन्ह होते
हैं उनको सुनो—चोर के नख बुरे होते हैं ब्रह्म हत्यारा स्वेत
कुष्ठी होता है—मदिरा पीने वाले के दांत काले होते हैं—गुरु
की शय्या पर गमन करने वाले का बुराचाम होता है—पतितों

वायास्तेभ्यःसकाशान्मात्राउपलब्धास्तासांपरित्यागस्तै
श्चनसंवसेदुदीचींदिशगत्वानश्ननुसंहिताध्ययनमधीया
नः पूतोभवतीतिविज्ञायते अथाप्युदाहरन्ति शरीरपात
नाच्चैवतपसाध्ययनेनच मुच्यतेपापकृत्पापाद्दानाच्चापि
प्रमुच्यतइति विज्ञायते

इतिवाशिष्ठे धर्मशास्त्रे विंशतितमोऽध्यायः २०

शूद्रश्चेद्ब्राह्मणीमभिगच्छेद्वीरणैर्वेष्टयित्वाशूद्रमग्नौप्रा
स्येद्ब्राह्मण्याःशिरसिवपनंकारयित्वा सर्पिषाभ्यज्यन

के संग विद्या वा योनि (नाते दारी) का सम्बन्ध करने से जो
इनसे धन आदि मिला है उसे त्याग दे और उनके संग फिर न
वसे और उत्तर दिशा में जा कर और भोजन को त्याग कर
संहिता के पढने से पवित्र होता है यह शास्त्र से जाना है
इसमें यह वचन कहा है कि शरीर का गिराना—तप और
पढने से पाप का करने वाला छूटता है और दान से भी
छूटता है यह शास्त्र से जाना है ॥

इति वशिष्ठस्मृतौ २० अध्यायः

यदि शूद्र ब्राह्मणी के संग गमन करै तो शूद्र को तृणों
से लपेट कर अग्नि में पटक दे और ब्राह्मणी के शिर का
मुंडन कराकर और घी का उबटना करके और नंगी को गधे
पर चढा कर महा मार्ग (सड़क आदि) में को निकास दे फिर

ग्नांकृष्णाखरमारोप्यमहापथमनुब्राजयेत्पूताभवतीति विज्ञायते वैश्यश्चेद्ब्राह्मणीसमभिगच्छेल्लोहितदर्भैर्वेष्टयित्वा वैश्यमग्नौप्राश्येद्ब्राह्मण्याःशिरसिवपनंकारयित्वा सर्पिषाभ्यज्यनग्नांगौरखरमारोप्य महापथमनुसंब्राजयेत् पूताभवतीतिविज्ञायते राजन्यश्छेद्ब्राह्मणीमभिगच्छेच्छरपत्रैर्वेष्टयित्वाराजन्यमग्नौप्रास्येद्ब्राह्मण्याः शिरोवपनंकारयित्वासर्पिषाभ्यज्य नग्नां रक्तखरमारोप्य महापथमनुब्राजयेत् एवंवैश्योराजन्यायांशूद्रश्चराजन्यावैश्ययोर्मनमाभर्तुरतिचारेत्रिरात्रं यावकं क्षीरं भुंजा

पवित्र होती है यह शास्त्रसे जाना है—यदि वैश्य ब्राह्मणी के संग गमन करे तो वैश्य को लाल कुशाओं से लपेट कर अग्नि में पटक दे और ब्राह्मणी के शिर को मुंडन कर और घी से लपेट कर बैलों के रथ में बैठाकर महामार्ग में निकास दे फिर पवित्र होती है यह शास्त्र से जाना है—यदि क्षत्री ब्राह्मणी के संग गमन करे तो सरों के पत्तों से लपेट कर क्षत्री को अग्नि में पटक दे और ब्राह्मणी के शिर को मुंडा कर घी को मल कर और नंगी को गधे पर चढाकर महामार्ग को निकास दे इसी प्रकार वैश्य क्षत्रीया में और शूद्र क्षत्रिया और वैश्या में गमन करके पवित्र होता है मनसे पति के अवलंघन करने में स्त्री तीन रात्र तक जौं और दूध को खाती और पृथिवी पर सोती हुई और नदी के जलों में तीन रात्र स्नान करे और

नाधःशयानात्त्रिरात्रमप्सु निम्नगायाः सावित्र्यष्टशतेनशि
रोभिर्वाजुहुयात् पूताभवतीतिविज्ञायते

इतिवाशिष्ठेधर्मशास्त्रेएकविंशतितमोऽध्यायः २१

इत्यष्टादशस्मृतयः

आठसौ गायत्री वा शिरः मंत्रों से होम करे फिर पवित्र होता है यह शास्त्र से जाना है।

इति वाशिष्ठस्मृतौ २१ अध्यायः

॥ समाप्तः ॥

विज्ञवरगुणज्ञावध प्र सावित्री ११ मुन्शी नवलकिशोरस्य

आज्ञा उपाधिधारिणामा ज्ञया

श्री बाबू तोताराम वर्मणां संमत्याच बिहारीचन्द्र पंडितैर

ष्टादशेमाः स्मृतयः भाषायामनुवादिताः

इस पुस्तक का भाषानुवाद उक्त मुन्शी नवलकिशोर जी ने ही अपने द्रव्य से कराया है इससे अन्य को मुद्रण का अधिकार नहीं है ॥

इति